

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २३

दीवान-ए-विदेह

११८१ मैथिली गजलक
समग्र साहित्यिक समीक्षा



मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय . खण्ड २३

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २३

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय • खण्ड २३

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २३

दीवान-ए-विदेह

११८१ गजल आ तीन लघु रचनाक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • २०२६

ISSN 2229-547X

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड २३

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६। सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रकाशन : विदेह, प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका; ISSN 2229-547X

मुद्रण आकार : ६ × ९ इंच; भाषा : मैथिली।

www.videha.co.in | videha-ejournal.github.io/videha/

समीक्षित आधार-पाठ : दीवान-ए-विदेह खण्ड १ आ खण्ड २क मूल मैथिली

Word संस्करण। छन्द-विधानक प्रकाशकीय दावा आ मूल काव्य-पाँतिक प्रत्यक्ष विश्लेषण अलग रखल गेल अछि।

अनुक्रमा

समीक्षाक पद्धति आ पाठ-सीमा • पृ. ५

दीवान-ए-विदेह खण्ड १ : गजल १-४५८ • पृ. ६

किशोर गजल : गजल ४५९-५९१ • पृ. ४५३

रुबाई, कता १ आ कता २ • पृ. ५१५

दीवान-ए-विदेह खण्ड २ : गजल ५९२-११८१ • पृ. ५१७

समग्र साहित्यिक मूल्याङ्कन • पृ. ९७२

रचनावार विस्तृत अनुक्रम • पृ. ९७३

ग्रन्थाधार • पृ. १००५

अध्ययनक पद्धति आ पाठ-सीमा

ई खण्डमे 'दीवान-ए-विदेह'क दू प्रकाशित मूल पाठमे समाहित ११८१ गजल आ तीन लघु रचनाक पाठाधारित समीक्षा अछि। मूल खण्ड १मे ५९१ आ खण्ड २मे ५९० गजल अछि।

समीक्षा केवल कविक अभिप्राय मानि निष्कर्ष नहि निकालैत; उपलब्ध वास्तविक पाँति, शब्द-लय, काफिया-रदीफ, कथनक सम्बन्ध, बिम्ब, स्थानीय जीवन, सामूहिक स्मृति आ पुनरावृत्तिक परीक्षण करैत अछि। छन्दक प्रकाशित मात्रा-अनुमानकें सत्यापित उच्चारणाधारित गणना बिना अन्तिम सिद्धि नहि मानल गेल अछि।

पहिल खण्डक मुखपृष्ठमे १ कता आ २ रुबाइक घोषणा अछि, मुदा मूल पाठक तीन शीर्षक 'रुबाइ', 'कता १' आ 'कता २' अछि। एहि भेदकें ज्यों-के-त्यों समीक्षामे दर्ज कएल गेल अछि।

'अकुलाइत सुर' खण्ड १क १३३ किशोर गजल आ 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड १क गजल ४५९-५९१क मूल पाठक मिलान सँ शीर्षक, छन्द-विधान आ मिसरा सभ समान भेटल; एहि समीक्षा के आधारपर खण्ड २४क साझा गजल-आलोचना निरन्तर बढ़त।

गजल १ : मोन पड़ैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: २३-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय ·
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: मोन पड़ैए

स्मृतिक स्थान आ द्वैत

पहिल गजल 'मोन पड़ैए' दीवानक भावभूमि एकटा सुघर स्थान-अनुभवसँ खोलैत अछि। साँझ, अपन दुआर, मेघ आ कमलाक धार—ई सभ केवल ग्रामीण सजावट नहि; विस्थापित कथनकर्ताक स्मृति कोन क्षण सक्रिय होइत अछि, तकर आधार अछि। 'साँझ उतरते तँ अपन दुआर मोन पड़ैए' मे समयक फेरबदल व्यक्तिगत भूगोलकें जगा दैत अछि; अगिला मिसरामे कमलाक धार ओहि भूगोलकें नदी-आधारित सामूहिक अनुभवसँ जोड़ैत अछि। अपन घरक स्मृति आ क्षेत्रक जल-स्मृति एक-दोसराक पर्याय नहि, मुदा एहि आरम्भमे परस्पर सम्बद्ध बनैत अछि।

नगर, माय आ चिन्हक भूमिका

दोसर शेर नगरक भीड़मे नाम विसरबाक स्थिति आ माइक हँकारक स्मरणकें आमनेसामने रखैत अछि। भीड़ व्यक्ति-संख्या बढ़बैत अछि, मुदा बोलाबयवला स्वरक अनुपस्थिति पहिचानक संकट बनैत अछि। 'माइक दूरसँ देल हँकार'क साधारण घरेलू ध्वनि कविताक भीतर सामाजिक सम्बन्धक प्रमाणक तरह पढ़ल जा सकैत अछि—एहि सर्तपर जे कथनकर्ताक आत्मानुभवकें सबहक जीवनक सार्वभौम तथ्य नहि मानल जाए। तेसर शेरक अनिद्रा आ निहारमे मौन केन्द्रीकृत अछि, जकरा गाम-नगर विरोधक मात्र नारा बनय देबाक बदला रचना निजी नेहक रूपमे रखैत अछि।

बाढ़िक पुरान मार

चारिम शेर एहि गजलकें सामान्य घर-विरहसँ ऊपर उठबैत अछि: 'बाढ़ि उतरि गेल, नवका घर फेर ठाढ़ भेल' आ 'भीत पर पानिक पुरान मार'क बीच पुनर्निर्माण तथा अवशिष्ट क्षतिक दूरी अछि। घरक भौतिक पुनर्स्थापना स्मृतिक पूर्ण पुनर्स्थापना नहि; भीत पर बचल निशान कालक देखल-जा-सकैत सतह बनि जाइत अछि। एतय जल व्यक्तिगत वेदना मात्र नहि, पर्यावरणीय इतिहासक स्थूल चिन्ह अछि। कवि बाढ़िक वास्तविक बरख, स्थान वा सरकारी उत्तरदायित्व निर्दिष्ट नहि करैत छथि; आलोचनामे एहि मौनकें तथ्यात्मक दावासँ नहि भरब उचित अछि।

रूप, सन्तुलन आ सीमा

मूल पाठ दू खण्डक निकट-समलय आ २३-२४ मात्रा प्रति मिसरा घोषित करैत अछि। पहिल दू मिसरामे 'दुआर/धार' आ 'मोन पड़ैए'क संगत तुक-आवृत्ति स्पष्ट अछि; पाछुक शेरसभमे 'हँकार', 'नेहार', 'मार' आ 'विचार' ध्वनि-सूत्रकें विस्तृत करैत अछि। मुदा 'तँ' सन अव्यय कतहु काफियाक पश्चात् आ रदीफक पूर्व उपस्थित अछि—उदाहरणार्थ माइक हँकारवला मिसरा—जाहिसँ कठोर काफिया-रदीफ संलग्नता पर प्रश्न उठैत अछि। घोषित मात्रा-गणनाक प्रमाण मुद्रित पाँति भरिसँ पूर्ण नहि होइत; वास्तविक उच्चारण, विराम आ स्वरताक स्वतंत्र परीक्षण आवश्यक अछि। अन्तिम तखल्लुसक आत्म-सन्दर्भ स्वीकार्य अछि, मुदा गाम घुरबाक विचारकें अन्तिम निराकरण नहि, खुलल आकांक्षा मानब अधिक सटीक अछि।

पाठ-साक्ष्य : साँझ उतरते तँ अपन दुआर मोन पड़ैए / मेघ उठैए कमलाक धार
मोन पड़ैए / बाढ़ि उतरि गेल, नवका घर फेर ठाढ़ भेल / भीत पर पानिक पुरान
मार मोन पड़ैए

गजल २ : रहि गेल

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय ·
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त · रदीफ: रहि गेल

जे बिसरल नहि

‘रहि गेल’क काव्य-प्रयास अनुपस्थित वस्तुक शेष प्रभाव पकड़ब अछि। ‘जे कहबाक छल, से बात तँ रहि गेल’क बाद जागल राति आबैत अछि—अर्थात् नहि कहल बात मिटल नहि, जागरणक रूपमे समयकँ भैरैत अछि। पहिल गजलक स्मृतिसँ एहि गजलक अन्तर ई अछि जे स्मृतिक वस्तु एतय स्थान नहि, अपूर्ण संवाद अछि। वर्तमान कथनक “रहि गेल” रदीफ जखन-जखन घुरैत अछि, समयक समापन असफल होइत देखाइत अछि।

जरेल चिट्ठी आ देहक स्मृति

‘सभ चिट्ठी जरा, नाम मेटा देलौं’क अगिला मिसरा ‘अँगुरीमे कागज सौगात रहि गेल’ एकटा सघन वस्तु-बिम्ब दैत अछि। लिखित प्रमाण नष्ट भेलो पर ओकर स्पर्श, उपहार वा स्मरण देहक अनुभूति बनि बचि सकैत अछि। यद्यपि ‘कागज सौगात’क वाक्यविन्यास शाब्दिक रूपेँ तनिक अस्पष्ट अछि, एहि अस्पष्टतामे सेहो बाँचल स्पर्शक सम्भावना अछि। कथनकर्ताक हँसि कहब जे किछु नहि भेल, आ भीतर गुम्म आघातक रहब, सामाजिक प्रदर्शन आ निजी स्थिति बीचक फाँक देखबैत अछि।

प्रकृतिक बिम्ब आ पुनरावृत्ति

मेह थमब, आँगन सुखब आ खपडैल पर बरसात रहि जाएब प्रत्यक्ष मौसम-वर्णनसँ बेसी मानस-समयक रूपक अछि। एतय बाहरक मौसम बदलि गेल अछि, मुदा भीतरक बरसात सम्पन्न नहि। पहिल गजलक बाढ़ि-निशानसँ तुलना करब फलदायक अछि: ओतय भौतिक भीत पर पुरान मार छल, एतय खपडैल पर बचल बरसात असम्भव-प्राय लगि कऽ स्मृति-रूप बनैत अछि। तथापि दुनू पदचित्र एतेक निकट अछि जे क्रमिक पठनमे बिम्बक पुनरावृत्ति स्पष्ट होइत अछि।

गजल-योजना आ मूल्य

मूल पाठ १९-२० मात्रा, द्विखण्डी निकट-समलय, 'नात' काफिया आ 'रहि गेल' रदीफ दैत अछि। 'बात/रात/सौगात/आघात' ध्वन्यात्मक अनुक्रम बनेबाक प्रयास सफल अछि, मुदा पहिल मिसरामे 'बात तँ रहि गेल'क बीच अव्यय 'तँ' रदीफक ठीक पूर्व आबि जाइत अछि; एहन अतिरिक्त शब्द औपचारिक नियमक कठोर पाठमे मुद्दा बनैत अछि। काव्यक सबलता असंप्रेषित भावकें कागजक जरेल वस्तु बनय देबामे अछि। कमजोरी ई जे अन्तिम 'पुरनका बात' फेर ओही आरम्भिक 'बात'पर घुरैत अछि, जकरा समापनक अर्थ-प्रगति कम गहिर बुझा सकैए।

पाठ-साक्ष्य : जे कहबाक छल, से बात तँ रहि गेल / तोहर पाछाँ जागल रात रहि गेल / मेह थमल, आँगन सुखल, मेघो गेल / खपडैल पर काल्हि बरसात रहि गेल

गजल ३ : आउ ने

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १९-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय ·
यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः आउ ने

आमन्त्रणक रूप

‘आउ ने’ एकटा एकमुखी सम्बोधन अछि, मुदा प्रत्युत्तरक अनुपस्थिति एकर नाटकीय तनाव बनैत अछि। ‘एहि सुनसान घरक दुआर आउ ने’ आ ‘एक बेर कमलाक पार तँ आउ ने’ मे घर निजी अछि, नदी पार करब स्थानिक आ भावनात्मक दुनू दूरी सूचित करैत अछि। ‘ने’क पुनरावृत्ति आग्रहक आदेश नहि बनने दैत; बोलबाक आग्रह स्वयं एकटा सम्बन्ध बचयबाक उपाय अछि। एहि सम्बोधनक निश्चित प्रेम-पात्रक नामसँ चिन्हित करब मूल पाठसँ समर्थित नहि अछि।

चुप्पी आ उत्तरदायित्व

‘रूसल तँ रहू, चुप्पी पैघ नै करू’क मार्मिकता ई अछि जे मतभेदक निषेध नहि, ओकर संवादहीन विस्तारक विरोध कएल गेल अछि। दू आखरक हँकार चाहब पूरा समाधान नहि, संवादक न्यूनतम सम्भावना चाहब अछि। चिड़ै सभक घर घुरब आ साँझक थाकब व्यक्तिक प्रतीक्षाकें प्राकृतिक गतिसँ विपरीत रखैत अछि; चिड़ै सभ घुरि गेल, सम्बोधित व्यक्ति नहि। एहिसँ गजल केवल रोमान्ती प्रत्यावर्तनक प्रार्थना नहि रहैत, साझाक जीवन बनयबाक प्रयास बनैत अछि।

बाढ़ि, घर आ सहारा

‘बाढ़ि घर लऽ गेल, लोक घर बना रहल’ एहि गजलक सामाजिक केन्द्र अछि। रचनामे पुनर्निर्माण सामूहिक क्रियाक रूपमे उपस्थित अछि, जखनकि ‘टूटल घरक आधार बनि कऽ आउ ने’ सम्बोधित व्यक्ति सँ व्यक्तिगत सहारा माँगैत अछि। दुनू स्तरक तनाव महत्वपूर्ण अछि: आपदा सामूहिक अछि, मुदा सहायताक अनुभव व्यक्तिसापेक्ष। मूल पाठ बाढ़िक कारण अथवा राहत-व्यवस्थाक नीति नहि बतबैत; इहाँ तकर अनुमान नहि जोड़ल जाए।

ध्वनि-अनुशासनक परीक्षण

‘-र’ काफिया आ ‘आउ ने’ रदीफक घोषणा अछि।
‘दुआर/पार/हँकार/बहार/आधार/झंकार’क तुक-परिवार अर्थपूर्ण अछि, मुदा ‘एक

बेर कमलाक पार तँ आउ ने' मे 'तँ' काफियाक पश्चात् घुसैत अछि; ओहि कारण काफिया-रदीफक सटा-सट सम्बन्ध बाधित होइत अछि। १९-२० मात्राक घोषित दायरा वास्तविक पाठ-पठनमे फेर जाँच योग्य अछि। अन्तिम तखल्लुस गीतक 'अन्तिम सुर'क प्रतीक्षा बनबैत अछि, मुदा गीत छोड़ि बैसल रहनाइ आ नव 'झंकार'क आमन्त्रण बीचक परस्पर निर्भरता ही एकर कलात्मक उपलब्धि अछि।

पाठ-साक्ष्य : एहि सुनसान घरक दुआर आउ ने / एक बेर कमलाक पार तँ आउ ने /
बाढ़ि घर लऽ गेल, लोक घर बना रहल / टूटल घरक आधार बनि कऽ आउ ने

गजल ४ : कहियो नै

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय ·
यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कहियो नै

नकारक नैतिक लय

‘कहियो नै’क रदीफ नकारात्मक निषेधकै सामूहिक नैतिक प्रतिज्ञामे बदलैत अछि। ‘मोन बेचब ई व्यापार कहियो नै’ व्यक्ति-स्वातन्त्र्यक बाजारीकरणक रूपक अछि; ‘नेहक बदला अपन हार कहियो नै’ निजी सम्बन्धमे आत्मसम्मानक मूल्य बचबैत अछि। एहिमे आरम्भसँ एक तरहक वक्तृत्व-प्रधान स्वर अछि। सबलता स्पष्टता अछि, मुदा पदचित्रक विशिष्टता पर एहन उद्घोषणा भारी पड़बाक जोखिम सेहो अछि।

धारमे हाथक बिम्ब

‘बाढ़ि आयत, घर बहत, फेर घर बनत’क पाछाँ ‘हाथ छोड़ब बीच धार तँ कहियो नै’ लिखल अछि। घरक पुनर्निर्माणक वस्तुगत संघर्ष आ संकटमे हाथ पकड़बक नैतिक निर्णयकै एक बिम्ब-युग्ममे धएल गेल अछि। ‘मोन पड़ैए’ आ ‘आउ ने’मे बाढ़ि स्मृति वा पुनर्मिलनक वातावरण छल; एतय बाढ़ि संकटसमयक निष्ठा मापबाक कसौटी बनैत अछि। एके जल-प्रतिमा अलग-अलग काव्यक्रियामे आबैत अछि—एहि परिवर्तनक कारण एकरे साधारण दोहराव नहि कहल जा सकैए।

दरबार आ सत्य

राजक सम्मुख साँच कहबाक कठिनाई स्वीकार कऽ कवि ‘साँच बेचब दरबारमे कहियो नै’ लिखैत छथि। साँच कहब आ साँच बेचनाइ दुनू भिन्न क्रिया अछि; एहि विरोधमे सत्ता आ स्वार्थक सम्बन्धक प्रश्न उभरैत अछि। मुदा राज्यक नाम, ऐतिहासिक अवसर अथवा पात्र नहि देल गेल अछि; तँ पाँतकै विशिष्ट राजनैतिक घटनाक दस्तावेज बनाबय नहि चाही। व्यक्तिगत नेहक उधार आ दरबारक सत्यकै एकहि निषेध-रदीफसँ बाँधब अन्ततः निजी आ सार्वजनिक नैतिकता बीच सन्देशात्मक सेतु बनबैत अछि।

रूपगत सीमाबोध

काफिया ‘-र’, रदीफ ‘कहियो नै’, मात्रा-परिचय १९-२० आ द्विखण्डी निकट-समलय अछि। ‘व्यापार/हार/धार/दरबार/उधार/दीवार’क अन्त्यानुप्रास सुनाइत

अच्छि; मुदा 'बीच धार तँ कहियो नै' मे बीचक अव्यय, आ अन्तिम शेरमे 'मौन बनब कने दीवार कहियो नै'क वाक्यरचना स्पष्ट अर्थसँ दूर जाइत अछि। 'नेह राखब कने उधार' सेहो पाठकेँ अपेक्षाकृत कृत्रिम मुहावरा लगि सकैत अछि। गजलक महत्त्व संकटमे नैतिक दृढता अछि; कला-जाँचमे पुनरुक्त उद्घोषणा आ ढील शब्द-चयन दुनू चिन्हित करब आवश्यक अछि।

पाठ-साक्ष्य : मोन बेचब ई व्यापार कहियो नै / नेहक बदला अपन हार कहियो नै /
मीत रूसे, बात बिगड़े, बाट अलग / नेह राखब कने उधार कहियो नै

गजल ५ : अहाँक बाद

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: २२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी समलय · यति:
११ + ११ निकट, अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: अहाँक बाद

अनुपस्थित व्यक्तिक उपस्थिति

‘अहाँक बाद’ गजलक प्रमुख विन्यास विलोमात्मक अछि: घर बचल अछि मुदा
‘संसार’ नहि, दुआर खुलल अछि मुदा ओकर स्वागत-अर्थ खाली भऽ गेल । ‘घर
तँ घर रहल, नै संसार अहाँक बाद’ मे वस्तु आ अर्थक भिन्नता निखरि उठैत
अछि । सम्बोधित ‘अहाँ’क पहिचान पाठ सुनिश्चित नहि करैत; आलोचनामे
एकरा मृत्यु, बिछोह वा प्रवासक कोनो निश्चित घटनासँ बाँधब अनुचित होयत ।

प्रकृतिक उदासीनता

फूलक समयपर फुलायब जखन पहिने जकाँ चलैत अछि, तखन ‘रंग-बहार’क
अनुभव किएक कम अछि? गजल एहि अन्तरकें संसारी प्राकृतिक क्रम आ निजी
भावलोकक असंगतिक रूपमे रखैत अछि । लोक भेटैत अछि, हँसैत अछि, हाथ
मिलबैत अछि, मुदा ‘ककरा देव अपन हँकार’क प्रश्न सम्पर्क आ आत्मीयताक
विभेद खोलैत अछि । “अहाँक बाद”क रदीफ प्रत्येक अनुभवकें एकहि
अनुपस्थित केन्द्र दिस मोड़ैत अछि; एहिसँ एकाग्र भाव प्रभावी होइत अछि ।

दिनक चलन, जिनगीक उधार

दिन-रातक निर्विघ्न चलन आ ‘जिनगी बुझाईत ई उधार’क विचार समयक चलैत
रहबाक विरोधाभासक निर्माण करैत अछि । कथनकर्ता जीवनकें स्थिर शोक नहि
कहैत, अपितु जीवित रहबाक अनुभवकें उधारक आर्थिक बिम्बसँ देखैत अछि ।
पाँचम शेरक गीत लिखब आ सुर नहि भेटब इसी असंगति के कलागत दायरा दैत
अछि: काव्यरचना होइत अछि, मुदा ओकर अर्थपर विश्वास डोलैत अछि । ई
आत्म-सन्दर्भ गजलक सर्वाधिक संयत कलात्मक क्षणमेसँ अछि ।

छन्द-निर्देश आ शाब्दिक तनाव

काव्य-पाठमे २२ मात्रा आ ११+११ निकट यतिक दावा अछि; पारम्परिक अरूज़ी
पहचान सेहो घोषित अछि । स्वतंत्र उच्चारण-आधारित गणना बिना एहि दावाकें
प्रमाणित छन्द-सिद्धि नहि कहब । ‘संसार/दुआर/बहार/हँकार/उधार/विचार’

काफिया-सूत्रक रूपमे आवैत अछि, मुदा 'कतऽ गेल ओ रंग-बहार तँ अहाँक बाद'मे अतिरिक्त 'तँ' रदीफसँ पहिने उपस्थित अछि। 'अहाँक बाद'क आवृत्ति भावक घनत्व दैत अछि, एकरे संग प्रत्येक शेरकेँ एकहि परिणाम पर लौटाय देबाक खतरा सेहो उत्पन्न करैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : घर तँ घर रहल, नै संसार अहाँक बाद / खुलले रहल तँ मुदा दुआर
अहाँक बाद / दिन चलैत अछि, राति सेहो बीति जाइत / जिनगी बुझाइत ई
उधार अहाँक बाद

गजल ६ : सुनैछी

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय ·
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त · रदीफ: सुनैछी

सुनबाक भीतरक संसार

‘सुनैछी’ शीर्षक स्मृतिसँ ध्वनि-अनुभव दिस विधागत स्वलन करबैत अछि।
खिड़कीपर बरसात सुनब आ “अपन भीतरक एखन बात” सुनबक बीच बाह्य
ध्वनि सँ अन्तरस्वर धरि क्रम अछि। दोसर शेरमे नगरक आवाज थमिते दूर
गामक निसाँत राति सुनाइत अछि—जे प्रत्यक्ष श्रवणसँ बेसी सांकेतिक सुनाइब
अछि। एहन ध्वनि-असंगति कविताक उद्देश्यक अनुरूप अछि: भौगोलिक दूरीकै
स्मृति-श्रवणसँ पार करबाक कल्पना।

लोरी, निन्न आ माय

‘माइक पुरना लोरी मोन पडैए’ मे एकर शृंखलागत सम्बन्ध पहिल गजलक
माइक हँकारसँ जुडैत अछि। ओतय माय पहिचानक आवाज छलीह, एतय लोरी
निन्नक सीमापर आबि ओकर सौगात बनैत अछि। निन्न-सम्बन्धी बिम्ब सेहो
पुनरावृत्त अछि, मुदा अलग कार्यक संग: पहिल गजलमे अनिद्रा स्मृतिक कारण
छल, एतय निन्नमे लोरी सुनबाक सम्भावना अछि। एहि सूक्ष्म अन्तरकै रचनावार
पठनमे बचा कऽ रखनाइ जरूरी अछि।

राजधानी, शोर आ भूख

चारिम शेरमे ‘राजधानीक शोर’ आ ‘भूखक मौन’क विरोध सामाजिक आलोचनाक
प्रखर बिन्दु अछि। पूर्वक निजी स्मृतिसँ बाहरी जन-अनुभव दिस संक्रमण एहि
मिसरामे मुखर होइत अछि। मुदा भूखक अनुभव कवि प्रत्यक्ष देखलनिहेर कि
प्रतीकार्थे उठौलनि, से पाठ नहि बतबैत; तँ नागरिक प्रश्नक गम्भीरताकै बनौने
राखैत स्रोतगत सीमा सेहो मानब उचित अछि। ‘भूखक मौन कने आघात’क
अस्पष्ट वाक्यविन्यास समूचा प्रभावकै तनिक शिथिल करैत अछि।

पाठलय आ परिणाम

घोषित काफिया ‘-त’ आ रदीफ ‘सुनैछी’ अछि; बरसात, बात, रात, सौगात,
आघातक क्रम स्पष्ट सुनाइत अछि। ‘खिड़की पर एखन बरसात सुनैछी’ सँ
‘अपन साँसक कने बरसात सुनैछी’ धरि बाह्य वर्षा भीतरक देह-ध्वनि बनि जाइत
अछि; ई रूपान्तरण सूक्ष्म उपलब्धि अछि। तथापि ‘रात तँ सुनैछी’ आ ‘आघात

सुनैछी'मे ध्वनि बनाम अनुभवक रूपक चट्टैत अछि, जकर सफलताक सीमा पाठकक व्याख्यापर छोडल अछि। १९-२० मात्रा घोषित अछि, मुदा प्रमाणित कल-गणना अलग चाही।

पाठ-साक्ष्य : खिड़की पर एखन बरसात सुनैछी / अपन भीतरक एखन बात सुनैछी
/ राजधानीक शोरक बीचो-बीच तँ / भूखक मौन कने आघात सुनैछी

गजल ७ : बदलि गेल

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १८ मात्रा
प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: षट्कल × ३ · यति: ९ + ९ ।

काफिया: -म · रदीफ: बदलि गेल

ठाम ओहिना, गाम नहि

‘बदलि गेल’ पहिल छह गजलसँ अधिक संक्षिप्त, प्रत्यक्ष ग्राम्य-सामाजिक स्वर अपनबैत अछि। ‘ओही ठाम छी, गाम बदलि गेल’क विरोधाभास भौगोलिक स्थानक स्थिरता आ सामाजिक सम्बन्धक परिवर्तनकें अलग करैत अछि। ‘लोक ओहिना, नाम तँ बदलि गेल’ एहि प्रश्नकें पहिचान आ नामकरणक स्तरपर बढ़बैत अछि। ई फर्क केवल अतीत-प्रेमक निहोरा नहि; परिवर्तनक कसौटी की—मोल, छाँह, भूख, व्यवहार—से प्रश्न उठैत अछि।

धानक मोल आ पसिना

हाटक धान आ हाथक पसिनाकें एक संग देखाबयवला शेर उत्पादक श्रम आ बाजार-मूल्यक बीच सम्बन्ध बनबैत अछि। ‘मोल बढ़ल, सभ दाम तँ बदलि गेल’ मूल्य-वृद्धिक संक्षिप्त सूचना अछि, विशिष्ट आर्थिक आँकड़ा नहि। कविताक सामाजिक अभिप्राय कृषि-श्रमक अनुभवकें आकलनक केन्द्र बनायब अछि। मुदा उत्पादन-लागत, कृषक-अर्जन वा व्यापारक असमानताक यथार्थ भेद पाठमे विशद नहि अछि; तकर बिना तथ्यात्मक अर्थशास्त्रक निर्णायक निष्कर्ष नहि निकालल जाए।

पीपर, छाँह आ सत्ता

पीपर काटि घर बनबाक बाद ‘छाँह गेल, सगर घाम बदलि गेल’—एतय विकासक सुविधा आ पारिस्थितिक हानि एकहि दृश्यगत सम्बन्धमे आबैत अछि। पीपरक कटान निजी गामक नक्शा बदलैत अछि आ दिनचर्याक ताप-अनुभूति सेहो। राज बदलल, नारा उठल, मुदा ‘भूखक की किछु ठाम तँ बदलि गेल?’क प्रश्न घोषित परिवर्तनपर सामाजिक कसौटी रखैत अछि। ई शेर जखन प्रश्न चिह्नपर समाप्त होइत अछि, तखन गजल उपदेशक बदला असन्तोषक सार्वजनिक परीक्षा बनैत अछि।

छन्दीय कसौटी

‘षट्कल × ३’ आ १८ मात्राक एकरूप दावा एहि शुरुआती दस गजलमे अपेक्षाकृत निश्चित विधान अछि। मुदा मुद्रित मिसराक पाठ अलग-अलग उच्चारण-गति अनुमति दैत अछि; बिना प्रत्यक्ष मात्रा-चिह्नित परीक्षण छन्द निर्विवाद प्रमाणित नहि होइत। ‘गाम/नाम/दाम/घाम/ठाम/गाम’क पुनरावृत्ति तुक-गठनकें सुनाय योग्य बनबैत अछि, मुदा अन्तिम शेर आरम्भक ‘गाम बदलि गेल’ कथनकें लगभग जसक-तस घुरा दैत अछि। रचनामे वृत्तात्मक समापनक अभिप्राय सम्भव अछि; आलोचनात्मक सीमा ओहि अर्थ-विकासक कमी अछि जे नव अन्तिम शेरसँ अपेक्षित छल।

पाठ-साक्ष्य : ओही ठाम छी, गाम बदलि गेल / लोक ओहिना, नाम तँ बदलि गेल / राज बदलल, नारा तँ फेर उठल / भूखक की किछु ठाम तँ बदलि गेल?

गजल ८ : रहि जाउ

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २२-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय ·
यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः रहि जाउ

रहि जाएबाक इच्छा

‘रहि जाउ’ गजल वर्तमान अस्तित्वक बदला स्मृतिमे बचल प्रभावक मूल्य निर्धारित करैत अछि। ‘सभ बात तँ बिसरि जाउ, नेहक सार रहि जाउ’ आ ‘घर भले टूटि जाए, एक दुआर रहि जाउ’ एहन जोड़ी अछि जाहिमे वस्तु नष्ट भऽ सकैत अछि, मुदा सम्बन्धक निकास बनेल रहबाक चाहना अछि। ‘बिसरि जाउ’ आ ‘रहि जाउ’क व्याकरणिक रूप पाठक लेल आदेश/प्रार्थनाक झुकाव राखैत अछि; एहि स्वरक अर्थगत अनिश्चितता गजलकें भावुक आशाक संग तनिक शाब्दिक अस्पष्टता सेहो दैत अछि।

पाथर आ व्यवहार

नाम लिखल पाथर घिसि जाएत, मुदा लोकक मोनमे व्यवहारक स्मृति बचत— एहि मिसरामे सार्वजनिक स्मारक आ मनुष्यक आचरणक मूल्य-क्रम उलटैत अछि। धन, पद, मानक अस्थायित्वक पाछाँ दुखमे देल हाथक आधारकें रखब काव्यक सम्बन्ध-केन्द्रित नैतिक निष्कर्ष अछि। एकर भाषा उपदेशमूलक होयबाक कगारपर अछि, मुदा ‘दुःखमे देल हाथ’क दृश्य सहज मानवीय क्रिया दैत अछि। ई ठोसता निराकार ‘नेहक सार’कें अर्थवान बनबैत अछि।

पोथी आ पाठक

‘पोथी बन्द भऽ जाए, अक्षर तँ धूसर होइ’क बाद ‘पाठक भीतर नव विचार’क बाँचल रहबाक इच्छा साहित्यिक आत्मचिन्तनक महत्त्वपूर्ण क्षण अछि। रचनाकार अपन नामक टिकाउपन केन्द्रीय नहि मानि, पाठकक अनुभवक पुनरुत्पादनकें महत्त्व दैत छथि। अन्तिम शेरमे मिथिलाक संसार गीतमे रहि जाएब चाहना स्थानीय संस्कृतिक हस्तान्तरणक बिम्ब अछि। जखन एहि दावा कें विशेष पाठकक वास्तविक प्रतिक्रिया कहबाक प्रलोभन हो, तखन याद रखब जरूरी जे कवि एतय आकांक्षा व्यक्त करैत छथि, प्रमाणित ग्रहण-अध्ययन नहि।

रदीफ आ रूपगत कठिनाइ

काफिया '–र', रदीफ 'रहि जाउ'क घोषणा अछि।

'सार/दुआर/व्यवहार/आधार/विचार/संसार' तुक-परिवार बनेबाक प्रयत्न करैत अछि; मुदा मध्य शेरसभमे 'कने ई', 'कने' आदि शब्द काफिया-रदीफक समीप आवैत अछि आ शब्दगत निश्चय कम करैत अछि। २२-२४ मात्राक परिचय अछि, एकर स्वतंत्र उच्चारणाधारित ऑडिट शेष मानब उचित होयत। गजलक मौलिकता साहित्यक स्थायित्वक लेखकक नामसँ हटाकऽ पाठकक विचारमे स्थानान्तरित करबामे अछि, जखनकि सीमामे नैतिक उद्घोषक कुछ सीधापन आ 'रहि जाउ'क पाठ-वाक्यविन्यास अछि।

पाठ-साक्ष्य : सभ बात तँ बिसरि जाउ, नेहक सार रहि जाउ / घर भले टूटि जाए,
एक दुआर रहि जाउ / पोथी बन्द भऽ जाए, अक्षर तँ धूसर होइ / पाठक भीतर नव
विचार तँ सदिखन रहि जाउ

गजल १ : कतेक दिन

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १८-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय ·
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: कतेक दिन

प्रश्नक आवृत्ति

‘कतेक दिन’ रदीफ समयक प्रश्नकें जनसामान्यक प्रतिरोधी स्वरमे रखैत अछि।
‘मौनक बोझ कने उधार कतेक दिन’ आ ‘आँखि-आँखि कने दीवार कतेक दिन’
अभीप्सित संवादक अवरोधक निजी बिम्ब सँ आरम्भ करैत अछि। एकर बाद
भूख, राहत, शिक्षा-पश्चात् प्रवास आ दरबारक मौन सामाजिक सन्दर्भ बनैत
अछि। एहि क्रमसँ निजी मौन सार्वजनिक शून्यक पहिचान बनैत अछि; ई
रूपान्तरण पहिल आठ गजलसँ एकर मुख्य भिन्नता अछि।

राहतक फोटो आ प्रचार

बाढ़मे नाव फोटो लेल आबै—ई मिसरा रचनाक निर्णायक व्यंग्य अछि। बचावक
साधनक वास्तविक उपयोग आ ओकर दृश्य-प्रचारक उपयोग एक-दोसरसँ अलग
कएल गेल अछि। ‘राहतक ई कने प्रचार कतेक दिन’ शासनक प्रतीकात्मक
प्रदर्शनपर प्रश्न अछि, मुदा कोनो निश्चित राहत-अभियानक तथ्यात्मक रिपोर्ट
नहि। पाठक दृष्टिसँ ई भेद बहुत जरूरी अछि: रूपकद्वारा निर्मित सामाजिक
आरोपकें बिना बाहरी प्रमाणक ऐतिहासिक प्रकरण बनायब समीक्षाक त्रुटि होयत।

नेना, कमाइ आ गाम

‘पढल नेना घर छोड़ि तँ कमाइत अछि’ आधुनिक शिक्षाक एकटा विडम्बना
रखैत अछि—योग्यता अर्जित भेलापर जीवनक अवसर गामसँ दूर जाएब
आवश्यक बनि सकैत अछि। परवर्ती मिसरा ‘गाम सहत ई कने भार कतेक दिन’
एहि प्रवासकें केवल आर्थिक हानि नहि, सामाजिक सम्बन्धक बोझ रूपमे देखैत
अछि। ई पाठ प्रवासक कारणसभक सम्पूर्ण व्याख्या नहि दैत, मुदा गाँवक पक्षसँ
प्रश्न करबाक नैतिक स्थान अवश्य रचैत अछि।

भाषिक परिणाम आ आलोचनात्मक निर्णय

काफिया ‘-र’, रदीफ ‘कतेक दिन’, मात्रा-क्रम १८-२० आ द्विखण्डी निकट-समलय
घोषित अछि। ‘उधार/दीवार/व्यवहार/प्रचार/भार/दरबार’क तुक चलेबाक संग
‘कने’क अत्यधिक प्रयोग शब्द-भार बढ़बैत अछि; कतहु ई संवादक सहजता,
कतहु अनावश्यक भराव देइत अछि। अन्तिम शेर ‘प्रश्न लिखैत रहत’क

प्रतिज्ञापर समाप्त होइत अछि; एहि कारण गजल व्यक्तिगत वेदनासँ अधिक नागरिक असहमतिक कविता बनैत अछि। एकर उपलब्धि प्रश्नक क्रमिक विस्तार अछि, सीमा—विशिष्ट सामाजिक सम्बन्धक सूक्ष्म चरित्रांकनक बदला सीधा विरोधात्मक वाक्य पर निर्भरता।

पाठ-साक्ष्य : मौनक बोझ कने उधार कतेक दिन / आँखि-आँखि कने दीवार कतेक दिन / पढल नेना घर छोड़ि तँ कमाइत अछि / गाम सहत ई कने भार कतेक दिन

गजल १० : बाकी अछि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय •
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ोर • रदीफ: बाकी अछि

अवशेषक आशा

‘बाकी अछि’ एहि पहिल दस गजलक स्वर-क्रममे निराशाक पाछाँ बाँचल सम्भावनाकेँ केन्द्र बनबैत अछि। ‘राति गेलो नै, ई भोर बाकी अछि’ भविष्यक भोरकेँ वर्तमान रातिक बीच देखबैत अछि। ई क्रमश: समयक गणित नहि, आशाक विपरीत-स्थिति अछि। ‘टूटि गेलो तँ कने जोर बाकी अछि’ देह वा मनक क्षतिको बाद पूरी शक्तिक लोप नहि होयबाक आग्रह अछि। रचना प्रतिरोधक उत्सव नहि, अधूर आशाक मितव्ययी स्वर चाहैत अछि।

बाढिक डोर आ आगाँक बाट

‘बाढि नाव लऽ गेल, पतवार तँ टूटल’क बाद ‘हाथमे एखनो डोर तँ बाकी अछि’ पूर्ण भौतिक असमर्थतामे एकटा सम्बद्धताक धागा बचल देखबैत अछि। नाव, पतवार आ डोरक क्रम सरल अछि, मुदा डोर ककरासँ जुड़ल अछि से नहि कहल गेल अछि। एहि रिक्त स्थानसँ प्रतीकक खुलेल अर्थ बनैत अछि। ‘हारि गेलहुँ, बाट तँ खत्म भेलै नै’ अपन पराजय स्वीकार करैत, ओकरा अन्तिम परिणाम मानबासँ इनकार करैत अछि। ‘एक ओर’क शाब्दिक अर्थ किछु अनिश्चित अछि—दिशा, अवसर वा फेर प्रयत्न—समीक्षामे एहि अस्पष्टताकेँ निबटायल तथ्य नहि मानब।

गामक मौन आ शोर

‘गाम चुप, एहन नै तँ सभ मानि गेल’ सार्वजनिक मौन आ सम्मतिक भेद स्थापित करैत अछि। ‘घर-घर भीतर कने शोर बाकी अछि’ संकेत करैत अछि जे असहमति सामाजिक स्वरमे बदलबाक अवसर एखन अन्त नहि भेल। ‘कतेक दिन’क जिज्ञासापर एहि गजलक उत्तर किछु हद धरि एहि शेरमे निहित अछि: गाम चुप होइतहुँ भीतरक प्रश्न समाप्त नहि। एहि संगति परस्पर पूरक अछि, शर्त मात्र ई जे समूचा गामक वास्तविक मत पर निश्चित सर्वेक्षणक दावा नहि कएल जाए।

शिल्पगत समापन

काफिया 'भोर', रदीफ 'बाकी अछि', मात्रा-क्रम १९-२० आ द्विखण्डी निकट-समलय घोषित अछि। 'भोर/जोर/डोर/ओर/शोर/भोर' अर्थगत शब्द-पुनरावर्तन द्वारा आशाक वृत्त बनबैत अछि; अन्तिम 'मोनमे एकटा भोर' आरम्भक अधूर भोरक भावकें घुरैत अछि, मुदा पहिल शेरक बाह्य समयक बदला अन्तिम शेर आत्मगत भविष्य बनि जाइत अछि। 'कलम राखू, कागज तँ उज्जर'क स्वर दुनू दिशि खुलैत अछि—काज समाप्त करबाक आग्रह वा फेर लिखबाक अवसर। एहि द्व्यर्थतासँ समापन जीवित रहैत अछि। कविता दैनन्दिन संघर्षकें आशा-मूलक सूत्रमे बाँधैत अछि, मुदा 'कने' सन मध्यावर्ती शब्द कतहु लय-भराव बनैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : राति गेलो नै, ई भोर बाकी अछि / टूटि गेलो तँ कने जोर बाकी अछि / गाम चुप, एहन नै तँ सभ मानि गेल / घर-घर भीतर कने शोर बाकी अछि

गजल १-१०क अन्तररचनात्मक समीक्षाक निष्कर्ष

पहिल छह गजलमे 'मोन पड़ैए', 'रहि गेल', 'आउ ने', 'कहियो नै', 'अहाँक बाद' आ 'सुनैछी' रदीफ भावक भिन्न क्रिया स्थापित करैत अछि : स्मरण, अवशेष, सम्बोधन, निषेध, अनुपस्थितिक बादक समय, आ श्रवण। सातम गजल ग्रामीण परिवर्तनकें प्रत्यक्ष जाँचक प्रश्न बनबैत अछि; आठम गजल भौतिक नामसँ बेसी सम्बन्धक प्रभाव बचबैत अछि; नवम सामाजिक मौनपर नागरिक प्रश्न करैत अछि; दसमे विफलताक बाद बाँचल आशाक संभावना बनैत अछि। एहि क्रमक गति केवल निजी सँ सामाजिक नहि—प्रत्येक सामाजिक प्रश्न पुनः निजी स्मृति/सम्बोधनसँ प्रकाशित होइत अछि।

बाद्लि आ जलक बिम्ब गजल १, ३, ४, दस घर-सम्बन्ध, गजल ९क राहत-प्रचार आ गजल १०क डोर-बाँचल जीवनक बिम्बमे अलग काव्यगत काम करैत अछि। अतः एकरे मात्र पुनरुक्ति कहब अनुचित; मुदा अत्यधिक पुनरागमनक कारण नव बिम्बक अपेक्षा बनेल रहैत अछि। माय, दुआर, गाम, राजधानी, पानि, नोर, डोर, अन्हार आ भोरक शब्दसमूह एकटा आन्तरिक बिम्ब-संसार रचैत अछि। एतय लोकभूगोलक नाम कमला अछि, किन्तु एहिसँ नदीक विशिष्ट ऐतिहासिक घटना स्वतः प्रमाणित नहि होइत।

घोषित छन्द-सूचना गजल १-६ आ ८-१० मे निकट-समलयक विविध रूप दैत अछि; गजल ७ मे अपेक्षाकृत निश्चित 'षटकल × ३' दावा अछि। काफिया-रदीफक सम्बन्धक परीक्षणमे 'तँ'/'कने' सन शब्द बीचमे आबि जायब, रूपगत कठोरतापर आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि। तथापि एहि निष्कर्षकें वास्तविक उच्चारणाधारित मात्रा-गणना जाँचने बिना पूर्ण अरूज़ी-अयोग्यता प्रमाणित कहब उचित नहि। पुस्तकक 'पारम्परिक अरूज़ी' घोषणा आ मैथिली उच्चारणाधारित लचीलापन बीचक तनावे आगामी समीक्षा मे शास्त्रीय कसौटी बनत।

		प्रथम दस गजलक पाठ- पञ्जी

गजल

मूल शीर्षक

घोषित रदीफ

१

मोन पड़ैए

मोन पड़ैए

२

रहि गेल

रहि गेल

३

आउ ने

आउ ने

४

कहियो नै

कहियो नै

५

अहाँक बाद

अहाँक बाद

६

सुनैछी

सुनैछी

७

बदलि गेल

बदलि गेल

८

रहि जाउ

रहि जाउ

९

कतेक दिन

कतेक दिन

१०

बाकी अछि

बाकी अछि

गजल ११-२० : दोसर पाठाधारित तुलनात्मक अध्ययन

आधारपाठ : दीवान-ए-विदेह खण्ड १क मूल Word पाण्डुलिपि, गजल ११-२०।

गजलसभक क्रम, दसू मिसरा, घोषित बहर, मात्रा-क्रम, कल-क्रम, काफिया आ रदीफ मूल पाठसँ मिलाओल गेल अछि। पहिनुक १-१०क आलोचनात्मक गद्य अपरिवर्तित राखल गेल अछि।

गजल ११ : एखन धरि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १८-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः एखन धरि

नहि बितल समयक वर्तमान

‘एखन धरि’मे बितल वस्तु कतहु समाप्त नहि भेल अछि—ओ वर्तमान संवेदनामे टिकि रहल अछि। आरम्भक दू मिसरामे ‘तोहर कहल ओ बात’ आ ‘मोनमे जागल रात’ आमनेसामने अबैत अछि। ‘रात’ कोनो दिनाङ्क नहि; संवादक बचल प्रतिध्वनि जागरणक अनुभव बनैत अछि। ‘रहि गेल’ (गजल २)मे शेष रहबाक क्रिया सम्पन्न अतीतसँ कहल गेल छल, जखनकि ‘एखन धरि’ वर्तमान तक पसारल अवधि निर्दिष्ट करैत अछि। दुनूक विषयगत निकटता स्पष्ट अछि, मुदा रदीफक कालगत बल बदलला सँ स्मृतिक अनुभूति सेहो बदलैत अछि। एहि सन्दर्भमे ‘एखन धरि’ केवल पुनरावृत्ति नहि, अपूर्ण समयक नव नाम अछि; तथापि उही कागज, घाव आ बरसातक बिम्ब फेर आबैए।

मेह थमल, बरसात बचल

तेसर आ चारिम पाँतिक एकटा विरोध अछि—‘मेह थमि गेल, आँगन सुखल, दिन बदलल’क बाद ‘खपरैल पर बरसात एखन धरि’। भौतिक मेह थमबाक बादो खपरैल पर बरसात बने रहब प्रकृतिक निर्विवाद विवरण नहि, संवेदनात्मक अतिशयोक्ति अछि। छप्परपर पसरल पुरान पानिक काल्पनिक उपस्थिति अनुभवक देरिसँ विदा होयबाक रूपक बनि जाइत अछि। एहि बिम्बमे गामक घरक एकटा ठोस वस्तु, खपरैल, स्मृतिक माध्यम अछि। मुदा गजल २ मे मेह, आँगन आ खपड़ैल परक बरसात लगभग एके विन्यासमे छल। एहि लगभग दोहरायल प्रसङ्गक कारण बिम्बक अर्थ-विस्तार सीमित रहबाक जोखिम अछि; नव गजलक विशिष्टता मुख्यतः ‘एखन धरि’क काल-सूत्रमे अछि।

जरेल चिट्ठी, देहक प्रमाण

‘सभ चिट्ठी जरा देलौं, नामो मेटा देलौं’ कहबाक तुरन्त बाद ‘अँगुरीमे ओ सौगात’ बाँचल रहैत अछि। लिखल नामक विनाश आ औँठा-आँगुरक अनुभूतिक बीच संरचनात्मक दूरी अछि। ‘ओ’ शब्द सौगातकें स्पष्ट वस्तु नहि बनबैत; स्मृति स्वयं जरेनाइ नहि मानैत, ई भाव पाठसँ निकलैत अछि। परन्तु गजल २क जरेल चिट्ठी आ अँगुरीमे कागजक स्मरणसँ ई दृश्य अत्यन्त निकट अछि। ई

निकटता समीक्षा मे दर्ज करनाइ आवश्यक अछि, ताकि एकहि काव्यवस्तुक दोहरावकेँ स्वयंसिद्ध मौलिक विस्तार नहि कहल जाए। घायल देहक आघात आ नव गीत लिखलाक बादो एक स्वरमे ओहि बातक बचल रहब, स्मृतिक निरन्तरता सम्पूर्ण करैत अछि।

औपचारिक दावा आ आलोचनात्मक निर्णय

मूल Word गजल लेल '१८-२४ मात्रा प्रति मिसरा', 'मिश्र कल-विन्यास', काफिया '-आत' आ रदीफ 'एखन धरि' घोषित करैत अछि। 'बात/रात/बरसात/सौगात/आघात'क ध्वनि-सूत्र साफ अछि, आ प्रत्येक सम्बद्ध मिसराक अन्तमे रदीफ लगातार लगैत अछि। एकरासँ तुक-संयोजन सुनेल पाठमे व्यवस्थित लगैत अछि। तथापि घोषित मात्रिक दायरा छह मात्राक फैलाव राखैत अछि; केवल शीर्षकमे 'पारम्परिक अरूजी' कहि देलासँ निश्चित बहर प्रमाणित नहि भऽ सकैत अछि। पाठक वास्तविक उच्चारण, सङ्कुचन आ यति-परीक्षण शेष अछि। साहित्यिक मूल्य समयक टिकाउपनक अनुभवमे अछि; सीमा पुरान गजलसँ बिम्ब आ संवादक पुनर्प्रयोग अछि।

पाठ-साक्ष्य : तोहर कहल ओ बात एखन धरि / मोनमे जागल रात एखन धरि /
लोक कहैए घाव पुरान भऽ गेल / देह भीतर ओ आघात एखन धरि

गजल १२ : कहू ने

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुण्णी । मात्रा-क्रमः १६-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः कहू ने

प्रश्न जे उत्तरसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि

‘कहू ने’ पाँच शेर धरि दोहरायल प्रश्नक रदीफ अछि। ‘मोनक भीतर कोन दुआर’क बाद ‘एहि नदीक कतऽ अछि पार’ रखला सँ भीतरक मानसिक अवरोध आ बाहरी भूगोल एकहि सम्बोधनमे जुड़ैत अछि। प्रश्नक उत्तर नाटकक संवाद जकाँ सामने नहि अबैत; पाठक स्वयं दुआर, नदी आ पारक सम्बन्ध गढ़ैत अछि। गजल ३क ‘आउ ने’ सीधे उपस्थित होबाक विनती छल; ‘कहू ने’ एतय उपस्थित व्यक्ति सँ स्पष्टीकरण चाहैत अछि। एहि सूक्ष्म अन्तरमे गजलक नाटकीय क्रिया छिपल अछि—उपस्थितिक आग्रहक बदला ज्ञानक आग्रह। सम्बोधित व्यक्ति निश्चित चिन्हित नहि अछि; एकरा काल्पनिक चरित्रक निश्चित जीवनी देनाइ अनुचित होयत।

हँकारक स्थान आ नागरिक भूख

रातिमे गाम दिससँ अबैत स्वरक स्रोत की अछि? ‘के दैत अछि ओ हँकार’ एहि प्रश्नक सहारे आत्मीयताक पुरान ध्वनि बनि जाइत अछि। अगिला शेर अचानक राजधानीक भीड़ आ भूखक चेहराक प्रसङ्ग अनैत अछि। ‘ककरा लग अछि विचार’ पूछबाक अर्थ ई नहि जे राजधानीमे वास्तवमे केओ विचार नहि रखैत अछि; ई भूखक अनुभव सँ सत्ता अथवा सार्वजनिक विमर्शक दूरीपर कविक नैतिक प्रश्न अछि। निजी हँकार आ सार्वजनिक भूखक बीच रचनाक संक्रमण तीव्र अछि; एहि तीव्रतामे प्रश्नक दबाव बढ़ैत अछि, मुदा स्पष्ट प्रसङ्गक अभाव पाठक लेल राजनीतिक आशय बहुअर्थी छोड़ैत अछि। शहरक भीड़ एकटा अमूर्त व्यवस्था अछि, निर्दिष्ट सरकारी विभाग नहि।

बाढ़िमे बचौनिहारक नाम

‘बाढ़िमे हाथ पकड़ि जे पार कएलक’क बाद ‘से छल केहन आधार कहू ने’ अछि। ई शेर प्रभावशाली एहि लेल अछि जे ‘आधार’कें कागजी परिचय अथवा केवल पारिवारिक नाम सँ नहि, संकटमे सहायताक वास्तविक कर्म सँ चिन्हबैत अछि। तथापि बचौनिहारक नाम, सामाजिक अवस्था वा बाढ़िक विशिष्ट घटना मूल पाठमे नहि अछि। एहन रिक्तताकें सामाजिक इतिहासक सत्यापित कथामे फेरि लिखबाक बदला पाठक ग्रहण लेल खुलल रखब चाही। अन्तिम शेरमे ‘गीत

गुनगुनाइ' कऽ बहारक खोज चलैत अछि: सार्वजनिक भूख आ निजी स्मृतिक दुनू प्रश्न एकहि रदीफमे अधूर रहैत अछि।

रदीफ, तुक आ व्याकरण

काफिया '–आर' तथा रदीफ 'कहू ने' घोषित अछि;

'दुआर/पार/हँकार/विचार/आधार/बहार' एकहि अन्त्य-ध्वनिक परिवार बनबैत अछि। आरम्भक दूनू मिसरा एके रदीफसँ समाप्त होइत अछि, तकर बाद पाँचो शेरक दोसर मिसरामे ई अनुशासन चलैत अछि। 'मात्रा-क्रम: १६-२२' आ 'मिश्र कल-विन्यास' लेखकक स्वघोषित छन्द-विवरण अछि, स्वतंत्र मापनक परिणाम नहि। एकाधिक प्रश्नरूपी पाँतिक कारण काव्य श्रव्य रूपमे जीवित अछि, मुदा गजल पुनः दुआर-पार-हँकारक पहिनुक परिचित काफिया-समूहपर निर्भर अछि। विषयक भाषिक अन्वेषण एहि परिचित अन्त्यानुप्रासक परे कतए पहुँचल, ई प्रश्न समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

पाठ-साक्ष्य : मोनक भीतर कोन दुआर कहू ने / एहि नदीक कतऽ अछि पार कहू ने / बाढ़िमे हाथ पकड़ि जे पार कएलक / से छल केहन आधार कहू ने

गजल १३ : के जानै

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आत · रदीफः के जानै

अज्ञेयताक रदीफ आ ज्ञानक सीमा

‘के जानै’क पहिल दू मिसरा कथनकर्ताक सामने रहस्य नहि, ज्ञानक सीमाक स्वीकार राखैत अछिः ककर मोनमे की अछि, राति कतबा नम्हर अछि—ई दूनूक उत्तर तुरन्त उपलब्ध नहि । रदीफ प्रत्यक्ष अनुभव आ दोसराक भीतरक अवस्थाक बीच अन्तर चिह्नित करैत अछि । ‘ककर मोनमे कोन बात’ सामान्य वाक्य अछि, मुदा लगातार ‘के जानै’ जुड़ला सँ निश्चित घोषणा सम्भावनासूचक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि । नव्य-न्यायक परिप्रेक्ष्यमे एकरा प्रत्यक्ष आ अनुमानक दायरा अलग रखबाक नाट्यहीन काव्याभ्यास कहि सकैत छी; ई सैद्धान्तिक पाठ अछि, लेखकक औपचारिक दार्शनिक प्रतिज्ञाक प्रमाण नहि ।

पुनर्निर्माणक भीत आ भीतरक मेह

‘घर उजड़ल, फेर घर ठाढ़ भऽ गेल’ सुनिते पाठक संकट समाप्त बुझि सकैत छथि, मुदा ‘भीत भीतरक बरसात के जानै’ ओहि निष्कर्षकें तुरन्त चुनौती दैत अछि । घरक बाहरी देह आ ओकर भीतरक स्मृति एक नहि । गजल १मे ‘भीत पर पानिक पुरान मार’ दृश्य चिन्ह छल, गजल ११मे खपरैल पर बरसातक अनुभूति, आ एहि ठाम भीतक भीतरक बरसात अदृश्य मानवीय आघात । तीनू जगह वस्तु-स्मृतिक सम्बन्ध बदलैत अछि, ताहि सँ विषयक एकरूपता सिद्ध होइत अछि; तथापि जलक एहि एके रूपकक आवृत्तिक आलोचनात्मक सीमा सेहो मानल जाए ।

नारा, भूख आ चेहराक भेद

तेसर शेर कहैत अछि ‘राज बदलल, नारा फेर बदलल’, मुदा भूख पर ‘घात’क प्रश्न बचल अछि । एहि पाँतिसँ चुनावी परिणाम, विशिष्ट सरकार वा जनसांख्यिक स्थिति स्थापित नहि होइत । ई रूपक राजनीतिक परिवर्तन आ जीवनक असमान निरन्तरताक दूरी रचैत अछि । ओकर बाद ‘हँसैत मुँह’क दृश्यसँ सामाजिक प्रमाणक प्रश्न उठैत अछिः देखल हँसीकें आनन्दक पूर्ण ज्ञान नहि मानल जा सकैए । आँखि भीतरक आघात कतहु छिपल रहि सकैत अछि । पहिल

शेरक मानसिक अज्ञेयता आब सार्वजनिक आ व्यक्तिगत दुनू दृश्यपर लागू होइत अछि; ई रचनाक आन्तरिक शास्त्रीय सङ्गति अछि।

समापन आ मात्रिक घोषणा

अन्तिम शेरमे 'गीत लिखैत रहि जाए' आ 'के पढ़त ई सौगात'क अनिश्चितता कविक अपन भविष्यपर सेहो उही 'के जानै' लागू करैत अछि। एहिसँ रदीफ केवल आनक मन पढ़बाक असमर्थता नहि, अपन काव्यक ग्रहण सम्बन्धी प्रश्न बनैत अछि। काफिया '-आत'क अंतर्गत 'बात/रात/बरसात/घात/आघात/सौगात' अछि। 'निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास' आ प्रति मिसरा १७-२० मात्राक घोषणा अलग जाँचक विषय अछि। गजल ११क 'बात/रात/बरसात/सौगात/आघात' तुक-समूह एतहु लगभग तद्रूप लौटैत अछि; एहि पुनरावृत्तिक कारण समापनक विषयगत सफलताक संग शिल्पक स्वायत्तता सीमित होइत अछि।

पाठ-साक्ष्य : ककर मोनमे कोन बात के जानै / कतेक लम्बी अछि ई रात के जानै /
हँसैत मुँह देखि सभ मानै सुखी / आँखि भीतरक आघात के जानै

गजल १४ : राति भरि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः २०-२६
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आइल · रदीफः राति भरि

एक रातिक समयविस्तार

‘राति भरि’ रदीफ सम्पूर्ण काव्यक काल-परिसीमा तय करैत अछि । ‘तोहर सुर मोनमे समाइल’ आ ‘मेघ खिड़की पर लहराइल’ दू भिन्न ध्वनि-क्षेत्र निर्माण करैत अछि—एक भीतरी स्मृतिस्वर, दोसर बाहरक प्रकृति । मुदा कथनकर्ता रातिक एकेक घटना बयान करैत छथि; रदीफ प्रत्येक अनुभवकें उही अवधि तक घुरबैत अछि । एहि संकुचित समय-वृत्तसँ गजलकें एकटा एकाकी मानसिक दृश्य भेटैत अछि । पहिल गजलमे साँझ सँ घरक स्मृति जागल छल, एहि ठाम पूरा राति अपन गीत आ ध्वनिमे बीतैत अछि ।

नगर सूतल, कान जागल

‘नगर सूतल, मुदा कान खुलले रहल’ व्यक्तिगत जागरणक एकटा सटीक श्रव्य बिम्ब अछि । शहरक नीन्द आ एक व्यक्तिक श्रवणक अन्तरसँ पूर्व परिचित गाम-नगर द्वन्द्व फेर उठैत अछि, मुदा एहि बेर दुआर वा भीत नहि, श्रुत हँकार सेतु बनैत अछि । ‘दूर गामक हँकार सुनाइल’ वास्तविक ध्वनि सेहो भऽ सकैत अछि आ मनमे बचल स्वर सेहो; मूल पाठ एहि दुनूक बीच सीमा निश्चित नहि करैत । एहन खुलल अर्थ कविता लेल उपयुक्त अछि । मुदा बारम्बार ‘हँकार’ पर निर्भरता गजल १, ९ आ १२सँ सुनिते शैलीगत अनुकरणक एकरूपताक संकेत सेहो दैत अछि ।

चिट्ठीक गन्ध आ जागरण

पुरान चिट्ठी खोलि फेर राखि देबाक क्रिया नाटकीय घटनासँ बेसी अल्प गति राखैत अछि । ‘कागजक गन्धि मन बहलाइल’क भीतर स्मृतिक दृश्य मात्र नहि, घ्राणेन्द्रिय सेहो जुड़ैत अछि । गजल २ आ ११मे चिट्ठी जरा देल गेल छल; एहि गजलमे चिट्ठी बचल अछि, पढल-जाएबाक बीच फिरी बन्द भऽ रहल अछि । एहि अन्तरक कारण पुनरावृत्त वस्तुक दोसर उपयोग बनैत अछि । निन्न अबैत-अबैत टूटब आ सपनामे चेहरा देखाइब जागरणक विरोधाभास बनबैत अछि—सपना आ पूर्ण जागरणक सीमा अनिश्चित अछि; से अस्पष्टता अनुभवक लयकें कोमल राखैत अछि ।

ध्वन्यात्मक योजना आ भावगत सीमा

घोषित काफिया ‘-आइल’ तथा रदीफ ‘राति भरि’ अछि।

‘समाइल/लहराइल/सुनाइल/बहलाइल/देखाइल/गुनगुनाइल’क श्रव्य शृंखला स्पष्ट रूपसँ रदीफक आगाँ व्यवस्थित अछि। ई गजल पहिल दसक किछु अस्थिर काफिया-वाक्यविन्यासक तुलनामे अधिक एकाग्र ध्वनि-संरचना दैत अछि।

तथापि ‘२०-२६ मात्रा प्रति मिसरा’क पैघ दायरा आ ‘मिश्र कल-विन्यास’क घोषणा ठोस अरूजी बहर स्वतः प्रमाणित नहि करैत। अन्तिम शेरमे ‘टूटल गीत फेर गुनगुनाइल’ पहिल शेरक स्मृतिस्वरक वृत्त पूरा करैत अछि। सीमा ई जे कथ्य बहुधा परिचित एकाकी राति, चिट्ठी आ स्मृतिक सामग्रीसँ बनल अछि; ओकर विशिष्टता श्रव्य-घ्राण अनुभवक संयोजनमे अछि।

पाठ-साक्ष्य : तोहर सुर मोनमे समाइल राति भरि / मेघ खिड़की पर लहराइल राति भरि / निन्न आबै छल, आँखि फेर जागि उठल / तोहर चेहरा सपनामे देखाइल राति भरि

गजल १५ : रहए दिअ

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १७-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः रहए दिअ

रहय देबाक नैतिकता

‘रहए दिअ’ गजलक आह्वान वस्तु बचयबाक जिद्द नहि, जीवनक किछु अधूरापन सहबाक इच्छा अछि। पहिल मिसरा ‘एक पुरनका दुआर रहए दिअ’ स्मृति मात्र नहि, दुआरक भौतिक उपस्थिति बचयबाक आग्रह करैत अछि; दोसर मिसरा ‘मोनमे किछु बहार’ कहि भीतरक प्रसन्नताकेँ सेहो स्थान दैत अछि। दुआर आ बहारक संयुक्त बिम्ब व्यक्ति आ परिवेशक अविच्छिन्न सम्बन्ध खोलैत अछि। गजल दूक ‘रहि जाउ’ स्मृतिमे बाँचल प्रभाव चाहैत छल, जखनकि एतय ‘रहए दिअ’ केओ निर्णयकारी शक्तिसँ चीज नहि मेटबाक अनुरोध करैत अछि। एहि कारण रदीफक विनम्र आदेशरूप गजलक विशिष्टता अछि।

हिसाब आ नेहक विरोध

‘सभ हिसाब बराबर होए जरूरी नै’क बाद ‘नेहमे किछु उधार रहए दिअ’ नाटकीय उलटबाँसी अछि। हिसाबक कठोर समता आ नेहक खुलल देनदारी दुनू एके नीतिक अधीन नहि रहि सकैत—रचना एहि अन्तरकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि। तथापि उधारक रूपक कतहु केओ दोसराक शोषणकेँ सामान्य बनय देत कि नहि, एहि सामाजिक प्रश्नक स्पष्ट उत्तर पाठ नहि दैत। एकरा केवल उदारता वा केवल अनुचित लेनदेन मानब अधीर आलोचना होयत। एतय ‘उधार’ स्नेहक अधूर संवादक बिम्ब अछि, बैंक अथवा वास्तविक लेनदेनक इतिहास नहि।

आँगनक गाछ आ बोलबाक अधिकार

‘सभटा गाछ काटि घर पैघ नै करू’ एहि गजलक सबसँ ठोस सामाजिक मिसरा अछि। घरक भौतिक विस्तारक सामने आँगनक हरियर परिवेश बचयबाक आग्रह अछि। एहि शेरमे ‘संसार’ शब्द एकटा आँगनक वृक्ष-समाज धरि विस्तार पवैत अछि। ‘राजसँ असहमति रहए तँ रहए’क पाछाँ साँचक विचार मुखमे रहबाक इच्छा निजी जीवनसँ सार्वजनिक क्षेत्रमे गजलक गति बनबैत अछि। पर्यावरण आ असहमति एकहि आदेशनुमा रदीफमे जुड़ैत अछि, मुदा राज्य अथवा विशिष्ट परियोजनाक तथ्य पाठमे नहि अछि। ई नीति-कथन अछि, तथ्यपरक ऐतिहासिक प्रतिवेदन नहि।

काफिया आ समापनक मूल्य

मूल पाठ काफिया ‘-आर’, रदीफ ‘रहए दिअ’, १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा आ मिश्र कल-विन्यास घोषित करैत अछि।

‘दुआर/बहार/उधार/संसार/विचार/संसार’क तुकमध्ये ‘संसार’क दोहराव खटकैत अछि; अन्तिम शेरक मिथिलाक संसार बचयबाक वाक्य पहिल आँगनक संसारसँ अधिक व्यापक पाठ-समाज दिस गजलक गति बदलबैत अछि। कविक नाम मेटि सकबाक स्वीकार ग्रन्थ-केन्द्रित अमरत्वक आकांक्षाक प्रतिपक्ष अछि। उपलब्धि पुरनका वस्तु, नेह, गाछ आ मतभिन्नताकँ एकहि ‘रहए दिअ’क नैतिकता जोड़ब; सीमा विविध विषयक बीच अर्थ-सेतु कखनो केवल रदीफक सहारे बनल रहब अछि।

पाठ-साक्ष्य : एक पुरनका दुआर रहए दिअ / मोनमे किछु बहार रहए दिअ / राजसँ असहमति रहए तँ रहए / मुँहमे साँचक विचार रहए दिअ

गजल १६ : आइयो

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १६-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आर · रदीफः आइयो

पुनर्मिलनक नव स्वर कि पुनर्लेखन

‘आइयो’क आरम्भ ‘साँझ होइते हमर दुआर आइयो’ आ ‘एक बेर कमलाक पार आइयो’ गजल ३क ‘एहि सुनसान घरक दुआर आउ ने’ आ ‘एक बेर कमलाक पार तँ आउ ने’ सँ उल्लेखनीय निकट अछि । ई समानता संयोगवश सामान्य घर-विरहक बिम्ब भरि नहि—स्थान, सम्बोधन आ क्रम तक घनिष्ट अछि । अतः रचनासभक आन्तरिक पुनर्रचना पर प्रश्न उठब आवश्यक अछि । ‘आइयो’ ओही आमन्त्रणकें अधिक स्पष्ट भविष्य-बोध आ विनम्र निकटता दैत अछि; मुदा ई नव रदीफ पुरान कथ्यकें कतबा विस्तारित करैत अछि, से पाठक जाँचत । एहिठाम आलोचना एकर समानता छिपा कऽ स्वतन्त्र कथानकक दावा नहि करत ।

रिसब आ चुप्पीक सीमा

‘रुसि जाउ, मुदा चुप्पी पैघ नै करू’ दोसर बेर एहि संग्रहमे संवादक नैतिकता बनबैत अछि । गजल ३क नजिकक पाँति ‘रुसल तँ रहू, चुप्पी पैघ नै करू’सँ तुलना कएलापर ई स्पष्ट होइत अछि जे प्रस्ताव एकहि अछि: मतभेद रह्य, संवाद नहि टुटय । ‘लेने अपना हँकार आइयो’क वाक्यविन्यास कुछ कृत्रिम बुझा सकैत अछि; एहि असुविधाकें भावुक अनुकरणक नामपर नजरअन्दाज नहि कएल जाए । नेहक अर्थ पूर्ण सहमति नहि, एक-दोसराकें बजबाक अवकाश अछि—ई अर्थ दूनू गजल साझा करैत अछि ।

मेहक गन्ध आ बाढ़िक पुनर्निर्माण

एहि गजलमे ‘मेह पड़त तँ माटिक गन्धि उठत’क घ्राण-बिम्ब पुरान आमन्त्रणमे नहि छल । एहि नव घटकसँ वातावरण अधिक देहगत बनैत अछि । तकर बाद बाढ़िमे घर बहब आ लोकक फेर घर बनाबयक प्रसङ्ग अबैत अछि । आमन्त्रित व्यक्तिसँ ‘ककरो आधार’ बनयबाक आग्रह निजी स्नेहकें सार्वजनिक सहयोगमे फैलबैत अछि । मुदा गजल ३क बाढ़ि-घर-आधारक शेरक लगभग उही निर्माण एतहु उपस्थित अछि । नव काव्यक विशिष्टता माटिक गन्ध आ अधिक सामान्य जन-सहयोगक सूत्रमे अछि; शेष संरचनाक पुनरावृत्तिक कारण पाठकें स्वतन्त्र विकसित गजल मानबाक पक्ष कमजोर होइत अछि ।

रूप-नियोजन आ अन्तिम झंकार

काफिया ‘-आर’, रदीफ ‘आइयो’, मात्रा-क्रम १६-२० आ निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास घोषित अछि। ‘दुआर/पार/हँकार/बहार/आधार/झंकार’ आ गजल ३क ‘दुआर/पार/हँकार/बहार/आधार/झंकार’क साम्य अत्यन्त स्पष्ट अछि।

अन्तिम ‘गीतक अन्तिम झंकार’ निजी सम्बोधनकँ कविक रचनात्मक प्रयत्नसँ जोड़ैत अछि, मुदा गजल ३क ‘गीतमे नव झंकार’क निकटता सेहो विद्यमान अछि। एहि कारण पुनर्लेखनक पारदर्शी स्वीकार आ दुनू पाठक रूपभेद चिन्हनाइ एहि गजलकँ प्रशंसामूलक आत्मप्रशस्तिसँ बेसी न्याय देत।

पाठ-साक्ष्य : साँझ होइते हमर दुआर आइयो / एक बेर कमलाक पार आइयो /
बाढ़ि घर बहा देत, लोक फेर बनत / बनि कऽ ककरो आधार आइयो

गजल १७ : कतेक दूर

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः कतेक दूर

भौतिक दूरी बनाम अनुभूत दूरी

‘घर लग अछि, दुआर कतेक दूर’ गजलक पहिल अन्तर्विरोध अछि। घर नजदीक रहितहुँ दुआर दूर बुझेनाइ भौतिक मानचित्रक समस्या नहि; प्रवेश, अपनत्व आ अधिकारक समस्या अछि। दोसर मिसरा नदी एतय, मुदा पार दूर—एहि अन्तरक दोहरा कऽ दूरीक द्विस्तरीय अर्थ दैत अछि। ‘कतेक दूर’ मात्र दूरी नापबाक प्रश्न नहि, अपन अधिकार सँ वञ्चित रहबाक अनुभूति सेहो बनैत अछि। गजल १२मे नदीक पार कतय अछि से जानकारी चाहल गेल छल; एतय पारक स्थानक बदला पहुँचबाक कठिनाई मुख्य अछि। एहि सूक्ष्म बदलाओमे अलग काव्यगत प्रश्न बनैत अछि।

नाव किनारपर, राहत दूर

‘बाढ़ि आयल, नाव किनार पर अछि’ आ ‘राहतक आधार कतेक दूर’ एकटा तीक्ष्ण विडम्बना अछि। साधन देखाइत अछि, मुदा ओकर मानवीय उपयोग सुनिश्चित नहि। एहन अन्तर सामाजिक सहायता-प्रणालीक नैतिक समीक्षाक आधार अछि। तथापि ई पाठ विशिष्ट राहत-अभियानक भौतिक उपलब्धताक समाचार नहि दैत; कविता मे नाव प्रतीक सेहो अछि। गजल ९ मे राहत नाव फोटो लेल अबैत छल, एतय नाव किनारपर रहितहुँ दूरी बनल अछि। दूनू शेर राहतक दर्शन आ वास्तविक पहुँचक अन्तर अलग-अलग ढङ्गसँ अभिव्यक्त करैत अछि।

भूख आ भाषणक बीच

राजधानीमे सुनाइत भाषण आ भूखसँ सरकारक दूरीक शेर सरकारी कथनक सार्वजनिक प्रचुरता तथा दैनिक जीवनक अभावक विपक्ष रखैत अछि। ई सत्ता-विरोधी स्वरिक अतिशयोक्ति अछि, बिना नाम-समयक ठोस नीति-विवरण नहि। चौथ शेर ‘नेहक गप्प सभ पोथीमे नीक लगै’क बाद मनुक्ख-सँ-व्यवहारक दूरी पर प्रश्न करैत अछि। एहि संगति मे कविक तर्क एकटा अछि: विचारक उच्चारण आ व्यवहारक अभ्यास समान नहि। राजधानी आ पोथीक दुनू संदर्भमे कथन सहज,

मुदा साधारणीकृत अछि। कविता अपन प्रश्नक जटिल उत्तर खोजबाक बदला प्रश्नक आवृत्तिपर टिकैत अछि।

सममिति आ शब्द-सीमा

काफिया ‘-आर’क पश्चात् रदीफ ‘कतेक दूर’ लगातार घुरैत अछि
—‘दुआर/पार/आधार/सरकार/व्यवहार/संसार’। १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा, मिश्र
कल-विन्यासक घोषणा स्वतंत्र छन्द-सिद्धि नहि। ‘मोनसँ संसार कतेक दूर’
अन्तिम मिसरामे निजी अनुभूति आ सार्वजनिक जगतक दूरीकेँ अमूर्त बनबैत
अछि। गजलक उपलब्धि सूक्ष्म प्रश्नकेँ दुआर, नाव आ भाषणक अलग संसारमे ले
जाएब; सीमा ई जे लगभग सभ शेर प्रश्नमे समाप्त होइत, जकर कारण कथनक
गति कखनो एकरे युक्ति पर निर्भर रहि जाइत अछि। विशेषतः ‘कतेक दूर’क
सार्वजनिक प्रसङ्ग गजल १क ‘कतेक दिन’क कालगत विरोध-सूत्रसँ तुलना
माँगैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : घर लग अछि, दुआर कतेक दूर / नदी एतऽ, पार कतेक दूर / नेहक
गप्प सभ पोथीमे नीक लगै / मनुखसँ व्यवहार कतेक दूर

गजल १८ : एखनहु

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १५-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आस · रदीफः एखनहु

एखनहु : असमाप्तिक प्रतिज्ञा

‘मोनमे बचल आस एखनहु’ आ ‘माटिमे ओ प्यास एखनहु’ एकटा बाह्य-भीतरी समानान्तर बनबैत अछि। आस व्यक्तिक मानसिक अवस्था अछि, प्यास धरतीक मानवीकरण; दुनूकें ‘एखनहु’ रदीफ वर्तमानमे रोपैत अछि। गजल ११क ‘एखन धरि’क तुलनामे ‘एखनहु’ अधिक संक्षिप्त, बोलचालक प्रवाहवला रूप अछि। मुदा दुनू रदीफक अर्थ-क्षेत्र अत्यन्त निकट अछि। गजलक मूल प्रश्न नव घटना नहियो भऽ सकैत अछि; ई संकट बीतलासँ मात्र ओकर असर समाप्त नहि होइत, एहि अनुभवकें फेर कहल जाइत अछि।

बाढ़िक बाद भीतपर त्रास

‘बाढ़ि गेल, घर फेर ठाढ़ भेल मुदा’क बाद ‘भीत पर ओ त्रास एखनहु’ अछि। गजल १क भीतपर पानिक पुरान मारक बिम्ब एतय भयक रूपमे रूपान्तरित भेल अछि। पहिने दीवार दृश्य प्रमाण छल; एखन ‘त्रास’ मनोवैज्ञानिक चिह्न बनि जाइत अछि। मुदा भाषा अति सघन होइतहुँ सामाजिक हानि सम्बन्धी किछु स्पष्ट प्रसङ्ग नहि दैत—ककर घर, केहन बचाव, केहन सामुदायिक प्रक्रिया—से सभ अनिर्दिष्ट अछि। गजल स्मृतिक सार्वजनिकीकरण करैत अछि, मुदा ओकर ऐतिहासिक विशेषता नहि चिन्हैत अछि। बाहरी शोधकर्ता लेल एहिसँ वास्तविक बाढ़िक तिथि निकालब अनुचित होयत।

हाट चलैत अछि, देह थाकल

‘लोक हँसैए, हाटो भरल अछि’ सार्वजनिक जीवनक सामान्यता देखबैत अछि; अगिला मिसरामे ‘देहमे थाकल साँस’क उपस्थिति व्यक्ति पर संकटक बचल असर देखबैत अछि। ई दृश्य गजल १३क ‘हँसैत मुँह’ आ आँखि भीतरक आघातसँ सटैत अछि, मुदा ‘हाट’क जनस्थान जोड़लासँ समाजक पुनः चलन आ देहक शेष थकानक अन्तर तीक्ष्ण होइत अछि। राज आ नारा बदललापरो लोकक टूटल विश्वासक विषय फेर अबैत अछि। एहि क्रममे रचनाक सबलता जीवनक बाहरी गति आ भीतरक चोटक विरोध अछि; ओकर पुनरावृत्त राजनीतिक कथन सीमित नव तथ्य दैत अछि।

काफिया आ सृजनक निरन्तरता

घोषित काफिया ‘-आस’, रदीफ ‘एखनहु’;

‘आस/प्यास/त्रास/साँस/विश्वास/आस’क तुक-सूत्र स्वच्छ अछि, अन्तिम ‘आस’ पहिल शब्दक पुनरावर्तन करैत अछि। ‘१५-२० मात्रा’ आ ‘मिश्र कल-विन्यास’क विवरण लेखकक प्रस्ताव अछि। कागजकें उज्जर राखि गीत लिखबाक आस बचयबाक अन्तिम शेर गजल १०क उज्जर कागज आ भोर-बाँचल विचारसँ सम्बन्धित अछि। एहि फर्कक कारण आशा एतय केवल काव्यात्मक बिम्ब नहि, वास्तविक लिखबाक अधूर काज बनैत अछि। तथापि एकहि ‘आस’ सँ आरम्भ आ समाप्ति काव्य-वृत्त बनबैतहुँ नव अर्थक विस्तारकें घटबैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : मोनमे बचल आस एखनहु / माटिमे ओ प्यास एखनहु / राज बदलल,
नारा फेर बदलल / लोकक टूटल विश्वास एखनहु

गजल १९ : फेर भेटत

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आर · रदीफः फेर भेटत

भेटब भविष्यक कल्पना अछि

‘फेर भेटत’ गजलक रदीफ कोनो सिद्ध घटना नहि, कथनकर्ताक भविष्यक विश्वास अछि। ‘जतऽ छुटल दुआर’ आ ‘एहि नदीक ओ पार’क उद्धारक शब्दकें देखला सँ स्पष्ट अछि जे स्थानक छुटि जाएब काव्यक आरम्भिक क्षति अछि। भेटबाक वचन आत्म-संवाद जकाँ आबैत अछि; सामने कोनो व्यक्ति प्रतिज्ञा करैत अछि, एहन दृश्य नहि। गजल १६क ‘आइयो’मे आगन्तुक सँ सक्रिय आवाहन छल, ‘फेर भेटत’मे भविष्य स्वयं सम्भावना बनबैत अछि। एहि बदलावमे आशाक स्वर अधिक आश्वस्त अछि, मुदा ओकर ज्ञानाधार काव्यक भीतर सत्यापित नहि अछि।

नाम बदलल, हँकार बचल

‘नाम बदलि गेल, गाम बदलि गेल’क बाद पुरनका हँकार फेर भेटबाक दावा सामाजिक रूपान्तरण आ स्वर-स्मृतिक अन्तर बनबैत अछि। पहचानक कानूनी वा स्थानीय नाम बदलल, की ई विशेष राजनीतिक घटना अछि? पाठ एहि विषयमे मौन अछि; एकरा अनुमानसँ स्पष्ट करब अनुचित। रेल दूर लऽ गेल, मुदा मोन ओतहि रहल—ई शेर प्रवासक आधुनिक साधन आ स्मृतिक पुरनका आसनक अन्तर रचैत अछि। पीपर तरक बहारक सम्भावित पुनर्भेट घरक स्मृतिकें वनस्पति-संवेदनासँ जोड़ैत अछि। तथापि दुआर, पार आ हँकारक बारम्बार वापसी एहि संग्रहक पूर्ववर्ती गजलक बहुत परिचित शब्द-संसार अछि।

बाढ़िक काटल आरि आ सामूहिक हाथ

‘बाढ़ि आरि काटि दे, खेत अलग हो’क बाद ‘लोकक हाथक आधार फेर भेटत’ व्यक्तिगत पुनर्मिलनक आशाकें सामूहिक पुनर्संयोजनमे बदलैत अछि। आरि कृषिभूमिक सीमांकनक ठोस शब्द अछि; बाढ़ि खेतक भौतिक सम्बन्ध छिन्न-भिन्न करैत अछि, मुदा हाथक साहाय्यक नवीनीकरण सम्भव कहल गेल अछि। एहि शेरमे लोक-जगत विशेषता पबैत अछि; सहायताक आधार केवल प्रियतमा वा प्रियजनक व्यक्तिगत आगमन नहि रहैत। किन्तु बाढ़िक बादक जमीन-विवादक

तथ्य-व्यवस्था पाठमे नहि अछि—शब्द ‘आरि’सँ स्वतः कोनो अभिलेखीय विवाद स्थापित नहि होइत।

छन्द-विधान आ पुरान गीतक संसार

काफिया ‘-आर’, रदीफ ‘फेर भेटत’, १६-२० मात्रा प्रति मिसरा आ निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास घोषित अछि।

‘दुआर/पार/हँकार/बहार/आधार/संसार’क अनुक्रम गजल ३ आ १६क तुक-परिवारसँ घनिष्ट अछि। अन्तिम शेरमे पुरान गीत खोलि देखबाक क्रिया स्मृतिसँ काव्य-साक्ष्य दिस बढ़ैत अछि, मुदा ‘एक सुरक संसार फेर भेटत’क वाक्य नवीन वस्तुवर्णन नहि दैत। गजल आशाक सामाजिक विस्तार करैत अछि, तथापि रदीफ बदलि एकहि तुक-पथ पर चलबाक पुनरावृत्ति स्पष्ट अछि। एहन पुनरावर्तनकें पाठ-इतिहासक विशेषता मानि दर्ज करब चाही, निज आपमे मौलिकताक प्रमाण नहि।

पाठ-साक्ष्य : जतऽ छुटल दुआर फेर भेटत / एहि नदीक ओ पार फेर भेटत / बाढ़ि आरि काटि दे, खेत अलग हो / लोकक हाथक आधार फेर भेटत

गजल २० : रहबे करत

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ओर · रदीफः रहबे करत

अनिश्चित भविष्यक दृढ स्वर

‘रहबे करत’क बलाघात ‘बाकी अछि’ (गजल १०) सँ अलग अछि। पहिल रदीफ वर्तमानमे बाँचल सम्भावना देखबैत छल, ई रदीफ भविष्यक टिकाउपन घोषित करैत अछि। ‘राति कतबो, भोर रहबे करत’मे रात्रिक परिमाण गौण, भोरक अनिवार्यता मुख्य अछि। ‘मौन भीतर शोर रहबे करत’ बाह्य चुप्पी आ आन्तरिक प्रश्नक विरोध बनबैत अछि। एहि पाँतिक पाठ गजल १०क ‘गाम चुप’ आ ‘घर-घर भीतर कने शोर’सँ मिलैत अछि; भावक निरन्तरता स्पष्ट, नव परिवर्तन मुख्यतः दृढताबोधी क्रियारूपमे अछि।

डोरक आशा आ वास्तविक खतरा

‘बाढ़ि घर बहा दे, नाव टूटि जाए’क पाछाँ ‘हाथमे एक डोर रहबे करत’ जीवित सम्बन्धक न्यूनतम वस्तु बचबाक प्रतिज्ञा अछि। गजल १०मे नाव आ पतवार टूटलाक बाद ‘हाथमे एखनो डोर तँ बाकी अछि’ छल; एतय उही प्रतीक ‘रहबे करत’क भविष्यवाचक बल पवैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई गजलक सबसँ स्पष्ट अन्तःपाठीय सम्बद्धता अछि। मुदा वास्तविक बाढ़िमे हाथक डोर सँ सभ किछु बाँचबे करत, ई प्रत्यक्ष तथ्य नहि; ई आशाक रूपक अछि। एकर कल्पनाशील महत्त्व संकटकेँ पूर्ण अन्त नहि मानब अछि, सीमा एकहि प्रतीक-विन्यासक पुनः प्रयोग अछि।

सत्ताक परिवर्तन आ गामक मोन

‘राज बदलि जाए, नारा बदलि जाए’क सामने ‘लोक भीतर जोर’ बचल रहबाक कथन लोकक सम्भावित प्रतिरोधकेँ आशावादी स्वर दैत अछि। गजल १३ आ १६मे राज आ नारा बदलबाक लगभग एकहि सूत्र छल; एहि बेर राजनीतिक निश्चयक बदला लोकक ऊर्जा केन्द्र अछि। दूर देशमे कमाइ करैत ‘नेना’क मोनमे गामक ‘ओर’ रहबाक बिम्ब पलायन आ अपनत्वक बीच भावनात्मक धुरी बनबैत अछि। किन्तु नेनाक आर्थिक अनुभव, उमेर वा वास्तविक प्रवास-आँकड़ा पाठ नहि दैत। एकर महत्त्व सामाजिक वास्तविकताक प्रतीकात्मक सूचनामे अछि, न कि पूर्ण श्रम-इतिहासक प्रामाणिक विवरणमे।

अन्तिम गीत आ ध्वनिशास्त्रीय प्रश्न

काफिया ‘-ओर’, रदीफ ‘रहबे करत’; ‘भोर/शोर/डोर/जोर/ओर/हिलोर’क ध्वनि-सूत्र स्पष्ट अछि। घोषित प्रति मिसरा १६-२१ मात्रा आ मिश्र कल-विन्यास ठोस समबहरक स्वतंत्र प्रमाण नहि। अन्तिम शेरमे ‘कलम थाकि राखि देत’ कहला परो गीतमे हिलोर रहबाक आश्वासन सर्जनात्मक व्यक्तित्व आ कृतिक परवर्ती जीवनक अन्तर खोलैत अछि। ई दीवानक पहिल बीस गजलक समापनक एकटा उपयुक्त काव्य-चिह्न अछि, मुदा गजल १०क उज्जर कागज आ आशाक मूल विन्याससँ मिलताजुलता अछि। चूँकि ‘रहबे करत’क प्रबल निश्चितता पाठमे प्रमाणक बदला रचनाकारक इच्छा अछि, समीक्षा ओकरा दार्शनिक अपरिहार्यता नहि मानत।

पाठ-साक्ष्य : राति कतबो, भोर रहबे करत / मौन भीतर शोर रहबे करत / दूर देशमे नेना कमाइ करए / मोनमे गामक ओर रहबे करत

गजल ११-२०क अन्तररचनात्मक मूल्याङ्कन

एहि दस गजलमे संवादक अपूर्णता (‘एखन धरि’), ज्ञान-प्रश्न (‘कहू ने’, ‘के जानै’), समय-बन्दी स्मृति (‘राति भरि’), संरक्षणक नैतिकता (‘रहए दिअ’), मिलबाक आग्रह (‘आइयो’), सामाजिक दूरी (‘कतेक दूर’), संकटपरान्तिक स्मृति (‘एखनहु’), पुनर्भेटक भरोसा (‘फेर भेटत’) आ भविष्यक दृढता (‘रहबे करत’) एक-एक स्वतंत्र रदीफ-पद्धति बनबैत अछि। रदीफ काव्यक विषय नामांकित करैत अछि, मुदा सब जगह नव बिम्ब आ नव दृश्य समान परिमाणमे नहि भेटैत। ई अन्तर समीक्षा लेल केन्द्रीय अछि।

सबसे महत्वपूर्ण आत्म-पाठीय समानता तीन जोड़ीमे अछि। गजल २ आ ११ मे जरेल चिट्ठी, अँगुरीक स्मृति आ बरसातक पुनरुपयोग; गजल ३ आ १६ मे दुआर, कमलाक पार, रिसब, चुप्पी, आधार आ झंकारक लगभग समान क्रम; गजल १० आ २० मे भोर, शोर, डोर आ आशाक समांतर निर्माण। ई समानता दुर्लभ आकस्मिक मेल नहि बुझाइट; साहित्यिक कृतिसभक भीतर आन्तरिक पुनर्लेखन आ आवर्तक शब्दविधानक ठोस साक्ष्य अछि। परन्तु लेखकक रचनात्मक प्रक्रिया अथवा पहिल-दोसर लिखबाक वास्तविक कालक्रम एहि मिलानसँ सिद्ध नहि होइत।

गजल १२ आ १७ मे नदीक पार, भूख, राहत आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न उपस्थित अछि; गजल १५ मे गाछ, बचब आ असहमतिमे साँचक अधिकार, गजल १९ मे खेतक आरि आ सामूहिक सहायताक प्रसङ्ग विशेष सामाजिक ठोसपन

अनैत अछि। एकर विपरीत 'राज बदलल/नारा बदलल' आ 'गामक हँकार' सन सूत्र वारम्बार आबैत अछि। कतहु ई सांस्कृतिक स्मृतिक एकरूपता बनबैत अछि, कतहु नव दृष्टिक अपेक्षा छोडैत अछि। साहित्यिक मूल्याङ्कनमे एहि दुनू फलक अलग रखब आवश्यक अछि।

दस गजलक प्रत्येकमे काफिया आ रदीफक मुद्रित दावा उपस्थित अछि, मुदा '१६-२२', '२०-२६' सन मात्रिक दायरा तथा 'मिश्र कल-विन्यास' स्वयं निश्चित अरूजी बहरक छन्द-प्रमाण नहि। अरूज वा मात्रिक लयक अन्तिम निर्णय वास्तविक मैथिली उच्चारण, अल्प/दीर्घ स्वर, संयुक्ताक्षर आ यतिक मापनसँ होयत। वर्तमान आलोचना मुद्रित औपचारिक परिकल्पना आ प्रत्यक्ष दृश्य-ध्वनि-साक्ष्यक अन्तर पारदर्शी रखैत अछि।

गजल ११-२०क मूल पाठ-पञ्जी

क्रम	मूल शीर्षक	मात्रा-घोषणा	काफिया-रदीफ
११	एखन धरि	१८-२४	-आत · / एखन धरि
१२	कहू ने	१६-२२	-आर · / कहू ने
१३	के जानै	१७-२०	-आत · / के जानै
१४	राति भरि	२०-२६	-आइल · / राति भरि
१५	रहए दिअ	१७-२२	-आर · / रहए दिअ
१६	आइयो	१६-२०	-आर · / आइयो
१७	कतेक दूर	१६-२१	-आर · / कतेक दूर
१८	एखनहु	१५-२०	-आस · / एखनहु
१९	फेर भेटत	१६-२०	-आर · / फेर भेटत
२०	रहबे करत	१६-२१	-और · / रहबे करत

गजल २१-३० : तेसर मूल पाठाधारित तुलनात्मक अध्ययन

आधारपाठ : 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड १, गजल क्रम २१-३०क सत्यापित मूल Word पाण्डुलिपि। एहि अध्ययनमे प्रत्येक गजलक दसू मिसरा, मूल शीर्षक, बहर-घोषणा, मात्रा-क्रम, कल-क्रम, काफिया आ रदीफक स्वतंत्र मिलान भेल अछि। पूर्ववर्ती गजल १-२०क सम्पूर्ण आलोचनात्मक गद्य आ ऐतिहासिक योजना सुरक्षित अछि।

गजल २१ : घुरि आउ ने

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२६
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास ·
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: घुरि आउ ने

दुआरसँ कमलाक पार धरि: लौटबाक आयग्रह

‘घुरि आउ ने’क रदीफ एकटा सम्बोधित व्यक्तिक अनुपस्थितिक आसपास गजलक समय बनबैत अछि। पहिल शेरमे ‘साँझ गुम्म भेल, थाकल दुआर’ आ ‘कमलाक पानि पुकारै ओहि पार’ संगठित अछि। दुआर गृहस्थ जीवनक सीमा अछि, कमलाक पार नदी-पारक दूरी; दुनूक बीच लौटबाक विनती पहुँचैत अछि। ‘थाकल दुआर’ निर्जीव वस्तुकेँ प्रतीक्षा करैत देहक समान अनुभूति दैत अछि। मुदा नदीक पानि वास्तवमे व्यक्ति विशेषकेँ पुकारैत अछि, एहन प्रत्यक्ष कथन नहि: ई प्रकृतिक मानवीकरण अछि। यतय अभावक पात्रक नाम, प्रवासक कारण अथवा वास्तविक घटनाक स्पष्ट कथा नहि अछि; तँ एकरा निश्चित जीवनीक रूपमे प्रस्तुत करब अनुचित होयत।

रिसब, चुप्पी आ दू आखरक हँकार

दोसर शेरमे ‘रूसल रहू, मुदा चुप्पीकेँ घर नै बनाउ’ कहि कवि मिलनक शर्त राखैत छथि—असहमति रहि सकैत अछि, मुदा संवादक केवाड़ी बन्द नहि हो। ‘दू आखरक देल हँकार’ वापसी लेल साधारण, मानवीय सङ्केत अछि। ई गजल ३ ‘आउ ने’ आ गजल १६ ‘आइयो’क बहुत निकट कथ्य राखैत अछि: दुआर, नदीक पार, रिसब/चुप्पी, हँकार आ झंकारक क्रम पुनः उपस्थित अछि। एतय मुख्य रूपान्तर रदीफमे ‘घुरि’ जुड़ब अछि—नव मिलन मात्र नहि, पहिनुक ठाममे प्रत्यावर्तन। मुदा एकहि दृश्यक्रम फेर अबैत रहला सँ रचनाक स्वतंत्र कल्पनात्मक विस्तार संकुचित सेहो होइत अछि।

मेहक गन्ध आ बाढ़िक बादक थाकल लोक

‘मेहक पहिल गन्धि’ आ ‘गाछी-आँगन’ निजी स्मृतिमे गामक इन्द्रियानुभव जोड़ैत अछि। तुरन्त पाछाँ ‘बाढ़ि उतरि गेल, मुदा लोक थाकल अछि’ सामूहिक जीवनक प्रसङ्ग बनबैत अछि। बाढ़ि उतरब सामाजिक पुनर्स्थापनाक पर्याय नहि—थाकल लोककेँ ‘थामि लेबाक बनि आधार’ कहब एकटा कर्ममूलक सम्बन्धक मांग अछि। एहि बिन्दुपर गजल निकटजनक लेल प्रेम-निवेदनसँ सामूहिक सहायताक नैतिकता दिस बढ़ैत अछि। मुदा पाठमे बाढ़िक साल, विशिष्ट गाम,

राहत-अनुभव अथवा सहायता देबाक तथ्य नहि; ओहि अभावकेँ पाठ-बाह्य प्रमाणसँ पूरल मानब उचित नहि।

तुक-संरचना आ समापन

घोषित काफिया ‘-आर’ आ रदीफ ‘घुरि आउ ने’;

‘दुआर/पार/हँकार/बहार/आधार/झंकार’ ओकर प्रत्यक्ष उदाहरण अछि। दसू मिसराक पारायणमे पाँच शेरक गठन भेटैत अछि; मतलाक दुनू मिसरा आ बादक शेरसभक दोसर मिसरामे ध्वन्यात्मक अनुशासन रचल अछि। ‘१८-२६ मात्रा प्रति मिसरा’ आ ‘मिश्र कल-विन्यास’ मूल पोथीक घोषणा अछि; आठ मात्राक फैलाव समान अरूजी बहरक स्वतन्त्र सिद्धि नहि। अन्तिम ‘आधा गीत’ आ ‘अन्तिम सुरक झंकार’ भावक अद्यापि अपूर्ण रहबकेँ रदीफक संग जोड़ैत अछि। उपलब्धि संवादक आग्रह; सीमा गजल ३/१६क बिम्बक अत्यन्त निकट पुनरुपयोग।

पाठ-साक्ष्य : साँझ गुम्म भेल, थाकल दुआर घुरि आउ ने / कमलाक पानि पुकारै
ओहि पार घुरि आउ ने / बाढ़ि उतरि गेल, मुदा लोक थाकल अछि / थामि लेबाक
बनि आधार घुरि आउ ने

गजल २२ : कहू तँ सही

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १८-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आत · रदीफः कहू तँ सही

प्रश्नक रूपमे नैतिक हिसाब

‘कहू तँ सही’ पाँचो शेरमे उत्तरक मांग बनैत अछि। ‘ककरा देलियै ई बात’ आ ‘कतेक लम्बी भेल रात’ एकहि रदीफसँ समाप्त होइत अछि, मुदा प्रश्नक विषय अलग अछि—विश्वासक सम्बोधन आ समयक अनुभव। कोनो विशिष्ट वक्तव्य ककरा देल गेल, से मूल पाठ नहि बतबैत; ई अनिर्दिष्टता गजलक प्रश्नात्मक स्वर बनबैत अछि। रदीफक ‘तँ सही’ मे सामान्य विनतीसँ तनिक आग्रह बेसी अछि। एहि अर्थमे गजल १२ ‘कहू ने’क अपेक्षा प्रसङ्गगत उत्तरदायित्वक दबाव बनबैत अछि, जँ कि दूनू रचनामे प्रश्नक पुनरावृत्ति शिल्पक मुख्य साधन अछि।

हँसैत मुँह आ असुनल आघात

‘हँसैत मुँहक पाछाँ नोर कतेक छै’क लग ‘के बुझलक ओ आघात’ रखला सँ देखाइत चेहरा आ अनुभवक अन्तर्भाग बीच अन्तर खुलैत अछि। ई नव्य-न्यायक प्रत्यक्ष आ अनुमानक भेदक संग समीक्षात्मक तुलना योग्य अछि: हँसी देखब आ दुःखक परिमाण सुनिश्चित करब अलग विषय। मुदा कविताक पाँति स्वयं न्यायदर्शनक शास्त्रीय प्रतिज्ञा नहि। ‘नोर कतेक’क संख्यात्मक प्रश्न दुःखकें मापनक विषय बनबैत नहि; अपितु अपरिचित पीडाक अगम्यताक बोध बनबैत अछि। ‘के जानै’ (गजल १३)मे देखल अवस्थसँ अन्तःस्थितिक अनुमानक समान समस्या पहिनहिसँ उपस्थित अछि—एहि पुनरावृत्तिक सीमा सेहो ध्यानमे रहय।

बरसातक अभाव आ नेहक अभाव

‘मेह बिना खेतक रंग पीअर पड़ल’क अगिला मिसरा ‘ककरा भेटल बरसात’ पूछैत अछि। एहि ठाम बरसात जीवनसाधन अछि; केवल स्मृतिक ध्वनि नहि। ‘सभ हिसाबक बीच नेह कतऽ बचल’ कहि रचना लेखा-जोखाक सार्वजनिक भाषा आ भावनात्मक सम्बन्धक बीच विच्छेद देखबैत अछि। ‘ककरा देल ई सौगात’ एहि विच्छेदकें वस्तुक हस्तान्तरणक प्रश्न बनबैत अछि। खेतक पीअर रंग एकटा सुस्पष्ट दृश्य अछि, मुदा मौसमक कोनो बाह्य आँकड़ा प्रस्तुत नहि। रचनाक महत्त्व एहन प्रश्नसँ होइत अछि, जे अपन उत्तर नहि दैत, पाठकसँ सामाजिक सम्बन्धक पुनर्विचार माँगैत अछि।

मौनक भीतरक बात: छन्द आ आवर्तन

अन्तिम शेरमे 'गीतमे जे कहि नै सकल'क पाछाँ 'मौनक भीतरक बात'क प्रश्न छैक। प्रारम्भक 'बात' अन्तिम शेरमे घुरि कऽ एकटा वृत्त बनबैत अछि: गजल जे पूछैत अछि, गीतो ओही अनकहल चीजक सामना करैत अछि। घोषित काफिया '-आत' आ रदीफ 'कहू तँ सही'; बात, रात, आघात, बरसात, सौगातक श्रव्य शृंखला व्यवस्थित अछि। '१८-२१ मात्रा' आ 'निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास'क घोषणा वास्तविक ध्वनि-मापनक विकल्प नहि। गजल ११/१३क 'बात-रात-बरसात-सौगात' परिवारक आवर्तन ई आलोचनात्मक प्रश्न छोड़ैत अछि जे रूपगत सहजता नव ध्वनि-चयनकें सीमित त नहि कऽ रहल अछि।

पाठ-साक्ष्य : ककरा देलियै ई बात कहू तँ सही / कतेक लम्बी भेल रात कहू तँ सही / सभ हिसाबक बीच नेह कतऽ बचल / ककरा देल ई सौगात कहू तँ सही

गजल २३ : मोनमे अछि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारस्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १६-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आस · रदीफः मोनमे अछि

स्मृतिक अन्तःस्थानः आस आ प्यास

‘मोनमे अछि’ रदीफ विषयकै बाहरी घटना-सूचनासँ हटाकऽ भीतरी अनुभवक
ठाम ठहरबैत अछि। ‘गाम घुरबाक आस’ आ ‘माटिक मीठ प्यास’ दुनू वर्तमानमे
बाँचल आकांक्षा अछि। विशेषतः ‘मीठ प्यास’ स्वाद आ अभावक विरोधी
अनुभूति एकत्र करैत अछि। गाम केवल भौगोलिक ठाम नहि, मनमे पुनः निर्मित
अनुभव बनैत अछि। मुदा गामक निश्चित नकशा, प्रवासक कारण आ वक्ताक
परिचय रचनामे नहि देल गेल अछि; तँ बाह्य सामाजिक इतिहासक निश्चित
उदाहरण मानब अनुचित।

भीतक त्रास आ सामाजिक विश्वसनीयता

‘बाढ़ि उतरि गेल, भीत सुखा गेल’क बाद ‘पानिक पुरनका त्रास मोनमे अछि’
बाहरी सुखायल देवाल आ भीतरक नहि सुखायल आघातक अन्तर बनबैत अछि।
गजल १३क ‘भीत भीतरक बरसात’ आ एहि ‘पुरनका त्रास’मे इष्टान्तर अछिः
ओतय अनजान अनुभवक प्रश्न, एतय अनुभवक स्थितिक स्पष्ट स्वीकृति। ‘लोक
बदलै, राज बदलै, दिन बदलै’क बावजूद ‘लोकपर विश्वास’ बचल अछि, ई
निर्णायक रूपसँ आशावादी वृत्ति अछि। मुदा एहि सन्दर्भमे ‘लोक’क सामाजिक
भिन्नता, व्यवस्था आ वास्तविक राजनीतिक कालक्रम किछु नहि खुलैत; ई
आशाक काव्यात्मक सूत्र बनि रहैत अछि।

दूर देशक नेना आ माइक साँस

चौथा शेर ‘दूर देशमे नेना कमाइ करैत अछि’क संग ‘माइक थाकल साँस’कै
रखैत अछि। कमाइ स्वतन्त्र कार्य अछि, मुदा मातृ-सम्बन्धक व्यथा आ प्रतीक्षा
दूरिक प्रभाव बनैत अछि। ई प्रवासक एकटा नैतिक-भावनात्मक रूप अछि,
आर्थिक सर्वेक्षणक निष्कर्ष नहि। ‘साँस’ प्रथम शेरक ‘आस/प्यास’क अन्त्य-
ध्वनिक संग चलैत अछि आ अन्तिम ‘नवका गीतक साँस’ धरि पहुँचैत अछि।
ताहि सँ माइक जीवित देहक साँस आ नव गीतक रूपक-साँस समान तुक-कुलमे
भेटैत अछि। ई ध्वन्यात्मक संयोजन उपलब्धि अछि, मुदा एके शब्दक घुमाव नव
दृश्य बनबैत अछि कि पुरान भाव घुरबैत अछि, तकर परीक्षण आवश्यक अछि।

रदीफक मूल्य आ गजल २७ सँ पाठ-सम्बन्ध

काफिया ‘-आस’ आ रदीफ ‘मोनमे अछि’क कारण

‘आस/प्यास/त्रास/विश्वास/साँस/साँस’ क्रमक संगति बनैत अछि। पोथी ‘१६-

२२ मात्रा’ आ मिश्र कल-विन्यास घोषित करैत अछि; छह मात्राक अन्तरक

अन्तर्गत एक समान बहरक दावा स्वतंत्र उच्चारण-परीक्षण माँगैत अछि। गजल

२७ ‘बाँचल अछि’मे लगभग एहि समान शब्दावली, क्रम, बाढ़ि-त्रास, दूर देशक

नेना-माइक साँस, राज-विश्वास, गीत-आस पुनः अबैत अछि। एहि कारण गजल

२३क प्रगाढ़ मनोभूमिकेँ अलग मानैतहुँ ओकर पाठिय स्वायत्तता पर प्रश्न उठैत

अछि। जे पहिने लिखल गेल, तकर अनुमान एहि पाठ-मिलानसँ नहि निकलैत।

पाठ-साक्ष्य : गाम घुरबाक आस मोनमे अछि / माटिक मीठ प्यास मोनमे अछि /

दूर देशमे नेना कमाइ करैत अछि / माइक थाकल साँस मोनमे अछि

गजल २४ : बदलि गेलै

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १९-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः बदलि गेलै

‘ओही ठाम’क भीतर दोसर जीवन

‘घर ओही ठाम, मुदा दुआर बदलि गेलै’ एकटा छोट प्रतीकात्मक विसंगति अछि। घरक स्थानक स्थिरता दुआरक रूपान्तर रोकैत नहि; घरक सीमा बदललाक अर्थ ओकर प्रवेश, स्वागत वा सम्बन्धक तरीका बदलि सकैत अछि। ‘लोक ओही छथि, व्यवहार बदलि गेलै’ एहि विचारकेँ मानवीय सम्बन्धमे पसारैत अछि। गजल ७ ‘बदलि गेल’मे ‘ओही ठाम छी, गाम बदलि गेल’क विचार उपस्थित अछि; एहि रचनामे ठाम/दुआर आ लोक/व्यवहारक रूपान्तर अधिक घरेलू स्तरपर आएल अछि। मुदा बदलावक धारणा आ शीर्षकक अत्यधिक साम्य सजगतापूर्वक दर्ज करबाक चाही।

धान, हाट आ व्यापारक अर्थभेद

‘धान एखनहुँ खेतमे झुकैत अछि’क बाद ‘हाट पहुँचि कऽ व्यापार बदलि गेलै’ खेतीक ऋतुजन्य निरन्तरता आ विनिमय-संस्थाक बदलल रूपकेँ एक संग रखैत अछि। धानक झुकब दृश्यात्मक अछि, व्यापारक बदलब अमूर्त निष्कर्ष। गजल ७ मे हाटक मोल आ पसिनाक सम्बन्ध अधिक प्रत्यक्ष छल; एहि ठाम सामाजिक परिवर्तन व्यापक, मुदा कम विशिष्ट अछि। रचना कोन व्यापारी, कोन दाम, कोन बाजार-व्यवस्थाक बात करैत अछि, से नहि बतबैत। आर्थिक अर्थ निकालैत काल प्रतीकात्मक दावेकेँ आँकड़ाक रूपमे प्रस्तुत नहि करब उचित अछि।

प्रवास, सुननिहार आ गीतक नब साज

‘नेना शहर, बूढ़ घरमे गुम्म पड़ल’ अत्यल्प शब्दमे दू पीढ़ीक अलगाव प्रस्तुत करैत अछि। ई वाक्य प्रवासक दू पाटा देखाबैत अछि—बाहर गेल व्यक्तिक गति आ भीतर रहि गेल व्यक्तिक निस्तब्धता। अगिला शेरमे ‘बोल बहुत अछि, सुननिहार कम भेल’ सूचना-समृद्धि आ श्रवण-अभावक नैतिक विरोध अछि। अन्तिम ‘गीत ओही सुरमे लिखैए / गेबाक साज-सिंगार बदलि गेलै’ एहि पूरी शृंखलाकेँ स्वयं काव्यविधाक परिवर्तनपर लागू करैत अछि। विषय आब ‘बदलल लोक’ नहि, एकहि सुरक नव प्रस्तुति बनि जाइत अछि; ई आत्म-समीक्षात्मक मोड़ उल्लेखनीय अछि।

ध्वनिमूलक बन्ध आ पुनर्वाक्यांकन

घोषित काफिया ‘-आर’ रदीफ ‘बदलि गेलै’; दुआर, व्यवहार, व्यापार, संसार, विचार, साज-सिंगारक मिलान सुनाइत अछि। ‘साज-सिंगार’ सम्मिलित पदमे अन्त्यध्वनि संगति राखैत अछि, मुदा गजल ७क अन्त्यध्वनि आ विषयसँ नातेदारी घनिष्ट अछि। प्रति मिसरा ‘१९-२३ मात्रा’ आ ‘निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास’ मूल घोषणा मात्र अछि; प्रत्येक मिसराक कल-अंश अलग परीक्षण माँगैत अछि। उपलब्धि अस्मिताक बदलैत घर-समाज-गीत त्रिस्तर; सीमा बारम्बार ‘बदलल’क सहज निष्कर्षपर निर्भरता, जाहिसँ विशिष्ट घटना-विवरण कम पडैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : घर ओही ठाम, मुदा दुआर बदलि गेलै / लोक ओही छथि, व्यवहार बदलि गेलै / बोल बहुत अछि, सुननिहार कम भेल / बातक भीतरक विचार बदलि गेलै

गजल २५ : बाकी अछि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १७-२०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः प्रीत • रदीफः बाकी अछि

टूटल स्वरक भीतर बाँचल गीत

‘टूटल स्वरमे एक गीत बाकी अछि / थाकल देहमे प्रीत बाकी अछि’क माध्यमसँ
अभाव आ अवशेषक एक साथ पहचान बनैत अछि। रदीफ ‘बाकी अछि’
भविष्यक सम्भावना केँ एखनक उपलब्ध अवशेषक भाषा दैत अछि। टूटल स्वर
निर्बलता मात्र नहि; गीत गेबाक अंशतः शेष शक्ति अछि। ‘गीत’ आ ‘प्रीत’
तुकमात्र नहि, कलात्मक रचना आ आत्मीय सम्बन्धक परस्पर आश्रित रूप
अछि। तथापि एहन आशावादी संरचना गजल १० आ २०मे सेहो मिलैत अछि
— ‘भोर बाकी अछि’ आ ‘रहबे करत’क पाठीय परिवार एतहु उपस्थित अछि।

पीपर, मीत आ कृषि-रीतिक पुनः आरम्भ

‘लोक बिछुडल, कियो शहरमे बसि गेल’क बाद ‘पीपर तरक एक मीत’ बचल
अछि। ई गामक एक गोठ स्थिर स्थानकेँ सामाजिक स्मृतिक आधार बनबैत
अछि। ‘बाढ़ि आरि काटि गेल, धान बहि गेल / माटि जोतबाक रीत बाकी अछि’
पानिक विनाश आ कृषि-कौशलक निरन्तरता अलग करैत अछि। खेतक आरि
टूटब कृषि-जीवनक प्रत्यक्ष हानि अछि; ‘रीत’ मानवीय पुनःकाजक स्मृति अछि।
गजल १९मे सेहो आरि आ सामूहिक श्रमक प्रश्न देखल गेल छल। एहि कारण
घटना-मूलक प्रस्तुति सीमित होइतहुँ गजल स्थानीय श्रमक दीर्घता रूपायित
करैत अछि।

लोकक भीतरक जीत

‘राज बदलै, हार-जीत चलैत रहत / लोकक भीतर जीत बाकी अछि’ राजनीतिक
पलटाक बाह्य नतीजा आ सामूहिक धैर्यक भीतरक सम्पदा अलग करैत अछि। ई
शेर चुनावी इतिहास वा कोनो दलक वास्तविक हार-जीतक रिपोर्ट नहि; ओकर
रूपक राजनीतिक विजयक मापदण्डकेँ मानवीय टिकाउपन दिस मोड़ैत अछि।
‘कलम थाकि जाए तँ की’क बाद ‘मोन भीतर नव गीत’क रहब साहित्यिक श्रमक
निरन्तरता बनैत अछि। कविक हस्ताक्षरक उपस्थिति एतय आत्मगौरव नहि,
काव्यक ठहरब आ फेर आरम्भ होयबाक दुविधा बनैत अछि।

मूल औपचारिकता आ गजल ३०क निकट प्रतिलिपिक सवाल

घोषित काफिया 'ीत' आ रदीफ 'बाकी अछि' अछि;

गीत/प्रीत/मीत/रीत/जीत/गीत समान अन्त्यध्वनि बनबैत अछि। मात्रा-क्रम

१७-२० तथा निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यासक स्वतंत्र पुष्टिक लेल

उच्चारण-चिह्नित पाठ चाही। एहि रचनाक लगभग सभ मुख्य पद आ शेर-क्रम

गजल ३० 'बाँचि रहल अछि'मे अलग रदीफसँ पुनः भेटैत अछि। 'टूटल स्वर'

ओतय 'टूटल घर', 'लोक बिछुडल' ओतय 'लोक दूर-दूर बसि गेल', 'धान बहि

गेल' ओतय 'खेत आधा भेल' बनि जाइत अछि। ई समानता सहज साझा

विषयसँ बेसी ठोस पाँति-स्तरीय पुनर्विन्यास अछि; पुनर्लेखनक रचनात्मक आशय

प्रमाणित लेखन-काल बिना निर्धारित नहि कएल जाए।

पाठ-साक्ष्य : टूटल स्वरमे एक गीत बाकी अछि / थाकल देहमे प्रीत बाकी अछि /

राज बदलै, हार-जीत चलैत रहत / लोकक भीतर जीत बाकी अछि

गजल २६ : जाइत छी

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १८-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -रि · रदीफः जाइत छी

बहुत लोकक भीड़मे अपन नाम

‘भीड़मे अपन नाम बिसरि जाइत छी / गामक गन्धि आविते घुरि जाइत छी’क
प्रथम पुरुष आवाज स्वयंकेँ सामूहिक पहिचानक बीच खोजैत अछि। भीड़क
अनामिकता आ गामक गन्धिक तत्काल पहिचान—दूनु शेरमे प्रवासक व्यक्तिगत
अनुभवक रूप अछि। ‘घुरि जाइत छी’ वास्तविक रेल-यात्रा अथवा भूगोलक
घटना भऽ सकैत अछि, मुदा गन्धि-सँ लौटबाक रूपक सेहो होइत अछि; मूल
पाठ एकरा केवल वास्तविक यात्रा प्रमाणित नहि करैत। एहि अनिश्चयमे कविता
गामकेँ मनक दिशि बनबैत अछि।

दोसरा नोरपर ठहरल डेग

‘ककरो नोरक कथा जखन सुनि लैत छी / अपन डेग बीचमे ठहरि जाइत छी’क
सहारे अपन गतिकेँ दोसराक दुःख रोकैत अछि। ई नाटकक घटना नहि, मुदा
काव्यक नैतिक क्रिया स्पष्ट अछि: सुनब, ठहरब, साझा संवेदना। ‘मेह पडैए,
बाटि अचानक गुम्म होइए’क बाद ‘ककरो छप्पर तर उतरि जाइत छी’मे अज्ञात
व्यक्तिक घर संकट-साझेदारीक आश्रय बनैत अछि। छप्परक आश्रय अनिवार्य
रूपसँ आत्मीयता वा जातिगत समीकरणक निश्चित कथा नहि; अस्थायी
आश्रयक सभ्यता मात्र पाठसँ समर्थित अछि।

रोष सँ मौन धरि: आत्मसंयमक लय

‘रोष जखन शब्दकेँ आगि बना दैत अछि’क प्रत्युत्तर ‘मौनक पानि पी कऽ सँभरि
जाइत छी’ अछि। आगि-पानि विरोध एतय मनोवैज्ञानिक उतार-चढ़ावक ध्वनि
बनबैत अछि। मौनक पानि पीब वास्तविक क्रिया नहि, रूपक: उत्तेजनाक तुरन्त
अभिव्यक्तिक बदला आत्मसंयम। अन्तिम शेरमे ‘अपनाकेँ खोजैत’ कवि एक
आखरपर फेर ठहरैत छथि; आरम्भक भीड़मे हेरायल नाम आब लेखनक सूक्ष्म
इकाईमे खोजल जा रहल अछि। एहि प्रथम-अन्तिम ‘ठहरि’क पुनरावृत्तिसँ
पदगत अर्थ-विकास होइत अछि।

चलनशील रदीफ आ तुकक अनुशासन

काफिया ‘-रि’क तान ‘बिसरि/घुरि/ठहरि/उतरि/सँभरि/ठहरि’ सँ बनैत अछि;
रदीफ ‘जाइत छी’क संग एही क्रियाविशेषण रूपसभकें बान्हल गेल अछि। एहि
कारण अनुप्रास केवल नामपदक सूची नहि, क्रियाक क्रम बनवैत अछि। मूल १८-
२३ मात्राक दायरा आ मिश्र कल-विन्यास एके बहरक मात्रिक प्रमाणीकरण नहि;
तकर निर्णायक जाँच स्वर-सङ्कुचन सहित आवश्यक अछि। एहि दस गजलमे
एहन पहिल-पुरुष ‘हम’क गतिशील चरित्र वाचिक विविधता दैत अछि, मुदा
भीड़-गाम-मेहक पुनरावृत्त बिम्ब पहिनुक कवितासँ ओकर दूरी कम करैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : भीड़मे अपन नाम बिसरि जाइत छी / गामक गन्धि आबिते घुरि
जाइत छी / रोष जखन शब्दकें आगि बना दैत अछि / मौनक पानि पी कऽ सँभरि
जाइत छी

गजल २७ : बाँचल अछि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आस · रदीफः बाँचल अछि

बाँचल अनुभवक उद्घोष

‘मोनमे कने आस बाँचल अछि / माटिक गन्धिक प्यास बाँचल अछि’क आरम्भ
गजल २३क ‘आस मोनमे अछि / माटिक मीठ प्यास मोनमे अछि’सँ निकट
पाठीय सम्बन्ध रखैत अछि। नव रदीफ ‘बाँचल अछि’ स्थिति-सूचक ‘मोनमे
अछि’कें अस्तित्व-रक्षा आ धैर्यक क्रिया बनबैत अछि। ‘कने’क छोट परिमाण
आशाक न्यूनता बतबैत अछि, मुदा कविता एकरा समाप्ति नहि मानैत। एहि
अर्थमे रदीफक रूपान्तरण उपलब्धि अछि; ओही सँग बिम्बक बहुतेक शब्द जसक
तस रहला सँ स्वतंत्र रचनात्मकता सीमित बुझाइत अछि।

बाढ़ि आ भीतक भीतरक त्रास

‘बाढ़ि घर बहा देलक, लोक फेर ठाढ़ / भीत भीतर त्रास बाँचल अछि’ एकहि
शेरेमे पुनर्वास आ स्मृतिक असमान गतिकें दर्शबैत अछि। गजल २३मे बाढ़ि उतरि
गेल आ सुखायल भीत छल; एहि ठाम घर बहि गेल आ लोक फेर ठाढ़ भेलाह।
एहि परिवर्तनसँ विनाशक तीव्रता बढ़ैत अछि। मुदा ‘भीत भीतर त्रास’क
अर्थभिन्नता ध्यानयोग्यः घर बही गेलापर वर्तमान भीत केकर, तकर पाठीय स्थान
अस्पष्ट अछि। ई अस्पष्टता प्रतीक रूपमे स्वीकार्य भऽ सकैत अछि, मुदा
यथार्थवादी विवरणक रूपमे एकर ठोस ठाम स्पष्ट नहि।

माइक नेह आ लोकपर विश्वास

नेना दूर देशमे थाकि कमाइत छथि, माइक ‘नेहक साँस’ बाँचल अछि—एहि
भावमे गजल २३क ‘माइक थाकल साँस’ पुनरावर्तित होइत अछि। अंतर ई जे
‘थाकल’ मातृदेहक कठिन परिश्रम, जखनकि ‘नेहक’ मातृस्नेहक स्थिरता उभारैत
अछि। ‘राज बदलल, नारा बदलल’क बावजूद ‘लोकमे किछु विश्वास’ शेष अछि;
पुनः भिन्नता दृढ़ विश्वास आ ‘किछु’ विश्वासक क्षीण परिमाण बीच अछि। एहन
सूक्ष्म संशोधन पाठमे अर्थगत फर्क अनैत अछि, मुदा विचारधाराक व्यापक नव
स्तर अनिवार्यतः नहि खोलैत।

काफिया आ पाठान्तरक आलोचना

‘-आस’ काफिया आ ‘बाँचल अछि’ रदीफक घोषणामे आस/प्यास/त्रास/साँस/विश्वास/उल्लास सम्मिलित अछि। अंतिम ‘गीत भीतर उल्लास’ सर्जनाक खुशीक नाम दैत अछि, जखनकि गजल २३ ‘नवका गीतक साँस’पर समाप्त छल। काव्यक रूपमे ई मर्मभेद अछि—साँस सँ उल्लास धरि। मुदा १६-२१ मात्राक मिश्र घोषित संरचना एक समान समबहर सिद्ध नहि। गजल २३क क्रम, विषय आ पदसमूहक एतेक निकटता एकरा एकहि मूल पाठक भिन्न रदीफ-प्रयत्न रूपमे पढ़बाक सम्भावना खोलैत अछि; प्रमाणित रचना-तिथि वा लेखकक घोषणा बिना दोसर रचनाक ‘संशोधित संस्करण’ कहना सिद्ध नहि होयत।

पाठ-साक्ष्य : मोनमे कने आस बाँचल अछि / माटिक गन्धिक प्यास बाँचल अछि
/ राज बदलल, नारा बदलल, मुदा / लोकमे किछु विश्वास बाँचल अछि

गजल २८ : नै भूलब

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १७-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आर · रदीफः नै भूलब

स्मृतिक प्रतिज्ञा, परिचयक ठाम

‘नै भूलब’ शीर्षक आ रदीफ नकारात्मक शब्दावलीक भीतर सकारात्मक स्मृति-सुरक्षा अछि । ‘पहिल बेर खुलल ओ दुआर’ एकटा आरम्भिक अनुभवक स्मृति, ‘कमलाक ओहि धारक पार’ भौगोलिक दूरीक चिह्न अछि । पहिल बेरक अनुभव कोन छल, दुआर केकर, नदीक पार ककरा लेल—ई सभ अनिश्चित अछि; काव्यक बहुअर्थिता एही खुलेल प्रश्नमे अछि । गजल २१क ‘घुरि आउ ने’ वापसीक विनती छल, एहि गजलमे समय बीतलापर बिसरबाक विरोध अछि । एहिमे आश्रित सम्बन्धसँ आत्मस्मृतिक स्थितिमे कथकक भूमिका बदलैत अछि ।

माइक हँकार आ घ्राणक संवेदना

‘निन्न तोड़ि दूरसँ जे स्वर अबैत छल / माइक देल ओ हँकार नै भूलब’ सँ मातृ-स्मृति श्रवणीय होइत अछि । ‘मेहक पहिल बूँद आ माटिक गन्धि / गाछी भरल ओ बहार’क संग श्रवण आ घ्राणक दोसर स्तर जुड़ैत अछि । ई केवल चिन्तनशील कविता नहि, बहु-इन्द्रिय दृश्य बनबाक प्रयत्न अछि । मुदा आरम्भिक गजल १, ३, १६, २१मे माइक हँकार, कमलाक पार, गाछीक मेहक गन्धि अनेक बेर भेटि चुकल; एतय ओहि बिम्बकेँ नव घटना अथवा नव पात्रसँ भरबाक बदला अपरिवर्तित स्मृतिचिह्न मानि लेल गेल अछि । एहि सौन्दर्य-सङ्गतिक सँग पुनरावृत्तिक सीमा दर्ज होयबाक चाही ।

बाढ़िमे अनचिन्हार हाथ

‘बाढ़िमे हाथ पकड़ि जे पार कएलक / ओ अनचिन्हार आधार नै भूलब’ एहि गजलक सर्वाधिक नैतिक रूपसँ ठोस क्षण अछि । बचौनिहार व्यक्तिक नाम नहि अछि, मुदा ओकर काम स्मृतिक केन्द्र अछि । एहि अर्थमे नायकत्व सामाजिक पदपर नहि, संकटमे सहायता देबाक क्रियापर निर्भर अछि । गजल १२मे ‘बाढ़िमे हाथ पकड़ि जे पार कएलक’ लगभग समान मिसरा छल, ओतय आधारक अर्थ पूछल गेल छल; एतय ओहि आधारकेँ स्मृति-संकल्प देल गेल अछि । दोसर शेरक अनुस्मरण पहिले प्रश्नक सम्भाव्य उत्तर जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा वस्तुतः एकहि ऐतिहासिक बाढ़ि-घटना मानि लेब प्रमाणसँ परे होयत ।

पाँच शेरक तुक आ कवि-नाम

काफिया ‘-आर’ आ रदीफ ‘नै भूलब’; दुआर, पार, हँकार, बहार, आधार, संसार शब्दसूत्र अछि। अन्तिम शेर ‘कतेक पोथी लिखि देत’क प्रश्नक सामने ‘गामक छोट संसार’कें बिसरबाक अस्वीकार रखैत अछि। ई कविक आत्म-स्मृतिक कलात्मक सूत्र अछि, न कि वास्तविक ग्रन्थसंख्याक तथ्यात्मक दावा। मात्रा-क्रम १७-२१ आ निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास घोषणा अछि, आ गीतक वास्तविक श्रवण-लयक अलग मापन होबाक चाही। उपलब्धि मातृस्वर आ अनाम सहायता दूनूक स्मृति; सीमा पूर्वक प्रश्न-गजलसभक समान दृश्य-क्रम आ परिचित तुक-वस्तुक अधिक पुनरागमन।

पाठ-साक्ष्य : पहिल बेर खुलल ओ दुआर नै भूलब / कमलाक ओहि धारक पार नै भूलब / बाढिमे हाथ पकड़ि जे पार कएलक / ओ अनचिन्हार आधार नै भूलब

गजल २१ : देखै छी

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आल · रदीफः देखै छी

‘देखै छी’क दृष्टि आ सामाजिक दावाक सीमा

‘गामक बदलैत हाल देखै छी / सत्ताक चुप्पा चाल देखै छी’क वर्तमान काल कथकैँ प्रत्यक्षदर्शी जकाँ प्रस्तुत करैत अछि। ‘देखै छी’ रदीफ गजलकें दृश्य-आधारित सामाजिक टिप्पणीक रूप दैत अछि। मुदा साहित्यिक पाठमे ‘देखल’ शब्द रहब स्वतः सत्यापित समाजशास्त्रीय प्रत्यक्ष नहि; कवितामे ठोस दृश्य आ सामान्यीकृत कथन एकसंग अछि। एहि भेदसँ समीक्षा गजलक नैतिक ऊर्जा सुरक्षित रखैत, बिना प्रमाणक आरोपकें ऐतिहासिक तथ्य नहि बनबैत अछि।

हाटक दाम, खेतक दाम आ बीचक जाल

‘हाटमे दाम बढ़ल, खेतक दाम घटल / बीचमे पैघ जाल देखै छी’ अर्थ-व्यवस्थाक असमान विनिमयपर प्रश्न अछि। पहिल मिसरा कृषि-उत्पादक आ बजारक बीच मूल्यगत अन्तरक अनुभव प्रस्तुत करैत अछि; दोसर ‘जाल’ शब्द तकर संरचनात्मक अवरोध सूचित करैत अछि। मुदा कोन फसल, कोन साल, कोन मध्यस्थ संस्था—किछु नामित नहि अछि। अतः कथनक सामाजिक अर्थ सम्भाव्य अछि, मुदा विशिष्ट आर्थिक घोटालाक प्रमाण नहि। गजल ७ आ २४मे सेहो हाट/धान/व्यापारक बिम्ब आएल अछि; एहि बेर ‘पैघ जाल’ जोड़ला सँ शोषणक मध्यवर्ती सम्बन्ध स्पष्ट संकेत पबैत अछि।

राजक मंच आ लोकक घर: इजोतक वितरण

‘राजक मंचपर बहुत इजोत अछि / लोकक घरमे काल देखै छी’ एहन मंचीय द्विस्थान रचैत अछि जतय रोशनीक वितरण सत्ताक आत्मप्रदर्शन आ आम जीवनक कठिनाई बीच दूरी बनबैत अछि। ‘काल’क पाठ समय, दुर्भिक्ष अथवा मृत्यु-छाया दिशि खुलैत अछि; कवि कुन अर्थमे प्रयुक्त करैत छथि, से प्रसङ्गसँ पूर्ण निश्चित नहि। एकरा आँकड़ा-विहीन ठोस मृत्यु-दावाक रूपमे पढ़ब अनुचित। नेना शहर जाइत छथि आ ‘बूढ़क साँसक ताल’ बदलैत अछि—ई प्रवासक प्रभावकें दृश्य आ ध्वनि दुनू स्तरपर जोड़ैत अछि।

‘हाल-चाल-जाल-काल-ताल’क परिणाम

काफिया ‘-आल’ आ रदीफ ‘देखै छी’ घोषणा अछि; हाल, चाल, जाल, काल, ताल, तालक शृंखला सघन रूपेँ बन्हल अछि। ‘समएक बिगड़ल ताल’क अन्तिम शेर शीर्षकक निरीक्षणकेँ समयक नैतिक अव्यवस्थाक प्रश्न बनबैत अछि। पाँचो शेरमे समुचित ध्वनि-सूत्र भेटैत अछि, मुदा ‘१६-२१ मात्रा’ आ मिश्र कल-विन्यासकेँ कठोर अरूजी बहरक स्वतन्त्र प्रमाण नहि मानल जाए। एहि रचनाक सबल पक्ष श्रम-बजार-सत्ता-प्रवासक क्रमिक सार्वजनिक वृहत्तरता; सीमा ‘चुप्पा चाल’ आ ‘पैघ जाल’ सन सामान्यीकृत पदबन्ध, जे बेसी विशिष्ट दृश्य माँगैत अछि।

पाठ-साक्ष्य : गामक बदलैत हाल देखै छी / सत्ताक चुप्पा चाल देखै छी / नेना शहरक बाटि पकड़ि दूर गेल / बूढ़क साँसक ताल देखै छी

गजल ३० : बाँचि रहल अछि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १७-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः बाँचि रहल अछि

अवशेषसँ निरन्तर क्रिया धरि

गजल २५क रदीफ 'बाकी अछि' आ गजल ३०क 'बाँचि रहल अछि'क अन्तर कालबोध बदलैत अछि। पहिलमे अवशेषक सूची अछि, दोसरमे बचल रहबाक क्रियाक चलैत अवस्थापर बल अछि। पहिल शेरमे 'टूटल घरमे एक गीत' आ 'थाकल देहमे प्रीत'—विनाशक बीच जीवन-शक्ति—गजल २५क 'टूटल स्वरमे एक गीत' आ 'थाकल देहमे प्रीत'सँ लगभग अभिन्न अछि। 'घर' जुड़ला सँ चित्र अधिक ठोस जरूर होइत अछि, मुदा एतेक निकट पदविन्यासकँ बिल्कुल नवीन काव्य-कल्पना कहब समीचीन नहि।

मीत, पीपर आ आरिक पाछाँ जोतबाक रीत

'लोक दूर-दूर बसि गेल, नाम बदलि गेल / पीपर तर पुरनका मीत' ओहि सामाजिक सम्बन्धकँ बचबैत अछि जे गजल २५मे लोक बिछुड़लापर शेष छल। बाढ़ि ओतय 'आरि काटि गेल, धान बहि गेल'; एतय 'आरि काटि गेल, खेत आधा भेल' अछि। विपत्ति-दृश्य बदलल अछि, मुदा अगिला 'माटि जोतबाक रीत' लगभग एकहि रूपमे उपस्थित अछि। ई पाठयुग्म जीवन-क्रियाक पुनरावर्तन आ सामूहिक स्मृतिक स्थायित्व देखबैत अछि। तथापि खेतक क्षतिक वास्तविक परिमाण वा विशिष्ट बाढ़िक घटना एहि मिसरासँ प्रमाणित नहि होइत।

राजक हार-जीत आ लेखकक नश्वरता

'राजक हार-जीत आबि-जाइत रहत / लोकक भीतर जीत बाँचि रहल अछि' गजल २५क राज बदलबाक आ लोकक भीतर जीत शेष रहबाक विचारकँ क्रियात्मक विस्तार दैत अछि। अन्तिम शेरमे एकटा महत्त्वपूर्ण भेद अछि: गजल २५ कहैत छल 'कलम थाकि जाए', एतय 'एक दिन चुप भऽ जाएत' आ 'ओकर शब्दमे अतीत' बाँचबाक कल्पना अछि। काव्यक उत्तरजीवन निजी लेखकक नश्वरताक तुलना करैत अछि। एहि पाँतिक कारण समापन अधिक आत्मान्वेषी भेल, मुदा पुरान गजलक आधारभूत रचना-विधान बदलब नहि मानल जाए।

गजल २५ सँ सम्बन्ध आ स्वायत्तताक सीमा

घोषित काफिया 'रीत' आ रदीफ 'बाँचि रहल अछि' अछि; गीत/प्रीत/मीत/रीत/जीत/अतीत तुक-कुटुम्ब बनबैत अछि। एतय 'अतीत'क नव जोड़ कवि-नामक उत्तरजीवनपर प्रभावी अर्थ दैत अछि। मात्रा-क्रम १७-२३ तथा मिश्र कल-विन्यासक अन्तराल स्रोतक स्वघोषणा अछि; वास्तविक अरूजी समबहर स्वतः सिद्ध नहि। गजल २५ सँ छओ मे पाँचो शेरक विषयक्रम, मुख्य शब्द आ कई अंशक वाक्य-गठन लगभग समान अछि। आलोचनात्मक निर्णयः ई अर्थगत सूक्ष्म रूपान्तर प्रस्तुत करैत अछि, मुदा पूर्ण स्वतंत्र बिम्ब-रचना नहि। बिना रचनाक प्रमाणित तिथि वा लेखकक स्पष्ट टिप्पणीक ई तय नहि कएल जाए जे कोन पाठ मूल आ कोन संशोधन।

पाठ-साक्ष्य : टूटल घरमे एक गीत बाँचि रहल अछि / थाकल देहमे प्रीत बाँचि रहल अछि / राजक हार-जीत आबि-जाइत रहत / लोकक भीतर जीत बाँचि रहल अछि

गजल २१-३० : समेकित अन्तररचनात्मक अध्ययन

एहि दस गजलमे लौटबाक याचना (२१), उत्तरक मांग (२२), स्मृतिक अन्तःस्थिति (२३), सामाजिक परिवर्तन (२४), अवशेषक प्रतिरोध (२५), प्रथम-पुरुष यात्राक गतिशीलता (२६), बचल अनुभूतिक उद्घोष (२७), स्मृतिक प्रतिज्ञा (२८), सामाजिक निरीक्षण (२९), आ निरन्तर बाँचल रहबाक क्रिया (३०) क्रमशः प्रधान अछि। रदीफ बदललासँ कथनक अवस्थामे अन्तर अबैत अछि, मुदा बहुत ठाम एकहि गाम, कमला, बाढ़ि, पीपर, माइक हँकार, खेत, राज, नारा, नेह आ गीतक पुनरावृत्ति रचनात्मक वैविध्य सीमित करैत अछि।

सबसे स्पष्ट पाठीय युग्म गजल २३-२७ आ २५-३० अछि। पहिल जोड़ीमे 'आस/प्यास/त्रास/साँस/विश्वास'क अनुक्रम, दूर देशमे नेना आ माइक साँस, बाढ़ि आ भीतक पुरान त्रास, गीतक अन्तिम स्वर सम्मिलित अछि। दोसर जोड़ीमे 'गीत/प्रीत/मीत/रीत/जीत'क साथ पीपर तर मीत, बाढ़ि सँ कटल आरि, माटि जोतबाक रीत आ लोकक भीतर जीत लगभग एकहि शेर-क्रममे चलैत अछि। एतय केवल साझा विषय नहि, ठोस पाँति-स्तरीय मिलान अछि। तथापि उपलब्ध पाठ रचनाक पहिल/दोसर लेखन-तिथि अथवा लेखकक पुनर्लेखनक घोषित मंशा नहि दैत; निर्णायक कालक्रमक अनुमान निषिद्ध अछि।

अन्य अन्तरसम्बन्ध सेहो विचारणीय अछि: गजल २१ गजल ३ आ १६क दुआर-पार-हँकार-झंकार संयोजन फेरि आनैत अछि; गजल २२ गजल १२क प्रश्नवाचक संबोधन अपनबैत अछि; गजल २४ गजल ७क 'बदलि गेल' संरचना बदलि लिखैत अछि; गजल २८ गजल १२ आ २१क कमलाक पार आ अनचिन्हार सहायककें स्मरणक प्रतिज्ञामे बदलैत अछि। एहि सभ तुलना सँ काव्यक एकटा स्थिर सांस्कृतिक शब्दकोश स्पष्ट होइत अछि, जकर उपलब्धि स्मृतिक एकरूप जगत अछि आ सीमा विशिष्ट नव दृश्यक तुलनात्मक अभाव।

गजल २६क अलग महत्त्व अछि। एतय 'बिसरि/घुरि/ठहरि/उतरि/सँभरि' क्रियासूचक तुक-क्रमक संग 'जाइत छी' गतिमान रदीफ अछि; इतर गजलमे अधिकतर संज्ञात्मक काफिया आ अस्तित्वसूचक रदीफ अछि। गजल २९ हाटक दाम आ खेतक दामक वैपरीत्य, राजक इजोत आ लोकक घरक 'काल' तथा बूढक साँसक तालद्वारा सामाजिक निरीक्षणकें संगठित करैत अछि। ई दूनू कृति विषयगत पुनरावृत्तिक बीच औपचारिक आ अनुभवगत पृथकपनक उदाहरण अछि।

दस गजलमे स्वघोषित मात्रा-दायरा १६-२६ धरि विभिन्न अछि। मिश्र अथवा निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास वर्णित छैक, मुदा एहन प्रकाशकीय विवरण मात्र सँ पारम्परिक अरूजी बहर स्वतः प्रमाणित नहि। एहि समूहक समीक्षा काफिया-रदीफक अक्षर-साक्ष्यक प्रत्यक्ष जाँच करैत अछि, जखनकि वास्तविक मात्रा-लेखा लेल प्रत्येक मिसराक स्वीकृत मैथिली उच्चारण आ यतिक विशिष्ट परीक्षण आवश्यक रहत।

गजल २१-३० : पाठ-साक्ष्य पञ्जी

गजल	मूल शीर्षक	मात्रा-दायरा	काफिया / रदीफ
२१	घुरि आउ ने	१८-२६	-आर · / घुरि आउ ने
२२	कहू तँ सही	१८-२१	-आत · / कहू तँ सही
२३	मोनमे अछि	१६-२२	-आस · / मोनमे अछि
२४	बदलि गेलै	१९-२३	-आर · / बदलि गेलै

२५	बाकी अछि	१७-२०	नीत . / बाकी अछि
२६	जाइत छी	१८-२३	-रि . / जाइत छी
२७	बाँचल अछि	१६-२१	-आस . / बाँचल अछि
२८	नै भूलब	१७-२१	-आर . / नै भूलब
२९	देखै छी	१६-२१	-आल . / देखै छी
३०	बाँचि रहल अछि	१७-२३	नीत . / बाँचि रहल अछि

दीवान-ए-विदेह • गजल ३१-४०

एहि भागक प्रत्येक समीक्षा मूल मैथिली पाण्डुलिपिक रचना-क्रम आ वास्तविक दसू मिसरासँ मिलान कऽ लिखल गेल अछि। घोषित मात्रा-क्रम आ कल-विन्यास प्रकाशकीय सूचनाक रूपमे पढ़ल गेल अछि, स्वतंत्र छन्द-प्रमाणक रूपमे नहि।

गजल ३१ : याद रहत

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः २०-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर • रदीफः याद रहत

विदाइ-स्मृति आ देहसँ अलग होइत अनुभव

‘जे दिन छोड़लौं घरक दुआर’सँ रेलयात्राक ठोस कालबिन्दु आरम्भ होइत अछि। ‘रेल बहुत दूर लऽ गेल, देह तऽ चलि गेल’ कहलाक बाद छूटल बहार मनमे रहबाक विरोधाभास प्रवासक बहिर्गमन आ स्मृतिक स्थायित्व अलग करैत अछि। ‘माइक काँपत ओ हँकार’ श्रवणक ओहि नाजुक क्षणकें पकड़ैत अछि, जे ‘बाहरक बहार’क दृश्यसँ अधिक मानवीय अछि। एहिमे विदाइ करनिहारक कंठ काँपैत अछि, मुदा रेलक यात्रीक मन परोक्ष रहैत अछि; ई संयम निजी पीड़ाकें अत्यधिक व्याख्यानसँ बचबैत अछि।

बाढ़िक बाद हाथ पकड़बाक सम्बन्ध

तृतीय शेरमे बहुते नाम विसरब आ ‘एक अनचिन्हारक व्यवहार’ याद रहब सामाजिक प्रतिष्ठा आ उपयोगी आचरणक क्रम उलटैत अछि। ‘बाढ़ि उतरि गेल, आरि फेर जोतल गेल’क पाछाँ बचौनिहार हाथक छोट संसार उभरैत अछि। एहि शेरक महत्त्व ई जे स्मृति केवल गामक सुगन्ध नहि, आपदामे मनुष्यता केना बचल तकर अभिलेख बनैत अछि। मुदा घटना-विशेषक ऐतिहासिक नाम वा वर्ष नहि देल गेल; आलोचना काव्यात्मक अनुभवपर सीमित रह्य। ‘याद रहत’क अनवरत वचन भावक दृढ़ता दैत अछि, साक्ष्यक बाहरी प्रमाण नहि।

मूल पाठ-साक्ष्य : जे दिन छोड़लौं घरक दुआर याद रहत / माइक काँपत ओ हँकार याद रहत / पोथी बन्द भऽ जाए, गीतो थमि जाए / मोनमे बचल अपन दुआर याद रहत

पाठक्रम परीक्षण : ३१ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ३२ : बाजि उठैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: २१-२५
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ीत • रदीफ: बाजि उठैए

गीतक श्रवणसँ मौनक अन्तर्ध्वनि धरि

‘साँझ उतरैते पुरनका गीत’ आ ‘नाम सुनिते मोनमे प्रीत’ श्रवणक दू अलग स्रोत अछि—परिचित धुन आ व्यक्तिनाम । ‘भीड़ बहुत हो’क बाद ‘एक चुप चेहरा बनि मीत बाजि उठैए’ दृश्यकेँ ध्वनि बना देबाक अलङ्कारिक उलटाव अछि । चुप चेहरा वस्तुत: बाजैत नहि; काव्य ओकर मौनक भावात्मक प्रतिध्वनि सुनबैत अछि । अन्तिम ‘मौनक भीतर फेर गीत’ प्रारम्भक बाहरी गीतकेँ भीतरक स्मृतिमे स्थानान्तरित करैत अछि । एहि कारण रदीफक पुनरावृत्ति अर्थविकासक सहारा बनैत अछि ।

नव शहरक बीच पीपरक छाँह

‘नव सड़क, नव घर, नव हाट’क तीन आवृत्तिपर ‘पीपरक छाँह बनि अतीत’ प्रतिरोधक छोट, मुदा स्पष्ट बिम्ब अछि । नव निर्माणक तथ्यात्मक विरोध नहि, अनुभवक असमान गति प्रस्तुत अछि: भौतिक संरचना नव भऽ सकैत अछि, स्मृतिक आसन पुरान रहैत अछि । हार मानल दिन ‘भीतरक जीत’ बाजि उठबाक दावा साहसक लघु सूत्र अछि; मुदा कोन संघर्षमे हार, से अनिर्दिष्ट अछि । गजल ३१क ‘जीत लिखैत रहू’सँ एकर सम्बन्ध बनैत अछि, फर्क ई जे एतय जीत स्वत: प्रतिध्वनित होइत अछि, ओतय ओकरा लिखि कऽ बचयबाक निर्देश अछि ।

मूल पाठ-साक्ष्य : साँझ उतरैते पुरनका गीत बाजि उठैए / नाम सुनिते मोनमे प्रीत बाजि उठैए / शब्द थाकि जाए, स्वर कखनो-कखनो चुप / मौनक भीतर फेर गीत बाजि उठैए

पाठक्रम परीक्षण : ३२ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न ।

गजल ३३ : नै बिकत

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-२५
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आन • रदीफ: नै बिकत

हाटमे दाम आ नै बिकनिहार पहिचान

पहिल शेर 'पाइ बढि जाए, मुदा मान नै बिकत / भूख सहि लेब, ईमान नै बिकत' आर्थिक दबाव आ नैतिक सीमाक बीच एकटा कठोर विरोध टाढ़ करैत अछि। हाटक सभ चीजक 'भाव लिखल' भेटब आ माटिक पहिचान नहि बिकब बाजारी विनिमयक भाषा समाजक मूल पहिचानपर लागू करबाक विरोध अछि। यद्यपि 'नै बिकत'क प्रतिज्ञा प्रभावी अछि, भूखक कठिन वास्तविकता केवल आत्मबलसँ पार भऽ जाइत अछि एहन निष्कर्ष पाठमे स्थापित नहि। नैतिक विकल्पक कठोरता ओकर शक्ति आ सीमा दुनू अछि।

श्रमक दाम बनाम मनुखक जान

'कियो श्रमक दाम देत, से नीक बात / मुदा मनुखक जान नै बिकत' एहि रचनाक सर्वाधिक सूक्ष्म भेद अछि। कवि श्रमक उचित मूल्यक विरोध नहि करैत छथि; मानवीय जीवनकेँ वस्तुक मूल्यवर्गमे रखबाक प्रतिवाद करैत छथि। ई पाँति आरम्भक साधारण 'पाइ बनाम मान'क द्वंद्वकेँ अधिक सामाजिक धरातल दैत अछि। 'राजक सोझाँ सिर झुके'क सुविधा अस्वीकार करब नागरिक आत्मसम्मानक पद्यात्मक प्रतिज्ञा अछि। मुदा गजलमे कोनो विशिष्ट श्रमिक, न्यायिक प्रकरण अथवा व्यापारिक घटना नहि अछि; ई सिद्धान्तपरक नैतिक आवाज अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : पाइ बढि जाए, मुदा मान नै बिकत / भूख सहि लेब, ईमान नै बिकत / देह थाकत, उमेर अपना रंग देखाओत / मोनक भीतरक मान नै बिकत

पाठक्रम परीक्षण : ३३ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ३४ : घुरि अबैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: घुरि अबैए

बरखा-स्मृति आ वर्तमानक बीच घुरैत अतीत

'मेह पडिते ओ बहार घुरि अबैए' तत्कालिक प्राकृतिक कारण आ आत्मगत स्मृतिक सम्बन्ध बनबैत अछि। शहरमे कतेको वर्ष बितलाक बाद 'निन्नमे गामक दुआर' घुरब सपनाक भीतर निवासरत गामक पहिचान अछि। माइक हुँकार घुरैत अछि, जखनकि वास्तविक व्यक्ति मंचपर नहि: अनुपस्थित आवाज अनुभवक

चरित्र बनैत अछि। गजल ३१ मे स्मृति आगाँक लेल 'याद रहत'; एतय ओकर घुरब वर्तमानकालक घटित अनुभूति अछि।

बाढ़िक पाछाँ 'संसार' घुरबाक सामान्यीकरण

'बाढ़ि बहुत किछु लऽ जाइत अछि'क तुरन्त बाद 'पानि उतरिते संसार घुरि अबैए' आशाक कथन अछि, मुदा ई पूर्ववत् जीवन स्वतः पुनर्स्थापित भेलाक प्रमाण नहि। गजल ३५ स्वयं भीतपर रहि गेल त्रासक उल्लेख करैत अछि, जाहिसँ एहि सहज समापनपर आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि। 'मौन भेलापर विचार' आ गीतक 'पुरनका प्यार' फेर घुरब स्मृतिक अन्य रूप अछि। एहि तरह गजल एकटा ध्वनि-चक्र बनैत अछि: मेह, हँकार, निन्न, मौन, गीत। उपलब्धि इन्द्रियसम्बन्धक सघनता; सीमा कतिपय अनिवार्य पुनरुत्थानक आशावादी सामान्यीकरण।

मूल पाठ-साक्ष्य : मेह पड़िते ओ बहार घुरि अबैए / साँझ होइते माइक हँकार घुरि अबैए / गीत नया हो, धुन नव हो, शब्द अलग हो / बीच सुरमे पुरनका प्यार घुरि अबैए

पाठक्रम परीक्षण : ३४ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ३५ : ठाढ़ रहत

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आस · रदीफ: ठाढ़ रहत

भौतिक विनाश आ भीतरक अवशेष

'सभटा टूटत, कने आस ठाढ़ रहत'मे आसकेँ भवन जकाँ ठाढ़ वस्तु मानल गेल अछि; 'देह थाकत, मुदा साँस ठाढ़ रहत' जीवित रहबाक संघर्षकेँ एकही स्थापत्य-बिम्बसँ जोड़ैत अछि। पुनरावर्तित 'ठाढ़ रहत' रदीफ बाँचल रहबाक प्रतिज्ञा अछि, मुदा सामान्य जड़ भाषा भऽ सकबाक खतरा सेहो अछि। सर्वाधिक ठोस शेर 'घर फेर ठाढ़' भेलाक बादो 'भीत पर लिखल त्रास'क उपस्थितिक अछि। नव मकान आ अनमेटल स्मृति एक-दोसराक विकल्प नहि—ई भेदक कारण रचना सामाजिक आपदाक मनोवैज्ञानिक विस्तार खोलैत अछि।

विश्वासक टिकाउपन आ प्रत्यक्षक सीमा

राज आ नारा बदलैत अछि, मुदा 'ककरो भीतर विश्वास' रहबाक घोषणा अनाम मनुष्यक अनिश्चित आशाकें बनौने रखैत अछि। नगरक खिड़कीपर पडैत बरखा स्मृतिमे 'माटि छुबबाक प्यास' जगबैत अछि। 'हारि कऽ बैसल मनुख'क फेर उठब अन्तिम दृश्य छी—इहाँ आस आँखिक रूप धरैत अछि। गजल २३, २७ आ ४९मे आस-प्यास-त्रास-विश्वासक मूल शब्दकुल बारम्बार अछि; ३५क उपलब्धि 'ठाढ़' क्रियाक देहधर्मीता अछि, सीमा एकहि भाव-कुटुम्बक पुनरावृत्ति।

मूल पाठ-साक्ष्य : सभटा टूटत, कने आस ठाढ़ रहत / देह थाकत, मुदा साँस ठाढ़ रहत / हारि कऽ बैसल मनुख जखन फेर उठत / ओकर आँखिक आस ठाढ़ रहत

पाठक्रम परीक्षण : ३५ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ३६ : सुनाइ पडैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ओर • रदीफ: सुनाइ पडैए

ध्वनिक विरोधाभास: मौन, शोर आ भोर

'मौन भीतर कतेक शोर सुनाइ पडैए / राति भीतर कतऽ भोर सुनाइ पडैए'क समानान्तर संरचनामे विरोधी अवस्थासभक सह-अस्तित्व अछि। रातिमे भोर वस्तुत: श्रव्य नहि; भोर ध्वनिक बिम्ब बनैत अछि। 'सभ कहैत अछि समय सभ घाव भरि दैत'क पाछाँ 'पुरनका पीरक जोर' एहन सहजबोधपर अविश्वास व्यक्त करैत अछि। एतय लोकप्रचलित सान्त्वनाक प्रतिपक्षी रूपमे अनुभूतिक दीर्घता अछि। श्रोता-केंद्रित रदीफ एहि रचनाकें दृश्य-वर्णनसँ अलग गतिकी दैत अछि।

सतहपर शान्त नदी, भीतर हिलोर

'धार शान्त देखाइत अछि ऊपर-ऊपर / नीचाँ पानिक हिलोर सुनाइ पडैए' प्रत्यक्ष दृश्य आ गुप्त प्रवाहक भेद प्रस्तुत करैत अछि। ई बिम्ब मानवमनक समानान्तर अर्थ देइ सकैत अछि, मुदा नदीक वास्तविक मापनक दावा नहि। रेलक खिड़कीसँ 'दूर गामक शोर' सुनबाक विधान स्मृतिक श्रवण अछि; यात्राक भौतिक दूरी नहि घटैत। अन्तिम गीत समाप्त होइत भोर सुनाइ पडबाक पाँति

पहिल मतलाकें घुरबैत अछि। समापनक वृत्त सफल अछि, यद्यपि 'शोर' आ 'भोर'क सीमित तुक-संसार अन्यत्रो खूब प्रयुक्त अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मौन भीतर कतेक शोर सुनाइ पडैए / राति भीतर कतऽ भोर सुनाइ पडैए / गीत जखन धीमे-धीमे खत्म होइ लगैए / आखिरी सुरमे भोर सुनाइ पडैए

पाठक्रम परीक्षण : ३६ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ३७ : बुझाइ पडैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आत · रदीफ: बुझाइ पडैए

बिना बूँद बरसात: गन्धि आ पूर्वानुमान

'मेघ बहुत दूर, मुदा माटिक गन्धि उठल / बिनु बूँद बरसात बुझाइ पडैए'
कविताक ज्ञानमीमांसक क्षण अछि। गन्धि अनुभवक वास्तविक इन्द्रियसूचना होइ सकैत अछि, मुदा बरसात बुझाइ पडब घटित वर्षाक प्रमाण नहि। एहि अन्तरकें कविता भावनात्मक रूपसँ प्रस्तुत करैत अछि। 'चुप्पीमे सेहो बात' आ 'खुलल आँखिमे रात'क विरोध रचनाकें अव्यक्त अनुभव पढ़बाक प्रयास बनबैत अछि। गजल ३६ सुनबाक क्रिया चुनैत अछि, एतय 'बुझाइ' इन्द्रियसँ व्याख्या धरि पहुँचबाक प्रक्रिया बनैत अछि।

हँसी, आघात आ सौगातक पुनर्परिभाषा

हँसैत चेहराकें सुख मानि लेब आसान अछि, मुदा नोर पूछिते 'आघात' बुझब पाठककें प्रत्यक्ष दृश्यपर अति भरोसा नहि करबाक आग्रह करैत अछि। खाली हाथ घुरल मनुष्यक मुस्की 'सौगात' बनैत अछि—अर्थात् मूल्य वस्तुक परिमाण नहि, सम्बन्धक व्यवहारमे अछि। अन्तिम गाओल सुरक 'बात' मुद्रित शब्दसँ आगे बढ़ैत अछि। ई गजल ४४क 'के कहत' सँ पाँति-पाँति निकट अछि; एकर विशिष्टता सवालक बदला अन्त:बोधक क्रिया अछि। एहि भेदक बावजूद बिम्ब-क्रमक अत्यधिक समानता मौलिक विस्तार पर प्रश्न छोडैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : चुप्पीमे सेहो बात बुझाइ पडैए / खुलल आँखिमे रात बुझाइ पडैए / कागज पर लिखल शब्द तऽ बस शब्द अछि / गाओल सुरमे बात बुझाइ पडैए

पाठक्रम परीक्षण : ३७ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न ।

गजल ३८ : छोड़ि देलहुँ

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १६-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आस · रदीफः छोड़ि देलहुँ

छोड़बाक क्रिया आ सम्बन्धक अवशेष

‘तोहर घुरबाक आस छोड़ि देलहुँ’क पाछाँ ‘आँखिक भीतरक प्यास’ सेहो छोड़बाक घोषणा भावनात्मक आत्मरक्षा जकाँ सुनाइत अछि। मुदा पाँचम शेरमे ‘नेहकँ मुदा छोड़ब कहियो सीखल नहि’ एहि सम्पूर्ण प्रतिज्ञाकँ फेर खोलि दैत अछि। एहि अन्तर्विरोधक कारण गजल मात्र वैराग्यक विज्ञप्ति नहि रहैतः सम्बन्धक प्रतीक्षा छोड़ल जा सकैत अछि, प्रेमक स्मृति नहि। शीर्षकक ‘छोड़ि देलहुँ’क क्रियासँ अन्तिम शेरक ‘छोड़ब’ असमर्थता तकक यात्रा रचनाक मुख्य शिल्प अछि।

कसम, नाम-पद आ भरोसाक नीतिगत अन्तर

कसम टूटि सकबाक सम्भावनासँ ‘कसमपर विश्वास’ छोड़ब अनुभवजन्य सावधानी अछि, जखनकि ‘नामक पाछाँ दौड़’ छोड़ब सामाजिक मान-प्रतिष्ठाक आक्रामक स्पर्धासँ निवृत्ति। ई दुनू अलग नैतिक निर्णय अछि। ‘ओहि दौड़क साँस’ जकाँ अटपट प्रयोग घुमावदार बिम्ब बनबैत अछि—दौड़ स्वयं साँस नहि, दौड़सँ थाकल प्राणक तात्पर्य होय सकैत अछि। घोषित ‘-आस’ काफियामे आस/प्यास/त्रास/विश्वास/साँस/उल्लास अछि, मुदा अन्तिम ‘नाम-पदक उल्लास’क अर्थ विशेष स्पष्ट कएने बिनु ओ मान त्यागक ही घोषणा पुनः करैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : तोहर घुरबाक आस छोड़ि देलहुँ / आँखिक भीतरक प्यास छोड़ि देलहुँ / नेहकँ मुदा छोड़ब कहियो सीखल नहि / नाम-पदक उल्लास छोड़ि देलहुँ

पाठक्रम परीक्षण : ३८ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न ।

गजल ३९ : लिखैत रहू

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास ·
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: ीत · रदीफ: लिखैत रहू

कविता लिखनाइ: स्मृतिक सामाजिक काज

‘कागज पर अपन गीत लिखैत रहू’क आज्ञार्थक सम्बोधन गजलकें आत्मसंवाद अथवा दोसर लेखकक उपदेश—दूनु रूपमे खोलैत अछि। नेह बाँचल रहबाक संग प्रीत लिखबाक आग्रह लिखबाक नैतिक कारण बताएब अछि; एतय प्रेम शब्दक पाँति मात्र नहि, दस्तावेज बनेबाक प्रेरणा अछि। ‘सभ संगी एक दिन अपन बाट चलि जाएत’क पाछाँ ‘बचल मीत’क स्मृति लिखब व्यक्तिक अभावसँ साहित्यिक जन्म देखबैत अछि। मुदा कविता लिखलापर स्मृति स्वतः प्रमाण बनि जाइत अछि, एहन दावा नहि।

राजक बदलैत इतिहास आ लोकक साँच

‘राज बदलै, इतिहास अपन भाषा बदलए / लोकक साँच अतीत लिखैत रहू’ एहि गजलक सबसँ जटिल शेर अछि। संस्थागत आख्यानक बदलैत शब्दावली आ लोकक अनुभवक अभिलेख—ई दुनूक बीच तनाव अछि। कविता लेखककें ‘लोकक साँच’ सुरक्षित रखबाक निर्देश दैत अछि, मुदा लोकक कोन स्रोत विश्वसनीय, कतेक भिन्न स्मृति अछि, तकर विधि पाठमे नहि देल गेल। तँ ई इतिहासलेखनक नैतिक आग्रह अछि, पूरा ऐतिहासिक प्रमाण-पद्धति नहि। अन्तिम ‘मौनमे उठल गीत’क विरोधी बिम्ब पहिल शेरक लेखनक आग्रहकें मौन सुनबाक दिशि विस्तार दैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : कागज पर अपन गीत लिखैत रहू / नेह बाँचल तऽ प्रीत लिखैत रहू / शब्द कम पड़ए तऽ मौनकें सुनि कऽ / मौनमे उठल गीत लिखैत रहू

पाठक्रम परीक्षण : ३९ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४० : जागि रहल अछि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १९-२५
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास ·
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ओर · रदीफ: जागि रहल अछि

जागबाक काल आ भीतरक प्रतिरोध

‘राति बीतल, कने भोर जागि रहल अछि’ समयक अनोखी परत रचैत अछि। राति बितलाक बादो भोर जागि रहल अछि—ई अधूरा आरम्भ अछि, सम्पन्न परिवर्तन नहि। ‘मौन भीतर कतेक शोर’क लग राखलासँ समाजक अधोषित असहमति संकेतित होइत अछि। बाढ़ि उतरि गेल, नाव किनार लगल, मुदा ‘हाथमे नेहक डोर’ जागि रहल अछि—जीवित सम्बन्धक प्रतीकक एहि रूपमे नावक साधन निष्क्रिय भेलो मानवीय सम्बन्धक ऊर्जा समाप्त नहि होइत।

सत्ताक उज्जर रंग आ लोकक भीतरक जोर

‘राजक दीवार पर रंग नया चढ़ि गेल / लोकक भीतर जोर जागि रहल अछि’ बाहरी रूप-रङ्ग परिवर्तन आ सामूहिक सम्भावनाक अन्तर देखबैत अछि। नगरमे नेनाक आँखिमे ‘गामक ओर’ जागब दिशा-सूचक अनुभव बनैत अछि, यद्यपि ‘ओर’क प्रयोग शाब्दिक रूपेँ तनिक अधूर बुझाईत अछि। ‘सभ श्रोता घुरि गेल’क बाद एक मनुष्यक भीतर भोर बाँचब सार्वजनिक प्रदर्शन आ निजी ग्रहणक असममिति अछि। गजल १०क ‘बाकी अछि’सँ शब्दानुक्रम धेरै निकट—भोर/शोर/डोर/जोर/ओर/भोर। नव रदीफ ‘जागि रहल अछि’ स्थिर बचतकें चलैत चेतनामे बदलैत अछि; बिम्बक नवता सीमित अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : राति बीतल, कने भोर जागि रहल अछि / मौन भीतर कतेक शोर जागि रहल अछि / गीत खत्म भेल, सभ श्रोता घुरि गेल / एक मनुष्यमे भोर जागि रहल अछि

पाठक्रम परीक्षण : ४० क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ३१-४० : अन्तररचनात्मक समीक्षात्मक निर्णय

एहि समूहमे ३१क रेल-प्रवास, ३२क मौनमे गीत, ३३क बिक्रीक सीमा, ३४क घुरैत स्मृति, ३५क भीतपर टिकैत त्रास, ३६क श्रवण, ३७क व्याख्या, ३८क भावनात्मक त्याग, ३९क लिखित लोक-स्मृति आ ४०क जागैत नागरिक बल क्रमशः एक-दोसरासँ संवाद करैत अछि। ३५, ३६ आ ४०मे भोर/शोर/जोर, आस/प्यास/त्रासक पुनरावर्तन पूर्व गजलसभसँ तुलना माँगैत अछि। सभक आलोचनामे अनिर्दिष्ट बाढ़ि-वृत्तान्तकें बाहरी ऐतिहासिक घटना नहि मानल गेल।

गजल ३१-४० : प्रमाणित पाठ-सूची

क्रम	मूल शीर्षक	अन्तिम मिसराक
------	------------	---------------

		पहिचान
३१	याद रहत	मोनमे बचल अपन दुआर याद रहत
३२	बाजि उठैए	मौनक भीतर फेर गीत बाजि उठैए
३३	नै बिकत	मोनक भीतरक मान नै बिकत
३४	घुरि अबैए	बीच सुरमे पुरनका प्यार घुरि अबैए
३५	ठाढ़ रहत	ओकर आँखिक आस ठाढ़ रहत
३६	सुनाइ पड़ैए	आखिरी सुरमे भोर सुनाइ पड़ैए
३७	बुझाइ पड़ैए	गाओल सुरमे बात बुझाइ पड़ैए
३८	छोड़ि देलहुँ	नाम-पदक उल्लास छोड़ि देलहुँ
३९	लिखैत रहू	मौनमे उठल गीत लिखैत रहू
४०	जागि रहल अछि	एक मनुखमे भोर जागि रहल अछि

दीवान-ए-विदेह · गजल ४१-५०

एहि भागक प्रत्येक समीक्षा मूल मैथिली पाण्डुलिपिक रचना-क्रम आ वास्तविक दसू मिसरासँ मिलान कऽ लिखल गेल अछि। घोषित मात्रा-क्रम आ कल-विन्यास प्रकाशकीय सूचनाक रूपमे पढ़ल गेल अछि, स्वतंत्र छन्द-प्रमाणक रूपमे नहि।

गजल ४१ : अछि किएक

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आस · रदीफः अछि किएक

किएकक प्रश्न आ वर्णनक सीमारेखा

‘चान एतेक उदास अछि किएक’ कहैत कवि चानकें अपन अन्तरमनक भाव दैत छथि; ई प्रकृतिक वास्तविक मनोदशा नहि, रातिक अनुभूतिक अलङ्कार अछि। ‘घर भरल लोक’क बीच ‘मोनमे एतेक पियास’ सम्बन्धक भीड़ आ आत्मीय अभावक भेद खोलैत अछि। ‘जे भरोसापर बाट चललहुँ’ ओहि भरोसापर विश्वास नहि रहबाक प्रश्न कथकक आत्मनिश्चयकें समस्या बनबैत अछि। एहि कारण ‘अछि किएक’ रदीफ काव्यक निष्कर्ष नहि, प्रश्नवाचक स्वर रचैत अछि।

पास रहैत दूरिक बिम्ब

‘गाम छोड़ने बख बीति गेल / माटि एखनो आसपास अछि किएक’ एहि गजलक सर्वाधिक सघन विरोधाभास अछि। माटि वास्तविक रूपेँ देह लग अछि कि स्मृतिमे, ई उधारल नहि गेल; अनिश्चितता बिम्बकें सजीव बनबैत अछि। अन्तिम ‘एक स्वर मोनक पास’ गायक-श्रोता सम्बन्धमे समाप्त भेल कार्यक्रमक बादक प्रभाव बचबैत अछि। घोषित काफिया ‘-आस’मे उदास/निरास/पियास/विश्वास/आसपास/पासक ध्वनि एक-जकाँ नहि; सटीक तुकगत जाँचमे विशेष ध्यान चाही। गजल ३५क आस-प्यासक पुनरावृत्ति एतय ‘किएक’क कारण आत्म-परीक्षण बनि सकैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : चान एतेक उदास अछि किएक / राति एतेक निरास अछि किएक / गीत पूरा भेल, सभ उठि गेल / एक स्वर मोनक पास अछि किएक

पाठक्रम परीक्षण : ४१ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४२ : रहि गेल

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १४-१९
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास •
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आत • रदीफ: रहि गेल

अधकही बात आ जरल चिट्ठीक गन्धि

‘अधकही ओ बात रहि गेल / आँखिमे एक रात रहि गेल’ अत्यल्प शब्दमे भासैत रिक्तता रचैत अछि। ‘सभ चिट्ठी जरा देलहुँ’ ठोस क्रिया अछि, मुदा ‘कागजक गन्धि साथ’ बचल रहल विनाश आ स्मृतिक अलग परिणाम देखबैत अछि। ई गन्धिक बिम्ब गजल ३१क रेलयात्रा वा ३४क बरखाक अपेक्षा अधिक वस्तुगत अछि: लिखित वस्तु नष्ट भऽ गेल, ओकर अनुभव शारीरिक स्मृतिमे रहि गेल। रदीफ ‘रहि गेल’क कारण प्रत्येक शेर हानिक पाछाँ शेष वस्तुक पहिचान करैत अछि।

भीतक बरसात, भेटघाँट आ गीतक बचल पाँति

‘मेह थमल, छप्पर सुखा गेल / भीत भीतर बरसात रहि गेल’ बाहरी परिस्थिति आ अन्तरिक घावक असमान समयक सुन्दर विरोध अछि। ‘लोक बिछुडल, बात बदलि गेल / मोनमे एक मुलाकात’ सम्बन्धक समाप्तिक बादो भेटघाँटक बाँचल असर अछि। अन्तिम स्वर थमलाक बादो बात शेष रहब कविता-सृजनक संरचना पर टिप्पणी अछि। मुदा ‘बरसात/मुलाकात/बात’क ई शृंखला गजल ३७ आ ४४ सँ बिम्बस्तरपर निकट अछि; एतय चिट्ठीक राख आ गन्धि रचनाकँ अपेक्षाकृत स्वतंत्र दृश्य दैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : अधकही ओ बात रहि गेल / आँखिमे एक रात रहि गेल / गीत गबैत स्वर थमि गेल / अन्तिम सुरमे बात रहि गेल

पाठक्रम परीक्षण : ४२ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४३ : बाजू ने

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १४-१९
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास •
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आल • रदीफ: बाजू ने

बाजबाक आग्रहः निजी प्रश्नसँ सार्वजनिक अर्थ धरि

‘मोनक असली हाल बाजू ने’ आरम्भिक सम्बोधन अछि, मुदा दोसर शेरहि मे ‘हाटमे दाम, खेतमे घाटा / बीचमे ककर जाल’ सार्वजनिक अर्थशास्त्रक ओर चलि जाइत अछि। एकै रदीफक सहारे निजी प्रश्नक स्वर कृषि-उत्पादन आ विनिमयक असमानता पर लागू होइत अछि। ‘राजक मंचपर बहुत इजोत / गामक भीतर काल’ लोकक जीवन आ प्रदर्शनकारी सत्ताक प्रकाश-बँटवाराकँ एक ठाम देखबैत अछि। ई रूपक अछि; विशिष्ट सरकारक प्रमाणित आर्थिक विवरण नहि।

स्नेहक व्यवहार आ गीतक ताल

‘नेह केने छी तँ साफ कहू / किएक एहन चाल’ फेर निजी विश्वासक प्रश्न पर लौटैत अछि। गजल सार्वजनिक अन्याय, निजी छल आ गीतक सत्य तीनूकँ बाजि देबाक मांग करैत अछि। अन्तिम ‘गीतमे जँ साँच बचल अछि / ओकर असली ताल’ रचनाकारक संगीत आ नैतिकता एक पाँतिमे जोड़ैत अछि; तथापि ताल केहन छन्द्रीय मापमे सिद्ध अछि, ओ स्पष्ट नहि। घोषित ‘-आल’ काफिया (हाल/सवाल/जाल/काल/चाल/ताल) अपेक्षाकृत सुसङ्गत अछि; परन्तु कथ्यक क्षेत्र अत्यधिक तेजी सँ बदलैत अछि, जाहिसँ एकल अनुभवक गहिराइ कम भऽ सकैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मोनक असली हाल बाजू ने / ककरा लेल ई सवाल बाजू ने / गीतमे जँ साँच बचल अछि / ओकर असली ताल बाजू ने

पाठक्रम परीक्षण : ४३ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४४ : के कहत

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १४-१८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः के कहत

बोधक प्रश्नकँ वक्ताक उत्तरदायित्व

‘मौन भीतर कोन बात के कहत’क प्रश्न केवल संदेशक उपस्थिति नहि, ओकर वक्ताक अभाव पर केन्द्रित अछि। गजल ३७ कहने छल जे चुप्पीमे बात ‘बुझाइ’ पड़ैत अछि; एतय प्रश्न अछि—ओकरा सार्वजनिक रूपसँ कहत के? ‘हँसैत

चेहराक पाछाँ आघात, 'मेघ नहि' होइतहुँ माटिक गन्धिसँ बरसातक अटकल,
खाली हाथक सौगात—ई सभ प्रत्यक्ष आ व्याख्याक बीचक अन्तरसभक एकसंग
संग्रह अछि। लोकक अनुभव एक दृष्टिसँ नहि खुलैत, ताहि लेल 'के कहत'
जरूरी पुनरावर्तन अछि।

पाठीय निकटता आ मौलिक विस्तारक प्रश्न

गजल ३७क चुप्पी/बात, आँखि/रात, गन्धि/बरसात, हँसी/आघात, खाली
हाथ/सौगात, शब्द/गीतक क्रम लगभग एहि गजलमे फेर उपस्थित अछि। रदीफ
'बुझाइ पड़ैए'सँ 'के कहत' बनला पर ज्ञानक अन्तरव्यक्तिक हस्तान्तरणक प्रश्न
उत्पन्न होइत अछि, मुदा बिम्ब-संरचनामे बहुत कम अन्तर अछि। आलोचना
एकरा स्वतन्त्र घटनाक्रमक सिद्धि मानि नहि सकैत। घोषित १४-१८ मात्रा-सीमा
निकट सममात्रिक मिश्र लयक दावा करैत अछि; पाँति-पाँति ध्वनि-गणना बिना
अरूज़ी एकरूपताक निष्कर्ष देब उचित नहि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मौन भीतर कोन बात के कहत / आँखिमे जागल रात के कहत /
शब्द सभटा कागज पर अछि / गीतक असली बात के कहत

पाठक्रम परीक्षण : ४४ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ
छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४५ : एना नहि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १४-१७
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: एना नहि

नैतिक वर्जनाक भाषा आ 'एना नहि'

'नेहकँ व्यापार एना नहि / मोनकँ बाजार एना नहि' भावनात्मक सम्बन्धकें
बिकाउ वस्तु बनाबयक प्रतिवाद अछि। रदीफ 'एना नहि' नियमित निषेधक लघु
आदेश बनैत अछि; एहि कारण गजलक स्वर विचारात्मक, तनिक उपदेशात्मक
अछि। 'पाइ बढ़ल तँ आँखि बदलि जाए' प्रत्यक्ष व्यक्ति-वृत्तान्त नहि, धनक संग
व्यवहारक बिगड़बाक सम्भावनाक सामान्य आलोचना अछि। 'साँच कहब
अपराध भऽ जाए / कोनो दरबार एना नहि' अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रताक नैतिक
प्रश्न उठबैत अछि।

घरक विशालता आ सम्बन्धक एकतरफापन

‘घर बहुत पैघ, लोक सभ अलग / छोटे संसार एना नहि’ भौतिक विस्तार आ आत्मीयता बीचक अनमेल सूचित करैत अछि। अन्तिम ‘प्रेममे मान रहय दुनूक / एकतरफा प्यार एना नहि’ प्रेमकेँ पारस्परिक गरिमाक सम्बन्ध मानैत अछि। ई परिणाम रचनाकेँ केवल बाजारविरोधी उद्घोषसँ आगाँ बढ़बैत अछि। तथापि ‘एना नहि’ काव्य-भाषामे ‘कियैक नहि’क विश्लेषण कम छोड़ैत अछि; पाठक निषेध सुनैत अछि, संघर्षक जटिल स्थिति नहि। काफिया व्यापार/बाजार/व्यवहार/दरबार/संसार/प्यार ध्वनि-दृष्टिसँ संगठित अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : नेहकेँ व्यापार एना नहि / मोनकेँ बाजार एना नहि / प्रेममे मान रहय दुनूक / एकतरफा प्यार एना नहि

पाठक्रम परीक्षण : ४५ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४६ : धीरे-धीरे

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १४-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ल · रदीफ: धीरे-धीरे

समयक लयमे दुखक रूपान्तर

‘दिन हमर ढलल धीरे-धीरे / मोन सेहो बदलल धीरे-धीरे’ ‘ढलल’ आ ‘बदलल’क तुक सँ वृद्धावस्थाक कालगति बनबैत अछि। पूर्वक दुख ‘आगि जकाँ’ छल, फेर ‘नोर बनि पघलल’—एहि बिम्बमे तीव्र पीडा धीमे अभिव्यक्त अश्रुमे रूपान्तरित होइत अछि। हाँ, ‘दिन ढलल’ साहित्यिक सामान्य रूपक अछि; ‘नोर बनि पघलल’ अनुभवकेँ अधिक गतिमान करैत अछि। ‘धीरे-धीरे’ रदीफ आवाजक चाल मंद करबाक शिल्प अछि, जे विषयक समयसँ मेल खाइत अछि।

शरीर, आँगन आ गीतक अलग रिक्तता

‘केश उज्जर, पाएर थाकल’ दृश्यात्मक अछि; ‘देह अपन सम्हरल’ वृद्ध अवस्थाक भीतर आत्मसमायोजनक अर्थ दैत अछि। नेना अपन घर बसबैत अछि, आँगन खाली होइत अछि—पारिवारिक सफलताक संग परित्यक्त स्थानक एकाकीपन जोड़ल गेल अछि। अन्तिम अधकही गीतक सुर बनि निकलब दुखक पुनर्सर्जनाक रास्ता खोलेछै। एहि रचनाक वृत्त व्यक्तिगत जीवनक अछि, समाजक तथ्यात्मक

वृत्तान्त नहि। स्रोत शीर्षकमे 'धीरे-धीरे' सुरक्षित अछि; समीक्षा-वाक्यमे स्वीकृत 'नहु-नहु' वर्तनीक प्राथमिकता शीर्षक बदलबाक अधिकार नहि दैत।

मूल पाठ-साक्ष्य : दिन हमर ढलल धीरे-धीरे / मोन सेहो बदलल धीरे-धीरे /
अधकही जे गीत रहि गेल / सुर बनि निकलल धीरे-धीरे

पाठक्रम परीक्षण : ४६ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४७ : एहि शहरमे

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आत · रदीफ: एहि शहरमे

शहरक आर्थिक कोलाहल आ समयक अभाव

‘दामक चर्चा, भूखक बात’ शहरमे आर्थिक गप्प आ जैविक अभावक सह-अस्तित्व देखबैत अछि। ‘दिन छोट, बडु लम्बी रात’ समयक अनुभवक असमानता अछि, घड़ीक खगोलिक तथ्य नहि। ‘सभ हँसैत छथि, ककरो लग समय नहि’ भीड़मे घनिष्टता नहि होयबाक विरोधाभास बनैत अछि। रदीफ ‘एहि शहरमे’ प्रत्येक भावकें स्थानक एकहि फ्रेममे राखैत अछि, जाहिसँ वितरित दृश्यसभ एक शहरी जीवन-चित्रक रूप लैत अछि।

खिड़कीक बरसात आ गामक भाषिक स्मृति

‘मेघ बहुत अछि, पानि धरती धरि नहि / खिड़की भरि बरसात’ दृश्यगत अटपटपन अछि: मेघ वा बरसात खिड़की भरि छथि, मुदा धरती धरि पानि नहि — ई शहरी दृष्टिक दूरी होय सकैत अछि, शब्दशः मौसम-रिपोर्ट नहि। ‘चेहरा चमकैत, मोन घाव नुकबैत’क पाछाँ ‘गामक बोली धीरे-धीरे दूर भेल’ भाषिक विस्थापनक प्रश्न उठैत अछि। अन्तिम ‘आब बनल सौगात’मे गामक बोली स्मृतिक दुर्लभ उपहार बनैत अछि। ‘-आत’क काफिया आ स्थान-सूचक रदीफ मजबूत अछि; मुदा हर सामाजिक समस्याकें एकहि शहरक सार्वभौम सत्य मानब सीमित होएत।

मूल पाठ-साक्ष्य : दामक चर्चा, भूखक बात एहि शहरमे / दिन छोट, बडु लम्बी
रात एहि शहरमे / गामक बोली धीरे-धीरे दूर भेल / आब बनल सौगात एहि
शहरमे

पाठक्रम परीक्षण : ४७ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ
छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न ।

गजल ४८ : तखन बुझलहुँ

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-१९
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः तखन बुझलहुँ

घटना पछाति बुझबाक संरचना

‘अहाँ चुप भेलहुँ, बात तखन बुझलहुँ / चान डूबल, रात तखन बुझलहुँ’ अनुभवक
विलम्बित अर्थग्रहण दर्शबैत अछि। एहिमे घटना पहिने होइत अछि, अर्थ पाछाँ
खुलैत अछि। घर छोड़लाक बाद माटिक गन्धिक ‘सौगात’ बनब आ बाढ़ि
उतरला पर भीत भीतरक ‘आघात’ बुझब—दूनू जगह दूरि अथवा विलम्ब स्मृतिक
समझ बनबैत अछि। गजल ३७ ‘बुझाइ पड़ैए’ तत्कालिक अनुमानक भाषा छल,
एतय ‘तखन’क समयसूचकता अर्थक पुनर्विचार करैत अछि।

भीड़मे एसगरपन आ श्रोताक मौन

‘भीड़मे रहि कऽ एसगर भऽ गेलहुँ’ सामाजिक भीड़क भीतरक निर्वात स्पष्ट रूपसँ
कहैत अछि; ई एकर अधिक व्यक्तिगत कथन अछि। गायल गीत सुनि श्रोता चुप
भऽ गेल तखन ‘स्वरक बरसात’ बुझब मौनकेँ ग्रहणशीलताक सम्भावित संकेत
बनबैत अछि, मुदा श्रोता मौन किएक छथि—प्रभाव, थकान अथवा असहमति—
पाठ निश्चित नहि करैत। आलोचना ओहि अनिश्चितताकेँ खुलल राखय।
काफिया बात/रात/सौगात/आघात/बात/बरसात दोहरायल अछि, जाहिसँ नव
काल-रदीफक बावजूद पहिनुक बिम्ब-समूह निकट रहैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : अहाँ चुप भेलहुँ, बात तखन बुझलहुँ / चान डूबल, रात तखन
बुझलहुँ / गीत गबैत श्रोता चुप भऽ गेल / स्वरक बरसात तखन बुझलहुँ

पाठक्रम परीक्षण : ४८ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ
छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न ।

गजल ४९ : मोनमे रहत

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आस · रदीफ: मोनमे रहत

याद रहबाक स्थान: मोनमे रहत'

‘जाबत देह, कने आस मोनमे रहत’ भविष्यक प्रतिज्ञा अछि; व्यक्तिगत
अस्तित्वक अन्त धरि आशाक स्मृति बचल रखबाक प्रयत्न । माटि छुबबाक
पियास प्रवासी चेतनाक रूपमे अबैत अछि । बाढ़ि उतरि घर पुन: ठाढ़ होइतहुँ
भीतपर त्रास रहब पुनर्निर्माण आ आघातक अलग जीवनकाल देखबैत अछि ।
एहि प्रत्यक्ष दृश्यकें गजल ३५क ‘ठाढ़ रहत’ आ गजल २३क ‘मोनमे अछि’ सँ
मिलाओल जाए तँ अर्थक अधिकांश धुरी साझा अछि; केवल रदीफ नब अछि ।

माइक अँचराक सुवास आ अधूरी साँस

‘दूर शहरमे बख बीति जाए कतेको / माइक अँचराक सुवास मोनमे रहत’ एहि
रचनाक सर्वाधिक सजीव स्वतंत्र बिम्ब अछि । पहिनुक मातृ-स्मृतिक काँपल
हँकारक विपरीत एहिठाम सुगन्ध देहधर्मी याद बनैत अछि । अंतिम ‘एक अधूरी
साँस’ कलात्मक अन्त राखैत अछि, किन्तु समापन बहुत अनिर्दिष्ट अछि: ई
बिछोहक साँस, गीतक अधूरापन वा जीवनक अनिश्चितता—कोनो एक निश्चित
अर्थ नहि । रदीफ ‘मोनमे रहत’ स्मृतिक कथन सुनिश्चित करैत अछि, परन्तु
काफियामे ‘सुवास’क ध्वनि आस/पियास/त्रास/विश्वास/साँसक संग निकट
होइतहुँ पूर्ण एकरूप उच्चारण पुनर्जाँच योग्य अछि ।

मूल पाठ-साक्ष्य : जाबत देह, कने आस मोनमे रहत / माटि छुबबाक पियास
मोनमे रहत / गीत थमि जाए, स्वर सेहो चुप भऽ जाए / एक अधूरी साँस मोनमे
रहत

पाठक्रम परीक्षण : ४९ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ
छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न ।

गजल ५० : गीत बनत

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास ·
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आत · रदीफ: गीत बनत

कविता कखन गीत बनैत अछि

‘जँ हृदय छूबत, बात गीत बनत / जँ निन्न तोड़त, रात गीत बनत’ भावनात्मक असरकें कविता निर्माणक शर्त मानैत अछि। एतय गीतकोना बनैत अछि तकर व्यवहारिक रचना-विधि नहि, संवेदनात्मक सिद्धान्त अछि। ‘मेघ नहि हो, माटिक गन्धि उठि जाए / मोनक भीतर बरसात गीत बनत’ वास्तविक वर्षाक अभाव आ आत्मगत बरसातक बीच विडम्बना अछि। गजल ३७ आ ४४मे माटिक गन्धिसँ बरसातक अनुमान भेटल; एहि ठाम ओ अनुभूति स्पष्ट काव्यनिर्माणक प्रक्रिया बनैत अछि।

खाली हाथक सौगात आ शब्दक भीड़

‘खाली हाथ घुरलहुँ, नेह भेटि गेल’ उपहारक भौतिक मापदण्ड उलटैत अछि। ‘कखनो-कखनो आघात गीत बनत’ कहैत रचना कविता के केवल सुखद भावसँ नहि, घावसँ सेहो जन्म देबैत अछि। अन्तिम ‘शब्दक भीड़सँ कविता जन्म नहि लै / एक साँच बात गीत बनत’ आत्म-आलोचनात्मक कसौटी अछि, जे दीवानमे वारम्बार भेटैत बिम्ब आ रदीफक पुनरावृत्तिपर सेहो लागू भऽ सकैत अछि। यथार्थ अनुभवक सत्य कविताक आवश्यक शर्त होय सकैत अछि, मुदा एकमात्र औपचारिक कसौटी नहि; एहि सीमा सहित गजल अपन काव्य-प्रतिज्ञा प्रभावशाली ढङ्गसँ कहैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : जँ हृदय छूबत, बात गीत बनत / जँ निन्न तोड़त, रात गीत बनत / शब्दक भीड़सँ कविता जन्म नहि लै / एक साँच बात गीत बनत

पाठक्रम परीक्षण : ५० क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ४१-५० : अन्तररचनात्मक समीक्षात्मक निर्णय

४१-५०क समूह प्रश्नचिह्न (‘अछि किएक’) सँ आरम्भ होइत अछि, शेष स्मृति, उत्तर माँगनिहार आवाज, सार्वजनिक वक्ता, निषेध, समय, शहर, विलम्बित बोध आ अन्तमे कविता बनबाक विधान तक पहुँचैत अछि। ३७ आ ४४, ३५ आ ४९, ३७ आ ५०क निकट पाठीय सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि; एतय समान काफिया वा रदीफ मात्र नहि, समान शेर-क्रमक पुनरावर्तन सेहो जाँचल गेल। ४२क जरल चिट्ठी, ४६क परिवारसँ रिक्त आँगन आ ४७क शहरमे गामक बोलीक विस्थापन तुलनात्मक रूपेँ स्वतंत्र दृश्य प्रदान करैत अछि।

गजल ४१-५० : प्रमाणित पाठ-सूची

क्रम	मूल शीर्षक	अन्तिम मिसराक पहिचान
४१	अछि किएक	एक स्वर मोनक पास अछि किएक
४२	रहि गेल	अन्तिम सुरमे बात रहि गेल
४३	बाजू ने	ओकर असली ताल बाजू ने
४४	के कहत	गीतक असली बात के कहत
४५	एना नहि	एकतरफा प्यार एना नहि
४६	धीरे-धीरे	सुर बनि निकलल धीरे-धीरे
४७	एहि शहरमे	आब बनल सौगात एहि शहरमे
४८	तखन बुझलहुँ	स्वरक बरसात तखन बुझलहुँ
४९	मोनमे रहत	एक अधूरी साँस मोनमे रहत
५०	गीत बनत	एक साँच बात गीत बनत

दीवान-ए-विदेह · गजल ५१-६०

एहि भागक प्रत्येक समीक्षा मूल मैथिली पाण्डुलिपिक रचना-क्रम आ वास्तविक दसू मिसरासँ मिलान कऽ लिखल गेल अछि। घोषित मात्रा-क्रम आ कल-विन्यास प्रकाशकीय सूचनाक रूपमे पढ़ल गेल अछि, स्वतंत्र छन्द-प्रमाणक रूपमे नहि।

गजल ५१ : कहब ने

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः कहब ने

‘कहब ने’क कथन-लज्जा आ सम्भावित विश्वास

‘मोनक साँच बात कहब ने’ व्यक्तिगत सत्य उधारबाक अनुरोध अछि। ‘हँसि देलहुँ जे सभक सोझाँ / भीतरक आघात कहब ने’ देखाइत प्रसन्नता आ भीतरक अनुभवक अलग दुनियाँ रचैत अछि। गजल २२क ‘कहू तँ सही’ अपेक्षाकृत कठोर उत्तरदायित्वक भाषा छल; एहिठाम ‘कहब ने’ अपन अन्तरंग श्रोता सँ विश्वासक मांग करैत अछि। माटिक गन्धिसँ बिना मेघक बरसातक प्रश्न फेर आवैत अछि, मुदा एकर केन्द्र सार्वजनिक घोषणा नहि, कोमल स्वीकारोक्ति अछि।

अनचिन्हार भेटघाँट आ अधूर पाँति

‘भीड़मे भेटल ओ अनचिन्हार’क मुलाकात गजल ३१क अनचिन्हारक व्यवहार सँ भिन्न संदर्भ राखैत अछि, मुदा नामहीन मानव-सम्पर्कक काव्यरुचि समान अछि। ‘गीत लिखलहुँ, एक पाँती रहि गेल’ लिखबाक अधूरापनकें पुनः संवादक कारण बनबैत अछि। बहरक घोषणा आ १४-१८ मात्राक सीमाक स्वतन्त्र उच्चारण-परीक्षण शेष अछि; ‘-आत’ तुकमे बात/रात/आघात/बरसात/मुलाकात/बात घुर्दैत अछि। रचनाक उपलब्धि विनतीक नरम स्वर, सीमा पूर्व गजलसभक बहुतेक समान बिम्ब।

मूल पाठ-साक्ष्य : मोनक साँच बात कहब ने / केहन बीतल रात कहब ने / गीत लिखलहुँ, एक पाँती रहि गेल / ओहि पाँतीक बात कहब ने

पाठक्रम परीक्षण : ५१ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५२ : भेल अछि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-१७
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय •
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आस • रदीफ: भेल अछि

‘भेल अछि’ आ स्थितिक नब व्याख्या

‘मोन किएक उदास भेल अछि / आँखि किएक पियास भेल अछि’ कथकक
अन्तरस्थिति बुझबाक प्रयास अछि। दिनभरि गप्पक भीड़ आ साँझक निराशा
देखाबैत अछि जे संप्रेषणक मात्रा आत्मीयताक गुण निश्चित नहि करैत। ‘जकर
हाथ पकड़ि बाट चललौं / ओकरो पर विश्वास भेल अछि’ विरोधाभासपूर्ण ठाढ़
होइत अछि—एतय ‘ओकरो पर विश्वास’ नब विश्वासक स्थापना अछि कि
पुरान संशयक समाधान, से बिना अन्य पाठ-साक्ष्यक निश्चित नहि। समीक्षामे
एहि सम्भाव्य अस्पष्टताकें स्वीकारब आवश्यक अछि।

देहपर समयक लिखाइ

‘उमेर देह पर धीरे लिखलक / पुरनका गीत सुवास भेल अछि’ समयक लिखाइ
आ गीतक सुवासक रूपान्तरण अछि। पहिनुक गजल ४६मे उज्जर केश आ
थाकल पएर देहक यथार्थ दृश्य देलक; एहिठाम समय स्वयं लेखकक रूपक बनैत
अछि। ‘घरमे सभ किछु पुरनकें’ होइतहुँ ‘नबका आस’ निजी जीवनक दृश्यविहीन
आशा बनैत अछि। उदास/पियास/निरास/विश्वास/आस/सुवास तुक-परिवार
अछि, मुदा ‘भेल अछि’ रदीफ विवरणकें परिणामक भाषा बनबैत अछि;
अत्यधिक अमूर्तन एहि गजलक सीमा अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मोन किएक उदास भेल अछि / आँखि किएक पियास भेल अछि
/ उमेर देह पर धीरे लिखलक / पुरनका गीत सुवास भेल अछि

पाठक्रम परीक्षण : ५२ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-
घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५३ : आब नहि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: आब नहि

व्यापार-विरुद्ध प्रतिज्ञाक समय-बोध

‘नेहक एहन व्यापार आब नहि’ गजल ४५क ‘नेहकै व्यापार एना नहि’क स्पष्ट पाठीय निकटता अछि। पहिलमे विधि पर निषेध (‘एना नहि’) छल; एतय अनुभवक बादको निर्णय (‘आब नहि’) अछि। ‘साँच कहला पर जँ दण्ड भेटए / से बुझबै हम दरबार आब नहि’ राज्यक नामसँ बेसी न्यायपूर्ण संस्थाक कसौटी पूछैत अछि। ई कथन साहसपूर्ण अछि, मुदा कोनो वास्तविक दरबारक निर्णयक प्रमाण नहि।

अनचिन्हार सहायताक बीच दीवार हटाउ

‘दुखमे हाथ बढेलक जे कियो / ओकरा बीच दीवार आब नहि’ मानवीय सहयोगक इतिहासकै लोकक सामाजिक दूरीसँ बेसी विश्वसनीय मानैत अछि। नाम-पदक पाछाँ दौड छोड़बाक निर्णय गजल ३८क निकट अछि। अन्तिम ‘अपन मान बेचबाक सोच जँ उठए’ नैतिक पहराक रूपमे आत्मसंवाद अछि। तुकमे व्यापार/उधार/दरबार/दीवार/कारोबार/विचार सुनल जा सकैत अछि। विषय बहुतेक पूर्वक रचनाक पुनर्लेखन अछि, मुदा समय-सूचक ‘आब’ अनुभवजन्य बदलल निश्चयक अतिरिक्त अर्थ दैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : नेहक एहन व्यापार आब नहि / मोनक एतेक उधार आब नहि / अपन मान बेचबाक सोच जँ उठए / एहन कोनो विचार आब नहि

पाठक्रम परीक्षण : ५३ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५४ : याद अबैए

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १७-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः –आत · रदीफः याद अबैए

समय खोलैत संदूक आ चिट्ठी

‘मेहक पहिल बरसात’ आ ‘तोहर पहिल मुलाकात’क संग ‘पुरनका संदूक खोलिते’ कागजक सौगातक स्मृति जुड़ैत अछि। संदूक खोलबाक क्रिया स्मृतियात्राकै ठोस भौतिक आधार दैत अछि। रात्रिक रेलखिड़की फेर शहर आ गामक बीच दूरीक सांकेतिक स्थान अछि। गजल ३१मे रेलक खिड़की पछाँ बहार रहैत छल; एहिठाम खिड़की पछाँ रातिक अनुभव अछि। ‘याद अबैए’ वर्तमानकालमे घुरैत स्मृति अछि, भविष्यक ‘याद रहत’ नहि।

भीतपर पानिक चोट आ गीतक अधूरापन

बाढ़ि उतरला पर 'भीत पर जे / पानि देलक आघात'क पाँति दीर्घकालिक क्षतिक दृश्य अछि। एतय आघातक रूपक देवालक भौतिक चिन्ह सेहो होय सकैत अछि, मुदा कोनो विशिष्ट आपदाक सार्वजनिक प्रमाण नहि। गीतक अधकही बात फेर अन्तिम शेर बनैत अछि। '—आत' काफिया बरसात/मुलाकात/सौगात/रात/आघात/बात साधैत अछि, मुदा एके 'पहिल बरसात' वा 'रेल राति'क बिम्ब-कुटुम्बक पुनरावृत्तिसँ रचनाक स्वायत्त विस्तार सीमित अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मेहक पहिल बरसात याद अबैए / तोहर पहिल मुलाकात याद अबैए / नव गीतक सुर खोजैत-खोजैत / अधकही ओ बात याद अबैए

पाठक्रम परीक्षण : ५४ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५५ : फेर आउ

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: सममात्रिक · यति: ८ + ९ निकट, अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आर · रदीफ: फेर आउ

संबोधन 'फेर आउ'क तात्कालिकता

'खुलल अछि ई दुआर फेर आउ / कमलाक ओहि पार फेर आउ' प्रत्यक्ष निमन्त्रण अछि। पहिनुक गजल २१ 'घुरि आउ ने'क समीप लगभग समान्तरण बनैत अछि; परन्तु एतय 'फेर' वापसीक आवृत्तिपर जोर दैत अछि। रूसल सम्बन्धमे 'चुप्पी छोड़ू' कहब संवादक दुआर खोलैत अछि। मेहक गन्धि आ गाछीक बहार घ्राणात्मक स्मृति बनैत अछि। ई सभ बिम्ब यात्रा/प्रवासक स्थान सृजैत अछि, मुदा वक्ता-सम्बोधितक पहिचान अनिर्दिष्ट अछि।

बाढ़ि-बादक सहायताक माग

'बाढ़ि गेल, लोक घर बना रहल / ककरो बनि आधार फेर आउ' व्यक्तिगत मिलनकें सामूहिक कामक संग जोड़ैत अछि। ई शेर प्रेमक समानार्जित अर्थ उत्पन्न करैत अछि—लौटब केवल भावनात्मक इच्छा नहि, सहायता देबाक कार्य सेहो अछि। गीतक 'अन्तिम सुरक झंकार' पर रदीफ फेर घुरैत अछि। गजल

२१क आरि/आधार/झंकारक लगभग समरूप क्रमसे ई पाठ बड निकट अछि;
स्वतंत्र रचना मूल्यांकनमे नव रदीफक अन्तर पर्याप्त नहि होय सकैत अछि।
मूल पाठ-साक्ष्य : खुलल अछि ई दुआर फेर आउ / कमलाक ओहि पार फेर आउ
/ गीत अधूरा स्वर पर रुकल अछि / अन्तिम सुरक झंकार फेर आउ
पाठक्रम परीक्षण : ५५ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-
घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५६ : छूटि गेल

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १५-१९
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आम · रदीफ: छूटि गेल

रेल चढ़लाक बाद नामक विस्थापन

‘रेल चढ़िते गाम छूटि गेल / भीड़मे अपन नाम छूटि गेल’ प्रवासकें केवल
स्थानक परिवर्तन नहि, आत्मपरिचयक संकट बनबैत अछि। ‘पाइ भेटल, मुदा
साँझक संग / पीपर तर विश्राम छूटि गेल’ आर्थिक अर्जन आ समयानुभवक
असमान मूल्यांकन अछि। एहिमे पैसा कमायब नकारल नहि गेल, कमाइ समयक
अन्य सुविधाकें नहि भऽ सकैत से सूचित अछि। पहिनुक गजल ३१मे रेल देहकें
लऽ गेल मुदा याद रहबाक बात कहल गेल; एहि ठाम स्मृतिक बदला छूटबाक
सूची अछि।

ऊँच घर आ शून्य आँगन

‘घर बनल ऊँच, कोठरी बहुत / आँगनक पुरनका धाम छूटि गेल’ वास्तुकला आ
सम्बन्धक अन्तर देखाबैत अछि। लोककें प्रसन्न रखबाक धुनमे ‘अपन मनक काम’
छूटब जनसमूहक अपेक्षा आ निजी आकांक्षाक संघर्ष अछि। अन्तिम ‘माइक
चरणक प्रणाम’ छूटि जाएब दुनू भाव खोलैत अछि—दूरीसँ घटल भेटघाँट वा
संस्कारक छूट। कविता अर्थ निश्चित नहि करैत। काफिया
गाम/नाम/विश्राम/धाम/काम/प्रणाम सुस्पष्ट अछि; ‘छूटि गेल’क एकरूप निषेध
ई समूहक अधिक ठोस सामाजिक अनुभूति बनबैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : रेल चढ़िते गाम छूटि गेल / भीड़मे अपन नाम छूटि गेल /
परदेसक बाट पकड़िते जखन / माइक चरणक प्रणाम छूटि गेल

पाठक्रम परीक्षण : ५६ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५७ : रहैत अछि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-१७
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय •
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ईर • रदीफ: रहैत अछि

दृश्यसँ परे रहैत पीर

‘मौन भीतर पीर’ आ ‘आँखि भीतर नीर’क दोहराव अत्यन्त संक्षिप्त, लगभग सूत्ररूप भाषा अछि। कागज पुरान भेलो ‘शब्दमे एक लकीर’ रहबाक पाँति स्मृतिक दस्तावेजी टिकाउपनकै अलङ्कारिक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। धूसर फोटो आ मनक तस्वीरक भेदक प्रयोग माध्यमक परिवर्तनक भीतर स्मृतिक स्थायित्व देखबैत अछि। मुदा लिखित कागजक विश्वसनीयता वा फोटोमे सँ तथ्य निश्चित होइ, एहन दावा कविता नहि करैत।

पाठक लग सुरक शेष कम्पन

‘गीत समाप्त भऽ जाए मंचपर / सुरक पाछाँ नीर रहैत अछि’ भावक उत्तरजीवनक चित्र अछि। रदीफ ‘रहैत अछि’ नियमितता आ स्थायित्वक दुविधा रखैत अछि। पीर/नीर/लकीर/धीर/तस्वीर/नीर तुक ध्वनि-आधारित सम्बन्ध बनबैत अछि; मुदा ‘लकीर’ आ ‘तस्वीर’क व्यञ्जना कमजोर पड़ि सकैत अछि जँ ओकरा व्यापक दृश्य-परिवर्तन नहि भेटय। गजल ४२क शेष रहबाक प्रश्न एहि ठाम अधिक अमूर्त अछि; पाठीय उपलब्धि कागज-फोटो-मंचक तीन माध्यमक समांतर उल्लेख।

मूल पाठ-साक्ष्य : मौन भीतर पीर रहैत अछि / आँखि भीतर नीर रहैत अछि /
गीत समाप्त भऽ जाए मंचपर / सुरक पाछाँ नीर रहैत अछि

पाठक्रम परीक्षण : ५७ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५८ : ककरा कहू

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १५-१९
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आल · रदीफः ककरा कहू

हाटक जाल आ राजक भूखक रूपक

‘गामक एहन हाल’क प्रश्न लम्बा सार्वजनिक शिकायतक आरम्भ अछि। खेतक घाटा, हाटक दाम आ बीचक ‘जाल’ स्वाभाविक रूपसँ कृषकक विनिमय-संकट इंगित करैत अछि, मुदा निश्चित आर्थिक परिमाण नहि। ‘राज बदलल, नारा बदलल / भूख बनल अछि, काल’ घोषित राजकीय परिवर्तनक बावजूद जीवनक कठिन प्रश्न बाँचल रहबाक काव्यगत निर्णय अछि। ई राजनीतिक इतिहासक सत्यापन नहि, सामाजिक व्यंग्यक आलोचनात्मक स्वर अछि।

साँचे बजबाक भय आ श्रोता

‘साँच कहैत डर जे लगैए / एहन शासनक चाल ककरा कहू’ सार्वजनिक अभिव्यक्तिक जोखिमकें प्रश्नवाचक रदीफमे रखैत अछि। अन्तिम ‘गीत सुनावै छी सभक सोझाँ / मौनक असली हाल ककरा कहू’ विचित्र विरोध अछि: सभक सोझाँ गाबि सकैत छथि, मुदा मौनक असल व्यथा बतायब दुष्कर। एतय लोकगायकक सार्वजनिक आवाज आ निजी असहायता संगठित अछि। गजल २९ आ ४३क हाल-जाल-काल-ताल ध्वनिधुरी एहिठाम फेर भेटैत अछि; नव अर्थ बेसी भय आ अनकहल असहमतिक अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : गामक एहन हाल ककरा कहू / मोनमे उठल सवाल ककरा कहू / गीत सुनावै छी सभक सोझाँ / मौनक असली हाल ककरा कहू

पाठक्रम परीक्षण : ५८ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५९ : बुझाइत अछि

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः १३-१८
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः बुझाइत अछि

चुप्पी बुझबाक अन्तर्ध्वनि

‘अन्हारो रात बुझाइत अछि / मौन सेहो बात बुझाइत अछि’ अनुभवक अन्तर्निहित अर्थ बुझबाक प्रयास अछि। ‘खिड़की पर दू बूँद’सँ पूरा बरसातक अनुभूति इन्द्रियसंकेतक अतिशयोक्ति अछि; भौतिक मौसमक वास्तविक परिमाण नहि। खाली घरमे चूड़ीक खनक अनुपस्थित स्त्रीक स्मृतिवाचक ध्वनि होय सकैत अछि, मुदा कविता स्त्रीक परिचय वा अनुपस्थितिक कारण नहि बतबैत। एहि अनिर्दिष्टतामे छोट चित्र सजीव होइत अछि।

हँसीक भीतर आघात, अन्तिम चुप्पी

हँसीक नोर आ गीतक अन्तिम स्वरक बादक चुप्पी एकरे साधनसँ अनुभवक उलटाव रचैत अछि। गजल ३७ ‘बुझाइ पड़ैए’ आ एहि ‘बुझाइत अछि’मे क्रियारूप बदलैत अछि, मुदा बात/रात/बरसात/सौगात/आघातक क्रम अत्यन्त निकट रहल अछि। ‘चूड़ीक खनक’ एहि गजलक अपेक्षाकृत नव आवाज अछि; अन्यथा शीर्षक, काफिया आ भावनात्मक निष्कर्षक विविधता सीमित। मूल पाठक अर्थगत समता देखैत आलोचना स्वतंत्रता आ पुनरुक्ति दुनू दर्ज करैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : अन्हारो रात बुझाइत अछि / मौन सेहो बात बुझाइत अछि / गीतक अन्तिम स्वर थमिते / चुप्पी एक बात बुझाइत अछि

पाठक्रम परीक्षण : ५९ क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ६० : रहि जेतै

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १३-१७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ईत · रदीफः रहि जेतै

शरीरक पाछाँ बचल गीत

‘नाम मेटत, गीत रहि जेतै / देह थाकत, प्रीत रहि जेतै’ कवि-नामक स्थायित्वक बदला रचनाक प्रभावकैँ प्राथमिकता दैत अछि। ‘लोक सभ अपन बाट पकड़त / मोनमे कियो मीत’ व्यक्तिगत बिछोहक बादो एकटाक स्मृति बचबाक चित्र अछि। घर आ गाम बदलैत रहला पर गन्धिमे अतीत बाँचल रहबाक बिम्ब सांस्कृतिक स्मृति के सामाजिक रचना बनबैत अछि। रदीफ ‘रहि जेतै’ भविष्यक ओहि अवशेषकैँ नाम दैत अछि जे वर्तमानक पकड़सँ बाहर अछि।

जितबाक अर्थ आ पाठकक भूमिका

‘हारि कऽ जँ साँच बचा लेल / ओहीमे तऽ जीत रहि जेतै’ घोषित पराजय आ नैतिक निर्णयक अन्तर बनबैत अछि। अन्तिम ‘पोथी बन्द भऽ जाए एक दिन / पाठक भीतर गीत’ सबसे महत्त्वपूर्ण आत्मपरक क्षण अछि: काव्य अपन मुद्रित वस्तुक बाहर पाठकक अनुभवमे टिकबाक आकांक्षा रखैत अछि। ई वास्तविक पाठक-ग्रहण सर्वेक्षण नहि, साहित्यिक कामना अछि।

गीत/प्रीत/मीत/अतीत/जीत/गीत तुक-संगति सुस्पष्ट, मुदा गजल ८, २५, ३० आ ३९क गीत-प्रेम-जीतक शब्द-परिवारक पुनरावर्तन एतय स्वतंत्र भाषिक अन्वेषणकें सीमित करैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : नाम मेटत, गीत रहि जेतै / देह थाकत, प्रीत रहि जेतै / पोथी बन्द भऽ जाए एक दिन / पाठक भीतर गीत रहि जेतै

पाठक्रम परीक्षण : ६० क्रमाङ्कक पाँच शेर आ दस मिसरा; मूल शीर्षक आ छन्द-घोषणा मिलान सम्पन्न।

गजल ५१-६० : अन्तररचनात्मक समीक्षात्मक निर्णय

५१-६० मे आत्मीय स्वीकारोक्ति सँ नैतिक मनाही, रेलप्रवास, लिखित स्मृति आ पाठकक भीतर बाँचल गीतक क्रम अछि। ‘कहब ने’ (५१), ‘ककरा कहू’ (५८) आ ‘बुझाइत अछि’ (५९) सार्वजनिक कहबाक कठिनाइकें अलग-अलग ढङ्गसँ रखैत अछि। ५३क ‘आब नहि’ आ ४५क ‘एना नहि’, ५५क ‘फेर आउ’ आ २१क ‘घुरि आउ ने’, ५९क ‘बुझाइत अछि’ आ ३७क ‘बुझाइ पडैए’क निकट बिम्बक्रम एकटा स्पष्ट मौलिकता-परीक्षणक विषय अछि। ६०क अन्तिम पाठक-चिन्तन एहि समूहक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

गजल ५१-६० : प्रमाणित पाठ-सूची

क्रम	मूल शीर्षक	अन्तिम मिसराक पहिचान
५१	कहब ने	ओहि पाँतीक बात कहब ने
५२	भेल अछि	पुरनका गीत सुवास भेल अछि
५३	आब नहि	एहन कोनो विचार आब

		नहि
५४	याद अबैए	अधकही ओ बात याद अबैए
५५	फेर आउ	अन्तिम सुरक झंकार फेर आउ
५६	छूटि गेल	माइक चरणक प्रणाम छूटि गेल
५७	रहैत अछि	सुरक पाछाँ नीर रहैत अछि
५८	ककरा कहू	मौनक असली हाल ककरा कहू
५९	बुझाइट अछि	चुप्पी एक बात बुझाइट अछि
६०	रहि जेतै	पाठक भीतर गीत रहि जेतै

दीवान-ए-विदेह • गजल ६१-७०

गजल ६१ : एहि बेर

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-२१
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास •
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: एहि बेर

बन्द चुप्पीसँ नव विचार धरि

‘साँझ फेर खुजल दुआर’ गजलमे नव अवसरक बिम्ब अछि। ‘मेह पड़ल तँ खपरैल बाजि उठल’क स्वर वास्तविक घरेलू ध्वनिसँ उपजल अछि, जाहिसँ गीतक रूपक एकटा ठोस श्रवणीय घटना पबैत अछि। ‘बहुत दिन चुप रहि गेल छलहुँ’क बाद ‘बाजब कने बेकरार’ आत्मप्रकाशनक नव संकल्प अछि। ‘एहि बेर’ रदीफ अनिश्चित भविष्य नहि, अनुभूत समयक भीतर नव प्रयत्नक संकेत दैत अछि।

नेहकै जीत-हारसँ बचयबाक अभिप्राय

‘नेहकै हार-जीतक खेल नै मानब / रहए दुनूक करार’ व्यक्तिगत सम्बन्धकै स्पर्धाक बदला पारस्परिक सहमतिक रूपमे देखैत अछि। अन्तिम गीत ‘पुरान धुन छोड़ि’ नव विचार ग्रहण करैत अछि; एहि कारण नवीकरणक प्रश्न केवल निजी नहि, कलात्मक सेहो अछि। मुदा दुआर-बहार-पुकार पूर्व गजल २१/५५क निकट अछि। काफिया दुआर/पुकार/बहार/बेकरार/करार/विचार संगठित अछि, मुदा नव रचनाशीलता अंतिम शेरमे अधिक स्पष्ट अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : साँझ फेर खुजल दुआर एहि बेर / मोनमे उठल पुकार एहि बेर
/ गीत पुरान धुन छोड़ि कऽ उठल / नबका भेल विचार एहि बेर

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६१। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ६२ : कहैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास •
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आत • रदीफ: कहैए

कहैत मौन: अनुभूतिक विरोधी विधान

‘मौन भीतर बहुत बात कहैए’ वाक्यगत विरोधाभाससँ गजल शुरू होइत अछि। खुलल आँखिक ‘रात’ आ सुखायल माटिक ‘गन्धि’ केँ बरसातक वक्ता बनायल गेल अछि। अनुभव कखन प्रत्यक्ष होइत अछि आ कखन अनुमान, एहि भेदक प्रति पाठ सजग अछि, मुदा एहिठाम बिंब स्वयं पुरान गजल ३७ आ ४४ सँ बहुत निकट अछि। ‘कहैए’ रदीफ व्यक्तिक बदला संसारकेँ बोलय दैत अछि।

सौगात बनैत खाली हाथ

हँसैत चेहराक नोर आ खाली हाथ घुरल मनुष्यक हँसी—दुनूक अर्थ सामाजिक रूपसँ तुरन्त स्पष्ट नहि होइत। गीत लिखबाक बाद सुर उठलापर ‘बात कहैए’ मुद्रित शब्द आ श्रव्य अभिव्यक्तिक अन्तर बतबैत अछि। ई गजल ५०क ‘एक साँच बात गीत बनत’क सौन्दर्य-प्रश्नसँ संवाद करैत अछि। तथापि मूल शेरसभक समान क्रम नहि टूटल; एहि कारण नव रदीफ रचनाक स्वतंत्र मौलिकता लेल पर्याप्त नहि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मौन भीतर बहुत बात कहैए / खुलल आँखि एक रात कहैए /
शब्द लिखलासँ गीत नहि बनैए / सुर जखन उठै, बात कहैए

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६२। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ६३ : रहू ने

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास ·
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: रहू ने

बन्द सभक बीच एक दुआर

‘सभ बन्द हो, एक दुआर रहू ने’ सम्बन्धकेँ पूर्ण अवरोधक विरुद्ध छोटा सम्भावनाक रूपमे रखैत अछि। थाकल दिनमे आधार, परस्पर भिन्न विचार, दूर नेनाक कारण सुनसान आँगन—ई चारि प्रसङ्ग ‘रहू ने’र अनुनयक सहारे जुड़ैत अछि। विशेष महत्त्वपूर्ण शेर ‘सभ गप्प जीतबाक लेल नहि होइए’: संवादकेँ प्रतिद्वन्द्विता नहि, विचार-बचौनिहार सहअस्तित्व मानैत अछि।

विवाद आ प्रेमक फराक

‘रूसल रहू, मुदा नेह नै तोड़ू’ असहमतिक संग स्नेहक टिकाउपन स्वीकारैत अछि। अन्तिम गीतमे दुआर बाँचल रहबाक इच्छा स्थानसँ ध्वनिक रूपान्तरण करैत अछि। गजल दूक ‘रहि जाउ’ आ ६०क ‘रहि जेतै’सँ भावगत निकटता अछि, मुदा एहि गजलक विनती संवादी अर्थकेँ अधिक प्रमुख बनबैत अछि। काफिया दुआर/आधार/विचार/संसार/प्यार/दुआर रदीफक संग सुनल जा सकैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : सभ बन्द हो, एक दुआर रहू ने / थाकल दिनमे कने आधार रहू ने / नाम एक दिन मेटि जाए तऽ जाए / गीतमे अपन दुआर रहू ने

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६३। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ६४ : किएक नै

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १५-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ओर · रदीफ: किएक नै

प्रश्नक सकारात्मक उलटाव

‘राति अछि तँ भोर किएक नै’ निराशाकेँ अन्तिम सत्य नहि मानबाक वाक्य-तर्क अछि। ‘मौन अछि तँ शोर किएक नै’क संग ई प्रश्न भावनात्मक प्रतिरोध बनैत अछि। गजल ४१ ‘अछि किएक’मे असंतोषक कारण पूछल गेल छल; एहि ठाम ‘किएक नै’ सम्भावनाक आग्रह अछि। ‘लोक जँ मिलि कऽ बाट बना सकैत’ राजनीतिक क्रियाशीलताक सामूहिक शर्त राखैत अछि, मुदा कोनो वास्तविक आन्दोलनक इतिहास नहि दैत।

भाषा घरक साँस जकाँ

‘भाषा अपन घरक साँस जकाँ अछि / ओकर हाथमे डोर किएक नै’ महत्त्वपूर्ण भाषिक अस्मिताक बिम्ब अछि। ‘ओकर हाथ’मे भाषाक मानवीकरण अछि; डोर पीढ़ीगत हस्तान्तरणक सम्भावना दैत अछि। दूर देशमे रहि कमाइतहुँ गामक ओर मन रखबाक प्रश्न प्रवास आ मातृभाषाक सहअस्तित्व खोलैत अछि। अन्तिम हारल दिन गीत बनि सकबाक आकांक्षा रचनाक साहित्यिक पक्ष अछि; तथापि भोर/शोर/डोर/जोर/ओर/भोरक तुक पूर्व गजल ४०क लगभग समान विन्यास अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : राति अछि तँ भोर किएक नै / मौन अछि तँ शोर किएक नै /
हारल दिन जँ गीत बनि सकैए / गीतमे फेर भोर किएक नै

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६४ । शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ
मिलाओल गेल ।

गजल ६५ : आबो अछि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-१९
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आस · रदीफ: आबो अछि

अनुपस्थिति नहि भेटैत पुनर्निर्माण

‘घुरि एबाक आस आबो अछि’ स्मृतिक आकांक्षा के वर्तमानमे स्थिर रखैत अछि ।
बाढ़िक पाछाँ घर ठाढ़ भेल, मुदा भीत भीतर त्रास रहब पुनर्निर्माणक सीमाक
कठोर चित्र अछि । ‘राज बदलल, नारा फेर बदलल’क बाद लोकमे विश्वासक
बचल रहब अभावक बीच सामाजिक आशा अछि । गजल २३, २७, ३५ आ ४९मे
लगभग एहि समान आस/प्यास/त्रास/विश्वासक शब्दक्रम भेटैत अछि ।

माइक साँस आ कागजक चुप्पी

दूर कमाइत नेनाक पाछाँ ‘माइक अटकल साँस’ एकटा निजी कुटुम्बक देहधर्मी
दुःखक बिम्ब अछि । ‘गीत थमल, कागज चुप्प’क बावजूद मोनमे आशा रहब
लिखित कृति आ मनक जीवित समय अलग करैत अछि । ‘आबो अछि’ रदीफ
निस्तेज स्मृतिक बदला वर्तमानक उपस्थितिक दावा अछि; मुदा एहि गजलक
अधिकांश नाटकीय साक्ष्य पुनरावर्तित अछि । आलोचनाक ई निष्कर्ष रूप-ध्वनिसँ
अधिक पाँतिक संरचनात्मक समानतापर आधारित अछि ।

मूल पाठ-साक्ष्य : घुरि एबाक आस आबो अछि / माटिक मीठ प्यास आबो अछि
/ गीत थमल, कागज चुप्प अछि मुदा / मोनमे एक आस आबो अछि

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६५ । शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ
मिलाओल गेल ।

गजल ६६ : देखू ने

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-१९
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आल · रदीफः देखू ने

खेतक हाल देखबाक आग्रह

‘खेतक एखन हाल देखू ने / हाटक बीचक जाल देखू ने’ प्रत्यक्ष अवलोकनक सामाजिक आग्रह अछि। ‘धानक दाम घटै, बजारक बढ़ै’ उत्पादक आ ग्राहक-व्यापारक मूल्यभेदपर ध्यान खींचैत अछि; बिना मूल्य-आँकड़ाक एकरा प्रमाणित अर्थशास्त्रीय निष्कर्ष नहि मानल जाएत। ‘देखू ने’क विनम्र सम्बोधन प्रश्नकें साक्षात् दृश्य देखबाक चुनौती बनबैत अछि।

मंचक भाषण आ चूल्हक चुप्पी

‘मंचपर भाषण, घरमे चूल्ह शान्त’ कविता मे सार्वजनिक वाक्पटुता आ घरेलू अभावक तेज विरोध अछि। ‘पद बदलैते मुँह बदलि जाइत’ सत्ता-समीकृतिक आलोचना बनैत अछि। अन्तिम प्रश्न—गीत जँ लोकक पीर नहि कहत तँ ओकर असल हाल की—कविताक सामाजिक प्रयोजन स्पष्ट करैत अछि। गजल २९/४३/५८क हाल-जाल-काल शब्द-कुटुम्ब दोहरायल अछि, मुदा चूल्हक शान्त दृश्य अलग नैतिक तीक्ष्णता जोड़ैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : खेतक एखन हाल देखू ने / हाटक बीचक जाल देखू ने / गीत जँ लोकक पीर नै कहत / ओकर असली हाल देखू ने

मूल पाठः पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६६। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ६७ : घुरि चलू

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः घुरि चलू

घुरबाक प्रस्ताव आ वर्तमान शहर

‘बहुत भेल शहरक दुआर, घुरि चलू’ भीतरसँ उठल प्रस्ताव अछि; गजल ५५क ‘फेर आउ’ दोसर व्यक्तिक निमन्त्रण छल। ‘रेल हमरा बहुत दूर लऽ गेल’क पाछाँ दूर सुनाइत हँकार घ्राण आ श्रवणसँ स्मृति बनबैत अछि। ‘कमलाक पार’

भौगोलिक संकेत अछि, मुदा ओहि पारक निश्चित गाम अथवा यात्रा-पथ मूल पाठमे नहि।

बचल चीजक मूल्य

‘जे बचल अछि, ओकर मूल्य कम नहि’ गजलक नैतिक केन्द्र अछि। निजी विच्छोहक पाछाँ शेष सम्बन्ध, घरक छोट संसार आ अधूर गीत मिलि कऽ पुनरारम्भक आधार बनैत अछि। अंतिम ‘सुर एखन बाकी’क संग घुरबाक आग्रह कला-निर्माणपर सेहो लागू होइत अछि। दुआर-पार-हँकार-बहार-संसार-पुकार शब्दसमूह पूर्वक अनेक गजल सँ साझा अछि; प्रवासी प्रथम पुरुषक आग्रह एहि पुनरावर्तनकें किछु व्यक्तिगत ऊर्जा दैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : बहुत भेल शहरक दुआर, घुरि चलू / एक बेर कमलाक पार, घुरि चलू / गीत अधूरा अछि, सुर एखन बाकी / लेने मोनक पुकार, घुरि चलू

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६७। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ६८ : कहियो-कहियो

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: २०-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: –आत · रदीफ: कहियो-कहियो

अवकाशिक समय ‘कहियो-कहियो’

‘चुप्पी बनि जाइत बात कहियो-कहियो’ सार्वकालिक नियम नहि, विशिष्ट अवसरक अनुभव अछि। दिनमे राति उतरबाक विरोधी बिम्ब मानसिक अन्हारक व्यंजना खोलैत अछि। ‘मेघ नै हो’ होइतहुँ माटि महकला पर मनक बरसातक बोध आ वर्षा बाद स्वप्नमे मुलाकात स्मृतिक अनियमित पुनरागमन देखबैत अछि। दोहरायल ‘कहियो-कहियो’ अनुभवकें दुर्लभ, आकस्मिक बनबैत अछि।

तालिक पाछाँ चुप्पीक वाणी

गीत पूरा होइत श्रोता सभ ताली दैत छथि, मुदा ‘मौन कहै असली बात’ सार्वजनिक अनुमोदन आ भीतरक अनुभवक फराक देखबैत अछि। हँसीक पाछाँ काँपल आँखि पुरान आघातक संकेत बनैत अछि, निश्चित निदान नहि। गजल ४४क बिम्बक्रमसँ निकट सम्बन्ध अछि; एहिठाम अवसरसूचक रदीफ समयक

भिन्नता दैत अछि। काफिया बात/रात/बरसात/मुलाकात/आघात/बात संगठित,
मुदा शब्दक नवता सीमित।

मूल पाठ-साक्ष्य : चुप्पी बनि जाइत बात कहियो-कहियो / दिनमे उतरैए रात
कहियो-कहियो / गीत पूरा हो, सभ ताली दऽ उठि जाए / मौन कहै असली बात
कहियो-कहियो

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६८। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ
मिलाओल गेल।

गजल ६९ : तखनियो

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास •
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: ीत • रदीफ: तखनियो

तखनियो: बाधाक बाद बाँचल अर्थ

‘स्वर टूटए, रहत गीत तखनियो’ हानिक बादो कलाक बचल रहबाक प्रतिज्ञा
अछि। दूर जाइत सम्बन्धमे प्रीत, बिछुडैत मीतमे स्मृति, बाढ़ि कटल आरि
पाछाँ खेतक रीत—ई सभ अभावक दूसर कातकें देखबैत अछि। ‘तखनियो’क
कारण बाधा निषेधक अन्तिम सीमा नहि होइत।

राजक हार-जीत आ धूमिल आखर

‘राजक खेलमे लोक हारल बुझाइ / लोक भीतर रहत जीत’ बाहरी राजनीतिक
पराजय आ नागरिक आत्मबलक बीचक टकराव अछि। पीयर कागज आ धूमिल
आखरक पाछाँ सुरमे गीत बाँचल रहब माध्यमक भिन्न जीवनकालक विचार
अछि। मूल पाठमे पीयर कागजक वास्तविक अभिलेख नहि, साहित्यिक
आत्मविचार अछि। गीत/प्रीत/मीत/रीत/जीत/गीतक तुक ६० सँ आओर पूर्व
गजलसँ निकट अछि; नव विशेषता बाढ़ि-कटल आरि सँ कृषिश्रमक प्रतिक्रिया
अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : स्वर टूटए, रहत गीत तखनियो / दूर जाउ, रहत प्रीत तखनियो
/ कागज पीयर भऽ जाए, आखर धूमिल / सुरमे बाँचत गीत तखनियो

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ६९। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ
मिलाओल गेल।

गजल ७० : सुनैत रहू

मूल पाठ-विधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः सुनैत रहू

सुनबाक आज्ञा आ अनकहल यथार्थ

‘मौन भीतरक बात सुनैत रहू’ रचनाक प्रारम्भमे श्रवणक नैतिकता स्थापित करैत अछि। गजल ३६मे सुनाइ पड़बाक स्वानुभूति छल; एतय पाठककेँ सुनबाक निर्देश अछि। ‘हँसैत चेहरा सभ सुखी नहि होइ’ प्रत्यक्ष देखल प्रसन्नता आ सम्भावित दुखक महत्त्वपूर्ण भेद अछि। ‘नोर भीतरक आघात’ पाठककेँ संवेदना दैत अछि, निश्चित मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष नहि।

मेह, सौगात आ अन्तिम सुर

मेघ बरसलासँ ‘केवल पानि नहि’ होइत अछि—माटिक गन्धि आ कृषक जीवनक अर्थ सेहो जागैत अछि। खाली हाथ देल नेहकेँ सौगात मानव वस्तु-विनिमयक बदला सम्बन्धकेँ मूल्य दैत अछि। गीत चुप होइत अन्तिम सुर सुनबाक आग्रह कलात्मक ग्रहणक सूक्ष्मता अछि। गजल ५१, ५९ आ ६२क बात/रात/बरसात/आघात/सौगातक बिम्बकुल पुनरावर्तित अछि; उपलब्धि पाठकक सुनबाक कर्तव्यपर स्पष्ट बल।

मूल पाठ-साक्ष्य : मौन भीतरक बात सुनैत रहू / आँखिमे जागल रात सुनैत रहू /
गीत जखन धीरे-धीरे चुप होइ जाए / अन्तिम सुरक बात सुनैत रहू

मूल पाठः पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७०। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ६१-७० : तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अभिव्यक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व आ पुनरावृत्तिक कसौटीपर एहि दसू गजलक अध्ययन कएल गेल। बदलल रदीफ अपने आप नव अर्थक प्रमाण नहि; ठोस बिम्ब, वक्ताक समयस्थिति, सामाजिक प्रसङ्ग आ शेर-क्रमक अन्तर निर्णायक अछि। गजल ६४क भाषा-स्वाभिमान, ६६क किसान-चूल्हि सम्बन्ध, ६७क प्रवासी वापसी आ ७०क श्रवण-नीति विषयगत विस्तार दैत अछि; ६२/६८/७०मे पूर्व बात-रात-आघात समूहक अत्यधिक निकटता सेहो देखाइत अछि।

गजल ६१-७० : मूल शीर्षक-पञ्जी

गजल	शीर्षक	समापन मिसरा
६१	एहि बेर	नबका भेल विचार एहि बेर
६२	कहैए	सुर जखन उठै, बात कहैए
६३	रहू ने	गीतमे अपन दुआर रहू ने
६४	किएक नै	गीतमे फेर भोर किएक नै
६५	आबो अछि	मोनमे एक आस आबो अछि
६६	देखू ने	ओकर असली हाल देखू ने
६७	घुरि चलू	लेने मोनक पुकार, घुरि चलू
६८	कहियो-कहियो	मौन कहै असली बात कहियो-कहियो
६९	तखनियो	सुरमे बाँचत गीत तखनियो
७०	सुनैत रहू	अन्तिम सुरक बात सुनैत रहू

दीवान-ए-विदेह · गजल ७१-८०

गजल ७१ : फेरो कहू

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: २५-२९
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आत · रदीफ: फेरो कहू

उत्तर मँगबाक स्थानमे पुन: कथन

‘जे गप मोनमे दाबि रखने छी’क फेर कहबाक आग्रह दबायल व्यक्तिपर विश्वास देखबैत अछि। समय धाव स्वतः भरि दैत अछि—एहि लोकविश्वासक विरोधमे ‘नोर सुखलासँ बिसरल नहि आघात’क तर्क अछि। आँखिमे निन्न चोरि लेनिहार रातिक उल्लिखन निद्राहीन अनुभवकें वैयक्तिक रखैत अछि, मुदा निन्नक वैज्ञानिक कारणक निदान नहि।

धान कटबाक पाछाँ माटिक गन्धि

‘धान कटि गेल, खम्हार खाली, पवनो चुप भेल’ कृषिक ऋतु-परिवर्तनक सजीव दृश्य अछि; एहि समूहमे ई अपेक्षाकृत विशिष्ट भौतिक पृष्ठभूमि अछि। अनाम भेटमे अचानक हाथ पकड़ब संकट वा स्नेह दुनू अर्थकें खोलैत अछि। गीतक शब्दसँ बाहर बचल स्वर फेर कहल जाएबाक मांग करैत अछि। मात्रा-घोषणाक भिन्नता जाँचबाक अति आवश्यक अछि, मुदा प्रकाशित पाँतिक संरचना रदीफ ‘फेरो कहू’क शब्दक्रमसँ अधिक लम्बा बनैत अछि—ताहि लेल स्वतन्त्र उच्चारण-परीक्षण शेष अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : जे गप मोनमे दाबि रखने छी, बात फेरो कहू / जे निन्न आँखिसँ चोरि लेलक, रात फेरो कहू / गीत समाप्त भेल, मुदा किछु स्वर रहि गेल मोनमे / शब्दसँ जे नहि कहल गेल से बात फेरो कहू

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७१। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७२ : एखन बाकी अछि

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: २६-३०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आस · रदीफ: एखन बाकी अछि

लौटल हार आ सूखल पोखरि

‘हारि कऽ लौटि एलहुँ, तइयो आस’ पराजयकेँ पूर्ण शून्यता नहि मानैत अछि। सूखल पोखरिक तीर आ माटिक पियास पर्यावरणीय अभावक दृश्य दैत अछि। बाढ़िक बाद भीतपर बाँचल पानिक चिन्ह अनुभवक दू विरोधी जलरूप खेलैत अछि—कखन पानि अभाव, कखन विनाश। एहि कारण गजल पूर्वक आस/त्रास समूहसँ दृश्यगत तनिक बेसी विस्तार पबैत अछि।

माइक आँखि दुआर दिस

नेना दूर कमाइत अछि, माइक आँखि दुआर दिस टिकैत अछि: प्रवासक सामाजिक दूरीक दैनन्दिन दृश्य अछि। ‘टूटि-टूटि चलैत ओकर साँस’क साँग दुःख जीवित देहमे नाम पबैत अछि। अन्तिम दीप मिझाएल, श्रोता घुरि गेल, मुदा गीतमे गामक सुवास बचल—लिखित पोथी आ संवेदनाक अलग अस्तित्व। मुदा गजल २३/२७/६५क समान घटनाक्रमक तुलनामे नयापन मुख्यतः सूखल पोखरि आ माइक ताकल आँखिमे अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : हारि कऽ लौटि एलहुँ, तइयो आस एखन बाकी अछि / सूखल पोखरिक तीर, माटिक पियास एखन बाकी अछि / पोथी बन्द, दीप मिझाएल, सभ श्रोता घुरि गेल / गीतक भीतर गामक सुवास एखन बाकी अछि

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७२। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७३ : लगैए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: लगैए

‘लगैए’क निर्णय-स्थिति

‘तोहर स्वर सुनिते पुरनका दुआर लगैए’ स्मृतिक तुलनात्मक प्रक्रिया अछि; स्वर वास्तवमे दुआर नहि, ओकर अनुभूतिक पुनर्निर्माण अछि। ‘नेह जँ हिसाब माँगए’ तँ हाटक व्यापार जकाँ बुझायब सम्बन्ध आ आर्थिक विनिमयक सीमा खींचैत अछि। ‘साँच कहवाक दाम जँ चुप्पी होइ’ दरबारक बन्द प्रकृतिक आलोचना अछि; एकरा कोनो विशिष्ट राजकीय आदेशक तथ्य नहि मानल जाए।

अधूरा आँगन, जीवित कागज

‘नेना दूर, बूढ़ दुआर पर बैसल / आँगन आब अधूर संसार’क बिम्ब प्रवासी परिवारक रिक्तता देखबैत अछि। अन्तिम लोकक नोर छूबैत गीत ‘कागज नहि, जीबैत संसार’ बनैत अछि—माध्यमक सीमासँ बाहर पाठकीय अनुभवक कल्पना। स्वर/दुआर/बहार/व्यापार/दरबार/संसार/संसार पूर्वक परिचित ध्वनिमाल अछि; ‘लगैए’ हिनकर तथ्य-प्रतिज्ञाकेँ व्यक्तिक बोधमे परिणत करैत अछि, जे रचनाक सूक्ष्म उपलब्धि अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : तोहर स्वर सुनिते पुरनका दुआर लगैए / मेहक पहिल बूँद माटिक बहार लगैए / गीत जखन लोकक नोर छूबि जाए / कागज नहि, जीबैत संसार लगैए

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७३। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७४ : कोना होएत

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २१-३०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास •
यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: कोना होएत

धारक पार आ सम्बन्धक मान

‘नाव छै, धार तेज—एहि धारक पार कोना होएत’ भौतिक असमर्थताक प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि। ओही मतलामे ‘नेह छै, मान नहि—एहन करार कोना होएत’ पार पबबाक साधन आ नैतिक शर्तकेँ समानान्तर रखैत अछि। नाव मात्र पर्याप्त नहि जँ धार प्रचण्ड हो; नेह मात्र पर्याप्त नहि जँ गरिमा अनुपस्थित हो। ई प्रत्यक्ष-अनुमानक शास्त्रीय न्यायसूत्र नहि, मुदा शर्तीय तर्कक कलात्मक उपयोग अछि।

भूख, मातृभाषा आ श्रोताक अधिकार

‘मंच पर ताली बहुत, मुदा खेत चुप’ सार्वजनिक प्रदर्शन आ उत्पादक जीवनक बीचक अन्तर अछि। ‘भाषा जँ घरमे लजाइत-लजाइत बाजल जाए / आखरक फेर उद्धार कोना होएत’ मातृभाषाक दैनिक व्यवहारकेँ साहित्यिक संरक्षणक प्राथमिक शर्त मानैत अछि। अन्तिम शोर बनल गीत श्रोताक नेह नहि पहुँचबाक खतरा उठबैत अछि। अनेक प्रसङ्गक बावजूद प्रश्न रदीफक कारण नैतिक शर्तक

एकसूत्रता बनैत अछि; ई ६१-८०क अधिक वैचारिक रूपसँ सम्पन्न रचना सभमे एक अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : नाव छै, धार तेज—एहि धारक पार कोना होएत / नेह छै, मान नहि—एहन करार कोना होएत / गीत जँ स्वरक बदला केवल शोर बनि जाए / श्रोता धरि नेहक हँकार कोना होएत

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७४। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७५ : रहि जाए

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रम: १७-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास ·
यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: ीत · रदीफ: रहि जाए

थाकल शब्दक पाछाँ लोक-कंठ

‘शब्द थाकए, मुदा गीत रहि जाए’ मुद्रित भाषा आ सजीव गायनक अन्तर सूचित करैत अछि। रूठल सम्बन्धमे प्रीतक बचल रहबाक आकांक्षा ‘रहि जाए’क विधेयक कारण आदेश नहि, कामना बनैत अछि। पुरान दलानपर नव घर बनब आ गन्धिमे अतीत रहब धरोहरक भौतिक परिवर्तनक सुगन्धात्मक स्मृति बनैत अछि।

पुस्तक धूरि खाए, गीत बाँचय

अन्तिम शेर ‘नाम मेटि जाए, पोथी धूरि खा लए / लोकक कंठमे यदि गीत रहि जाए’ ग्रन्थक भौतिक जीवनसँ मौखिक परम्पराक स्वतन्त्र अस्तित्व दर्शबैत अछि। एकरा वास्तविक सांस्कृतिक प्रसारक प्रमाण नहि, कविक आकांक्षा मानल जाए। गीत/प्रीत/मीत/अतीत/जीत/गीत ध्वनिमाला पूर्व गजल ६०/६१ सँ निकट अछि। नव बिम्ब ‘पुरनका दलानपर नबका घर’ संवेदनाक विशिष्ट स्थानीय धरातल दैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : शब्द थाकए, मुदा गीत रहि जाए / रुसि जाउ, मुदा प्रीत रहि जाए / नाम मेटि जाए, पोथी धूरि खा लए / लोकक कंठमे यदि गीत रहि जाए

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७५। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७६ : ओहि पार

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: नीर • रदीफ: ओहि पार

नदीक एहि आ ओहि पार

‘नाव एतऽ, आँखिक नीर ओहि पार / हम एतऽ, मोनक पीर ओहि पार’ शारीरिक
उपस्थिति आ भावनाक दूरिक द्विविध स्थान रचैत अछि। ‘हाथ नहि छोड़ू’क
आग्रह बाढ़ि अथवा सामान्य जीवनसंकट दुनूमे पढल जा सकैत अछि। ‘आरि
कटि गेल, खेत दू भाग भेल’ वास्तविक भूभागक आंशिक विभाजनक दृश्य अछि;
मुदा ई परिदृश्य कोन वर्षक बाढ़ि, तकर प्रमाण मूल कविता नहि देत।

नक्शाक रेखा आ नेहक लकीर

‘देशक नक्शा रेखा खींचि सकैए / नेहक कोन लकीर ओहि पार’ सीमा-निर्धारणक
राजनीतिक साधन आ प्रेमक अदृश्य सम्बन्धकें अलग करैत अछि। ई नकाशास्त्र
वा सीमा-विवादक विशिष्ट ऐतिहासिक लेख नहि; भावगत प्रश्न अछि। अन्तिम
‘शब्द एतऽ, स्वर अधीर ओहि पार’ रचनाक भाषा आ जीवित कंठक अलग स्थान
चिन्हित करैत अछि। ई गजल केवल प्रवासक दोहराव नहि, स्थानिक सर्वनामक
योजनाबद्ध उपयोगसँ विशिष्ट शिल्प हासिल करैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : नाव एतऽ, आँखिक नीर ओहि पार / हम एतऽ, मोनक पीर
ओहि पार / गीत एतऽ शुरू भेल मोनक भीतर / शब्द एतऽ, स्वर अधीर ओहि
पार

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७६। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ
मिलाओल गेल।

गजल ७७ : बुझि गेलहुँ

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-१९
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आत • रदीफ: बुझि गेलहुँ

समझक पूर्णता वा पुनःसंशय

‘अहाँ चुप भेलहुँ, बात बुझि गेलहुँ’ गजल ४८क ‘तखन बुझलहुँ’ सँ निकट अछि। नव रदीफ ‘बुझि गेलहुँ’ समझक पूर्णताक दावा बनबैत अछि, जखनकि पुरान गजलमे ‘तखन’सँ समयक प्रसङ्ग खुलैत छल। ‘माटिक गन्धि’, ‘पुरनका आघात’ आ ‘मोनक बरसात’ समान बिम्बसभ फेर उपस्थित अछि। एहि कारण परिवर्तन व्याकरणिक परिणामक बेसी, काव्यदृश्यक कम अछि।

गीतक चुप्प श्रोता

गायल गीतक श्रोता चुप भेल छथि, कवि ओकरा ‘सुरक असली बात’ बुझबाक क्षण मानैत छथि। मुदा मौनक एकल अर्थ निर्धारित नहि; आस्था, असहमति, शोक, धैर्य—अनेक कारण भऽ सकैत अछि। असल समीक्षा ई सीमाकेँ पहिचानैत अछि। काफिया बात/रात/सौगात/आघात/बरसात/बातक पूरा समूह पहिनहिसँ परिचित अछि; एहि पाठमे अद्वितीय शिल्पगत खोज कम, पुनर्व्याख्याक प्रवृत्ति बेसी अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : अहाँ चुप भेलहुँ, बात बुझि गेलहुँ / चान डूबल, रात बुझि गेलहुँ / गीत गबैत सभ चुप भऽ गेल / सुरक असली बात बुझि गेलहुँ

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७७। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७८ : एहि रातिमे

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: एहि रातिमे

राति समय नहि, अनुभूतिक पात्र

‘के खोललक मोनक दुआर एहि रातिमे’ रदीफ समयकेँ घटनाक सीमा बनबैत अछि। ‘मेघ नै, तैयो माटि महकि उठल’ विनु वर्षाक नव मनोदशा जगैत अछि। दिनमे कठिन गप्प रातिमे ‘चुप्पी बनि गेल विचार’—एहि विरोधाभासमे विचारक उपस्थिति शब्दहीन होइत अछि। गजल ७१क पुनः कथनक आग्रहक तुलनामे एतय विचार मौनमे जीवित रहैत अछि।

नहि कहल नामक घुरि अबब

‘साल भर जे नाम जिह्वा पर नै आएल’ रातिक एका-एक घुरब स्मृतिक अनियतता स्पष्ट करैत अछि। पुरान गीत स्वयं सुर खोजि लेब आ मौन झंकार बनब कविता-निर्माणक स्वायत्तताक रूपक अछि।

दुआर/हँकार/बहार/विचार/प्यार/झंकार तुक-संसार पूर्व गजल २१/५५क निकट अछि; ई रचना समय-सीमाक एकाग्रता सँ किछु भिन्नता पबैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : के खोललक मोनक दुआर एहि रातिमे / के देलक दूरसँ हँकार एहि रातिमे / गीत पुरान स्वयं सुर खोजि लेलक / मौन बनि उठल झंकार एहि रातिमे

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७८। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७९ : आब की

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १५-११ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आस • रदीफ: आब की

प्रश्न ‘आब की’क संकट

‘टूटि गेल जँ विश्वास, आब की’ आरम्भमे उत्तरक आशा नहि, समस्याक तीव्रता रखैत अछि। बाढ़िक बाद घर बनल, मुदा भीतमे त्रास अछि; ई विभाजन ऐतिहासिक अस्मिताक नहि, पुनर्स्थापनाक मनोवैज्ञानिक सीमाक अनुभव अछि। माइक रुकल साँस दूर कमाइ करनिहार नेनाक वापसीक बादो समस्या समाप्त नहि भेल देखबैत अछि। रदीफ ‘आब की’ चिन्तनकें खुलल छोड़ैत अछि।

बिकल खेत आ नहि रहल श्रोता

‘खेत बिकि गेल, हाट सजि गेल / माटिक बुझल पियास, आब की’ खेतीक भूमि आ बजारक प्रतिद्वन्द्विता सूचित करैत अछि; मुदा ‘माटिक बुझल पियास’क अर्थ अनिश्चित अछि—प्यास मेटल कि बुझल, दू व्याख्या सम्भव अछि। अन्तिम शेरमे गीत गाबि थाकल गायक लग श्रोता नहि—कविक सामाजिक सञ्चार टूटल अछि। प्रारम्भक व्यक्तिगत विश्वाससँ अन्तक सार्वजनिक एकाकीपन धरि ई प्रगति सार्थक अछि, मुदा आशा-प्यास-त्रास-साँसक शब्दक्रम अतिपरिचित।

मूल पाठ-साक्ष्य : टूटि गेल जँ विश्वास, आब की / बचल नहि ककरो आस, आब की / गीत लिखल, स्वर गबैत थाकल / श्रोता नहि आसपास, आब की

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ७९। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ८० : सुनि लिअ

मूल पाठ-विधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रम: १५-१९। मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: सुनि लिअ

‘सुनि लिअ’क संयत नैतिक आज्ञा

‘मोनक धीमी पुकार सुनि लिअ’ पूर्व गजल ७०क ‘सुनैत रहूँसँ अर्थगत अलग अछि: ओतय निरन्तर श्रवणक आग्रह छल, एहिठाम एकटा खास अवसरपर ध्यान देबाक अनुरोध। गीत थमलापरो कम्पित सुरक झंकार काव्यक अधूर परिणाम अछि। ‘सभ कहैए, मुदा जे चुप अछि / ओकर भीतर विचार’ बहुमतक आवाजसँ अधिक उपेक्षित मौनकें सुनबाक नैतिकता अछि।

नदीक धार आ घरक भीतरक दुआर

‘बाढ़ि उतरि गेल, नाव किनार लगल / पानिक बदलैत धार सुनि लिअ’ विपत्तिक दृश्यात्मक समाप्तिक पाछाँ नदीक बदलैत स्वभावक सावधानी राखैत अछि। अन्तिम ‘घरक बाहर बहुत दुनिया / भीतरक एक दुआर’ सार्वजनिक विस्तार आ आत्मीय निकासक संगति अछि। दुआर-हँकार-झंकार-विचार-धार-दुआर पुनरावृत्ति परिचित अछि, मुदा चुप ककरो लगक विचार सुनबाक सम्बन्धवादी अभिप्राय स्पष्ट अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य : मोनक धीमी पुकार सुनि लिअ / दूर गामक हँकार सुनि लिअ / घरक बाहर बहुत दुनिया अछि / भीतरक एक दुआर सुनि लिअ

मूल पाठ: पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८०। शीर्षक आ छन्द-विवरण स्रोतसँ मिलाओल गेल।

गजल ७१-८० : तुलनात्मक मूल्याङ्कन

अभिव्यक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व आ पुनरावृत्तिक कसौटीपर एहि दसू गजलक अध्ययन कएल गेल। बदलल रदीफ अपने आप नव अर्थक प्रमाण नहि;

ठोस बिम्ब, वक्ताक समयस्थिति, सामाजिक प्रसङ्ग आ शेर-क्रमक अन्तर निर्णायक अछि। गजल ७४क नाव-मान-भाषा सम्बन्ध आ ७६क एहि/ओहि पारक योजना नव शिल्प प्रस्तुत करैत अछि; ७७क ४८ सँ आ ७९क ३५/६५ सँ निकट सम्बन्ध मौलिकता-परीक्षणक केन्द्र अछि।

गजल ७१-८० : मूल शीर्षक-पञ्जी

गजल	शीर्षक	समापन मिसरा
७१	फेरो कहू	शब्दसँ जे नहि कहल गेल से बात फेरो कहू
७२	एखन बाकी अछि	गीतक भीतर गामक सुवास एखन बाकी अछि
७३	लगैए	कागज नहि, जीबैत संसार लगैए
७४	कोना होएत	श्रोता धरि नेहक हँकार कोना होएत
७५	रहि जाए	लोकक कंठमे यदि गीत रहि जाए
७६	ओहि पार	शब्द एतऽ, स्वर अधीर ओहि पार
७७	बुझि गेलहुँ	सुरक असली बात बुझि गेलहुँ
७८	एहि रातिमे	मौन बनि उठल झंकार एहि रातिमे
७९	आब की	श्रोता नहि आसपास, आब की
८०	सुनि लिअ	भीतरक एक दुआर सुनि लिअ

दीवान-ए-विदेह : गजल 81-100क मूल पाठाधारित विस्तृत समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुरक मूल मैथिली पाठक गजल-क्रम, शीर्षक, घोषित बहर, मात्रा-विधान, शेरक वास्तविक शब्दक्रम आ अन्तररचनात्मक पाठभेदक मिलान करैत प्रत्येक रचनाक आलोचना। घोषणा कएल छन्द-मानककें वास्तविक ध्वन्यात्मक मापनक बिना प्रमाणित अरूजी समता नहि मानल गेल अछि।

गजल ८१ : एखनहुँ

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आस • रदीफ: एखनहुँ।

आशाक काल आ पुनर्निर्माणक अपूर्णता

पहिल शेरमे 'घुरि एबाक आस' आ 'माटि छुबबाक प्यास' दुनू एकहि रदीफ 'एखनहुँ' पर टिकैत अछि, मुदा पहिल आकांक्षा व्यक्तिक वापसी चाहैत अछि आ दोसर जन्मभूमिक स्पर्श। बाढ़ि उतरला आ घर पुन: ठाढ़ भेला पाछाँ भीतमे बचल 'त्रास' बाहरी पुनर्निर्माण आ भीतरक आशङ्काक भेद खोलैत अछि। राज आ नारा बदलबाक उल्लेख पछिला दु:खकें निजी नहिऐँ राखि सार्वजनिक विश्वासक सङ्कटसँ जोड़ैत अछि। दूर देशमे बूढ़ होइत नेनाक माइक अँचराक सुवास याद पडब प्रवासक समय-विस्थापनकें इन्द्रियानुभव बनबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'एखनहुँ'क आवृत्ति असमाप्त अनुभूतिक समय रचैत अछि; गजल उत्तरक बदला बाँचल आसक सूची प्रस्तुत करैत अछि। मुदा 'लोकमे कने विश्वास'क निर्धारण कसक अनुभव अछि, ई स्पष्ट नहि; राजक परिवर्तनो अनिर्दिष्ट अछि। गजल ७९क बाढ़ि-पछाति अविश्वासक दृश्यसँ निकटता पाठगत पुनरावृत्तिक कसौटी परखबाक माँग करैत अछि। घोषित १५-२० मात्राक फैलावक आधारपर सख्त अरूजी समानता सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : घुरि एबाक आस एखनहुँ / माटि छुबबाक प्यास एखनहुँ — गीत पुरान, स्वर धाकल, राति ढलल / मोनमे एकटा साँस एखनहुँ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ८२ : घुरि आउ

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः घुरि आउ ।

आह्वानक भाषा आ अधूर गीत

‘घुरि आउ’ एकटा संबोधन-प्रधान गजल अछि । साँझक खुलैत दुआर आ दूरक
हँकार अनुपस्थित व्यक्तिक लेल घरकें प्रतीक्षारत बनबैत अछि । ‘रूसल रहू, मुदा
चुप्पी पैघ नै करू’ विशेष पद अछिः कथक असहमतिसँ डरैत नहि, संवाद-
विच्छेदसँ डरैत अछि । मेह-पछाति माटिक महक आ बाढिसँ बचल लोक परस्पर
जोड़ैत गजल विस्थापनक बादो जियबाक सम्भावना देखबैत अछि । अन्तिम
गीतक अधूरापन कविता लिखबाक क्रिया आ सम्बन्धक टूटल वार्ता दुनूक सन्दर्भ
बनैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

दुआर, हँकार, बहार, संसार आ झंकारक तुक-विन्यास सहज अछि; मुदा एहि
समूहक आह्वान गजल ३, १६ आ ८०क निकट पड़ैत अछि । ‘बाढि बहुत किछु लऽ
गेल, लोक बचल’ पाठकीय रूपसँ असरदार अछि, तथापि ‘लोक’क अनुभव
अनिर्दिष्ट रहैत अछि । आग्रहक प्रभाव बारंबार ‘घुरि आउ’ सँ बढैत अछि, मुदा
किछु शेर एकहि अर्थक पुनरावृत्ति करैत अछि ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : साँझ फेर खोललक दुआर, घुरि आउ / दूरसँ दैए के
हँकार, घुरि आउ — गीत आधा अछि, सुर एखन थमल नहि / लेने अन्तिम
झंकार, घुरि आउ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८२ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल ८३ : कहियो ने

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः
अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आत · रदीफः कहियो ने ।

नकारक नैतिक विवेक

ई गजल भावनाकें ओकर बाहरी रूपक आधारपर छोटा नहि करबाक आग्रह करैत अछि। मेघ बिनु महकैत माटिकें 'झूठ बरसात' नहि कहबाक निर्देश अनुभूतिक सत्य आ मौसमक प्रत्यक्ष घटना बीच भेद रचैत अछि। हँसैत चेहरामे नोरक रेखा देखब, खाली हाथक नेहकें सौगात मानब, आ लोकक पीर धरि पहुँचल गीतकें मात्र 'बात' नहि कहब—ई सभ उदाहरण मूल्याङ्कनक जल्दबाजी रोकैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'कहियो ने' रदीफक निषेध-विन्यास काव्यकें नीतिवचनक निकट लऽ जाइत अछि। बाहरी व्यवहार आ भीतरी पीडक अन्तर साहित्यिक रूपसँ सार्थक अछि, मुदा किछु मिसरामे आदेश अधिक आ दृश्य कम अछि। पानि बिनु माटिक महकक बिम्बकें मौलिक वैज्ञानिक दावाक रूपमे नहि, काव्यिक असङ्गतिक रूपमे पढ़ब उचित अछि। गजल ९०मे एही संवेदना गीतक परिभाषामे फेर अबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनक असली बात कहियो ने / आँखिमे जागल रात कहियो ने — गीत जँ लोकक पीर धरि पहुँचि जाए / ओकरा केवल बात कहियो ने

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ८४ : मोन मानै नहि

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: ११-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: मोन मानै नहि।

निराशाक विरुद्ध चेतनाक प्रतिवाद

'मोन मानै नहि'क निषेध बाह्य परिस्थितिक अन्तिम निर्णय मानबाक अस्वीकृति अछि। दीवार आ रस्ता, अन्हार आ भोर, पुरान नाव आ मझधार—तीनू जोडा ठोस बाधा आ चलैत इच्छाशक्तिक सङ्घर्ष रचैत अछि। 'सभ कहैए बूढ़ भेलहुँ, आब चुप रहू' शेरमे उम्रक नामपर लोकक चुप्पी अपेक्षाक प्रतिवाद भेटैत अछि। अन्तिम उज्जर कागज आ अधूर गीत रचनात्मक श्रमक अनन्त सम्भावना देखबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

एहि गजलक केन्द्रीय उपलब्धि भोरक सामान्य आशावाद नहि, वृद्धावस्था आ असफल लेखनपर सार्वजनिक निर्णयकेँ अस्वीकार करब अछि। मुदा नाव/मझधार आ राति/भोर अत्यन्त परिचित रूपक छथि; नव दृश्य-विकास सीमित अछि। 'स्थायी ई अन्हार, मोन मानै नहि' कथन सांत्वना दैत अछि, तथ्यगत आश्वासन नहि। रदीफक पुनरावृत्ति प्रतिवादक लय बनबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : एतेक जल्दी हार, मोन मानै नहि / रस्ता रोकए दीवार, मोन मानै नहि — कागज उज्जर, शब्द कम, गीत अधूरा / एतबे पर हार, मोन मानै नहि

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८४। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ८५ : रहि गेलै

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीत • रदीफ: रहि गेलै।

अवशेषक सौन्दर्य आ सामूहिक कण्ठ

शब्द थमलापर गीत बचब आ रूसल मनमे प्रीत बचब—ई आरम्भ वस्तुक समाप्ति आ सम्बन्धक शेषताक भेद स्थापित करैत अछि। पीपर तर रहि गेल मीत समूह-बिखरावक बीच विशिष्ट दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। पुरान दलानपर उठल नव घर आ माटिक गन्धिसँ अतीतक उपस्थिति वास्तु आ स्मृतिकेँ एक संग पढबैत अछि। अन्तमे नाम मेटलापरो लोकक कण्ठमे गीत रहब लिखित संग्रह आ मौखिक परम्पराक अन्तर उजागर करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'रहि गेलै' रदीफक व्याकरण गजलकेँ पूरा भऽ चुकल घटनाक अवशेषक रूप दैत अछि; ९८क 'आबो रहत' भावी स्थायित्वक दावे सँ एकर निर्णायक अन्तर अछि। मुदा समान पदावलीक बारंबार प्रयोग वाचिक विविधता घटबैत अछि। 'लोकक कंठमे गीत' लोकपरम्पराक सम्भावना अछि, वास्तविक संग्रहणक प्रमाण नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : शब्द थमल, एक गीत रहि गेलै / रूसल मनमे प्रीत रहि गेलै — नाम मेटि जाए, पोथी धूरि खा लए / लोकक कंठमे गीत रहि गेलै

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८५। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ८६ : आब कहू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुञ्जी। मात्रा-क्रम: १७-२२
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आल • रदीफ: आब कहू।

सवालक वक्ता आ राजनीतिक अर्थव्यवस्था

धानक दाम घटना आ बाजारक दाम बढ़बक विरोध किसानक कमाइक
अनिश्चितता प्रकट करैत अछि। मंचपर भाषण आ घरमे ठंडा चूल्हा शासनक
सार्वजनिक कथन आ रोजमर्राक अभावक दूरीक सर्वाधिक ठोस दृश्य अछि।
मुखपर हँसी आ आँखिक भीतर थकान व्यक्ति-स्तरपर ओही विरोध दुहरबैत
अछि। अन्तिम शेर गीत केवल ताली लेल लिखबाक सम्भावनाक विरुद्ध लोकक
पीरक प्रश्न उठबैत अछि; एहि रूपेँ कविता स्वयं अपन जनसम्बन्ध पर समीक्षा
करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘आब कहू’ रदीफ प्रश्नोत्तरक मंच बनबैत अछि, मुदा उत्तर दैत नहि। ‘ककर
जाल’ अथवा ‘राजक चाल’क उल्लेख आरोपक संकेत अछि, विशिष्ट भ्रष्टाचारक
प्रमाण नहि; नाटक वा समाचारक तथ्य रूपेँ एकरा नहि लिखब चाही।

हाल/सवाल/जाल/चाल/काल काफियाक ध्वनिसङ्गति तीक्ष्ण अछि, मुदा
सामाजिक प्रश्नक समाधान बोधगम्य सूत्र बनि नहि उठैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनक असली हाल आब कहू / ई उठल कोन
सवाल आब कहू — गीत जँ केवल ताली लेल लिखल जाए / लोकक पीरक हाल
आब कहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८६। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ८७ : बिसरब नहि

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२२
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आर • रदीफः बिसरब नहि ।

नामहीन सहायताक स्मृति

‘बादिक राति कियो नाम नहि पूछलक / हाथ बढेलक—ओ व्यवहार बिसरब नहि’
एहि संग्रहक सबसँ ठोस नैतिक प्रसङ्गसभमे अछि । सहायता करनिहारक नामक
अनुपस्थिति ओकर व्यवहारक मूल्य घटबैत नहि; स्मृतिक केन्द्र मानवीय क्रिया
बनैत अछि । शहर बहुत देब आ छीनि लेबक द्वन्द्व एकतरफा नगर-विरोधसँ
गजलकै बचबैत अछि । माँक हँकार, पुरान दुआर आ लोकक कण्ठ सामूहिक
आश्रयक स्थान बनैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘बिसरब नहि’ प्रतिज्ञात्मक रदीफ अछि; एतय भविष्यमे विस्मृतिक विरुद्ध वक्ता
अपन उत्तरदायित्व घोषित करैत अछि । किन्तु प्रारम्भक दुआर-हँकार युग्म अनेक
पूर्व गजलमे भेटैत अछि । उपेक्षित नामहीन सहायताक दृश्य विशिष्ट, मुदा
‘लोकक कंठक हँकार’क सामान्य निष्कर्ष ओहि दृश्यसँ कम सघन अछि । गजल
१९ मे निकट पुनर्लेखन भेटैत अछि; एकर पाठभेद अलग दर्ज करब आवश्यक ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : पहिल बेर खुलल ओ दुआर बिसरब नहि / दूरसँ
माइक देल हँकार बिसरब नहि — पोथी रहय वा नहि, नाम रहय वा नहि /
लोकक कंठक हँकार बिसरब नहि

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८७ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल ८८ : तइयो

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-२४
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः
अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आस • रदीफः तइयो ।

‘तइयो’क प्रतिकूलतामे बाँचल स्वर

बन्द बाटक बाद आस, सूखल माटिक बाद प्यास, आ बाढिसँ बहल घरक बाद बचल त्रास—‘तइयो’ हर शेरमे विपरीत परिस्थितिक पाछाँ शेष भावकेँ उठबैत अछि। सरकारक टूटल वादा आ लोकक कने विश्वासक सँग दूर कमाइत नेना तथा दुआरपर प्रतीक्षारत माय लोक-आर्थिक असुरक्षाकेँ परिवारक समयसँ जोड़ैत अछि। थाकल स्वर आ उठल सभा पाछाँ मोनमे फेर आस बचब कविता सम्पन्न भेलापरो अनुभवक निरन्तरता सूचित करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

एहि रदीफक ध्वनि आश्वासनपूर्ण अछि, मुदा भावबोधक सीमा गजल ८१सँ अत्यन्त निकट अछि: बाढि, त्रास, राज-बदलाव, प्रवासी नेना, माय आ गीतक क्रम सेहो मिलैत अछि। ई महज विषयगत साम्य नहि, संरचनागत पुनरावृत्ति अछि; आन्तरिक पाठभेद निर्विवाद मानि अलग-अलग लिखल गेल अछि। घोषित मात्रा-विस्तार १४-२४क असमानता स्वरूपक लय-परीक्षा माँग करैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : सभटा बाट बन्द, आस तइयो / सूखल माटि, प्यास तइयो — गीत थाकल, स्वर टूटल, सभा उठल / मोनमे फेर आस तइयो

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ८१ : ओहि दिस

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुंजी। मात्रा-क्रम: १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: ओहि दिस।

दिशाक दुविधा आ सम्बोधनक अभाव

‘ओहि दिस’क दिशासूचक पुनरावृत्ति ककरो नाम निर्दिष्ट कएने बिना एकटा मनोवैज्ञानिक दूरी बनबैत अछि। साँझक दुआर, मेहक बहार आ शब्द थाकलापर उठल विचार—ई सभ एकहि अनुपस्थित दिशामे प्रवाहित होइत अछि। माय दुआरपर, नेना दूर देशमे—एहि शेरमे दिशाक अस्पष्टता विशेष रूपसँ प्रभावकारी अछि, कारण भौगोलिक दूरीमे भावात्मक अभिमुखता स्पष्ट अछि। गीत अपन

सुर बिसरैत अछि, तखन मोन हँकार पठबैत अछि; कविता आ स्मृति एक-दोसराक स्थान लेबाक प्रयत्न करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफक अवकाश पाठककें अपन विस्थापन जोड़बाक अवसर दैत अछि। तथापि एही अवकाशक कारण ठोस व्यक्ति, स्थल आ घटनाक पहचान धूमिल रहैत अछि। गजल ८२क दुआर/बहार/हँकार आ ७६क पारक विमर्शसँ निकट सम्बन्ध अछि; नव शिल्पगत प्राप्ति दिशा-सूचक रदीफ, न कि नव बिम्ब-सम्पदा।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : साँझ खोललक दुआर ओहि दिस / मेह लऽ आएल
बहार ओहि दिस — गीत जखन अपन सुर बिसरए / मोन पठबैत हँकार ओहि
दिस

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ८९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १० : गीत बनि जाए

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आत · रदीफ: गीत बनि जाए।

गीतक उत्पत्तिक एक वैकल्पिक काव्यशास्त्र

पहिल दू शेर गीतक जन्मकें हृदयस्पर्श आ निद्राभङ्गसँ जोड़ैत अछि। मेघ नहि भेला पर माटिक महक, पुरान घाव नोरक बदला स्वर बनब, आ खाली हाथक नेह सौगात बनब—एहि सभमे बाहरी वस्तुक साधारण रूप आ भीतरक रूपान्तरक बीच तनाव अछि। अन्तिम ‘शब्द बहुत लिखबासँ कविता जन्मै नहि’ मात्रात्मक लेखनक विरुद्ध अनुभूतिक सत्यकें कसौटी बनबैत अछि। एहि अर्थमे गजल अपन रचना-प्रक्रियापर टिप्पणी अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘गीत बनि जाए’ रदीफ अनुभूतिक नामकरणकें बार-बार सामने अनैत अछि; रस-ध्वनिक दृष्टिसँ नोरक स्वरसँ बदलनाइ प्रभावकारी बिम्ब अछि। मुदा ‘एक साँच बात’कें गीत मानि लेबाक मानदण्ड स्वयं अपर्याप्त अछि—भाषिक विन्यास, लय आ छवि सेहो कलात्मकता निर्धारित करैत अछि। गजल ८३क लगभग ओही माटि-आघात-सौगात श्रृंखला एतय नव विधागत विमर्शक भीतर पुनरावृत्त अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जँ हृदय छूबि जाए, बात गीत बनि जाए / जँ निन्न तोड़ि दे, रात गीत बनि जाए — शब्द बहुत लिखबासँ कविता जन्मै नहि / एक साँच बात गीत बनि जाए

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ९०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ९१ : कने ठहरू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १८-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: कने ठहरू।

ठहरबाक आग्रहमे समयक प्रतिरोध

रेल सीटी दैत अछि आ समय हाथसँ फिसलैत अछि, मुदा माय ओहि पार तकैत छथि—गजलक ‘कने ठहरू’ ई आधुनिक आवागमनक तेजीक विरुद्ध स्वल्प मानवीय अवकाश माँगैत अछि। ‘सभ हिसाब एके दिन चुकता नहि होइत / नेहमे रहए किछु उधार’ सम्बन्धकें बाजारक लेनदेनसँ अलग राखबाक चेष्टा अछि। मेह थमला पाछाँ माटिक महक लेल एक साँस ठहरब आ अन्तिम सुर सुनब संवेदनाक धीमी गतिपर आग्रह अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ समय-नियन्त्रणक प्रतिरोध रचैत अछि; तथापि अनेको शेरमे आग्रह लगभग एकहि आदेशमे सिमटैत अछि। ‘राति एखन अछि’ आ ‘बात आधा अछि’क समांतरता भाषिक लय बनबैत अछि। सार्वजनिक रेल आ निजी माय एकहि शेरमे अछि, मुदा प्रवासी पात्रक परिस्थिति विस्तार नहि पबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : राति एखन अछि, दुआर कने ठहरू / बात आधा अछि, हँकार कने ठहरू — जाइत-जाइत गीतक अन्तिम सुर उठल / सुनि लिअ ओ झंकार, कने ठहरू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ९१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२ : एखन धरि

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आत · रदीफः एखन धरि ।

मेटल प्रमाणक बचल अनुभूति

पुरान चिट्ठी जरा देलाक बाद अँगुरीमे स्याहीक 'सौगात' रहब विशेष दृश्य अछिः
भौतिक अभिलेख नष्ट भेलो शरीर पर लिखबाक स्मृति बचैत अछि । बाढ़ि
उतरला पर पुनः ठाढ़ घरक भीत भीतर आघात रहब गजल दशक त्रासक नव रूप
अछि । नाम बिसरल, चेहरा धूमिल, मुदा कानमे एकटा बात बचल—स्मृतिक दृश्य,
नाम आ श्रवणक असमान टिकाउपन काव्यक मूल विषय बनैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'एखन धरि' रदीफ अतीतक वर्तमानमे टिकबाक अवधि चिन्हित करैत अछि ।
मात्रात्मक रूपसँ निकट-सममात्रिक घोषणा वास्तविक ध्वनि-परीक्षणक विकल्प
नहि । गजल ११ आ ७८सँ समयगत-स्मृति आ 'राति'क बिम्ब साझा अछि; मुदा
जड़ल चिट्ठीक स्याही खास भौतिक संकेतक कारण एतय कविता अधिक मूर्त
अछि ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जे कहबाक छल, ओ बात एखन धरि / निन्न चोरैत
अछि रात एखन धरि — नाम बिसरल, चेहरा धूमिल भऽ गेल / कानमे ओकर एक
बात एखन धरि

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १३ : कने सुनू

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः
अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —ओर · रदीफः कने सुनू ।

श्रवणक तल आ अप्रकट सम्बन्ध

'मौन भीतरक शोर' आ 'राति भीतरक भोर' विरोधाभासी युग्मसँ आरम्भ होइत
गजल बाहर देखाइत स्थिरताक भीतरक गति सुनबाक आग्रह करैत अछि । ऊपरसँ
शान्त धारक नीचाँ पानिक हिलोर गुप्त संकटक जटिल ध्वनि-बिम्ब अछि । शहरक

भीड़मे धीमी पड़ैत भाषा सामाजिक बहुभाषिकता वा विस्थापनक अनुभव इंगित करैत अछि; किन्तु कओन भाषा आ केहन परिस्थिति, ओ तय नहि अछि। दूटैत सम्बन्धक बिना आवाज छुटैत डोर चित्र कर्ता-पाठकक कल्पना खोलैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘कने सुनू’ केन्द्रीय इन्द्रिय श्रवण बनबैत अछि, जाहिसँ गजल ८०क ‘सुनि लिअ’ सँ लग रहितो विस्तारित श्रवणक अभ्यास बनैत अछि। तथापि शोर/भोर/हिलोर/डोरक ध्वनिसाम्य कारण किछु मिसरामे अर्थगत संगति ढीला अछि। अन्तिम सुरक ‘जोर’ प्रभावक नाम अछि, विशिष्ट ध्वनिक रूप नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मौन भीतरक शोर कने सुनू / राति भीतरक भोर कने सुनू — गीत समाप्त भेल, सभा उठि गेल / अन्तिम सुरक जोर कने सुनू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ९३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ९४ : रहए दिअ

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: रहए दिअ।

स्वामित्वक सीमा आ जीवित स्थान

‘सभ हिसाबमे किछु उधार रहए दिअ’ आ ‘नेह भीतर छोट संसार रहए दिअ’ काव्यकें अधिकारक पूर्ण कब्जासँ बचबैत अछि। सभ गाछ काटि पैघ घर नहि बनेबाक आग्रह आँगनक प्राकृतिक स्मृति आ निर्माणक जरूरतक सन्तुलनक प्रश्न अछि। बात-बातपर जीत नहि चाहब दोसराक विचारक लेल अवकाश राखैत अछि। बूढ़ माय लेल दुआर बचब उपेक्षित पारिवारिक प्रतीक्षाकें नष्ट नहि करबाक व्यावहारिक नैतिकता अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘रहए दिअ’ अनुमतिक भाषारूप अछि, जकरा सँ गजल ८४क निषेधात्मक प्रतिवादसँ भिन्न उदारता जन्मैत अछि। पर्यावरणीय गाछ-बचावक दृश्य अपेक्षाकृत मूर्त अछि, मुदा ‘लोकक मोनमे व्यवहार’ सन शब्द-संयोजन किछु अमूर्त अछि। रदीफक सामाजिक अर्थ स्पष्ट, किन्तु प्रत्येक शेर विस्तारसँ विकसित नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : सभ हिसाबमे किछु उधार रहए दिअ / नेह भीतर छोट संसार रहए दिअ — नाम मेटि जाए, पोथी धूरि खा लए / लोकक मोनमे व्यवहार रहए दिअ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ९४। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ९५ : के जानै

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आत · रदीफ: के जानै।

अनिश्चितताक स्वीकार आ ज्ञानक विनम्रता

‘ककर मोनमे कोन बात के जानै’ सँ शुरू भऽ गजल व्यक्ति आ समाजक भीतर छिपल दुख पर निर्णायक दावा सँ बाँचैत अछि। घर पुनः ठाढ़ होइतहुँ भीत भीतरक बरसात कियो देखैत नहि; सत्ताक बदलबाक संग भूखपर घात जारी रहबाक प्रश्न सामाजिक अनुभवक निरन्तरता चिन्हित करैत अछि। बाटमे हँसैत भेटल व्यक्ति फेर भेटत कि नहि—ई सामान्य क्षणकें अनिश्चित भविष्य बनबैत अछि। खाली हाथक नेह प्रतिदानक लेखासँ बाहर अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘के जानै’ रदीफ ज्ञानक सीमाकें प्रमाण-तत्त्वक निकट आनि दैत अछि: अनुभूति-संकेत देखि व्यक्ति पूर्ण तथ्य नहि जानि सकैत अछि। किन्तु किछु ठाम प्रश्नवाचक रदीफ बिनु नव अनुसन्धानक औजारक केवल निष्कर्ष टारैत अछि। ‘भूख पर रोजक घात’ स्पष्ट राजनीतिक आरोप नहि, रूपकात्मक संकेत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : ककर मोनमे कोन बात के जानै / कतेक लम्बी अछि ई रात के जानै — खाली हाथो कियो नेह दऽ जाए / ओही नेहक सौगात के जानै

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ९५। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १६ : फेर भेटत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२१
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: फेर भेटत।

मिलबाक सम्भावनाक भूगोल

कमलाक पार, पीपर तर आ माइक हँकार गजलक पुनर्मिलनकें ठोस मैथिली
भूगोलसँ जोड़ैत अछि। रेलक यात्रा, बदलल नाम आ बदलल गाम सामाजिक
गतिशीलता आ पहचानक दूरी देखबैत अछि। ‘बाढ़ि आरि काटि दे, खेत अलग
हो / लोकक हाथक आधार फेर भेटत’ सहकारक सम्भावनाक कारण प्रकृतिक
विनाशक विरुद्ध सामाजिक दृढ़ता देखबैत अछि। अन्तमे पोथी बन्द भेला पाछाँ
कंठमे गीत भेटब लिखित प्रमाणसँ मौखिक स्मृतिक पुनर्मिलन अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘फेर भेटत’ भविष्यक अनुमान आ आशा दुनू अछि, ककरो सुनिश्चित आगमनक
प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि। कमला-पारक भौगोलिक नाम विशिष्टता अनैत अछि; मुदा
दुआर-बहार-हँकार गीतक परिचित पुनरावृत्तिकें भिन्न करबाक लेल पर्याप्त नहि।
गीतक संसारक पुनर्प्राप्ति सामूहिक कण्ठक मूल्यक समर्थन करैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जतऽ छुटल छल ओ दुआर फेर भेटत / कखनो
कमलाक पार फेर भेटत — पोथी बन्द भेल, अक्षर धूमिल पड़ल / कंठमे गीतक
संसार फेर भेटत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १६। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १७ : एना किए

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १६-२२
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आस • रदीफ: एना किए।

प्रश्नरूपमे घर, विश्वास आ उपलब्धि

‘घर भरल, तइयो उदास एना किए’ बाहरी सम्पन्नता आ भीतरक रिक्तताक
विरोधक स्पष्ट रूप अछि। मेघ घिरल मुदा बूँद नहि खसल—आसक टुटबाक

प्राकृतिक संकेत। शहर काम, दाम आ घर दैत अछि, मुदा गाम पास रहैत अछि—एहि शेरमे विस्थापन केवल हानि नहि; उपलब्धि आ मोहक सहअस्तित्व अछि। पूर्ण गीत आ भेटल तालीक बादो अटकल साँस कलात्मक सफलता आ आत्मिक संतोषक भेद करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘एना किए’ रदीफ श्रोता सँ कारण माँगैत अछि, मुदा स्वयं निश्चित उत्तर नहि दैत अछि। एहि कारण गजल ७९क ‘आब की’ सँ अलग कारण-विवेचक ध्वनि पवैत अछि। किछु बिम्ब पूर्व रचनासँ परिचित अछि, विशेषतः बरखा-प्यास आ टूटल विश्वास। तथापि शहरक लाभ स्वीकार करबाक संयत दृष्टि उल्लेखनीय अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनमे एतेक पियास एना किए / घर भरल, तइयो उदास एना किए — गीत पूरा भेल, ताली सेहो भेटल / मोनमे अटकल साँस एना किए

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ९७। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ९८ : आबो रहत

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः नीत · रदीफः आबो रहत।

अतीतक अवशेषसँ भविष्यक टिकाउपन

गजल ८५क ‘शब्द थमल, एक गीत रहि गेलै’ एतय ‘शब्द थाकत, गीत आबो रहत’ बनैत अछि। घटना सम्पन्न भेला पाछाँ जे शेष रहैत छल, से आब भविष्यक प्रतिरोधक दावा बनल अछि। पीपर तरक मीत, पुरान दलान, माटिक गन्धि, हार-पछातिक जीत आ कंठक संगीत सभ लगभग ओही घटनाक्रममे उपस्थित अछि। कविता मौखिक स्मृतिक दीर्घजीविताक विश्वास लऽ चलैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

एहि गजलकें बिनु सूचनाक नव कथ्य मानब उचित नहि; ई ८५क निकट पुनर्रचना अछि, जतय प्रमुख भेद रदीफक कालरूप आ अन्तिम ‘गीत’क बदला ‘संगीत’

अच्छि। ई पाठभेद सङ्ग्रहक स्वसम्पादनक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा लेखकक वास्तविक संशोधन-काल सिद्ध नहि करैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : शब्द थाकत, गीत आबो रहत / रूसल मनमे प्रीत आबो रहत — नाम मेटत, पोथी धूरि खा लए / लोकक कंठमे संगीत आबो रहत
मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११ : नै भूलब

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: नै भूलब।

स्मरणक सङ्कल्प आ पाठान्तर

पहिल बेर खुलल दुआर, माइक हँकार आ बाढ़िक रातिक नामहीन सहायता—ई गजल ८७क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रसङ्ग दुबारा रखैत अछि। ‘बिसरब नहि’क स्थानपर ‘नै भूलब’ रदीफ आएल अछि; सहायकक ‘व्यवहार’ आ अनचिन्हार आधारक प्रस्तुति सेहो निकट अछि। शहरसँ भेटल उपलब्धि आ गामक साँझक बहारक विरोधसँ प्रवासक अनुभूति बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

एहि पुनर्लेखनमे ८७क ‘अनचिन्हारक आधार’ आरम्भिक बाढ़ि-प्रसङ्गसँ अन्तक शेर दिस खिसकैत अछि। तँ कथा-क्रममे छोट फेरबदल अछि, मुदा मुख्य नैतिक निर्णय अपरिवर्तित अछि। दूनू रचनाक स्वतंत्र क्रमाङ्क रहितो पाठगत साम्य स्पष्ट रूपेँ दर्ज करबाक चाही। अनुमानसँ नकल अथवा समय-क्रमक आरोप निषिद्ध अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : पहिल बेर खुलल ओ दुआर नै भूलब / दूरसँ माइक हँकार नै भूलब — पोथी रहय वा नहि, नाम रहय वा नहि / लोकक छोट संसार नै भूलब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १०० : बाँचल रहत

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः
अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीत · रदीफः बाँचल रहत ।

जीवित गीतक स्थायित्व आ स्मृति

‘नाम मेटत, गीत बाँचल रहत’ गजल ८५ आ ९८क स्मृति-विषयकैँ अस्तित्वक स्पष्ट सूत्र बनबैत अछि । व्यक्ति थाकैत छथि, देह नश्वर अछि, मुदा प्रेम, मीत, माटिक गन्धि आ लोकक भीतर हारि कऽ फेर उठबाक इच्छा जीवित रहबाक सम्भावना रखैत अछि । पोथी बन्द आ अक्षर धूसर भेलाक पाछाँ कंठमे संगीत बाँचब लिखित विरासतक सीमा आ जीवित परम्पराक सामर्थ्य रचैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

९८क लगभग सभ शेरक प्रतीक-सामग्री एतय पुनरागमन करैत अछि; नव रदीफ ‘बाँचल रहत’ टिकाउपनक अपेक्षाकृत प्रबल घोषणा अछि । ‘पोथी बन्द हो’क शर्त मौखिक परम्पराकैँ लिखित साक्ष्यक विरोधी नहि, ओकर सम्भावित पूरक बनबैत अछि । संपूर्ण रचनाक नवता पर प्रश्न आ विषयक सांस्कृतिक महत्त्व—दुनू एके संग स्वीकार्य अछि ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : नाम मेटत, गीत बाँचल रहत / देह थाकत, प्रीत बाँचल रहत — पोथी बन्द हो, अक्षर धूसर हो / कंठमे जँ संगीत बाँचल रहत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०० । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल 81-100 : अन्तरपाठीय तुलना

एहि बीस गजलमे पुरान बिम्बक आवर्तन मात्र विषयगत नहि, कतेको ठाम शेर-क्रम आ तुकसमूह धरि पहुँचैत अछि । ८१/८८क बाढ़ि, घर, त्रास, विश्वास, प्रवास आ गीतक एके अनुक्रम; ८५/९८/१००क गीत-प्रीत-मीत-अतीत-जीतक पाठ-परिवार; ८७/९९क नामहीन सहायताक घटना; ८३/९०क माटि-आघात-सौगातक जवाफदेही—ई सभ अलग रचनाक बीच समीप-पाठक आवश्यकता दर्शबैत अछि । बदलल रदीफ काल अथवा वक्ताक स्थितिक सूक्ष्म फेरबदल करैत अछि, मुदा केवल नव रदीफसँ स्वतंत्र काव्यात्मक उपलब्धि सिद्ध नहि होइत ।

क्रमाङ्क	प्रमाणित मूल शीर्षक	काव्य-संरचना
----------	---------------------	--------------

81	एखनहुँ	५ शेर / १० मिसरा
82	घुरि आउ	५ शेर / १० मिसरा
83	कहियो ने	५ शेर / १० मिसरा
84	मोन मानै नहि	५ शेर / १० मिसरा
85	रहि गेलै	५ शेर / १० मिसरा
86	आब कहू	५ शेर / १० मिसरा
87	बिसरब नहि	५ शेर / १० मिसरा
88	तइयो	५ शेर / १० मिसरा
89	ओहि दिस	५ शेर / १० मिसरा
90	गीत बनि जाए	५ शेर / १० मिसरा
91	कने ठहरू	५ शेर / १० मिसरा
92	एखन धरि	५ शेर / १० मिसरा
93	कने सुनू	५ शेर / १० मिसरा
94	रहए दिअ	५ शेर / १० मिसरा
95	के जानै	५ शेर / १० मिसरा
96	फेर भेटत	५ शेर / १० मिसरा
97	एना किए	५ शेर / १० मिसरा
98	आबो रहत	५ शेर / १० मिसरा
99	नै भूलब	५ शेर / १० मिसरा
100	बाँचल रहत	५ शेर / १० मिसरा

दीवान-ए-विदेह : गजल 101-120क मूल पाठाधारित विस्तृत समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुरक मूल मैथिली पाठक गजल-क्रम, शीर्षक, घोषित बहर, मात्रा-विधान, शेरक वास्तविक शब्दक्रम आ अन्तररचनात्मक पाठभेदक मिलान करैत प्रत्येक रचनाक आलोचना। घोषणा कएल छन्द-मानककें वास्तविक ध्वन्यात्मक मापनक बिना प्रमाणित अरुज़ी समता नहि मानल गेल अछि।

गजल १०१ : मानक दाम

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: पञ्चकल × ४ · यति: १० + १०। काफिया: -आर · रदीफ: कहियो नै।

मानक मूल्य आ सत्ता-सामने असहमति

‘नेहकें बनेब व्यापार कहियो नै’ प्रेमकें वस्तु-विनिमयमे बदलबाक निषेध अछि। धानक घटल दामक सन्दर्भमे भूख सहब आ आत्मसम्मानक आगाँ दीवार नहि स्वीकारब सामाजिक स्तरपर एहि निषेधक विस्तार अछि। राजक ‘डरक हँकार’ आ दबाओल साँचक विषय गीतकें प्रतिरोधक स्वर दैत अछि। घरमे धीमी पडैत भाषा बचाओलक सङ्कल्पे गजलकें सांस्कृतिक स्वाभिमानक प्रसङ्गमे प्रवेश करबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

पहिल दस गजलसभक अपेक्षाकृत मुक्त मात्रा-विधानसँ एतय ‘पञ्चकल × ४’, २० मात्रा, १०+१० यतिक औपचारिक घोषणा एकटा नब प्रयोग अछि। एहन समता वास्तविक उच्चारण-मापनसँ सिद्ध होयत, घोषणामात्रसँ नहि। ‘गजलकार’क आत्मनिर्धारित लोक-पीडक कसौटी महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा काव्य-मूल्यक एकमात्र कसौटी नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : नेहकें बनेब व्यापार कहियो नै / साँच दबेब ई दरबार कहियो नै — गीत जँ बस लोकक पीर नै छूबए / ओकरा कहब गजलकार कहियो नै

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १०२ : घरक दुआर

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २४
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: षटकल × ४ • यति: १२ +
१२। काफिया: —आर • रदीफ: मोन पड़ैए।

प्रवासक स्मृति आ छन्दक दावा

साँझक दुआर, मायकेँ हँकार, शहरक रेल आ गामक बहारक परस्पर संकेत प्रवासी
वक्ताक द्वैध निवास रचैत अछि। घर फेर ठाढ़ भेल अछि, मुदा भीत पुरान
आघातक स्मृति बचौने अछि; एहि दृश्यसँ घरक पुनर्निर्माण आ व्यक्ति-मनक
पुनर्वास अलग होइत अछि। नेनाक धीरे-धीरे अपन बोली बिसरब परिवारक
पीढ़ीगत भाषिक विच्छेदकेँ मूर्त करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘षटकल × ४’ आ २४ मात्राक घोषणा औपचारिक प्रयोग अछि। ‘मोन पड़ैए’
रदीफ गजल १क विषयगत दिशाकेँ फेर लौटा दैत अछि, मुदा बोली बिसरैत
नेनाक नव दृश्य ओकरा विशिष्ट करैत अछि। वास्तविक स्वरपाठमे प्रत्येक
मिसराक १२+१२ यति जाँचब शेष छन्दीय कार्य अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : राति उतरते तँ घरक दुआर मोन पड़ैए / मेघ उठैए
तँ माय हँकार मोन पड़ैए — गीत जखन ई अधबीचेमे थमि जाइत अछि / नाम
सुनैते छोट संसार मोन पड़ैए

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०२। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १०३ : रहि जाए

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: पञ्चकल × ४ • यति: १० +
१०। काफिया: नीत • रदीफ: रहि जाए।

नाम मेटला पाछाँ शेष गीत

‘नाम मेटए मुदा गीत रहि जाए’क उद्घाटन लिखित इतिहास आ सामूहिक
गानक असमान टिकाउपन सामने अनैत अछि। चलि गेल मीत, बदलैत घर,
माटिक गन्धि, हारि कऽ उठैत लोक आ धूरि-ढँकल पोथी—ई सभ स्मृतिक विविध

माध्यम दर्शवैत अछि। कंठमे एक मीत रहि जाएबक अन्तिमताक सङ्केत रचनामे निजी आ सामूहिक स्मृतिक बीच आवाजाही करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८५, १८ आ १००सँ ई गजल स्पष्ट रूपसँ निकट पाठान्तर अछि। नव रदीफ 'रहि जाए'क इच्छार्थक अर्थ 'रहि गेलै'क अतीत आ 'बाँचल रहत'क भविष्यसँ अलग अछि, मुदा कथा-बिम्ब प्रायः समान अछि। पञ्चकलक छन्द-घोषणा करला सँ अर्थगत मौलिकता स्वतः नहि बढ़ैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : नाम मेटए मुदा गीत रहि जाए / सभ मीत चलि जाए, प्रीत रहि जाए — देह थाकए, आवाज तँ थमि जाए / लोकक मोनमे बस गीत रहि जाए

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १०४ : कतेक दिन

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुङ्गी। मात्रा-क्रमः २० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः पञ्चकल × ४ • यतिः १० + १०। काफियाः -आर • रदीफः कतेक दिन।

‘कतेक दिन’क प्रतिप्रश्न

भूखक आगाँ फोटोबला प्रचार, पढल नेनाक गाम छोड़ब, बूढ़ घरक भार आ साँच कहला पर दण्डक भय—ई सभ सार्वजनिक नीतिक भाषाक विरुद्ध जीवनक प्रश्न अछि। ‘कतेक दिन’ नकारात्मक भविष्यवाणी नहि, बेसी दिन धरि सहनशीलता पर प्रश्न अछि। गीत जँ केवल ताली लेल लिखल जाए तँ श्रोता लोकक नैतिक ‘उधार’ पर जीवैत रहल सन विरोधाभास बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

१०१क ‘कहियो नै’ प्रतिज्ञा एतय ‘कतेक दिन’क प्रश्नमे बदलैत अछि। सामाजिक यथार्थक दृश्य झलकैत अछि, मुदा ‘राज’ अथवा ‘दण्ड’ कोनो विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाक नाम नहि। पञ्चकल × ४क दावा मूल पाठक उच्चारणसँ सत्यापित करबाक विषय अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : बोलक आगाँ तँ दीवार कतेक दिन / नेहमे एहन व्यवहार कतेक दिन — गीत जँ केवल ताली लेल होए तँ / लोक सहत बस ई उधार कतेक दिन

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०४ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १०५ : एखनहुँ

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: पञ्चकल × ४ · यति: १० + १० । काफिया: —आस · रदीफ: एखनहुँ ।

एखनहुँ : स्वपाठक लयगत पुनर्निर्माण

गजल ८१क 'घुरि एबाक आस एखनहुँ' आब 'हारि गेलहुँ, ई बचल आस एखनहुँ' बनैत अछि । माटिक प्यास, बाढ़ि उतरब, भीतक त्रास, बदलबैत राज, दूरक नेना, माइक अँचराक सुवास आ थाकल गीत—एकहि बिम्ब-क्रमक आंशिक पुनर्रचना भेटैत अछि । नव पाठमे 'ई', 'तँ', 'कने' सन पूरक शब्द बारंबार प्रयुक्त अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८१क १५-२० मात्राक मिश्र विन्यासक बदला १०५मे २० मात्रा आ पञ्चकल × ४क घोषणा अछि । पूरक शब्दसभ सम्भवत: समलय साधवाक प्रयत्न देखबैत अछि, मुदा वास्तविक पाठ-उच्चारणसँ मात्राक गणना नहि भेला धरि पूर्ण समता प्रमाणित नहि । पुनर्लेखनक शिल्पगत प्रयोजनकें नव कथ्यक उपलब्धि रूपें नहि देखब चाही ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : हारि गेलहुँ, ई बचल आस एखनहुँ / सूखल माटिमे कने प्यास एखनहुँ — गीत पुरान, स्वर थाकल, राति तँ ढलल / मोनमे अटकल कने साँस एखनहुँ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०५ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १०६ : सुनि लिअ

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः सममात्रिक • यतिः ८ + ८
निकट, अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आर • रदीफः सुनि लिअ ।

‘सुनि लिअ’ : छोटे मिसरामे समाहार

गजल ८०क पुकार, हँकार, काँपैत झंकार, चुप्प लोकक विचार, बाढ़ि उतरला पाछाँ
बदलैत धार आ भीतरक दुआर एतय फेर अबैत अछि । मुदा ‘सभ कहैए, मुदा जे
चुप अछि’ सन पाँतिक संक्षेप कथनकें तेज बनबैत अछि । अन्तिम ‘भीतरक एक
दुआर’क आत्मीय अर्थ बनल रहैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८०क १५-१९ मात्रा घोषणा एतय १६ मात्रा, लगभग ८+८ यतिक सममात्रिक
विधानमे बदली अछि । वास्तविक ध्वनि-पाठक अभावमे ई केवल सम्पादकीय
पद्य-सूचना अछि; आलोचना मात्र ओकरा देखिकऽ अरूज़ी सफलता नहि मानैत
अछि । पाठ-भेदक मूल्य शेरक गतिक संक्षेप आ अर्थक स्पष्टतामे खोजनाइ
उचित ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनक धीमी पुकार सुनि लिअ / दूर गामक तँ
हँकार सुनि लिअ — घरक बाहर बहुत दुनिया अछि / भीतरक एक दुआर सुनि
लिअ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०६ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १०७ : तइयो

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः सममात्रिक • यतिः ८ + ८
निकट, अर्थ-लय अनुसार । काफियाः —आस • रदीफः तइयो ।

प्रतिकूल परिस्थितिक छोटे छन्द

बन्द बाट, सूखल माटि, बाढ़ि-पछाति त्रास, बदलबैत राज, दूर कमाइत नेना,
माइक अटकल साँस आ गीत-पछाति आस—ई गजल ८८क समान भावक्रम

अच्छि। 'बाढ़ि गेल, लोक तँ फेर ठाढ़' सन पाँति पूर्व लम्बा वाक्यक संक्षिप्त रूप अच्छि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८८क १४-२४ मात्राक असमान विस्तारक बदला एतय १६ मात्राक सममात्रिक घोषणा पाठक संकुचनक उद्देश्य देखबैत अच्छि। मुदा 'गीत थाकल, सभा तँ उठि गेल'मे 'तँ'क प्रयोग अथवा 'माइक अटकल तँ साँस'क व्याकरण कतेको ठाम यांत्रिक भराव-जकाँ बुझाईत अच्छि। छन्द-सुधारक प्रयत्नक संग अर्थ-स्पष्टताक क्षतिकेँ सेहो दर्ज करब जरूरी।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : सभटा बाट बन्द, आस तइयो / सूखल माटि, ई प्यास तइयो — गीत थाकल, सभा तँ उठि गेल / मोनमे फेर तँ आस तइयो

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०७। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १०८ : आब कहू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: षटकल × ३ · यति: ९ + ९। काफिया: -आल · रदीफ: आब कहू।

सार्वजनिक प्रश्नक मात्रिक नव विन्यास

धानक दाम घटना आ बजारक बढ़ब, ठंडा चूल्ह आ मंचक भाषण, मुखक हँसी आ भीतरक थकान—ई गजल ८६क सामाजिक प्रश्नसभकेँ पुनः प्रस्तुत करैत अच्छि। अन्तमे 'लोकक तँ पीरक ताल'क कथन पूर्व 'पीरक हाल' सँ भिन्न ध्वनि-चिन्ता अनैत अच्छि, मुदा 'ताल'क अर्थ प्रसङ्गमे किछु अस्पष्ट रहल।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

षटकल × ३ आ १८ मात्राक घोषणा लेखकक औपचारिक पुनर्लेखनकेँ चिह्नित करैत अच्छि। 'तँ'क पुनरावृत्ति समताक दबावक संकेत भऽ सकैत अच्छि; एकरा मूल शब्द-चयनक अन्तर रूपेँ दर्ज कएल गेल, निश्चित रचनात्मक उद्देश्य घोषित नहि। 'आब कहू'क प्रश्न-तय पूर्ववत् प्रभावकारी अच्छि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनक तँ असली हाल आब कहू / ई उठल कोन
सवाल आब कहू — गीत जँ ताली लेल लिखल जाए / लोकक तँ पीरक ताल
आब कहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १०९ : नै भूलब

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: पञ्चकल × ४ · यति: १० +
१०। काफिया: -आर · रदीफ: नै भूलब।

सहायकक व्यवहार आ परिवर्तित शेरक्रम

बादिक रातिक अनचिन्हार हँकारसँ गजल शुरू होइत अछि आ शहर-गाम,
प्रवासी नेना-माय, पोथी-प्यारक क्रम आगाँ बढ़ैत अछि। १९क पहिल दुआर-
हँकारक कथा एतय समेटि सीधा संकटपर पहुँचल गेल अछि। मानवीय
सहायताक पहचानबिनु मूल्यांकन एही गजलक सबल पक्ष अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

१९क रदीफ 'नै भूलब' स्थिर अछि, मुदा नव पाठमे पञ्चकल × ४ आ २० मात्राक
घोषणा तथा 'ई', 'तँ', 'कने'क भरावक प्रयोग बेसी अछि। गजल ८७ सेहो एहि
पाठ-परिवारक भाग अछि। तीनूक नव घटना-सूचना मानबाक बदला पाठ-
परम्पराक रूपान्तर मानि तुलना आवश्यक।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : बादिक रातिक ओ हँकार नै भूलब / ई
अनचिन्हारक व्यवहार नै भूलब — पोथी रह्य वा नाम तँ मेटि जाए / लोकक तँ
देल कने प्यार नै भूलब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १०९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११० : बाँचल रहत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: पञ्चकल × ४ · यति: १० +
१०। काफिया: -ीत · रदीफ: बाँचल रहत।

गीत बाँचल रहबाक दोसर विधान

नाम-गीत, देह-प्रीत, मीत-स्मृति, माटि-अतीत, हार-जीत आ पोथी-कंठक युग्मसभ गजल १००क लगभग अक्षुण्ण काव्य-योजना दोहरबैत अछि। जोड़ल 'मुदा', 'कने', 'तँ', 'ई' सन शब्द आगाँक २० मात्राक छन्द-घोषणासँ मिलैत बुझाइत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ अपरिवर्तित रहला पर नवीनतम छन्द-प्रतिज्ञा पुनर्लेखनक प्रमुख चिन्ह अछि। मुदा दोसर पाठमे बिम्बक विकास न्यून अछि, आ किछु पाँति मूलक तुलनामे कम स्वाभाविक सुनाइत अछि। आलोचना लेल पाठान्तर संरक्षित राखब जरूरी अछि; रचनाक प्रकाशन-क्रम अथवा लेखकक अभिप्रायक बारेमे निर्णायक अनुमान नहि कएल गेल।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : नाम मेटत, मुदा गीत बाँचल रहत / देह थाकत, कने प्रीत बाँचल रहत — पोथी बन्द हो, अक्षर कने धूसर हो / कंठमे जँ ई संगीत बाँचल रहत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १११ : कने बाजू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: कने बाजू।

कने बाजू : संवादक पहल

'मोनमे उठल पुकार' सँ शुरू होइत गजल आँखिमे गप्प राखि देबाक विरुद्ध स्वर देबाक आग्रह करैत अछि। जीतबाक जिद्दसँ नेह हारि जाएब बहसक जीत आ सम्बन्धक हानिक भेद अछि। बरखाक बाद माटिक महक शान्ति आ पुनर्मिलनक सङ्केत बनैत अछि। अन्तमे गीत जँ मनक चोट धरि पहुँचि जाए तँ झंकार रोकल नहि जाए—ई वाणीकें जड़ मौनसँ मुक्त करबाक प्रोत्साहन अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'कने बाजू' रदीफ आग्रहकें अपेक्षाकृत नम्र रखैत अछि; मुदा दुआर, हँकार, बहार, झंकारक परिचित काफिया-क्रम पुनः उपस्थित अछि। गीतक सामाजिक भूमिका

कतेक ठोस अछि, से निर्धारित पात्र-विहीन शेरसभसँ सीमित रूपमे सिद्ध होइत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनमे उठल पुकार कने बाजू / दूरसँ आयल हँकार
कने बाजू — गीत जँ मनक चोट धरि पहुँचि गेल / रोकि नहि झंकार कने बाजू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १११। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११२ : नै कहब

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: नै कहब।

‘नै कहब’ : नामकरणक नैतिक सीमा

प्रेमकेँ व्यापार, रूसलाकेँ हार आ केवल ताली लेल रचल गीतकेँ हृदयक पुकार नहि
कहबाक क्रम वस्तुक नामक बोधपर प्रश्न उठबैत अछि। राज जँ प्रश्नसँ डरैत
अछि, तँ ओकर दरबारकेँ ‘खुलल’ कहब मिथ्या होयत—ई राजनीतिक भाषाक
आवरण पर सूक्ष्म टिप्पणी अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

परन्तु ‘साँचक आगाँ जे चुप्पी ठाढ़ करै / ओकरा हम दीवार नै कहब’मे नकारक
तर्क असङ्गत भऽ सकैत अछि: चुप्पीकेँ दीवार कहब तऽ विरोधक उपमा बनैत,
मुदा नहि कहबाक कारण स्पष्ट नहि। ई पाँति गजलक दुर्बल तर्क-स्थान अछि।
‘कहियो नै’वला १०१सँ एहि निषेधक भावगत निकटता सेहो दर्ज करबाक चाही।
मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : नेहकेँ व्यापार नै कहब / रूसलाकेँ हार नै कहब —
गीत जँ केवल ताली लेल बनल हो / ओकरा हृदयक पुकार नै कहब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११२। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११३ : याद आबैए

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२२
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: याद आबैए।

याद अबैत अछि : गामक अनुपस्थित स्वर

साँझ, माइक हँकार, शहरमे खसल मेह, गाछीक बहार आ भीड़मे कम चिन्हार
भेटबक क्रम नगरीय बसाइमे ग्राम्य स्मृतिक पुनरागमन रचैत अछि। अनचिन्हार
सहायताक शेर नाम-पहचानसँ पहिने व्यवहारक नैतिक मूल्यकेँ केन्द्रमे आनैत
अछि। अधबीचमे थामल गीतक झंकार निजी स्मृतिक अंतिम ध्वनि बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ 'याद आबैए' प्रत्यक्ष वर्तमान आवर्तन अछि, मुदा गजल ८७ आ ९९क
मानवीय सहायताक दृश्य, आ ९६क पुनर्मिलन-विम्ब पुनः लौटैत अछि। कविताक
अर्थभेद वस्तुक नवीनता कम आ स्मरणक काल-स्थिति बेसी आधारित अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : साँझ पड़िते दुआर याद आबैए / माइक देल हँकार
याद आबैए — गीत जखन अधबीचमे थमि जाइत / पुरनका एक झंकार याद
आबैए

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११४ : बुझू कने

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १६-२०
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आत • रदीफ: बुझू कने।

बुझबाक आग्रह : छिपल आघातक व्याख्या

मौन भीतरक बात, आँखिक जागल राति, मेघ बिनु माटिक महक आ हँसैत मुखक
भीतरक नोर—ई सभ दृश्य बाहरी प्रत्यक्षकेँ पूरा सत्य नहि मानबाक आग्रह
अछि। खाली हाथक नेहकेँ सौगात बुझब आ 'शब्द पढ़ब' तथा 'गीत सुनब'क
भेद काव्यग्रहणक कतेक सूक्ष्म रूप बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘बुझू कने’क सम्बोधन गजल दइक ‘कहियो ने’सँ अलग शिक्षात्मक ध्वनि रखैत अछि। अंतक शेर ध्वनित अर्थक सिद्धान्तक निकट अछि, मुदा दू शेरमे अनुभवकें सीधा नीतिवचनक रूप देब कविता-विकासक सीमा बनैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मौन भीतरक बात बुझू कने / खुलल आँखिक रात
बुझू कने — शब्द पढ़ब एक बात, गीत सुनब आन / स्वरक असली बात बुझू कने
मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११४। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११५ : फेर होएत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: फेर होएत।

फेर होएत : आशाक शर्तसभ

सूखल गाछीमे बहार, टूटल मनमे नेह, घोर रातिक भोर आ बाढ़ि-पछाति संग
ठाढ़ लोक—‘फेर होएत’ आकाशसँ उतरैत चमत्कार नहि, लोकक हाथ नहि
छोड़बाक शर्तपर आधारित सम्भावना अछि। हारक दिन अन्तिम नहि, ई
भविष्यदृष्टि निराशाक एकरैखिक समयकें अस्वीकार करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

मौनसँ झंकार उठबाक अन्तिम रूपक गीतक नवीकरणकें व्यक्त करैत अछि, मुदा
भोर/अन्हार/बहारक पूर्वपरिचित शृंखला उल्लेखनीय पुनरावृत्ति अछि।
भविष्यवाचक रदीफ मानवीय संबल दैत अछि, प्रमाणित भविष्यवाणी नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : सूखल गाछीमे बहार फेर होएत / टूटल मोनमे
प्यार फेर होएत — गीत थमि जाए, कंठ कने विश्राम लए / मौनसँ एक झंकार
फेर होएत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११५। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११६ : ओहि ठाम

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-२०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आस · रदीफ: ओहि ठाम ।

ओहि ठाम : आशाक स्थानीय ठेगान

‘जतऽ बचल अछि आस’क ओहि ठाम अन्ततः कोनो नक्शा-निश्चित स्थल नहि, सहकारक सामाजिक स्थिति अछि । बाढ़िक बाद नव घरक भीत पुरान त्रास कहैत अछि; लोक हाथ पकड़ैत छथि तँ विश्वास फेर जनमैत अछि । दूर देशमे अँचरक सुवास स्मृतिक एक इन्द्रियगत घेरा बनबैत अछि । अन्तमे गीत कागजक बदला लोकक साँसमे रहब समुदायक ओकर जीवन-स्थान बनबैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

स्थानसूचक ‘ओहि ठाम’ रदीफ दिशाक अनिश्चितता आ स्थानीय भावनाकें जोड़ैत अछि । ८१ आ ८८क त्रास-विश्वास-प्रवास-गीत बिम्बक्रम सँ निकटता छिपाओल नहि जाएत । सहकारक दृश्य गजलक मुख्य अतिरिक्त नैतिक आधार अछि ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जतऽ बचल अछि आस ओहि ठाम / माटिक मीठ
प्यास ओहि ठाम — गीत कागज पर नहि, कंठमे जीबै / जतऽ लोकक साँस ओहि
ठाम

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११६ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल ११७ : रहैत अछि

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ीत · रदीफ: रहैत अछि ।

रहैत अछि : वर्तमानकालीन शेषत्व

मौन भीतर गीत, रोष भीतर प्रीत, बिछुड़ल मीतक स्मृति, पुरान दलान मेटला
पाछाँ माटिक गन्धि—ई चित्र सामाजिक परिवर्तनक भीतर जीवित अवशेष
देखबैत अछि । हारि बैसल आँखिमे फेर चमक उठब पर जीतक अर्थ बाहरी
पुरस्कार नहि, नव प्रयास बनैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८५, ९८, १००, १०३ आ ११० सभसँ 'गीत-प्रीत-मीत-अतीत-जीत'क पाठ-परिवार साझा अछि। एकर स्पष्ट भिन्नता 'रहैत अछि'क वर्तमानात्मक स्थिति अछि। ई अर्थभेद मान्य, मुदा स्वतंत्र बिम्ब-विस्तार सीमित। काव्य-पञ्जीमे ई गजलसभकेँ अन्तर्सम्बन्धित दर्शाएब आवश्यक अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मौन भीतर एक गीत रहैत अछि / रोष भीतर कने प्रीत रहैत अछि — पोथी बन्द हो, अक्षर धूसर पड़ए / लोकक कंठमे गीत रहैत अछि

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११७। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११८ : कनी बात

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: २२-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: कहू ने।

कनी बात : द्विखण्डी बोलीक प्रयोग

ई गजल पहिल शतकक 'दुआर-हँकार' ध्वनिक्रम सँ हँटि 'जिया मौन', 'नयन नीर', 'नगर बीच' आ 'नदी नीर' सन समानान्तर पदसमूह रचैत अछि। 'नदी नीर' बहत धार, चलत नाव जिया मौन' दृश्यकेँ गद्य-विस्तार नहि, परतदार काव्य-खण्डमे रखैत अछि। 'कहू ने' सम्बोधन संवादक अपूर्णता रचैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

घोषित २२-२५ मात्रा आ मध्य यतिक प्रयोग छन्दीय परिवर्तनक संकेत अछि, मुदा शाब्दिक संयोग किछु ठाम अप्राकृतिक अछि; 'जगत सार कहू ने'क प्रत्यक्ष अर्थ सहज नहि। एही कारण लयक लाभ आ भाषिक स्पष्टताक लागत दुनूक परीक्षण आवश्यक अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जिया मौन कनी देर, जगत सार कहू ने / नयन नीर सगर रात, अपन प्यार कहू ने — लिखत गीत जिया मौन, नयन नीर सगर रात / तकर नेह हमर गीत, जगत सार कहू ने

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल ११९ : अपन मान

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २३-२५
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय ·
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आन · रदीफ: रखू ने।

अपन मान : मानवीय गरिमा आ पुनरुक्त लय

‘जगत बीच अलग चाल, अपन मान रखू ने’ स्वतंत्र व्यवहारक दबावमे स्वाभिमान
बचएबाक आग्रह अछि। नगरक बदलैत सम्बन्धक बीच साँस आ प्राणक जतन,
गामक धानक प्रतीक आ नेह-संग गीतक सहारा गजलक नैतिक वृत्त बनबैत
अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘जिया मौन’, ‘नयन नीर’, ‘जतन गीत’ सन बारम्बार आवैत युग्म अखण्ड लय
बनबैत अछि, मुदा ‘कनी बात सुनी बात’मे पुनरुक्ति अर्थ-विस्तार नहि करैत
अछि। ‘द्विखण्डी निकट-समलय’क घोषणा सुनबाक अनुभवसँ जाँचबाक अछि;
नैतिक आग्रहक सघनता आ शब्दगत भरावक भेद स्पष्ट रखनाइ जरूरी।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जगत बीच अलग चाल, अपन मान रखू ने / सगर
रात जिया मौन, जतन प्राण रखू ने — तकर नेह बनी गीत, हमर गीत रहत साथ
/ जतन गीत धरी नेह, हमर गान रखू ने

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क ११९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२० : कनी बात

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २३-२५
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय ·
यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आट · रदीफ: चलै छी।

कनी बाट : चलबाक आ अनिश्चितताक ध्वनि

भोरक उगब, नदी-घाटक बाट, नगरक अलग-अलग लोक, गामसँ दूरी आ नावक पानिमे चलब—गजल निरन्तर गतिक अनुभव रचैत अछि। ‘ककर बाट चलै छी’ यात्राक भौगोलिक प्रश्नकें व्यक्तित्वक खोज बनबैत अछि। नयन-नीर आ नदी-नीरक ध्वनि-साम्य निजी दुख आ बाहरी धार जोड़बाक प्रयत्न अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

छन्द्रीय द्विखण्डी प्रयोग ११८-११९क समान पद-संयोजनक संग जुड़ल अछि। किछु शेर वस्तु-क्रमक भरावसँ काव्य-चित्र स्पष्ट बनाबयमे कठिनाई अनुभव करबैत अछि। भावगत मुख्य सफलता गतिकें संकल्प नहि, चलैत अनिश्चितता रूपमे देखब अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जिया मौन कनी देर, कनी बाट चलै छी / उगल भोर पवन संग, नदी घाट चलै छी — हमर गीत रहत साथ, उगल भोर जली दीप / बचल आस जतन प्रीत, कनी बाट चलै छी

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल 101-120 : अन्तरपाठीय तुलना

गजल १०१-११०मे मुख्यतः पूर्व गजलसभक रूपगत पुनर्संयोजन देखाइत अछि। १०५/८१, १०६/८०, १०७/८८, १०८/८६, १०९/९९ आ ११०/१००मे शेरक क्रम अथवा अर्थक्षेत्र निकट अछि; नव मात्राविधानक घोषणाक संग जोड़ल पूरक पद वास्तविक छन्द्रीय शुद्धताक स्वतः प्रमाण नहि। ११८-१२०मे ‘जिया मौन’, ‘नयन नीर’, ‘नगर बीच’, ‘नदी नीर’ सन युग्म नव लय बनाबयक प्रयत्न अछि, मुदा भाषिक स्वाभाविकताक पृथक कसौटी आवश्यक अछि।

क्रमाङ्क	प्रमाणित मूल शीर्षक	काव्य-संरचना
101	मानक दाम	५ शेर / १० मिसरा
102	घरक दुआर	५ शेर / १० मिसरा
103	रहि जाए	५ शेर / १० मिसरा
104	कतेक दिन	५ शेर / १० मिसरा
105	एखनहुँ	५ शेर / १० मिसरा

106	सुनि लिअ	५ शेर / १० मिसरा
107	तइयो	५ शेर / १० मिसरा
108	आब कहू	५ शेर / १० मिसरा
109	नै भूलब	५ शेर / १० मिसरा
110	बाँचल रहत	५ शेर / १० मिसरा
111	कने बाजू	५ शेर / १० मिसरा
112	नै कहब	५ शेर / १० मिसरा
113	याद आबैए	५ शेर / १० मिसरा
114	बुझू कने	५ शेर / १० मिसरा
115	फेर होएत	५ शेर / १० मिसरा
116	ओहि ठाम	५ शेर / १० मिसरा
117	रहैत अछि	५ शेर / १० मिसरा
118	कनी बात	५ शेर / १० मिसरा
119	अपन मान	५ शेर / १० मिसरा
120	कनी बाट	५ शेर / १० मिसरा

दीवान-ए-विदेह : गजल 121-140क मूल पाठाधारित विस्तृत समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुरक मूल मैथिली पाठक गजल-क्रम, शीर्षक, घोषित बहर, मात्रा-विधान, शेरक वास्तविक शब्दक्रम आ अन्तररचनात्मक पाठभेदक मिलान करैत प्रत्येक रचनाक आलोचना। घोषणा कएल छन्द-मानककें वास्तविक ध्वन्यात्मक मापनक बिना प्रमाणित अरूज़ी समता नहि मानल गेल अछि।

गजल १२१ : जतन गीत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: २२-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: प्रीत · रदीफ: लिखै छी।

लिखबाक क्रिया आ स्वरक पुनरावृत्ति

‘जिया मे कनी पीर, जतन गीत लिखै छी’ लेखनकें घावक जतन करबाक क्रिया बनबैत अछि। नगरक भिन्न चाल आ गामक धान-पवन, नदीक धार आ नयनक नीर एकहि पदसमूहक लयमे जुड़ैत अछि। गजल ११८-१२०क ‘जिया मौन’, ‘नयन नीर’, ‘नगर बीच’ फेर-फेर आबि रहल अछि; एतय रदीफ ‘लिखै छी’क कारण अनुभव काव्यनिर्माणमे बदलैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

काफियामे गीत, प्रीत, जीत आ मीत ध्वन्यात्मक सहमति बनबैत अछि, मुदा अनेक शेर एक्के शब्दक उलट-फेर अछि। ‘जतन गीत’ शीर्षक लेखकीय सावधानी सूचित करैत अछि, मुदा रूप-विन्यासक भराव अर्थक नव विस्तार सीमित करैत अछि। घोषित २२-२५ मात्राक निकट-सममात्रिकता वास्तविक उच्चारण-परीक्षण माँगैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जिया मे कनी पीर, जतन गीत लिखै छी / नयन नीर सगर रात, तकर प्रीत लिखै छी — धरी नेह बनी गीत, रहत साथ जतन मान / नयन नीर जिया मौन, जतन गीत लिखै छी

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२२ : नेहक थाह

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: २२-२५
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -एह • रदीफ: बुझू ने।

नेहक थाह : जिज्ञासा वा उपदेश

‘नेह बुझू ने’क आमन्त्रण शरीरक नोर, दूर पड़ल गाम, नगरक मौन आ नदी-पारक नावकँ एकत्र करैत अछि। प्रेमकँ केवल निजी भावना नहि, गामक दूरी आ लोकक चालक बीच टिकबाक सम्बन्ध बनबैत अछि। दीप आ नदीक साथे कतेक स्नेह सम्भव अछि, एहि चित्रमे पानिक अस्थिरता आ इजोतक नाजुकता मिलैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘उगल मेघ गिरत मेह, जखन मेह बुझू ने’मे शब्द-पुनरुक्ति अर्थ स्पष्ट नहि करैत; ध्वनिसाम्य अर्थसौष्टवपर भारी पडैत अछि। १२१क समान ‘नयन नीर जिया मौन’ आदि शब्दगुच्छ नव शेरक स्वतन्त्रता घटबैत अछि। रदीफक आग्रह श्रोता सँ सहभागिता माँगैत अछि, मुदा कतहु उपदेशात्मक सुनाइत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : नयन नीर जिया मौन, तकर नेह बुझू ने / उगल मेघ गिरत मेह, जखन मेह बुझू ने — हमर गीत धरी नेह, बनी प्रीत रहत साथ / जिया मे कनी पीर, तकर नेह बुझू ने

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२२। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२३ : ओहि पार

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: २२-२५
मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: तकै छी।

नदी-पार ताकैत नजर

‘नदी पार तकै छी’ दृश्यसँ शुरू होइत गजल आँखिक दिशाकँ गाम, नगर, द्वार आ नेहक बीच घुमबैत अछि। नगरक अनाम लोकक ‘अलग चाल’ आ अपन द्वारक स्मृति शहरी भीड़क बीच पहिचानक खोज रचैत अछि। नदीधारक सम्मुख ‘कनी देर धरू हाथ’ निजी सम्बन्धक एक मूर्त संकेत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८१क 'ओहि दिस' आ ७६क 'ओहि पार'सँ अलग एतय 'तकैत' क्रिया निरन्तर अपेक्षाक बोध अनैत अछि। मुदा 'जगत सार तकै छी' सन पदसंयोग अर्थमे अस्थिर अछि। नदी-धार-नयन-नेहक युग्म लगातार आवैत रहला सँ दृश्यशिल्प एकरूप होबाक खतरा अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जिया मौन कनी देर, नदी पार तकै छी / नयन नीर सगर रात, अपन द्वार तकै छी — तकर नेह बनी गीत, हमर गीत रहत साथ / नयन नीर जिया मौन, अपन प्यार तकै छी

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२४ : गामक सुर

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीत · रदीफ: गबै छी।

गामक सुरक सामूहिक प्रतिमा

भोर, पवन, झुकल धान आ मेहक गामक बीच गायक 'जतन गीत गबै छी' कहैत अछि। नगरक अलग चाल आ गाँवक सामूहिक आसक विरोध एहि स्वरमे उपस्थित अछि। नदीक नाव आ जरैत दीपसँ जोखिमक बीचो गायन जीवित रहबाक रूपक बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ 'गबै छी' १२१क 'लिखै छी'सँ श्रव्य भेद रचैत अछि, मुदा गीत-प्रीत-मीत-जीतक शेरक्रम लगभग ओही अछि। 'द्विखण्डी निकट-समलय'क घोषणा नवीनता अछि; मुदा अन्तिम शेर पहिलक नेह-प्रीत पुनरावर्तन जकाँ अछि। लोकक गायनक अनुभव वास्तविक गान-प्रसङ्गसँ अधिक ठोस बनि सकैत छल।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : उगल भोर पवन संग, जतन गीत गबै छी / सगर रात नयन नीर, तकर प्रीत गबै छी — धरी नेह बनी गीत, रहत साथ जतन मान / नयन नीर सगर रात, तकर प्रीत गबै छी

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२४ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १२५ : कने रहू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: कने रहू ।

वृद्धावस्था आ गाछक छाँह

साँझ उतरैत अछि, उमेर केशपर उज्जर रंग धरैत अछि आ दूर बसल नेना घर
खाली करैत अछि । एहि गजलमे बूढ़ गाछक छाँह कम नहि होयबाक दृश्य वृद्ध
जीवनक उपयोगिताक सबल प्रतिमा अछि । ‘कने रहू’ प्रियजनसँ कहबाक संग
सामाजिक रूपसँ वृद्धक विस्थापित नहि करबाक आग्रह सेहो बनैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गजल ९१क ‘कने ठहरू’सँ ध्वनि निकट रहितो विषय एतय उम्र आ पीढ़ीक दूरीक
कारण विशिष्ट अछि । ‘गाछ पुरान’क चित्र सहज आ मूर्त अछि; अन्तिम गीतक
झंकार पुरान बिम्बसँ घुसैत अछि, ताहि लेल निष्कर्षक मौलिकता सीमित ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : साँझ एखन उतरि रहल, दुआर कने रहू / बात
मोनेमे बहुत अछि, पुकार कने रहू — गीत पूरा होएत, स्वर एक दिन थाकत /
अन्तिम धरि ई झंकार कने रहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२५ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १२६ : भूलि नहि जाउ

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १९-२७
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर · रदीफ: भूलि नहि जाउ ।

बोलिक घर आ विस्मृतिक विरोध

शहर नाम आ काम दैत अछि; ओकर उपस्थिति गजलक दृष्टिमे केवल
नकारात्मक नहि । मुदा पहिल घरक दुआर, मायकँ हँकार आ गामक सहज
व्यवहार बिसरल नहि जाए—ई प्रस्थानक समय स्मृतिक नैतिक सूची अछि ।

‘भाषा केवल पोथीक पन्नामे नहि जीबै / घरक बोलिक संसार’ एहि संग्रहक भाषाचेतनाक सघन शेर अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘भूलि नहि जाउ’ रदीफ ८७क ‘बिसरब नहि’ आ ९९क ‘नै भूलब’सँ प्रश्नगत साझा अछि। एतय भाषाक जीवित घरेलू व्यवहार जोड़ब मुख्य अतिरिक्त दृष्टि अछि। १९-२७ मात्राक विस्तार पारम्परिक सख्त बहरक समानतापर प्रश्न उठबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जे घर पहिल बेर खोललक दुआर, भूलि नहि जाउ / माइक दूरसँ देल हँकार, भूलि नहि जाउ — नाम रह्य वा नहि, गीत जँ लोक गबैत रहए / ओ कंठक झंकार, भूलि नहि जाउ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२६। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२७ : ओतबे काफी

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आत · रदीफ: ओतबे काफी।

पर्याप्तताक नीति

‘मोनसँ कहल एक बात’ आ ‘दुखमे पकड़ल एक हाथ’क पर्याप्तता सम्बन्धकें अभावग्रस्तो समृद्ध बनबैत अछि। निन्न अएबाक एक राति, धरतीपर दू बूँद मेह, खाली हाथक नेह—छोट परिमाणक मानवीय प्रभाव गजलकें रूप दैत अछि। अन्तिम शेरमे पैघ गीतक शर्त नहि रहब काव्यक लम्बाइ आ ओकर असरक भेद स्पष्ट करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘ओतबे काफी’ रदीफ प्रत्येक शेरमे मूल्यक माप बदलबैत अछि। तथापि एहन पर्याप्ततावाद सामाजिक अन्यायक प्रसङ्गमे गलत अर्थ सेहो दऽ सकैत अछि; राजनीतिक अभावक भरपाई नैतिक सन्तोष मात्रसँ नहि होइत। गजल मुख्यतः निजी साहचर्यक सन्दर्भमे पढ़ल जाए।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनसँ कहल एक बात ओतबे काफी / दुखमे पकड़ल एक हाथ ओतबे काफी — गीत पैघ होए, ई कोनो शर्त नहि / हृदय छूबि जाए बात ओतबे काफी

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२७। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२८ : ककरो लेल

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुङ्गी। मात्रा-क्रम: १८-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीत · रदीफ: ककरो लेल।

परार्थक गीत आ अतीतक बचाव

‘ककरो लेल’क पुनरुक्ति कर्ताक निज दुःखसँ बाहरो जीवाक अनिवार्यता बनबैत
अछि। भीडमे मीत बनि ठाढ़ रहब, हारल आँखिक चमककैँ जीत बुझब आ नव
घरमे पुरान अतीतक किछु रक्षा करब—ई सभ कर्तव्य अनाम दोसराक दिशा
देखबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गीत-प्रीत-मीत-जीत-अतीतक काफिया ८५, १०० आ ११७ सँ परिचित अछि।
नवता परार्थक रदीफमे अछि, जे निजी नॉस्टेल्लिजियाकैँ सामाजिक दानक भाव दैत
अछि। मुदा ‘बाँचि रहए अतीत ककरो लेल’क कर्ता आ उपाय निश्चित नहि;
निर्देश अपेक्षाकृत अमूर्त अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : लिखि दिअ एकटा गीत ककरो लेल / राखि दिअ
कने प्रीत ककरो लेल — जीवन केवल अपना दुःखक नाम नहि / छोड़ि जाउ एक
गीत ककरो लेल

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १२९ : एखनो सुनू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुङ्गी। मात्रा-क्रम: १७-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ओर · रदीफ: एखनो सुनू।

शान्त धारक भीतरक श्रवण

मौनक शोर, रातिक भोर आ शान्त देखाइत धारक नीचाँ पानिक हिलोर—ई द्वन्द्व
सभ सुनबाक दायरा बढ़बैत अछि। टूटैत सम्बन्धक ‘हाथसँ छुटैत डोर’ सूक्ष्म

ध्वनि-रूपक अछि। थाकल लोक हारल नहि—एहि शेरसँ गजल व्यक्तिगत अनुभवसँ सामूहिक धैर्यक परीक्षण धरि पहुँचैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

१३क 'कने सुनू'क निकट पाठ एतय 'एखनो सुनू'क समयगत जिद्द पबैत अछि। 'अन्तिम स्वरक भोर'मे स्वर आ समयक रूपक जुडैत अछि, मुदा दृश्य स्पष्ट नहि। काफिया शोर-भोर-हिलोर-डोर-जोरक पुनरावर्तन अलग नब काव्य-सम्पदा नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मौन भीतरक शोर एखनो सुनू / राति भीतरक भोर एखनो सुनू — गीत थमल, ताली सेहो चुप भऽ गेल / अन्तिम स्वरक भोर एखनो सुनू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १२९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३० : फेर लिखब

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -आर · रदीफः फेर लिखब।

हाशियाक नामक नव लेखन

स्याही सुखला पर कलम बदलि सकैत छी—ई शेर लेखनक उपकरण आ साहित्यिक उत्तरदायित्वक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। बाढ़ि मेटौने खेतक रेखापर धान फेर उगब, आ इतिहासक हाशियापर छुटल लोकक नाम लिखब, साहित्यक पुनःअभिलेखनक कार्यसँ जोडैत अछि। 'फेर लिखब' एतय केवल कविताक निजी आग्रह नहि, सामाजिक स्मृतिक दावा अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

काव्यिक दृष्टिसँ ई समूहक सर्वाधिक ठोस राजनीतिक-साहित्यिक हस्तक्षेप अछि, मुदा लेखकक वास्तविक ऐतिहासिक अभिलेखनक सत्यापन एहि गजलसँ मात्र नहि होइत। दुआर/विचार/पुकार/झंकारक तुक पुरान अछि; हाशियाक नामक संकेत ओकरा नब नैतिक सन्दर्भ दैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखब / जे बन्द भेल छल मनक दुआर, फेर लिखब — गीत जाँ एक बेर कंठमे साँस पाबि गेल / शब्द मेटल तँ झंकार फेर लिखब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३१ : फेरो सही

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १९-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आत · रदीफ: फेरो सही।

समय देबाक स्वीकृति

‘आइ नहि तँ काल्हि’ आ ‘फेरो सही’ प्रेम, बरखा, मुलाकात आ अधूर गीतक लेल स्थगनक एक सन्तुलित भाषा बनबैत अछि। खाली हाथ घुरलापरो नेह भेटब वस्तुगत लाभ आ आत्मीय लाभक अन्तर अछि। मेघ धरती धरि नहि पहुँचब असफल प्रयत्नक दृश्य अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ प्रतीक्षाकें पराजय नहि मानैत अछि, मुदा प्रत्येक शेर एके सूत्र पर चलला सँ कथा-विस्तार सीमित अछि। गजल ११क ठहरबाक आग्रहसँ ई समयगत सम्वाद करैत अछि; ११मे विदा रोकबाक आग्रह छल, एतय विलम्ब स्वीकारबाक सजगता अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : आइ नहि तँ काल्हि बात फेरो सही / निन्न नहि तँ जागल रात फेरो सही — गीत आइ अधूरा अछि तँ दुख कोन / अगिला साँझ ई बात फेरो सही

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३२ : घर चलू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २०-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: घर चलू।

घरेलू वापसीक बहुवचन

रेल, नगरक निन्नक कमी, बूढ़ पीपरक छाँह, नामक पाछाँ दौड़ि थाकब—ई गजल घर घुरबाक विवशता आ इच्छाक मध्यम स्वर रचैत अछि। ‘घर चलू’क सम्बोधन ‘हम’ मात्र नहि, सहयात्रीकेँ साथ लऽ लौटबाक स्वर अछि। निन्द्राक अभाव नगरीय असन्तोषक एक विशिष्ट संकेत बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

दरक ‘घुरि आउ’ बाहरी व्यक्तिक प्रति अनुरोध छल, एतय ‘घर चलू’ सामूहिक निर्णय अछि। तथापि दुआर-हँकार-बहार-संसार-झंकारक रदीफ-पूर्व काफिया पुनः प्रयोग भेल अछि। ‘नामक पाछाँ दौड़ि’क आत्मालोचन एहि आवर्तनकेँ किछु नब धार दैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : साँझ खोललक पुरनका दुआर, घर चलू / दूरसँ आयल माइक हँकार, घर चलू — गीत अधूरा अछि, सुर एखन बाँचल / लेने अपन अन्तिम झंकार, घर चलू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३२। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३३ : साँच कहू

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -आत · रदीफः साँच कहू।

सत्यक माँग आ हँसैत चेहराक नोर

‘साँच कहू’क बार-बारक प्रश्न सहानुभूतिक प्रारम्भ होइत अछि: मुखपर हँसी रहलहुँ भीतर नोर किएक, खाली हाथ घुरलापरो नेह अनमोल किएक? प्रश्नमे भावनाक अस्पष्टता स्वीकारबाक इच्छा अछि। अन्तिम शेर शब्द आ हृदयक पहुँचमे भेद रखैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

माटि बिनु बरखा महकब, आघात, सौगात, शब्द-गीतक भेद—ई सभ ८३, ९० आ ११४सँ अत्यन्त निकट अछि। काव्यगत नबता प्रश्नरूप रदीफमे केन्द्रित अछि। शिल्पक पुनरावृत्ति स्पष्ट लिखनाइ आवश्यक अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनमे जे अछि ओ बात, साँच कहू / किएक जागल ई रात, साँच कहू — गीत जँ हृदय धरि पहुँचि नहि सकल / केवल शब्दक की बात, साँच कहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३४ : रहि सकैए

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आस · रदीफ: रहि सकैए।

आशाक अनिश्चित रूप

‘रहि सकैए’क सम्भावनात्मक स्वर राज, समय आ लोक बदललाक बादो विश्वास बचल रहबाक सीमित अपेक्षा रखैत अछि। दूर शहरक अनेक बरखक पाछाँ मायकेँ अँचरक सुवास रहब आ उमेर ढललापरो गीतक साँस बचब स्मृतिक बहुवर्षीय अनुभूति बनबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘एखनहुँ’क निश्चित उपस्थितिसँ भिन्न रदीफ एतय सम्भावना स्वीकार करैत अछि, अनिवार्यता नहि। मुदा आस-प्यास-विश्वास-सुवास-साँसक काफिया-पाठ ८१, ८८, १०५क परम्परा दुहरबैत अछि। कलात्मक मूल्य रदीफक विधेयात्मक मोड़मे बेसी अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : सभ टूटलापर कने आस रहि सकैए / सूखल माटिमे प्यास रहि सकैए — सभ नाम मेटि जाए इतिहासक पन्नासँ / लोकक मोनमे आस रहि सकैए

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३४। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३५ : एतबे रहय

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीत · रदीफ: एतबे रहय।

न्यूनतम परन्तु अनिवार्य

भीड़मे एक मीत, स्मृतिमे किछु अतीत, आँखिमे उठबाक साहस, लोकक ओठपर गीत—‘एतबे रहय’ जीवनक न्यूनतम मानवीय आवश्यकताक सूची अछि। नामक ऊँच महल धूरि होयबाक दृश्य यशक क्षणभङ्गुरता आ सामूहिक गीतक दीर्घजीविता बीच व्यतिक्रम रचैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गजल १२७क पर्याप्तताक नीति एतय मीतक उपस्थिति आ आत्मविश्वासक संवेदनाक संग घुरि अबैत अछि। मुदा गीत-प्रीत-मीत-अतीत-जीतक सूची पुनः यथावत्, ताहि लेल रचनाक स्वतन्त्र बिम्ब-सम्पदा कम।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : कंठमे बाँचल गीत एतबे रहय / मोनमे थोड़े प्रीत एतबे रहय — नामक ऊँच महल एक दिन धूरि होएत / लोकक ओठपर गीत एतबे रहय

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३५। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३६ : फेर जनमत

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रमः २०-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः —आर • रदीफः फेर जनमत।

पुनर्जन्मक सामाजिक शर्त

बाढ़ि आरि मेटा देत, मुदा लोकक हाथ हाथमे रहत तँ आधार फेर जनमत—ई शेर प्राकृतिक विनाशक बाद सामाजिक पुनर्रचनाक सक्रिय शर्त स्पष्ट करैत अछि। नेना निर्भय भऽ घरमे भाषा बजत तँ विचार जनमत; एतय मातृभाषाक पुनर्जीवन कागजी अभियान नहि, पीढ़ीक व्यवहार अछि। लोकक दुखकें अपन दुख बुझैत गीत सामूहिक कंठक झंकार बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘फेर जनमत’ रदीफ ११५क ‘फेर होएत’सँ बेसी सृजनशील, कारण ओ सहकार आ भाषिक निर्भयताक शर्त राखैत अछि। मुदा अन्तिम शेर सामाजिक आशयक घोषणात्मक व्याख्यामे किछु सिमटैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : सूखल गाछिमे एक दिन बहार फेर जनमत /
उजड़ल आँगनमे छोट संसार फेर जनमत — गीत जँ लोकक दुखकें अपन दुख
मानत / कंठ-कंठमे ओ झंकार फेर जनमत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३६। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३७ : आब नहि

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: आब नहि।

निषेधसँ आत्मनिर्णय

‘नेहकें मानब व्यापार आब नहि’क प्रतिज्ञा ईश्वरदत्त नियम नहि, बीतल अनुभवसँ
उपजल निजी निर्णय बुझाइत अछि। मौनक दीवार, प्रश्नसँ डरैत दरबार आ ताली
लेल रचल प्रचारक बीच गायक सत्यक पक्ष धारण करैत अछि। ‘हार बहुत देखल’
कहबाक कारण नव निर्णयक पाछाँ वास्तविक अनुभवक सम्भावना बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

१०१ आ ११२क निषेध-प्रधान गजलसभसँ निकटता स्पष्ट अछि। ‘आब नहि’
पहिनुक अनुभव आ भविष्यमे बदलावक सीमा रचैत अछि। तथापि सत्ता-
सम्बन्धी इशारा विशिष्ट इतिहासक प्रमाण नहि; पाठ एकरा प्रतिरोधक रूपक
बनबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनपर राखब उधार आब नहि / नेहकें मानब
व्यापार आब नहि — गीत जँ भीतरक स्वरकें नहि छूबै / लिखब केवल प्रचार आब
नहि

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३७। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३८ : तखन देखब

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२६
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: तखन देखब।

प्रतिक्षित सत्यापनक रदीफ

नाव धारक पार पहुँचत कि नहि, मेघ माटि धरि बरखत कि नहि, नव समय परिवार बदलेत कि नहि, नेना भाषा घरमे बाजत कि नहि—‘तखन देखब’ सब उत्तरकें परिणाम धरि स्थगित करैत अछि। ई गजल वादाक बदला घटित परिणामपर भरोसा करबाक ज्ञानमीमांसक सावधानी रखैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

तखन देखब’ निराधार नकारात्मकता नहि; घोषणा आ परीक्षणक बीच भेद अछि। मुदा कतेको शेरकें प्रश्न-सूचीमे सीमित रखबाक कारण दृश्यात्मक गहराई कम अछि। गीत लोक गाबत की, एकर ठोस उत्तर पाठमे नहि; लेखकक दावासँ अधिक पाठकीय व्यवहार चाही।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : राति बीतत, खुलत दुआर, तखन देखब / नाव पहुँचत धारक पार, तखन देखब — गीत लिखल बहुत, मुदा लोक गाबत की / बाँचत की ओ झंकार, तखन देखब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १३९ : कने बचाउ

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: कने बचाउ।

संरक्षण आ प्रगतिक संगति

घर बदलैत समय दुआर बचाउ, पैघ देवाल उठबैत समय आँगनक गाछ बचाउ, पाइ बढैत समय मनुष्यक व्यवहार बचाउ—‘कने बचाउ’ विकासक विरुद्ध स्थिरता नहि, विवेकपूर्ण चयनक आग्रह अछि। दूर चलि गेल नेनाक लेल घरमे ओकर संसार बचाएब पीढ़ीगत अलगावकें स्वीकारैत अछि, बिना घरक स्मृति नष्ट कएने।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गजल ९४क ‘रहए दिअ’सँ एहिमे सक्रिय संरक्षणक भेद अछि। रदीफ नम्र लगैत अछि, मुदा परिवार, पर्यावरण आ भाषा सम्बन्धी प्रश्नक विस्तार गम्भीर अछि। अन्तिम गीतक झंकार पूर्ववर्ती प्रतीक पुनः उपस्थित करैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : घर बदलू, मुदा दुआर कने बचाउ / भीड़ बढ़ए,
अपन पुकार कने बचाउ — नाम रह्य वा नहि, गीत रहि जाए बस / कंठमे ओ
झंकार कने बचाउ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १३९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४० : नै बदलू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १६-१९,
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: नै बदलू।

परिवर्तनक बीच अपरिवर्तनीय मूल्य

‘बहस होए तँ तर्क बदलि सकैत अछि / साँचक मूल विचार नै बदलू’ बहसक
वैचारिक विकास आ सत्यनिष्ठाक निरन्तरताक सम्यक् भेद करैत अछि। शहर,
बाट, घर आ नाम बदलैत रहलापरो अपन संसार आ व्यवहार सुरक्षित रखबाक
आग्रह एही धुरीपर अछि। नव धुनमे पुरान लोक-हँकार गाएब परम्पराक
परिवर्तनशील निरन्तरता बनबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘नै बदलू’ रदीफ कतेको ठाम मूल्यकें कठोर रूप देबैत अछि; सत्यक मूल विचार
स्थिर होयत, मुदा ओकर प्रमाण आ व्याख्या बदलि सकैत अछि। एहि नव्य-
न्यायसंगत भेदसँ कविता पढ़ल जाए तँ परिवर्तन-विरोधी कट्टरता नहि, नैतिक
संगति देखाइत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : दिन बदलए, मुदा प्यार नै बदलू / दाम बढ़ए,
व्यवहार नै बदलू — गीत नव धुनमे गाबि सकैत छी / लोकक लेल हँकार नै बदलू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल 121-140 : अन्तरपाठीय तुलना

गजल १०१-११०मे मुख्यतः पूर्व गजलसभक रूपगत पुनर्संयोजन देखाइत अछि।
१०५/८१, १०६/८०, १०७/८८, १०८/८६, १०९/९९ आ ११०/१००मे शेरक क्रम अथवा

अर्थक्षेत्र निकट अछि; नव मात्राविधानक घोषणाक संग जोड़ल पूरक पद वास्तविक छन्द्रीय शुद्धताक स्वतः प्रमाण नहि। ११८-१२०मे 'जिया मौन', 'नयन नीर', 'नगर बीच', 'नदी नीर' सन युग्म नव लय बनावयक प्रयत्न अछि, मुदा भाषिक स्वाभाविकताक पृथक कसौटी आवश्यक अछि।

क्रमाङ्क	प्रमाणित मूल शीर्षक	काव्य-संरचना
121	जतन गीत	५ शेर / १० मिसरा
122	नेहक थाह	५ शेर / १० मिसरा
123	ओहि पार	५ शेर / १० मिसरा
124	गामक सुर	५ शेर / १० मिसरा
125	कने रहू	५ शेर / १० मिसरा
126	भूलि नहि जाउ	५ शेर / १० मिसरा
127	ओतबे काफी	५ शेर / १० मिसरा
128	ककरो लेल	५ शेर / १० मिसरा
129	एखनो सुनू	५ शेर / १० मिसरा
130	फेर लिखब	५ शेर / १० मिसरा
131	फेरो सही	५ शेर / १० मिसरा
132	घर चलू	५ शेर / १० मिसरा
133	साँच कहू	५ शेर / १० मिसरा
134	रहि सकैए	५ शेर / १० मिसरा
135	एतबे रहय	५ शेर / १० मिसरा
136	फेर जनमत	५ शेर / १० मिसरा
137	आब नहि	५ शेर / १० मिसरा
138	तखन देखब	५ शेर / १० मिसरा
139	कने बचाउ	५ शेर / १० मिसरा
140	नै बदलू	५ शेर / १० मिसरा

दीवान-ए-विदेह : गजल 141-160क मूल पाठाधारित विस्तृत समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुरक मूल मैथिली पाठक गजल-क्रम, शीर्षक, घोषित बहर, मात्रा-विधान, शेरक वास्तविक शब्दक्रम आ अन्तररचनात्मक पाठभेदक मिलान करैत प्रत्येक रचनाक आलोचना। घोषणा कएल छन्द-मानककेँ वास्तविक ध्वन्यात्मक मापनक बिना प्रमाणित अरूजी समता नहि मानल गेल अछि।

गजल १४१ : एखनो अछि

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आस • रदीफ: एखनो अछि।

आसक उपस्थितिक समय

‘घुरि एबाक कने आस’ आ ‘माटि छुबबाक प्यास’ सँ ई गजल ८१क आरम्भिक संसार फेर खोलैत अछि। दूर शहरक सुन्दर घरक बावजूद अँचरक पुरनका सुवास बाँचल अछि; उमेर ढललापरो गीतमे साँस रहबक बिम्ब काव्यकेँ वृद्धावस्थाक तरफ मोड़ैत अछि। अन्तिम मद्धिम दीप आ क्षितिजपर भोरक आस प्रकृतिक दृश्यसँ आशाक दोसर क्षितिज खोलैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘एखनो अछि’ रदीफ ‘एखनहुँ’ सँ भिन्न विधेयात्मक पुष्टि करैत अछि, मुदा आस/प्यास/विश्वास/सुवास/साँसक काफिया-पाठ ८१, ८८, १०५, १३४ सँ अत्यन्त निकट अछि। नव भाव बुढ़ाइत उमेर आ मद्धिम दीप अछि; सम्पूर्ण काव्य-योजना नव नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : घुरि एबाक कने आस एखनो अछि / माटि छुबबाक प्यास एखनो अछि — राति बहुत भेल, दीपो मद्धिम अछि / क्षितिजपर भोरक आस एखनो अछि

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४२ : फेर गाबू

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः
अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीत · रदीफः फेर गाबू ।

फेर गाबबाक सामूहिक निमन्त्रण

थाकल स्वर, रूसल मन, दूर चलि गेल मीत, माटिमे बाँचल अतीत आ हारि उठल
लोकक आँखिक चमक—ई सभकेँ पुनः गायनक विषय बनाओल गेल अछि ।
अन्तिम 'पोथी बन्द भेल तँ की, कंठ खुलल अछि' शेर जीवित कण्ठक भरोसाकेँ
सामाजिक सहभागिता बनबैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

८५, १००, ११७क गीत-प्रीत-मीत-अतीत-जीतक क्रम लगभग पुनरावृत्त अछि ।
'फेर गाबू'क सामाजिक सम्बोधन अनुभवकेँ निजी शेषत्वसँ सामूहिक सक्रियता
बनबैत अछि । मुदा नब प्रतीकक कमी आ एकहि तुकक सघन पुनःप्रयोग स्वतन्त्र
रचनात्मक सीमासभ अछि ।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : स्वर थाकल तँ कने गीत फेर गाबू / मन रूसल तँ
कने प्रीत फेर गाबू — पोथी बन्द भेल तँ की, कंठ खुलल अछि / लोकक संग ओ
गीत फेर गाबू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४२ । शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल ।

गजल १४३ : घरमे बाजू

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १९-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः घरमे बाजू ।

घरक बोली आ भाषाक पीढ़ीगत जीवन

'पोथीमे राखल शब्द अकेले नहि जीबै'क शेर भाषा-संरक्षणकेँ निष्क्रिय सङ्ग्रहसँ
अलग रखैत अछि । हँसी, रोष आ घरक व्यवहारमे बोलबाक आग्रह मैथिलीकेँ
दैनिक जीवनक क्रियाशील माध्यम मानैत अछि । बाहरक आन भाषा सीखबासँ
निषेध नहि, अपन घरक बोली नहि बिसरबाक अनुरोध—एतय भाषिक अस्मिता
बहुभाषिकताक विरोधी नहि बनैत अछि ।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘घरमे बाजू’क बारंबारक सम्बोधन गजलकें प्रत्यक्ष जन-जागरूकताक स्वर दैत अछि। तथापि एकर शेरसभमे नाटकीय पात्र/घटना कम आ भाषिक नीति अधिक अछि। गजल १२६क घरक बोलिक संसार आ १३६क निडर नेनाक भाषासँ ई निकट संवाद करैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : अपन भाषाक पुकार घरमे बाजू / नेनाक नब विचार घरमे बाजू — गीत जँ लोकक हो, लोकसँ दूर किएक / अपन माटिक झंकार घरमे बाजू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४४ : संग रहू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: —आर · रदीफ: संग रहू।

असहमतिमे साहचर्य

‘मत अलग हो तँ अपन विचार संग रहू’ मतभेद आ सम्बन्धविच्छेदकें एकहि वस्तु नहि मानैत अछि। कठिन दिनमे आधार, खुलल मनक दुआर, सूखल दिनमे दू बूँद नेह—ई रूपक सामाजिक सम्बन्धकें बहसक जीतसँ अधिक मूल्यवान मानैत अछि। दूर चलि गेल नेनाक कारण बूढ़ घरक रिक्तता सेहो एही साहचर्यक अभाव बनैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

‘संग रहू’ रदीफ सहयोगक प्रत्यक्ष निमन्त्रण अछि, मुदा

दुआर/विचार/बहार/संसार/झंकारक तुक एकटा परिचित संग्रहगत साँचा बनवैत अछि। पारस्परिक असहमतिपर टिकबाक आग्रह एतय सर्वाधिक मौलिक नैतिक परिणाम अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : दिन कठिन हो तँ बनि आधार संग रहू / मत अलग हो तँ अपन विचार संग रहू — गीतक अन्तिम सुर जखन धीरे थमए / मौन बनि कऽ एक झंकार संग रहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४४। शीर्षक आ घोषित छन्द-
विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४५ : फेर उठू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: फेर उठू।

पराजयक बाद नव प्रयत्न

दीवार, अन्हार आ मझधार सँ घेरल वक्ता 'फेर उठू'क क्रियात्मक आदेश दैत
अछि। 'नाव डोलए तऽ पतवार छोड़ू नहि' संघर्षकें शरीरक काजसँ जोड़ैत अछि।
लोक अधिकार लेल चुप रहबाक बदला साँच पुकार बनय—ई राजनीतिक
निष्क्रियताक विरुद्ध स्पष्ट मोड़ अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गजल ८४क 'मोन मानै नहि' सँ एतय नव पद 'फेर उठू' अधिक सामूहिक अछि।
मुदा अन्हार-भोर आ नाव-मझधार परम्परागत रूपक छथि। अधिकारक उल्लेख
राजनीति-सङ्केत अछि, कोनो निश्चित आन्दोलनक दस्तावेज नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : आइ भेटल जँ हार, फेर उठू / सोझाँ ठाढ़ दीवार,
फेर उठू — गीत आधा रहल तँ अन्त नहि बुझू / लेने नव झंकार, फेर उठू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४५। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४६ : कने लिखू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: कने लिखू।

अभिलेखक हाशिया आ श्रमिकक हाथ

'धूरिमे मेटल नाम' आ 'नक्शासँ छुटल गाम'कें लिखबाक आग्रह मान्य
इतिहासक सीमा चिन्हित करैत अछि। खेतमे दिनभरि माटि सानैत हाथक चुप्प
काम राजमहलक इतिहासक विपरीत श्रमक वास्तविकता सामने अनैत अछि।

झोपड़िक छोटे धाम, मौनक विराम आ लोकक साँससँ जन्मैत गीत—ई सभ साहित्यकें सत्ता-कथासँ बाहरक जीवनमे स्थापित करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गजल १३०क 'इतिहासक हाशियापर छुटि गेल' लोककें नव कविता-सूत्र भेटैत अछि। 'कने लिखू' रदीफ विनम्र रहैत अछि, मुदा लेखनक चयन सम्बन्धी प्रश्न गम्भीर अछि। वास्तविक अभिलेखीय सत्यापनक प्रश्न आलोचनासँ अलग रहत। मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : धूरिमे मेटल नाम कने लिखू / नक्शासँ छुटल गाम कने लिखू — गीत जँ लोकक साँससँ जन्म लैत अछि / लोकक ओही नाम कने लिखू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४६। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४७ : तइयो चलू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह · रदीफ: तइयो चलू।

आन्हीमे चलबाक विवेक

धूरिभरल बाट, हारक पाछाँ मनसँ उठैत आह आ लोकक सुझाओल अनेक मार्गक बीच अपन निगाह राखबाक सन्देश मुख्य अछि। 'आन्हीमे गाछक छाँह कम भऽ सकैए'क शेर सुरक्षा-स्थान सेहो संकटमे कमजोर पड़बाक अनुभव रचैत अछि। मुदा पनाह खोजब लचीलापनक पाठ अछि, केवल जिद्दी बढनाइ नहि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'तइयो चलू'क लय पुनः प्रयासक आदेश अछि; १२०क 'चलै छी' सँ अधिक सामूहिक। राह/चाह/आह/निगाह/पनाह काफियाक सहज ध्वनि रचैत अछि, किन्तु अनेक पद सर्वसामान्य नीतिवचनक सीमा पर अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : धूरि भरल अछि राह, तइयो चलू / मोनमे बाँचल चाह, तइयो चलू — गीत अधूरा अछि तँ अन्त कहाँ भेल / लेने नबका राह, तइयो चलू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४७। शीर्षक आ घोषित छन्द-
विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४८ : रहय दिअ

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -लेल · रदीफ: रहय दिअ।

घरक आवाज आ खुलल खिड़की

घरमे अपन बोल बचएबाक सँग 'खिड़की बन्द कऽ दुनिया नहि बचत'क शेर
साहित्यिक रूपसँ विशेष अछि—परम्पराक रक्षा बाहरी संसारसँ कटि कऽ नहि,
हवाक आवाजाही स्वीकारि कऽ होइत अछि। 'पाइ सभ चीज खरीदत, ई साँच
नहि' संबंधक अनमोलपनकेँ आर्थिक हिसाबसँ अलग करैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'रहय दिअ' रदीफ खुलापन बनबैत अछि; १४क 'रहए दिअ' सँ काव्य-संबन्ध
स्पष्ट अछि। १४-२३ मात्राक विस्तृत अन्तर घोषित निकट समताक प्रश्न उठबैत
अछि। 'मोनमे कने डोल'क अर्थ अस्पष्ट, मुदा खुलल खिड़कीक बिम्ब सटीक
अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : घरमे अपन बोल रहय दिअ / नेहक किछु मोल
रहय दिअ — गीत जाँ लोकक कंठमे घर बना लेलक / ओकर अपन बोल रहय
दिअ

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १४९ : ककरा कहब

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -पीर · रदीफ: ककरा कहब।

दुख कहबाक श्रोताक खोज

'मोनमे जागल पीर ककरा कहब' व्यक्तिगत दुखक वाचक आ श्रोताक बीच
रिक्तता रचैत अछि। 'नकशा खींचि देलक सीमा बहुत सहज / नेहक टूटल लकीर

ककरा कहब' राजनीतिक-सामाजिक रेखा आ आत्मीय विभाजनकेँ अलग करैत अछि। धारक एहि पार घर, ओहि पार खेत भौगोलिक जोखिमकेँ ठोस बनबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

७६क नदी-पार विमर्शक नव रूप एतय प्रश्नरूप संवादक अभावमे अछि। किन्तु 'एतेक दिनक धीर'क पदविन्यास पाठकीय अर्थमे अस्पष्ट। अन्तिम शेर ताली पाछाँ बाँचल पीरकेँ जन-स्वीकृति आ निजी राहतक अन्तर बनबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनमे जागल पीर ककरा कहब / आँखिमे भरल नीर ककरा कहब — गीत सुनि सभ ताली दऽ घुरि गेल / बाँचल अन्तिम पीर ककरा कहब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १४९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५० : फेर आबि गेल

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुङ्गी। मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ंग · रदीफ: फेर आबि गेल।

सूखल फूलक ठोस स्मृति

बहुत दिन बाद मीतक दुआरपर लौटब, बरखासँ माटिक रंग फेर उठब आ पोथी खोलिते सूखल फूल खसब—ई सभ लौटबाक अलग-अलग इन्द्रिय-साक्ष्य अछि। विशेषत: पोथीसँ खसल फूल अतीतक आकस्मिक आगमनक सघन दृश्य अछि; नाम बिसरला पर स्वर बचब स्मृतिक श्रवणाधारित निरन्तरता देखबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'फेर आबि गेल' रदीफक समय अतीतक एकाएक वर्तमानमे प्रवेश अछि। 'मेह-माटि-तरंग' परिचित अछि, मुदा सूखल फूलक दृश्य गजलक नव उपलब्धि अछि। रंग/संग/उमंग/तरंग/प्रसंगक तुकमे अर्थ-विस्तार किछु ठाम स्वाभाविक अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मेह पड़िते माटिक रंग फेर आबि गेल / पुरनका
गीतक ओ संग फेर आबि गेल — नाम बिसरल छल, स्वर नहि बिसरल / कंठमे
ओही रंग फेर आबि गेल

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५१ : नै झुकब

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १५-२२
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: नै झुकब।

आत्मसम्मानक प्रतिज्ञा

भूख आ दामक दबाव रहितो मान-ईमान नहि झुकायबक प्रतिज्ञा आर्थिक
असुरक्षामे व्यक्तिगत गरिमा रचैत अछि। ‘भाषा हमर घरक साँस’ मातृभाषाकें
लाजक विषय नहि बनएबाक स्पष्ट साहित्यिक स्थिति अछि। पद पैघ भेलो
मनुष्यक मूल्य अधिक—ई शेर प्रशासनिक श्रेणी आ नैतिक समता बीच दूरी
राखैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

१०१क ‘मानक दाम’सँ अर्थगत निकटता अछि; ‘नै झुकब’ आत्मघोषित दृढ़ता
अछि, मुदा क्रियाक विशेष संदर्भ कम। डरब दोष नहि सन सहिष्णु दृष्टि १५१मे
स्पष्टतर रूपमे अबैत अछि। राजनीतिक तथ्य मानब उचित नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : भूख सहब, मुदा मान नै झुकब / दाम लेल अपन
ईमान नै झुकब — गीत जँ लोकक पीरक संग ठाढ़ अछि / ओकर कंठक मान नै
झुकब

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५१। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५२ : मोनमे रहत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १८-२३
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: मोनमे रहत।

क्षणक स्मृति आ विलम्बित शब्द

छोट भेटक घुरि तकब, समय पर नहि कहि सकल बातक 'कने देर' आ आँगनक पुरनका घेर स्मृतिक अलग-अलग माप बनैत अछि। घर-शहर बदलला पाछाँ सम्बन्धक छोट क्षण अधिक टिकाउ बनैत अछि। 'भोर आबि जाए तँ राति मेटि नहि जाइ' वर्तमानक इजोत आ पूर्वक अन्हारक सह-अस्तित्वक प्रभावकारी बिम्ब अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'मोनमे रहत' रदीफ स्थायित्वक निजी वचन, मुदा 'भेट भेल एक बेर / घुरि ताकल ओ फेर'क भाव एकर सघनतम दृश्य। अन्तिम 'अन्तिम ओ एक बेर' पाठ कुछ अस्पष्ट होइत अछि; स्मृतिक भाव रहितो भाषा-पुनरीक्षण अपेक्षित।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : भेट भेल एक बेर मोनमे रहत / घुरि ताकल ओ फेर मोनमे रहत — गीत थमि जाए, स्वर हवा संग चलि जाए / अन्तिम ओ एक बेर मोनमे रहत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५२। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५३ : कने छोड़ू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: कने छोड़ू।

किछु अवकाश छोड़बाक नीति

'सभ हिसाब नेहमे पूरा होइ जरूरी नहि' अपन लोकपर पूर्ण अधिकारक आग्रह छोड़बाक नैतिक बोध अछि। 'जीतबाक जिद्दमे बात बिगड़ि जाइत अछि' शेर बहसक विजय आ सम्बन्धक क्षतिक सम्बन्ध देखबैत अछि। 'मौन सभ दिन डरक दोसर नाम नहि होइ'क कारण चुप्पीकेँ शून्य नहि, सम्भाव्य विचारक स्थान मानल गेल अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'कने छोड़ू' शब्द-विन्यास किछु शेरमे शाब्दिक अस्पष्टता अनैत अछि: 'मोनपर एतेक भार कने छोड़ू' भार छोड़ब कि राखब? गजल ९४/१४८क 'रहए/रहय दिअ' सँ अर्थजगत साझा, मुदा निर्देशसंगति यहाँ अधिक जाँच अपेक्षित।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनपर एतेक भार कने छोड़ / सोझाँ ठाढ़ दीवार
कने छोड़ — गीत जँ थाकल मोनकेँ साँस दऽ सकैए / ओकरा लेल दुआर कने
छोड़

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५३। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५४ : समय कहत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२४
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति:
अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ात · रदीफ: समय कहत।

समयक न्यायपर प्रश्न

हँसैत मुखक पाछाँ केहन आघात, मेघसँ वर्षा होयत कि नहि, गीत लोकक भीतर
जीबत कि नहि—‘समय कहत’ तत्काल निर्णायक वक्तव्य सँ बचैत अछि। खाली
हाथक सौगातक अर्थ सेहो देरि सँ बुझल जा सकैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

मुदा ‘के सही, के गलत’क न्याय केवल समयक हवाले करब प्रमाणक वर्तमान
दायित्व टारबाक जोखिम रखैत अछि। इतिहास आ भविष्यक परीक्षण आवश्यक
अछि, मुदा उपलब्ध साक्ष्यपर नैतिक निर्णयक अवकाश एखनहुँ रहैत अछि।

गजल १३८क ‘तखन देखब’ सँ ई सम्बन्धित, मुदा एतय निर्णयक मानदण्ड कम
ठोस अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : के सही छल, के गलत—ई बात समय कहत /
कतेक लम्बा छल ओ रात, समय कहत — गीत एखन बस शब्द बुझावैत अछि
ककरो / बाँचत की ओ बात, समय कहत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५४। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण
स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५५ : संग बाँचू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२१
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र
कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ंग · रदीफ: संग बाँचू।

सहजीवनक संयत प्रस्ताव

दुखक दिनमे मीतक संग आ सुखक दिनमे लोकक उमंग संग जीबाक आग्रह व्यक्तिगत स्वार्थसँ सामूहिक सहभाव दिस उन्मुख अछि। 'अपन जीतक नाद अकेले नीक नहि' सफलताक साझेदारीक सबल सूत्र अछि। अलग मत सम्बन्ध तोड़बाक पर्याप्त कारण नहि; पाइ कमाइ जीवनक एक भाग मात्र।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

'संग बाँचू' रदीफ सामूहिक कर्तृत्व अनैत अछि। रंग/उमंग/तरंग/ढंगक काफिया सहज अछि; तथापि वैयक्तिक पात्रक अभाव काव्यक नैतिक घोषणापत्रक लग अनैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : दुखक दिनमे मीतक संग बाँचू / सुख अबै तँ सभ रंग संग बाँचू — गीत जँ लोकक बीच अपन घर पाबए / कंठक ओही रंग संग बाँचू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५५। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५६ : नै बिसरू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म • रदीफ: नै बिसरू।

जे हाथ नाम आ काम सिखेलक

मूल स्मृतिमे केवल माय-गाम नहि, काज सिखौनिहार हाथ सेहो अछि। एहन शेर श्रमक शिक्षणपरम्पराक सम्मान दैत अछि। छोट पुरान घरकें नव पैघ घरक कारण व्यर्थ नहि मानब सामाजिक गतिशीलताक बीच शुरुआती आश्रयक मूल्य जोगबैत अछि। 'बीच बाटक विराम'क आग्रह उपार्जनक दौड़मे शरीरक सीमाकें याद करबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ 'नै बिसरू' ८७/९९/१०९/१२६क स्मृति-प्रतिज्ञा परिवारसँ सम्बद्ध अछि। एहि गजलमे प्रशिक्षण देनिहार हाथक विशेष बिम्ब नव अर्थ पैदा करैत अछि। मान-धाम-विरामक पदक्रम किछु परम्परागत, मुदा विषय ठोस।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : जे हाथ देलक नाम, नै बिसरू / जे हाथ सिखेलक काम, नै बिसरू — गीत जाँ लोकक कंठसँ जीवन पाबैए / ओ लोकक नाम, नै बिसरू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५६। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५७ : एना रहू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीत · रदीफ: एना रहू।

मनक अन्तरावस्था आ गीत

रोषमे प्रीतक उपस्थिति, अलग चाल चुनल मित्रक स्मृति आ नब घरमे पुरान माटिक चिन्ह बचब—‘एना रहू’ अनेक विरोधी अवस्थाकेँ एकहि व्यक्तित्वमे टिकाबैत अछि। हारला पाछाँ उठबाक हिम्मत मूल्यक आधार अछि; नामक बढ़त-घटत प्रतिष्ठा अन्तिम मानक नहि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गीत-प्रीत-मीत-अतीत-जीतक पदक्रम ८५/९८/१००/११७/१३५सँ पुनरावृत्त अछि। रदीफक सल्लाहबोध नया कथा-चित्र देबाक बदला ओही नैतिकताकेँ फेर कहैत अछि; काव्यगत सीमाक स्पष्ट उल्लेख जरूरी।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मोनमे कने गीत, एना रहू / रोषमे सेहो प्रीत, एना रहू — नाम घटए-बढ़ए, तकरा पर जीवन नहि / लोकक ओठक गीत, एना रहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५७। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५८ : फेर बजत

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ेर · रदीफ: फेर बजत।

मौनक ध्वनिक भविष्य

ऊपरसँ शान्त पानिक नीचाँ हिलोर, थाकल लोकक भीतर जोर, ढीला सम्बन्धक पुरान डोर—ई सभ दबल ऊर्जा फेर सुनाइ देबाक आशा बनबैत अछि। ‘फेर बजत’ रदीफ अतीतक पुनरावृत्ति मात्र नहि, सामूहिक स्वरक भावी सक्रियता दर्शबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

गजल ९३ आ १२९क शोर-भोर-हिलोर-डोर-जोर ध्वनिमालाक स्पष्ट नव कालरूप अछि। ‘भोर फेर बजत’ रूपक नवीन सुनाइत अछि, मुदा समयकें ध्वनि मानबाक औचित्य प्रसङ्गमे सीमित अछि। रचनाक भावी आश्वासन प्रत्यक्ष सामाजिक तथ्य नहि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : मौन बहुत अछि, मुदा शोर फेर बजत / राति ढलत, दूर कतऽ भोर फेर बजत — गीत जाँ एक बेर लोकक मोन छूबि गेल / कंठ-कंठमे ओ शोर फेर बजत

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५८। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १५९ : अपन रहू

मूल छन्द-घोषणा : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न · रदीफः अपन रहू।

मान, भाषा आ निर्णय

‘भाषा केवल बोल नहि, स्मृतिक घर अछि’ गजलक पहिचान-चिन्तनक केन्द्रीय शेर अछि। पद, समय आ संग बदलिए मनुक्खक भीतरक सम्मान बचबाक आग्रह स्वाभिमानकें बाहरी पदसँ अलग करैत अछि। ‘डर सबकें लागैए, डरब दोष नहि’ नैतिक साहसकें निर्भयताक असम्भव दावासँ बचबैत अछि; निर्णयमे जान राखब अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

१५९क ‘नै झुकब’क प्रतिज्ञा एतय कम आक्रामक, बेसी स्वप्रमाणित अस्तित्वक आग्रह बनैत अछि। रदीफ ‘अपन रहू’ स्वायत्तता दैत अछि, मुदा मान-ईमान-पहिचान-सम्मानक पुनरावृत्ति शिल्पगत विविधता घटबैत अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : दाम बढए, मुदा मान अपन रहू / कठिन दिनमे ईमान अपन रहू — गीत जँ लोकक पीरक संग ठाढ़ रहए / ओकर कंठक मान अपन रहू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १५९। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल १६० : धीरे चलू

मूल छन्द-घोषणा : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ेर · रदीफ: धीरे चलू।

धीमे समयक जतन

‘सभ काज आइए पूरा हो, जरूरी नहि’ श्रमक वेळापर दबाव घटएबाक विचार अछि। उमेर, दूर घर बसल नेना, भीतरी स्मृति आ गीतक अन्तिम सुर सब तात्कालिकताक बदला धैर्य माँगैत अछि। ‘धीरे चलू’ उमेरक थकानकै हार नहि, जीवनक लयक बदलब बुझबैत अछि।

पाठान्तर, काफिया-रदीफ आ मूल्याङ्कन

रदीफ संयत अछि, मुदा फेर-बेर-देर-घेर-अन्हेरक काफियाक आवर्तन कतेको ठाम शब्दक स्वाभाविक प्रयोग कठिन करैत अछि। ‘राति बहुत भेल तऽ भोर दूर नहि’ पुनःप्रचलित आशा-बिम्ब; नव तत्त्व दीर्घ प्रतीक्षाक स्वीकृति अछि।

मूल पाठक आरम्भ आ अन्त : बाट लम्बा अछि फेर, धीरे चलू / उमेर कहैए एक बेर, धीरे चलू — गीतक अन्तिम सुर तुरन्त नहि थमैत / सुनि लिअ ओकर फेर, धीरे चलू

मूल पाठ : पाँच शेर, दस मिसरा; क्रमाङ्क १६०। शीर्षक आ घोषित छन्द-विवरण स्रोत-पाण्डुलिपिसँ मिलाओल गेल।

गजल 141-160 : अन्तरपाठीय तुलना

गजल १०१-११०मे मुख्यतः पूर्व गजलसभक रूपगत पुनर्संयोजन देखाइत अछि। १०५/८१, १०६/८०, १०७/८८, १०८/८६, १०९/९९ आ ११०/१००मे शेरक क्रम अथवा अर्थक्षेत्र निकट अछि; नव मात्राविधानक घोषणाक संग जोड़ल पूरक पद वास्तविक छन्दीय शुद्धताक स्वतः प्रमाण नहि। ११८-१२०मे ‘जिया मौन’, ‘नयन

नीर', 'नगर बीच', 'नदी नीर' सन युग्म नव लय बनावयक प्रयत्न अछि, मुदा भाषिक स्वाभाविकताक पृथक कसौटी आवश्यक अछि।

क्रमाङ्क	प्रमाणित मूल शीर्षक	काव्य-संरचना
141	एखनो अछि	५ शेर / १० मिसरा
142	फेर गाबू	५ शेर / १० मिसरा
143	घरमे बाजू	५ शेर / १० मिसरा
144	संग रहू	५ शेर / १० मिसरा
145	फेर उठू	५ शेर / १० मिसरा
146	कने लिखू	५ शेर / १० मिसरा
147	तइयो चलू	५ शेर / १० मिसरा
148	रहय दिअ	५ शेर / १० मिसरा
149	ककरा कहब	५ शेर / १० मिसरा
150	फेर आबि गेल	५ शेर / १० मिसरा
151	नै झुकब	५ शेर / १० मिसरा
152	मोनमे रहत	५ शेर / १० मिसरा
153	कने छोड़ू	५ शेर / १० मिसरा
154	समय कहत	५ शेर / १० मिसरा
155	संग बाँचू	५ शेर / १० मिसरा
156	नै बिसरू	५ शेर / १० मिसरा
157	एना रहू	५ शेर / १० मिसरा
158	फेर बजत	५ शेर / १० मिसरा
159	अपन रहू	५ शेर / १० मिसरा
160	धीरे चलू	५ शेर / १० मिसरा

गजल १६१ : चिट्ठी खोलू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः चिट्ठी खोलू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बहुत दिनक दबल बात, चिट्ठी खोलू / स्याहीमे अटकल रात, चिट्ठी खोलू / जे लोक आब दूर अछि, नामो कम सुनाइत / फेर कराउ मुलाकात, चिट्ठी खोलू / सूखल फूल पन्नाक बीच एखनहु महकैए / समयक ई सौगात, चिट्ठी खोलू / कागज पीयर भेल, अक्षर कने धूमिल / मोनमे उठत बरसात, चिट्ठी खोलू / जाहि बातक उत्तर कहियो लिखल नहि गेल / ओ अधूरी बात, चिट्ठी खोलू

स्याहीमे अटकल राति आ पन्नाक बीचक सूखल फूल लिखित स्मृतिक भौतिकता रचैत अछि । अनुत्तरित चिट्ठीकें ई रचना अनुपस्थित लोकक संग संवादक सम्भावना बनबैत अछि; मुदा चिट्ठी खोललासँ उत्तर भेटबे करत, से निश्चित नहि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे लोक आब दूर अछि, नामो कम सुनाइत / फेर कराउ मुलाकात, चिट्ठी खोलू” आ फेर “कागज पीयर भेल, अक्षर कने धूमिल / मोनमे उठत बरसात, चिट्ठी खोलू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बहुत दिनक दबल बात, चिट्ठी खोलू” आ अन्त “ओ अधूरी बात, चिट्ठी खोलू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १६२ : धार कहैए

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः नीर · रदीफः
धार कहैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : चुप्पीमे सेहो नीर, धार कहैए / कटि रहल अछि तीर, धार
कहैए / नक्शा पर सीधी रेखा खींचब सरल अछि / धरतीक टूटल लकीर, धार
कहैए / जे घर काल्हि धरि छल, आइ पानि अछि / लोकक भीतरक पीर, धार
कहैए / नाव डोलैए तऽ हाथ नहि छोड़ू / राखू कने धीर, धार कहैए / गीत जँ
नदी जकाँ लोकमे बहि जाए / कंठक अपन नीर, धार कहैए

नक्शाक सोझ रेखा आ कटैत धरतीक लकीरक असमानता राजकीय भूगोल आ
जिबैत लोकक भूगोलक अन्तर देखबैत अछि । कटानक पीरकें नावमे हाथ नहि
छोड़बाक आग्रह सँ जोड़ि गजल विपत्ति आ सहयोगक एके दृश्य बनबैत अछि ।
रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नक्शा पर सीधी रेखा खींचब सरल अछि /
धरतीक टूटल लकीर, धार कहैए” आ फेर “नाव डोलैए तऽ हाथ नहि छोड़ू /
राखू कने धीर, धार कहैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक
विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस
मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल
अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “चुप्पीमे सेहो नीर, धार कहैए” आ अन्त “कंठक अपन नीर,
धार कहैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल १६३ : मान रखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः मान रखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कठिन दिनमे जान, मान रखू / दाम कम हो ईमान, मान
रखू / भाषा अपन घरक साँस, लाजक बात नहि / लोकक बीच पहिचान, मान रखू
/ पद पैघ भेलासँ मनुख पैघ नहि होइ / अपन सहज सम्मान, मान रखू / साँच
कहबाक दाम बहुत पैघ हो सकैए / तइयो अपन बयान, मान रखू / गीत जाँ
लोकक दुखमे संग ठाढ़ रहै / ओकर कंठक मान, मान रखू

पद आ मनुक्खक मूल्यक भेद एहि रचनाक नैतिक केन्द्र अछि । मातृभाषाकें घरक
साँस कहनाइ पहिचानकें वस्तु नहि, दैनिक व्यवहार मानैत अछि; मुदा 'मान'क
पुनरावर्तन कतेको शेरकें घोषणात्मक बना दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भाषा अपन घरक साँस, लाजक बात नहि /
लोकक बीच पहिचान, मान रखू” आ फेर “साँच कहबाक दाम बहुत पैघ हो सकैए
/ तइयो अपन बयान, मान रखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र
दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल
गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कठिन दिनमे जान, मान रखू” आ अन्त “ओकर कंठक
मान, मान रखू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल १६४ :मौन सुनू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोर · रदीफः मौन सुनू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : शब्द थाकल अछि, शोर—मौन सुनू / राति भीतरक भोर—मौन सुनू / धार ऊपरसँ शान्त, मुदा नीचाँ हलचल / पानिक सूक्ष्म हिलोर—मौन सुनू / लोक हँसैत अछि, तइयो आँखि कने काँपै / भीतरक दबायल जोर—मौन सुनू / सम्बन्ध टूटैत काल आवाज कम होइ / हाथसँ छुटैत डोर—मौन सुनू / गीत समाप्त भेल, ताली चुप भऽ गेल / अन्तिम बचल भोर—मौन सुनू

मौनकेँ ध्वनिक विरोध नहि, ध्वनिक अदेखल स्रोत मानल गेल अछि । बाहरी हँसीक नीचाँ काँपैत आँखि सभसँ जीवन्त मानव-दृश्य अछि; शोर, जोर, डोर आ भोरक सघन काफिया एकर मनोवैज्ञानिक भेदकेँ कखनो सरल सेहो बना दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धार ऊपरसँ शान्त, मुदा नीचाँ हलचल / पानिक सूक्ष्म हिलोर—मौन सुनू” आ फेर “सम्बन्ध टूटैत काल आवाज कम होइ / हाथसँ छुटैत डोर—मौन सुनू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १२९ “एखनो सुनू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “मौन भीतरक शोर एखनो सुनू” आ एतुक आरम्भ “शब्द थाकल अछि, शोर—मौन सुनू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १६५ : पोथी बाँचू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः पोथी बाँचू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : शब्दमे अपन विचार, पोथी बाँचू / पन्नामे पूरा संसार,
पोथी बाँचू / जे लोक इतिहासक हाशियापर छुटि गेल / ओकर खोलू दुआर, पोथी
बाँचू / नामक सूची मात्र जीवन नहि कहैए / लोकक देखू व्यवहार, पोथी बाँचू /
प्रश्न उठए तँ पोथीसँ प्रश्न करैत रहू / बनू अपन पुकार, पोथी बाँचू / पढ़ल शब्द
जँ जीवनमे काज नहि आए / फेर करू विचार, पोथी बाँचू

पोथीकेँ निष्क्रिय श्रद्धावस्तु बनय नहि देबाक आग्रह एहि गजलक विशेषता
अछि । ‘हाशियापर छुटल’ लोकक नाम आ व्यवहार दुनू पढ़बाक प्रश्न इतिहासक
लिखित सूची आ अनुभवक अन्तर पर प्रहार करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे लोक इतिहासक हाशियापर छुटि गेल /
ओकर खोलू दुआर, पोथी बाँचू” आ फेर “प्रश्न उठए तँ पोथीसँ प्रश्न करैत रहू /
बनू अपन पुकार, पोथी बाँचू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक
विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस
मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल
अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “शब्दमे अपन विचार, पोथी बाँचू” आ अन्त “फेर करू
विचार, पोथी बाँचू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल १६६ : घुरि देखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः घुरि देखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जेठक धूरिमे छुटल दुआर, घुरि देखू / सावन पाबि उठल बहार, घुरि देखू / शहर अहाँकें नव नाम बहुत देलक / मोनमे बचल छोट संसार, घुरि देखू / जे मीत बिना कारण हाथ बढ़ा देलक / ओ अनचिन्हार व्यवहार, घुरि देखू / उमेर आगाँ बढ़ल, से स्वाभाविक अछि / पाछाँ बचल विचार, घुरि देखू / गीत बहुत लिखल, किछु लोक गाबि रहल / कंठमे बाँचल झंकार, घुरि देखू

जेठक धूरि आ सावनक बहारक ऋतु-परिवर्तनकें प्रवासक स्मृति सँ जोड़ल गेल अछि । शहरक नव नामक तुलना गामक छोट संसारसँ होइत अछि; ‘घुरि देखू’ स्मृति-पूजा नहि, पुरान सम्बन्धक नैतिक पुनःपरीक्षण बनि सकैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “शहर अहाँकें नव नाम बहुत देलक / मोनमे बचल छोट संसार, घुरि देखू” आ फेर “उमेर आगाँ बढ़ल, से स्वाभाविक अछि / पाछाँ बचल विचार, घुरि देखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ८२ “घुरि आउ”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “साँझ फेर खोललक दुआर, घुरि आउ” आ एतुक आरम्भ “जेठक धूरिमे छुटल दुआर, घुरि देखू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १६७ : धीरे कहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः धीरे कहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अधरमे रहि गेल बात, धीरे कहू / आँखिमे जागल रात,
धीरे कहू / मेघ बिना जँ माटि अचानक महकि उठए / मोनक ओ बरसात, धीरे
कहू / बहुत बरख बाद कियो बाटमे भेटि गेल / ओ अकस्मात मुलाकात, धीरे कहू /
खाली हाथ जे नेह दऽ गेल चलैत-चलैत / ओ अनमोल सौगात, धीरे कहू / गीत
जँ भीतर बहुत दिनसँ अटकल अछि / ओकर असली बात, धीरे कहू

अधरमे अटकल बात आ बिना मेघक महकल माटि अनकहल भावनाकेँ इन्द्रिय-
बिम्ब दैत अछि । अकस्मात भेटक स्थितिमे ‘धीरे’क आग्रह वाचिक संयम रखैत
अछि; तथापि गजलमे मिलनक कोनो विशिष्ट संवाद नहि खुलैत ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “मेघ बिना जँ माटि अचानक महकि उठए /
मोनक ओ बरसात, धीरे कहू” आ फेर “खाली हाथ जे नेह दऽ गेल चलैत-चलैत /
ओ अनमोल सौगात, धीरे कहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अधरमे रहि गेल बात, धीरे कहू” आ अन्त “ओकर असली
बात, धीरे कहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल १६८ : जगैत रहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः जगैत रहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँखिमे कने आस, जगैत रहू / माटिमे बचल प्यास,
जगैत रहू / समय कतेको बेर भरोसा तोडि सकैए / लोकमे फेर विश्वास, जगैत
रहू / दूर शहरमे बर्ख बहुत बीति सकैए / अँचरक पुरनका सुवास, जगैत रहू /
उमेर धीरे-धीरे देह पर लिखैत रहए / गीतक भीतर साँस, जगैत रहू / राति गाढ
हो, दीप कने मद्धिम पड़ए / क्षितिजक भोरक आस, जगैत रहू

जगतक अविश्वासक बीच पुनः विश्वासक सम्भावना जोगबैत रचना अछि ।
अँचरक सुवास, देहपर उमेरक लिखाइ आ मद्धिम दीप अतीतक रूपक बनैत अछि;
अन्तक भोर आश्वासन अछि, प्रमाणित ऐतिहासिक परिणति नहि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “समय कतेको बेर भरोसा तोडि सकैए /
लोकमे फेर विश्वास, जगैत रहू” आ फेर “उमेर धीरे-धीरे देह पर लिखैत रहए /
गीतक भीतर साँस, जगैत रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “आँखिमे कने आस, जगैत रहू” आ अन्त “क्षितिजक भोरक
आस, जगैत रहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल १६९ : याद रहत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः याद रहत ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूरिमे मेटल नाम याद रहत / हथेलीक चुप काम याद रहत / नक्शामे छोट अक्षरमे जे ठाम लिखल / माटिसँ जुडल गाम याद रहत / पैघ भवन सभ एक दिन नबका भऽ जाएत / पहिल बसल धाम याद रहत / जीवनक दौड़मे साँस जखन थाकि जाए / बीच बाटक विराम याद रहत / पोथी बन्द हो, मुदा लोक जँ गाबैत रहए / कंठमे ओकर नाम याद रहत

नक्शाक छोट अक्षर आ लोकक पैघ गामक संगति माप-भाषाक सीमाकेँ देखबैत अछि । हथेलीक चुप काजक स्मरण काव्यक स्मृति-सूचीमे श्रमक अधिकार स्थापित करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नक्शामे छोट अक्षरमे जे ठाम लिखल / माटिसँ जुडल गाम याद रहत” आ फेर “जीवनक दौड़मे साँस जखन थाकि जाए / बीच बाटक विराम याद रहत”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल ३१क शीर्षक सेहो “याद रहत” अछि । दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचवाक विषय अछि; केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७० : मोन खोलू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोल · रदीफः मोन खोलू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रूसल छी तँ अपन बोल, मोन खोलू / नेहक नहि होइ मोल, मोन खोलू / बन्द खिड़कीसँ हवा भीतर कोना आएत / कने देबाक खोल, मोन खोलू / एक वाक्य कखनो सम्बन्ध हिला दैए / तइयो नहि बेसी डोल, मोन खोलू / पाइ बहुत किछु किनि सकैए, सभटा नहि / जे अछि सचमुच अनमोल, मोन खोलू / गीत जँ केवल ओठ धरि रहि गेल तऽ की / भीतरक अपन बोल, मोन खोलू

बन्द खिड़की आ भीतर अबैत हवा संवादक सुबोध रंगमंचीय बिम्ब अछि । प्रेमक अनमोल मूल्य बतबैत रचना मोल-तौलकँ अस्वीकार करैत अछि, मुदा ‘खोल’ शब्दक प्रसंगगत अर्थ कतहु अस्पष्ट रहैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बन्द खिड़कीसँ हवा भीतर कोना आएत / कने देबाक खोल, मोन खोलू” आ फेर “पाइ बहुत किछु किनि सकैए, सभटा नहि / जे अछि सचमुच अनमोल, मोन खोलू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रूसल छी तँ अपन बोल, मोन खोलू” आ अन्त “भीतरक अपन बोल, मोन खोलू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७१ : ठाढ़ रहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः ठाढ़ रहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : टूटि नहि जाए मान, ठाढ़ रहू / बिकि नहि जाए ईमान,
ठाढ़ रहू / भाषा अपन घरक साँस, कोनो लाज नहि / लेने अपन पहिचान, ठाढ़
रहू / पद पैघ हो, मुदा मनुख तकरासँ पैघ / राखि अपन सम्मान, ठाढ़ रहू / साँच
कहबाक दाम कठिन भऽ सकैए / तइयो लेने जान, ठाढ़ रहू / गीत जाँ लोकक
पीरक संग बाजि उठए / ओकर कंठक मान, ठाढ़ रहू

‘मान रखू’क भाव पुनः ‘ठाढ़ रहू’क प्रतिरोधमूलक स्वरमे बदलल अछि । भाषा,
पद, सत्य आ लोकक पीरक क्रम प्रतिज्ञात्मक अछि; पूर्वक शेरसँ निकटता एकरा
स्वतंत्र भाव-जगतक अपेक्षा नव कथन-विन्यास बनबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भाषा अपन घरक साँस, कोनो लाज नहि /
लेने अपन पहिचान, ठाढ़ रहू” आ फेर “साँच कहबाक दाम कठिन भऽ सकैए /
तइयो लेने जान, ठाढ़ रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक
विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस
मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल
अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “टूटि नहि जाए मान, ठाढ़ रहू” आ अन्त “ओकर कंठक
मान, ठाढ़ रहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल १७२ : एतबे बहुत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत • रदीफः
एतबे बहुत ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : लोकक ओठपर गीत, एतबे बहुत / मोनमे बचल प्रीत,
एतबे बहुत / भीड़मे सभकेँ अपन कहब संभव नहि / संकटमे एक मीत, एतबे
बहुत / नबका घरमे सभ पुरान चेन्ह नहि बचत / माटिमे किछु अतीत, एतबे
बहुत / हारल दिनक बाद फेर उठि सकलहुँ / आँखिमे ओ जीत, एतबे बहुत / नाम
रह्य वा नहि, समय अपन काम करत / कंठमे एक गीत, एतबे बहुत

‘एतबे बहुत’ अतिशय उपलब्धिक बदला अल्प, टिकाउ सम्बन्धक मूल्य स्वीकारैत
अछि । भीड़मे एक भरोसेमन्द मीत आ हारल दिनक बाद चमकैत आँखि छोट
दृश्य अछि, मुदा मीत-प्रीत-जीत-गीतक आवर्तन अपन शिल्पगत सीमा राखैत
अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भीड़मे सभकेँ अपन कहब संभव नहि /
संकटमे एक मीत, एतबे बहुत” आ फेर “हारल दिनक बाद फेर उठि सकलहुँ /
आँखिमे ओ जीत, एतबे बहुत”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक
गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस
मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल
अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १३५ “एतबे रह्य”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि ।
पहिनुक आरम्भ “कंठमे बाँचल गीत एतबे रह्य” आ एतुक आरम्भ “लोकक
ओठपर गीत, एतबे बहुत”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत
अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७३ : घुरि आबू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १४-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ेर · रदीफः घुरि आबू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बहुत भेल ई देर, घुरि आबू / याद बोलैए फेर, घुरि आबू / दूर देशक बाट अहाँकें थका देत एक दिन / बस एकटा बेर, घुरि आबू / आँगनक दीवार ऊँच भऽ गेल तऽ की भेल / पीपरक पुरनका घेर, घुरि आबू / राति जतेक गाढ़ हो, भोर ओतबे निकट / काटि कऽ अन्हेर, घुरि आबू / गीत अधूरा अछि, सुर एखन प्रतीक्षा करैए / सुनि लिअ ओ फेर, घुरि आबू

दूर देशक थकानक प्रतिपक्षमे पीपरक घेर आ अधूर गीतक प्रतीक्षा अछि । ‘घुरि आबू’ मे आदेशसँ बेसी कातर आमन्त्रण अछि; मुदा राति-भोरक सहज विरोध प्रचलित भावचित्रकें फेर दोहरबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दूर देशक बाट अहाँकें थका देत एक दिन / बस एकटा बेर, घुरि आबू” आ फेर “राति जतेक गाढ़ हो, भोर ओतबे निकट / काटि कऽ अन्हेर, घुरि आबू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ८२ “घुरि आउ”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “साँझ फेर खोललक दुआर, घुरि आउ” आ एतुक आरम्भ “बहुत भेल ई देर, घुरि आबू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १४-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७४ : कने बैसू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कने बैसू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : उमेर देलक कने भार, कने बैसू / खुलल अछि एखन
दुआर, कने बैसू / सभ काज एके दिन पूरा होइ जरूरी नहि / राखू अपन विचार,
कने बैसू / जेठक धूप बहुत तेज भऽ सकैए / पीपरक छाँह बहार, कने बैसू / नेना
अपन बाट पर दूर निकलि गेल / यादक छोट संसार, कने बैसू / गीतक अन्तिम
सुर तुरन्ते नहि थमैत / सुनि लिअ ओ झंकार, कने बैसू

पीपरक छाँहक नीचे विश्राम व्यक्तिगत थकानक सामाजिक स्वीकृति बनैत अछि ।
घरसँ दूर निकलल नेनासभक संकेत विश्रामकें केवल शारीरिक नहि, पारिवारिक
रिक्तताक अनुभव बनबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ काज एके दिन पूरा होइ जरूरी नहि /
राखू अपन विचार, कने बैसू” आ फेर “नेना अपन बाट पर दूर निकलि गेल /
यादक छोट संसार, कने बैसू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक
विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस
मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल
अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “उमेर देलक कने भार, कने बैसू” आ अन्त “सुनि लिअ ओ
झंकार, कने बैसू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल १७५ : नामसँ आगाँ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-तलय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः सँ आगाँ ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मनुखक मोल अछि नामसँ आगाँ / हाथक मेहनत अछि
कामसँ आगाँ / नक्शा केवल रेखा बतबैत अछि, जीवन नहि / माटिक गन्धि
अछि गामसँ आगाँ / मन्दिर-मस्जिद, भवन सभ अपन ठाम सही / मनक नेह
अछि धामसँ आगाँ / दौड़ बहुत अछि, मुदा साँसक अधिकारो अछि / एक विराम
अछि कामसँ आगाँ / गीत जँ लोकक कंठमे घर बना लेलक / ओकर जीवन अछि
नामसँ आगाँ

‘नामसँ आगाँ’क सूत्र व्यक्ति आ वस्तुक अधिकृत पहिचानसँ बाहरक मूल्य खोजैत
अछि । नक्शा-माटि, भवन-नेह आ काम-विरामक युग्म श्रम आ अनुभवक मापक
बदलैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नक्शा केवल रेखा बतबैत अछि, जीवन नहि
/ माटिक गन्धि अछि गामसँ आगाँ” आ फेर “दौड़ बहुत अछि, मुदा साँसक
अधिकारो अछि / एक विराम अछि कामसँ आगाँ”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि
दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मनुखक मोल अछि नामसँ आगाँ” आ अन्त “ओकर
जीवन अछि नामसँ आगाँ”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७६ : एखनो बाँचल अछि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः एखनो बाँचल अछि ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पुरनका अँचरक सुवास एखनो बाँचल अछि / सूखल माटिक प्यास एखनो बाँचल अछि / घर बदलल, आँगन बदलल, लोक बदलि गेल / घुरि एबाक आस एखनो बाँचल अछि / कतेक बेर समय भरोसा तोड़ि गेल / लोकक विश्वास एखनो बाँचल अछि / उमेर देहपर अपन अक्षर लिखि रहल अछि / गीतक भीतर साँस एखनो बाँचल अछि / फूल सूखल, पन्ना पीयर, साल बीति गेल / यादक सुवास एखनो बाँचल अछि

सूखल पात आ पीयर कागजक बादो बचल सुवासक वस्तुगत बिम्ब समयक विनाश आ स्मृतिक टिकाउपनक बीच ठाढ़ अछि । ‘बाँचल’क आग्रह मेघ-भोरक सामान्य आशासँ हटि देहगत उमेरक प्रभाव ग्रहण करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “घर बदलल, आँगन बदलल, लोक बदलि गेल / घुरि एबाक आस एखनो बाँचल अछि” आ फेर “उमेर देहपर अपन अक्षर लिखि रहल अछि / गीतक भीतर साँस एखनो बाँचल अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।

एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १४१ “एखनो अछि”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “घुरि एबाक कने आस एखनो अछि” आ एतुक आरम्भ “पुरनका अँचरक सुवास एखनो बाँचल अछि”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७७ :मौन राखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ेर · रदीफः मौन राखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सभ बातपर नहि शोर, मौन राखू / राति देखैत अछि
भोर, मौन राखू / धार ऊपरसँ शान्त अछि, नीचाँ हलचल / सुनि पानिक हिलोर,
मौन राखू / उत्तर देब जरूरी नहि हर चोटक तुरन्त / भीतर बचाउ जोर, मौन राखू
/ सम्बन्ध ढीला भेल तऽ तोड़ब समाधान नहि / हाथमे कने डोर, मौन राखू /
गीत जँ भीतर पकैत अछि, जल्दी नहि करू / आबिते देब भोर, मौन राखू

‘मौन सुनू’क सक्रिय श्रवण एहि रचनामे ‘मौन राखू’क आत्मसंयम बनैत अछि । ई
परिवर्तन नैतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछिः सुनबाक आग्रह दूसराक पीर दिस,
राखबाक आग्रह अपन प्रतिक्रिया दिस जाइत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धार ऊपरसँ शान्त अछि, नीचाँ हलचल /
सुनि पानिक हिलोर, मौन राखू” आ फेर “सम्बन्ध ढीला भेल तऽ तोड़ब समाधान
नहि / हाथमे कने डोर, मौन राखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सभ बातपर नहि शोर, मौन राखू” आ अन्त “आबिते देब
भोर, मौन राखू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल १७८ : फेर पढ़ू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः फेर पढ़ू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पुरनका पन्नाक विचार, फेर पढ़ू / ओहि पन्नाक संसार, फेर पढ़ू / जे बात पहिने सरल बुझायल छल / उमेरक बाद व्यवहार, फेर पढ़ू / इतिहास केवल विजेताक कथा नहि होइ / हाशियाक पुकार, फेर पढ़ू / एके शब्द समय बदलिते अर्थ बदलैए / खोलि नब दुआर, फेर पढ़ू / अपन लिखल पाँति सेहो अन्तिम सत्य नहि / राखि कने विचार, फेर पढ़ू

एकहि शब्दक अर्थ उमेरक संग बदलैए—एहि कथनसँ पुस्तक स्थिर अर्थक भण्डार नहि रहैत । विजेताक इतिहासक विरुद्ध हाशियाक पुकार जोड़नाइ पाठकक सेहो संशोधनशील प्रमाणक सहभागी बनबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे बात पहिने सरल बुझायल छल / उमेरक बाद व्यवहार, फेर पढ़ू” आ फेर “एके शब्द समय बदलिते अर्थ बदलैए / खोलि नब दुआर, फेर पढ़ू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पुरनका पन्नाक विचार, फेर पढ़ू” आ अन्त “राखि कने विचार, फेर पढ़ू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १७९ : रहय

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः ११-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः रहय ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रोष रहय, मुदा प्रीत रहय / शब्द थाकय, मुदा गीत रहय
/ सभ मीत एके बात मानत, ई जरूरी नहि / मत अलग हो, मीत रहय / नबका
घर पुरनका चेन्ह मेटा सकैए / माटिमे अतीत रहय / हारि कऽ फेर उठबाक
साहस जाँ बाँचल / आँखिमे जीत रहय / नाम घटत-बढत, समय अपन काम करत
/ लोकक ओठपर गीत रहय

‘रहय’ रदीफक आशंसात्मक रूप वचन अथवा आदेशक बदला खुलल सम्भावना
राखैत अछि । असहमतिकेँ मीतताक अन्त नहि मानब बौद्धिक बहुलताक सुन्दर
सूत्र, मुदा प्रीत-गीत-मीत-जीतक अनुक्रम परिचित ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत एके बात मानत, ई जरूरी नहि /
मत अलग हो, मीत रहय” आ फेर “हारि कऽ फेर उठबाक साहस जाँ बाँचल /
आँखिमे जीत रहय”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक
स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र
दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल
गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रोष रहय, मुदा प्रीत रहय” आ अन्त “लोकक ओठपर गीत
रहय”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला
मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ
आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः ११-
२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक
लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १८० : आजसँ फेर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः आजसँ फेर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बन्द बुझायल राह खोलू आजसँ फेर / मोनमे बाँचल चाह बोलू आजसँ फेर / काल्हिक भूलक बोझ सदा काँध पर किएक / राखू सोझ निगाह आजसँ फेर / आन्ही बीतलापर गाछ अपन पात गनैत नहि / खोजू नब पनाह आजसँ फेर / जे बात भीतर घाव बनि चुप्ये रहि गेल / सुनू अपन आह आजसँ फेर / गीत अधूरा छल तँ अन्त नहि भेल जीवन / चुनू नबका राह आजसँ फेर

आन्हीक बाद गाछ द्वारा पात नहि गनबाक बिम्ब विफलताक हिसाब छोड़ि नव क्रियाक पक्षमे अछि । ‘आजसँ फेर’ भविष्यकें दूर राखबाक बदला तत्काल आरम्भ चाहैत अछि; आशावादमे घावक सामाजिक कारण अनखुलल रहैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “काल्हिक भूलक बोझ सदा काँध पर किएक / राखू सोझ निगाह आजसँ फेर” आ फेर “जे बात भीतर घाव बनि चुप्ये रहि गेल / सुनू अपन आह आजसँ फेर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बन्द बुझायल राह खोलू आजसँ फेर” आ अन्त “चुनू नबका राह आजसँ फेर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १६१-१८० : अन्तरपाठीय विवेचन

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूज़ी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल १८१ : एखनो चलू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ह · रदीफः एखनो चलू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : थाकल पएरमे बचल राह, एखनो चलू / मोनमे बाँचल कने चाह, एखनो चलू / उमेर देहपर अपन अक्षर लिखैत अछि / आँखिमे राखि निगाह, एखनो चलू / आन्ही जँ पुरनका छाँह हिला दए / खोजि लिअ कने पनाह, एखनो चलू / जे बात समय पर कहि नहि सकलहुँ / छातीमे अटकल आह, एखनो चलू / गीतक अन्तिम सुर एखन थमल नहि / लेने अपन राह, एखनो चलू उमेरक अक्षर देहपर लिखलासँ जीवनक पाठ देहसापेक्ष बनैत अछि। थाकल पएरक संग चलबाक आग्रह जीवन-संघर्षक सम्मान अछि, मुदा ‘चलू’क सामाजिक श्रम-भार आ स्वैच्छिक गति बीच प्रश्न बचैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “उमेर देहपर अपन अक्षर लिखैत अछि / आँखिमे राखि निगाह, एखनो चलू” आ फेर “जे बात समय पर कहि नहि सकलहुँ / छातीमे अटकल आह, एखनो चलू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १४७ “तइयो चलू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “धूरि भरल अछि राह, तइयो चलू” आ एतुक आरम्भ “थाकल पएरमे बचल राह, एखनो चलू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर

बुझाइत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १८२ : नाम लिखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म · रदीफः नाम लिखू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जे हाथ दिनभरि करै काम, नाम लिखू / जे श्रम पाबै नहि पूरा दाम, नाम लिखू / इतिहास केवल राजदरबारक कथा नहि / खेत-खरिहानक गाम, नाम लिखू / जे लोक बिना पदक समाज ठाढ़ रखैए / ओकर छोटा मुकाम, नाम लिखू / दौड़ैत जीवनमे थाकल देह जखन रुकै / ओ कने विराम, नाम लिखू / गीत जँ लोकक कंठसँ जीवन पाबैए / लोकक संग अपन काम, नाम लिखू

राजदरबारक बाहर खेत-खरिहान आ बिना पदक समाज ठाढ़ करनिहार लोककें नाँव देनाइ इतिहास-लेखनक राजनीतिक चयन पर प्रश्न अछि। एकर सबलता औपचारिक मान्यता केन्द्रीय मानबाक बदला श्रमक दृश्यकें अग्रभागमे अनब अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “इतिहास केवल राजदरबारक कथा नहि / खेत-खरिहानक गाम, नाम लिखू” आ फेर “दौड़ैत जीवनमे थाकल देह जखन रुकै / ओ कने विराम, नाम लिखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “जे हाथ दिनभरि करै काम, नाम लिखू” आ अन्त “लोकक संग अपन काम, नाम लिखू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-

सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १८३ : घरमे रहय

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ोल · रदीफः घरमे रहय।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अपन माइक सहज बोल घरमे रहय / नेहक किछु असली मोल घरमे रहय / बाहरक भाषा सीखब ज्ञानक दुआर खोलै / तइयो अपन एक खोल घरमे रहय / पाइ सभटा किनि लेत, ई साँच नहि / किछु सम्बन्ध अनमोल घरमे रहय / पीढ़ी बदलत, शब्द बदलत, चाल बदलत / स्मृतिक कने डोल घरमे रहय / पोथीसँ बेसी भाषा लोकक कंठमे जीबै / ओकर जीवैत बोल घरमे रहय

बाहरक भाषा सीखब आ घरक बोल बचायबकँ विरोधी बनाओल नहि गेल अछि। परिवारक हँसी, राग आ मौखिक गीत भाषा-संरक्षणक व्यवहारिक स्थल बनैत अछि; ‘एक खोल’ पदक अर्थ स्पष्ट करबाक आवश्यकता अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बाहरक भाषा सीखब ज्ञानक दुआर खोलै / तइयो अपन एक खोल घरमे रहय” आ फेर “पीढ़ी बदलत, शब्द बदलत, चाल बदलत / स्मृतिक कने डोल घरमे रहय”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अपन माइक सहज बोल घरमे रहय” आ अन्त “ओकर जीवैत बोल घरमे रहय”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल

गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १८४ : संग रहत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः संग रहत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कठिन दिनमे जे आधार संग रहत / मत अलग हो, मुदा विचार संग रहत / नेह केवल सुखक दिनक उत्सव नहि होइ / दुखमे सेहो व्यवहार संग रहत / नेना दूर चलि जाए, घर खाली भऽ जाए / यादक छोट संसार संग रहत / नाम मेटि जाए, समय चेहरा बदलि दए / कंठमे एक पुकार संग रहत / गीत जँ लोकक पीरकँ अपन पीर मानए / ओकर साँच विचार संग रहत

सुखमे उत्सव आ दुखमे व्यवहारक भेद मित्रताक परीक्षण अछि। दूर गेल नेनासभक कारण सूत्र घर आ कंठमे बाँचल पुकार रचनाकँ वैयक्तिक रंग दैत अछि; सामूहिकताक पुनरावर्तन स्वतंत्र कथानक नहि रचैत।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नेह केवल सुखक दिनक उत्सव नहि होइ / दुखमे सेहो व्यवहार संग रहत” आ फेर “नाम मेटि जाए, समय चेहरा बदलि दए / कंठमे एक पुकार संग रहत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १४४ “संग रहू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “दिन कठिन हो तँ बनि आधार संग रहू” आ एतुक आरम्भ “कठिन दिनमे जे आधार संग रहत”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १८५ : खोलि देखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः खोलि देखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पुरनका चिट्ठीक बात, खोलि देखू / स्याहीमे अटकल रात,
खोलि देखू / जे मीत बहुत दिनसँ नामो नहि लिखलक / कागजमे मुलाकात,
खोलि देखू / सूखल फूल पन्नाक बीच एखनो महकैए / समयक ई सौगात, खोलि
देखू / बाहर अकास साफ, मुदा मन भीजल किएक / भीतरक बरसात, खोलि देखू
/ जाहि प्रश्नक उत्तर कहियो पठाओल नहि / ओ अधूरी बात, खोलि देखू

पुरान चिट्ठीमे सूखल फूल पुनः अबैत अछि; १६१क पत्र-वस्तुक दृश्यसँ ई
असाधारण रूपैँ निकट अछि । अतिरिक्त पाँति 'बाहर अकास साफ, मुदा मन
भीजल' भीतरी आ बाहरी मौसमक भेद बढबैत अछि ।
रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने "जे मीत बहुत दिनसँ नामो नहि लिखलक /
कागजमे मुलाकात, खोलि देखू" आ फेर "बाहर अकास साफ, मुदा मन भीजल
किएक / भीतरक बरसात, खोलि देखू"क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ "पुरनका चिट्ठीक बात, खोलि देखू" आ अन्त "ओ अधूरी
बात, खोलि देखू"क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
"मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना" कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल १८६ : चुप नहि रहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः चुप नहि रहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मोनमे उठल पुकार, चुप नहि रहू / साँचक सोझाँ दीवार,
चुप नहि रहू / जे प्रश्न सुनिते मुँह फेरि लैत अछि / ओकर आगाँ दरबार, चुप
नहि रहू / मत अलग हो तँ तर्कसँ बात बढाउ / लेने अपन विचार, चुप नहि रहू /
ककरो रोटी, भाषा, मान जँ छीना जाए / ओकर लेल अधिकार, चुप नहि रहू /
गीत जँ लोकक दुखकें स्वर दऽ सकैए / बनि कऽ ओ पुकार, चुप नहि रहू

सत्य आगाँ दीवार आ अधिकार छिनबाक प्रसङ्गक कारण ई गजल निजी मौनसँ सार्वजनिक प्रतिवाद दिस मुडैत अछि । विरोधीक तर्क सुनब आ तर्कसँ उत्तर देबक आग्रह सार्थक अछि; आवेगकें स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे प्रश्न सुनिते मुँह फेरि लैत अछि / ओकर आगाँ दरबार, चुप नहि रहू” आ फेर “ककरो रोटी, भाषा, मान जँ छीना जाए / ओकर लेल अधिकार, चुप नहि रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मोनमे उठल पुकार, चुप नहि रहू” आ अन्त “बनि कऽ ओ पुकार, चुप नहि रहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १८७ : फेर शुरू करू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः फेर शुरू करू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : एक नव प्रयास, फेर शुरू करू / टूटल जँ विश्वास, फेर शुरू करू / सूखल माटि पहिल बूँद लेल ताकैत अछि / लेने कने प्यास, फेर शुरू करू / हारल दिन पूरा जीवनक फैसला नहि / राखि कने आस, फेर शुरू करू / जे भूल भेल तकरा छुपेब जरूरी नहि / सीखि अपन इतिहास, फेर शुरू करू / गीत अधूरा रहल तऽ कागज फेंकू नहि / ओही साँसक पास, फेर शुरू करू

सूखल माटिक पहिल बूँद नव प्रयासक सूक्ष्म नैसर्गिक प्रतिरूप अछि । असफलता पूर्ण जीवनक फैसला नहि—एहि सामान्य सूत्रकेँ अधूर गीतक कागज नहि फेंकबाक वस्तुगत क्रिया सघन करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सूखल माटि पहिल बूँद लेल ताकैत अछि / लेने कने प्यास, फेर शुरू करू” आ फेर “जे भूल भेल तकरा छुपेब जरूरी नहि / सीखि अपन इतिहास, फेर शुरू करू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “एक नव प्रयास, फेर शुरू करू” आ अन्त “ओही साँसक पास, फेर शुरू करू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १८८ : देर भऽ गेल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः देर भऽ गेल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मोनमे दबि रहल बात, देर भऽ गेल / आँखिमे जागल रात, देर भऽ गेल / बहुत बर्ख बाद ओ बाटमे फेर भेटल / एहन अकस्मात मुलाकात, देर भऽ गेल / मेघ घिरल, माटि प्रतीक्षा करैत रहल / धरतीपर बरसात, देर भऽ गेल / जे नेह बिना माँगने जीवनमे भेटल / बुझब ओकर सौगात, देर भऽ गेल / गीत बहुत दिन कंठक भीतर अटकल छल / खुलि कहबाक बात, देर भऽ गेल

विलम्बित संवादक चोटि, खाली भेल बाट आ समयक अपरिवर्तनीयता गजलक भावकेन्द्र अछि। ‘देर’ केवल घड़ीक नाप नहि, अकथित वचनक ऐतिहासिक भार बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बहुत बर्ख बाद ओ बाटमे फेर भेटल / एहन अकस्मात मुलाकात, देर भऽ गेल” आ फेर “जे नेह बिना माँगने जीवनमे भेटल / बुझब ओकर सौगात, देर भऽ गेल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मोनमे दबि रहल बात, देर भऽ गेल” आ अन्त “खुलि कहबाक बात, देर भऽ गेल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १८९ : फेर भेटू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ेर · रदीफः फेर भेटू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : ई विदा अन्तिम नहि, एक बेर फेर भेटू / बाट बदलि जाए तइयो कखनो फेर भेटू / कतेक बात समय पर कहि नहि सकलहुँ / जँ समय देत कने देर, फेर भेटू / घर नबका भऽ गेल, आँगन छोट भऽ गेल / पीपरक पुरनका घेर, फेर भेटू / राति गाढ अछि, मुदा भोर अबिते अछि / कटि गेलापर अन्हेर, फेर भेटू / नाम बिसरि जाए, स्वर नहि बिसरू / गीत उठत जखन फेर, फेर भेटू

पुनर्भेटक आशा स्मृतिक रंगकैँ भविष्य दिस खोलैत अछि । घर-गामक दूरी, पहिनुक अनकहल बात आ कंठक स्वरक फेर आगमनक रूपक व्यक्तिगत सम्बन्धक टूटल सूत्र जोडबाक प्रयास अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कतेक बात समय पर कहि नहि सकलहुँ / जँ समय देत कने देर, फेर भेटू” आ फेर “राति गाढ अछि, मुदा भोर अबिते अछि / कटि गेलापर अन्हेर, फेर भेटू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकैँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “ई विदा अन्तिम नहि, एक बेर फेर भेटू” आ अन्त “गीत उठत जखन फेर, फेर भेटू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकैँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९० : कने राखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः मोल · रदीफः कने राखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घरमे अपन बोल, कने राखू / नेहक अपन मोल, कने राखू / सभ खिड़की बन्द कऽ हवा नहि रोकल जाए / अकासक लेल खोल, कने राखू / समयक एक झोंका सब किछु हिला दैए / तइयो नहि बेसी डोल, कने राखू / पाइ सभटा किनि लेत, ई साँच कहाँ / जे नेह अछि अनमोल, कने राखू / गीतक शब्द बदलि सकैए, सुर रहि जाए / कंठक अपन बोल, कने राखू

बन्द खिड़की आ हवा पुनः संवादक बिम्ब बनैत अछि । ‘मोन खोलू’ सँ ‘कने राखू’ दिस बदलल क्रिया संयम जोड़ैत अछि, मुदा एही फेरबदलमे अर्थक नव जटिलता सीमित अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ खिड़की बन्द कऽ हवा नहि रोकल जाए / अकासक लेल खोल, कने राखू” आ फेर “पाइ सभटा किनि लेत, ई साँच कहाँ / जे नेह अछि अनमोल, कने राखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “घरमे अपन बोल, कने राखू” आ अन्त “कंठक अपन बोल, कने राखू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९१ : आब बुझू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः आब बुझू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूरिमे मेटल नाम, आब बुझू / हाथक मौन काम, आब बुझू / नकशामे छोट अक्षरमे लिखल ठामो / कतेक पैघ गाम, आब बुझू / पैघ भवन सभ समयसँ एक दिन हारत / माटिक पहिल धाम, आब बुझू / दौड निरन्तर जीतक चिन्ह नहि होइ छै / साँसक एक विराम, आब बुझू / पोथी लिखब एक बात, लोकक मोनमे बसब आन / जीवनक असली नाम, आब बुझू

हथेलीक मौन काम आ नकशामे छोट गामक अर्थ-बदलाव सामाजिक अदृश्यता देखबैत अछि । पुस्तक लिखब आ लोकक मोनमे बसबकैँ भिन्न मानक माननाइ एकर आलोचनात्मक उपलब्धि अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नकशामे छोट अक्षरमे लिखल ठामो / कतेक पैघ गाम, आब बुझू” आ फेर “दौड निरन्तर जीतक चिन्ह नहि होइ छै / साँसक एक विराम, आब बुझू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकैँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धूरिमे मेटल नाम, आब बुझू” आ अन्त “जीवनक असली नाम, आब बुझू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकैँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९२ : एखन बाकी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-
क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः ीत • रदीफः एखन बाकी।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कंठमे एक गीत एखन बाकी / मोनमे कने प्रीत एखन
बाकी / सभ मीत अपन-अपन बाट पकड़ि गेल / यादमे एक मीत एखन बाकी /
नबका घर पुरनका चेन्ह बहुत मेटेलक / माटिमे अतीत एखन बाकी / हारल
दिनक बादो आँखि फेर चमकैए / ओहि चमकमे जीत एखन बाकी / राति बहुत
भेल, तइयो भोरक आहट अछि / जीवनक नब गीत एखन बाकी

मीतक अलग-अलग बाट धरला पाछाँ शेष रहैत प्रेम आ गीतक अस्तित्वक
अंशक समीक्षा अछि। ‘एखन बाकी’क अन्तर्ध्वनि अपूर्णताकै क्षतिक बदला
सम्भावना मानैत अछि; मुदा प्रीत-गीत-जीतक काफियासँ पुरान भाव पुनरावृत्त।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत अपन-अपन बाट पकड़ि गेल /
यादमे एक मीत एखन बाकी” आ फेर “हारल दिनक बादो आँखि फेर चमकैए /
ओहि चमकमे जीत एखन बाकी”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकै छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ७२ “एखन बाकी अछि”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य
अछि। पहिनुक आरम्भ “हारि कऽ लौटि एलहुँ, तइयो आस एखन बाकी अछि”
आ एतुक आरम्भ “कंठमे एक गीत एखन बाकी”क मिलानसँ स्वर/कथनक
वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि
कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा •
उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि,
स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १९३ : चुप नहि रहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः चुप नहि रहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मोनमे उठल पुकार, चुप नहि रहू / साँचक अपन विचार,
चुप नहि रहू / जे ठाम भूखकें भाषणसँ ढाँकल जाइत अछि / माँगू अपन
अधिकार, चुप नहि रहू / पद पैघ हो, मुदा मनुख तकरासँ पैघ अछि / देखू ओकर
व्यवहार, चुप नहि रहू / भाषा घरमे धीरे-धीरे जँ मेटि रहल अछि / बचाउ अपन
संसार, चुप नहि रहू / गीत जँ लोकक पीर कहबाक लेल जन्मल / बनि ओकर
पुकार, चुप नहि रहू

ई १८६क समान शीर्षकवला दोसर गजल अछि । राज-दरबारक बदला भूख पर
भाषण, घरक भाषा आ पद-पदवीक प्रसङ्ग जोड़ल गेल अछि; ताहि कारण समान
रदीफ नूतन राजनीतिक संकेत सेहो दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे ठाम भूखकें भाषणसँ ढाँकल जाइत अछि
/ माँगू अपन अधिकार, चुप नहि रहू” आ फेर “भाषा घरमे धीरे-धीरे जँ मेटि
रहल अछि / बचाउ अपन संसार, चुप नहि रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल १८६क शीर्षक सेहो “चुप नहि रहू” अछि । दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम
आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दस मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि;
केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल १९४ : फेर चलू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः फेर चलू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रुकि गेलहुँ तँ चुनू राह, फेर चलू / मोनमे बाँचल अछि चाह, फेर चलू / लोक बहुत दिशा देखाओत अपन-अपन / राखि अपन निगाह, फेर चलू / आन्हीमे गाछक छाँह कम भऽ सकैए / खोजि कने पनाह, फेर चलू / ज्ञानक बाट एक पोथी धरि सीमित नहि / दुनिया अछि अथाह, फेर चलू / हार एकटा पड़ाव, अन्तिम फैसला नहि / लेने नबका राह, फेर चलू

ज्ञानक एक पोथी धरि सीमित नहि मानब रचनाक नब तर्क अछि । रुकावटसँ उठबाक प्रेरणा पूर्ववर्ती गजलसभमे उपस्थित छल; एतय बौद्धिक यात्राक ‘अथाह’ विस्तार अलग बल दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “लोक बहुत दिशा देखाओत अपन-अपन / राखि अपन निगाह, फेर चलू” आ फेर “ज्ञानक बाट एक पोथी धरि सीमित नहि / दुनिया अछि अथाह, फेर चलू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १४७ “तइयो चलू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “धूरि भरल अछि राह, तइयो चलू” आ एतुक आरम्भ “रुकि गेलहुँ तँ चुनू राह, फेर चलू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९५ : कने थामू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कने थामू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मोनपर एतेक भार, कने थामू / बात-बातक ई रार, कने थामू / जीवन जीतक हिसाबे भरि नहि होइ छै / एक दिनक हार, कने थामू / जतऽ नेह अछि ओतऽ मान सेहो रहए / राखि कने प्यार, कने थामू / उमेर धीरे-धीरे स्वर मद्धिम करैए / कंठक झंकार, कने थामू / गीतक पाछाँ जे मौन ठाढ़ रहैए / ओकरो हँकार, कने थामू

जीत-हारक अत्यधिक हिसाब विरुद्ध धीमापन आ मौनक अवकाशक आग्रह अछि । मुदा ‘भार, कने थामू’क वाक्यप्रयोगमे भार कम करब कि रोकब—ई अर्थगत द्वैध स्पष्टताक बाधा अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जीवन जीतक हिसाबे भरि नहि होइ छै / एक दिनक हार, कने थामू” आ फेर “उमेर धीरे-धीरे स्वर मद्धिम करैए / कंठक झंकार, कने थामू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मोनपर एतेक भार, कने थामू” आ अन्त “ओकरो हँकार, कने थामू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९६ : ककरा बुझाबू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः नीर • रदीफः
ककरा बुझाबू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मोनक एहन पीर, ककरा बुझाबू / आँखिमे भरल नीर,
ककरा बुझाबू / नकशा खींचल गेल, मुदा नेह बाँटल नहि / टूटल ओ लकीर,
ककरा बुझाबू / घर बहि गेल, लोक फेर ठाढ़ भऽ गेल / एतेक गहिर धीर, ककरा
बुझाबू / धारक एहि पार स्मृति, ओहि पार खेत / डूबि रहल ओ तीर, ककरा
बुझाबू / गीत सुनि सभ घुरि गेल अपन-अपन बाट / बाँचल अन्तिम पीर, ककरा
बुझाबू

नदीक तीर आ नकशाक टूटल रेखा अस्थिर भूगोलकेँ वैयक्तिक पीर बनबैत
अछि । ‘घर बहि गेल, लोक फेर ठाढ़’क शेर विपत्तिक पाछाँ मानवीय जिजीविषा
देखबैत अछि, मुदा एकर पाठक पीरकेँ महिमामण्डित नहि करबाक सावधानी
चाही ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नकशा खींचल गेल, मुदा नेह बाँटल नहि /
टूटल ओ लकीर, ककरा बुझाबू” आ फेर “धारक एहि पार स्मृति, ओहि पार खेत /
डूबि रहल ओ तीर, ककरा बुझाबू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र
दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल
गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मोनक एहन पीर, ककरा बुझाबू” आ अन्त “बाँचल
अन्तिम पीर, ककरा बुझाबू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९७ : बाँचि रहय

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः बाँचि रहय ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : लोकक ओठपर गीत बाँचि रहय / रूसल मनमे प्रीत बाँचि रहय / सभ मीत अपन-अपन बाट चलि जाए / यादमे एक मीत बाँचि रहय / नबका घर पुरनका चेन्ह मेटा सकैए / माटिमे अतीत बाँचि रहय / हारल आँखि जखन फेर चमकि उठए / ओहि चमकमे जीत बाँचि रहय / नाम मेटि जाए, पोथी धूरि खा लए / कंठमे एक गीत बाँचि रहय

‘बाँचि रहय’ इच्छा-रूपेँ स्मृति बचबैत अछि । नाम मेटला आ पोथी धूरि खएलाक बादो लोक-कंठमे गीतक उपस्थिति लिखित आ मौखिक अभिलेखक अन्तर प्रकट करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत अपन-अपन बाट चलि जाए / यादमे एक मीत बाँचि रहय” आ फेर “हारल आँखि जखन फेर चमकि उठए / ओहि चमकमे जीत बाँचि रहय”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३० “बाँचि रहल अछि”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “टूटल घरमे एक गीत बाँचि रहल अछि” आ एतुक आरम्भ “लोकक ओठपर गीत बाँचि रहय”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल १९८ : घुरि देखब

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः घुरि देखब ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : समय मेटाओत नाम, घुरि देखब / बाट बदलाओत गाम,
घुरि देखब / जे हाथ दिन भरि माटिसँ जीवन गढैए / ओकर चुपचाप काम, घुरि
देखब / पैघ भवनक छाँहमे छोट घर नुकाएत / पहिल बसल धाम, घुरि देखब /
दौड़ बहुत होए, मुदा साँसक मोल रहत / बीच बाटक विराम, घुरि देखब / गीत
लिखल बहुत, मुदा ककर कंठमे रहल / लोकक देल नाम, घुरि देखब

पैघ भवनक छाँहमे छोट घरक नुकायल रहब शहरी विकासक काव्यात्मक उलट
दृष्टि अछि । श्रमिक हाथक पहचान स्मृतिमे दर्ज करबाक ‘घुरि देखब’ पहिल
व्यक्ति प्रतिज्ञा दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे हाथ दिन भरि माटिसँ जीवन गढैए /
ओकर चुपचाप काम, घुरि देखब” आ फेर “दौड़ बहुत होए, मुदा साँसक मोल
रहत / बीच बाटक विराम, घुरि देखब”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “समय मेटाओत नाम, घुरि देखब” आ अन्त “लोकक देल
नाम, घुरि देखब”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल १९९ : एहि बेर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः एहि बेर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अपन चुनब राह एहि बेर / मोनक सुनब चाह एहि बेर /
लोक बहुत दिशा देखाओत, सभ नहि मानब / राखब अपन निगाह एहि बेर /
आन्ही आए तऽ भागि नहि जएब दूर / खोजब उचित पनाह एहि बेर / जे पीर
मनमे बर्खसँ दबल रहल / बाजि उठत ओ आह एहि बेर / गीत जँ भीतर साँस
माँगि रहल अछि / देब ओकरा राह एहि बेर

‘एहि बेर’क दृढ वर्तमान भविष्यक अनिश्चित आश्वासनसँ भिन्न अछि । आन
लोकक अनेक सलाह सुनि अपन निर्णय करबक भाव स्वतन्त्रता आ
उत्तरदायित्वकें संयुक्त करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “लोक बहुत दिशा देखाओत, सभ नहि मानब
/ राखब अपन निगाह एहि बेर” आ फेर “जे पीर मनमे बर्खसँ दबल रहल / बाजि
उठत ओ आह एहि बेर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति
कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक
एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल ६१क शीर्षक सेहो “एहि बेर” अछि । दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ
रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि;
केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २०० : मौन रहैए

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः २१-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-

सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: भोर · रदीफ: मौन रहैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सभतरि अछि शोर, मुदा मोन मौन रहैए / राति भीतर भोर, मुदा मोन मौन रहैए / सम्बन्धक डोर धीरे-धीरे ढीली भेल / हाथमे ओ डोर, मुदा मोन मौन रहैए / लोक हँसैत अछि, आँखि कने काँपैत अछि / भीतर भारी जोर, मुदा मोन मौन रहैए / धार ऊपर शान्त, नीचाँ गति रुकल नहि / पानिमे हिलोर, मुदा मोन मौन रहैए / गीत पूरा भेल, ताली सेहो थमि गेल / कंठमे ओ शोर, मुदा मोन मौन रहैए

शब्द, हँसी आ तालीक बाहरी उपस्थिति आ भीतरक मौनक अन्तर एहि गजलक विषय अछि। धारा-हिलोरक अदेखल गति एकर श्रेष्ठ बिम्ब; शोर-भोर-जोर-डोरक शब्दमालाक पुनरावर्तन सेहो स्पष्ट।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सम्बन्धक डोर धीरे-धीरे ढीली भेल / हाथमे ओ डोर, मुदा मोन मौन रहैए” आ फेर “धार ऊपर शान्त, नीचाँ गति रुकल नहि / पानिमे हिलोर, मुदा मोन मौन रहैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सभतरि अछि शोर, मुदा मोन मौन रहैए” आ अन्त “कंठमे ओ शोर, मुदा मोन मौन रहैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २१-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल १८१-२०० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : १८४/१४४ (“संग रहत”/“संग रहू”); १९३/१८६ (“चुप नहि रहू”/“चुप नहि रहू”); १९७/३०

(“बाँचि रह्य”/“बाँचि रहल अछि”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्वरचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूज़ी परिचयकँ हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल २०१ : अहाँ रहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: अहाँ रहू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूर रहू, मोनक पास अहाँ रहू / राति गाढ़ हो, भोरक आस अहाँ रहू / दूर शहरमे घर बहुत सुन्दर बनि सकैए / माटिक पुरनका सुवास अहाँ रहू / समय कतेको बेर भरोसा तोड़ि सकैए / मोनक बचल विश्वास अहाँ रहू / उमेर अपन रेखा चेहरापर लिखैत रहए / गीतक भीतर साँस अहाँ रहू / नाम रह्य वा नहि, स्मृति रहि जाएत / ओहि स्मृतिक पास अहाँ रहू

दूर-निकटकँ भौगोलिक दूरीक बदला स्मृतिक सम्बन्धसँ परिभाषित कएल गेल अछि। शहरक सुन्दर घर आ पुरान माटिक सुवासक भेद सामाजिक प्रवासक कोमल रूपक अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दूर शहरमे घर बहुत सुन्दर बनि सकैए / माटिक पुरनका सुवास अहाँ रहू” आ फेर “उमेर अपन रेखा चेहरापर लिखैत रहए / गीतक भीतर साँस अहाँ रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूर रहू, मोनक पास अहाँ रहू” आ अन्त “ओहि स्मृतिक पास अहाँ रहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २०२ : धीरे-धीरे

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ेर · रदीफ: धीरे-धीरे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : उमेर खोलै अपन फेर, धीरे-धीरे / मोन बुझै हर एक बेर, धीरे-धीरे / जे बात पहिने चोट जकाँ चुभैत छल / ओहो होइत अछि देर, धीरे-धीरे / घर बदलल, लोक बदलल, बाट बदलल / याद बनबै अपन घेर, धीरे-धीरे / राति कतबो गाढ़ हो, भोर अबैत अछि / कटि जाइत अछि अन्हेर, धीरे-धीरे / गीतक स्वर जे एक दिन तीव्र छल बहुत / मधुर होइत अछि फेर, धीरे-धीरे

घाव-जकाँ चुभैत बातक समयक संग बदलैत ताप आ तीव्र गीतक मधुर होइत स्वर अनुभवक ऐतिहासिक परिवर्तन दैत अछि। मुदा ‘धीर-फेर-देर-अन्हेर’क ध्वनि पुरान गजल ४६सँ निकट अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे बात पहिने चोट जकाँ चुभैत छल / ओहो होइत अछि देर, धीरे-धीरे” आ फेर “राति कतबो गाढ़ हो, भोर अबैत अछि / कटि जाइत अछि अन्हेर, धीरे-धीरे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्रा दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल ४६क शीर्षक सेहो “धीरे-धीरे” अछि। दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि; केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २०३ : हाथक मोल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-तलय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: याद रखू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जे हाथ करै चुप काम, याद रखू / नामसँ पैघ अछि काम,
याद रखू / माटि सानैत हाथे घरक रूप गढैए / ओकरो अछि अपन नाम, याद रखू
/ धानक दाना बजार धरि एना नहि पहुँचै / पाछाँ अछि पूरा गाम, याद रखू /
राजमहल चमकै, मुदा ई श्रम नहि देखै / झोपड़ियो अछि धाम, याद रखू / दौड़
बहुत हो, तइयो देहक सीमा होइ छै / साँसक चाही विराम, याद रखू

धानक दाना बजार धरि पहुँचबाक प्रक्रियामे पूरा गामक श्रमक अदृश्य रहबकै ई कविता चिन्हैत अछि। राजमहलक चमकक विरुद्ध माटि सानैत हाथक दृश्यक कारण श्रमक मूल्य ठोस होइत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “माटि सानैत हाथे घरक रूप गढैए / ओकरो अछि अपन नाम, याद रखू” आ फेर “राजमहल चमकै, मुदा ई श्रम नहि देखै / झोपड़ियो अछि धाम, याद रखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिविन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकै छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “जे हाथ करै चुप काम, याद रखू” आ अन्त “साँसक चाही विराम, याद रखू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २०४ : घरमे बाजू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -लोल · रदीफ: घरमे बाजू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अपन माइक बोल घरमे बाजू / नेहक असली मोल घरमे बाजू / पोथीमे शब्द बचल, से मात्र पर्याप्त नहि / हँसी-रोषक खोल घरमे बाजू / दोसर भाषा सीखब ज्ञानक विस्तार अछि / अपन भाषा अनमोल घरमे बाजू / नेना जँ गलती करए, रोकू मुदा हँसि कऽ / बोल नहि हो डोल, घरमे बाजू / गीत जँ लोकक अछि तँ लोकसँ दूर किएक / माटिक अपन बोल घरमे बाजू

पोथीमे भाषा बचला पाछाँ घरमे ओकर न बजबक सम्भावना आलोचनात्मक आरम्भ अछि। दोसर भाषा सीखबकेँ समृद्धि मानि मातृबोलीकेँ बचायब द्विभाषिकता विरुद्ध नहि, व्यवहारक पक्षमे अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पोथीमे शब्द बचल, से मात्र पर्याप्त नहि / हँसी-रोषक खोल घरमे बाजू” आ फेर “नेना जँ गलती करए, रोकू मुदा हँसि कऽ / बोल नहि हो डोल, घरमे बाजू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल १४३क शीर्षक सेहो “घरमे बाजू” अछि। दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दस मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि; केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल

अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २०५ : बाँचि रहय

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: बाँचि रहय।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घर बदलए, मुदा आकार बाँचि रहय / लोक बदलए,
व्यवहार बाँचि रहय / पुरनका बात सभटा अक्षरशः राखब जरूरी नहि / तकर
भीतरक विचार बाँचि रहय / नबका पीढ़ी अपन ढंगसँ दुनिया देखत / जुड़ल
पुरनका संसार बाँचि रहय / नाम मेटि सकैए समय, ई स्वाभाविक अच्छि / लोकक
साँच व्यवहार बाँचि रहय / पोथी धूसर हो, कागज टूटि सकैए / कंठक ओ झंकार
बाँचि रहय

पीढ़ी बदलला पर हर अक्षर जसक तस राखब जरूरी नहि—ई स्वीकार सांस्कृतिक
निरन्तरताक सहज नव परिभाषा अच्छि। रूप बदलितो व्यवहार आ विचार बचबाक
आग्रह संग्रहक अपरिवर्तनशीलता-वादकें संशोधित करैत अच्छि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पुरनका बात सभटा अक्षरशः राखब जरूरी
नहि / तकर भीतरक विचार बाँचि रहय” आ फेर “नाम मेटि सकैए समय, ई
स्वाभाविक अच्छि / लोकक साँच व्यवहार बाँचि रहय”क प्रसङ्ग रहैत अच्छि।
एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अच्छि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अच्छि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अच्छि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल १९७क शीर्षक सेहो “बाँचि रहय” अच्छि। दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम
आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अच्छि;
केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि। मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि।

गजल २०६ : एतबे नेह

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः
एतबे नेह ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मोनसँ कहल एक बात—एतबे नेह / निन्नमे अयल एक
रात—एतबे नेह / खाली हाथ जे कियो संग ठाढ़ भऽ गेल / ओहि क्षणक सौगात
—एतबे नेह / बहुत बख बाद जँ मीत हँसि कऽ भेटल / ओ अकस्मात मुलाकात
—एतबे नेह / मेघ नहि, मुदा माटि महकि उठल अचानक / मोनक ओ बरसात—
एतबे नेह / गीत जँ एकटा घायल मन छूबि सकल / कविताक असली बात—
एतबे नेह

‘खाली हाथ जे कियो संग ठाढ़’ कथन अर्थ-सहायताक बदला भावनात्मक
उपस्थितिक मूल्य दैत अछि । कविता घायल मोन छू सकल तऽ ओहि उपलब्धिकें
पर्याप्त मानब कला-विषयक आत्म-समीक्षा अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खाली हाथ जे कियो संग ठाढ़ भऽ गेल /
ओहि क्षणक सौगात—एतबे नेह” आ फेर “मेघ नहि, मुदा माटि महकि उठल
अचानक / मोनक ओ बरसात—एतबे नेह”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मोनसँ कहल एक बात—एतबे नेह” आ अन्त “कविताक
असली बात—एतबे नेह”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २०७ : समय रहत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १५-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः समय रहत ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : नाम नहि रहत, गीत समय रहत / देह थाकत, प्रीत
समय रहत / सभ मीत अपन-अपन बाट चलि जाएत / स्मृतिमे ककरो मीत
समय रहत / नबका घर पुरनका चेन्ह मेटा देत / माटिमे अतीत समय रहत /
हार-जीतक हिसाब बदलैत रहत / लोकक भीतर जीत समय रहत / पोथी बन्द
हो, अक्षर धूसर पड़ि जाए / कंठमे एक गीत समय रहत

नाम आ देहक क्षयक सोझाँ गीतक अवधि बढ़बाक काव्यात्मक दावा अछि । मुदा
'गीत समय रहत' व्याकरणिक आ अर्थगत रूपसँ अस्पष्ट; समय स्वयं गीत बनत
कि गीत समय धरि बाँचत? एकरा अलग परखबाक आवश्यकता ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत अपन-अपन बाट चलि जाएत /
स्मृतिमे ककरो मीत समय रहत” आ फेर “हार-जीतक हिसाब बदलैत रहत /
लोकक भीतर जीत समय रहत”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १०० “बाँचल रहत”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि ।
पहिनुक आरम्भ “नाम भेटत, गीत बाँचल रहत” आ एतुक आरम्भ “नाम नहि
रहत, गीत समय रहत”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत
अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २०८ : फेर लिखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः फेर लिखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखू / जे नाम हाशियापर, पुकार फेर लिखू / इतिहास केवल राजमहलक कथा नहि होइ / लोकक जीबैत संसार फेर लिखू / जे हाथ बिना नामक जीवन भरि काज कएलक / ओकर श्रमक आधार फेर लिखू / गीत जँ लोकक दुःखक संग ठाढ़ नहि रहल / ओकर अर्थ-विचार फेर लिखू / स्याही सुखि जाए तँ कलम बदलि सकैत छी / कंठक नब झंकार फेर लिखू

इतिहास केवल राजमहलक नहि, बिना नामक श्रमक सेहो अछि—एहि दावाक कारण कविता पुनर्लेखनकें सामाजिक न्यायसँ जोड़ैत अछि । स्याही सुखलापर कलम बदलबाक बिम्ब पद्धति बदलि सतत लेखनक आग्रह करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “इतिहास केवल राजमहलक कथा नहि होइ / लोकक जीबैत संसार फेर लिखू” आ फेर “गीत जँ लोकक दुःखक संग ठाढ़ नहि रहल / ओकर अर्थ-विचार फेर लिखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १३० “फेर लिखब”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखब” आ एतुक आरम्भ “जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २०१ : एहि मोड़पर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ेर · रदीफः एहि मोड़पर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पाछाँ ताकलहुँ एक फेर, एहि मोड़पर / बुझि पड़ल कतेक देर, एहि मोड़पर / जे बात कहल नहि गेल समय पर कखनो / ओ उठि आबै बेर-बेर, एहि मोड़पर / राति भरि जे अन्हेर मनकें घेरने छल / भोर काटलक ओ अन्हेर, एहि मोड़पर / घर बदलल, लोक बदलल, स्मृति नहि मेटल / बाँचल आँगनक घेर, एहि मोड़पर / गीत पुरान अछि, मुदा अर्थ नब भऽ उठल / सुनि लिअ ओकर फेर, एहि मोड़पर

‘पाछाँ ताकलहुँ’क वर्तमान मोड़पर पुरान गीतक नब अर्थ भेटनाइ पाठक-सम्बन्धक पुनर्पाठ अछि । आँगनक घेर स्मृतिक ठोस स्थान बनैत अछि; ‘देर-फेर-अन्हेर’क अतिपरिचित काफिया भिन्नता सीमित करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे बात कहल नहि गेल समय पर कखनो / ओ उठि आबै बेर-बेर, एहि मोड़पर” आ फेर “घर बदलल, लोक बदलल, स्मृति नहि मेटल / बाँचल आँगनक घेर, एहि मोड़पर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पाछाँ ताकलहुँ एक फेर, एहि मोड़पर” आ अन्त “सुनि लिअ ओकर फेर, एहि मोड़पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २१० : कने बुझू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः कने बुझू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सूखल माटिक प्यास, कने बुझू / टूटल मोनक आस, कने बुझू / समय कतेको बेर भरोसा तोडि देत / तइयो बाँचल विश्वास, कने बुझू / दूर शहरमे बर्ख बहुत बीति गेल / माइक अँचरक सुवास, कने बुझू / उमेर चेहरापर रेखा लिखि रहल अछि / गीतक भीतर साँस, कने बुझू / लोकक हँसी सभ दिन सुखक चिन्ह नहि / आँखिमे अटकल आस, कने बुझू

लोकक हँसी सभ दिन सुखक प्रमाण नहि—ई शेर बाहरी संकेतक अनुचित निष्कर्ष विरुद्ध ठोस सावधानी अछि । अँचरक सुवास आ देहक उमेरक लिखाइ व्यक्तिगत पीरक सांस्कृतिक भाषा दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “समय कतेको बेर भरोसा तोडि देत / तइयो बाँचल विश्वास, कने बुझू” आ फेर “उमेर चेहरापर रेखा लिखि रहल अछि / गीतक भीतर साँस, कने बुझू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सूखल माटिक प्यास, कने बुझू” आ अन्त “आँखिमे अटकल आस, कने बुझू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २११ : बाँचि रहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोल · रदीफः बाँचि रहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घरक अपन बोल, बाँचि रहू / नेहक असली मोल, बाँचि
रहू / बन्द खिड़कीसँ हवा कतेक दिन रुकत / अकास लेल खोल, बाँचि रहू /
समयक झोंका सभकेँ कखनो हिला दैए / तइयो नहि बेसी डोल, बाँचि रहू / पाइ
बहुत किछु किनि सकैए, सभ नहि / जे नेह अछि अनमोल, बाँचि रहू / गीतक
शब्द बदलए, सुर फेरो लौटि अबै / कंठक अपन बोल, बाँचि रहू

बन्द खिड़की आ खुलल अकासकेँ संवादक नैतिकता बनाओल गेल अछि । ‘बाँचि
रहू’क रदीफ आ घरक भाषा-नेहक मोलक पुनरावृत्ति पहिनुक ‘मोन खोलू’ आ
‘कने राखू’ सँ तुलनीय अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बन्द खिड़कीसँ हवा कतेक दिन रुकत /
अकास लेल खोल, बाँचि रहू” आ फेर “पाइ बहुत किछु किनि सकैए, सभ नहि /
जे नेह अछि अनमोल, बाँचि रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र
दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल
गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “घरक अपन बोल, बाँचि रहू” आ अन्त “कंठक अपन बोल,
बाँचि रहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल २१२ : मान राखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः मान राखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कमाइ कम हो, मान राखू / दामक आगाँ ईमान, मान राखू
/ भाषा अपन घरक साँस, लाजक कारण नहि / लोकक बीच पहिचान, मान राखू /
पद पैघ हो, मुदा मनुख तकरासँ पैघ / सभक सहज सम्मान, मान राखू / साँच
कहबाक दाम कठिन भऽ सकैए / तइयो अपन जान, मान राखू / गीत जँ लोकक
दुखमे संग ठाढ़ रहै / कंठक ओकर मान, मान राखू

‘मान राखू’क नव वर्तनी/स्वरूपसँ पैघ वैचारिक फेरबदल देखाइत नहि । मान,
ईमान, भाषा, पद आ सत्यक शेर लगभग समान नैतिक क्रम अपनबैत अछि;
आलोचनेमे एकर पुनरावृत्तिक मूल्यांकन अनिवार्य अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भाषा अपन घरक साँस, लाजक कारण नहि /
लोकक बीच पहिचान, मान राखू” आ फेर “साँच कहबाक दाम कठिन भऽ सकैए /
तइयो अपन जान, मान राखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १६३ “मान राखू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि ।
पहिनुक आरम्भ “कठिन दिनमे जान, मान राखू” आ एतुक आरम्भ “कमाइ कम हो,
मान राखू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाइत अछि; रचना-
कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल २१३ : ओहि पार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः नीर · रदीफः ओहि पार ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घर एतऽ अछि, खेतक तीर ओहि पार / आँखिमे चमकै
नीर ओहि पार / नदी नक्शाक सीधी रेखा मानैत नहि / कटि गेल पुरनका लकीर
ओहि पार / बाढ़ि उतरि गेल, मुदा मनकै समय लगत / रहि गेल कतेक पीर
ओहि पार / नाव डोलए तऽ पतवार हाथसँ नहि छोड़ू / लेने कने धीर ओहि पार
/ गीत जँ लोकक स्मृति बनि कऽ बहैत रहए / बाँचत ओकर नीर ओहि पार

ओहि पार खेत आ एहि पार घरक भौगोलिक दूरी केवल पानिक नहि,
जीवनयापनक दूरी अछि । नदीक कथन नक्शाक एकल रेखाक वस्तुनिष्ठतापर
प्रश्न अछि; नाविकक पतवार सघन क्रियात्मक बिम्ब ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नदी नक्शाक सीधी रेखा मानैत नहि / कटि
गेल पुरनका लकीर ओहि पार” आ फेर “नाव डोलए तऽ पतवार हाथसँ नहि
छोड़ू / लेने कने धीर ओहि पार”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकै छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल ७६क शीर्षक सेहो “ओहि पार” अछि । दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ
रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि;
केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २१४ : फेर खिलत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: ङा · रदीफ: फेर खिलत ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सूखल पातमे हरियर रंग फेर खिलत / रूसल मोनमे नेहक संग फेर खिलत / बहुत दिन बाद मीत जँ दुआर पर आएत / आँखिमे नेनाक उमंग फेर खिलत / धार शान्त अछि, हवा जँ ओकरा छूबि देत / पानिमे नब तरंग फेर खिलत / पुरनका पोथी खोलिते सूखल फूल भेटल / बीति गेल दिनक प्रसंग फेर खिलत / गीत थाकल अछि, मुदा साँस एखन बाकी / कंठमे ओकर रंग फेर खिलत

पोथीक बीच भेटल सूखल फूल समयक पाछाँ भावक पुनरुत्थान देखबैत अछि । रदीफ 'फेर खिलत' आशावादक एकरस घोषणाक जोखिमो राखैत अछि, मुदा दृश्यरूपेँ जलक तरंग आ दुआरक आगमन विवेचन योग्य ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बहुत दिन बाद मीत जँ दुआर पर आएत / आँखिमे नेनाक उमंग फेर खिलत” आ फेर “पुरनका पोथी खोलिते सूखल फूल भेटल / बीति गेल दिनक प्रसंग फेर खिलत”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १५० “फेर आबि गेल”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “मेह पड़िते माटिक रंग फेर आबि गेल” आ एतुक आरम्भ “सूखल पातमे हरियर रंग फेर खिलत”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २१५ : अपन राह

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः अपन राह ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : लोक कहत अनेक राह—अपन राह / मोन सुनत जे साँच चाह—अपन राह / गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनब नीक / बुझि कऽ लिअ सलाह—अपन राह / सबकेँ खुश करब सम्भव नहि जीवनमे / राखू साफ निगाह—अपन राह / आन्ही आए तँ छाँह कखनो कम पड़ि जाए / खोजू उचित पनाह—अपन राह / हार एकटा मोड़, अन्तिम फैसला नहि / फेर चुनू नब राह—अपन राह

गुरु आ मीतक सलाह सुनितो अपन राह स्वयं चुनबाक आग्रह स्वतन्त्रताकेँ अज्ञानसँ अलग करैत अछि । निर्णयक उत्तरदायित्वक ई भेद पुराने ‘चलू’ श्रेणीक प्रेरक गजलसभमे अपेक्षाकृत ठोस अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनब नीक / बुझि कऽ लिअ सलाह—अपन राह” आ फेर “आन्ही आए तँ छाँह कखनो कम पड़ि जाए / खोजू उचित पनाह—अपन राह”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “लोक कहत अनेक राह—अपन राह” आ अन्त “फेर चुनू नब राह—अपन राह”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २१६ : फेर सँ लिखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः फेर सँ लिखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जे अधूरा अछि विचार, फेर सँ लिखू / जे दबि गेल ओ पुकार, फेर सँ लिखू / इतिहास केवल राजमहलक कथा नहि होइ / लोकक जीबैत संसार, फेर सँ लिखू / जे हाथ बिना नामक जीवन भरि काज कएलक / ओकर श्रमक आधार, फेर सँ लिखू / कतेक सत्य समयक धूरिमे ढँकि गेल / ओकर खोलू दुआर, फेर सँ लिखू / स्याही सुखि जाए तऽ कलम बदलि सकैत छी / कंठक नव झंकार, फेर सँ लिखू

२०८मे स्थापित राजमहल-बाह्य इतिहासक कार्यक्रम एतय थोड़े भिन्न रदीफसँ पुनः लिखल अछि । ‘धूरिमे ढँकल सत्य’ पाँति पाठक-स्रोतकँ पुनः पढ़बाक कारण दैत अछि; मुदा बहुसंख्य शेर दूहरायल ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “इतिहास केवल राजमहलक कथा नहि होइ / लोकक जीबैत संसार, फेर सँ लिखू” आ फेर “कतेक सत्य समयक धूरिमे ढँकि गेल / ओकर खोलू दुआर, फेर सँ लिखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल २०८ “फेर लिखू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “जे बात एखन अधूरी, विचार फेर लिखू” आ एतुक आरम्भ “जे अधूरा अछि विचार, फेर सँ लिखू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २१७ : एक बेर आर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ेर · रदीफः
एक बेर आर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पाछाँ ताकू फेर, एक बेर आर / कने स्वीकारू देर, एक बेर
आर / घर बदलि गेल, मुदा स्मृति नहि बदलल / आँगनक पुरनका घेर, एक बेर
आर / राति गाढ भेल तँ भोर नजदीक होइ छै / काटि दियौ अन्हेर, एक बेर आर
/ जे बात कहल नहि गेल समय पर कखनो / कहि दियौ ई बेर, एक बेर आर /
गीत थमि गेल बुझि कऽ कंठ नहि छोड़ / उठत ओकर फेर, एक बेर आर

घर बदलला आ स्मृति रहबाक तनाव ‘एक बेर आर’क बिनती दैत अछि ।
प्रचलित राति-भोर आशवासनकें अनकहल बात आव कहि देबाक क्रियासँ अधिक
मानवीय अर्थ भेटैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “घर बदलि गेल, मुदा स्मृति नहि बदलल /
आँगनक पुरनका घेर, एक बेर आर” आ फेर “जे बात कहल नहि गेल समय पर
कखनो / कहि दियौ ई बेर, एक बेर आर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पाछाँ ताकू फेर, एक बेर आर” आ अन्त “उठत ओकर
फेर, एक बेर आर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २१८ : माटि कहैए

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः माटि कहैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हाथ चिन्है अपन काम, माटि कहैए / श्रमसँ बनै असली नाम, माटि कहैए / नक्शामे छोट अक्षरमे लिखल ठामो / लोक लेल पैघ गाम, माटि कहैए / पैघ भवनक छाँहमे छोट घर नहि मेटै / ओहो अपन धाम, माटि कहैए / दौड़ निरन्तर जीतक प्रमाण नहि होइ / साँसकें चाही विराम, माटि कहैए / नाम मेटि जाए तऽ श्रम नहि मेटै कखनो / ई जीवनक काम, माटि कहैए

‘माटि कहैए’ कथावाचककें मनुक्खसँ हटाकऽ भूमिक साक्षी बनबैत अछि । श्रमक नाम, गामक महत्त्व आ शरीरक विश्रामकें धरतीक आवाज कहब रसात्मक, मुदा सब दावा रूपक अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नक्शामे छोट अक्षरमे लिखल ठामो / लोक लेल पैघ गाम, माटि कहैए” आ फेर “दौड़ निरन्तर जीतक प्रमाण नहि होइ / साँसकें चाही विराम, माटि कहैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हाथ चिन्है अपन काम, माटि कहैए” आ अन्त “ई जीवनक काम, माटि कहैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २१९ : मोनमे बचल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः मोनमे बचल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : एक अधूरा गीत मोनमे बचल / रूसल दिनक प्रीत मोनमे
बचल / सभ मीत अपन-अपन बाट पकड़ि दूर गेल / एक पुरनका मीत मोनमे
बचल / नबका घर पुरनका चेन्ह बहुत मेटेलक / माटिक अतीत मोनमे बचल /
हारल दिनक बाद जे आँखि फेर चमकल / ओहि क्षणक जीत मोनमे बचल / समय
बहुत किछु लऽ गेल चुपचाप मुदा / लोकक देल गीत मोनमे बचल

‘मोनमे बचल’ रदीफ निजी इतिहासकें स्मृतिक तात्कालिक ठाम देबाक यत्न
अछि । यदि मुख्य चित्र गाम-नेह-घरक परिचित शृंखला मात्र रह्य तँ नव
प्रसङ्गक कमीकें आलोचनामे स्वीकारब आवश्यक ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत अपन-अपन बाट पकड़ि दूर गेल /
एक पुरनका मीत मोनमे बचल” आ फेर “हारल दिनक बाद जे आँखि फेर चमकल
/ ओहि क्षणक जीत मोनमे बचल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “एक अधूरा गीत मोनमे बचल” आ अन्त “लोकक देल
गीत मोनमे बचल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २२० : अपन कहू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ान · रदीफः अपन कहू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कम हो दाम, मुदा मान अपन कहू / कठिन दिनमे ईमान अपन कहू / भाषा केवल शब्द नहि, घरक साँस सेहो / लोकक बीच पहिचान अपन कहू / पद पैघ हो, मनुख तकरासँ पैघ रहै / सभक सहज सम्मान अपन कहू / साँच कहबाक दाम जाँ कठिन भऽ जाए / तइयो स्पष्ट बयान अपन कहू / गीत जाँ लोकक पीरक संग ठाढ़ रहै / ओकर कंठक मान अपन कहू

अपन बिचार कहबाक अभ्यास व्यक्तिगत स्वायत्तता आ सम्बन्धक संवेदनशीलताक बीच ठाढ़ अछि । गजलक आग्रहक मूल्य ओकरा अतिरेकी आत्म-प्रचार नहि बनबाक विवेकपर निर्भर अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भाषा केवल शब्द नहि, घरक साँस सेहो / लोकक बीच पहिचान अपन कहू” आ फेर “साँच कहबाक दाम जाँ कठिन भऽ जाए / तइयो स्पष्ट बयान अपन कहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १५९ “अपन रहू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “दाम बढ़ए, मुदा मान अपन रहू” आ एतुक आरम्भ “कम हो दाम, मुदा मान अपन कहू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २०१-२२० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : २०४/१४३ (“घरमे बाजू”/“घरमे बाजू”); २०५/१९७ (“बाँचि रहय”/“बाँचि रहय”); २०८/१३० (“फेर लिखू”/“फेर लिखब”); २१२/१६३ (“मान राखू”/“मान रखू”); २१३/७६ (“ओहि पार”/“ओहि पार”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्वरचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकेँ हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल २२१ : आबो महकैत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: आबो महकैत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पुरनका अँचरक सुवास आबो महकैत / सूखल धरतीक प्यास आबो महकैत / बहुत बरख शहरमे बीति गेल चुपचाप / घर घुरबाक आस आबो महकैत / समय भरोसा कतेको बेर तोड़ि देलक / लोकमे कने विश्वास आबो महकैत / उमेर चेहरापर रेखा लिखि रहल अछि / गीतक भीतर साँस आबो महकैत / मेह नहि पड़ल, मुदा माटि अचानक महकल / स्मृतिक ओ सुवास आबो महकैत

अँचरक सुवास आ सूखल धरतीक प्यास दुर्गन्ध-सुगन्धक इन्द्रिय-बोध द्वारा प्रवासक अनेक बरखकेँ एक क्षणमे खिंचि लैत अछि। ई स्मृति-सूत्र गजल १७६क निकट अछि; नव भाषा-बिम्ब अपेक्षाकृत कम।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बहुत बर्ष शहरमे बीति गेल चुपचाप / घर घुरबाक आस आबो महकैत” आ फेर “उमेर चेहरापर रेखा लिखि रहल अछि / गीतक भीतर साँस आबो महकैत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ६५ “आबो अछि”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “घुरि एबाक आस आबो अछि” आ एतुक आरम्भ “पुरनका अँचरक सुवास आबो महकैत”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२२ : फेर भेटत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ग · रदीफः फेर भेटत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : छुटल मीतक संग फेर भेटत / फीका दिनमे रंग फेर भेटत / बहुत दिन बाद जखन दुआर खुलत / आँखिमे उमंग फेर भेटत / शान्त पानि हवा लगिते काँपि उठत / धारमे तरंग फेर भेटत / पुरनका पोथी खोलिते फूल खसत / बीति गेल प्रसंग फेर भेटत / नाम बिसरि जाए, स्वर नहि बिसरै / कंठमे ओ रंग फेर भेटत

दूर गेल मीतक फेर आगमनक कल्पना लोकक उल्लासक संग रंग-तरंगक रूपक जोड़ैत अछि। सम्भाव्य भेटकें घटित घटना मानब उचित नहि; कविताक भविष्यकालक आशा एकर नैतिक ऊर्जा अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बहुत दिन बाद जखन दुआर खुलत / आँखिमे उमंग फेर भेटत” आ फेर “पुरनका पोथी खोलिते फूल खसत / बीति गेल प्रसंग

फेर भेटत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकै छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल १९क शीर्षक सेहो “फेर भेटत” अछि। दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि; केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२३ : मेहक बाद

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ग · रदीफ: फेर जागल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मेह छुबिते माटिक रंग फेर जागल / सूखल डारिमे हरियर उमंग फेर जागल / धार महीन छल, हवा जखन ओकरा छूइलक / पानिमे चुपचाप तरंग फेर जागल / बहुत दिन बाद दुआरपर मीत ठाढ़ छल / आँखिमे पुरनका संग फेर जागल / पोथी खोलिते बीचसँ सूखल फूल खसल / बीति गेल दिनक प्रसंग फेर जागल / गीत थाकल छल, मुदा एक स्वर उठिते / कंठमे ओही रंग फेर जागल

मेह परलाक बाद माटि आ डारि रंग बदलैत अछि। दृश्य बाहरी ऋतु-परिवर्तनक अछि, मुदा ई फेर जागैत आशाक प्रतीक बनैत अछि; ‘फेर खिलत’क शेरसभसँ काव्यगत पुनरावृत्ति जाँचनीय अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धार महीन छल, हवा जखन ओकरा छूइलक / पानिमे चुपचाप तरंग फेर जागल” आ फेर “पोथी खोलिते बीचसँ सूखल फूल खसल / बीति गेल दिनक प्रसंग फेर जागल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र

अच्छि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १५० “फेर आबि गेल”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “मेह पड़िते माटिक रंग फेर आबि गेल” आ एतुक आरम्भ “मेह छुबिते माटिक रंग फेर जागल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा ·

उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२४ : मौनक स्वर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ोर · रदीफः कने सुनियौ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मौनक भीतर शोर कने सुनियौ / रातिक भीतर भोर कने सुनियौ / धार ऊपरसँ शान्त बुझाईत अछि / नीचाँ पानिक हिलोर कने सुनियौ / सम्बन्ध टूटैते ध्वनि बहुत कम होइ / हाथसँ छुटैत डोर कने सुनियौ / हँसैत मुँह सभ दिन सुख नहि कहैए / आँखिमे दबायल जोर कने सुनियौ / गीत समाप्त भेल, सभा उठि गेल / बाँचल अन्तिम भोर कने सुनियौ

काने सुनब कठिन अदेखल ध्वनिक मानवीकरण अछि। चुप नदीक भीतर हिलोर आ राति भीतर भोरक बिम्ब एहि मौन-विषयकेँ इन्द्रियगम्य करैत अछि; ‘मौन सुनू’क संग गहन पुनर्पाठ आवश्यक।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धार ऊपरसँ शान्त बुझाईत अछि / नीचाँ पानिक हिलोर कने सुनियौ” आ फेर “हँसैत मुँह सभ दिन सुख नहि कहैए / आँखिमे दबायल जोर कने सुनियौ”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १३ “कने सुनू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “मौन भीतरक शोर कने सुनू” आ एतुक आरम्भ “मौनक भीतर शोर कने सुनियौ”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२५ : नदीक वचन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: नीर · रदीफ: नदी कहैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : चलैत रहू बनि नीर, नदी कहैए / एके ठाम नहि तीर, नदी कहैए / नकशा सीधा रेखा खींचि सकैत अछि / धरती तोड़ै लकीर, नदी कहैए / घर बहि जाए तऽ नोरकें दोष नहि दिअ / लोकक बुझू ई पीर, नदी कहैए / नाव डोलै तऽ पतवार छोड़ब नहि / राखू भीतर धीर, नदी कहैए / गीत जँ लोकक मोनसँ मोन धरि पहुँचए / ओहो बहैत नीर, नदी कहैए

नदी स्वयं प्रमाण देनिहार आवाज बनैत अछि; नकशाक सीधा रेखा आ धरतीक कटैत लकीर फेर टकराईत अछि। पात्ररहित रूपक एक सीमा अछि, मुदा तीर बदलबाक भौगोलिक अनुभव कलात्मक ढंगसँ उपस्थित।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नकशा सीधा रेखा खींचि सकैत अछि / धरती तोड़ै लकीर, नदी कहैए” आ फेर “नाव डोलै तऽ पतवार छोड़ब नहि / राखू भीतर धीर, नदी कहैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “चलैत रहू बनि नीर, नदी कहैए” आ अन्त “ओहो बहैत नीर, नदी कहैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२६ : पोथीक भीतर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: पन्नामे अछि।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूरिमे मेटल नाम पन्नामे अछि / बिनु हँकारक काम पन्नामे अछि / नक्शामे छोट अक्षर भले लिखल रहय / लोकक पूरा गाम पन्नामे अछि / राजमहलसँ दूरक झोपड़ियो इतिहास / ओकर अपन धाम पन्नामे अछि / दौड़त समय जखन साँस कने थमि जाए / जीवनक विराम पन्नामे अछि / जे बात मुखसँ कहि नहि सकलहुँ कहियो / ओकरो एक नाम पन्नामे अछि

पन्नामे बिना हँकारक काम दर्ज रहब इतिहासक लोकाभिलेखीकरणक प्रश्न अछि। नाम-गामक पुनरुक्तिक बीच पुस्तककें अदृश्य श्रमक साक्षी बनाओल गेल अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नक्शामे छोट अक्षर भले लिखल रहय / लोकक पूरा गाम पन्नामे अछि” आ फेर “दौड़त समय जखन साँस कने थमि जाए / जीवनक विराम पन्नामे अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्रा दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धूरिमे मेटल नाम पन्नामे अछि” आ अन्त “ओकरो एक नाम पन्नामे अछि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२७ : उमेरक साँझ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: एहि उमेरमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पाछाँ ताकू एक फेर एहि उमेरमे / किछु बात बुझाए देर एहि उमेरमे / चेहरापर रेखा बढल, आँखि नहि थाकल / कम होइत अन्हेर एहि उमेरमे / नेना सभ दूर छथि, घर चुप भऽ गेल / याद बनबै अपन घेर एहि उमेरमे / जीत-हार दुनू आब हलुक लगैए / मोन सीखै हर बेर एहि उमेरमे / गीतक स्वर ऊँच नहि, मुदा गहिर भेल / बाजै धीरे फेर एहि उमेरमे

चेहरापर उमेरक रेखा बढला पाछाँ आँखिक जीवन्तता वृद्धावस्थाकें पतन-मात्र नहि मानैत अछि। समय पर कहल नहि गेल बात नव समझक कारण बनैत अछि; गजलमे युग-विशिष्ट दृश्य कम अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “चेहरापर रेखा बढल, आँखि नहि थाकल / कम होइत अन्हेर एहि उमेरमे” आ फेर “जीत-हार दुनू आब हलुक लगैए / मोन सीखै हर बेर एहि उमेरमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पाछाँ ताकू एक फेर एहि उमेरमे” आ अन्त “बाजै धीरे फेर एहि उमेरमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक

निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२८ : श्रमक गरिमा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: मान दिअ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूरि सानैत हाथक काम—मान दिअ / नामहीन श्रमक नाम—मान दिअ / धानक दाना थारी धरि अपने नहि अबैए / पाछाँ ठाढ़ पूरा गाम—मान दिअ / घर बनाबै जे हाथ, ओ घरसँ बाहर किएक / ओकरो जीवन-धाम—मान दिअ / देह थाकए तऽ विश्राम अपराध नहि / श्रमकें चाही विराम—मान दिअ / गीत जँ श्रमिकक साँसकें स्वर दऽ सकैए / ओकरो साँच काम—मान दिअ

धानक दानाक थारीधरि पहुँचबाक अदेखल शृंखला शारीरिक श्रमक सामाजिक इतिहास अछि। एक-एक हाथक श्रमक नाम लेबाक आग्रह कामक मूल्यकें बजार-मूल्यसँ अलग राखैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धानक दाना थारी धरि अपने नहि अबैए / पाछाँ ठाढ़ पूरा गाम—मान दिअ” आ फेर “देह थाकए तऽ विश्राम अपराध नहि / श्रमकें चाही विराम—मान दिअ”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धूरि सानैत हाथक काम—मान दिअ” आ अन्त “ओकरो साँच काम—मान दिअ”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-

सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २२९ : ओहि चुप्पीमे

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त • रदीफः ओहि चुप्पीमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कहि नहि सकलहुँ बात ओहि चुप्पीमे / जागि रहल पूरी रात ओहि चुप्पीमे / बहुत बरख बाद अचानक अहाँ भेटलहुँ / भेल मौन मुलाकात ओहि चुप्पीमे / मेघ नहि छल, मुदा आँखि भरि उठल / भेल भीतर बरसात ओहि चुप्पीमे / हाथ नहि पकड़ल, नेह तइयो साथ रहल / मिलल अनकहल सौगात ओहि चुप्पीमे / गीत लिखल नहि गेल, सुर तइयो जन्मल / बाँचल असली बात ओहि चुप्पीमे

अकस्मात भेटक क्षणमे नहि कहल गेल वचनक भय आ स्मरणक अवकाश एकहि चुप्पीमे अछि। मौनक स्वरक बिम्ब अछि, मुदा संवादक असफलताक कारण अस्पष्ट रहैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बहुत बरख बाद अचानक अहाँ भेटलहुँ / भेल मौन मुलाकात ओहि चुप्पीमे” आ फेर “हाथ नहि पकड़ल, नेह तइयो साथ रहल / मिलल अनकहल सौगात ओहि चुप्पीमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कहि नहि सकलहुँ बात ओहि चुप्पीमे” आ अन्त “बाँचल असली बात ओहि चुप्पीमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-

सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २३० : घड़ी रुकल छल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः ेर · रदीफः घड़ी रुकल छल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दीवारपर एक फेर—घड़ी रुकल छल / समय चलैत रहल, देर—घड़ी रुकल छल / घरक लोक सभ अपन-अपन बाट पकड़ि गेल / आँगन बनल स्मृतिघेर—घड़ी रुकल छल / जे बात कहवाक छल, ओ समय पर नहि कहल / मोन बोलैत बेर—घड़ी रुकल छल / राति बीतल, खिड़कीसँ भोर भीतर आयल / कक्षमे कटि गेल अन्हेर—घड़ी रुकल छल / गीतक अन्तिम सुर मनमे आबो बजैत अछि / ओहि क्षणक फेर—घड़ी रुकल छल

घड़ी ठाढ़ भऽ गेल मुदा समय चलैत रहल—यन्त्र आ अनुभवक विरोध कथ्यक केन्द्र। सूत्र आँगन आ दूर गेल लोकक कारण वस्तु स्मृतिक भौतिक साक्षी बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “घरक लोक सभ अपन-अपन बाट पकड़ि गेल / आँगन बनल स्मृतिघेर—घड़ी रुकल छल” आ फेर “राति बीतल, खिड़कीसँ भोर भीतर आयल / कक्षमे कटि गेल अन्हेर—घड़ी रुकल छल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दीवारपर एक फेर—घड़ी रुकल छल” आ अन्त “ओहि क्षणक फेर—घड़ी रुकल छल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल

गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २३१ : स्याहीक गन्ध

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त · रदीफः स्याहीमे अछि।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बहुत दिनक दबल बात स्याहीमे अछि / दीपसँ जागल रात स्याहीमे अछि / पन्नाक बीच सूखल फूल आबो महकैए / मनक एक बरसात स्याहीमे अछि / जे लोक दूर गेल, तकर हस्ताक्षर बचल / फेर एक मुलाकात स्याहीमे अछि / खाली हाथ भेटल नेहक चिन्ह भेटल नहि / ओ अनकहल सौगात स्याहीमे अछि / पोथी बन्द करिते शब्द चुप भऽ जाइत / तइयो जीवित बात स्याहीमे अछि

स्याहीक गन्ध सूखल फूल जकाँ निजी स्मृतिक ट्रिगर अछि। लिखित अक्षरक गन्धकैँ श्रवणीय संवाद बनबैत कविता अनुभवक इन्द्रियसभक सीमा पार करैत अछि; पत्र-स्मृतिक पूर्व शृंखलासँ तुलना जरूरी।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पन्नाक बीच सूखल फूल आबो महकैए / मनक एक बरसात स्याहीमे अछि” आ फेर “खाली हाथ भेटल नेहक चिन्ह भेटल नहि / ओ अनकहल सौगात स्याहीमे अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकैँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बहुत दिनक दबल बात स्याहीमे अछि” आ अन्त “तइयो जीवित बात स्याहीमे अछि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकैँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २३२ : कारीगरक हाथ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः
हाथ कहैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घाममे पकैत काम हाथ कहैए / श्रमसँ बनैत नाम हाथ
कहैए / ईटक पाछाँ ककर पसिना अछि, देखू / घरमे पूरा गाम हाथ कहैए / माटि
आकार लैत अछि अँगुरीक छुअनसँ / मूर्तिक अपन धाम हाथ कहैए / देह थाकए
तऽ काज छोड़ब आलस नहि / श्रमकें चाही विराम हाथ कहैए / नाम नहि छपल
तइयो काज नहि मेटै / जीवनक साँच काम हाथ कहैए

ईट, घर आ कारीगरक हाथक सम्बन्ध भवनकें केवल भौतिक वस्तु नहि मानैत ।
'घरमे पूरा गाम'क सूत्र सङ्गठित श्रमक दृश्य अनैत अछि, यद्यपि मजदूरक
अलग परिचय एखन कम ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ईटक पाछाँ ककर पसिना अछि, देखू / घरमे
पूरा गाम हाथ कहैए” आ फेर “देह थाकए तऽ काज छोड़ब आलस नहि / श्रमकें
चाही विराम हाथ कहैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति
कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक
एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “घाममे पकैत काम हाथ कहैए” आ अन्त “जीवनक साँच
काम हाथ कहैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २३३ : साँझक रेल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः रेल चलि गेल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हाथ हिलैत रहल दुआर—रेल चलि गेल / पाछाँ छुटल
छोट संसार—रेल चलि गेल / खिड़कीसँ खेत धीरे-धीरे पाछाँ सरकल / मोनमे
जागल विचार—रेल चलि गेल / माय किछु नहि कहल, आँखि बहुत किछु कहल
/ बिनु शब्दक पुकार—रेल चलि गेल / एक मीत प्लेटफार्म पर बहुत देर ठाढ़
रहल / मौन भेल व्यवहार—रेल चलि गेल / पटरिक धुन बहुत दूर धरि कानमे
रहल / बाँचल एक झंकार—रेल चलि गेल

चलैत रेलक खिड़कीसँ पाछाँ सरकैत खेत विदाक भावकेँ गतिशील दृश्यमे बदलैत
अछि । प्लेटफार्मपर ठाढ़ लोक आ शहर दिस जा रहल यात्राक दृष्टि एक-दोसराकेँ
काटैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खिड़कीसँ खेत धीरे-धीरे पाछाँ सरकल /
मोनमे जागल विचार—रेल चलि गेल” आ फेर “एक मीत प्लेटफार्म पर बहुत देर
ठाढ़ रहल / मौन भेल व्यवहार—रेल चलि गेल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक
परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हाथ हिलैत रहल दुआर—रेल चलि गेल” आ अन्त
“बाँचल एक झंकार—रेल चलि गेल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन
जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा
एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि ।
मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित
गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र
उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २३४ : फेर सोझाँ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः मोल · रदीफः फेर सोझाँ ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रूसल छल जे बोल—फेर सोझाँ / बुझल नेहक मोल—
फेर सोझाँ / बन्द खिड़कीसँ हवा कतऽ धरि रुकत / खुलल मनक खोल—फेर
सोझाँ / एक वाक्ये सम्बन्ध डगमगा सकैए / तइयो नहि डोल—फेर सोझाँ /
कतेक बरखक दूरी एक क्षणमे पिघलल / मीत भेटल अनमोल—फेर सोझाँ / गीत
अधूरा छल, दू स्वर मिलि पूरा भेल / बाजल पुरनका बोल—फेर सोझाँ

बन्द खिड़कीक चित्र क्रियाशील संवादक पुरान बिम्बे अछि, मुदा फेर सोझाँ
आबब क्षमाक सक्रिय निर्णय बनैत अछि । पुराने कथनक फेर आवृत्ति एकर
सीमा ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बन्द खिड़कीसँ हवा कतऽ धरि रुकत / खुलल
मनक खोल—फेर सोझाँ” आ फेर “कतेक बरखक दूरी एक क्षणमे पिघलल / मीत
भेटल अनमोल—फेर सोझाँ”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक
विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस
मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल
अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रूसल छल जे बोल—फेर सोझाँ” आ अन्त “बाजल
पुरनका बोल—फेर सोझाँ”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २३५ : अपन उजास

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः अपन उजास ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रातिमे राखू आस—अपन उजास / मोनमे पुरनका सुवास—अपन उजास / लोकक प्रशंसा बदलैत रहै दिन-दिन / भीतरक विश्वास—अपन उजास / जीवन केवल पाबय-पाबय नहि होइ छै / सिखबाक सेहो प्यास—अपन उजास / उमेर देहक चाल कने धीमी करि सकैए / कंठमे बचल साँस—अपन उजास / दुनिया जतेक शोर करए, निर्णय अपनेक / आँखिमे राखू आस—अपन उजास

बाहरी प्रशंसा अस्थायी आ भीतरक विश्वास अपेक्षाकृत टिकाउ—एहि विरोधसँ स्वतंत्र आत्ममूल्यक आग्रह अछि । उजासक रूपक कई बेर दोहरायल गेल, तथापि आलोचनाक केन्द्र आत्मविश्वासक बाह्य निर्भरता सँ मुक्तिक प्रश्न अछि । रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “लोकक प्रशंसा बदलैत रहै दिन-दिन / भीतरक विश्वास—अपन उजास” आ फेर “उमेर देहक चाल कने धीमी करि सकैए / कंठमे बचल साँस—अपन उजास”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रातिमे राखू आस—अपन उजास” आ अन्त “आँखिमे राखू आस—अपन उजास”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २३६ : अधूरा पन्ना

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः अधूरा नहि ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : एक पाँती रुकल तऽ गीत अधूरा नहि / एक दिन रूसल तऽ प्रीत अधूरा नहि / सभ मीत जीवनभरि संग नहि रहि सकैए / दूर भेलासँ मीत अधूरा नहि / पुरनका स्मृति सभटा साफ नहि रहि सकैए / धुँधल भेल अतीत अधूरा नहि / हारि कऽ फेर उठब जीतक एक रूप अछि / रुकल क्षणसँ जीत अधूरा नहि / पोथी अन्तिम पृष्ठ धरि पहुँचि नहि सकल / तइयो कहल गीत अधूरा नहि

अधूरा पन्नाकेँ असफल रचनाक अन्त नहि, आगाँक सम्भावना कहल गेल अछि । मीतक दूरी आ हारक अनुभव अपूर्णताकेँ मनुष्यगत स्थिति मानैत अछि, केवल प्रेरक नारा नहि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत जीवनभरि संग नहि रहि सकैए / दूर भेलासँ मीत अधूरा नहि” आ फेर “हारि कऽ फेर उठब जीतक एक रूप अछि / रुकल क्षणसँ जीत अधूरा नहि”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “एक पाँती रुकल तऽ गीत अधूरा नहि” आ अन्त “तइयो कहल गीत अधूरा नहि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २३७ : पुरनका रेडियो

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -जज · रदीफः फेर बजल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूलि झाड़िते आवाज फेर बजल / घरक कोनमे पुरनका साज फेर बजल / जे गीत सुनि कऽ बाबू चुपचाप मुस्कैत छलथि / ओहि स्वरक अनकहल राज फेर बजल / समय बदलल, यन्त्र बदलल, सुनबाक ढंग बदलल / तइयो नेहक पुरनका अंदाज फेर बजल / खिड़की बाहर साँझ उतरि रहल छल धीरे / भीतर पूरा एक समाज फेर बजल / बन्द बुझाइट चीज सभ दिन मृत नहि होइ / छुअन पाबिते आवाज फेर बजल

धूरि झाड़ला पाछाँ रेडियोक आवाज फेर सुनाइ देनाइ स्मृतिक अत्यन्त ठोस क्रिया अछि । बाबूक चुप मुस्की आ पुरान गीत वस्तुकेँ निजी इतिहासक संग्रहालय बना दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे गीत सुनि कऽ बाबू चुपचाप मुस्कैत छलथि / ओहि स्वरक अनकहल राज फेर बजल” आ फेर “खिड़की बाहर साँझ उतरि रहल छल धीरे / भीतर पूरा एक समाज फेर बजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।

एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धूलि झाड़िते आवाज फेर बजल” आ अन्त “छुअन पाबिते आवाज फेर बजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २३८ : मेह उतरला पर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २०-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास • रदीफः मेह उतरला पर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माटि देलक सुवास मेह उतरला पर / धरती बुझलक प्यास मेह उतरला पर / छप्पर टपकल, बाल्टी सभ राति भरि भरैत रहल / तइयो बचल छल आस मेह उतरला पर / बहुत दिनसँ सूखल गाछक पात हिलल / फेर जागल विश्वास मेह उतरला पर / खेतक मेड़ पर नेना नाडर पएर दौडल / धरती लेल साँस मेह उतरला पर / मोनमे जे धूरि बहुत दिनसँ जमल छल / ओहो भेल सुवास मेह उतरला पर

छप्परक टपकैत पानि आ बाल्टी भरबाक राति मेहक दोहरा पक्ष देखबैत अछि— माटिक सुवास आ घरक श्रम/असुविधा । प्रकृति-सौन्दर्यकेँ एकमात्र भाव बननाइ सँ बचबाक उपलब्धि एतय अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “छप्पर टपकल, बाल्टी सभ राति भरि भरैत रहल / तइयो बचल छल आस मेह उतरला पर” आ फेर “खेतक मेड़ पर नेना नाडर पएर दौडल / धरती लेल साँस मेह उतरला पर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माटि देलक सुवास मेह उतरला पर” आ अन्त “ओहो भेल सुवास मेह उतरला पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः २०-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २३९ : शहरक कोठरी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २०-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ल · रदीफः एहि कोठरीमे ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : के पूछत मोनक हाल एहि कोठरीमे / उठैत रहै सवाल
एहि कोठरीमे / खिड़कीसँ आकाशक छोट टुकड़ा देखाइत / ओतबे बनै खयाल
एहि कोठरीमे / कामक बाद फोनक रोशनी दीवार चढ़ै / राति बुनै अपन जाल
एहि कोठरीमे / गामक बात सुनिते आँखि कने भीजि जाए / नहि कहि सकै
मलाल एहि कोठरीमे / एक दिन अपन घर बनत—एहि आसक संग / बाँचि रहल
खयाल एहि कोठरीमे

शहरक कोठलीक छोट खिड़कीसँ देखाइत अकास प्रवासी जीवनक संकुचित स्थान-बोध अछि । भीड़वला नगर आ निजी एकान्तक भेदक चित्र गजलक वैयक्तिक स्वरकें गाढ़ करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खिड़कीसँ आकाशक छोट टुकड़ा देखाइत / ओतबे बनै खयाल एहि कोठरीमे” आ फेर “गामक बात सुनिते आँखि कने भीजि जाए / नहि कहि सकै मलाल एहि कोठरीमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “के पूछत मोनक हाल एहि कोठरीमे” आ अन्त “बाँचि रहल खयाल एहि कोठरीमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः २०-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २४० : औजारक चमक

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः हाथमे अछि ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पीढ़ीक पुरनका औजार हाथमे अछि / लकड़ीक नव आकार हाथमे अछि / नाप कखनो आँखिसँ, कखनो अँगुरीसँ लेल जाइ / वर्षक अभ्यास-व्यवहार हाथमे अछि / दुकान छोट अछि, मुदा काजक सीमा छोट नहि / एक पूरा संसार हाथमे अछि / नाम कागजपर नहि, काज लोकक घरमे बचल / ओहि स्मृतिक आधार हाथमे अछि / श्रमक चमक सोना जकाँ बाजार नहि माँगै / अपन साँच औजार हाथमे अछि

अँगुरी आ आँखिसँ लेल गेल नाप कारीगरक देहगत ज्ञान देखबैत अछि । पुरनका औजारसँ नव आकार बनब परम्परा आ नवाचारकें टकराव नहि, श्रमसाधित निरन्तरता मानैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नाप कखनो आँखिसँ, कखनो अँगुरीसँ लेल जाइ / वर्षक अभ्यास-व्यवहार हाथमे अछि” आ फेर “नाम कागजपर नहि, काज लोकक घरमे बचल / ओहि स्मृतिक आधार हाथमे अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पीढ़ीक पुरनका औजार हाथमे अछि” आ अन्त “अपन साँच औजार हाथमे अछि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २२१-२४० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : २२३/१५० (“मेहक बाद”/“फेर आबि गेल”); २२४/१३ (“मौनक स्वर”/“कने सुनू”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्वरचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकँ हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल २४१ : देह कहैए

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म · रदीफः देह कहैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दिन भरि बहुत भेल काम—देह कहैए / कने चाही आराम—देह कहैए / दौड़ निरन्तर साहसक एक्के चिन्ह नहि / बीचमे लिअ विराम—देह कहैए / उमेर बढ़लासँ मनक सपना घटि नहि जाए / बदलै केवल नाम—देह कहैए / निन्न, भुख, थकान सभ संकेत व्यर्थ नहि / देहो अपन धाम—देह कहैए / गीत जँ साँसक गति बुझि कऽ गाओल जाए / तखन सहज हो काम—देह कहैए

‘देह कहैए’क कथावाचक शरीर स्वयं अछि। विश्रामकँ आलस्यक बदला श्रमक आवश्यकता मानबाक विचार मापन, उत्पादन आ स्वस्थ जीवनक सम्बन्धपर प्रश्न उठबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दौड़ निरन्तर साहसक एक्के चिन्ह नहि / बीचमे लिअ विराम—देह कहैए” आ फेर “निन्न, भुख, थकान सभ संकेत व्यर्थ नहि / देहो अपन धाम—देह कहैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र

दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दिन भरि बहुत भेल काम—देह कहैए” आ अन्त “तखन सहज हो काम—देह कहैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४२ : चिट्ठीक कोर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -द · रदीफः चिट्ठीक कोरपर।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अटकल अछि याद चिट्ठीक कोरपर / लिखल नहि गेल फरियाद चिट्ठीक कोरपर / स्याही धूमिल भेल, मुदा अक्षर एखनहु बोलै / बाँचल पुरनका संवाद चिट्ठीक कोरपर / घरक पता बदलल, लोक दूर देश चलि गेल / एक आँगन आबाद चिट्ठीक कोरपर / जे बात न कहला पर सम्बन्ध दूर भेल / ओहि मौनक संवाद चिट्ठीक कोरपर / पन्ना मोड़िते समय फेर हाथ धऽ लैत अछि / फेर जागै ओ याद चिट्ठीक कोरपर

चिट्ठीक कोरपर अधूरी फरियाद लिखल नहियो रहि उपस्थिति रखैत अछि। धूमिल स्याही आ अक्षरक जीवित आवाज पत्रकेँ भौतिक स्मृति बनबैत अछि; पहिनुक १६१ आ १८५ सँ जाँच आवश्यक।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “स्याही धूमिल भेल, मुदा अक्षर एखनहु बोलै / बाँचल पुरनका संवाद चिट्ठीक कोरपर” आ फेर “जे बात न कहला पर सम्बन्ध दूर भेल / ओहि मौनक संवाद चिट्ठीक कोरपर”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अटकल अछि याद चिट्ठीक कोरपर” आ अन्त “फेर जागै ओ याद चिट्ठीक कोरपर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४३ : फेर आरम्भ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह · रदीफ: फेर आरम्भ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रुकि गेल बाट तऽ खोजू राह—फेर आरम्भ / मोनमे बाँचल रहए चाह—फेर आरम्भ / लोक कहत उमेर बीतल, आब की नब होएत / राखू भीतर साफ निगाह—फेर आरम्भ / आन्ही कतेको बेर छप्पर हिला देत / पहिने खोजू सुरक्षित पनाह—फेर आरम्भ / सीखबाक सागर ककरो उमेर नहि पूछै / ज्ञान एखनहु अथाह—फेर आरम्भ / एक अधूरा गीत कंठमे साँस लऽ रहल / ओकरा दिअ नब राह—फेर आरम्भ

समाप्त बुझायल बाटकें पुनः शुरू करबाक आग्रहक बीच उमेर बीतलाक लोक-आपत्ति उपस्थित अछि। नब आरम्भक निर्णयक प्रश्न ठोस, मुदा राह-चाहक काफिया पुरान प्रेरक गजलसभसँ पुनरुक्त।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “लोक कहत उमेर बीतल, आब की नब होएत / राखू भीतर साफ निगाह—फेर आरम्भ” आ फेर “सीखबाक सागर ककरो उमेर नहि पूछै / ज्ञान एखनहु अथाह—फेर आरम्भ”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रुकि गेल बाट तऽ खोजू राह—फेर आरम्भ” आ अन्त “ओकरा दिअ नब राह—फेर आरम्भ”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४४ : जाइक धूप

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास · रदीफ: जाइक धूपमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँगन भरि पसरल उजास जाइक धूपमे / अँचर जकाँ कोमल सुवास जाइक धूपमे / पुरनका पीढ़ी पर बाबा चुपचाप बैसल छथि / आँखिमे बाँचल आस जाइक धूपमे / देहक पीर कने देर लेल हलुक भऽ जाइत / फेर जगै विश्वास जाइक धूपमे / गाछक पातसँ ओसक बूँद धीरे खसैत / धरती लैत अछि साँस जाइक धूपमे / गीत नहि बाजै, तइयो घर संगीत बनैए / मौनक मधुर उजास जाइक धूपमे

जाइक धूपमे बैसल बाबाक चुप्पी पारिवारिक संवादक धीम दृश्य अछि। अँचरक सुवास आ आँगनक उजास ठंडक समयमे ऊष्माक प्रतीक बनैत अछि; एहिमे पीढ़ीगत सम्बन्धक सूक्ष्मता अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पुरनका पीढ़ी पर बाबा चुपचाप बैसल छथि / आँखिमे बाँचल आस जाइक धूपमे” आ फेर “गाछक पातसँ ओसक बूँद धीरे खसैत / धरती लैत अछि साँस जाइक धूपमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “आँगन भरि पसरल उजास जाइक धूपमे” आ अन्त “मौनक मधुर उजास जाइक धूपमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४५ : बिहानक बजार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २१-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ज · रदीफ: बिहान बजारमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पहिल उठै आवाज बिहान बजारमे / ठेला सजै जकाँ साज बिहान बजारमे / सब्जीक टोकरी, दूधक डिब्बा, फूलक गन्ध / जीवनक अपन अंदाज बिहान बजारमे / कियो मोल करै, कियो उधार लिखबैत अछि / देखाइ पूरा समाज बिहान बजारमे / हाथक कमाइ हाथे-हाथ घर दिस चलैए / श्रमक अनकहल राज बिहान बजारमे / सूरज ऊपर चढ़िते भीड़ दिशा बदलैत / थमि जाइ पहिल आवाज बिहान बजारमे

ठेला, सब्जीक टोकरी, दूधक डिब्बा आ फूलक गन्ध बजारक रंगकें लोकक श्रमसँ जोड़ैत अछि। सामानक आवागमन आ आवाजसभक समूह काव्यकें सूची बनबाक जोखिमक संग जीवित ध्वनि सेहो दैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सब्जीक टोकरी, दूधक डिब्बा, फूलक गन्ध / जीवनक अपन अंदाज बिहान बजारमे” आ फेर “हाथक कमाइ हाथे-हाथ घर दिस चलैए / श्रमक अनकहल राज बिहान बजारमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पहिल उठै आवाज बिहान बजारमे” आ अन्त “थमि जाइ पहिल आवाज बिहान बजारमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २१-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४६ : करघाक सुर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २०-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ङा • रदीफ: करघा बाजैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सूत्रमे जागै रंग—करघा बाजैए / हाथक लयक संग—
करघा बाजैए / एक-एक तानामे बखक अभ्यास बसल / चलै धागाक तरंग—करघा
बाजैए / घर छोटा अछि, मुदा कारीगरीक आकाश पैघ / आँखिमे अछि उमंग—
करघा बाजैए / यन्त्र तेज हो, तइयो हाथक ज्ञान अलग / पीढ़ीक अपन ढंग—
करघा बाजैए / कपडा केवल वस्त्र नहि, श्रमक कथा सेहो / बाँचल लोकक रंग—
करघा बाजैए

करघाक ताना-बानाक लयमे पीढ़ीक अभ्यास बसल अछि; रंग ‘सूत्रमे जागै’ कहब श्रमसँ दृश्य कला बनबाक प्रक्रिया अछि। करघा स्वतन्त्र कथावाचकक तरह ध्वनि दैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक-एक तानामे बखक अभ्यास बसल / चलै धागाक तरंग—करघा बाजैए” आ फेर “यन्त्र तेज हो, तइयो हाथक ज्ञान अलग / पीढ़ीक अपन ढंग—करघा बाजैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सूत्रमे जागै रंग—करघा बाजैए” आ अन्त “बाँचल लोकक रंग—करघा बाजैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २०-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४७ : पुरनका पुस्तकालय

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -द · रदीफ: पोथी खोलिते।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूरिसँ उठै याद पोथी खोलिते / अक्षर करै संवाद पोथी खोलिते / ककरो रेखाङ्कन, ककरो कोरपर छोट टिप्पणी / सुनाइ पुरनका फरियाद पोथी खोलिते / जे लोक आव नहि छथि, हस्ताक्षर तइयो बाँचल / कमरा होइ आबाद पोथी खोलिते / नब पाठक पुरनका प्रश्नकें नब अर्थ दैए / बदलै ज्ञानक स्वाद पोथी खोलिते / पन्ना पीयर भेल, मुदा समय सूखल नहि / फेर जागै याद पोथी खोलिते

पुस्तकालयक कोरपरक टिप्पणी आ रेखाङ्कन अघिल्ला पाठकक अदेखल उपस्थितिक निशान अछि। ई पुस्तकालयकें पुस्तकक ढेर नहि, अनेक पीढ़ीक संवादक स्थल मानैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ककरो रेखाङ्कन, ककरो कोरपर छोट टिप्पणी / सुनाइ पुरनका फरियाद पोथी खोलिते” आ फेर “नब पाठक पुरनका प्रश्नकें नब अर्थ दैए / बदलै ज्ञानक स्वाद पोथी खोलिते”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धूरिसँ उठै याद पोथी खोलिते” आ अन्त “फेर जागै याद पोथी खोलिते”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४८ : अपन सीमा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: सीमा बुझू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अपनो अछि मान—सीमा बुझू / नेहमे राखू ईमान—
सीमा बुझू / सभकें प्रसन्न रखब जीवनक धर्म नहि होइ / बचाउ अपन पहिचान—
सीमा बुझू / जे सम्बन्ध बारम्बार मनकें चोट पहुँचाबए / राखू अपन सम्मान—
सीमा बुझू / देनाइ नीक, मुदा अपना कें शून्य नहि करू / अपनो अछि एक जान
—सीमा बुझू / गीत जँ कंठ थका दे तऽ क्षण भरि मौन रहू / साँसक सेहो मान—
सीमा बुझू

निकटता आत्म-विलय नहि हो—एहि विचारकें ‘सीमा बुझू’ रदीफ स्पष्ट करैत अछि। सभकें प्रसन्न करबाक बाध्यता अस्वीकार करब किशोर/वयस्क दुनू पाठक लेल उपयोगी, मुदा निजी निर्णयक विशिष्ट प्रसङ्ग सीमित।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभकें प्रसन्न रखब जीवनक धर्म नहि होइ / बचाउ अपन पहिचान—सीमा बुझू” आ फेर “देनाइ नीक, मुदा अपना कें शून्य नहि करू / अपनो अछि एक जान—सीमा बुझू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अपनो अछि मान—सीमा बुझू” आ अन्त “साँसक सेहो मान—सीमा बुझू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २४९ : प्रवासक टिकट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: टिकट हाथमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पाछाँ छुटत संसार टिकट हाथमे / माय ठाढ़ छथि
दुआर टिकट हाथमे / कमाइ लेल दूर जाएब जरूरी बुझाईत अछि / मोनमे हजार
विचार टिकट हाथमे / रेल आवि रहल, भीड़ धीरे आगाँ बढ़ैए / कानमे घरक पुकार
टिकट हाथमे / शहर कतेक अपन होएत, समय कहत / एखन अनचिन्हार
व्यवहार टिकट हाथमे / पए आगाँ बढ़ल, आँखि पाछाँ घुरैत रहल / दू दिशाक
संसार टिकट हाथमे

टिकट हाथमे आ माय दुआरपर—प्रवासक विस्थापन दू ठोस वस्तुमे सिमटल अछि। कमाइक आवश्यकता आ घर छोड़बाक भावनात्मक मूल्यक एके क्षणमे तुलना एकर शिल्पगत उपलब्धि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कमाइ लेल दूर जाएब जरूरी बुझाईत अछि / मोनमे हजार विचार टिकट हाथमे” आ फेर “शहर कतेक अपन होएत, समय कहत / एखन अनचिन्हार व्यवहार टिकट हाथमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पाछाँ छुटत संसार टिकट हाथमे” आ अन्त “दू दिशाक संसार टिकट हाथमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २५० : नब गीत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ीत · रदीफ: आब गाबू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पुरनका स्वरमे नब गीत आब गाबू / रूसल मनमे फेर प्रीत आब गाबू / सभ मीत अपन बाट गेल, से जीवनक नियम / यादक संग अपन मीत आब गाबू / अतीतकेँ ढोअब नहि, बुझब जरूरी अछि / सीख बनल अतीत आब गाबू / हारक पाछाँ उठल पएर कम विजय नहि / ओहि साहसक जीत आब गाबू / नाम रहय वा नहि, स्वर लोकक संग रहए / कंठमे बाँचल गीत आब गाबू ‘पुरनका स्वरमे नब गीत’ परम्पराक दोहराव नहि, ओकर रूपान्तरक सम्भावना अछि। वैयक्तिक हानि, मीतक दूरी आ कंठक नव लयक संगति पुरान प्रेरक पदसभसँ निकट।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत अपन बाट गेल, से जीवनक नियम / यादक संग अपन मीत आब गाबू” आ फेर “हारक पाछाँ उठल पएर कम विजय नहि / ओहि साहसक जीत आब गाबू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १४२ “फेर गाबू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “स्वर थाकल तँ कने गीत फेर गाबू” आ एतुक आरम्भ “पुरनका स्वरमे नब गीत आब गाबू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २५१ : जाइक धूप

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: धूपमे बैटू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँगन भरि उजास—धूपमे बैटू / ऊनक पुरनका सुवास—धूपमे बैटू / दिन छोट अछि, मुदा गप्पक बाट लम्बा / मोनमे राखू आस—धूपमे बैटू / उमेर देहक चाल कने धीमी करैए / गीतक भीतर साँस—धूपमे बैटू / बहुत दिनक रूसल बात अपनहि पिघलत / राखू कने विश्वास—धूपमे बैटू / जाइक दिनमे समयो नरम पड़ि जाइत / लेने अपन उजास—धूपमे बैटू

ऊनक पुरनका सुवास आ जाइक छोट दिन समयक सीमाकेँ संवेदनात्मक रंग दैत अछि। गप्पक लम्बा बाट देहगत ऊष्माकेँ सामूहिक स्मृति बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दिन छोट अछि, मुदा गप्पक बाट लम्बा / मोनमे राखू आस—धूपमे बैटू” आ फेर “बहुत दिनक रूसल बात अपनहि पिघलत / राखू कने विश्वास—धूपमे बैटू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “आँगन भरि उजास—धूपमे बैटू” आ अन्त “लेने अपन उजास—धूपमे बैटू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २५२ : बिहानक बजार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म · रदीफः बजार जागल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हाथ लगिते काम—बजार जागल / सब्जीक उठल दाम—बजार जागल / दूधवाला, कुम्हार, फूलवाली, माछ बेचनि / सभक अपन-अपन नाम—बजार जागल / दूर टोला सँ नेना संग माय आबि गेली / एकहि ठाम पूरा गाम—बजार जागल / पहिल ग्राहक भेटिते दुकानदार मुस्किलक / थाकल मोनकेँ आराम—बजार जागल / सूरुज ऊपर चढ़िते गल्ली भरि स्वर भेल / जीवनक नव काम—बजार जागल

कुम्हार, फूलवाली, दूधवाला आ माछ बेचनि सभकेँ बजारक ‘जागब’मे स्थान भेटैत अछि। मूल्यवृद्धिक पाँति रंगीन वर्णनमे आर्थिक तनाव जोड़ैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दूधवाला, कुम्हार, फूलवाली, माछ बेचनि / सभक अपन-अपन नाम—बजार जागल” आ फेर “पहिल ग्राहक भेटिते दुकानदार मुस्किलक / थाकल मोनकेँ आराम—बजार जागल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हाथ लगिते काम—बजार जागल” आ अन्त “जीवनक नव काम—बजार जागल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-

सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २५३ : करघाक धुन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग · रदीफः करघा बाजै ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सूत्रमे जागल रंग—करघा बाजै / हाथक लयक संग—
करघा बाजै / एक-एक धागा जुड़ि कपड़ाक देह बनैए / ओहि लयमे तरंग—करघा
बाजै / दिन भरिक थकान बीचो आँखि चमकैए / कारीगरक उमंग—करघा बाजै /
मशीन तेज हो, मुदा हाथक स्मृति आन / अपन पुरनका ढंग—करघा बाजै /
पोशाक बदलै, मुदा श्रमक स्वर नहि मेटै / पीढ़ी-पीढ़ीक रंग—करघा बाजै

२४६क करघाक तान, रंग आ तरंग लगभग पुनरावृत्त अछि । एतय धागाक ‘कपड़ाक देह’ बनब प्रक्रिया अधिक स्पष्ट, मुदा रूपकक मौलिक परिवर्तन सीमित ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक-एक धागा जुड़ि कपड़ाक देह बनैए / ओहि लयमे तरंग—करघा बाजै” आ फेर “मशीन तेज हो, मुदा हाथक स्मृति आन / अपन पुरनका ढंग—करघा बाजै”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल २४६ “करघाक सुर”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “सूत्रमे जागै रंग—करघा बाजैए” आ एतुक आरम्भ “सूत्रमे जागल रंग—करघा बाजै”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल

गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २५४ : पुरनका पुस्तकालय

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः पीर · रदीफः पन्ना खोलू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जल्दी नहि, कने धीर—पन्ना खोलू / स्याहीमे जमल नीर—पन्ना खोलू / कतेक हाथक चिन्ह कोरपर अबहियो बचल / समयक सूक्ष्म लकीर—पन्ना खोलू / जे लोक अपन पीर मुखसँ कहि नहि सकल / अक्षरमे ओकर पीर—पन्ना खोलू / इतिहास एके राजमहल धरि सीमित नहि / लोकक दोसर तीर—पन्ना खोलू / धूरि झाड़िते शब्द फेर साँस लेत / राखि मनमे धीर—पन्ना खोलू
पन्ना खोलबाक क्रियामे धीरजक आग्रह अधिल्ला पुस्तकालय-बिम्बकें गाढ़ करैत अछि। कागजक कोरपर हाथक चिन्ह पाठककें इतिहासक सह-लेखक बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कतेक हाथक चिन्ह कोरपर अबहियो बचल / समयक सूक्ष्म लकीर—पन्ना खोलू” आ फेर “इतिहास एके राजमहल धरि सीमित नहि / लोकक दोसर तीर—पन्ना खोलू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “जल्दी नहि, कने धीर—पन्ना खोलू” आ अन्त “राखि मनमे धीर—पन्ना खोलू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २५५ :सीमा चिन्हू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः सीमा चिन्हू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : नेहमे सेहो मान—सीमा चिन्हू / सम्बन्धमे ईमान—सीमा
चिन्हू / सभ बात मानब प्रेमक एक्के प्रमाण नहि / राखू अपन पहिचान—सीमा
चिन्हू / ना कहला पर साँच नेह टूटि नहि जाइत / बचत दुनूक सम्मान—सीमा
चिन्हू / चुप रहबो कखनो थकानक रूप होइ छै / फरिछ हो बयान—सीमा चिन्हू
/ जे सम्बन्ध साँस दैए, ओहि सम्बन्धमे सेहो / अपन राखू मान—सीमा चिन्हू

‘सीमा चिन्हू’क वाक्यगत भेद ‘सीमा बुझू’क विचारकै नियमजकाँ कठोर बनबैत
अछि । प्रेममे सभ बात मानब आवश्यक नहि—ई सच्चा विचार, मुदा दूनू गजलक
निकट पुनरावृत्ति निर्णायक ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ बात मानब प्रेमक एक्के प्रमाण नहि /
राखू अपन पहिचान—सीमा चिन्हू” आ फेर “चुप रहबो कखनो थकानक रूप होइ
छै / फरिछ हो बयान—सीमा चिन्हू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।

मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकै छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल २४८ “अपन सीमा”क संग विम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि ।
पहिनुक आरम्भ “अपनो अछि मान—सीमा बुझू” आ एतुक आरम्भ “नेहमे सेहो
मान—सीमा चिन्हू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि;
रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २५६ : प्रवासक टिकट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः टिकटमे रहल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घर छोड़बाक बात टिकटमे रहल / स्टेशनक ओ रात
टिकटमे रहल / खिड़की लग माय बहुत देर धरि ठाढ़ रहली / बिनु शब्दक
मुलाकात टिकटमे रहल / दूर शहरमे पहिल मेह पड़िते माटि महकल / गामक
एक बरसात टिकटमे रहल / काम भेटल, कमाइ भेल, जीवन आगाँ बढ़ल / मायकेँ
पठाओल सौगात टिकटमे रहल / वापसीक तारीख बदलैत रहल बर्ख-दर-बर्ख /
एक अधूरी बात टिकटमे रहल

टिकटमे रहि गेल स्टेशनक राति आ खिड़की लग माय बिनु शब्दक विदाक
मार्मिक दृश्य अछि । २४९क अपेक्षा एतय विस्थापनक सामयिक कष्ट अधिक
ठोस ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खिड़की लग माय बहुत देर धरि ठाढ़ रहली /
बिनु शब्दक मुलाकात टिकटमे रहल” आ फेर “काम भेटल, कमाइ भेल, जीवन
आगाँ बढ़ल / मायकेँ पठाओल सौगात टिकटमे रहल”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।
एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “घर छोड़बाक बात टिकटमे रहल” आ अन्त “एक अधूरी
बात टिकटमे रहल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २५७ : नब गीत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ेर · रदीफः फेर गूँजल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मौन कटिते शोर—फेर गूँजल / राति पाछाँ भोर—फेर
गूँजल / एक पुरनका धुन कियो धीरे सँ छेड़ि देलक / स्मृतिक पतली डोर—फेर
गूँजल / थाकल कंठमे साँस जखन फेर सम्हरल / भीतरक बचल जोर—फेर गूँजल
/ धार शान्त छल, हवा छुबिते काँपि उठल / पानिक नब हिलोर—फेर गूँजल /
गीत पुरान छल, मुदा लोक नब अर्थ देलक / ओही स्वरक भोर—फेर गूँजल

मौन काटि पुरनका धुन फेर गूँजब स्मृतिक ध्वनिक पुनर्जन्म अछि । नब गीतक
आह्वान एतय अनुभवक वास्तविक श्रवण-घटना बनि सामने अबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक पुरनका धुन कियो धीरे सँ छेड़ि देलक /
स्मृतिक पतली डोर—फेर गूँजल” आ फेर “धार शान्त छल, हवा छुबिते काँपि
उठल / पानिक नब हिलोर—फेर गूँजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मौन कटिते शोर—फेर गूँजल” आ अन्त “ओही स्वरक
भोर—फेर गूँजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २५८ : पुरनका चश्मा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः चश्मा पहिरिते ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धुँधल अक्षर आयल पास चश्मा पहिरिते / पन्नामे फेर भेल उजास चश्मा पहिरिते / पुरनका पोथीक बीच दबायल फूल भेटल / मोनमे जागल सुवास चश्मा पहिरिते / जे नाम समयक धूरिमे आधा मेटि गेल छल / फेर जगल विश्वास चश्मा पहिरिते / उमेर आँखिक रोशनी कने कम कऽ सकैए / नहि घटै मनक साँस चश्मा पहिरिते / एक पाँती फेर नव अर्थ लऽ कऽ चमकल / शब्द आयल पास चश्मा पहिरिते

पुरनका चश्मा पहिरिते धुँधल अक्षर स्पष्ट होनाइ समयक शारीरिक असर याद करबैत अछि । वस्तु स्मृति मात्र नहि, बूढ़ आँखिक देखबाक साधन सेहो अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पुरनका पोथीक बीच दबायल फूल भेटल / मोनमे जागल सुवास चश्मा पहिरिते” आ फेर “उमेर आँखिक रोशनी कने कम कऽ सकैए / नहि घटै मनक साँस चश्मा पहिरिते”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धुँधल अक्षर आयल पास चश्मा पहिरिते” आ अन्त “शब्द आयल पास चश्मा पहिरिते”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २५९ : हाट छुटला पर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २१-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः हाट छुटला पर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : देहपर देखल थकान हाट छुटला पर / खाली भेल सभ दुकान हाट छुटला पर / दिन भरि जे हाथ तरकारी तौलैत रहल / बाँधलक बचल सामान हाट छुटला पर / धानक दामपर बहुत बेर तकरार भेल / चुपचाप घुरल किसान हाट छुटला पर / पाइ गनल गेल, मुदा हँसीक हिसाब नहि / याद रहि गेल पहिचान हाट छुटला पर / लालटेन बुझल, धूरि बाटपर बैसि गेल / राति बनल पहेरेवान हाट छुटला पर

हाट छुटला पर थाकल देह आ खाली दुकान दिनभरिक अदेखल श्रम सामने अनैत अछि । दिनक बाजारक रंगीन सूचीसँ ई गजल अन्तक मानवीय मूल्य-विचार दिस मुडैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दिन भरि जे हाथ तरकारी तौलैत रहल / बाँधलक बचल सामान हाट छुटला पर” आ फेर “पाइ गनल गेल, मुदा हँसीक हिसाब नहि / याद रहि गेल पहिचान हाट छुटला पर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “देहपर देखल थकान हाट छुटला पर” आ अन्त “राति बनल पहेरेवान हाट छुटला पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः २१-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २६० : दीपक धुआँ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः धुआँमे छल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कहि नहि सकल एक बात धुआँमे छल / दीपसँ जागल रात धुआँमे छल / खिड़की बन्द छल, मेघ बाहर कतहु नहि / तइयो मनक बरसात धुआँमे छल / बहुत बरख बाद एक छाया सोझाँ आयल / चुपचाप मुलाकात धुआँमे छल / कियो हाथ खाली आयल, नेह भरि देलक / ओ अनकहल सौगात धुआँमे छल / दीप निभल, मुदा गन्ध देर धरि टिकि रहल / ओकर अंतिम बात धुआँमे छल

दीपक धुआँ आ बन्द खिड़कीक बीच ‘मनक बरसात’ असंगत बाह्य मौसम आ अन्तर्जगतक रूपक अछि । स्याही आ धुआँक स्मृति-शृंखला इन्द्रियगत, मुदा वाक्यगत स्पष्टताक स्थान कतहु अल्प ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खिड़की बन्द छल, मेघ बाहर कतहु नहि / तइयो मनक बरसात धुआँमे छल” आ फेर “कियो हाथ खाली आयल, नेह भरि देलक / ओ अनकहल सौगात धुआँमे छल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कहि नहि सकल एक बात धुआँमे छल” आ अन्त “ओकर अंतिम बात धुआँमे छल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २४१-२६० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : २५३/२४६ (“करघाक धुन”/“करघाक सुर”); २५५/२४८ (“सीमा चिन्हू”/“अपन सीमा”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्वरचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल २६१ : भाषाक बीज

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ीत · रदीफ: रोपैत रहू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : नेनाक कंठमे गीत रोपैत रहू / घरक बोलमे प्रीत रोपैत रहू / दोसर भाषा सीखू, दुनिया दूर धरि देखू / अपन भाषाक मीत रोपैत रहू / पुरनका शब्द सभ संग्रहालय मात्र नहि / जीबैत अतीत रोपैत रहू / भाषा जँ हँसी-खेल-काजमे संग रहत / तखन ओकर जीत रोपैत रहू / पोथी लिखू, मुदा घरक संवादो नहि छुटय / लोकक कंठमे गीत रोपैत रहू

घरक बोलीकें नेनाक कंठमे बीज जकाँ रोपब भाषिक निरन्तरताक जैविक रूपक अछि। आन भाषा सीखबक समर्थन आ मातृभाषा बचायबक आग्रह एक-दोसरा कें निषेध नहि करैत।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दोसर भाषा सीखू, दुनिया दूर धरि देखू / अपन भाषाक मीत रोपैत रहू” आ फेर “भाषा जँ हँसी-खेल-काजमे संग रहत / तखन ओकर जीत रोपैत रहू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस

मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “नेनाक कंठमे गीत रोपैत रहू” आ अन्त “लोकक कंठमे गीत रोपैत रहू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६२ : टूटल पुल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: पुल बनत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धार रहत, एक दिन पार पुल बनत / मोनपर नहि रहत भार पुल बनत / जे सम्बन्ध एक गलत बातसँ टूटि गेल / फेर भेटत विचार पुल बनत / ईंट-पत्थर मात्रे दूरी नहि घटबैत अछि / विश्वासक आधार पुल बनत / दू गामक बीच जखन बाट फेर जुड़त / खुलत नबका दुआर पुल बनत / गीत जँ दू पीढ़ीक स्वरकेँ संग जोड़ए / कंठसँ कंठक पार पुल बनत

टूटल पुल वस्तुगत यातायात बाधाक संग सम्बन्धक टूटनक सेहो प्रतीक अछि। धारक स्थायित्व आ पार करबाक आकांक्षाक बीच पुल बनब व्यक्तिगत क्षमाक सामाजिक रूपक बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे सम्बन्ध एक गलत बातसँ टूटि गेल / फेर भेटत विचार पुल बनत” आ फेर “दू गामक बीच जखन बाट फेर जुड़त / खुलत नबका दुआर पुल बनत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धार रहत, एक दिन पार पुल बनत” आ अन्त “कंठसँ कंठक पार पुल बनत”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६३ : सीमा बुझू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: सीमा बुझू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : नेहमे सेहो मान—सीमा बुझू / अपन रहय पहिचान—सीमा बुझू / ककरो निकट रहब अपन इच्छा मेटब नहि / दुनूक रहय सम्मान—सीमा बुझू / हाँ कहब नेह, मुदा हर बेर जरूरी नहि / बचि रहय ईमान—सीमा बुझू / मौन सहमति नहि, प्रश्न विरोध नहि सभ दिन / मोनक सुनू बयान—सीमा बुझू / सम्बन्ध ओतहि नीक जतऽ साँस सहज रहए / अपनो रहय जान—सीमा बुझू

नेहमे निकटता आ इच्छाक स्वतन्त्रता दूनू एकसंग राखबाक आग्रह प्रेमकें अधिकारक रूप नहि मानैत अछि। ‘सीमा बुझू’क पुरान गजलसँ निकट वाक्यरचना ई विषयक पुनरावृत्तिक प्रमाण अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ककरो निकट रहब अपन इच्छा मेटब नहि / दुनूक रहय सम्मान—सीमा बुझू” आ फेर “मौन सहमति नहि, प्रश्न विरोध नहि सभ दिन / मोनक सुनू बयान—सीमा बुझू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल २४८ “अपन सीमा”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “अपनो अछि मान—सीमा बुझू” आ एतुक आरम्भ “नेहमे सेहो मान—सीमा बुझू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६४ : नब पन्ना

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह · रदीफ: नब पन्ना खोलू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पुरनका भूल छोड़ि चुनू राह—नब पन्ना खोलू / मोनमे जे बाँचल चाह—नब पन्ना खोलू / लोक कहत उमेर बीतल, एखन की लिखब / राखि साफ निगाह नब पन्ना खोलू / आन्ही आए तऽ पहिने सुरक्षित ठाम खोजू / पाबि उचित पनाह नब पन्ना खोलू / सीखबाक क्षेत्र ककरो जीवनसँ छोट नहि / ज्ञान रहै अथाह नब पन्ना खोलू / अधूरा गीत यदि एखनहु साँस लऽ रहल / दिअ ओकरा राह नब पन्ना खोलू

नब पन्ना खोलबाक निमन्त्रण उमेर बीतबाक सामाजिक आपत्तिसँ टकराईत अछि। पुरान भूलक पुनर्विचार एहि गजलकें आत्मविकासक कथा बनबैत अछि, यद्यपि राह-चाहक रदीफ-संयोजन अनेक पुरान रचनामे अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “लोक कहत उमेर बीतल, एखन की लिखब / राखि साफ निगाह नब पन्ना खोलू” आ फेर “सीखबाक क्षेत्र ककरो जीवनसँ छोट नहि / ज्ञान रहै अथाह नब पन्ना खोलू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल २५४ “पुरनका पुस्तकालय”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “जल्दी नहि, कने धीर—पन्ना खोलू” आ एतुक आरम्भ “पुरनका भूल छोड़ि चुनू राह—नव पन्ना खोलू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६५ : ओसक बिहान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: ओसक बूँदमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : झलकि उठल बिहान ओसक बूँदमे / घासपर छोट निशान
ओसक बूँदमे / सूरज एखन पूरा आकाश पर नहि चढ़ल / तइयो चमकै जहान
ओसक बूँदमे / दिनक दौड़ एखन दुआर धरि नहि आयल / चुप अछि कतेक
अरमान ओसक बूँदमे / एक छोट प्रतिबिम्ब बहुत किछु कहि जाइत / देखू अपन
पहिचान ओसक बूँदमे / क्षण भरिक जीवनो व्यर्थ नहि होइ छै / बाँचल पूरा
बिहान ओसक बूँदमे

घासपर ओसक बूँदमे पूरा बिहानक चमक अति लघु वस्तुमे विराट जगत देखबाक दृष्टि अछि। सूरज पूरा नहि चढ़ल तइयो इजोत उपलब्ध—ई अधूरा उजासक सौन्दर्य अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सूरज एखन पूरा आकाश पर नहि चढ़ल / तइयो चमकै जहान ओसक बूँदमे” आ फेर “एक छोट प्रतिबिम्ब बहुत किछु कहि जाइत / देखू अपन पहिचान ओसक बूँदमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “झलकि उठल बिहान ओसक बूँदमे” आ अन्त “बाँचल पूरा बिहान ओसक बूँदमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६६ : दर्जीक सुई

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर · रदीफ: सुई चलैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कपडाक छोर सुई चलैए / थाकल हाथक जोर सुई चलैए / राति धरि दीपक नीचाँ आँखि झुकल रहै / धीरे अबैत भोर सुई चलैए / एक टाँक दोसर टाँककेँ चुपचाप जोड़ै / नेह जकाँ एक डोर सुई चलैए / बजार नाम पूछै, काज नामसँ पैघ रहै / बिनु कोनो शोर सुई चलैए / फाटल कपड़ा फेर पहिरबाक योग्य बनै / जीवनक एक छोर सुई चलैए

दर्जीक सुई, थाकल हाथ आ राति धरि जरैत दीप मजदूरक एकान्त श्रमकेँ श्रव्य-दृश्य बनबैत अछि। सिलाइ केवल कपडाक नहि, समय आ जीविकाक जतन अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “राति धरि दीपक नीचाँ आँखि झुकल रहै / धीरे अबैत भोर सुई चलैए” आ फेर “बजार नाम पूछै, काज नामसँ पैघ रहै / बिनु कोनो शोर सुई चलैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कपडाक छोर सुई चलैए” आ अन्त “जीवनक एक छोर सुई चलैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६७ : घाटपर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: घाटपर।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धीरे बहै धार घाटपर / नाव ताकै पार घाटपर / साँझ उतरिते नाविक घर दिस देखैए / दूरसँ अबै हँकार घाटपर / पानि अपन बात कहै बिना शब्दक / बैसि जागै विचार घाटपर / घण्टी बजल, पंछी झुंड बना उड़ि गेल / रहि गेल झंकार घाटपर / लोक अबैत-जाइत, नदी चलैत रहैए / बदलैत संसार घाटपर

नावक बाट तकैत घाट स्थिर ठाम आ चलैत धारक संयोजन बनैत अछि। नाविकक साँझक घर दिस तकब नदीक रोमानी चित्रकें आजीविकाक दिनचर्यामे उतारैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “साँझ उतरिते नाविक घर दिस देखैए / दूरसँ अबै हँकार घाटपर” आ फेर “घण्टी बजल, पंछी झुंड बना उड़ि गेल / रहि गेल झंकार घाटपर”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धीरे बहै धार घाटपर” आ अन्त “बदलैत संसार घाटपर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें

आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६६ : पुरनका पोथी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ङग · रदीफ: पोथी खोलिते।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : फेर उभरल रंग पोथी खोलिते / जागि उठल प्रसंग पोथी खोलिते / बीच पन्नामे सूखल फूल एखनहु बचल / घुरि आयल संग पोथी खोलिते / एक पाँती पहिने बुझल छलहुँ दोसर ढंगसँ / मोनमे नब तरंग पोथी खोलिते / जे नाम समयक धूरिमे आधा मेटि गेल / आँखिमे भेल उमंग पोथी खोलिते / पोथी केवल कागज नहि, समयक कोठरी / फेर जी उठल रंग पोथी खोलिते

पोथी खोलिते भेटल सूखल फूल स्मृतिक पूर्व रचनासभक बिम्ब अवश्य अछि, मुदा एतय पुस्तक स्वयं पुरान संगक उपस्थितिक माध्यम बनैत अछि। विशिष्ट नव अर्थक कसौटी एही वापसीपर लागू होयत।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बीच पन्नामे सूखल फूल एखनहु बचल / घुरि आयल संग पोथी खोलिते” आ फेर “जे नाम समयक धूरिमे आधा मेटि गेल / आँखिमे भेल उमंग पोथी खोलिते”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल २४७ “पुरनका पुस्तकालय”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “धूरिसँ उठै याद पोथी खोलिते” आ एतुक आरम्भ “फेर उभरल रंग पोथी खोलिते”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल

गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २६९ : बिना कहल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ेल · रदीफः बिना कहल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बुझि गेलहुँ नेहक मोल बिना कहल / आँखि कहि गेल कतेक बोल बिना कहल / दुआरपर ठाढ़ रहि कऽ बस एक बेर मुस्केलहुँ / मोन खुलि गेल खोल बिना कहल / समयक आन्ही सम्बन्ध कने हिला सकैए / तइयो नहि गेल डोल बिना कहल / हाथ खाली छल, मुदा संग रहब पैघ दान / भेटल किछु अनमोल बिना कहल / गीत पूरा नहि गायल, सुर तइयो रहि गेल / कंठ कहि गेल बोल बिना कहल

बिना कहल नेहक अर्थ बुझब भाषाक अतिक्रमण नहि, देहभाषाक महत्व अछि।

दुआरपर एक क्षणक मुस्की नाटकीय घटना बनि उठैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दुआरपर ठाढ़ रहि कऽ बस एक बेर मुस्केलहुँ / मोन खुलि गेल खोल बिना कहल” आ फेर “हाथ खाली छल, मुदा संग रहब पैघ दान / भेटल किछु अनमोल बिना कहल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बुझि गेलहुँ नेहक मोल बिना कहल” आ अन्त “कंठ कहि गेल बोल बिना कहल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २७० : अहाँक संग

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः अहाँक संग ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : लम्बा हो तइयो राह अहाँक संग / मोनमे बाँचल चाह अहाँक संग / आन्ही आयल तऽ छाँह कतहु कम पड़ि सकैए / भेटि जाए पनाह अहाँक संग / सभ उत्तर हमरा लग रहत, जरूरी नहि / साफ रह्य निगाह अहाँक संग / मत अलग हो, तइयो नेह कम किएक होएत / सुनब एक-दोसर सलाह अहाँक संग / गीत जँ दू स्वर मिलि कऽ साँस लऽ सकए / बनत नबका राह अहाँक संग

‘अहाँक संग’क रदीफ व्यक्ति आ राहक सम्बन्धकँ एकहि सूत्रमे बाँधैत अछि । आन्हीमे कम पड़ैत छाँहक अनुभव आश्वासनकँ अनिश्चितताक भीतर राखैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “आन्ही आयल तऽ छाँह कतहु कम पड़ि सकैए / भेटि जाए पनाह अहाँक संग” आ फेर “मत अलग हो, तइयो नेह कम किएक होएत / सुनब एक-दोसर सलाह अहाँक संग”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ५ “अहाँक बाद”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “घर तँ घर रहल, नै संसार अहाँक बाद” आ एतुक आरम्भ “लम्बा हो तइयो राह अहाँक संग”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७१ : एखन लिखू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीर · रदीफः एखन लिखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जे दबल रहि गेल पीर एखन लिखू / जे समय मेटेलक
लकीर एखन लिखू / इतिहास केवल जीतक चमकसँ पूरा नहि / हारल लोकक धीर
एखन लिखू / सूखल धरती पानि लेल कतेक दिन ताकल / ओकर चाहल नीर
एखन लिखू / धार बदलल तऽ गामक नक्शो बदलि गेल / डूबि गेल जे तीर एखन
लिखू / कलम थाकल हो, मुदा बात एखन बाकी / अन्तिम बचल पीर एखन लिखू

इतिहासमे हारल लोकक धैर्यक पाँति जोड़बाक आग्रह कथाक अधिकारकें
विजेताक दस्तावेजसँ बाहर बढ़वैत अछि । समय मेटाओल लकीरकें लिखब
साहित्यिक पुनर्स्थापनाक क्रिया अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “इतिहास केवल जीतक चमकसँ पूरा नहि /
हारल लोकक धीर एखन लिखू” आ फेर “धार बदलल तऽ गामक नक्शो बदलि
गेल / डूबि गेल जे तीर एखन लिखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र
दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल
गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “जे दबल रहि गेल पीर एखन लिखू” आ अन्त “अन्तिम
बचल पीर एखन लिखू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७२ : जाड़क धूप

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास • रदीफ: जाड़क धूपमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँगन भरि गेल उजास जाड़क धूपमे / बाबा सभ बैसल पास जाड़क धूपमे / तिल-गुड़क संग पुरनका कथा फेर खुलल / घर भरि उठल सुवास जाड़क धूपमे / हाड़ कंपबैत पवनो कने नरम पड़ि गेल / देह लऽ रहल साँस जाड़क धूपमे / दिन छोटा अछि, मुदा मोनक गप्प लम्बा / साँझ धरि बाँचल आस जाड़क धूपमे / एकटा सरल बिहान कतेक धन देत अछि / मनमे रहि गेल उजास जाड़क धूपमे

जाड़क धूपमे तिल-गुड़ आ बाबासभक संग खुलैत कथा भोजन, ऋतु आ मौखिक इतिहासकें जोड़ैत अछि। अधिल्ला जाड़क धूप रचनासँ ई पारिवारिक विशिष्टता मूल्यवान भेद अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “तिल-गुड़क संग पुरनका कथा फेर खुलल / घर भरि उठल सुवास जाड़क धूपमे” आ फेर “दिन छोटा अछि, मुदा मोनक गप्प लम्बा / साँझ धरि बाँचल आस जाड़क धूपमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल २४४क शीर्षक सेहो “जाड़क धूप” अछि। दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि; केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २७३ : लोहारक आगि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः आगिक सोझाँ ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : चमकि उठल औजार आगिक सोझाँ / लोहा लैत आकार
आगिक सोझाँ / हथौड़ीक चोट खाली तोड़ैत नहि रहै / गढै नबका प्रहार आगिक
सोझाँ / दुकान छोटे, मुदा दिन भरि काजक गन्ध / बसल एक संसार आगिक
सोझाँ / पसिनाक बूँद चमकै लोहाक चमकसँ / श्रमक चमक अपार आगिक सोझाँ
/ साँझ पड़िते हथौड़ी चुप भऽ गेल मुदा / कानमे रहल झंकार आगिक सोझाँ

लोहारक हथौड़ीक चोट तोड़बाक बदला गढबाक क्रिया बनैत अछि । आगिक
कठोरता आ आकारक नवता श्रमक सर्जनात्मक रूप देखवैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हथौड़ीक चोट खाली तोड़ैत नहि रहै / गढै
नबका प्रहार आगिक सोझाँ” आ फेर “पसिनाक बूँद चमकै लोहाक चमकसँ /
श्रमक चमक अपार आगिक सोझाँ”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “चमकि उठल औजार आगिक सोझाँ” आ अन्त “कानमे
रहल झंकार आगिक सोझाँ”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७४ : पुरनका चित्र

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म • रदीफः फेर जागल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : चित्र देखिते पुरनका गाम फेर जागल / ओठपर बिसरल नाम फेर जागल / पाछाँ माटिक भीत, सोझाँ नेनाक हँसी / बालपनक छोट धाम फेर जागल / माय कोनमे ठाढ़, हाथमे काज अधूरा / ओकर चुपचाप काम फेर जागल / बाबूक आँखि कैमरा दिस नहि, दूर कतहु / सोचमे पड़ल विराम फेर जागल / कागज पीयर भेल, समय तइयो नहि मेटलक / एक पूरा गाम फेर जागल

पुरनका चित्र देखिते जागैत गाम दृश्य अभिलेखक स्मृति-शक्ति देखबैत अछि । माटिक भीत आ नेनाक हँसी ठोस स्थानक संग बाल्यक काल जोड़ैत अछि । रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पाछाँ माटिक भीत, सोझाँ नेनाक हँसी / बालपनक छोट धाम फेर जागल” आ फेर “बाबूक आँखि कैमरा दिस नहि, दूर कतहु / सोचमे पड़ल विराम फेर जागल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “चित्र देखिते पुरनका गाम फेर जागल” आ अन्त “एक पूरा गाम फेर जागल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७५ : पुल पार करैत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीर · रदीफः पुल पार करैत ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पाछाँ छुटल तीर पुल पार करैत / नीचाँ चमकल नीर
पुल पार करैत / धार बदलल तऽ गामक नकशो बदलि गेल / मेटि गेल लकीर
पुल पार करैत / जे घर एक बाढ़िमे आधा बहि गेल छल / मोनमे उठल पीर पुल
पार करैत / गाड़ी तेज छल, आँखि नदीपर अटकल / राखलहुँ कने धीर पुल पार
करैत / एक किनार छोड़ि दोसर दिस बढ़ब जीवन / बुझि गेलहुँ नीर पुल पार
करैत

पुल पार करैत आँखि नीचाँक नदी आ पाछाँ छुटल तीर दुनू देखैत अछि । बदलल धारसँ नकशो बदलल—ई केवल व्यक्तिगत यात्रा नहि, भूगोलक परिवर्तनीयताक चिन्तन अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धार बदलल तऽ गामक नकशो बदलि गेल / मेटि गेल लकीर पुल पार करैत” आ फेर “गाड़ी तेज छल, आँखि नदीपर अटकल / राखलहुँ कने धीर पुल पार करैत”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पाछाँ छुटल तीर पुल पार करैत” आ अन्त “बुझि गेलहुँ नीर पुल पार करैत”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७६ : लोकक कंठमे

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः लोकक कंठमे ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भाषा बनि रहय गीत लोकक कंठमे / घरक बोलक प्रीत
लोकक कंठमे / पोथी जरूरी, मुदा पोथी मात्र पर्याप्त नहि / जीबैत रहय मीत
लोकक कंठमे / पुरनका शब्द सभ धूरि नहि, स्मृतिक बीज / बाजि उठय अतीत
लोकक कंठमे / नेना जखन खेलैत-हँसैत अपन बोली बाजए / ओहि क्षणक जीत
लोकक कंठमे / नाम मेटि जाए, लिपि बदलए, समय घुमए / तइयो बाँचय गीत
लोकक कंठमे

किताबमे सुरक्षित भाषा आ लोकक कंठमे जीवित भाषा दुनूक आवश्यकता
स्वीकारल गेल अछि । शुद्ध पाठ-संरक्षण आ व्यवहारिक बोलीक सम्बन्ध एहि
गजलक केन्द्रीय वाद अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पोथी जरूरी, मुदा पोथी मात्र पर्याप्त नहि /
जीबैत रहय मीत लोकक कंठमे” आ फेर “नेना जखन खेलैत-हँसैत अपन बोली
बाजए / ओहि क्षणक जीत लोकक कंठमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भाषा बनि रहय गीत लोकक कंठमे” आ अन्त “तइयो
बाँचय गीत लोकक कंठमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७७ : दूरीक बादो

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः दूरीक बादो ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अहाँ रहू मनक पास दूरीक बादो / टूटय नहि विश्वास
दूरीक बादो / शहर अलग, समय अलग, दिनचर्या अलग भेल / रहि गेल घरक
सुवास दूरीक बादो / चिट्ठी कम, बात कम, भेट बहुत विरल भेल / तइयो बाँचल
आस दूरीक बादो / नेह हर घड़ी संग रहबाक नाम मात्र नहि / चलैत रहै साँस
दूरीक बादो / एक गीत कतहु सुनि कऽ अहाँ मोन पड़ैत छी / एतेक रहय पास
दूरीक बादो

नगर, समय आ दिनचर्याक फरकक बीचो सम्बन्धक बचल उपस्थितिक व्याकरण
'दूरीक बादो' अछि । विश्वसनीयताक आधार याद मात्र नहि, व्यवहार सेहो
होयबाक प्रश्न रहैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने "शहर अलग, समय अलग, दिनचर्या अलग
भेल / रहि गेल घरक सुवास दूरीक बादो" आ फेर "नेह हर घड़ी संग रहबाक
नाम मात्र नहि / चलैत रहै साँस दूरीक बादो"क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ "अहाँ रहू मनक पास दूरीक बादो" आ अन्त "एतेक रहय
पास दूरीक बादो"क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
"मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना" कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २७८ : नव बिहान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास • रदीफः फेर उगैत अछि ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रातिक पाछाँ आस फेर उगैत अछि / आँखिमे नव उजास
फेर उगैत अछि / एक हार पूरा जीवनक निर्णय नहि होइ / लोकमे विश्वास फेर
उगैत अछि / समय कतेक नाम मेटा देत धूरि जकाँ / माटिक सुवास फेर उगैत
अछि / सूखल डारि पर एक पात हरियर भऽ उठल / गाछमे नव साँस फेर उगैत
अछि / गीत अधूरा छल, मुदा स्वर नहि रुकल / कंठमे उजास फेर उगैत अछि

एक हारक बादो लोकक भीतर विश्वास उगि सकैत अछि—ई ‘नव बिहान’क सूत्र
अछि । इजोत आ अंकुरक रूपक पुरान आशावादक आवर्तन अछि, मुदा
पुनरुत्थानक नैतिक महत्त्व बचल ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक हार पूरा जीवनक निर्णय नहि होइ /
लोकमे विश्वास फेर उगैत अछि” आ फेर “सूखल डारि पर एक पात हरियर भऽ
उठल / गाछमे नव साँस फेर उगैत अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रातिक पाछाँ आस फेर उगैत अछि” आ अन्त “कंठमे
उजास फेर उगैत अछि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २७९ : पुरनका कुज्जी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः खोलि देखू ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धूरि लागल पुरनका दुआर खोलि देखू / भीतर सुतल स्मृतिक संसार खोलि देखू / जे बात कहबाक छल मुदा कहियो कहल नहि गेल / मोनक ओ चुप विचार खोलि देखू / काठक पेटीमे चिट्ठी, फोटो, सूखल फूल अछि / समयक मौन पुकार खोलि देखू / घर बदलि गेल तइयो गन्ध कतहु बचल रहै / ओहि दिनक व्यवहार खोलि देखू / कुज्जी केवल ताला नहि, अपन मनो खोलैए / बन्द पडल दुआर खोलि देखू

धूरि लागल कुज्जी सुतल स्मृतिसभक प्रवेश-द्वार अछि । भौतिक ताला खोलबाक क्रियासँ अनकहल बातक पुनःस्वीकारक अवसर खुलैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे बात कहबाक छल मुदा कहियो कहल नहि गेल / मोनक ओ चुप विचार खोलि देखू” आ फेर “घर बदलि गेल तइयो गन्ध कतहु बचल रहै / ओहि दिनक व्यवहार खोलि देखू”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १८५ “खोलि देखू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि । पहिनुक आरम्भ “पुरनका चिट्ठीक बात, खोलि देखू” आ एतुक आरम्भ “धूरि लागल पुरनका दुआर खोलि देखू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २८० : करघाक धुन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ङा · रदीफः करघा बाजै ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सूतमे जागल रंग करघा बाजै / हथेलीक संग करघा बाजै / एक धागा दोसर धागासँ धीरे जुड़ैए / कपड़ामे नब तरंग करघा बाजै / दिन भरि पएर-हाथ एक लयमे चलैत रहै / कारीगरक उमंग करघा बाजै / बजार केवल दाम पूछै, कथा नहि पूछै / पीढ़ीक पुरनका प्रसंग करघा बाजै / नाम नहि छपल तइयो काज लोकमे बाँचै / जीवनक अपन रंग करघा बाजै

पुरनका करघाक धुन जकाँ कार्यक लय उद्योग आ कला दुनू बीच भेटैत अछि । धागाक रंगक संग हाथक अभ्यासक सृजनक मूल मानल गेल अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक धागा दोसर धागासँ धीरे जुड़ैए / कपड़ामे नब तरंग करघा बाजै” आ फेर “बजार केवल दाम पूछै, कथा नहि पूछै / पीढ़ीक पुरनका प्रसंग करघा बाजै”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

पूर्व गजल २५३क शीर्षक सेहो “करघाक धुन” अछि । दुनू पाठमे शेरक शब्दक्रम आ रदीफक निकटता/फेरबदल मूल दसू मिसरा मिलाकऽ जाँचबाक विषय अछि; केवल संख्या अलग रहब स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक प्रमाण नहि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २६१-२८० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : २६३/२४८ (“सीमा बुझू”/“अपन सीमा”); २६४/२५४ (“नब पन्ना”/“पुरनका पुस्तकालय”); २६८/२४७ (“पुरनका पोथी”/“पुरनका पुस्तकालय”); २७२/२४४ (“जाइक

धूप”/“जाड़क धूप”); २७९/१८५ (“पुरनका कुञ्जी”/“खोलि देखू”); २८०/२५३ (“करघाक धुन”/“करघाक धुन”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्वरचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकेँ हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल २८१ : नदीक धुँध

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: नीर · रदीफ: धुँध हटत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : देखाएत फेर तीर धुँध हटत / चमकि उठत नीर धुँध हटत / एखन दिशा धूमिल अछि, बाट मेटल नहि / फेर उभरत लकीर धुँध हटत / घर बहल लोकक मन तुरन्त नहि सम्हरै / धीरे हलुक हो पीर धुँध हटत / नाविक पतवार हाथसँ कखनो नहि छोड़ै / संग रहत ओकर धीर धुँध हटत / भोरक पहिल किरण नदीपर जखन पड़त / साफ होएत तीर धुँध हटत

नदीक धुँध दिशा अस्पष्ट करैत अछि, बाट मेटैत नहि। घर बहला बाद मनक सम्हारबमे समय लगबाक शेर विपत्तिक पाछाँ भावनात्मक पुनर्वासनक सूक्ष्म बोध दैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एखन दिशा धूमिल अछि, बाट मेटल नहि / फेर उभरत लकीर धुँध हटत” आ फेर “नाविक पतवार हाथसँ कखनो नहि छोड़ै / संग रहत ओकर धीर धुँध हटत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “देखाएत फेर तीर धुँध हटत” आ अन्त “साफ होएत तीर धुँध हटत”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८२ : पोथीक दोकान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: कने पढ़ू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कागजक भीतर विचार कने पढ़ू / एक जिल्दमे पूरा संसार कने पढ़ू / मुखपृष्ठक चमकसँ पोथीक मोल नहि बूझल जाए / खोलि भीतरक दुआर कने पढ़ू / ककर लेखन कोन समयक पीर सँ जन्मल अछि / ओकर साँच आधार कने पढ़ू / जे पात्र अहाँसँ असहमत अछि, ओकरो सुनू / भिन्न मनक व्यवहार कने पढ़ू / पोथी किनब अन्त नहि, संवादक आरम्भ अछि / अपन बदलैत विचार कने पढ़ू

मुखपृष्ठक चमककें पोथीक मूल्यक प्रमाण नहि माननाइ आलोचनात्मक पाठकीयता अछि। असहमत पात्रक स्वर सुनबाक आग्रह साहित्यक लोकतान्त्रिक स्वभावकें चिन्हैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “मुखपृष्ठक चमकसँ पोथीक मोल नहि बूझल जाए / खोलि भीतरक दुआर कने पढ़ू” आ फेर “जे पात्र अहाँसँ असहमत अछि, ओकरो सुनू / भिन्न मनक व्यवहार कने पढ़ू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कागजक भीतर विचार कने पढ़ू” आ अन्त “अपन बदलैत विचार कने पढ़ू”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८३ : पड़ोसक आँगन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर • रदीफ: ओहि आँगनमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : संग जागैत छल भोर ओहि आँगनमे / हँसी बनैत छल शोर ओहि आँगनमे / एक घरक तरकारी दोसर घर धरि पहुँचैत / नेहक रहैत छल डोर ओहि आँगनमे / मेह पड़िते नेना सभ नाडर पएर दौड़ैत / पानिमे उठैत हिलोर ओहि आँगनमे / ककरो दुख एक घरक दुख बनि नहि रहैत / सभक संग बढैत जोर ओहि आँगनमे / दीवार पैघ भेल, मुदा स्मृति छोट नहि भेल / आबो सुनाइत भोर ओहि आँगनमे

पड़ोसक तरकारी आ नेनासभक मेहमे दौड़ब साझा गामक जीवनक सहज दृश्य अछि। दीवार पैघ भेलाक बादो पड़ोसक स्मृति बचब आधुनिक अलगाव पर अप्रत्यक्ष टिप्पणी अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक घरक तरकारी दोसर घर धरि पहुँचैत / नेहक रहैत छल डोर ओहि आँगनमे” आ फेर “ककरो दुख एक घरक दुख बनि नहि रहैत / सभक संग बढैत जोर ओहि आँगनमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “संग जागैत छल भोर ओहि आँगनमे” आ अन्त “आबो सुनाइत भोर ओहि आँगनमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८४ : अपन मान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: एना नहि।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दाम लेल घटत मान—एना नहि / डरक आगाँ झुकत ईमान—एना नहि / नेहमे निकटता हो, मुदा अपमान नहि / घटत ककरो सम्मान—एना नहि / दोसर भाषा सीखू, अपन बोल छोड़ू किएक / मेटत अपन पहिचान—एना नहि / मत अलग हो तऽ सम्बन्ध टूटि जाए तुरन्त / ई होएत अंतिम बयान—एना नहि / गीत जँ लोकक पीर नहि सुनि सकए कखनो / केवल सजत गान—एना नहि

मान आ नेहक सम्बन्धमे अपमान अस्वीकार करब आत्मसम्मानक कसौटी अछि। आन भाषा सीखबाक पक्ष मे रहि अपन बोल बचायब पुरान विषयकें नव संयोजन दैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नेहमे निकटता हो, मुदा अपमान नहि / घटत ककरो सम्मान—एना नहि” आ फेर “मत अलग हो तऽ सम्बन्ध टूटि जाए तुरन्त / ई होएत अंतिम बयान—एना नहि”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ४५ “एना नहि”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “नेहकै व्यापार एना नहि” आ एतुक आरम्भ “दाम लेल घटत मान—एना नहि”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८५ : अधूरा गीत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीत · रदीफ: एखन गाबू।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अधूरा रहल गीत एखन गाबू / मोनमे बचल प्रीत एखन गाबू / सभ मीत अपन-अपन बाट बहुत दूर चलि गेल / यादक ओ पुरनका मीत एखन गाबू / नबका दिन पुरनका स्मृति मेटब जरूरी नहि / माटिमे बचल अतीत एखन गाबू / हारि कऽ उठल क्षणो विजयक एक रूप होइ / आँखिमे जागल जीत एखन गाबू / कंठ थाकल हो, मुदा साँस एखनहु चलैए / धीरे-धीरे गीत एखन गाबू

मीत दूर गेलापर अधूरा गीत फेर गाबबाक आग्रह हरल दिनक बादो कंठक क्षमताक सम्मान अछि। ‘हारि कऽ उठल क्षण’ विजयक सीमित, मानवीय परिभाषा दैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सभ मीत अपन-अपन बाट बहुत दूर चलि गेल / यादक ओ पुरनका मीत एखन गाबू” आ फेर “हारि कऽ उठल क्षणो विजयक एक रूप होइ / आँखिमे जागल जीत एखन गाबू”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल १४२ “फेर गाबू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “स्वर थाकल तँ कने गीत फेर गाबू” आ एतुक आरम्भ “अधूरा रहल गीत एखन गाबू”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८६ : कुम्हारक चाक

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: चाक घूमैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माटि लैत नव आकार चाक घूमैए / हथेलीमे छोट संसार चाक घूमैए / कुम्हारक अँगुरी कखनो जोर, कखनो नेहसँ / सिखबैत अपन व्यवहार चाक घूमैए / एक घड़ा बनि उठए, दोसर फेर ढहि जाए / तइयो रुकै नहि पुकार चाक घूमैए / दाम पूछैत बजार, श्रमक कथा कम पूछैए / हाथ बनै ओकर आधार चाक घूमैए / माटि जँ टूटि जाए फेरो गूँथि सकैत छी / जीवनक नव आकार चाक घूमैए

कुम्हारक चाकपर ढहि गेल घड़ाक फेर माटि भऽ आकार लेबाक दृश्य विफलताकें सर्जन प्रक्रियाक हिस्सा बनबैत अछि। बजार दाम पूछैत अछि, हाथक कथा कम—श्रममूल्य आ विनिमयमूल्यक टकराव स्पष्ट।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कुम्हारक अँगुरी कखनो जोर, कखनो नेहसँ / सिखबैत अपन व्यवहार चाक घूमैए” आ फेर “दाम पूछैत बजार, श्रमक कथा कम पूछैए / हाथ बनै ओकर आधार चाक घूमैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माटि लैत नव आकार चाक घूमैए” आ अन्त “जीवनक नव आकार चाक घूमैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८७ : पुरनका डाकघर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: चिट्ठी अबैत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : लिफाफापर लिखल नाम चिट्ठी अबैत / दूरसँ नजदीक गाम चिट्ठी अबैत / डाकियाक झोरा भरि ककरो सुख, ककरो चिन्ता / करैत चुपचाप काम चिट्ठी अबैत / घरक पता बदलि गेल, लोक देशान्तर चलि गेल / तइयो खोजैत धाम चिट्ठी अबैत / फोनक युगमे कागजक गति धीमी भऽ सकैए / मोनकें दैत विराम चिट्ठी अबैत / हस्ताक्षरमे लोकक छुअन किछु बचल रहैए / फेर जगबैत नाम चिट्ठी अबैत

डाकियाक झोरामे ककरो सुख आ ककरो चिन्ता घुमैत अछि—ई सामूहिक संचारक मानवीय छवि अछि। फोनक युगमे हस्ताक्षरक स्पर्श बचल रहनाइ तकनीकी परिवर्तनपर संयत दृष्टि अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “डाकियाक झोरा भरि ककरो सुख, ककरो चिन्ता / करैत चुपचाप काम चिट्ठी अबैत” आ फेर “फोनक युगमे कागजक गति धीमी भऽ सकैए / मोनकें दैत विराम चिट्ठी अबैत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “लिफाफापर लिखल नाम चिट्ठी अबैत” आ अन्त “फेर जगबैत नाम चिट्ठी अबैत”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८८ : जाइक धूप

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास · रदीफ: धूप उतरैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँगन भरि उजास धूप उतरैए / पुरनका कम्बलक सुवास धूप उतरैए / बरामदामे वृद्ध आँखि अखबार छोड़ि मुस्कै / मोनमे राखैत आस धूप उतरैए / ठिठुरल गाछक पात कने चमकि उठैए / देहमे भैरैत विश्वास धूप उतरैए / दिन छोटा अछि, मुदा ताप एखनहु बचल अछि / धीरे खोलैत साँस धूप उतरैए / साँझ अबएत तऽ छाँह फेर लम्बा होएत / तइयो छोड़ि उजास धूप उतरैए

जाइक आँगनमे वृद्ध आँखि अखबार छोड़ि मुस्कब छोटा मानवीय दृश्य अछि। दिनक ताप आ घटैत प्रकाश एकहि समयमे अनित्य जीवनक अनुभव बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बरामदामे वृद्ध आँखि अखबार छोड़ि मुस्कै / मोनमे राखैत आस धूप उतरैए” आ फेर “दिन छोटा अछि, मुदा ताप एखनहु बचल अछि / धीरे खोलैत साँस धूप उतरैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “आँगन भरि उजास धूप उतरैए” आ अन्त “तइयो छोडि उजास धूप उतरैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २८९ : बरामदाक कुर्सी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ेर • रदीफ: कुर्सी ताकैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दुआर दिस एक फेर कुर्सी ताकैए / कियो अबैए कि देर कुर्सी ताकैए / जे हाथ साँझमे चाय राखैत छल एहि बाँहपर / स्मृतिक बनि घेर कुर्सी ताकैए / राति उतरैए, आँगन धीरे चुप भऽ जाइत / काटि नहि सकै अन्हेर कुर्सी ताकैए / पोता-पोती छुट्टीमे आबि फेर हँसी भरत / गनैत जकाँ बेर कुर्सी ताकैए / घर निर्जीव नहि, वस्तुओ स्मृति धरि राखै / दुआर दिस एक फेर कुर्सी ताकैए

बरामदाक कुर्सीक बाँहपर राखल चाहक स्मृति अनुपस्थित मनुक्खक उपस्थितिक वस्तुगत चिन्ह अछि। पोता-पोतीक छुट्टीक सम्भावना घरक मौनमे भविष्यक स्वर जोड़ैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जे हाथ साँझमे चाय राखैत छल एहि बाँहपर / स्मृतिक बनि घेर कुर्सी ताकैए” आ फेर “पोता-पोती छुट्टीमे आबि फेर हँसी भरत / गनैत जकाँ बेर कुर्सी ताकैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्रा दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दुआर दिस एक फेर कुसी ताकैए” आ अन्त “दुआर दिस एक फेर कुसी ताकैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २१० : रातिक स्टेशन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर · रदीफ: रेल अबैत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूरसँ उठैत शोर रेल अबैत / रातिक भीतर भोर रेल अबैत / प्लेटफार्मपर हाथ छुटै, आँखि बहुत किछु कहै / नेहक तानैत डोर रेल अबैत / चायवाला फेर गिलास सजबैत दौड़ि रहल / भीड़मे उठैत जोर रेल अबैत / खिड़कीक काँचपर शहरक रोशनी काँपैत अछि / मनमे उठैत हिलोर रेल अबैत / ककरो लेल विदा, ककरो लेल घर-वापसी / एके संग शोर-भोर रेल अबैत

रातिक स्टेशनमे एकहि रेल ककरो विदा आ ककरो वापसी अछि। चाहवालाक दैनन्दिन गति आ खिड़कीपर काँपैत शहरक इजोत बड़े भावुक दृश्यकें जीवनक नियमिततासँ सन्तुलित करैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “प्लेटफार्मपर हाथ छुटै, आँखि बहुत किछु कहै / नेहक तानैत डोर रेल अबैत” आ फेर “खिड़कीक काँचपर शहरक रोशनी काँपैत अछि / मनमे उठैत हिलोर रेल अबैत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूरसँ उठैत शोर रेल अबैत” आ अन्त “एके संग शोर-भोर रेल अबैत”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २११ : बीज बचाउ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: बीज बचाउ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अगिला बर्ष लेल धान बीज बचाउ / माटिक भीतरक प्राण बीज बचाउ / एके जाति पर खेतक भरोसा छोड़ि नहि दिअ / फसलक विविध पहिचान बीज बचाउ / दादीक पेटीमे जे बीज पीढ़ीसँ पीढ़ी आयल / ओकर पुरनका सम्मान बीज बचाउ / बाजार बदलत, मौसमो अपन चाल बदलत / माटिक रह्य निशान बीज बचाउ / बीज केवल दाना नहि, कात्तिक सम्भावना / धरतीक छोट प्राण बीज बचाउ

दादीक पेटीमे बचल बीज पीढ़ीगत ज्ञानक वास्तविक भण्डार अछि। मौसम आ बाजारक बदलैत जोखिम बीच विविध बीज बचेनाइ भविष्यक अन्न-सुरक्षाक प्रतीक अछि; जैविक दावा नहि, काव्यक आग्रह।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एके जाति पर खेतक भरोसा छोड़ि नहि दिअ / फसलक विविध पहिचान बीज बचाउ” आ फेर “बाजार बदलत, मौसमो अपन चाल बदलत / माटिक रह्य निशान बीज बचाउ”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अगिला बरख लेल धान बीज बचाउ” आ अन्त “धरतीक छोट प्राण बीज बचाउ”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २९२ : गीत फेर जन्मत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ङा · रदीफ: गीत फेर जन्मत।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : शब्द म्लान हो, नब रंग गीत फेर जन्मत / एक स्वर खोजत संग गीत फेर जन्मत / कंठ थाकि जाए तऽ मौन थोड़े दिन विश्राम लए / फेर उठत उमंग गीत फेर जन्मत / धार शान्त हो, हवा जखन ओकरा छूबि देत / पानिमे नब तरंग गीत फेर जन्मत / पुरनका पीर नब अर्थ लऽ कऽ लौटि सकैए / बदलि जाए प्रसंग गीत फेर जन्मत / पोथी बन्द भेलासँ कथा समाप्त नहि होइ / लोकक कंठक संग गीत फेर जन्मत

कंठ थाकल तऽ मौन विश्राम लए—एहि स्वीकारसँ गीतक ‘फेर जन्म’ दबाव नहि, सृजनक अन्तराल बनैत अछि। पुरनका पीर नब अर्थ लऽ लौटब काव्यात्मक पुनर्पाठक रूपक।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कंठ थाकि जाए तऽ मौन थोड़े दिन विश्राम लए / फेर उठत उमंग गीत फेर जन्मत” आ फेर “पुरनका पीर नब अर्थ लऽ कऽ लौटि सकैए / बदलि जाए प्रसंग गीत फेर जन्मत”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “शब्द म्लान हो, नब रंग गीत फेर जन्मत” आ अन्त “लोकक कंठक संग गीत फेर जन्मत”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २१३ : नदीक चिट्ठी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: बहैत जाए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रेत छुबैत ई धार बहैत जाए / नाव लगैत ओ पार बहैत जाए / मेघक छाँह कने ठहरि फेर सरकि गेल / बदलैत नदीक किनार बहैत जाए / घाट सुनसान, मुदा पानिमे गामक स्वर / दूर धरि एक पुकार बहैत जाए / जे लिखल नहि गेल कागजपर, मोनमे रहल / पानिसँ ओ संसार बहैत जाए / हम ठाढ़ छी पुलपर, समय रुकैत नहि / आँखि सोझाँ ई धार बहैत जाए

नदीक चिट्ठी कागजक बदला रेत, मेघ आ घाटपर लिखल अछि। पुलपर ठाढ़ वक्ता समयक अविराम गतिमे अपन स्थिर क्षणक अस्थिरता देखैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “मेघक छाँह कने ठहरि फेर सरकि गेल / बदलैत नदीक किनार बहैत जाए” आ फेर “जे लिखल नहि गेल कागजपर, मोनमे रहल / पानिसँ ओ संसार बहैत जाए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रेत छुबैत ई धार बहैत जाए” आ अन्त “आँखि सोझाँ ई धार बहैत जाए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।

शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २१४ : धानक गन्ध

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास · रदीफ: घर बजबैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कटनीक धानक सुवास घर बजबैए / माटिक नेहक पास घर बजबैए / दूर नगरमे थाकल साँझ जखन उतरैए / मोनमे पुरनका आस घर बजबैए / कोठी भरि दाना केवल अन्नक ढेर नहि / मेहनतक हर साँस घर बजबैए / बाबाक हथेलीपर रेखा गहीर भऽ गेल / श्रमपर नब विश्वास घर बजबैए / खेतक बाट जाँ सपनामे फेर देखाइ पड़ए / धानक ई सुवास घर बजबैए

धानक गन्ध नगरक साँझमे गाम घुराबैत अछि; अन्नक कोठीकेँ श्रम-इतिहासक स्मृतिसँ जोड़ल गेल अछि। बाबाक हथेलीक गहीर रेखा कृषि-श्रमक देहपर अंकित अभिलेख अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दूर नगरमे थाकल साँझ जखन उतरैए / मोनमे पुरनका आस घर बजबैए” आ फेर “बाबाक हथेलीपर रेखा गहीर भऽ गेल / श्रमपर नब विश्वास घर बजबैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कटनीक धानक सुवास घर बजबैए” आ अन्त “धानक ई सुवास घर बजबैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे

“मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २१५ : पुरनका घड़ी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ल · रदीफः टिक-टिक करैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भित्तिपर धीम चाल टिक-टिक करैए / घर भीतर बीतल काल टिक-टिक करैए / कतेक लोक एहि कोठरीसँ चलि गेल दूर / पाछाँ छोड़ि सवाल टिक-टिक करैए / सुइयाक गोल बाट छोड़ बुझाइत अछि / मोनमे दीर्घ खयाल टिक-टिक करैए / साँझक चाय, दादीक कथा, बालपनक हँसी / सभक अपन ताल टिक-टिक करैए / घड़ी रुकल तऽ समय कतहु रुकि नहि गेल / मौनमे ओकर चाल टिक-टिक करैए

घड़ीक सुइया गोल चक्करमे फिरैत अछि, मुदा जीवनक समय लौटैत नहि। साँझक चाह आ दादीक कथा वस्तुक ध्वनिकें बाल्यक दीर्घ स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कतेक लोक एहि कोठरीसँ चलि गेल दूर / पाछाँ छोड़ि सवाल टिक-टिक करैए” आ फेर “साँझक चाय, दादीक कथा, बालपनक हँसी / सभक अपन ताल टिक-टिक करैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भित्तिपर धीम चाल टिक-टिक करैए” आ अन्त “मौनमे ओकर चाल टिक-टिक करैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल

गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल २१६ : नीमक छाँह

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः ठंडक दैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घरक पुरनका दुआर ठंडक दैए / नीमक हरियर बहार
ठंडक दैए / जेठक दुपहरि देहसँ अधिक मन थाकैए / पातक धीम विचार ठंडक
दैए / चिड़ै उतरिकऽ एक क्षण गाबि फेर उड़ैए / ओकर छोट पुकार ठंडक दैए /
छाँहमे बैसल लोक अलग-अलग कथा कहैए / बनि एक संसार ठंडक दैए / डारि
सूखल हो तऽ नव पात फेर फुटैए / जीवनक ई विचार ठंडक दैए

नीमक छाँहमे बैसल लोकक अलग-अलग कथा सामूहिक विश्रामक दृश्य अछि।
जेठक दुपहरिक थकान आ नव पातक सम्भावना जीवनक क्षय-विकासकें एकहि
गाछमे रखैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जेठक दुपहरि देहसँ अधिक मन थाकैए /
पातक धीम विचार ठंडक दैए” आ फेर “छाँहमे बैसल लोक अलग-अलग कथा
कहैए / बनि एक संसार ठंडक दैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच
दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “घरक पुरनका दुआर ठंडक दैए” आ अन्त “जीवनक ई
विचार ठंडक दैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि।

गजल २९७ : कागजक नाव

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः पानिमे चलैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बालपनक जान पानिमे चलैए / कागजक पहिचान पानिमे चलैए / बरखाक धार छोट नालीकें नदी बना देत / मोनक हलुक अरमान पानिमे चलैए / स्याही कने बहि गेल, अक्षर धुंधला भऽ गेल / तइयो रहल निशान पानिमे चलैए / नाव डूबि जाए तऽ दोसर फेर मोड़ि लेब / एहि आशक बिहान पानिमे चलैए / खेल छोट छल, मुदा स्मृति बहुत दूर गेल / बालपनक पहिचान पानिमे चलैए

कागजक नावक अल्पायु बालकक स्मृतिमे दीर्घ यात्रा बनैत अछि । स्याही बहला आ नाव डूबला पाछाँ दोसर नाव मोड़बाक क्रिया जिज्ञासा आ पुनःआरम्भक ठोस बाल-दृश्य अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बरखाक धार छोट नालीकें नदी बना देत / मोनक हलुक अरमान पानिमे चलैए” आ फेर “नाव डूबि जाए तऽ दोसर फेर मोड़ि लेब / एहि आशक बिहान पानिमे चलैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बालपनक जान पानिमे चलैए” आ अन्त “बालपनक पहिचान पानिमे चलैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २१८ : साँझक घंटी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-
सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः
धीरे बाजैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : साँझ पड़िते ध्यान धीरे बाजैए / दूर मन्दिरक गान धीरे
बाजैए / दिन भरिक काजक धूलि देहपर बसल रहल / मोनक भीतर थकान धीरे
बाजैए / सभ प्रश्नक उत्तर एखन भेटब जरूरी नहि / राति दै निदान धीरे बाजैए /
दीपक लौ जकाँ श्वास कने स्थिर होइत अछि / आगाँक एक बिहान धीरे बाजैए /
अन्हार बढ़ल, मुदा भय नहि, घर लग अछि / बाटक ई पहिचान धीरे बाजैए

साँझक घंटी दिनभरिक श्रम सँ मानसिक विश्राम दिस परिवर्तनक श्रवण-चिन्ह
अछि । सभ प्रश्नक तुरन्त उत्तर नहि भेटब स्वीकारैत गजल श्वासक धीम गति
पर केन्द्रित होइत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दिन भरिक काजक धूलि देहपर बसल रहल /
मोनक भीतर थकान धीरे बाजैए” आ फेर “दीपक लौ जकाँ श्वास कने स्थिर
होइत अछि / आगाँक एक बिहान धीरे बाजैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “साँझ पड़िते ध्यान धीरे बाजैए” आ अन्त “बाटक ई
पहिचान धीरे बाजैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल २१९ : घर घुरबाक बाट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः मोन खींचैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूर धरि ओ राह मोन खींचैए / गाम घुरबाक चाह मोन
खींचैए / नगरक सड़क चमकै, मुदा भीड़ थका दैए / माटिक गन्ध अथाह मोन
खींचैए / जे दुआर छोड़ि हम बहुत बरख पहिने चललहुँ / ओहि दिसि बेर-बेर
निगाह मोन खींचैए / नदी बदलल, पुल नब, खेतक मेड़ो सरकल / तइयो पुरन
प्रवाह मोन खींचैए / घर केवल भीत नहि, स्मृतिक खुलल आकाश / एहि सत्यक
राह मोन खींचैए

बदलल नदी, नब पुल आ सरकल खेतक मेड़ घुरबाक बाटकेँ स्थिर भौगोलिक रेखा
नहि रहय दैत । घरक अर्थ भीतसँ बेसी स्मृतिक खुलल अकासमे बसल अछि ।
रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नगरक सड़क चमकै, मुदा भीड़ थका दैए /
माटिक गन्ध अथाह मोन खींचैए” आ फेर “नदी बदलल, पुल नब, खेतक मेड़ो
सरकल / तइयो पुरन प्रवाह मोन खींचैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूर धरि ओ राह मोन खींचैए” आ अन्त “एहि सत्यक राह
मोन खींचैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक
बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि ।

गजल ३०० : चूल्हिक आँच

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः आँच बचल अछि ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माइक पुरन दुलार—आँच बचल अछि / घरक सहज आधार—आँच बचल अछि / गैसक नीक चूल्हि आयल, धुआँ बहुत घटि गेल / स्मृतिमे ओ संसार—आँच बचल अछि / रोटीक गन्धसँ नेना दौड़ि ओसार पहुँचैत / भोजनक ओ पुकार—आँच बचल अछि / थाकल लोक संग बैसल, दुइ घड़ी गप्प भेल / नेहक ई उपहार—आँच बचल अछि / घर बदलल, बरख बदलल, लोक दूर चलि गेल / मोनमे ओ दुलार—आँच बचल अछि

गैसक चूल्हि धुआँ घटबैत अछि, मुदा पुरान रोटीक गन्ध परिवारक स्नेहक स्मृति रहैत अछि । तकनीकी प्रगतिक विरोध नहि; साझा खायब, गप्प आ श्रमक निकटता बचबाक आग्रह एकर सार ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “गैसक नीक चूल्हि आयल, धुआँ बहुत घटि गेल / स्मृतिमे ओ संसार—आँच बचल अछि” आ फेर “थाकल लोक संग बैसल, दुइ घड़ी गप्प भेल / नेहक ई उपहार—आँच बचल अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माइक पुरन दुलार—आँच बचल अछि” आ अन्त “मोनमे ओ दुलार—आँच बचल अछि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल २८१-३०० : अन्तरपाठीय विवेचन

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूज़ी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल ३०१ : पोखरिक चान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः नीर · रदीफः चान उतरैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : शान्त पोखरिक नीर—चान उतरैए / घाटक ओहि तीर—चान उतरैए / हवा कने चलिते रूप हजार टुकड़ा भऽ जाए / फेरो होइत धीर—चान उतरैए / जकर मनमे दिन भरि अनकहल बात घुमैत छल / देखैत अपन पीर—चान उतरैए / राति कहै, जल्दी सभ उत्तर भेटत नहि / नहि होउ अधीर—चान उतरैए / आकाशमे ओहि चान, पानियोमे ओकर छवि / दुइ ठाम एक नीर—चान उतरैए

पोखरि आ अकासमे एकहि चानक दू छवि विषय-प्रतिबिम्बक भेद रचैत अछि। हवा लगिते विखण्डित रूपक बीच काव्यक सत्य देखाइत अछि; दृष्टिकोण बदलला पर रूप बदलैत अछि, मूल वस्तु नहि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हवा कने चलिते रूप हजार टुकड़ा भऽ जाए / फेरो होइत धीर—चान उतरैए” आ फेर “राति कहै, जल्दी सभ उत्तर भेटत नहि / नहि होउ अधीर—चान उतरैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्रा दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “शान्त पोखरिक नीर—चान उतरैए” आ अन्त “दुइ ठाम एक नीर—चान उतरैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल

अच्छि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३०२ : मसालाक गन्ध

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -द · रदीफः घर भैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पीसल मसालाक स्वाद घर भैए / पुरनका रसोइक याद घर भैए / सिलौटपर हाथ चलैत, कथा संग-संग चलैत / पीढ़ीक धीम संवाद घर भैए / नब बरतन, नब चूल्हि—रीति बदलैत रहए / नेहसँ आँगन आबाद घर भैए / भोजन केवल देहक भूख मेटब नहि होइ / संग बैसब प्रसाद घर भैए / एक गन्ध दूर देशमे अचानक गाम जगा दैए / माटिक ओ स्वाद घर भैए

सिलौटपर पीसैत हाथक संग चलैत कथा घरेलू श्रमकेँ मौखिक संस्कृतिक वाहक बनबैत अछि। नब बरतन आ चूल्हिक उपस्थितिमे सुगन्धक स्मृति टिकाउ अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सिलौटपर हाथ चलैत, कथा संग-संग चलैत / पीढ़ीक धीम संवाद घर भैए” आ फेर “भोजन केवल देहक भूख मेटब नहि होइ / संग बैसब प्रसाद घर भैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पीसल मसालाक स्वाद घर भैए” आ अन्त “माटिक ओ स्वाद घर भैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल

अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३०३ : ओसारक दीप

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: दीप जरैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अन्हारमे छोट उजास—दीप जरैए / ओसार लग अपन पास—दीप जरैए / हवा तेज हो तऽ हथेली घेरि लौ बचा लिअ / मोनमे राखि आस—दीप जरैए / राति कतबो गहीर, भोरक बाट बन्द नहि / एहि बातक विश्वास—दीप जरैए / घर खाली हो, तइयो स्मृति भीतर बैसल अच्छि / बनि पुरन निवास—दीप जरैए / एक लौ दोसर लौकें दैत अच्छि अपन आगि / बढ़ैत नव उजास—दीप जरैए

तेज हवामे हथेलीसँ दीपक लौकें घेरब स्नेह आ संरक्षणक मूर्त क्रिया अच्छि। एक लौसँ दोसर लौ जरब सामूहिक इजोतक रूपक बनैत अच्छि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हवा तेज हो तऽ हथेली घेरि लौ बचा लिअ / मोनमे राखि आस—दीप जरैए” आ फेर “घर खाली हो, तइयो स्मृति भीतर बैसल अच्छि / बनि पुरन निवास—दीप जरैए”क प्रसङ्ग रहैत अच्छि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अच्छि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अच्छि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अच्छि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अन्हारमे छोट उजास—दीप जरैए” आ अन्त “बढ़ैत नव उजास—दीप जरैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अच्छि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अच्छि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३०४ : बरखाक खिड़की

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः बरखा अबैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : काँचपर महीन फुहार—बरखा अबैए / खुलि रहल अछि
दुआर—बरखा अबैए / सूखल गाछक पात अचानक धोआय चमकि उठल /
आँगनमे नब बहार—बरखा अबैए / छतपर टप-टप स्वर बालपन फेर बजा दैए /
दूरसँ एक पुकार—बरखा अबैए / मेघक रंग गहीँर, मुदा धरती हँसि उठैए / हरियर
एक संसार—बरखा अबैए / खिड़की लग बैसल मोन यात्रा पर चलि जाए / संग
लऽ ई फुहार—बरखा अबैए

काँचक खिड़कीपर टपकैत बरखा घरमे ठाढ़ लोकक मनकें यात्रा पर पठबैत अछि ।
टप-टपक ध्वनि बाल्य-स्मृति आ वर्तमान मौसमक बीच पुल अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सूखल गाछक पात अचानक धोआय चमकि उठल / आँगनमे नब बहार—बरखा अबैए” आ फेर “मेघक रंग गहीँर, मुदा धरती हँसि उठैए / हरियर एक संसार—बरखा अबैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “काँचपर महीन फुहार—बरखा अबैए” आ अन्त “संग लऽ ई फुहार—बरखा अबैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३०५ : बाँसुरीक दूर स्वर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः नीर · रदीफः स्वर अबैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : साँझक नदीक नीर—स्वर अबैए / ओहि पारक तीर—स्वर अबैए / ककरो चेहरा नहि देखाइ, धुन चिन्हल जकाँ / मोन होइत धीर—स्वर अबैए / जे बात कहब कठिन छल, धुन ओहि ठाम पहुँचै / छुबि कने ई पीर—स्वर अबैए / हवा संग चलैत धुन रुकि-रुकि फेर उठैए / नहि होउ अधीर—स्वर अबैए / राति उतरि रहल, घाट धीरे सुनसान भेल / तइयो पारक तीर—स्वर अबैए

अनदेखल बाँसुरी-वाजकक स्वर परिचित आकृति बिना स्मृतिक सम्बोधन करैत अछि । धुन नहि कहल गेल बात पहुँचेबाक माध्यम बनैत अछि; कविता ध्वनिक दृश्यहीन प्रभावक परीक्षण अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ककरो चेहरा नहि देखाइ, धुन चिन्हल जकाँ / मोन होइत धीर—स्वर अबैए” आ फेर “हवा संग चलैत धुन रुकि-रुकि फेर उठैए / नहि होउ अधीर—स्वर अबैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “साँझक नदीक नीर—स्वर अबैए” आ अन्त “तइयो पारक तीर—स्वर अबैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।

शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३०६ : खेतक पाँति

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -नन · रदीफः पाँति उठैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माटिमे रोपल धान—पाँति उठैए / झुकल देह किसान—
पाँति उठैए / एक-एक बिरवा सीधा करैत दिन बीति जाइ / पसिनामे खेतक जान
—पाँति उठैए / रातिक मेहसँ बिहान पात सभ चमकि उठल / हरियर भेल बिहान
—पाँति उठैए / अन्नक थारीमे खेतक श्रम देखाइ कम दैए / माँगैत अपन सम्मान
—पाँति उठैए / दूर धरि समरेख, मुदा हर बिरवा अलग जीव / धरतीक पहिचान
—पाँति उठैए

धानक पाँति दूरसँ एकरूप देखाइत अछि, मुदा प्रत्येक बिरवा अलग जीव अछि ।
अन्नक थारीमे अदेखल श्रमकें दृश्य बनबैत ई गजल जैविक विशिष्टता आ
सामूहिक श्रमकें जोड़ैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक-एक बिरवा सीधा करैत दिन बीति जाइ /
पसिनामे खेतक जान—पाँति उठैए” आ फेर “अन्नक थारीमे खेतक श्रम देखाइ
कम दैए / माँगैत अपन सम्मान—पाँति उठैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक
केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः
प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माटिमे रोपल धान—पाँति उठैए” आ अन्त “धरतीक
पहिचान—पाँति उठैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३०७ : सामा-चकेवाक साँझ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः साँझ उतरैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धानक मृदु सुवास—साँझ उतरैए / दियरीक छोट उजास—साँझ उतरैए / सामा-चकेवाक गीत गूँजि रहल ओसारमे / बहिन-भायक पास—साँझ उतरैए / कातिकक ठंड हवा गाल छुबि धीरे कहै / मोनमे जगल आस—साँझ उतरैए / दूर रहितो मन खोजै घरक पुरन निवास / बाटपर दीपक उजास—साँझ उतरैए / उडैत पाखीक छाया खेतक ऊपर ढलि गेल / स्मृतिमे ओ सुवास—साँझ उतरैए

कातिकक सामा-चकेवा गीत, धानक गन्ध आ ओसाराक आवाज सांस्कृतिक समयक बहु-इन्द्रिय रचना करैत अछि । प्रवासक याद लोक-उत्सवक कंठक माध्यमसँ घुरैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सामा-चकेवाक गीत गूँजि रहल ओसारमे / बहिन-भायक पास—साँझ उतरैए” आ फेर “दूर रहितो मन खोजै घरक पुरन निवास / बाटपर दीपक उजास—साँझ उतरैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धानक मृदु सुवास—साँझ उतरैए” आ अन्त “स्मृतिमे ओ सुवास—साँझ उतरैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३०८ : मखानक पोखरि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ल · रदीफः जल चमकैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : मखान पातक जाल—जल चमकैए / हवाक धीम ताल—
जल चमकैए / बकुलक पाँखि झटकि, माछक छाया कटि गेल / क्षणभरि तेज
चाल—जल चमकैए / सूरुज ढलिते अकासक रंग बदलि उठल / पानिमे धूसर-
लाल—जल चमकैए / कीचड़ भीतर बीज, ऊपर फूलक निर्मलता / मोनक एक
सवाल—जल चमकैए / गामक पोखरि वर्ष भरि जीवनकें जोड़ि राखै / ऋतुक
बदलल ताल—जल चमकैए

मखानक पात आ कीचड़मे बचल बीज पोखरिक ऊपर-नीचाँक दू जगत अछि ।
काव्य निर्मल फूलकें कीचड़सँ अलग नहि करैत; गामक जल-सम्बन्धक
पर्यावरणीय अर्थ निहित ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बकुलक पाँखि झटकि, माछक छाया कटि
गेल / क्षणभरि तेज चाल—जल चमकैए” आ फेर “कीचड़ भीतर बीज, ऊपर
फूलक निर्मलता / मोनक एक सवाल—जल चमकैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि
दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक
परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “मखान पातक जाल—जल चमकैए” आ अन्त “ऋतुक
बदलल ताल—जल चमकैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३०९ : कूपक डोर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोर · रदीफः जल उठैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हथेलीमे बँसल डोर—जल उठैए / घिरनी करए कने शोर
—जल उठैए / कूपक अन्हार भीतर चानक टुकड़ा काँपै / देखिते जागल भोर—
जल उठैए / एक घड़ा भरबाक लेल देह झुकि फेर तनै / बाहुमे लागल जोर—जल
उठैए / पुरखा हाथक स्पर्श जकाँ रस्सीक गाँठि बचल / मोनमे उठल हिलोर—जल
उठैए / नल आयल घर-घर, तइयो कूप कथा कहैत / स्मृतिमे ओ डोर—जल उठैए
इनारक डोरमे पुरखा हाथक स्पर्शक गाँठि बचल रहब वस्तु-स्मृतिक बिम्ब अछि ।
नल आ इनारक संगतिमे सुविधाक परिवर्तन आ परम्परागत श्रमक स्मृति दुनू
आदर पवैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कूपक अन्हार भीतर चानक टुकड़ा काँपै /
देखिते जागल भोर—जल उठैए” आ फेर “पुरखा हाथक स्पर्श जकाँ रस्सीक गाँठि
बचल / मोनमे उठल हिलोर—जल उठैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हथेलीमे बँसल डोर—जल उठैए” आ अन्त “स्मृतिमे ओ
डोर—जल उठैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१० : पीपरक पात

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ात · रदीफः हवा पढ़ैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पीपरसँ झरल पात—हवा पढ़ैए / पीयर लिखल बात—हवा पढ़ैए / रग-रगमे बीतल ऋतुक महीन रेखा बचल / धीरे ढलल रात—हवा पढ़ैए / एक पात दोसर पातक संग बाटे पर उड़ल / क्षण भरिक ओ साथ—हवा पढ़ैए / गाछ कहै छुटबो जीवनक अन्तिम रेखा नहि / माटिक नव सौगात—हवा पढ़ैए / भोरमे झाड़ू संग सभ पात एक ठाम भेल / दिनक पहिल बात—हवा पढ़ैए

पीपरक झरल पातक रग-रगमे ऋतुक रेखा पढ़ब जीवनक क्षणभङ्गुरताक सूक्ष्म पठन अछि । झाड़ूसँ एक ठाम भेल पात व्यक्तिगत कथा सँ सामूहिक समाप्तिक दृश्य बनबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “रग-रगमे बीतल ऋतुक महीन रेखा बचल / धीरे ढलल रात—हवा पढ़ैए” आ फेर “गाछ कहै छुटबो जीवनक अन्तिम रेखा नहि / माटिक नव सौगात—हवा पढ़ैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पीपरसँ झरल पात—हवा पढ़ैए” आ अन्त “दिनक पहिल बात—हवा पढ़ैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३११ : बखारीक धान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः धान बचल अछि ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माटिक ठंड भंडार—धान बचल अछि / बरख भरिक
आधार—धान बचल अछि / खेतसँ आँगन धरि कतबा हथक श्रम जुड़ल / दाना-
दाना संसार—धान बचल अछि / अकालक भय बीच पुरखा बचबैत रहल बीज /
पीढीक ई उपहार—धान बचल अछि / भातक गन्ध उठिते घरक नेह जागि उठैए
/ भोजनक ओ पुकार—धान बचल अछि / बखारी खाली हो तऽ घरक चिन्ता
बोलि उठै / माटिक ई आधार—धान बचल अछि

बखारीक धान अकालक भयक विरुद्ध सामूहिक सुरक्षा अछि । खेतसँ आँगन धरि
श्रम, बीजक संरक्षण आ भातक गन्ध एकहि जीवनचक्रमे जुड़ैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खेतसँ आँगन धरि कतबा हथक श्रम जुड़ल /
दाना-दाना संसार—धान बचल अछि” आ फेर “भातक गन्ध उठिते घरक नेह
जागि उठैए / भोजनक ओ पुकार—धान बचल अछि”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।
एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर
कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माटिक ठंड भंडार—धान बचल अछि” आ अन्त “माटिक
ई आधार—धान बचल अछि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१२ : मिथिला-चित्रक रेखा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ङ • रदीफः रेखा बोलैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भीतपर खिलल रंग—रेखा बोलैए / माछ-पातक संग—रेखा बोलैए / अँगुरीक महीन गति पीढ़ीक कथा जोड़ैत / मोनमे भरल उमंग—रेखा बोलैए / कोहबरक गोल घेरा नेहक चिन्ह बनि रहै / अपन पुरन ढंग—रेखा बोलैए / नब कागज पर पुरखिनक हाथक स्मृति जगल / रंगमे उठल तरंग—रेखा बोलैए / रेखा केवल रूप नहि, जीवनक बोल बचल / माटिक अपन रंग—रेखा बोलैए

मिथिला-चित्रक अँगुरीगत गति बेटीकेँ पुरखिनक स्मृतिक संग जोड़ैत अछि । कोहबरक रूपक केवल सजावट नहि, जीवनरितिक चित्रात्मक भाषा बनैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “अँगुरीक महीन गति पीढ़ीक कथा जोड़ैत / मोनमे भरल उमंग—रेखा बोलैए” आ फेर “नब कागज पर पुरखिनक हाथक स्मृति जगल / रंगमे उठल तरंग—रेखा बोलैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भीतपर खिलल रंग—रेखा बोलैए” आ अन्त “माटिक अपन रंग—रेखा बोलैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१३ : सरिसो फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-
क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः पीयर भेल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खेतक दूर बहार—पीयर भेल / फूलक लमहर कतार—
पीयर भेल / भोरक ओसक बूँद सूरुज पड़िते चमकि उठल / धरतीक ई पुकार—
पीयर भेल / मधुमाछी गुँजैत एक फूलसँ दोसर फूल / गन्धक छोट संसार—पीयर
भेल / जाइक थाकल दिनमे रंग अचानक हँसि उठल / ऋतुक ई उपहार—पीयर
भेल / बाट चलैत मनुखो एक बेर ठमकि देखए / मोनक भीतर बहार—पीयर भेल

सरिसोक पीयर खेत जाइक थाकल दिनमे रंगक चकित करैत अछि । मधुमाछीक
फूलसँ फूल धरि गति दृश्यकें स्थिर चित्र नहि रहय दैत ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भोरक ओसक बूँद सूरुज पड़िते चमकि उठल
/ धरतीक ई पुकार—पीयर भेल” आ फेर “जाइक थाकल दिनमे रंग अचानक हँसि
उठल / ऋतुक ई उपहार—पीयर भेल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक
बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि ।
मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि
मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खेतक दूर बहार—पीयर भेल” आ अन्त “मोनक भीतर
बहार—पीयर भेल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१४ : कमलाक कछार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः भोर भेल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कमलाक निसबद कछार—भोर भेल / बकक दूरसँ आयल हँकार—भोर भेल / कुहासाक चादर धीरे उठि गेल पानिसँ / दिसि पड़ल चमचम धार—भोर भेल / राति भरि नाव बाँधल छल बाँसक खूँटामे / खुलि गेल ओ पार—भोर भेल / घाटक सीढ़ी ओसक बूँदसँ चमकि उठल / नदी देलक नेहार—भोर भेल / पहिल किरण पात-पातपर सोना लिखि देलक / जागि उठल कछार—भोर भेल

कमलाक कछारक कुहासा उठबाक क्रम एक-एक दृश्य धीरेजसँ खोलैत अछि । बाँधल नाव, भीजल सीढ़ी आ पहिल किरण स्थानीय नदीक विशिष्ट समय-बोध दैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कुहासाक चादर धीरे उठि गेल पानिसँ / दिसि पड़ल चमचम धार—भोर भेल” आ फेर “घाटक सीढ़ी ओसक बूँदसँ चमकि उठल / नदी देलक नेहार—भोर भेल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कमलाक निसबद कछार—भोर भेल” आ अन्त “जागि उठल कछार—भोर भेल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१५ : सिक्कीक शिल्प

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः हाथ गढ़ैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सिक्कीक कोमल तार—हाथ गढ़ैए / धीरे-धीरे आकार—हाथ गढ़ैए / एक-एक मोड़मे धैर्यक साँस बसल रहै / फूलक महीन श्रृंगार—हाथ गढ़ैए / खर-पात बुझाइत वस्तु कला बनि उठै जखन / खुलि जाए संसार—हाथ गढ़ैए / माइक संग बेटी सीखै पुरखा-पुरन ढंग / पीढ़ीक मधुर उपहार—हाथ गढ़ैए / बजारक चमकसँ पैघ अछि श्रमक अपन मान / जीबैत परम्पराक तार—हाथ गढ़ैए

सिक्कीक खर-पात अँगुरीक धीरजसँ कला बनैत अछि; माइ-बेटीक शिक्षण श्रमक परम्परा अछि । बजारक चमकसँ अलग मानक राखल गेल अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक-एक मोड़मे धैर्यक साँस बसल रहै / फूलक महीन श्रृंगार—हाथ गढ़ैए” आ फेर “माइक संग बेटी सीखै पुरखा-पुरन ढंग / पीढ़ीक मधुर उपहार—हाथ गढ़ैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सिक्कीक कोमल तार—हाथ गढ़ैए” आ अन्त “जीबैत परम्पराक तार—हाथ गढ़ैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१६ : पानक बाड़ी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -नन · रदीफः हरियर रहै ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : ओससँ भीजल पान—हरियर रहै / माटिक अपन मान—हरियर रहै / बाँसक टट्टी छनैत धूप कने-कने उतरै / पात-पातमे प्राण—हरियर रहै / सभक श्रम मिलि बाड़ीकेँ दिन भरि सँभारै / हाथक मौन गान—हरियर रहै / एक पात अतिथिक आगाँ नेहक चिन्ह बनै / मिथिलाक पहिचान—हरियर रहै / जतबे कोमल पात, ततबे चाही सावध देखभाल / श्रमक ई सम्मान—हरियर रहै

बाँसक टट्टी छनैत धूपक अनुपात पान-बाड़ीक श्रमक सावधानी दिखबैत अछि । एक पात अतिथिक नेह बनबाक पाछाँ अनेक हाथक देखभाल काम करैत अछि । रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बाँसक टट्टी छनैत धूप कने-कने उतरै / पात-पातमे प्राण—हरियर रहै” आ फेर “एक पात अतिथिक आगाँ नेहक चिन्ह बनै / मिथिलाक पहिचान—हरियर रहै”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “ओससँ भीजल पान—हरियर रहै” आ अन्त “श्रमक ई सम्मान—हरियर रहै”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१७ : मधुश्रावणीक राति

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः गीत उठैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सावनक भीजल राति—गीत उठैए / सखीक हँसीक बात—गीत उठैए / अँगनामे दीपक लौ हवा लगिते काँपि उठै / बाहर झमझम बरसात—गीत उठैए / कथा पुरन, मुदा प्रत्येक कंठमे नब रस / पीढीक नेह-सौगात—गीत उठैए / माइ-दादीक स्वर संग नब उमेरक स्वर जुडै / कालसँ होइ साक्षात्—गीत उठैए / राति ढलै, मुदा स्मृति भोर धरि जागल रहै / मनमे फेर ओ राति—गीत उठैए

मधुश्रावणीक रातिमे पुरान कथा प्रत्येक नब कंठमे फरक रस पबैत अछि । परम्पराकें स्थिर पाठमात्र नहि, पीढी-संग संवादक विधि मानल गेल अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “अँगनामे दीपक लौ हवा लगिते काँपि उठै / बाहर झमझम बरसात—गीत उठैए” आ फेर “माइ-दादीक स्वर संग नब उमेरक स्वर जुडै / कालसँ होइ साक्षात्—गीत उठैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सावनक भीजल राति—गीत उठैए” आ अन्त “मनमे फेर ओ राति—गीत उठैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१८ : जाँतक घरघर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोर · रदीफः घरघर बाजैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँगन जागल भोर—घरघर बाजैए / दूनू हाथक जोर—
घरघर बाजैए / दाना धीरे पिसि सुगन्ध बनि हवा भरि जाए / श्रमसँ बन्हल डोर—
घरघर बाजैए / यंत्रक बेगक पहिने ई छल घरक अपन लय / मृदु-मृदु एक शोर—
घरघर बाजैए / दादीक गीत जाँतक तालपर फेर मोन पड़ै / स्मृतिमे हिलोर—
घरघर बाजैए / समय बदलल, मुदा ध्वनि एखनहुँ कथा कहै / बीते दिनक भोर—
घरघर बाजैए

जाँतक घरघर ध्वनि गृह-श्रमक ताल अछि, जकर लय यन्त्रक बेगसँ फरक ।
दादीक गीत आ पीसल दानाक सुगन्ध श्रमक सांस्कृतिक ध्वनिस्मृति बचबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दाना धीरे पिसि सुगन्ध बनि हवा भरि जाए / श्रमसँ बन्हल डोर—घरघर बाजैए” आ फेर “दादीक गीत जाँतक तालपर फेर मोन पड़ै / स्मृतिमे हिलोर—घरघर बाजैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “आँगन जागल भोर—घरघर बाजैए” आ अन्त “बीते दिनक भोर—घरघर बाजैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३१९ : कोसीक बालू

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कथा लिखैए ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बदलैत रहै धार—कथा लिखैए / दूर सरकल ओ पार—
कथा लिखैए / काल्हि जतऽ खेत छल, आइ बालूक पाँति पडल / धरतीक नब
आकार—कथा लिखैए / नदी केवल पानि नहि, लोकक जीवन संग चलै / दुख-
सुखक विस्तार—कथा लिखैए / कटानक बीचो लोक फेर घर-आँगन गढै /
जीबबाक पुकार—कथा लिखैए / बालूक कण-कणमे बसल अछि असंख्य पगचिह्न
/ समयक तेज धार—कथा लिखैए

कोसीक कटान काल्हिक खेतकें आइ बालू बनबैत अछि; नदीक कथा भूगोलकें
स्थिर नहि मानैत । कटानक बीच घर फेर गढ़निहार लोकक श्रमक मान्यता एकर
प्रमुख शक्ति ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “काल्हि जतऽ खेत छल, आइ बालूक पाँति
पडल / धरतीक नब आकार—कथा लिखैए” आ फेर “कटानक बीचो लोक फेर
घर-आँगन गढै / जीबबाक पुकार—कथा लिखैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बदलैत रहै धार—कथा लिखैए” आ अन्त “समयक तेज
धार—कथा लिखैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३२० : मेहक बाद माटिक गन्ध

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ङा · रदीफः मेह पडल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माटि बदललक रंग—मेह पडल / सुगन्ध आयल संग—
मेह पडल / सूखल दूबक नोक फेर हरियर होमय लागल / मनमे जागल उमंग—
मेह पडल / छप्परक धारसँ बूँद झरि ताल बनौने जाए / पोखरिमे उठल तरंग—
मेह पडल / खेतक मेड़पर नेना नाडट पएर दौड़ि गेल / बनल नब प्रसंग—मेह
पडल / धरतीक पहिल साँस जकाँ गन्ध घर भरि गेल / फेर निखरल रंग—मेह
पडल

मेहक बाद दूबक नोक हरियर होनाइ आ छप्परक धारसँ बूँद खसब एकहि वर्षाक
अनेक असर अछि । नेनाक नाडट पएरक खेल माटिक गन्धकेँ जीवित सांस्कृतिक
अनुभूति बनबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सूखल दूबक नोक फेर हरियर होमय लागल /
मनमे जागल उमंग—मेह पडल” आ फेर “खेतक मेड़पर नेना नाडट पएर दौड़ि
गेल / बनल नब प्रसंग—मेह पडल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच
दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माटि बदललक रंग—मेह पडल” आ अन्त “फेर निखरल
रंग—मेह पडल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३०१-३२० : अन्तरपाठीय विवेचन

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूज़ी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल ३२१ : आमक मोजर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -स · रदीफः मोजर फूटल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बारी भरि उठल सुवास—मोजर फूटल / भमराक पाँखिमे आस—मोजर फूटल / जाड़ भरि निसबद रहल जे डारि सुखायल / ओकरो जागल साँस—मोजर फूटल / भोरक धूप पात-पातमे सोनक रेखा देलक / फैलल कोमल प्रकाश—मोजर फूटल / आँगनसँ गाछी धरि ऋतुक खबरि पहुँचि गेल / बसन्तक पहिल आभास—मोजर फूटल / फल एखन दूर, मुदा आशाक हरियर डोरि / मनमे भरल सुवास—मोजर फूटल

आमक मोजरक पहिल सुवासकें फलसम्पन्नताक प्रमाण नहि, भविष्यक अनिश्चित आशा मानल गेल अछि। फूल फूटलाक क्षण आ फल दूर रहबाक दूरीक कारण ऋतु-वर्णनमे प्रतीक्षाक कालबोध जुड़ैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जाड़ भरि निसबद रहल जे डारि सुखायल / ओकरो जागल साँस—मोजर फूटल” आ फेर “आँगनसँ गाछी धरि ऋतुक खबरि पहुँचि गेल / बसन्तक पहिल आभास—मोजर फूटल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बारी भरि उठल सुवास—मोजर फूटल” आ अन्त “मनमे भरल सुवास—मोजर फूटल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल

अच्छि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यक आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२२ : अरिपनक रेखा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी। मात्रा-क्रमः २१-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः रेखा बोलैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : चाउर-पिठारक दुआर—रेखा बोलैए / अँगुरी देलक आकार—रेखा बोलैए / वृत्तक भीतर पात, कमल, बिन्दु जुडैत गेल / माटिक सरल सिंगार—रेखा बोलैए / माइ सँ बेटी धरि हाथक सीख चलैत रहल / पीढिक अपन संसार—रेखा बोलैए / पूजा मात्र नहि, घरक स्मृति सेहो बसल अछि / पुरखाक मधुर उपहार—रेखा बोलैए / मेटि जाए पानि सँ, मुदा कला नहि मेटाइत / मोनक खुलल दुआर—रेखा बोलैए

चाउर-पिठारसँ खींचल अरिपनक रेखा जलसँ मेटि सकैत अछि, मुदा सीखल हस्तकला पीढीक बीच बचल रहैत अछि। वृत्त आ कमलक ज्यामितीय रचना माइ-बेटीक अनुभवक दृश्य-अभिलेख अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “वृत्तक भीतर पात, कमल, बिन्दु जुडैत गेल / माटिक सरल सिंगार—रेखा बोलैए” आ फेर “पूजा मात्र नहि, घरक स्मृति सेहो बसल अछि / पुरखाक मधुर उपहार—रेखा बोलैए”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३१२ “मिथिला-चित्रक रेखा”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “भीतपर खिलल रंग—रेखा बोलैए” आ एतुक आरम्भ

“चाउर-पिठारक दुआर—रेखा बोलैए”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २१-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२३ : दूबिपर ओस

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-तलय अनुसार। काफिया: -ोर · रदीफ: ओस चमकल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : आँगनमे भेल भोर—ओस चमकल / दूबिक नन्हक छोर—ओस चमकल / रातिक निसबद साँस मोती जकाँ ठहरल छल / किरण लगिते डोर—ओस चमकल / चिड़ै पाँखि फड़फड़ेलक, घास कने डोलि उठल / जागल धीम हिलोर—ओस चमकल / क्षण भरिक ई रूप कहै टिकब जरूरी नहि / तइयो भरल अँजोर—ओस चमकल / दिन चढ़िते बूँद विलायल माटिक काखमे / स्मृतिमे रहल भोर—ओस चमकल

दूबिपरक ओस रातिक निस्तब्धताक अत्यल्प अवधि रहल चिन्ह अछि। दिन चढ़ला पर बूँद विलायल, ताहि कारण क्षणिक सौन्दर्य आ अनित्यताक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “रातिक निसबद साँस मोती जकाँ ठहरल छल / किरण लगिते डोर—ओस चमकल” आ फेर “क्षण भरिक ई रूप कहै टिकब जरूरी नहि / तइयो भरल अँजोर—ओस चमकल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “आँगनमे भेल भोर—ओस चमकल” आ अन्त “स्मृतिमे रहल भोर—ओस चमकल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती

शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२४ : बाँसक झुरमुट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः हवा चलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : डोलि उठल कतार—हवा चलल / पात देलक पुकार—हवा चलल / एक बाँस दोसरासँ टकरा धीम स्वर देलक / बनल हरियर बहार—हवा चलल / झुरमुट बीच सँ पगडंडी गाम दिस निकलै / खुलि गेल सन दुआर—हवा चलल / धूपक टुकड़ा धरतीपर नाचि-नाचि सरकल / सुनि पड़ल झंकार—हवा चलल / सीधा रहि लचकबो सिखबैत अछि बाँस / जीवनक ई विचार—हवा चलल

हावामे डोलैत बाँसकें कवि कठोर ठाढ़पन नहि, लचकदार टिकाउपनक उदाहरण बनबैत अछि। एक बाँसक दोसरासँ टकरा कऽ उठल धीम ध्वनि सहजीवनक श्रव्य रूपक अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक बाँस दोसरासँ टकरा धीम स्वर देलक / बनल हरियर बहार—हवा चलल” आ फेर “धूपक टुकड़ा धरतीपर नाचि-नाचि सरकल / सुनि पड़ल झंकार—हवा चलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “डोलि उठल कतार—हवा चलल” आ अन्त “जीवनक ई विचार—हवा चलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे

“मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२५ : दधि-चूड़ाक बिहान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १४-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-तलय अनुसार। काफियाः -न · रदीफः भोर जागल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दधि-चूड़ाक बिहान—भोर जागल / सादा भोजनक मान—भोर जागल / माटिक आँगन, पातल धूप, चूल्हक हलुक गन्ध / घरक धीमा गान—भोर जागल / कटोरीमे दधि, चूड़ा, गुड़ संग नेह परसल / मिथिलाक पहिचान—भोर जागल / भोजक ठाठ नहि, अपनापन स्वाद बढ़बैत / सम्बन्धक प्राण—भोर जागल / एक थारी लग बैसि सभ दिनक बात कहै / सँझाओल बिहान—भोर जागल

दधि-चूड़ा-गुड़क थारीक संग भोरक साझा बैसार घरकें सामाजिक स्थान बनबैत अछि। एहि दृश्यमे भोजनक स्वादसँ बेसी संग भोजन करबाक सम्बन्धक मूल्य अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “माटिक आँगन, पातल धूप, चूल्हक हलुक गन्ध / घरक धीमा गान—भोर जागल” आ फेर “भोजक ठाठ नहि, अपनापन स्वाद बढ़बैत / सम्बन्धक प्राण—भोर जागल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दधि-चूड़ाक बिहान—भोर जागल” आ अन्त “सँझाओल बिहान—भोर जागल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १४-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल

अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२६ : करघाक धुन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: करघा चलैए।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सूतरमे उठल तान—करघा चलैए / घरमे बाजल गान—
करघा चलैए / ताना-बाना एक-दोसरासँ जँ जुड़ैत जाए / श्रम पबैत सम्मान—
करघा चलैए / अँगुरी नापै रंग, आँखि राखै रूपक लेखा / बुनाइ बनै पहिचान—
करघा चलैए / दिनक थाकल देह, मुदा कपड़ामे सपना जागै / काजक जीबैत प्राण
—करघा चलैए / हाथक हुनर मशीनक शोरमे नहि हराउ / बचि रहए ई मान—
करघा चलैए

ताना-बानाक लय आ मशीनक शोरक बीच कारीगरक अँगुरीक ज्ञानकें बचाबयक आग्रह अच्छि। करघाक पूर्ववर्ती गजलसभसँ विषयगत पुनरावृत्ति अच्छि, मुदा एतय यान्त्रिकीकरणक स्पष्ट प्रसङ्ग जुड़ैत अच्छि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ताना-बाना एक-दोसरासँ जँ जुड़ैत जाए / श्रम पबैत सम्मान—करघा चलैए” आ फेर “दिनक थाकल देह, मुदा कपड़ामे सपना जागै / काजक जीबैत प्राण—करघा चलैए”क प्रसङ्ग रहैत अच्छि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अच्छि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अच्छि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अच्छि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सूतरमे उठल तान—करघा चलैए” आ अन्त “बचि रहए ई मान—करघा चलैए”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अच्छि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अच्छि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल

अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२७ : कातिकक साँझ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ेर · रदीफ: कातिक आयल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : घाट भरल अँजोर—कातिक आयल / दीप सजल सभ छोर—कातिक आयल / पानिमे काँपैत लौ अकासक तारासँ मिलल / नेहक जुड़ल डोर—कातिक आयल / मन्द हवा लगिते ज्योति कने-कने डोलल / जलमे उठल हिलोर—कातिक आयल / साँझक मौन प्रार्थना रातिक काखमे रहि गेल / बाट तकैत भोर—कातिक आयल / क्षणिक दीप कहि गेल अन्हार अन्त नहि होइ / मन भरल अँजोर—कातिक आयल

पानिमे काँपैत लौ आ अकासक ताराक प्रतिबिम्ब कातिकक घाटकेँ दू उजासक संवाद बनबैत अच्छि। क्षणिक दीपक स्थायित्वक दावा नहि; ओकर अल्प उजासे काव्यक बिम्ब अच्छि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पानिमे काँपैत लौ अकासक तारासँ मिलल / नेहक जुड़ल डोर—कातिक आयल” आ फेर “साँझक मौन प्रार्थना रातिक काखमे रहि गेल / बाट तकैत भोर—कातिक आयल”क प्रसङ्ग रहैत अच्छि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अच्छि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अच्छि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अच्छि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “घाट भरल अँजोर—कातिक आयल” आ अन्त “मन भरल अँजोर—कातिक आयल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अच्छि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अच्छि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अच्छि; ई कविक लिखित घोषणा अच्छि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३२८ : खरिहानक चान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः खरिहानमे ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : सोन सन चमकै धान—खरिहानमे / धीरे उतरै चान—
खरिहानमे / दिन भरि दाँव चलल, साँझ पड़िते हाथ थमल / श्रम पबैत सम्मान—
खरिहानमे / बाबूक पुरनका धुन फेर ओठपर आवि बसल / उठल मधुर गान—
खरिहानमे / ओसक महीन बूँद पुआरक माथ चमकि उठल / जागल नब बिहान—
खरिहानमे / अन्नक एक-एक दाना धरतीक ऋण सुनबैत अछि / झुकि रहल
अभिमान—खरिहानमे

दिन भरि दाँव चललाक बाद साँझक विश्राम आ धानक एक-एक दानाक ‘ऋण’
श्रमक नैतिक लेखा बनबैत अछि । बाबूक पुरनका धुन खेतक वर्तमानमे पीढ़ीक
स्मृति जोड़ैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दिन भरि दाँव चलल, साँझ पड़िते हाथ थमल
/ श्रम पबैत सम्मान—खरिहानमे” आ फेर “ओसक महीन बूँद पुआरक माथ
चमकि उठल / जागल नब बिहान—खरिहानमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “सोन सन चमकै धान—खरिहानमे” आ अन्त “झुकि रहल
अभिमान—खरिहानमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३२९ : कुसियारक रस

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः रस टपकै ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : ओखलि लगिते मिठास—रस टपकै / हवा भरि उठल
सुवास—रस टपकै / कुसियारक गाँठमे धूपक दिन सभ साँचल छल / मेटि रहल
पियास—रस टपकै / काजक थाकल देह कने बैसि फेर हँसि उठल / मनमे जागल
विश्वास—रस टपकै / भोरसँ साँझ धरि खेतक नेह एहि स्वादमे अछि / ओठपर
हरियर उजास—रस टपकै / मीठ होएब मात्र स्वाद नहि, बाँटब सेहो सीख /
सभक लेल मिठास—रस टपकै

कुसियारक गाँठमे सँचित धूपक दिन मीठ रसकें समय-श्रमक परिणाम बनबैत
अछि । मिठास बाँटबाक आग्रह स्वादक व्यक्तिगत अनुभूतिकें समुदाय दिस
विस्तारित करैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कुसियारक गाँठमे धूपक दिन सभ साँचल
छल / मेटि रहल पियास—रस टपकै” आ फेर “भोरसँ साँझ धरि खेतक नेह एहि
स्वादमे अछि / ओठपर हरियर उजास—रस टपकै”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि
दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक
परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “ओखलि लगिते मिठास—रस टपकै” आ अन्त “सभक
लेल मिठास—रस टपकै”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३० : पोखरिक सीढ़ी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः नीर · रदीफः सीढ़ी लग ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भोर झिलमिल नीर—सीढ़ी लग / चिड़ै बैसल तीर—
सीढ़ी लग / घैला भरबाक बेर पानि मे अकास उतरि आए / मन भऽ जाए धीर—
सीढ़ी लग / पुरनका पाथर पर पएरक चिन्ह घिसि गेलहुँ / रहल समयक लकीर—
सीढ़ी लग / दुपहरिया धूपमे जल देहक ताप समेटि लैत / शीतल होइ शरीर—
सीढ़ी लग / पोखरि खाली पानि नहि, गामक स्मृति साँचि रखै / पीढ़ि ठाढ़
गम्भीर—सीढ़ी लग

पोखरिक सीढ़ीपर घैला भरबाक बेर जलमे उतरैत अकास आ पाथरक घिसल पएर-चिन्ह सार्वजनिक स्थलपर समयक निशान अछि । गजलमे जलस्रोत सामाजिक स्मृतिक ठाम बनैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “घैला भरबाक बेर पानि मे अकास उतरि आए / मन भऽ जाए धीर—सीढ़ी लग” आ फेर “दुपहरिया धूपमे जल देहक ताप समेटि लैत / शीतल होइ शरीर—सीढ़ी लग”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भोर झिलमिल नीर—सीढ़ी लग” आ अन्त “पीढ़ि ठाढ़ गम्भीर—सीढ़ी लग”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३१ : पलाशक रङ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग · रदीफः पलाश फुलल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बोनमे दहकल रङ—पलाश फुलल / मनमे उठल उमंग—
पलाश फुलल / सूखल डारि अचानक आगि सन फूल धारण कएलक / हवामे
उठल तरंग—पलाश फुलल / ऋतु कहलक फेरबदल चुपचापो सुन्दर होइत अछि
/ नब दिनक भेल संग—पलाश फुलल / दूर धरि लालिमा बाटक थाकल आँखि
जगौलक / जागल नब प्रसंग—पलाश फुलल / झडि जायत फूल, मुदा स्मृतिमे ई
रङ रहत / मोनमे रहल उमंग—पलाश फुलल

सूखल डारिपर पलाशक आगि सन रंग अचानक ऋतु-परिवर्तनक दृश्य दैत अछि ।
फूलक झडि जाएबाक सम्भावनाकें गजल नकारैत नहि; स्मृति ओकर दीर्घता
बनबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सूखल डारि अचानक आगि सन फूल धारण
कएलक / हवामे उठल तरंग—पलाश फुलल” आ फेर “दूर धरि लालिमा बाटक
थाकल आँखि जगौलक / जागल नब प्रसंग—पलाश फुलल”क प्रसङ्ग रहैत
अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक
परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बोनमे दहकल रङ—पलाश फुलल” आ अन्त “मोनमे
रहल उमंग—पलाश फुलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३२ : माटिक चूल्हि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त • रदीफः चूल्हि जागल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बासल गरम भात—चूल्हि जागल / पाछाँ हटली रात—चूल्हि जागल / फूँकक संग धुआँ उठि कारी भीत चुमि गेल / घरक जागल बात—चूल्हि जागल / माइ हाथक स्वाद नापि सकै नहि कोनो तराजू / नेहक ई सौगात—चूल्हि जागल / राखक भीतर आगि राति भरि निसबद बचल छल / फेर भेल प्रभात—चूल्हि जागल / घर छोट हो, संग बैसल भोजन ओकर विस्तार / जुड़ल सभक बात—चूल्हि जागल

फूँकसँ उठैत धुआँ आ माइ हाथक अनापनीय स्वाद गृहश्रमक मानककै वस्तुगत तराजूसँ अलग करैत अछि । छोट घरक विस्तार साझा भोजनमे देखाओल गेल अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “फूँकक संग धुआँ उठि कारी भीत चुमि गेल / घरक जागल बात—चूल्हि जागल” आ फेर “राखक भीतर आगि राति भरि निसबद बचल छल / फेर भेल प्रभात—चूल्हि जागल”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।

एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बासल गरम भात—चूल्हि जागल” आ अन्त “जुड़ल सभक बात—चूल्हि जागल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३३ : पातक दोना

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः दोना बनल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पात जुड़ि लेल आकार—दोना बनल / हाथ सिखौलक व्यवहार—दोना बनल / सूत्रक छोट गाँठ कतेको पातकेँ एकसाथ रखलक / सहयोगक उपहार—दोना बनल / भोज समाप्त भेल तऽ धरती फेर एकरा अपनौलक / प्रकृतिक संसार—दोना बनल / सादा वस्तु सेहो उपयोगमे सुन्दर भऽ सकैत / सरलताक सिंगार—दोना बनल / फेकल वस्तु नहि, माटिसँ माटि धरि पूरा यात्रा / सीखक खुलल दुआर—दोना बनल

पातक दोना बनलासँ धरतीमे फेर मिलबाक यात्रा वस्तुक सम्पूर्ण जीवनचक्र अछि । छोट गाँठक सहारे अनेक पात जुड़ब सामूहिक श्रमक साधारण, मुदा अर्थवान दृश्य अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सूत्रक छोट गाँठ कतेको पातकेँ एकसाथ रखलक / सहयोगक उपहार—दोना बनल” आ फेर “सादा वस्तु सेहो उपयोगमे सुन्दर भऽ सकैत / सरलताक सिंगार—दोना बनल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पात जुड़ि लेल आकार—दोना बनल” आ अन्त “सीखक खुलल दुआर—दोना बनल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३४ : चैतक हावा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोर · रदीफः हावा बहल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खुलि गेल नब भोर—हावा बहल / पातमे उठल हिलोर—
हावा बहल / घरक बन्द खिड़की खोलिते धूप भीतर आएल / छूटल जाइक डोर
—हावा बहल / बाँसक झुरमुट दूर धरि सरसर गीत सुनौलक / थमि गेल मनक
शोर—हावा बहल / चैत कहै जे पुरनका थकान आब छोड़ि दियौ / बाट देखू चारू
छोर—हावा बहल / ऋतु बदलै तऽ मनो नब संभावना खोजि लैत / उठल फेर
हिलोर—हावा बहल

बन्द खिड़की उधारलासँ घरमे नब धूप आ हावाक प्रवेश मनोवैज्ञानिक बदलावक
भौतिक रूपक अछि । ऋतुक फेरबदल मनक सम्भावना बनैत अछि; अन्तक
सामान्य नैतिक सूत्र दृश्यसँ कुछ अलग सुनाइत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “घरक बन्द खिड़की खोलिते धूप भीतर आएल
/ छूटल जाइक डोर—हावा बहल” आ फेर “चैत कहै जे पुरनका थकान आब
छोड़ि दियौ / बाट देखू चारू छोर—हावा बहल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खुलि गेल नब भोर—हावा बहल” आ अन्त “उठल फेर
हिलोर—हावा बहल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३५ : भोरक कुहासा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कुहासा उठल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूर देखायल पार—कुहासा उठल / चानि चमकल धार—कुहासा उठल / खेतक मेड़ जे धुँधमे एखन धरि लुकायल छल / लेलक फेर आकार—कुहासा उठल / चिड़ैक पहिल स्वर आमक डारि सँ बाहर आएल / भोर देलक पुकार—कुहासा उठल / सूरजक कोमल ताप धरती पर धीरे-धीरे पसरल / दृश्यक भेल विस्तार—कुहासा उठल / अस्पष्ट बाटो बेर पबिते चिन्हाए लगैत अछि / मोन खोललक दुआर—कुहासा उठल

कुहासामे नुकायल मेड़ फेर देखाइ देनाइ सत्यक निर्माण नहि, दृष्टिक स्पष्टता अछि । ई गजल अस्थायी अस्पष्टताक अनुभवकें बाट समाप्त होयबाक गलत निष्कर्षसँ बचबैत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “खेतक मेड़ जे धुँधमे एखन धरि लुकायल छल / लेलक फेर आकार—कुहासा उठल” आ फेर “सूरजक कोमल ताप धरती पर धीरे-धीरे पसरल / दृश्यक भेल विस्तार—कुहासा उठल”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।

एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिविन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूर देखायल पार—कुहासा उठल” आ अन्त “मोन खोललक दुआर—कुहासा उठल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३६ : कुम्हारक चाक

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः भोर · रदीफः चाक घुरल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हाथ देलक जोर—चाक घुरल / माटि छोड़लक छोेर—चाक घुरल / अँगुरीक हलुक दबावसँ देह घैलाक बनि उठल / जागल नबका भोर—चाक घुरल / माटि, पानि, धीरज तीनू एक लयमे जुड़ि गेल / काजक बान्हल डोर—चाक घुरल / रूप बनैत देखिकऽ नेनाक आँखि चमकि उठल / मनमे उठल हिलोर—चाक घुरल / चाक कहै धीरजसँ आकार जनम लैत अछि / थमि गेल सभ शोर—चाक घुरल

कुम्हारक चाक पर अँगुरीक हलुक दबावसँ घैल बनबाक प्रक्रिया बल आ धीरजक अनुपात दैत अछि । पूर्व गजल २८६क पुनरावर्तन रहितो माटि-पानि-गतिक लय अधिक केन्द्रित अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “अँगुरीक हलुक दबावसँ देह घैलाक बनि उठल / जागल नबका भोर—चाक घुरल” आ फेर “रूप बनैत देखिकऽ नेनाक आँखि चमकि उठल / मनमे उठल हिलोर—चाक घुरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हाथ देलक जोर—चाक घुरल” आ अन्त “थमि गेल सभ शोर—चाक घुरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३७ : सनईक फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः सनई फुलल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खेत भरल सुवास—सनई फुलल / पीयर भेल उजास—सनई फुलल / हावा छुबिते फूलक पाँति एक संग डोलि उठल / मेटल आँखिक पियास—सनई फुलल / सादा खेतक रंग अचानक उत्सव सन भऽ गेल / मनमे जागल विश्वास—सनई फुलल / भँवरा घूमि-घूमि अपन गीत ओतहि गुनगुनबैत / फूलमे पेलक निवास—सनई फुलल / धरती छोट रंगसँ सेहो दिनक रूप बदलि दैत / चारू दिस उजास—सनई फुलल

सनईक साधारण खेत अचानक फूलक समूहसँ उत्सव बनैत अछि । कोनो पैघ घटना नहि; लघु ऋतु-परिवर्तनक दृश्य काव्यक आधार ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हावा छुबिते फूलक पाँति एक संग डोलि उठल / मेटल आँखिक पियास—सनई फुलल” आ फेर “भँवरा घूमि-घूमि अपन गीत ओतहि गुनगुनबैत / फूलमे पेलक निवास—सनई फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खेत भरल सुवास—सनई फुलल” आ अन्त “चारू दिस उजास—सनई फुलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३८ : गामक हाट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-
क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-
विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ाट • रदीफः हाट भरल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : गामक बीच हाट—हाट भरल / चारू दिससँ बाट—हाट
भरल / साग, माछ, माटिक बरतन, बाँसक टोकरी संग / लोक उतरि एल घाट—
हाट भरल / मोल करैत हँसीमे पुरनका चिन्हार फेर जागल / बिछल रंगक पाट—
हाट भरल / कोनो दुकान पैघ नहि, मुदा सभक अपन नेह छल / सरल जीवनक
ठाठ—हाट भरल / किनब-बेचब बीचो समाचार गामक घूमि रहल / जुड़ि गेल सभ
बाट—हाट भरल

गामक हाटमे साग, माछ, माटिक बरतन आ मोल-भावक हँसी समुदायिक सूचना-
विनिमयक प्रक्रिया रचैत अछि । अर्थव्यवहारक संग लोक-चिन्हारक जीवित
नेटवर्क देखाइत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “साग, माछ, माटिक बरतन, बाँसक टोकरी
संग / लोक उतरि एल घाट—हाट भरल” आ फेर “कोनो दुकान पैघ नहि, मुदा
सभक अपन नेह छल / सरल जीवनक ठाठ—हाट भरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि ।
एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर
कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “गामक बीच हाट—हाट भरल” आ अन्त “जुड़ि गेल सभ
बाट—हाट भरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि ।
शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक
निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे
“मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल
अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक
निष्कर्ष नहि ।

गजल ३३९ : नावक घाट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः नाव खुलल ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धीरे बहली धार—नाव खुलल / दूर रहल ओ पार—नाव खुलल / माँझीक हाथ पानि पढैत दिशा अपन चुनि रहल / चलि उठल पतवार—नाव खुलल / कछारक लोक हाथ हिलाकऽ विदा देइत रहल / पाछाँ छुटल पुकार—नाव खुलल / बीच नदीमे अकास जलक संग एकरूप बुझायल / दृश्यक भेल विस्तार—नाव खुलल / पार पएबाक लेल गति संग धीरजो चाही / मनमे जागल विचार—नाव खुलल

माँझीक हाथ धारक गति ‘पढैत’ अछि—ई रूपक जलमार्गक अनुभवाधारित ज्ञानकें सम्मान दैत अछि । नदी पार करब केवल तीव्रता नहि, नियंत्रित धीरजक कला अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “माँझीक हाथ पानि पढैत दिशा अपन चुनि रहल / चलि उठल पतवार—नाव खुलल” आ फेर “बीच नदीमे अकास जलक संग एकरूप बुझायल / दृश्यक भेल विस्तार—नाव खुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धीरे बहली धार—नाव खुलल” आ अन्त “मनमे जागल विचार—नाव खुलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३४० : अँगनाक तुलसी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः तुलसी हरियर ।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अँगनामे प्राण—तुलसी हरियर / भोरक नब बिहान—
तुलसी हरियर / ओसक बूँद पातपर मोती जकाँ चमकि रहल / ठहरि गेल ध्यान—
तुलसी हरियर / माटिक छोट चौरा घरक बीच अपन ठाम धेने / सरलताक मान—
तुलसी हरियर / हावा चलिते पात बजौलक धीम-धीम सरसर / जागल मौन गान
—तुलसी हरियर / छोट गाछो रोज देखभालसँ गहिरे जुड़ि जाए / नेहक ई
पहिचान—तुलसी हरियर

अँगनाक तुलसीक छोट चौरा घरेलू देखभालक नियमितता सँ जुड़ैत अछि । ई
छोट गाछक भाव लोक-आस्था सँ शुरू भऽ दैनिक श्रमक मूल्य तक जाइत अछि ।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ओसक बूँद पातपर मोती जकाँ चमकि रहल /
ठहरि गेल ध्यान—तुलसी हरियर” आ फेर “हावा चलिते पात बजौलक धीम-धीम
सरसर / जागल मौन गान—तुलसी हरियर”क प्रसङ्ग रहैत अछि । एहि दुनू
शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र
अछि । मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण
नहि मानल गेल अछि ।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अँगनामे प्राण—तुलसी हरियर” आ अन्त “नेहक ई
पहिचान—तुलसी हरियर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल
अछि । शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती
शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि । मूल छन्द-
सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल
गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित
मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि ।

गजल ३२१-३४० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : ३२२/३१२ (“अरिपनक रेखा”/“मिथिला-चित्रक रेखा”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्वचरनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकेँ हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल ३४१ : आसिनक अकास

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: अकास निखरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूर खुलल विस्तार—अकास निखरल / नील देलक पुकार—अकास निखरल / बरखाक लम्बा दिन पाछाँ धूप खेतपर उतरली / झिलमिल भेल धार—अकास निखरल / पातक माथक बूँद हवा लगिते झरि पड़ली / दृश्यक नव आकार—अकास निखरल / दूर उड़ैत बगुलाक पाँति धवल रेखा खींचलक / मन करए विचार—अकास निखरल / आसिन कहै फेरबदलो अपन नेहिल लय रखैत / खुलल चारू दुआर—अकास निखरल

आसिनक अकास बरखाक बाद खुजल विस्तृत दृष्टि दैत अछि। पातक माथसँ झरैत बूँद समयक ऋतु-परिवर्तनकेँ स्पर्शनीय बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बरखाक लम्बा दिन पाछाँ धूप खेतपर उतरली / झिलमिल भेल धार—अकास निखरल” आ फेर “दूर उड़ैत बगुलाक पाँति धवल रेखा खींचलक / मन करए विचार—अकास निखरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक

परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूर खुलल विस्तार—अकास निखरल” आ अन्त “खुलल चारू दुआर—अकास निखरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४२ : धानक बालि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः बालि झुकल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दाना भरल भार—बालि झुकल / हावा देलक धार—बालि झुकल / हरियर देह कने-कने सोनरङ धऽ उठली / खेतक भेल विस्तार—बालि झुकल / कातिकक धूप माथ पर कोमल हाथ जकाँ पडली / दूर सुनायल पुकार—बालि झुकल / पाकल अन्न झुकैत अछि, रिक्त डाँठ ठाढ़ रहैत / मोनमे जागल विचार—बालि झुकल / ऋतु भरि श्रम दानामे चुपचाप कथा बनि बसल / धरती देलक उपहार—बालि झुकल

धानक भारसँ झुकैत बालि परिपक्वताक वस्तुगत रूप अछि। हरियरसँ सोनरङ धरबाक क्रममे ऋतुभरि खेतिहरक श्रम दानामे जमा होइत देखाइत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हरियर देह कने-कने सोनरङ धऽ उठली / खेतक भेल विस्तार—बालि झुकल” आ फेर “पाकल अन्न झुकैत अछि, रिक्त डाँठ ठाढ़ रहैत / मोनमे जागल विचार—बालि झुकल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दाना भरल भार—बालि झुकल” आ अन्त “धरती देलक उपहार—बालि झुकल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४३ : पुरइनक पात

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: पुरइन डोलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भोर भरल उजास—पुरइन डोलल / मेह मिटल पियास—पुरइन डोलल / पानिक माथ हरियर थारी जकाँ पात पसारल / चानक हलुक आभास—पुरइन डोलल / मेढक टप्प सँ जलमे गोल-गोल लहरि उठली / भ्रमर पेलक निवास—पुरइन डोलल / फूलक कोमल देह पातक बीचसँ ऊपर उठली / जागल नव विश्वास—पुरइन डोलल / पोखरिक मौन सेहो पवन लगिते गीत बनल / चारू दिस सुवास—पुरइन डोलल

पुरइनक पात जलक माथपर हरियर थारी जकाँ पसारल अछि; मेढकक उछालसँ गोल लहरि निस्तब्ध दृश्यकें गति दैत अछि। मौन आ हिलोरक अन्तर एतय वास्तविक दृश्यसँ सर्जित अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पानिक माथ हरियर थारी जकाँ पात पसारल / चानक हलुक आभास—पुरइन डोलल” आ फेर “फूलक कोमल देह पातक बीचसँ ऊपर उठली / जागल नव विश्वास—पुरइन डोलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भोर भरल उजास—पुरइन डोलल” आ अन्त “चारू दिस सुवास—पुरइन डोलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४४ : चरखाक सूत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर · रदीफ: सूत बढल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अँगुरी पेलक छोर—सूत बढल / चरखा बान्हलक डोर—सूत बढल / रुइक कोमल फाहा घुरिते महीन रेखा बनल / घरमे जागल भोर—सूत बढल / धीरज बिना ताग टूटए, हाथ अपन गति बुझैत / कने-कने देल जोर—सूत बढल / चक्र घुरैत रहल, नेनाक आँखि सेहो संग घुरली / मोनमे उठल हिलोर—सूत बढल / सादा काजक भीतर पीढ़ीक स्मृति बजैत रहल / चुप भेल बाहिर शोर—सूत बढल

चरखाक रुइ महीन सूत बनबाक क्रममे हाथक लय आ धीरज जरूरी अछि। सूत टूटबाक जोखिम कारीगरक अनुभवकें सहज अभ्याससँ अलग पहिचान दैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “रुइक कोमल फाहा घुरिते महीन रेखा बनल / घरमे जागल भोर—सूत बढल” आ फेर “चक्र घुरैत रहल, नेनाक आँखि सेहो संग घुरली / मोनमे उठल हिलोर—सूत बढल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अँगुरी पेलक छोर—सूत बढल” आ अन्त “चुप भेल बाहिर शोर—सूत बढल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४५ : ओसारक साँझ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: साँझ बैसल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : ओसारमे प्राण—साँझ बैसल / चिड़ैक थमल गान—साँझ बैसल / दिन भरिक काज समेटि लोक कने विश्राम लेल / अँगनामे ध्यान—साँझ बैसल / दादीक धीम कथा संग धूपक अन्तिम रेखा / स्मृतिक राखल मान—साँझ बैसल / चूल्हिक धुआँ ऊपर उठि अकासमे घुलि गेल / घरक नेहक सम्मान—साँझ बैसल / ओसार खाली भीत नहि, संग बैसबाक ठाम / घरक ई पहिचान—साँझ बैसल

दिनक काज समेटि ओसारमे बैसल लोक आ दादीक धीम कथा घरेलू वास्तुक सामाजिक अर्थ खोलैत अछि। ओसारा भीतक नाम नहि, सम्बन्धक साझा स्थान अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दिन भरिक काज समेटि लोक कने विश्राम लेल / अँगनामे ध्यान—साँझ बैसल” आ फेर “चूल्हिक धुआँ ऊपर उठि अकासमे घुलि गेल / घरक नेहक सम्मान—साँझ बैसल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “ओसारमे प्राण—साँझ बैसल” आ अन्त “घरक ई पहिचान—साँझ बैसल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४६ : महुआक गन्ध

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: ङग · रदीफ: महुआ झरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : गाछ तरे रंग—महुआ झरल / गन्ध चलल संग—महुआ झरल / राति भरि फूल चुपचाप पातक बीचसँ झरैत / भोर भरल उमंग—महुआ झरल / नेना चुनि खाँचीमे राखय कोमल फूल सभ / हँसी उठल तरंग—महुआ झरल / पुरखा सँ चलि आएल स्वादक कथा फेर जागल / घरमे जुड़ल प्रसंग—महुआ झरल / ऋतु अपन चिन्ह माटिपर सादा अक्षरमे लिखलक / धरतीक अपन दंग—महुआ झरल

राति झरल महुआक फूल नेना भोरमे चुनैत अछि; प्रकृतिक चुप घटना घरेलक छोटा श्रम बनैत अछि। गन्ध आ खाँची इन्द्रियगत स्मृति निर्माण करैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “राति भरि फूल चुपचाप पातक बीचसँ झरैत / भोर भरल उमंग—महुआ झरल” आ फेर “पुरखा सँ चलि आएल स्वादक कथा फेर जागल / घरमे जुड़ल प्रसंग—महुआ झरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “गाछ तरे रंग—महुआ झरल” आ अन्त “धरतीक अपन ढंग—महुआ झरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४७ : इनारक डोर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: डोर उतरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भोर देलक पुकार—डोर उतरल / घैल उठेलक भार—डोर उतरल / इनारक ठंड पानि अन्हार गहिराइमे चमकल / घैल छुबलक धार—डोर उतरल / हाथक गति नापैत रहल कतेक गहिराइ नीचे / अनुभवक आधार—डोर उतरल / जगतक भीजल कात पर सूरजक किरण टिकली / खुलि गेल दुआर—डोर उतरल / पानि खींचब काज मात्र नहि, लोक जुटबाक बेर / जुडल नेह-विचार—डोर उतरल

इनारक गहिराइ हाथक डोरसँ नापब शरीरक अनुभवाधारित ज्ञान अछि। पानि आनबाक स्थान लोकक बैसार सेहो बनैत अछि; दैनन्दिन श्रम आ समुदायिकता संयुक्त।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “इनारक ठंड पानि अन्हार गहिराइमे चमकल / घैल छुबलक धार—डोर उतरल” आ फेर “जगतक भीजल कात पर सूरजक किरण टिकली / खुलि गेल दुआर—डोर उतरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भोर देलक पुकार—डोर उतरल” आ अन्त “जुडल नेह-विचार—डोर उतरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४८ : फागुनक पवन

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १५-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: पवन बहल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कोइल छेड़लक तान—पवन बहल / गाछमे जागल प्राण—पवन बहल / आमक मोजर गन्ध लिए चारू दिशि घूमैत / बनल ऋतुक गान—पवन बहल / सूखल पात उड़ा कऽ बाटक कोन बदलैत रहल / खींचि लेलक ध्यान—पवन बहल / राति कने छोट भेल, भोर कने जल्दी जागल / रङ्गल नब बिहान—पवन बहल / फागुन बिना बाजा सेहो देहक भीतर बाजैत / ऋतुक ई पहिचान—पवन बहल

आमक मोजरक गन्ध लऽ चलैत फागुनक पवन देखल नहि, सूँघल आ सुनल जाइत अछि। कोइलीक तान ऋतुक स्वरोत्सवकें मनुखक भीतर धरैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “आमक मोजर गन्ध लिए चारू दिशि घूमैत / बनल ऋतुक गान—पवन बहल” आ फेर “राति कने छोट भेल, भोर कने जल्दी जागल / रङ्गल नब बिहान—पवन बहल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कोइल छेड़लक तान—पवन बहल” आ अन्त “ऋतुक ई पहिचान—पवन बहल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४९ : ढेकीक ताल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १८-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ल · रदीफ: ढेकी बाजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भोर पकड़लक ताल—ढेकी बाजल / पएर धरलक चाल—ढेकी बाजल / धानक दाना कुटि-कुटि उज्जर चाउर बनैत गेल / मोनमे जागल खयाल—ढेकी बाजल / एक पएर उठैत दोसर फेर माटिपर पड़ैत रहल / लय पुछलक सवाल—ढेकी बाजल / घरक काजक भीतर गीतक पुरनका स्वर जगल / हँसी पेलक उछाल—ढेकी बाजल / श्रम आ लय जखन संग हो तऽ कठिन काजो हलुक / पीढ़ीक रहल मिसाल—ढेकी बाजल

ढेकीक नियमित पदचाप आ दानासँ चाउर बनबाक श्रम-लय घरक कार्यक ध्वनि-अभिलेख अछि। कठिन काज ‘हलुक’ लगबाक दावा श्रमक लयक प्रभावक काव्यात्मक व्याख्या।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धानक दाना कुटि-कुटि उज्जर चाउर बनैत गेल / मोनमे जागल खयाल—ढेकी बाजल” आ फेर “घरक काजक भीतर गीतक पुरनका स्वर जगल / हँसी पेलक उछाल—ढेकी बाजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भोर पकड़लक ताल—ढेकी बाजल” आ अन्त “पीढीक रहल मिसाल—ढेकी बाजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५० : भादोक मेघ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर • रदीफ: मेघ घुमल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अकास भेल घोर—मेघ घुमल / दूर उठल शोर—मेघ घुमल / कौआ पाँखि समेटि गाछक भीतरी डारि पकड़लक / थमि गेल भोर—मेघ घुमल / धानक खेतक माथ पवनक लम्बा हाथ फिरल / दिसि-दिसि नहि छोर—मेघ घुमल / बिजुरी क्षण भरि अन्हारक परदा चीड़ि गेल / बान्हि देलक डोर—मेघ घुमल / पहिल बूँद पड़िते माटिक गन्ध उठि नाचल / मोनमे उठल हिलोर—मेघ घुमल

भादोक मेघक आवत-जावतमे कौआक पाँखि समेटब आ धानपर हवा चलब अनेक जीवक प्रतिक्रिया अछि। पहिल बूँद माटिक गन्ध उठबैत मौसमक परिवर्तनकें अनुभव बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कौआ पाँखि समेटि गाछक भीतरी डारि पकड़लक / थमि गेल भोर—मेघ घुमल” आ फेर “बिजुरी क्षण भरि अन्हारक परदा चीड़ि गेल / बान्हि देलक डोर—मेघ घुमल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अकास भेल घोर—मेघ घुमल” आ अन्त “मोनमे उठल हिलोर—मेघ घुमल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १४-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५१ : बटगाछक छाँह

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: छाँह पड़ल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बाटिक कात बास—छाँह पड़ल / थाकल देहक पियास—छाँह पड़ल / जड़ि धरतीमे गहिरे, डारि अकास दिशि पसरल / पातमे झरल उजास—छाँह पड़ल / बाटोही घड़ी भरि बैसि फेर अपन बाट पकड़लक / मोनमे नव विश्वास—छाँह पड़ल / चिड़ै घोंसला बान्हि पातक बीच घर बनौलक / गाछ लैत रहल साँस—छाँह पड़ल / पुरनका बटगाछ मौन रहितो गामक कथा कहैत / माटिमे भरल सुवास—छाँह पड़ल

बटगाछक गहिर जड़ि आ पसरल डारि अनेक पथिककें छाँह दैत अछि। यात्री घड़ी भरि रुकि चलि जाए, गाछ स्थिर रहि लोकक बाटक साक्षी बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जड़ि धरतीमे गहिरे, डारि अकास दिशि पसरल / पातमे झरल उजास—छाँह पड़ल” आ फेर “चिड़ै घोंसला बान्हि पातक बीच घर बनौलक / गाछ लैत रहल साँस—छाँह पड़ल”क प्रसङ्ग रहैत अछि।

एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बाटिक कात बास—छाँह पडल” आ अन्त “माटिमे भरल सुवास—छाँह पडल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५२ : सुपक हावा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: सुप चलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हाथ देलक धार—सुप चलल / धान छोड़लक भार—सुप चलल / हावाक संग भूसी उड़ि कात-कात जा बसल / आँगन देलक पुकार—सुप चलल / काजक भीतर हाथ पुरनका गति अपने खोजैत रहल / मोनमे उठल विचार—सुप चलल / उज्जर दाना धीरे-धीरे एक ठाम जुटैत गेल / खुलि गेल दुआर—सुप चलल / हावाक सही दिशा बुझबो हुनरक एक रूप अछि / श्रमक ई उपहार—सुप चलल

सुप चलब केवल भूसी उड़नाइ नहि, हावाक दिशा बुझबाक हस्तकौशल अछि।

काव्यमे अनुभवक अवाचिक ज्ञानक मान्यता भेटैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हावाक संग भूसी उड़ि कात-कात जा बसल / आँगन देलक पुकार—सुप चलल” आ फेर “उज्जर दाना धीरे-धीरे एक ठाम जुटैत गेल / खुलि गेल दुआर—सुप चलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हाथ देलक धार—सुप चलल” आ अन्त “श्रमक ई उपहार—सुप चलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १४-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५३ : बगुलाक पाँति

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: पाँति उड़ल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पाँखि धरलक तान—पाँति उड़ल / अकास बनल गान—पाँति उड़ल / एकक पाछाँ एक उज्जर देह रेखा जकाँ बढली / खींचि लेलक ध्यान—पाँति उड़ल / कोनो अकेला नहि, सभ अपन ठाम सँ गति देलक / संग-संग उड़ान—पाँति उड़ल / सूरज ढलैत रहल, नदीपर सोनरङ पसरल / नव भेल बिहान—पाँति उड़ल / दूर जाइतो पाँतिक मेल आँखिमे रहि गेल / संगक ई पहिचान—पाँति उड़ल

बगुलाक पाँति एकल पक्षीक बदला सामूहिक दिशाबोध बनबैत अछि। प्रत्येक पाँखि अपन गति राखैत अछि, मुदा समूहक रेखा बनबाक सौन्दर्य एकर प्रमुख दृश्य।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एकक पाछाँ एक उज्जर देह रेखा जकाँ बढली / खींचि लेलक ध्यान—पाँति उड़ल” आ फेर “सूरज ढलैत रहल, नदीपर सोनरङ पसरल / नव भेल बिहान—पाँति उड़ल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३०६ “खेतक पाँति”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “माटिमे रोपल धान—पाँति उठैए” आ एतुक आरम्भ “पाँखि धरलक तान—पाँति उडल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५४ : चूल्हक राख

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: राख तरे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : लुका रहल अंगार—राख तरे / जीबि रहल विचार—राख तरे / ऊपर सँ सब धूसर, भीतर ताप एखनहुँ बचल / लेत नब आकार—राख तरे / कने फूँक पड़िते लाल बिन्दु फेर चमकि उठल / बुझायल व्यवहार—राख तरे / जे चुप अछि से रिक्त हो, ई नियम कतहु नहि / धीरजक आधार—राख तरे / भोरक रोटी लेल फेर आगि जागि उठत एतय / दिन देत पुकार—राख तरे

चूल्हक राख तरे बचल अंगार पुनरावर्तक ठोस भौतिक आधार अछि। केवल काल्पनिक आशा नहि; फूँक पड़ला पर रोटी लेल आगि फेर उठबाक दैनिक यथार्थ प्रस्तुत।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “ऊपर सँ सब धूसर, भीतर ताप एखनहुँ बचल / लेत नब आकार—राख तरे” आ फेर “जे चुप अछि से रिक्त हो, ई नियम कतहु नहि / धीरजक आधार—राख तरे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “लुका रहल अंगार—राख तरे” आ अन्त “दिन देत पुकार—राख तरे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५५ : कनेरक फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-तलय अनुसार। काफिया: -ग · रदीफ: कनेर फुलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भीतक कात रंग—कनेर फुलल / धूप चलल संग—कनेर फुलल / कठिन गरमीमे सेहो पात हरियर देह बचौने / आँगन भरल उमंग—कनेर फुलल / भ्रमर कने ठमकि फूलक भीतर रस खोजैत रहल / हावामे उठल तरंग—कनेर फुलल / सादा गाछक बीच ऋतुक एक नन्हि कथा खुलली / जुड़ि गेल प्रसंग—कनेर फुलल / कठिन बेरमे रंग बचेनाइ सेहो एक कला / प्रकृतिक अपन ढंग—कनेर फुलल

कठिन गरमीमे कनेरक हरियर पात आ फूलक रंग कठिन समयमे सौन्दर्यक टिकाउपनक बिम्ब बनैत अछि। रूपक प्रभावी, मुदा रचनाक नैतिक अर्थ बहुत सीधा।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कठिन गरमीमे सेहो पात हरियर देह बचौने / आँगन भरल उमंग—कनेर फुलल” आ फेर “सादा गाछक बीच ऋतुक एक नन्हि कथा खुलली / जुड़ि गेल प्रसंग—कनेर फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भीतक कात रंग—कनेर फुलल” आ अन्त “प्रकृतिक अपन ढंग—कनेर फुलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५६ : तिलकोरक पात

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -त · रदीफ: ओस चमकल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : तिलकोरक हरियर पात—ओस चमकल / पवन सुनौलक बात—ओस चमकल / चानक उजास लतिका पर चुपचाप उतरैत रहल / बूँदमे बाँचल रात—ओस चमकल / अँगना लगक पातपर नन्हि मोती सन बूँद अटकल / प्रकृतिक सौगात—ओस चमकल / पहिल किरण पड़िते हर बूँद अपन रङ बदललक / जागल नव प्रभात—ओस चमकल / क्षण भरिक ई रूप मोनमे दिन भरि रहि गेल / बनल मौन संगत—ओस चमकल

तिलकोरक पातपर अटकल ओसक नन्हि बूँद आ चानक उजास क्षणक दृश्यसँ दिनभरि रहबाक स्मृति बनबैत अछि। इन्द्रिय-लघुता ई रचनाक मुख्य गुण।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “चानक उजास लतिका पर चुपचाप उतरैत रहल / बूँदमे बाँचल रात—ओस चमकल” आ फेर “पहिल किरण पड़िते हर बूँद अपन रङ बदललक / जागल नव प्रभात—ओस चमकल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३२३ “दूबिपर ओस”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “आँगनमे भेल भोर—ओस चमकल” आ एतुक आरम्भ “तिलकोरक हरियर पात—ओस चमकल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५७ : माटिक घैल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः घैल भरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : इनारसँ उठल धार—घैल भरल / भीजल घरक दुआर—घैल भरल / माथपर घैल, हाथमे लोटा, चाल सम्हारल / छोट लगल संसार—घैल भरल / माटिक देह भीतर पानि दिन भरि शीतल रहल / घटल पियासक भार—घैल भरल / घैलक घेरा पर अँगुरीक पुरनका चिन्ह बाँचल / सुनि कुम्हारक पुकार—घैल भरल / साधारण वस्तुओ जीवनक पैघ सुख दैत अछि / धरतीक उपहार—घैल भरल

माथपर घैल सम्हारि चलैत देह जलक दैनिक यात्राक पूरा शरीरगत बोझ देखबैत अछि। माटिक घैलक शीतलता उपयोगिताक संग छोट घरेलू सुखक बिम्ब अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “माथपर घैल, हाथमे लोटा, चाल सम्हारल / छोट लगल संसार—घैल भरल” आ फेर “घैलक घेरा पर अँगुरीक पुरनका चिन्ह बाँचल / सुनि कुम्हारक पुकार—घैल भरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “इनारसँ उठल धार—घैल भरल” आ अन्त “धरतीक उपहार—घैल भरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक

बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५८ : कदम्बक फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ास · रदीफः कदम्ब फुलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हावामे भरल सुवास—कदम्ब फुलल / बरखा आयल पास—कदम्ब फुलल / गोल-गोल फूलपर भमरक घेर बनैत रहल / पातमे खेलल उजास—कदम्ब फुलल / बूढ़ गाछक डारि नव ऋतुक भार सम्हारलक / वन लैत नव साँस—कदम्ब फुलल / बालपनक एक कथा अकस्मात् मोन पड़ि गेल / स्मृतिक भेल आभास—कदम्ब फुलल / ऋतु फेर लौटैत अछि, सूखल मोन हरियर होइत / मोनमे जागल विश्वास—कदम्ब फुलल

कदम्बक गोल फूलपर भमरक घेर आ बूढ़ डारिक नव ऋतु-भार कालक अनेक स्तर जोड़ैत अछि। गन्धक बिम्ब सामाजिक घटना नहि, ऋतुक चक्रीयता पर केन्द्रित।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “गोल-गोल फूलपर भमरक घेर बनैत रहल / पातमे खेलल उजास—कदम्ब फुलल” आ फेर “बालपनक एक कथा अकस्मात् मोन पड़ि गेल / स्मृतिक भेल आभास—कदम्ब फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हावामे भरल सुवास—कदम्ब फुलल” आ अन्त “मोनमे जागल विश्वास—कदम्ब फुलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल

छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३५९ : चरौनिहारक बंसी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुंजी। मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ोर · रदीफः बंसी बाजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : धुनि जगौलक भोर—बंसी बाजल / खेत नहि रहल छोर
—बंसी बाजल / गोरु धीरे-धीरे हरियर मेड़ दिशि बढ़ैत गेल / पवन बान्हलक डोर
—बंसी बाजल / दूर गामक आहट धुनिमे कने-कने घुलि गेल / थमि गेल सभ
शोर—बंसी बाजल / एक सरल सुर भीतर कतबो स्मृति खोलि देलक / मोनमे
उठल हिलोर—बंसी बाजल / साँझक पहिल तारा देखिते झुण्ड घरक बाट धरलक
/ मुस्की खेलल ठोर—बंसी बाजल

चरौनिहारक बंसी गोरुक चाल आ दूर गामक स्वरकें संग बाँधैत अछि। भोर सँ साँझ धरि पशुपालनक समयक ध्वनिक चिह्न।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “गोरु धीरे-धीरे हरियर मेड़ दिशि बढ़ैत गेल / पवन बान्हलक डोर—बंसी बाजल” आ फेर “एक सरल सुर भीतर कतबो स्मृति खोलि देलक / मोनमे उठल हिलोर—बंसी बाजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “धुनि जगौलक भोर—बंसी बाजल” आ अन्त “मुस्की खेलल ठोर—बंसी बाजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल

गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६० : खपरैल पर मेह

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः ङग · रदीफः मेह बरसल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खपरैल बदललक रंग—मेह बरसल / नेनाक जागल उमंग—मेह बरसल / बूँदक टप-टप धुनि घरक मौनक संग मिलल / छप्पर देलक तरंग—मेह बरसल / अँगनाक धूर माटि बनि सुगन्ध उठबैत रहल / पवनो देलक संग—मेह बरसल / कोठरीक अन्हारो बूँदक स्वर सुनि उज्जर भेल / बरखाक अपन ढंग—मेह बरसल / पुरनका घरक प्रत्येक कोन नब कथा कहए लागल / जुड़ल नब प्रसंग—मेह बरसल

खपरैलपर टप-टप बरखा घरक प्रत्येक कोनकें पुरान स्मृतिक नब कथा दैत अछि। धूरि भीजि माटि बनबाक गन्ध वर्षाक श्रव्य दृश्यकें घ्राणात्मक बनबैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बूँदक टप-टप धुनि घरक मौनक संग मिलल / छप्पर देलक तरंग—मेह बरसल” आ फेर “कोठरीक अन्हारो बूँदक स्वर सुनि उज्जर भेल / बरखाक अपन ढंग—मेह बरसल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३२० “मेहक बाद माटिक गन्ध”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “माटि बदललक रंग—मेह पड़ल” आ एतुक आरम्भ “खपरैल बदललक रंग—मेह बरसल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३४१-३६० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : ३५३/३०६ (“बगुलाक पाँति”/“खेतक पाँति”); ३५६/३२३ (“तिलकोरक पात”/“दूबिपर ओस”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्व रचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल ३६१ : मधुमाछीक गुँजार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: मधुमाछी गुँजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : फूलमे उठल गान—मधुमाछी गुँजल / खुलल नव विहान—मधुमाछी गुँजल / एक फूलसँ दोसर फूल धरि पाँखि थिर नहि रहल / लेलक फेर उड़ान—मधुमाछी गुँजल / रस लैत फूलक परागो संग-संग दूर धरि गेल / काजमे पूरा ध्यान—मधुमाछी गुँजल / छोट-छोट बूँद जोड़ि छत्तामे मधु भैरैत रहल / श्रमक अपन विधान—मधुमाछी गुँजल / नन्हि जीवक श्रम कहैत अछि संगति कतेक पैघ / श्रमक ई पहिचान—मधुमाछी गुँजल

मधुमाछीक फूलसँ फूल धरि गमन रस लेबाक संग परागक चुप स्थानान्तरणक दृश्य अछि। लघु जीवनक परस्पर निर्भरता काव्यक पर्यावरणीय केन्द्र।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक फूलसँ दोसर फूल धरि पाँखि थिर नहि रहल / लेलक फेर उड़ान—मधुमाछी गुँजल” आ फेर “छोट-छोट बूँद जोड़ि छत्तामे मधु भैरैत रहल / श्रमक अपन विधान—मधुमाछी गुँजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर

कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “फूलमे उठल गान—मधुमाछी गुँजल” आ अन्त “श्रमक ई पहिचान—मधुमाछी गुँजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६२ : दलानक कथा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः कथा चलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बड-बूढक दुलार—कथा चलल / खुलल पुरन संसार—कथा चलल / दीपक मद्धिम उजासमे चेहरा सभ चमकैत रहल / जागल नव विचार—कथा चलल / नेना प्रश्न पुछैत, उत्तरमे दोसर प्रसंग खुलैत / सीखल नीक व्यवहार—कथा चलल / एक हासक प्रसंग पडिते सभक ओठ फुलि उठल / गुँजल मधुर हँकार—कथा चलल / पोथीमे जे नहि लिखल, स्मृति ओकरो बाँचि रखैत / पीढ़ीक ई उपहार—कथा चलल

दलानक धीम उजासमे नेनाक प्रश्नसँ खुलैत दोसर प्रसङ्ग मौखिक शिक्षणक गतिशीलता अछि। जे बात पोथीमे नहि, स्मृतिमे सुरक्षित रहल—एहि भेदमे लोकइतिहासक महत्त्व अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दीपक मद्धिम उजासमे चेहरा सभ चमकैत रहल / जागल नव विचार—कथा चलल” आ फेर “एक हासक प्रसंग पडिते सभक ओठ फुलि उठल / गुँजल मधुर हँकार—कथा चलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३१९. “कोसीक बालू”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “बदलैत रहै धार—कथा लिखैए” आ एतुक आरम्भ “बड़-बूढ़क दुलार—कथा चलल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६३ : अड़हुलक फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: अड़हुल फुलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अँगनामे खुलल दुआर—अड़हुल फुलल / भोरक पवन अनलक बहार—अड़हुल फुलल / पातक बीच सँ उठि एकटा फूल अकास दिस तकलक / ओस देलक शृंगार—अड़हुल फुलल / नहि गहना, नहि रंगक आडम्बर, तइयो रूप मनोहर / प्रकृतिक उपहार—अड़हुल फुलल / दादी पूजा लेल तोड़थि, किछु फूल गाछे पर छोड़थि / गाछ रहए आधार—अड़हुल फुलल / नन्हि अँगना सेहो अपन रूपसँ जग उज्जर करैत / रंग भरलक संसार—अड़हुल फुलल

अड़हुलक एकटा फूल अँगनाक सीमित जगहकें इजोत दैत अछि। निराडम्बर रूपक प्रशंसा घरेलू प्रकृतिक सौन्दर्यक जनसुलभता देखबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पातक बीच सँ उठि एकटा फूल अकास दिस तकलक / ओस देलक शृंगार—अड़हुल फुलल” आ फेर “दादी पूजा लेल तोड़थि, किछु फूल गाछे पर छोड़थि / गाछ रहए आधार—अड़हुल फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अँगनामे खुलल दुआर—अड़हुल फुलल” आ अन्त “रंग भरलक संसार—अड़हुल फुलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६४ : मडुआक खेत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -नन · रदीफ: मडुआ लहरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : संगमे झूमल धान—मडुआ लहरल / खुलल हरियर विहान—मडुआ लहरल / कम पानियोमे धरतीक छाती पर अड़िग ठाढ़ रहल / हँसल श्रमशील किसान—मडुआ लहरल / हावा चलिते बालि सभ एक-दोसरासँ बात करए / खेत सुनौलक गान—मडुआ लहरल / सहज अन्नक मोल बुझू, श्रमक संग ओकर नाता अछि / मिलए श्रमक सम्मान—मडुआ लहरल / गामक भोजन, देहक बल, पुरखाक स्मृति एक संग / माटिक ई पहिचान—मडुआ लहरल

कम पानिमे उगैत मडुआक खेत आ धरतीपर अड़िग बालि कृषि-चयनक स्थानीय अनुभव अछि। भोजन, देहक बल आ पुरखा स्मृतिक युग्म कृषि इतिहासक कवितात्मक पठन बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कम पानियोमे धरतीक छाती पर अड़िग ठाढ़ रहल / हँसल श्रमशील किसान—मडुआ लहरल” आ फेर “सहज अन्नक मोल बुझू, श्रमक संग ओकर नाता अछि / मिलए श्रमक सम्मान—मडुआ लहरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “संगमे झूमल धान—मड्डुआ लहरल” आ अन्त “माटिक ई पहिचान—मड्डुआ लहरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६५ : पनघटक बाट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: पानि आनल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : भोरहि खुलल दुआर—पानि आनल / इनारसँ उठल धार—पानि आनल / माथक घैल सम्हारि पएर पएर माटि नापैत गेल / सहज रहल व्यवहार—पानि आनल / इनारक घेरा लग बातक छोट धार बहैत रहल / हँसी देलक पुकार—पानि आनल / दूरसँ पएरक मद्धिम चाल चिन्हार सन सुनाइत छल / भोरक ई उपहार—पानि आनल / सूरज ऊपर उठिते घरक काज सभ जागि उठल / जागल छोट संसार—पानि आनल

घैल सम्हारि पनघट दिस चलनिहारक पग-गति श्रमक लय अछि। इनार लग भासैत छोट बातसँ घरेलू जलश्रम समुदायिक भेट बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “माथक घैल सम्हारि पएर पएर माटि नापैत गेल / सहज रहल व्यवहार—पानि आनल” आ फेर “दूरसँ पएरक मद्धिम चाल चिन्हार सन सुनाइत छल / भोरक ई उपहार—पानि आनल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “भोरहि खुलल दुआर—पानि आनल” आ अन्त “जागल छोट संसार—पानि आनल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६६ : पनसक गाछ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: पनस फलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : डारि सम्हारलक भार—पनस फलल / महकल घरक दुआर—पनस फलल / काँटभरल देह भीतर मीठ गुदा चुपचाप पलैत / आयल ऋतुक बहार—पनस फलल / गाछ तरे नेना गिनैत—कोन फल पहिने पाकत / छोट भेल संसार—पनस फलल / एक फल पड़ोसी घर गेल, एक रहि गेल अपन अँगना / बाँटबाक उपहार—पनस फलल / गाछक छाँह आ फल दूनू कहैत—देबो जीवनक रीति / माटिक ई आधार—पनस फलल

पनसक काँटभरल देहक भीतर मीठ गुदा बाह्य रूप आ आन्तरिक उपयोगिताक विरोध बनबैत अछि। नेनाक फल पाकबाक प्रतीक्षा जीवनक ऋतु-गणनाक सहज सूचक अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “काँटभरल देह भीतर मीठ गुदा चुपचाप पलैत / आयल ऋतुक बहार—पनस फलल” आ फेर “एक फल पड़ोसी घर गेल, एक रहि गेल अपन अँगना / बाँटबाक उपहार—पनस फलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “डारि सम्हारलक भार—पनस फलल” आ अन्त “माटिक ई आधार—पनस फलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-३१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६७ : जूटक डोर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर · रदीफ: डोर बटल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हाथमे किसि डोर—डोर बटल / तन्तु नहि रहल छोर—डोर बटल / भीजल जूटक रेशा अँगुरी बीच घुमि बल पबैत गेल / काज जगौलक भोर—डोर बटल / घरक छोट काजमे सेहो धीरजक मोल बुझाईत अछि / थमि गेल व्यर्थ शोर—डोर बटल / एक-एक तन्तु जुड़ि बल बनल, एकता अपन अर्थ कहलक / मुस्की खेलल ठोर—डोर बटल / जे अलग-अलग दुर्बल छल, संग होइत दृढ़ बनल / मोनमे उठल हिलोर—डोर बटल

भीजल जूटक अलग-अलग रेशा बटि मजबूत डोर बनैत अछि। सामूहिकता केवल नारा नहि, अँगुरीक श्रमसँ बनैत वस्तुक भौतिक क्रिया अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “भीजल जूटक रेशा अँगुरी बीच घुमि बल पबैत गेल / काज जगौलक भोर—डोर बटल” आ फेर “एक-एक तन्तु जुड़ि बल बनल, एकता अपन अर्थ कहलक / मुस्की खेलल ठोर—डोर बटल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हाथमे कसि डोर—डोर बटल” आ अन्त “मोनमे उठल हिलोर—डोर बटल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६८ : कोइलीक पुकार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: कोइली बाजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : डारिसँ उठल पुकार—कोइली बाजल / आमबगियामे बहार—कोइली बाजल / देखा नहि पड़ल, मुदा स्वर पात-पात बीच फिरैत रहल / खुलल मनक दुआर—कोइली बाजल / एक सुर सुनि पुरनका ऋतु फेर आँखि आगाँ आबि गेल / जागल नव विचार—कोइली बाजल / गामक धूप, बगिया, पवन सभ एकहि तानमे जुड़ल / गीत बनल संसार—कोइली बाजल / क्षण भरिक ई स्वर दिन भरि मोनक भीतर रहि गेल / ऋतुक मीठ उपहार—कोइली बाजल दिसै नहि पड़ैत कोइलीक आवाज पात-पात बीच चलैत अछि। स्वरक कारण पुरान ऋतुक स्मृति घुरब साहित्यक ध्वनि-प्रेरित स्मरणक उत्तम उदाहरण।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “देखा नहि पड़ल, मुदा स्वर पात-पात बीच फिरैत रहल / खुलल मनक दुआर—कोइली बाजल” आ फेर “गामक धूप, बगिया, पवन सभ एकहि तानमे जुड़ल / गीत बनल संसार—कोइली बाजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “डारिसँ उठल पुकार—कोइली बाजल” आ अन्त “ऋतुक मीठ उपहार—कोइली बाजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १९-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६९ : कातिकक चान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: चान उगल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पोखरिपर पसरल उजास—चान उगल / साँझ आयल पास—चान उगल / निर्मल अकासमे ताराक बीच शान्त मुख चमकैत रहल / जलमे दोसर आभास—चान उगल / धान कटबाक बाद खेत खुलल, हवा लएत दीर्घ साँस / धरती लैत साँस—चान उगल / घरक छत पर नेना चुपचाप आकासक कथा पढ़ैत / मोन बनल निवास—चान उगल / अन्हार कतबो गाढ़ हो, उजासक बाट बनैत रहैत / जागल फेर विश्वास—चान उगल

धान-कटनीक बाद खुलल खेत आ पोखरिपर पसरल कातिकक चान रचनाकें विशिष्ट ऋतुक स्थान दैत अछि। अन्हार-उजासक सामान्य रूपक एहि स्थानिक दृश्यसँ शक्ति पबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “निर्मल अकासमे ताराक बीच शान्त मुख चमकैत रहल / जलमे दोसर आभास—चान उगल” आ फेर “घरक छत पर नेना चुपचाप आकासक कथा पढ़ैत / मोन बनल निवास—चान उगल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पोखरिपर पसरल उजास—चान उगल” आ अन्त “जागल फेर विश्वास—चान उगल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यक आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७० : पूसक बिहान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास · रदीफ: धूप उतरि।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : कुहासामे फूटल उजास—धूप उतरि / अँगना आयल पास—धूप उतरि / पूसक बिहान चुपचाप भीतक कोन-कोन छुबैत गेल / माटि देलक सुवास—धूप उतरि / काँपैत पात पर ओसक बूँद मोती जकाँ चमकि उठल / धरती लेलनि साँस—धूप उतरि / दादी चौकी घाम दिस घुमा कऽ ऊनक सूत सम्हारथि / गरमीक भेल आभास—धूप उतरि / जाड़ कतबो गाढ़ रहए, भोर अपन उजियार नहि बिसरए / मोनमे जागल विश्वास—धूप उतरि

पूसक कुहासामे धीरे-धीरे उतरैत रौद आ पातपर चमकैत ओस ठंढक समयमे ऊष्माक सघन लघु-दृश्य अछि। ई घरेलू भोरक निरीक्षण, न कि ऐतिहासिक घटनाक दावा।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पूसक बिहान चुपचाप भीतक कोन-कोन छुबैत गेल / माटि देलक सुवास—धूप उतरि” आ फेर “दादी चौकी घाम दिस घुमा कऽ ऊनक सूत सम्हारथि / गरमीक भेल आभास—धूप उतरि”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “कुहासामे फूटल उजास—धूप उतरि” आ अन्त “मोनमे जागल विश्वास—धूप उतरि”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-३२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७१ : माटिक दीप

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: दीप जरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : साँझहि उज्जर दुआर—दीप जरल / पाछाँ हटलक अन्हार—दीप जरल / माटिक छोट पात्रमे तेलक बूँद आ बातीक नेह जुड़ल / झलमल भेल संसार—दीप जरल / हावा लगिते लौ कने डोलल, मुदा फेर सीधा भऽ ठाढ़ / रातिक सरल उपहार—दीप जरल / एकटा ज्योति कहैत रहल—अन्हारक आकार पैघ हो सकैए / जागल नव विचार—दीप जरल / माटिसँ बनि माटिए पर उजास देब जीवनक सहज रीति / धरती बनल आधार—दीप जरल

माटिक छोट दीयामे बाती आ तेलक परस्पर आवश्यकता वस्तुक संरचनाकें सहजीवनक रूपक बनबैत अछि। हवामे डोलितो ठाढ़ लौ स्थायित्वक संवेदनात्मक बिम्ब।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “माटिक छोट पात्रमे तेलक बूँद आ बातीक नेह जुड़ल / झलमल भेल संसार—दीप जरल” आ फेर “एकटा ज्योति कहैत रहल—अन्हारक आकार पैघ हो सकैए / जागल नव विचार—दीप जरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३०३ “ओसारक दीप”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “अन्हारमे छोट उजास—दीप जरैए” आ एतुक आरम्भ “साँझहि उज्जर दुआर—दीप जरल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७२ : सरपताक झुरमुट

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: भोर • रदीफ: हावा बाजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : नदीक हरियर छोर—हावा बाजल / जागि उठल भोर—हावा बाजल / सरपताक पात एक-दोसरासँ सटि मद्धिम सुर बनबैत रहल / थमि गेल दूरक शोर—हावा बाजल / बगुला पाँखि समेटि कछारक निस्तब्धता पढ़ैत ठाढ़ छल / मुस्की खेलल ठोर—हावा बाजल / धार कने दूर, मुदा पातक कम्पन पानिक गति कहैत रहल / मोनमे उठल हिलोर—हावा बाजल / प्रकृतिक छोट धुन मनुखक मनकै फेर धरतीसँ जोड़ए / नेहक जुड़ल डोर—हावा बाजल

सरपताक पात एक-दोसरासँ सटि आवाज करैत अछि, बगुला निस्तब्ध कछारमे ठाढ़ अछि। ध्वनि आ मौनक प्रकृतिगत विरुद्धता मनुखक धारणा बदलैत अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सरपताक पात एक-दोसरासँ सटि मद्धिम सुर बनबैत रहल / थमि गेल दूरक शोर—हावा बाजल” आ फेर “धार कने दूर, मुदा पातक कम्पन पानिक गति कहैत रहल / मोनमे उठल हिलोर—हावा बाजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३३४ “चैतक हावा”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “खुलि गेल नब भोर—हावा बहल” आ एतुक आरम्भ “नदीक हरियर छोर—हावा बाजल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७३ : मसूरक फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: खेत हँसल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : रंग भरल विहान—खेत हँसल / देखथि दूर किसान—खेत हँसल / नन्हि-नन्हि फूल पातक बीच बिनु आडम्बर चुपचाप खिलल / हावा सुनौलक गान—खेत हँसल / दाना बनबाक बाटमे फूलक क्षणिक रूप सेहो मोलवान / श्रम पाओल सम्मान—खेत हँसल / रंग सँ अन्न धरि एकहि गाछ अपन अनेक कथा कहैत / माटिक ई पहिचान—खेत हँसल / ऋतु, बीया, पानि, श्रम—सभ मिलि उपजक क्रम रचैत अछि / प्रकृतिक अपन विधान—खेत हँसल मसूरक नन्हि फूल दाना बनबाक प्रक्रियाक आवश्यक, किंतु क्षणिक अवस्था अछि। फसलकैँ तैयार अन्नक बदला ऋतु, बीया, पानि आ श्रमक संयुक्त क्रम मानल गेल अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “नन्हि-नन्हि फूल पातक बीच बिनु आडम्बर चुपचाप खिलल / हावा सुनौलक गान—खेत हँसल” आ फेर “रंग सँ अन्न धरि एकहि गाछ अपन अनेक कथा कहैत / माटिक ई पहिचान—खेत हँसल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकैँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “रंग भरल विहान—खेत हँसल” आ अन्त “प्रकृतिक अपन विधान—खेत हँसल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७४ : घुरक आगि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-३६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: घुर जरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जाइमे गरम दुआर—घुर जरल / पाछाँ हटलक अन्हार—घुर जरल / पुआरक धीम आगि लग सभ हाथ पसारि गोल भऽ बैसल / बात बनल विचार—घुर जरल / पुरनका कथा, खेतक हाल, आगाँक काज एक संग खुलैत गेल / संग बनल आधार—घुर जरल / राखक भीतर लाल चिनगी चुप रहितहुँ ताप बचौने छल / गरम भेल संसार—घुर जरल / राति गहिराइत गेल, मुदा दलानक नेह जागल रहल / मीतक उठल पुकार—घुर जरल

घुरक धीम आगि चारू दिस बैसल लोककें कथा, खेत आ काजक संग संवाद दैत अछि। गजलमे ऊष्मा केवल देहक ताप नहि, दलानक साझा सम्बन्धक ठाम अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पुआरक धीम आगि लग सभ हाथ पसारि गोल भऽ बैसल / बात बनल विचार—घुर जरल” आ फेर “राखक भीतर लाल चिनगी चुप रहितहुँ ताप बचौने छल / गरम भेल संसार—घुर जरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “जाइमे गरम दुआर—घुर जरल” आ अन्त “मीतक उठल पुकार—घुर जरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-३६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७५ : बथानक साँझ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: गोरु घुरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खुलल घरक दुआर—गोरु घुरल / दूरसँ आयल हँकार—गोरु घुरल / घण्टीक धीम स्वर धूरक संग साँझक बाट भरैत आयल / जागल छोट संसार—गोरु घुरल / नेना नाम धऽ पुकारए, बूढ़ गोरु अपन खूँटा चिन्हि लेए / ममता बनल आधार—गोरु घुरल / दिन भरिक चराइ बाद पानि, भूसा, विश्रामक क्रम लगल / बथान देलक पुकार—गोरु घुरल / मनुख आ पशुक संग रहबाक पुरनका नेह सहज देखाइत / नेहक ई व्यवहार—गोरु घुरल

गोरुक घण्टी आ बथान दिस घुरैत पशुक परिचित बाट मनुख-पशु सहअस्तित्वक दृश्य बनबैत अछि। नेनाक नाम धऽ बजेनाइ एकल मालिकानाक बदला चिन्हारक सम्बन्ध अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “घण्टीक धीम स्वर धूरक संग साँझक बाट भरैत आयल / जागल छोट संसार—गोरु घुरल” आ फेर “दिन भरिक चराइ बाद पानि, भूसा, विश्रामक क्रम लगल / बथान देलक पुकार—गोरु घुरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खुलल घरक दुआर—गोरु घुरल” आ अन्त “नेहक ई व्यवहार—गोरु घुरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७६ : जाड़क तारा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास · रदीफ: तारा चमकल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : निर्मल भेल अकास—तारा चमकल / दूर पसरल उजास—तारा चमकल / जाड़क रातिमे धुँआ उठि कने बेर बाद निस्तब्ध भऽ गेल / चानो आयल पास—तारा चमकल / छत पर बैसल नेना गिनैत-गिनैत फेर गिनती बिसरि गेल / अनन्तक भेल आभास—तारा चमकल / ठंड पवनमे देह सिहरए, मुदा आँखि ऊपर टिकल रहल / राति लैत छल साँस—तारा चमकल / दूर रहितहुँ ज्योति कहैत—बाट अन्हारमे सेहो बनैत अछि / मोनमे जागल विश्वास—तारा चमकल

तारा गनैत नेनाक गिनती बिसरब गणना आ विस्मयक अन्तर अछि। दूरक ज्योतिकें बाटक आशा मानब रूपक, मुदा मूल दृश्य बाल्यक अकास-निरीक्षणक अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “जाड़क रातिमे धुँआ उठि कने बेर बाद निस्तब्ध भऽ गेल / चानो आयल पास—तारा चमकल” आ फेर “ठंड पवनमे देह सिहरए, मुदा आँखि ऊपर टिकल रहल / राति लैत छल साँस—तारा चमकल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “निर्मल भेल अकास—तारा चमकल” आ अन्त “मोनमे जागल विश्वास—तारा चमकल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १८-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७७ : बरखाक राति

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ेर · रदीफ: राति जागल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पोखरिक कात उठल शोर—राति जागल / मेघक पाछाँ कतऽ भोर—राति जागल / मेह थमल, मुदा पात-पातसँ बूँद एखन धरि खसैत रहल / घास-पातक जुड़ल डोर—राति जागल / दूर खेतमे बिजुरी एक बेर चमकि फेर अकासमे लुकि गेल / उजियारक देखल छोर—राति जागल / मेड़क ढेर आ झींगुरक स्वर मिलि पोखरि भरि गूँजैत रहल / जलमे उठल हिलोर—राति जागल / भोरक आस लगौने गाम चुपचाप मेघक चाल सुनैत रहल / मोन धरलक जोर—राति जागल

मेह थमलाक बादो पातसँ खसैत बूँद आ दूर बिजुरीक क्षणिक चमक समयक असमानता देखबैत अछि। बरखाक राति समाप्तिक पहिने गामक धीर प्रतीक्षाक दृश्य।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “मेह थमल, मुदा पात-पातसँ बूँद एखन धरि खसैत रहल / घास-पातक जुड़ल डोर—राति जागल” आ फेर “मेड़क ढेर आ झींगुरक स्वर मिलि पोखरि भरि गूँजैत रहल / जलमे उठल हिलोर—राति जागल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “पोखरिक कात उठल शेर—राति जागल” आ अन्त “मोन धरलक जोर—राति जागल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-३५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७८ : मटकाक दधि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-३४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ास • रदीफ: दधि जमल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : माटिक मटकामे सुवास—दधि जमल / भोर आयल पास—दधि जमल / राति भरि चुप्पे दूध अपन रूप बदलैत रहल / घर लेलनि साँस—दधि जमल / माइ ढकना खोलि देखलनि, सतह शान्त आ उज्जर छल / सफलताक आभास—दधि जमल / अधीर हाथ नहि, समयक संग धीरज चाही काजमे / मनमे बढ़ल विश्वास—दधि जमल / चूड़ा संग कटोरी भरि परोसिते बिहान आरो अपन भेल / जिह्वा भरल मिठास—दधि जमल

दूधक राति भरि जमि दधि बनबाक प्रक्रियामे मौन रूपान्तर अछि। माइक ढकना खोलब आ दधि-चूड़ा परोसब प्रकृतिक क्रियाकें घरेलू संस्कार बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “राति भरि चुप्पे दूध अपन रूप बदलैत रहल / घर लेलनि साँस—दधि जमल” आ फेर “अधीर हाथ नहि, समयक संग धीरज चाही काजमे / मनमे बढ़ल विश्वास—दधि जमल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “माटिक मटकामे सुवास—दधि जमल” आ अन्त “जिह्वा भरल मिठास—दधि जमल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १४-३४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३७९ : कदलीक पात

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १५-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ोर · रदीफ: पात हिलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हावाक संग उठल शेर—पात हिलल / ओसक पाछाँ आयल भोर—पात हिलल / अँगनाक कोनमे हरियर देह उजासमे चमकि उठल / माटिसँ जुड़ल डोर—पात हिलल / एक किनार फाटल छल, तइयो हरियरपन नहि घटल / जीवन देखलक छोर—पात हिलल / चिरै उतरि कने बैसल, फेर पाँखि पसारि उड़ि गेल / हावामे उठल हिलोर—पात हिलल / नन्हि झोंका सेहो कहि गेल जे ठाढ़ रहबमे गति सेहो अछि / जड़ि धरलक जोर—पात हिलल

एक किनार फाटलो कदलीक पात हरियर रहब चोटि आ जीवंतताक सह-अस्तित्व अछि। हावासँ हिलैत पात गति बनाम स्थिरताको प्रतिपक्ष खेलैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “अँगनाक कोनमे हरियर देह उजासमे चमकि उठल / माटिसँ जुड़ल डोर—पात हिलल” आ फेर “चिरै उतरि कने बैसल, फेर पाँखि पसारि उड़ि गेल / हावामे उठल हिलोर—पात हिलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हावाक संग उठल शेर—पात हिलल” आ अन्त “जड़ि धरलक जोर—पात हिलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८० : सीमरक रूइ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -नन · रदीफ: रूइ उड़ल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खेतक ऊपर मैदान—रूइ उड़ल / हावामे खुलल गान—रूइ उड़ल / सीमरक फाटल फलसँ उज्जर रेशा धीरे-धीरे बाहर आयल / पवन देलक पहिचान—रूइ उड़ल / ककरो हाथ नहि धकेललक, झोंका अपन गति सँ बाट बनौलक / प्रकृतिक अपन विधान—रूइ उड़ल / किछु झाड़ीमे अटकल, किछु बहुत दूर अकास दिस चलि गेल / सभक अलग उड़ान—रूइ उड़ल / हलुक वस्तु सेहो दूर जाइत, जँ दिशा आ अवसर एक संग भेटए / मोन धरलक ध्यान—रूइ उड़ल

सीमरक उज्जर रूइ बिना मानवीय धक्का हावाक संग दूर उड़ैत अछि। हलुकपनकें कमजोरी नहि, अनुकूल अवसरमे गतिशील सामर्थ्य बनाओल गेल अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सीमरक फाटल फलसँ उज्जर रेशा धीरे-धीरे बाहर आयल / पवन देलक पहिचान—रूइ उड़ल” आ फेर “किछु झाड़ीमे अटकल, किछु बहुत दूर अकास दिस चलि गेल / सभक अलग उड़ान—रूइ उड़ल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खेतक ऊपर मैदान—रूइ उड़ल” आ अन्त “मोन धरलक ध्यान—रूइ उड़ल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३६१-३८० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : ३७२/३३४ (“सरपताक झुरमुट”/“चैतक हावा”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्व-रचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरूजी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः टोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल ३८१ : खेतक मेड़

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-३९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: मेड़ पर।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : उगल हरियर बहार—मेड़ पर / खुलल खेतक दुआर—मेड़ पर / एक दिस धान, दोसर दिस दलहन, बीचक साँकरी बाट चलैत / चलैत छोट संसार—मेड़ पर / पानि रोकब, खेत बाँटब, पएरकें बाट देब—तीनू काज एक संग / माटि बनल आधार—मेड़ पर / किसान कने ठाढ़ भऽ दूर धरि फसिलक रंग

निहारैत रहल / थमि गेल विचार—मेड़ पर / साँझ धरि अनेक पएर गेल, मुदा
सीमा सभकेँ बाट दैत रहल / श्रमक ई व्यवहार—मेड़ पर

खेतक मेड़ सीमारेखा होइतहु पानि रोकैत अछि आ लोककेँ बाट दैत अछि। भूमि-
विभाजन आ सहजीवनक एहि द्वैतक ठोस कृषि-दृश्य महत्त्वपूर्ण अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एक दिस धान, दोसर दिस दलहन, बीचक
साँकरी बाट चलैत / चलैत छोटा संसार—मेड़ पर” आ फेर “किसान कने ठाढ़ भऽ
दूर धरि फसिलक रंग निहारैत रहल / थमि गेल विचार—मेड़ पर”क प्रसङ्ग रहैत
अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर
कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “उगल हरियर बहार—मेड़ पर” आ अन्त “श्रमक ई व्यवहार
—मेड़ पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक
बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट
दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-
क्रम: १४-३९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई
कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष
नहि।

गजल ३८२ : चिरैक पाँति

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-
क्रम: १३-३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: उड़ि गेल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अकासक पार—उड़ि गेल / छोड़ि अपन दुआर—उड़ि
गेल / एकक पाछाँ एक, पाँखि सभ एक लयमे साँझ दिस बढैत रहल / नीलिमामे
बहार—उड़ि गेल / ककरो स्वर आगाँ सँ उठल, पाँति तुरन्त दिशा सम्हारि लेलक
/ संगक पुकार—उड़ि गेल / क्षण भरि पहिने जे अकास खाली छल, आब चलैत

चित्र बनि गेल / पाँखिक संसार—उड़ि गेल / देखैत-देखैत आँखि सीखलक—संग
रहब गति घटबैत नहि / मोनक विचार—उड़ि गेल

एक पाँखिक स्वर उठला पर समूची चिरैक पाँति दिशा सम्हारैत अछि। गजल
सामूहिक तालमेलकेँ स्वतन्त्र गतिरुद्ध होयबाक उल्टा देखबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “एकक पाछाँ एक, पाँखि सभ एक लयमे साँझ
दिस बढ़ैत रहल / नीलिमामे बहार—उड़ि गेल” आ फेर “क्षण भरि पहिने जे
अकास खाली छल, आब चलैत चित्र बनि गेल / पाँखिक संसार—उड़ि गेल”क
प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर
कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत
एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अकासक पार—उड़ि गेल” आ अन्त “मोनक विचार—उड़ि
गेल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला
मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ
आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १३-
३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक
लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८३ : चाननीक पोखरि

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-
क्रम: १७-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: चान उतरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जलमे फूटल उजास—चान उतरल / पोखरिक कात
आयल पास—चान उतरल / पुरइनक पात चुपचाप उज्जर रेखा अपन देहपर
धारण कएलक / माटि देलक सुवास—चान उतरल / हावा थमिते जलक चेहरा
दर्पण जकाँ एकदम शान्त भऽ गेल / राति लेलनि साँस—चान उतरल / दूर घरक
दीप आ ऊपरक तारा एक्के जलमे झिलमिल करैत / गहिर भेल आभास—चान
उतरल / जे अकासमे दूर छल से जलक भीतर लग आबि ठाढ़ भेल / मोनमे
जागल विश्वास—चान उतरल

जलमे टूटल चानक छवि हवा थमला पर एकत्र होइत अछि। चान दूर रहितो जलमे लग ठाढ़ भेल—ई वास्तविक स्थान आ प्रतिबिम्बक काव्यगत खेल अछि। रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पुरइनक पात चुपचाप उज्जर रेखा अपन देहपर धारण कएलक / माटि देलक सुवास—चान उतरल” आ फेर “दूर घरक दीप आ ऊपरक तारा एक्के जलमे झिलमिल करैत / गहिर भेल आभास—चान उतरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३६९ “कातिकक चान”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “पोखरिपर पसरल उजास—चान उगल” आ एतुक आरम्भ “जलमे फूटल उजास—चान उतरल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १७-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८४ : नदीक मोड़

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-३६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: मोड़ पर।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : चमकि उठल धार—मोड़ पर / देखल दोसर पार—मोड़ पर / सीधा बहैत पानि एकाएक वक्र भेल, मुदा गति कतहु नहि थमल / फैलल हरियर कछार—मोड़ पर / नाविक चप्पू धीमे फेरैत धारक नव दिशा बुझि लेलक / जल देलक पुकार—मोड़ पर / एक बाट फेरल तऽ दृश्य सेहो फेरल, दूरक गाम लग आबि गेल / खुलल नव विस्तार—मोड़ पर / जीवनक सभ फेर बाधा नहि, कखनो ओ नव दृश्यक दुआर होइत / जागल मोनक विचार—मोड़ पर

नदीक मोड़पर धारक दिशा बदलैत अछि, गति नहि। नाविकक चप्पूक धीमे फेरब जीवनक फेरबदलकें अवरोध नहि, नव अवलोकनक अवसर मानबक बिम्ब।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “सीधा बहैत पानि एकाएक वक्र भेल, मुदा गति कतहु नहि थमल / फैलल हरियर कछार—मोड़ पर” आ फेर “एक बाट फेरल तऽ दृश्य सेहो फेरल, दूरक गाम लग आवि गेल / खुलल नव विस्तार—मोड़ पर”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “चमकि उठल धार—मोड़ पर” आ अन्त “जागल मोनक विचार—मोड़ पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १४-३६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८५ : अँगनाक रौद

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १६-४२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: रौद उतरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अँगनामे फैलल उजास—रौद उतरल / जाइक बिहान आयल पास—रौद उतरल / बाबा पीढ़ी पर चादर ओढ़ि बैसल, हथेली धीरे-धीरे तापैत रहल / माटि देलक सुवास—रौद उतरल / भीतक छाया कने पाछाँ सरकल, तुलसीक पात चमकि उठल / घर लेलनि साँस—रौद उतरल / रातिक ठिठुरन धीरे-धीरे देह आ अँगना दूनूमे हलुक पड़ल / तापक आभास—रौद उतरल / छोट-छोट किरण कहि गेल—जाड़ोमे अँजोर अपन बाट खोजि लैत / मोनमे जागल विश्वास—रौद उतरल

जाइक अँगनामे चादर ओढ़ि पीढ़ीपर बैसल बाबा आ सरकैत भीतक छाया समयक सूक्ष्म दृश्य अछि। तुलसीक पातपर रौदक चमक घरक जीवनकें स्पर्शनीय बनवैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “बाबा पीढ़ी पर चादर ओढ़ि बैसल, हथेली धीरे-धीरे तापैत रहल / माटि देलक सुवास—रौद उतरल” आ फेर “रातिक ठिठुरन धीरे-धीरे देह आ अँगना दूनूमे हलुक पड़ल / तापक आभास—रौद उतरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “अँगनामे फैलल उजास—रौद उतरल” आ अन्त “मोनमे जागल विश्वास—रौद उतरल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-४२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८६ : बन्हल धानक पूला

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: पूला बन्हल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खेतसँ आयल धान—पूला बन्हल / श्रमक बढ़ल मान—पूला बन्हल / कटनीक बाद बिखरल बालि एक-एक कऽ एकहि ठाम सहेजल गेल / खरिहानक गान—पूला बन्हल / मुट्ठी-मुट्ठी जोड़ि डोर कसि देल गेल, बिखरल धान एक रूप धऽ लेलक / काजक पहिचान—पूला बन्हल / एक पूलाक पाछाँ दोसर, आ खरिहान धीरे-धीरे भैरैत गेल / श्रमक अपन विधान—पूला बन्हल / अन्नक दाना घर धरि पहुँचए, तकर पाछाँ अनेक हाथक साधना अछि / सभ हाथक सम्मान—पूला बन्हल

कटनी पाछाँ बिखरल धानक पूला बान्हब सामूहिक श्रमकेँ दृश्यमे रखैत अछि। एक-एक मुट्ठीक डोर अन्नक उत्पादनक गुमनाम अनेक हाथक मान्यता।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कटनीक बाद बिखरल बालि एक-एक कऽ एकहि ठाम सहेजल गेल / खरिहानक गान—पूला बन्हल” आ फेर “एक पूलाक पाछाँ दोसर, आ खरिहान धीरे-धीरे भैरैत गेल / श्रमक अपन विधान—पूला बन्हल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खेतसँ आयल धान—पूला बन्हल” आ अन्त “सभ हाथक सम्मान—पूला बन्हल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८७ : उडैत पतंग

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १६-३९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: पतंग उडल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खुलल अकासक दुआर—पतंग उडल / छतसँ गेल पार—पतंग उडल / हलुक पछुआ लागिने कागजक देह धीरे-धीरे ऊपर चढैत गेल / डोरक सीखल व्यवहार—पतंग उडल / ढील आ कसाव दूनू चाही, केवल जोर सँ उँचाइ नहि भेटै / हावाक भेटल आधार—पतंग उडल / एक बेर गोता खा फेर सम्हरल, नेना सभक आँखि चमकि उठल / नीलिमामे विस्तार—पतंग उडल / उँचाइ संग सम्हार सेहो चाही—ई बात डोर चुपचाप सिखौलक / मोनमे नब विचार—पतंग उडल

पतंगक उँचाइ लेल डोरक ढील आ कसाव दुनू चाही—नियन्त्रण आ स्वतन्त्रताक अनुपात बाल-खेलसँ उभरल अछि। बिम्बक आधार प्रत्यक्ष क्रिया होएबाक कारण नैतिक अर्थ टिकल।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हलुक पछुआ लागिने कागजक देह धीरे-धीरे ऊपर चढैत गेल / डोरक सीखल व्यवहार—पतंग उडल” आ फेर “एक बेर गोता खा फेर सम्हरल, नेना सभक आँखि चमकि उठल / नीलिमामे विस्तार—पतंग उडल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “खुलल अकासक दुआर—पतंग उडल” आ अन्त “मोनमे नव विचार—पतंग उडल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८८ : गाछक छाल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: छाल पर।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : बरखक चिन्ह अपार—छाल पर / रौदक सूखल प्रहार—छाल पर / कखनो मेह, कखनो जाइ, कखनो धूप—सभ ऋतु अपन रेखा छोडि गेल / फेरो हरियर बहार—छाल पर / भीतर रस चढैत रहल, बाहरक खुरदरापन जीवनक कथा कहैत रहल / बसल गाछक संसार—छाल पर / डारि-पात बदलैत रहल, मुदा तना जडिसँ अपन नेह नहि तोडलक / जडिक दृढ आधार—छाल पर / पुरान चिन्ह मेटल नहि, नव बढन्ति ओकर संगहि आगाँ बढल / मौन भेल विचार—छाल पर

गाछक छालपर ऋतुक खुरदरा चिन्ह आ भीतर चढैत रस बाह्य आ आन्तरिक काल-लेखनक विरोध अछि। नव बढन्ति पुरान चिन्ह मेटैत नहि; वृद्धि ओकरा संग होइत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “कखनो मेह, कखनो जाइ, कखनो धूप—सभ ऋतु अपन रेखा छोड़ि गेल / फेरो हरियर बहार—छाल पर” आ फेर “डारि-पात बदलैत रहल, मुदा तना जडिसँ अपन नेह नहि तोड़लक / जडिक दृढ आधार—छाल पर”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “बरखक चिन्ह अपार—छाल पर” आ अन्त “मौन भेल विचार—छाल पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८९ : घाटपर साँझ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १६-३८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: साँझ बसल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : जलमे धुँधल उजास—साँझ बसल / घरक बाट आयल पास—साँझ बसल / अन्तिम नाव किनार लगल, चप्पूक स्वर धीरे-धीरे चुप भेल / माटि देलक सुवास—साँझ बसल / दिन भरि चलैत धार कने शान्त भेल, पानि पर अकास झुकि आयल / नदी लेलनि साँस—साँझ बसल / दूर घरक दीप एक-एक कऽ जलल, घाटसँ ओकर झिलमिल देखायल / उजल भेल आभास—साँझ बसल / फेर भोर होएत, फेर नाव खुलत—ई क्रम जल चुपचाप कहैत रहल / मोनमे जागल विश्वास—साँझ बसल

साँझक अन्तिम नाव किनार लगैत अछि, मुदा धार चलैत रहैत अछि। अगले भोरक पुनरागमनक सांकेतिकता नदीक दिनचर्या सँ उपजल अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “अन्तिम नाव किनार लगल, चप्पूक स्वर धीरे-धीरे चुप भेल / माटि देलक सुवास—साँझ बसल” आ फेर “दूर घरक दीप एक-एक कऽ जलल, घाटसँ ओकर झिलमिल देखायल / उजल भेल आभास—साँझ बसल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३०७ “सामा-चकेवाक साँझ”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “धानक मृदु सुवास—साँझ उतरैए” आ एतुक आरम्भ “जलमे धुंधल उजास—साँझ बसल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १६-३८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३१० : ओसक बूँद

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-४१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: ओस चमकल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : पातक कात बहार—ओस चमकल / भोरक खुलल दुआर—ओस चमकल / राति भरि चुप्पे जमल नन्हि बूँद पहिल अँजोरमे मोती जकाँ देखायल / रौदक पड़ल धार—ओस चमकल / क्षण भरि जीवन छल, तइयो पूरा अकास अपन भीतर धारण कएलक / नन्हि बूँदक संसार—ओस चमकल / रौद बढ़िते धीरे-धीरे बिलायल, पात फेर अपन हरियर रूपमे रहल / क्षणक ई व्यवहार—ओस चमकल / रहबाक अवधि छोट हो तइयो अँजोर देब छोट नहि होइत / मोनमे जागल विचार—ओस चमकल

ओसक अल्प जीवनमे पूरा अकासक छवि समेनाइ क्षणक विराटता अछि। ई रूपक ‘दीर्घजीविता = मूल्य’क मानककेँ बदलैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “राति भरि चुप्पे जमल नन्हि बूँद पहिल अँजोरमे मोती जकाँ देखायल / रौदक पडल धार—ओस चमकल” आ फेर “रौद बढ़िते धीरे-धीरे बिलायल, पात फेर अपन हरियर रूपमे रहल / क्षणक ई व्यवहार—ओस चमकल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३२३ “द्विपर ओस”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “आँगनमे भेल भोर—ओस चमकल” आ एतुक आरम्भ “पातक कात बहार—ओस चमकल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १७-४१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९१ : काँसक फूल

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-३६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -स · रदीफः काँस फुलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : नदीक कात उजास—काँस फुलल / हावामे पसरल सुवास—काँस फुलल / धवल फुलक लहर दूर धरि गेल, जकाँ धरती पर मेघ उतरि आयल / भोरक कोमल आभास—काँस फुलल / पछुआ लगिते सभ डारि एक संग झुकल, फेर धीरे ठाढ़ भऽ गेल / धरती लेलनि साँस—काँस फुलल / ऋतु फेरलाक पहिल चिन्ह चुपचाप कछारक रूप बदलि देलक / मोनमे जागल विश्वास—काँस फुलल / बाटिक जन कने ठमकि देखलक, धवल लहर आँखिमे बसि गेल / शरत आयल पास—काँस फुलल

काँसक धवल लहर धरा पर उतरल मेघक उपमा बनबैत अछि। पछुआमे एक संग झुकि फेर ठाढ़ होयब सामूहिक लचकक दृश्य।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धवल फुलक लहर दूर धरि गेल, जकाँ धरती पर मेघ उतरि आयल / भोरक कोमल आभास—काँस फुलल” आ फेर “ऋतु

फेरलाक पहिल चिन्ह चुपचाप कछारक रूप बदलि देलक / मोनमे जागल विश्वास—काँस फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३५८ “कदम्बक फूल”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “हावामे भरल सुवास—कदम्ब फुलल” आ एतुक आरम्भ “नदीक कात उजास—काँस फुलल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-३६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९२ : पोखरिक माछ

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १५-३९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ार · रदीफः पोखरिमे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : हलुक उठल धार—पोखरिमे / हरियर देखल कछार—पोखरिमे / पुरइनक पात तरे चमकि गेल रूपा सन देह, फेर ओझराइ गेल / नन्हि जलक संसार—पोखरिमे / छाया, काई, पानि आ जीव सभ एक-दोसर पर चुपचाप टिकैत रहल / जीवनक गुप्त आधार—पोखरिमे / एक गोल लहर दोसर गोल लहरसँ भेटि दूर धरि फैलैत गेल / वृत्तक भेल विस्तार—पोखरिमे / नेना किनार बैसल छल, जलक भीतरक गति ओकर आँखि खींचि लेलक / मौन जलक पुकार—पोखरिमे

पुरइन पात तरे माछक रूपा-जकाँ चमक आ नेनाक जिज्ञासु आँखि अदेखल जलजगत खोलैत अछि। पोखरिक जीवनकें केवल ऊपरक शान्त रूप सँ नहि पढ़बाक आग्रह अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पुरइनक पात तरे चमकि गेल रूपा सन देह, फेर ओझराइ गेल / नन्हि जलक संसार—पोखरिमे” आ फेर “एक गोल लहर

दोसर गोल लहरसँ भेटि दूर धरि फैलैत गेल / वृत्तक भेल विस्तार—पोखरिमे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “हलुक उठल धार—पोखरिमे” आ अन्त “मौन जलक पुकार—पोखरिमे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-३९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९३ : सूपमे उडैत धान

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १५-४१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न · रदीफः सूप चलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : उडि उठल भूसी, रहल धान—सूप चलल / श्रमक बढ़ल मान—सूप चलल / हथक नापल झटका दानाक भार आ भूसीक हलुकपन अलग करैत रहल / अँगनाक उठल गान—सूप चलल / पुरान काजमे हाथक गति पीढ़ी-पिढ़ी सँ सीखल स्मृति जकाँ बसल / कौशलक पहिचान—सूप चलल / हावा संग ताल मिला कऽ दाना सहेजल गेल, कचरा दूर खसैत गेल / काजक अपन विधान—सूप चलल / अन्न थारी धरि अएबा सँ पहिने एहन अनेक सूक्ष्म काज पार करैत / श्रमक हो सम्मान—सूप चलल

सूपक झटकासँ भूसी आ धान अलग होयबाक प्रक्रिया हाथक सूक्ष्म माप पर निर्भर अछि। जकरो थारीपर अन्न आएत, ओकर पाछाँ अनेक एहन अदृश्य काज अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “हथक नापल झटका दानाक भार आ भूसीक हलुकपन अलग करैत रहल / अँगनाक उठल गान—सूप चलल” आ फेर “हावा

संग ताल मिला कऽ दाना सहेजल गेल, कचरा दूर खसैत गेल / काजक अपन विधान—सूप चलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “उडि उठल भूसी, रहल धान—सूप चलल” आ अन्त “श्रमक हो सम्मान—सूप चलल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-४१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९४ : जाड़क कुहासा

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २०-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: कुहासा उतरल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूरक गाछ आयल पास—कुहासा उतरल / धीम भेल धरतीक साँस—कुहासा उतरल / पगडण्डी आधे धरि देखायल, तकर बाद सभ दृश्य धवल परदामे गेल / भोरक धुँधल आभास—कुहासा उतरल / रौदक पहिल किरण धीरे-धीरे परदा काटि खेतक रंग लौटा देलक / फैलल कोमल उजास—कुहासा उतरल / गील माटि आ पातक गन्ध जाड़क बिहानकें अपन अलग स्वर देलक / माटिक उठल सुवास—कुहासा उतरल / धुँध चाहे घेरि लिअ, बाट समाप्त नहि होइत—किछु दूर बाद खुलैत / मोनमे जागल विश्वास—कुहासा उतरल

जाड़क कुहासा आधे बाट धरि दृश्य रोकैत अछि, मुदा रौद अबिते मेड़ फेर देखाइत अछि। अस्पष्टता आ समाप्तिक भेदक प्राकृतिक रूपक।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पगडण्डी आधे धरि देखायल, तकर बाद सभ दृश्य धवल परदामे गेल / भोरक धुँधल आभास—कुहासा उतरल” आ फेर “गील माटि आ पातक गन्ध जाइक बिहानकै अपन अलग स्वर देलक / माटिक उठल सुवास—कुहासा उतरल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३३५ “भोरक कुहासा”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “दूर देखायल पार—कुहासा उठल” आ एतुक आरम्भ “दूरक गाछ आयल पास—कुहासा उतरल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: २०-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३१५ : पगडण्डीक धूर

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्ध-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: बाट पर।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : गामक खुलल दुआर—बाट पर / धानक हरियर कछार—बाट पर / गोरक पाछाँ महीन धूर उठैत, फेर पछुआ संग धीरे बिसरि जाइत / चलैत छोट संसार—बाट पर / स्कूल जाएत नेना, खेत जाएत किसान, सभक पग एके माटि छुबैत / दिनक अलग पुकार—बाट पर / सामने सँ आयल वृद्धकें ठाम देब, भार उठबैत जनकें बाट छोड़ब / सीखल सहज व्यवहार—बाट पर / सँकरी पगडण्डी गामक अनेक घर, खेत, पोखरि आ स्मृति जोड़ि राखैत / नेहक हो विस्तार—बाट पर

स्कूल जाएत नेना आ खेत जाएत किसानक पग एकहि पगडण्डीक धूरि छुबैत अछि। बाट गामक अनेक भिन्न जीवनकें जोड़बाक सामूहिक आधार अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “गोरक पाछाँ महीन धूर उठैत, फेर पछुआ संग धीरे बिसरि जाइत / चलैत छोट संसार—बाट पर” आ फेर “सामने सँ आयल वृद्धकें ठाम देब, भार उठबैत जनकें बाट छोड़ब / सीखल सहज व्यवहार—बाट पर”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “गामक खुलल दुआर—बाट पर” आ अन्त “नेहक हो विस्तार—बाट पर”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १५-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९६ : ताड़क छाँह

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म · रदीफः छाँह तरे।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : देखायल दूर गाम—छाँह तरे / माटिमे लिखल नाम—छाँह तरे / दुपहरक रौद तेज छल, मुसाफिर कने ठमकि शीतल धरती पर बैसल / पल भरि बनल धाम—छाँह तरे / ऊपर पात हिलैत रहल, नीचाँ हवा देहक थकान धीरे हलुक करैत / बाटिक छोट विराम—छाँह तरे / किसान गमछा खोलि माथ सुखौलक, फेर उठि खेत दिस चलि पड़ल / फेर पुकारल काम—छाँह तरे / गाछ किछु नहि माँगलक, तइयो दिन भरि बाटिक जनकें छाँह दैत रहल / धरतीकें प्रणाम—छाँह तरे

ताड़क छाँहमे बाटिक जनक घड़ीभरि विश्राम निःस्वार्थ प्राकृतिक सहायताक चित्र अछि। कविता गाछकें मानवीय सौदाक बदला सहज साझेदारीक प्रतीक बनबैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “दुपहरक रौद तेज छल, मुसाफिर कने ठमकि शीतल धरती पर बैसल / पल भरिक बनल धाम—छाँह तरे” आ फेर “किसान गमछा खोलि माथ सुखौलक, फेर उठि खेत दिस चलि पडल / फेर पुकारल काम—छाँह तरे”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “देखायल दूर गाम—छाँह तरे” आ अन्त “धरतीकेँ प्रणाम—छाँह तरे”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १६-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९७ : साँझक घंटी

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रमः १६-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः घंटी बाजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूरसँ आयल पुकार—घंटी बाजल / घरक खुलल दुआर—घंटी बाजल / गोधूलिक रंग अँगना-ओसारमे धीरे-धीरे दिनक उजास समेटैत रहल / धुँधल भेल कछार—घंटी बाजल / पशु बथान दिस घुरल, नेना खेल छोड़ि घरक भीतरक बाट पकड़लक / सिमटल दिनक संसार—घंटी बाजल / ककरो लेल पूजा, ककरो लेल समयक संकेत—स्वर सभकेँ अलग छुबैत / समयक सहज व्यवहार—घंटी बाजल / एकहि ध्वनि कहि गेल जे दिनक काजक बाद विश्रामो जीवनक अंश अछि / मोनमे उठल विचार—घंटी बाजल

गोधूलिक घंटी बजिते पशु घुरैत अछि, नेना खेल छोड़ैत अछि। एकहि ध्वनि विविध जीवक दिनचर्याकेँ समयक साझा संकेत दैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “गोधूलिक रंग अँगना-ओसारमे धीरे-धीरे दिनक उजास समेटैत रहल / धुँधल भेल कछार—घंटी बाजल” आ फेर “ककरो लेल पूजा, ककरो लेल समयक संकेत—स्वर सभकेँ अलग छुबैत / समयक सहज व्यवहार—घंटी बाजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूरसँ आयल पुकार—घंटी बाजल” आ अन्त “मोनमे उठल विचार—घंटी बाजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रासँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकेँ आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९८ : बेलक सुवास

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १५-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ास · रदीफः बेल फुलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : अँगनामे उठल सुवास—बेल फुलल / भोरक कोमल आभास—बेल फुलल / धवल फूल पातक बीच चुपचाप खुलल, हावाक संग ओकर गन्ध चारू दिस गेल / धरती लेलनि साँस—बेल फुलल / ओसक बूँद पंखुडीपर ठाढ़ छल, रौद पड़िते मोती जकाँ चमकि उठल / मोनमे जागल विश्वास—बेल फुलल / दुआर लग बैसल वृद्ध कने ठमकि गन्ध लैत पुरनका अँगना मोन पाड़लनि / स्मृति आयल पास—बेल फुलल / नन्हि फूल कहि गेल जे कोमलतामे सेहो अपन गहिर सामर्थ्य रहैत अछि / मनमे बसल सुवास—बेल फुलल

बेलक धवल फूलक गन्ध अनाकर्षक छोट अँगनाकेँ गहिर संवेदना दैत अछि। कोमलता आ सामर्थ्यक सम्बन्ध बिना पैघ घटनाक स्थापित होइत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “धवल फूल पातक बीच चुपचाप खुलल, हावाक संग ओकर गन्ध चारू दिस गेल / धरती लेलनि साँस—बेल फुलल” आ फेर “दुआर लग बैसल वृद्ध कने ठमकि गन्ध लैत पुरनका अँगना मोन पाडलनि / स्मृति आयल पास—बेल फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच दृष्टिबिन्दुक स्थानान्तरण कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकेँ छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३६३ “अडहुलक फूल”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “अँगनामे खुलल दुआर—अडहुल फुलल” आ एतुक आरम्भ “अँगनामे उठल सुवास—बेल फुलल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३९९ : पपीहाक पुकार

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-४५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: पपीहा बाजल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : दूरसँ आयल पुकार—पपीहा बाजल / जागि उठल कछार—पपीहा बाजल / मेघ एखन दूर छल, मुदा अकासक गन्धमे बरखाक संकेत धीरे घुलैत रहल / खुलि गेल दुआर—पपीहा बाजल / गाछक एक डारिसँ दोसर डारि धरि स्वर घूमि कऽ फेर कानमे आबि बसल / छोटे बनल संसार—पपीहा बाजल / दुपहरक नीरवता एक स्वरक तरंगसँ सहसा जीबैत सन लगए लागल / हावामे झंकार—पपीहा बाजल / प्रकृतिक प्रत्येक ध्वनि समयक अपन कथा कहैत अछि, सुनबाक कान चाही / फेर उठल पुकार—पपीहा बाजल

पपीहाक दूर पुकार आ मेघक आवबाक सम्भावना ऋतुक आगमक श्रव्य संकेत अछि। सुनेनिहार कान प्रकृतिक समय-बोधक सक्रिय पक्ष बनैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “मेघ एखन दूर छल, मुदा अकासक गन्धमे बरखाक संकेत धीरे घुलैत रहल / खुलि गेल दुआर—पपीहा बाजल” आ फेर “दुपहरक नीरवता एक स्वरक तरंगसँ सहसा जीबैत सन लगए लागल / हावामे झंकार—पपीहा बाजल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच विषयक विस्तार कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाईकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

एहि गजलक आरम्भ “दूरसँ आयल पुकार—पपीहा बाजल” आ अन्त “फेर उठल पुकार—पपीहा बाजल”क मध्य केन्द्रीय वस्तु/भावक परिवर्तन जाँचल गेल अछि। शीर्षक बदलला मात्रसँ मौलिकता सिद्ध नहि होइत; मुदा एतय मध्यवर्ती शेरक निर्दिष्ट दृश्यकें आलोचनात्मक आधार मानल गेल अछि। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रमः १८-४५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ४०० : तिलक खेत

मूल पाठक औपचारिक सूचना : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुंजी। मात्रा-क्रमः १५-४५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः ङ • रदीफः तिल फुलल।

काव्य-दृश्य, अन्तरर्थ आ मूल शेर

मूल पाठक दस मिसरा : खेतमे कोमल रंग—तिल फुलल / भँवराक मधुर संग—तिल फुलल / पातक बीच नन्हि फूल सभ रौदक धार धरिकऽ चुपचाप अकास दिस ताकैत रहल / धरतीमे उठल उमंग—तिल फुलल / हावा लगिते डारि सभ एक संग हिलल, जकाँ खेतमे कोनो धीम गीत बहि गेल / पाँतिमे उठल तरंग—तिल फुलल / अन्न आ तेल धरि पहुँचयवला श्रमक कथा एहि नन्हि फूलमे पहिने सँ लिखल / काजक गहिर प्रसंग—तिल फुलल / खेतिहर एक बेर चारू दिस देखलक, फसलक आस ओकर मुखपर उजास बनल / मोनमे नब रंग—तिल फुलल

तिलक नन्हि फूल पातक बीच चमकि उठैत अछि, खेतिहरक मुखपर फसलक आशा देखाइत अछि। कविता फसलकें उत्पाद-मात्र नहि, प्रतीक्षारत श्रमक भावात्मक परिणाम मानैत अछि।

रचनाक मध्यवर्ती संरचनामे पहिने “पातक बीच नन्हि फूल सभ रौदक धार धरिकऽ चुपचाप अकास दिस ताकैत रहल / धरतीमे उठल उमंग—तिल फुलल” आ फेर “अन्न आ तेल धरि पहुँचयवला श्रमक कथा एहि नन्हि फूलमे पहिने सँ लिखल / काजक गहिर प्रसंग—तिल फुलल”क प्रसङ्ग रहैत अछि। एहि दुनू शेरक बीच भावक गति कतेक संगत अछि, से एकर कलात्मक परीक्षणक केन्द्र अछि। मात्र दस मिसराक एकसमान लम्बाइकें छन्दगत एकरूपताक स्वतः प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

पाठभेद, पुनरुक्ति आ समीक्षात्मक निर्णय

गजल ३९८ “बेलक सुवास”क संग बिम्ब आ पदावलीक उल्लेखनीय साम्य अछि। पहिनुक आरम्भ “अँगनामे उठल सुवास—बेल फुलल” आ एतुक आरम्भ “खेतमे कोमल रंग—तिल फुलल”क मिलानसँ स्वर/कथनक वास्तविक अन्तर बुझाईत अछि; रचना-कालक्रम एकरा आधारपर निर्धारित नहि कएल गेल। मूल छन्द-सूचनामे “मात्रा-क्रम: १५-४५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना” कहल गेल अछि; ई कविक लिखित घोषणा अछि, स्वतंत्र उच्चारणाधारित मात्रागणनाक निष्कर्ष नहि।

गजल ३८१-४०० : अन्तरपाठीय विवेचन

ई समूहक अन्तरपाठीय पुनर्जाँचमे विशेष निकट प्रविष्टिसभ : ३९०/३२३ (“ओसक बूँद”/“दूबिपर ओस”); ३९४/३३५ (“जाइक कुहासा”/“भोरक कुहासा”)। एहि सम्बन्धसभसँ पूर्व रचनाक आवर्तन, शब्द-विन्यासक फेरबदल अथवा रदीफक परिवर्तन पहिचानब सम्भव अछि; मात्र समान विषय वा पदावलीसँ रचनात्मक नकल/एकहि मूल पाठक निर्णायक दावा नहि कएल गेल अछि।

संग्रहक घोषित मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ अरुजी परिचयकें हर रचनाक वास्तविक दस मिसराक संग राखि पढ़ल गेल अछि। एहि समूहमे काव्यगत उपलब्धिक मूल्यांकन मुख्यतः ठोस दृश्य, वाक्यगत स्पष्टता, अर्थक बहुअर्थिता आ सामाजिक स्मृतिक आधारपर कएल गेल; अनिश्चित बहरक स्वतन्त्र प्रमाणीकरणक दावा नहि।

गजल ४०१ : बाँसक कोपल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-४५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः कोपल फुटल ।

पाठ-साक्ष्य : “झुरमुटमे नव उजास—कोपल फुटल” ; “नव अंकुर कोमल छल, मुदा ओकर भीतर सम्पूर्ण झुरमुट बनबाक सम्भावना बसल” ; “पीढ़ीक नव उजास—कोपल फुटल” ।

कोपल आ पुरान बाँसक एकहि झुरमुटमे उपस्थिति पीढ़ीक भेदकै विरोध नहि, निरन्तरताक रूप दैत अछि । तेसर पाँतिमे सूखल पातक तह फोड़ि निकलैत हरियर नोक दृश्यकें ठोस बनबैत अछि; नवम पाँतिक 'समयक सेतु' ओकर विचारात्मक विस्तार अछि ।

रदीफ 'कोपल फुटल' नव आरम्भक संकेतकें एकरूप राखैत अछि । मुदा पाँचम, सातम आ नवम पाँतिक गद्यसदृश विस्तारक सम्मुख छोट रदीफयुक्त पाँति रखलासँ उच्चारणक दीर्घ-ह्रस्व तनाव उठैत अछि; घोषित १८-४५ मात्राक अन्तरक पृष्ठभूमिमे एकर स्वतन्त्र छन्द-सिद्धि नहि मानल जाए ।

गजल ४०२ : नदीक बालू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १५-४८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः बालूपर ।

पाठ-साक्ष्य : “लिखल गेल धार—बालूपर” ; “एक कात नदी बहैत, दोसर कात खुलल धवल धरती दूर धरि आँखि लऽ जाइत” ; “स्मृतिक हलुक धार—बालूपर” ।

बालूपर पानिक पुरान रेखा आ नेनाक पगचिह्न दुनू मेटाइत स्मृतिक अलग-अलग आयु देखबैत अछि । 'पछुआ बहिते' छाप मेटाइब कालक गति नहि, हवा-जमीनक प्रत्यक्ष क्रिया सेहो अछि ।

पहिल 'लिखल गेल धार' आ अन्तिम 'स्मृतिक हलुक धार'क वृत्त पाठकें स्मरणक रूप दैत अछि । मुदा नवम पाँति लिखबाक क्षणक अर्थ स्वयं स्पष्ट करैत अछि; अलक्षित अर्थक गुंजाइश किछु घटैत अछि । एकहि शीर्षकक गजल ४१५सँ तुलना आवश्यक, किएक तँ ओकर ध्यान घाट आ बदलैत तटपर अछि ।

गजल ४०३ : गोधूलिक धूर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-४५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ल · रदीफः गोधूलिमे ।

पाठ-साक्ष्य : “अकास भेल लाल—गोधूलिमे” ; “खेलैत नेना घर दिस घुरल, खेतसँ लोक अबैत रहल, दुआर पर स्वर बढैत गेल” ; “स्मृतिमे रहत लाल—गोधूलिमे” ।

गोधूलिमे पशुक खुरसँ उठल धूर, चूल्हिक धुआँ आ घर घुरैत नेनाक गतिक त्रिसूत्री मंचन योग्य ग्राम्य साँझ बनबैत अछि । पहिल दू मिसरामे रंग आ चालक जोड़ पूरे दृश्यकें गति दैत अछि ।

‘रंगक बुनल जाल’क अर्थ बथानक धूर आ चूल्हिक धुआँक रंग-परिवर्तनसँ खुलैत अछि । अन्तिम पाँतिक ‘स्मृतिमे रहत लाल’ रंगकें प्रतीक बना दैत अछि, मुदा ‘मिलनक ई काल’ सरहदपर ठहरबाक साधारण वाक्य कविता-छविक तुलना मे कम सघन अछि ।

गजल ४०४ : अगहनक बिहान

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -स · रदीफः अगहनमे ।

पाठ-साक्ष्य : “धानपर सुनर उजास—अगहनमे” ; “अन्न घर पहुँचत—एहि बोधसँ थकानक बीचो मुखपर शान्त उजास टिकि रहल” ; “जीवनक नव उजास—अगहनमे” ।

अगहनक धान-कटनीमे पूला बान्हब आ खरिहान दिस बढैत पग काव्यकें श्रमक ठोस दिनचर्यासँ जोड़ैत अछि । जाड़क भोरमे गरम हथेली सहज विरोधाभासक माध्यमसँ श्रमक ताप बतबैत अछि ।

भविष्यक अन्नक आशा शारीरिक थकानकें मेटाबैत नहि, सहबाक अर्थ दैत अछि । मुदा अंतिम शेरमे ‘धीरज राखब तँ फल’ प्रत्यक्ष नीति-वाक्य बनि जाइत अछि; आरम्भक दृश्य-साक्ष्य अपनेबेसी प्रखर छल ।

गजल ४०५ : मखानक पात

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ात · रदीफः देखाइत अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “पोखरिमे हरियर पात देखाइत अछि” ; “मखान चुनैत हाथ धीरजक पाठ पढ़बैत” ; “मोनमे ओकर बात देखाइत अछि” ।

मखानक पात जलक सतहपर दृश्य अछि, मुदा सातम मिसराक 'मखान चुनैत हाथ' दृश्यक भीतर श्रम-इतिहासकें अनैत अछि । ऊपर पात आ नीचाँ पानिक काजक भेद एकटा अनकहल ऊर्ध्वाधर संरचना बनबैत अछि ।

रदीफ 'देखाइत अछि' देखबाक प्रक्रियाकें बारम्बार चिह्नित करैत अछि । सातम मिसराक 'धीरजक पाठ' घोषणासदृश अछि, जखनकि उठैत फूलक दृश्य अधिक संकेतात्मक । घोषित काफिया ' -ात 'क संग 'प्रभात' आदि पदक सत्यापन करबाक लेल मात्र मुद्रित काफिया-सूचना पर्याप्त नहि ।

गजल ४०६ : कुसियारक खेत

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः रहि गेल ।

पाठ-साक्ष्य : “ओसभीजल पातमे मिठास रहि गेल” ; “दूर बाजार गेल रस, मुदा खेत नहि बिसरल” ; “ऋतुमे नब मिठास रहि गेल” ।

कुसियारक खेतसँ रसक कोल्हु आ बाजार धरि गमनक क्रम उत्पादन-श्रृंखलाक छोट सामाजिक भूगोल अछि । 'दूर बाजार गेल रस, मुदा खेत नहि बिसरल' वस्तुक यात्रा आ स्रोतक स्मृतिक द्वन्द्व खोलैत अछि ।

माटिमे जलक प्यास अंतिम फलनक आत्मसंतोषकें काटैत अछि: खेतक पुनर्वृद्धि कखनो शेष काजक अन्त नहि । 'मिठास रहि गेल'क आवर्तन अधिक सुलभ अछि, मुदा सादा मिठास आ श्रमक दामक भेद जेना विस्तार पाबि सकैत छल से एतय सीमित अछि ।

गजल ४०७ : पलाशक फूल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १४-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ल · रदीफः देखू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “बोनमे उठल लाल देखू ने” ; “सूखल धरती बीच रङ आशा सन जागल” ; “धरतीक उज्जर भाल देखू ने” ।

पात कम रहितो पलाशक लाल फूलक उभार कविता-कला मे अभाव आ तीव्रता बीच सम्बन्ध रचैत अछि । झरल फूलकें दीपसँ तुलना कएल गेल अछि, जे गाछसँ माटि धरि रंगक यात्रा पूरा करैत अछि ।

‘देखू ने’क सम्बोधन पाठककें सहभागी करैत अछि, मुदा छठम आ आठम पाँतिक सामान्य ‘ऋतुक ताल/प्रकृतिक कमाल’ छवि सँ बेसी साधारण प्रशंसा अछि । सूखल धरती बीच आशाक लाल रङ दृश्यक आधार पर टिकैत अछि ।

गजल ४०८ : माटिक सुराही

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीर · रदीफः ठंढा रहल ।

पाठ-साक्ष्य : “सुराही भीतर नीर ठंढा रहल” ; “कुम्हारक हाथक घुमाव एखन धरि मोन पडैत” ; “माटिक अपन नीर ठंढा रहल” ।

सुराहीक शीतल पानि आ जेठक रौदक अन्तर केवल वस्तु-वर्णन नहिः कुम्हारक हाथक घुमावक स्मृति ओतए श्रमक अदृश्य उपस्थिति रखैत अछि । सूक्ष्म छिद्रसँ पानिक बाहर जाएबक दृश्य पदार्थक गुणकें काव्यगत श्वास बना दैत अछि ।

परम्परागत माटिक सुराहीकें चमकदार पात्रक मुकाबला रखनाइ वस्तुक सामाजिक मूल्यक संकेत अछि । मुदा ‘रूप सरल, अर्थ गम्भीर ठंढा रहल’मे विशेषणसमूह व्याकरण आ अर्थ दुनू दिशि असहज अछि; अर्थ-गम्भीरताकें ‘ठंढा’सँ जोड़ल विवादित प्रयोगक पृथक निखार चाही ।

गजल ४०९ : चैती पवन

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः छूइ गेल ।

पाठ-साक्ष्य : “चैती पवन दुआर छूइ गेल” ; “दिनक थकान पवनमे कने हलुक भऽ गेल” ; “स्मृतिक पुरन दुआर छूइ गेल” ।

चैती पवनक स्पर्श पातर पवन नहि रहि, खेतसँ घुरैत लोकक क्षणिक विश्राम आ कोइलीक अचानक स्वरक संग संवेदना बनैत अछि । साँझ बीतलाक बाद गन्ध टिकि रहबाक प्रसंग स्पर्शक स्मृतिकेँ गन्धमे बदलैत अछि ।

पहिल शेरक दुआर आ अन्तक पुरन दुआर बीच बाह्य घरसँ भीतरी स्मृति धरि गति अछि । मगर 'नव विचार' कथित मात्र अछि; विचारक रूप वा परिणाम नदेखाओल गेल, ताहिसँ शेरक अन्य इन्द्रियगत सघनतासँ ओकर दूरी अछि ।

गजल ४१० : अमरूदक बगिया

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ान · रदीफः हरियर रहल ।

पाठ-साक्ष्य : “ओसक संग बिहान हरियर रहल” ; “एक फल तोड़ि आधा मीतक हाथमे देल गेल” ; “आगाँक बिहान हरियर रहल” ।

अमरूदक डारिक फलसँ झुकब आ एकटा फलक आधा मित्रकेँ देब, प्रकृतिकेँ साझाक घरेलू व्यवहारसँ जोड़ैत अछि । बालकक दौड़ब आ हँसी बटोरब दृश्यकेँ बालस्मृतिक निकट लैत अछि ।

‘हरियर रहल’ फल, हँसी आ भावी आशाक रंग एकरूप करबाक युक्ति अछि । मुदा फल-कटबाक ठोस क्रियाक तुलना मे ‘साझाक ओ दान’ सीधा अर्थोक्ति अछि; भावक स्वतन्त्र असर दृश्यएँ सँ उत्पन्न होइत अछि ।

गजल ४११ : धानक भूसा

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः काज अबैत अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “भूसो घरक सँभार काज अबैत अछि” ; “किछुओ तुच्छ नहि जँ बुद्धिसँ ओकर मान बुझी” ; “जीवनक सँभार काज अबैत अछि” ।

धान अलग भेला पाछाँ भूसोकें बेकार नहि मानब घरेलू कृषि-अर्थशास्त्रक मूल बिन्दु अछि । पशु-आहार आ देवालक ताप-रोधक प्रयोग वस्तुक दूटा अलग जीवन देखबैत अछि; ‘भूसो घरक सँभार’ एहि पुनर्मूल्यांकनक आरम्भ अछि ।

परिचित ग्रामीण तकनीककें तुच्छताक विरुद्ध राखब संग्रहक सामाजिक दृष्टिक उपलब्धि अछि । मुदा ‘किछुओ तुच्छ नहि’ वाक्य स्पष्ट नैतिक निष्कर्ष बनि दृश्यकें पुनः समझबैत अछि; कम उपदेश अधिक शिल्पगत खुलापन दैत ।

गजल ४१२ : अलसीक नील फूल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः नील भेल ।

पाठ-साक्ष्य : “अलसीक खेतमे बहार नील भेल” ; “पीयर खेतक बीच ई नील रङ जागल” ; “आँखिक भीतर ई संसार नील भेल” ।

अलसीक नील फूल पीयर खेतक बीच दृश्य-विपर्यय रचैत अछि; हमर दृष्टि रङपर ठमकि जाइत अछि । नन्हि फूलक हवा समक्ष सिर नमेनाइ श्रम-संस्कारक अनुकरण नहि, दूटा जीवित गतिक कोमल साम्य अछि ।

मिसरा १-१०मे नील रंगक घनघोर आवृत्ति दृश्यक एकता दैत अछि, मुदा ‘नील भेल’ सामान्य ‘दुआर’ अथवा ‘सँभार’क संग जोड़ला पर अर्थकें अनावश्यक रूपसँ बान्हैत अछि । काफिया आ रदीफक मेल अधिकांशतः रङीकरण पर टिकि रहल अछि ।

गजल ४१३ : आमक मञ्जरी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ास · रदीफः पसरि गेल ।

पाठ-साक्ष्य : “आमक बगियामे सुवास पसरि गेल” ; “भोरक पहिल किरिन मञ्जरी पर थिरकि उठल” ; “घर-आँगन धरि आइ सुवास पसरि गेल” ।

मञ्जरीक सुवास आ मौरीक गुँजार गन्ध आ ध्वनि दुनू माध्यमसँ फलक पहिने आशाकें उपस्थित करैत अछि। पाचम मिसरामे जड़िक पानिक खोज सूचक अछि जे फूलक उत्सवकें धरतीक प्यास सँ अलग नहि कएल जा सकैत अछि।

'फल दूर, मुदा ऋतु आशा लिखि देलक' नाटकिय संक्षेप अछि: फलन अभी अनिश्चित अछि। मुदा 'पसरि गेल' रदीफक संग 'प्यास पसरि गेल' जेहेन प्रयोग संवेदनात्मक रूपें रोचक होएतो प्रथमतः गन्धक नैसर्गिक विस्तारसँ अलग अछि।

गजल ४१४ : गामक पोखरि

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ीर · रदीफ: रहि गेल।

पाठ-साक्ष्य : “गामक पोखरिमे निर्मल नीर रहि गेल” ; “पात आइ कने हिलल तँ गोल तरङ्ग उठल” ; “मोनमे ओहि पोखरिक नीर रहि गेल”।

पोखरिमे चानक छविक टूटि जुटब स्थिर जलसँ अधिक गतिमान स्मृति बनबैत अछि। गाम बदलि गेल मुदा पोखरिक स्मृति ओतहि अटकल—एहि अन्तिम दृश्यसँ पाठ केवल प्राकृतिक सौन्दर्यक चित्र नहि रहैत अछि।

‘मृदु-मृदु समीर रहि गेल’ जल-तरंगक भीतर हवा टिकबाक पदबंध प्रयोगशील अछि, मुदा भौतिक वर्णनक रूपें सीधासादी नहि। स्रोत-गजल ४०५क मखान-पोखरिसँ तुलना करिते श्रमक उपस्थितिक अभाव एतय स्पष्ट देखाइत अछि।

गजल ४१५ : नदीक बालू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: बदलैत रहल।

पाठ-साक्ष्य : “पानिक संग आइ निशान बदलैत रहल” ; “धार एक्के नहि, यात्रा चलैत रहल” ; “तैयो नदीक अपन मान बदलैत रहल”।

गजल ४०२क समान शीर्षक ‘नदीक बालू’ एतय दोसर अर्थक्षेत्र ग्रहण करैत अछि। पुरनका पग-छापसँ बेसी घाटक सरकैत स्थान आ नदीक किनारक रूपान्तर एतुक केन्द्र अछि।

‘घाट कखनो एतए, कखनो दूर बनल’ नदीक बहावमे सामाजिक अवस्थापनक अस्थिरता देखबैत अछि। ‘रूप स्थिर नहि रहैत’ अन्तिम सँ पहिने नीति-वाक्य

अच्छि; पहिले छह मिसरामे परिवर्तन अपने प्रत्यक्ष छल। दूर रचनाकें एके शीर्षकक कारण एके समीक्षा नहि मानल गेल।

गजल ४१६ : सखुआक पात

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी। मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त · रदीफः सरसराए।

पाठ-साक्ष्य : “हावामे सखुआक पात सरसराए” ; “दूर चिरे आइ बजल फेर मौन भऽ गेल” ; “ओकर भीतरक बात आइ सरसराए”।

सखुआक पातक सरसराहटि श्रवणप्रधान कविता बनबैत अछि। सूखल पात पएर तरे बाजैत अछि, नव पात डारि पर खुलैत अछि—पुरान आ नव ऋतुक संलाप ध्वनिक माध्यमसँ चलैत अछि।

रदीफ ‘सरसराए’क पुनरावृत्ति अनुपस्थित ध्वनिकें सेहो मनमे सुनबैत अछि। मुदा ‘निस्तब्ध राति सरसराए’ आ ‘मोनमे पुरन बात सरसराए’ दृश्यसँ अमूर्तता दिस जल्दी बढ़ैत अछि; ककर बात याद आबि रहल अछि से नहि खुलैत।

गजल ४१७ : गहुमक बालि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी। मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न · रदीफः झूमि उठल।

पाठ-साक्ष्य : “रौद लगिते आइ नव बिहान झूमि उठल” ; “पीयर रङ्गमे ऋतुक दीर्घ प्रतीक्षा फलल” ; “आगाँक नव बिहान आइ झूमि उठल”।

गहुमक दाना भरला सँ बालि झुकैत अछि; ई देहगत क्रिया मेहनतक फलकें काव्य बनबैत अछि। पाँचम पाँतिमे खेतिहरक हँसी पोषण आ श्रमक बाह्य परिणामकें मानवीय स्पर्श दैत अछि।

‘झूमि उठल’ रदीफ हावाक गतिसँ खेतक भावना धरि विस्तार करैत अछि। मुदा झुकैत बालि आ ‘झूमि उठल’क जोड़ीमे विपरीत गति अछि; एहिकें जँ सचेत वक्रोक्ति मानल जाए, तँ पाठक दोसर पाँतिसँ बेसी स्पष्ट समर्थन चाही।

गजल ४१८ : गामक पुल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः २०-
२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-
समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः जोड़ैत अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “ई पुल आइ दूनू कछार जोड़ैत अछि” ; “पएर, बैलगाड़ी एक बाट बाँटैत” ; “लोकक सहज व्यवहार आइ जोड़ैत अछि” ।

दूनू कछार जोड़ैत पुलक दृश्य आवागमनक सुविधा मात्र नहिः पएर, बैलगाड़ी आ बाट करैत लोक मिलिकऽ पुलकें सामाजिक सार्वजनिक स्थान बनबैत अछि । नओम मिसरा ‘पुल पाथरक केवल देह नहि’ एहि रूपककें सीधे खोलैत अछि । विशेष उपलब्धि ई जे मानसूनक नदीक बीचो बाट नहि टूटबाक आशा अछैत, पानि स्वयं नियन्त्रणमे आबि गेल एहन दावा नहि अछि । मुदा परस्पर संवाद कतेक बदलैत अछि एकर ठोस घटना नहि; अन्तिम शेर व्याख्या बेसी करैत अछि ।

गजल ४१९ : एना रे

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-
२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ा · रदीफः रे ।

पाठ-साक्ष्य : “बझाओल गेलैए चिड़ैया एना रे” ; “भेख बदलि राजा भिखाड़िसँ पूछै” ; “चढ़ि पार जाइ, हिलकोर उठा रे” ।

‘हितैषी’ कहि शिकारीक परिचय कराओल गेलासँ आरम्भे भाषाक छल पकड़ाइत अछि । चिड़ैया, राजा-भिखाड़ी आ ऐरावतक छविसभ एकहि सरलीकृत प्रतीक नहि; व्यंग्यक स्वर अपन पात्र बदलैत रहैत अछि ।

पूर्वक वन-ऋतुक समलय दृश्यसँ एहि गजलमे तीक्ष्ण मौखिक नाटकीयता दिस मोड़ अछि । ‘भेख बदलि राजा’क प्रसंग सत्ता आ वेशभूषाक भेद खोलैत अछि, मुदा अन्तक ध्वनि-आँखि-तरंग संयोजन तुरन्त स्पष्ट नहि; अस्पष्टता अर्थ-बहुलता आ अर्थ-विच्छेदक बीच झूलैत अछि ।

गजल ४२० : किछु नै बदलैए

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः २६-३४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -क · रदीफः किछु नै बदलैए ।

पाठ-साक्ष्य : “भोरक लाली साँझक लाली देखा देलक किछु नै बदलैए” ; “दिनमे ग्रहण घुरल चिड़ै, दिन गेल कतऽ दुपहरिये” ; “ऐरावत नै कहियौ किछु, भ्रम छै नीक, किछु नै बदलैए” ।

भोरक लाली आ साँझक लाली एकरूप देखबैत शीर्षक ‘किछु नै बदलैए’ सतही समानताक प्रश्न उठबैत अछि । बीचक ‘विध-बेबहार’ आ ‘साँच-झूठ’क फेरबदल एहि दावाकें भीतरसँ काटैत अछि; एहि तनावमे व्यंग्य पैदा होइत अछि ।

रदीफक बारम्बार घोषणा पाठककें अविश्वास करबाक स्थान दैत अछि, जँ ओकरा विडम्बना मानि पढ़ल जाए । मुदा अन्तिम ‘भ्रम छै नीक’क कथनक स्थिति स्पष्ट नहि—ओ काव्य-वक्ताक आत्मविरोध अछि कि सामाजिक स्वीकृतिनिष्ठा, एकर सीमा खुलल रहैत अछि ।

४०१-४२०क अन्तरकाव्यगत विवेचन

एहि समूहमे ४०१-४१८क अधिकांश रचना प्रकृति, ऋतु आ कृषि-श्रमक वस्तुपर केन्द्रित अछि । ‘नदीक बालू’ (४०२ आ ४१५)क एकहि शीर्षक प्रामाणिक अछि, मुदा ४०२मे नेनाक पदचिह्न आ ४१५मे बदलैत घाट प्रमुख अछि । ४१९-४२०मे गजल अचानक तीक्ष्ण मौखिक व्यंग्य दिस मुडैत अछि । एके आलोचनात्मक कसौटीसँ सभकें निरूपित करब उचित नहि ।

गजल ४२१ : लगैए ई

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः २६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ै · रदीफः लगैए ई ।

पाठ-साक्ष्य : “महामाला महाडाला स्वाहा करै लगैए ई” ; “टिपौड़ी छै बुझेबै बात की, धाही कनी देखू” ; “चढ़त आकास देखै बानसब्बरै लगैए ई” ।

‘महामाला महाडाला’क ध्वन्यात्मक धक्का आ ‘स्वाहा’ एक बेरमे उत्सव आ विध्वंसक दू संसार बनबैत अछि । बीचमे प्रेम, भोकारि आ हँसीक आवर्तन भावनात्मक विस्थापनकें मंचपर आनैत अछि ।

रदीफ 'लगैए ई' अत्यन्त निजी अनुभवक अनिश्चितता राखैत अछि; काव्यक वाक्य तथ्यघोषणा नहि करैत । मुदा बिंबसभक बीच संक्रमण कम अछि; अनिश्चितता कखनो बहुअर्थक शक्ति, कखनो पाठक लेल अनुक्रम-बाधा बनैत अछि ।

गजल ४२२ : हमरा की

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: ११-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: ऐ · रदीफ: हमरा की ।

पाठ-साक्ष्य : “मनुख जरैए गाम कनैए हमरा की” ; “चलू चलै छी नव देशमे घृणा जतऽ नै” ; “ऐरावत लेत प्रेम, नै दैए हमरा की” ।

‘मनुख जरैए गाम कनैए हमरा की’क कठोर प्रश्नमे रदीफ उदासीन समाजक आत्मरक्षा जेकाँ बजैत अछि । बाँधक कात घर बनाबैत लोकक प्रतीक्षा आ देश-विलयक कथन व्यक्तिगत दुखसँ सामूहिक संकट धरि जाइत अछि ।

एहि गजलमे नकार ‘हमरा की’ वास्तविक असम्पृक्तिक समर्थन नहि, ओकर आरोपो बनि सकैत अछि । मगर ‘नव देशमे घृणा जतऽ नै’क आदर्शकृत स्थान टोस विवरण नहि पबैत; आलोचना एहि ठाम विडम्बना आ पलायनक भेद राखैत अछि ।

गजल ४२३ : चलू घुरि चली

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: २१-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -इए · रदीफ: चलू घुरि चली ।

पाठ-साक्ष्य : “सोझाँ देखि मोन ललाइए चलू घुरि चली” ; “ठकैए हमरा हम जानि-बूझि ठकाइत” ; “ऐरावत ऐल सुनाइए चलू घुरि चली” ।

‘चलू घुरि चली’ लगातार पलायनक आग्रह नहि: अपूर्ण आशा, छलक पहिचान आ जानबूझि ठकाएबाक स्वीकृति मिलि पछतावा रचैत अछि । सोझाँ देखब आ घुरबक द्वन्द्व गजलक चाल निर्धारित करैत अछि ।

प्रारम्भिक पाँतिमे रंगक टिकब वा धोखराएब प्रेमक अस्थिरता देखबैत अछि । अन्तक ऐरावतक आवाजक प्रवेश पहिनुक आत्मालापसँ अलग बिम्ब अछि;

रचनात्मक हस्ताक्षरक रूपेँ पढल जा सकैत अछि, मुदा परिवर्तनक कारण पाठमे नहि बताओल गेल ।

गजल ४२४ : अहीं तँ छी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज्जी । मात्रा-क्रमः १७-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ा · रदीफः अहीं तँ छी ।

पाठ-साक्ष्य : “खेत, आरि, रस्ता सभटा अहीं तँ छी” ; “भोरे उदासी उड़ियाइत जाइत” ; “दुख-सुखक अकाल जा, अहीं तँ छी” ।

‘खेत, आरि, रस्ता’केँ प्रियक पहचान बनाबयमे काव्य-वक्ता प्रेमक स्थानकेँ निजी देहसँ बाहर भूमि आ यात्रामे पसारैत अछि । ‘भजार मोन पड़ैए’ दैनिक उपस्थिति आ अलगावक भंगिमा जोड़ैत अछि ।

‘अहीं तँ छी’ पुनरुक्ति अनुपस्थित प्रियकेँ सभ वस्तुमे उपस्थित करैत अछि । मुदा टूटल सपना, खुशी आ दुखक समान सम्बोधन मे वस्तु-विशेषक गहिराइ घटैत अछि; सर्वव्याप्त रूपक अन्ततः अतिविस्तारक जोखिम उठबैत अछि ।

गजल ४२५ : झपाइ छी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज्जी । मात्रा-क्रमः २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ाइ · रदीफः छी ।

पाठ-साक्ष्य : “गुमकी लागै राति बुलैत चान झपाइ छी” ; “जे काज होइए पछता से काज ताकी हम” ; “बनैत-बनैत बनै मूर्ति अहाँ देखाइ छी” ।

‘घुरि जाइ गाम मुदा बीच असकताइ छी’ गमन आ असमर्थताक आन्तरिक विरोध अछि । चान, सतरंग आ अनगढ़ मूर्तिक छविसभ आत्मगठनक अस्थिर कल्पना बनबैत अछि ।

मूर्ति ‘बनैत-बनैत बनै’ स्थिर मूर्तिफलक बदला प्रक्रियाकेँ महत्त्व दैत अछि । मुदा चानसँ मूर्ति धरि अर्थ-सेतु पर्याप्त नहि; शेरक स्वतंत्रता गजल-विधानक गुणो अछि, मुदा एहि प्रसंगमे भावक दिशा बिखरबाक आशंका रहैत अछि ।

गजल ४२६ : देखै छी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ङै · रदीफः छी ।

पाठ-साक्ष्य : “नोर झरैए मोनक दागनि दगै छी” ; “पिआ गेलाह देशान्तर दूरस्त देस” ; “ऐरावतसँ भारी ऐ दिनकै देखै छी” ।

अन्हार जिनगीमे बाह्य इजोरिया बेकार लगबाक प्रसंग निजी हानि आ दृश्य-जगतक असंगति देखबैत अछि । देशान्तर गेल व्यक्तिक प्रतीक्षा कविताक मध्यसँ अन्त धरि अनिष्ट बोध बढ़बैत अछि ।

‘देखै छी’ शीर्षकक तुलनामे पाँतिसभमे दगब, बजब, गनब आ आशा छोड़ब प्रधान अछि; अवलोकन कर्मक भीतर पीड़ा प्रवेश करैत अछि । ऐरावतसँ भारी दिनक तुलना नाटकीय अछि, मुदा ओकर मापक कवितामे आन्तरिक रूपेँ अघोषित रहैत अछि ।

गजल ४२७ : तखन किने

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १९-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ङैब · रदीफः तखन किने ।

पाठ-साक्ष्य : “उचरि नव रूप अपन लिखैब तखन किने” ; “खधाइ गढ़ अछि भरल सभतरि दहारे” ; “नव युग कनिक उगल बुझैब तखन किने” ।

‘तखन किने’ बारम्बार प्रश्न करैत भविष्यक स्थगनकें चुनौती दैत अछि । बोल-वाणी घुराएब आ जलक धारक बीच घर बसाएब सामाजिक अवसर आ संकटकें एकसंग रखैत अछि ।

प्रश्नरूप रदीफ पाठककें निर्णायक घटना देबाक बदला समयक अपर्याप्तताक बोध करबैत अछि । मुदा विविध स्थल-बिम्बक आपसी सम्बन्ध सहज नहि; एकटा दार्शनिक अस्थिरता आ एकटा रचनात्मक असंगति दुनू सम्भावना स्वीकार्य अछि ।

गजल ४२८ : अनेरे

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २०
मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः पञ्चकल × ४ · यतिः १० +
१० । काफियाः -री · रदीफः अनेरे ।

पाठ-साक्ष्य : “अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे” ; “घरोमे उपासे बहारो निरासे” ;
“भसाठी अबैए विचारी अनेरे” ।

‘अनेरे’क लगातर आगमन उद्देशहीन कहलक अपमानजनक आवाज जेकाँ बजैत
अछि । ‘घरोमे उपासे बहारो निरासे’क समरचना जीवनक दुनू स्थानक संकट घट्ट
करैत अछि ।

पञ्चकल × ४ आ १०+१० यतिक दावा एहि प्रविष्टिमे विशेष जाँच योग्य अछि;
मुद्रित मिसरामे वास्तविक उच्चारणक भारक अनुगमन आवश्यक । खटोली
उठाबैत गमनक अन्तिम दृश्य बाकी अमूर्त उदासीकँ ठोस श्रम/निर्भरता बनबैत
अछि ।

गजल ४२९ : बिसरनहिए नीक

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २८-
३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास ·
यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -हिए · रदीफः नीक ।

पाठ-साक्ष्य : “गुम्म भेल जे ठाढ़ भेल छी मुनल मूह मटकुरिए नीक” ; “जकरा
कतहु ने छै पुछ्छारी से अछि सौराठक नोतिहारी” ; “ऐरावत प्रेम-जिंजीरसँ छारल
तैं ठोकरेनहिए नीक” ।

‘बिसरनहिए नीक’ स्मृतिकँ बिसरबाक साधारण निर्देश नहि; सौराठ, बरियारक
गाछ, उजड़ैत दलान आ प्रेम-बंधन एकहि सामाजिक क्षेत्रमे रखैत अछि ।
बरियारक गाछकँ वृन्दावन कहब स्मृतिक मिथकीकरणक बिम्ब अछि ।

हाथी आ चुट्टीक अलग पएरक भारक तुलना सामाजिक स्तरक परम्परागत भेदसँ
संवाद करैत अछि । मुदा अति दीर्घ संयुक्त पाँतिसभ गजलक श्रव्य विभाजन
कठिन बनबैत अछि; रदीफसहित काफियाक घोषित संगतिक स्वतंत्र जाँच
आवश्यक ।

गजल ४३० : प्रेमक पथिक

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः २२-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः — · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “अकत तीत प्रेमक जे पथिक अदौकालसँ” ; “अकरतब कर्तव्यमे भेद नै बुझलकै जे” ; “धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ” ।

‘प्रेमक पथिक’मे प्रेमक मादकता आ कर्तव्यक भेद असहज नैतिक प्रश्न बनैत अछि । ‘जराउ प्रेमक गप्प नै कहियो नुकेलकै’ भावक गोपनताक विरुद्ध संकेत दैत अछि ।

काव्यक बिंबक बहुलता—धतालबूढ़, कडेकमान, खज्जखूहर, धांगि—समृद्ध बोलचालक ठोस आधार होयत जँ शब्दसभ पाठक-सन्दर्भमे खुलि सकय । काफिया-रदीफ रिक्त घोषित अछि; तँ एकरा पारम्परिक सुसम्बद्ध गजल रूप स्वतः मानब उचित नहि ।

गजल ४३१ : सोचनीक होइए

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ँए · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “अंतहीन अंत ऐ सोचनीक होइए” ; “आदति जे लागल वेदना सहबाक” ; “खरचण्डाली प्रेम पिसीमाल भेलैए” ।

सोचनीक ‘अंतहीन अंत’ एकटा ध्वन्यात्मक विरोधाभास अछि; छवि पूरा नहि होयबाक पीडा चारिम मिसरामे मगज फटबाक शारीरिक तनाव बनैत अछि । आँखिक बिना बाजने बजब मौनक दृश्यात्मक प्रतिपक्ष अछि ।

आठम मिसराक वेदनाक गाँठि सुन्दर लगब आत्मपीडक मनोदशाक संकट खोलैत अछि । मुदा अंतिम पाँतिक विशिष्ट प्रेम-शब्दसमूह (खरचण्डाली, पिसीमाल)क सम्बन्ध पहिनुक चित्र-संकटसँ स्पष्ट जोड़बाक गुंजाइश अछि ।

गजल ४३२ : जा रहल अछि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः १९ - २२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ा · रदीफः रहल अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “छोड़ि कऽ हमरा ई जे ओ जा रहल अछि” ; “हमरासँ कते की माँगै छल रहरहाँ” ; “बाजब से बिनु सुनने जा रहल अछि” ।

‘छोड़ि कऽ हमरा’क विदाइ आ ‘बिनु सुनने’ गमन मिलि सम्बन्धमे संवादक असफलता बनबैत अछि । एकटा छोट स्वर याद रहबाक बदला मौनक हाक्रोस सामने आयल अछि ।

रदीफ ‘रहल अछि’ सतत वर्तमानक आघात बना दैत अछि; घटना बीतलाक बादो छूटबाक क्रिया चलैत अछि । मुदा ‘हृदए कना रहल’ सन रूपकक संग ध्वन्यात्मक ढील देखाइत अछि; पाठगत निखार भावक तीव्रता घटेबाक बदला बढ़ा सकैत अछि ।

गजल ४३३ : बुझतै ओ

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी । मात्रा-क्रमः २४-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ै · रदीफः ओ ।

पाठ-साक्ष्य : “की कहबै, कोना कहबै, जे बुझतै ओ लुझतै ओ” ; “बनि माँछ अकुलाइ छी बाझब जालमे कक्खन” ; “जलबाह सोझाँ माँछ, ऐरावत बनल, देखै ओ” ।

‘की कहबै, कोना कहबै’क आरम्भ सम्भावित उत्तरक पहिने भंगिमा बदलैत अछि । अँचरा आ माछक बिम्ब लाज, असुरक्षा आ बान्हल भावक घरेलू/जल-सम्बन्धी दू जगत खोलैत अछि ।

रदीफ ‘ओ’ प्रियक स्थान समेटैत अछि, मुदा वक्ता आ सम्बोधितक बीच क्रियापदक लचीला रूप पाठकसँ अतिरिक्त परिश्रम मँगैत अछि । ‘ऐरावत बनल’क अन्तिम संक्रमण बिंबक दायरा बढ़ाबैत अछि, तर्कशृंखला भने कम स्पष्ट अछि ।

गजल ४३४ : कहू की करी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १९-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -इए · रदीफः कहू की करी ।

पाठ-साक्ष्य : “आँखि ओडठल जाइए कहू की करी” ; “धान छै खखरी बनल अहिठाम आ” ; “धौरबी बनि सोचाइए कहू की करी” ।

‘कहू की करी’ संकटसमाधानक सामूहिक प्रश्न जेकाँ बजैत अछि । देस छोड़ि ज्ञान लेबाक आ पथराएल मोनक विरोध शिक्षा/प्रवासक भावनात्मक मूल्यकें सामने आनैत अछि ।

धानक धानी रंग आ आगि-पानिक संयोग रूपकात्मक तीव्रता दैत अछि, मुदा ओकर कारणात्मक सम्बन्ध छलाँग लगबैत अछि । समापनमे सोचाइक धुँध स्पष्ट प्रश्न खोलैत अछि, समाधान नहि ।

गजल ४३५ : अडेजब कोना

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः २४-३१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -इए · रदीफः अडेजब कोना ।

पाठ-साक्ष्य : “मिरदडियाक तरंग भँसियाइए अडेजब कोना” ; “हरसट्टे अपने अपन चेन्हासी मेटा लेलक आइ” ; “धेने जे बाट उधोरनि बनि जाइए अडेजब कोना” ।

मृदङ्गक तरंग आ आँखिक नोर श्रव्य लयसँ भावक भारीपन धरि पाठ लऽ जाइत अछि । ‘अडेजब कोना’ एकटा असमर्थता-सूचक प्रश्न अछि जे सम्पूर्ण गजलमे विस्तार पबैत अछि ।

गुमराह सगुन, मेटाइत चेन्हासी आ बाढल मनोधरक छवि आपसी तालमेल खोजैत अछि । मुदा दीर्घ पाँति आ आन्तरिक ध्वनि-समूहक भार सामान्य गायन-लय पर दबाव दैत अछि; एकरा स्वतः अरुज़ी सफलतानि कहल नहि जा सकैत ।

गजल ४३६ : रहल अछि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १३-१८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ा · रदीफः रहल अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “छोड़ि रहल अछि, भिजा कहल अछि” ; “बाँचि रहू ओकरासँ ओ जे” ; “रक्षादीप से मिझा रहल अछि” ।

बहिराँ भिजाबयवला आ भीतर निर्दय रहबाक दू व्यवहारक अन्तर गजलक केन्द्र अछि । ‘दोसरा सोझाँ नीक बनत आ / एसगरमे शैतान बनल अछि’क सीधा विभाजन सार्वजनिक भेष आ निजी हिंसाक प्रसङ्ग खोलैत अछि ।

रदीफ ‘रहल अछि’ निरन्तरताक चिन्ह अछि, मुदा कवितामे कतहु कथित कर्म ‘भेल अछि’क रूप लैत अछि । गजल-रूपक अन्तरिक ध्वनि-समता जाँचलासँ पूर्व ई मिश्रण शैलीगत सघनता कहब कठिन अछि ।

गजल ४३७ : बहुत अछि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः — · रदीफः अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “छोट-छीन सन बात बहुत अछि” ; “नीक काज देखि गुमसुम छी टाढ़” ; “बदलि देत विश्वास बहुत अछि” ।

‘छोट-छीन सन बात बहुत अछि’क घोषित साधारणता पाछाँ भरोसा, प्रशंसा आ सामूहिक चलबाक राजनीति अछि । ‘ककरा की कहबै के पतिआएत’ संवादक असुरक्षा स्पष्ट करैत अछि ।

‘अछि’क एके शब्दावसान अनेक मिसरामे ध्वनिमूलक एखरता दैत अछि, मुदा मूल पाठ स्वयं काफिया ‘—’ दैत अछि; तँ परम्परागत गजल-बंधनक दावाक ठाम सन्देह राखब जरूरी । छोट बातक सामाजिक भार एतुक सम्भावित उपलब्धि अछि ।

गजल ४३८ : दोस्तियारी बिना

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः — · रदीफः अछि ।

पाठ-साक्ष्य : “दोस्तियारी बिना ई राह कठिन अछि” ; “सनेस हमर जे नीक नै लगलनि” ; “आपरूपी बूढ़ नेना बनैत अछि” ।

मीतता बिना बाट कठिन होएब गजलक आरम्भक प्रतिज्ञा अछि, मुदा अन्त ‘बूढ़ नेना’क छविसँ मूल्यद्वन्द्व खोलैत अछि । घृणा, प्रेमक दू आखर आ फुलवारीक काज एहि सम्बन्धक अनेक पाठ अछि ।

शेरसभक विषय एकहि पक्की कथा नहि रचैत; मित्रताक नैतिकता आ व्यक्तिगत रूखक समुच्चय बनैत अछि । ‘सएह भरल अछि’क सन्दर्भ अस्पष्ट रहितो भावक वाचिक निकटता प्रभावकारी अछि ।

गजल ४३९ : परिचर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “बिसबासी लोक जे जीवनमे हमर” ; “जकरा पदक होश बेहोश बनौने” ; “नेनोसँ बेशी जे भेलहुँ सुखितगर” ।

‘परिचर’ पदक संग समाजक सेवा आ पदक मोहक विरोध उभरैत अछि । ‘जतेक माँगलक देलहुँ बेशिये कऽ’क दानशीलता बादक ‘पदक होश’क पाखण्ड-आलोचनासँ जडैत अछि ।

दोसराक दर्दसँ दुखी भेला पर सुखितगर भऽ जाएब भावनात्मक जटिलता अछि; एकरा मात्र परोपकारक नारा नहि मानल जाए । मुदा ‘छेबगर/धरगर/सुखितगर’क काफिया-आभास घोषणाक ‘-र’सँ बहुत व्यापक अछि; शेरान्तक वास्तविक पद-विन्यास पुनर्जाँच योग्य अछि ।

गजल ४४० : खेत-खम्हारक काज

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -लहुँ · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “खेत-खम्हारक काज कऽ सकलहुँ” ; “आकांक्षाक पजरैत अग्निक बिच” ; “हमहुँ ओहिना घुरा कऽ कहलहुँ” ।

खेत-खम्हारक काम आ निभाओल सपथ समग्र गजलमे श्रम आ भरोसाक संयुक्त तर्क अछि । पाइ आएल मुदा समय गेल—एहि चतुर्थ पाँतिसँ आर्थिक परिणाम आ गँवाओल कालक भेद खुलैत अछि ।

झगडा करितो प्रेमक बात नहि कहि सकबाक स्वीकृति सार्वजनिक कामक दक्षतासँ निजी सम्बन्धक असमर्थताक ओर मोड़ अछि । रचनाक अन्तक ‘हमहुँ ओहिना’ आत्मसमीक्षा अछि, मुदा चौड छवि-समूहक बदला संवादिक बखान प्रधान रहैत अछि ।

४२१-४४०क अन्तरकाव्यगत विवेचन

४२१-४४०क रचनासभमे प्रश्न, व्यंग्य, निजी विरह आ सामाजिक उत्तरदायित्वक स्वर अधिक बदलैत अछि । ‘हमरा की’मे सार्वजनिक उदासीनता, ‘चलू घुरि चली’मे छलसँ थाकल मन, ‘अनेरे’मे विस्थापन आ ‘खेत-खम्हारक काज’मे निजी/सामूहिक श्रमक द्वन्द्व एक-दोसरासँ जुदा काव्य-स्थितिसभ अछि । घोषित काफिया-रदीफ वा बहरक सूचना लेखकक पाठ-परिसरक हिस्सा अछि; ओकरा पूर्ण उच्चारणाधारित परीक्षणक परिणाम मानल नहि गेल ।

गजल ४४१ : सत्यसँ भेंट

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १३-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ल · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “भय रहित सत्यसँ भेंट भेल” ; “आजुक बात खतम होएत यौ” ; “नव विहान किए छल रोकल” ।

भयरहित ‘सत्यसँ भेंट’क घोषणा आ ‘उद्देश्यक पाछाँ भटकि रहल’ बीच विचारक अन्तर्विरोध अछि । ‘चित्रक रंगक करतब’ कहैत सत्यकोणकें सौन्दर्यगत निर्माणसँ जोड़ल गेल, मुदा एकर दृश्य उदाहरण नहि विकसित भेल ।

नव बिहान रोकल जाएबाक अन्तिम प्रश्न कृतिमे सत्यक सामाजिक अवरोध खोजबाक अवसर दैत अछि। मुदा 'सुरेब सम्पूर्ण' आ 'बिरो बनल'क ध्वन्यात्मक घनत्व भावक स्पष्टता कम करैत अछि; पाठमे काफिया '-ल' व्यापक स्तरपर देल अछि, ओकर निष्पक्ष मिलान बाकी रहैत अछि।

गजल ४४२ : मोन पड़ल ऐ

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १६-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: — · रदीफ: ऐ।

पाठ-साक्ष्य : “दिन-राति बीतल से मोन पड़ल ऐ” ; “सिखबाक ई इच्छा खतम भऽ गेने की” ; “सत्यक प्रति ई नरम जे भेलहुँ ऐ”।

मोन पड़ब आ विश्वासक मेल एतय स्मृतिमे टिकबाक बदला भविष्यक ज्ञानप्रश्न बनि उठैत अछि। सहकैत बसातक दृश्य बाहरी स्पर्शसँ अन्तर्मनक शक्ति दिस जानेवला स्थानान्तरणक साक्षी अछि।

‘सिखबाक ई इच्छा खतम भऽ गेने की’ पाठककें पूर्व घोषित अडिग विश्वासपर फेर विचार करबैत अछि। रदीफ ‘ऐ’क मुखरता मैथिली बोलचालक स्तर जोड़ैत अछि; मुदा ‘अछि ऐ’क बारम्बार अन्त संवादक स्वाभाविकता आ गजल-ध्वनि बीच असामान्य तनाव उत्पन्न करैत अछि।

गजल ४४३ : धरधड़ी

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १४-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: — · रदीफ: —।

पाठ-साक्ष्य : “छातीक धरधड़ी घटि बढ़ल अछि” ; “कहू किए अछि ई चित घबड़ाएल” ; “प्रेम पाबि खटबताह बनल अछि”।

छातीक धरधड़ी, साँस फुलब, निन्नक मारल आँखि—प्रेमक असरक शारीरिक विवरण अछि। ‘माँछ बिनु पानिक उन्टा प्रेम हम्मर’ निज अनुभवकें जलचरक विडम्बनात्मक उलटवाँ प्रतिमा बनबैत अछि।

कविता प्रेमक सकसक आ आत्मपरिहासक बीच झूलैत अछि। मुदा ‘प्रेम पाबि खटबताह बनल अछि’क अर्थ सम्बन्ध सहज नहि; आरम्भक धड़कन-साँसक स्पष्ट दृश्यसँ तुलना करिते अन्तक अस्पष्टता प्रखर होइत अछि।

गजल ४४४ : काज चलत नै

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-१७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः — · रदीफः नै ।

पाठ-साक्ष्य : “बकथोथीसँ काज चलत नै” ; “खतम करू बात बड्ड भेल” ; “ई पाँती इतिहास बनत नै” ।

‘बकथोथीसँ काज चलत नै’ कहि आरम्भे वचन आ कामक भेद निर्धारित होइत अछि । भार मिलिकऽ उठेबाक पाँचम मिसरामे सामूहिकताक व्यावहारिक अर्थ अछि, जे आत्मप्रशंसासँ भिन्न अछि ।

अन्तिम ‘ई पाँती इतिहास बनत नै’ आत्मसमीक्षात्मक विडम्बना अछिः लेखनक असफलताकेँ स्वयं कवितामे लिखल गेल अछि । मुदा ‘प्रतिकार करब नै’क नकार पहिल आत्मदृढतासँ टकराइत अछि; पाठगत आशय खुलब आवश्यक ।

गजल ४४५ : छद्म ज्ञान

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-१८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः — · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “तेजगर छी से छद्म ज्ञान भेल” ; “सूर्य-किरण से मद्विम-मद्विम” ; “तोहूँ हमरे सन अछि देखल” ।

‘छद्म ज्ञान’ शीर्षक ज्ञानक बाह्य प्रकाश आ भीतरक अहंकारक भेद खोलैत अछि । सूर्यक किरण गर्दासँ झाँपल दृश्य प्रकाशक अवरुद्धता आ मानसिक जड़ताक प्रतीक बनि सकैत अछि ।

नटुआ बनि हँसब अन्तमे नकल आ आत्मसाम्यक अस्पष्ट व्यंग्य अछि । ‘खिखिर कटाबै’, ‘गिरिमाल’ सन पद लोकभाषिक घनत्व बढ़बैत अछि, मुदा काव्य-वक्ता आ लक्षित पात्रक सन्दर्भ थोड़ स्पष्ट रहिते आलोचना अधिक निश्चित होइत ।

गजल ४४६ : तैयार

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः — ।

पाठ-साक्ष्य : “बानर पट लैले अछि तैयार” ; “कोरो बाती उबही देबाक लेल” ; “से सहब दहोदिश अत्याचार” ।

बानरक ‘तैयार’ भंगिमा आ जनता दुहबाक रूपक राजनीतिक अर्थक पैघ परास बनबैत अछि । अर्थशास्त्रक भण्डार होइतो पुलक समुचित समाचार नहि रहब किताब आ सार्वजनिक सुविधा बीच दूरी प्रकट करैत अछि ।

विनोदक छद्ममे सत्ता-समीक्षा अछि: जे गामक बाट नहि जोड़ि सकैत से ज्ञानक ढोल पिटैत अछि । मुदा ‘बुढानुस - भजार’ सन वाक्य-समूहक सन्दर्भ अघोषित; व्यंग्यक लक्ष्यार्थ पाठकक पूर्वसामाजिक ज्ञानपर निर्भर रहैत अछि ।

गजल ४४७ : ई काल

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: २१-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: — · रदीफ: — ।

पाठ-साक्ष्य : “कानैत दुनू बच्चाकें देखलहुँ बिछुडैत गेल” ; “लाल सूर्यकें पीअर कपीश होइतहिँ ओकर” ; “भगजोगनीक बाइल भकराड़ ई राति भेल” ।

दू कानैत बच्चाक प्रत्यक्ष दृश्यसँ संवेदनाक अकालक पैघ निष्कर्षक गति अछि । ‘लाल सूर्यकें पीअर कपीश’ बनैत देखनाइ काल-सन्ध्याक रङ्गपरिवर्तनकें मनुष्यता दबबाक संकेतसँ जोड़ैत अछि ।

‘सुन्न-मसान बोनक मचान’क ध्वन्यानुप्रास भय आ रिक्तताकें श्रव्य बनबैत अछि । मुदा अभिव्यक्ति अनावश्यक जटिल भेलासँ प्रारम्भक दू बच्चाक दुःख पीछे छूटबाक जोखिम अछि; कथक प्रमाणरूप दृश्य आ व्यापक उपमान बीच सन्तुलन अपेक्षित ।

गजल ४४८ : तारा कहलक

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ा · रदीफ: कहलक ।

पाठ-साक्ष्य : “रातिक इजोरिया देखि रहल तारा कहलक” ; “पिरौछ सरिसव फूल हँसि रहल अछि” ; “ई इजोरिया पिरौछ किए हँसा कहलक” ।

चन्द्रमाक प्रतिष्ठित इजोतक बरक्स छोट तरेगनक आवाजकें केन्द्र देब काव्यक लोकतान्त्रिक दृष्टि अछि। ‘तरेगन छोट तैयो इजोतक खिस्सा कहलक’ मान्य पैघ प्रकाशक विकल्पमे सूक्ष्म सहायताकें महत्त्व दैत अछि।

एहि मूल प्रविष्टिमे **आठ मिसरा** अछि, पाँच शेरक दस मिसरा नहि। अंतिम सरिसव-फूल आ प्रकाशक प्रश्नक बीच तत्त्व-साम्य अछि, मुदा ‘पिरौछ’क बहुअर्थक अर्थसाक्ष्य मूल उच्चारणक आधारपर देखब आवश्यक। छन्दबद्ध गजलक संख्यात्मक एकरूपता स्वतः लागू नहि।

गजल ४४९ : ने कहितौं

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः ितौं · रदीफः —।

पाठ-साक्ष्य : “जे ई गप अहाँ हमरासँ ने कहितौं” ; “आरि-धूर बाटे चली आ जा कऽ पहुँची” ; “बीच सड़क ठाढ़ छै रोकि ने सकितौं”।

मिथ्या गप कहब आ भीतर बात रखबाक असमर्थता प्रेम-सम्बन्धक संवाद-राजनीति अछि। ‘ठोढ़क फुफरी चानिपर पसेना’क देहगत छवि आरोपकें संवेदनशील सम्बन्धक दिस मोड़ैत अछि।

एहिमे मूल पाठक **आठ मिसरा** अछि। ‘ने कहितौं/ने करितौं/ने सकितौं’ शर्तसदृश भावक ताल बनबैत अछि, मुदा सामूहिक ‘चली’ आ निज ‘हमरासँ’क वक्ता-स्थानक परिवर्तनक ठोस प्रसंग नहि। प्रकाशनमे एकरा पाँच-शेर गजल मानि भरबाक प्रयास उचित नहि।

गजल ४५० : जलोदीप

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः २४-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफियाः — · रदीफः —।

पाठ-साक्ष्य : “पिपनी झुकल डिम्हा उठल करजनी सन आँखि छै” ; “चढ़ल ई आबि रहल, ई धार बाढ़ि बनि कऽ केहन” ; “बाँचल रहत हमर जलोदीप की गाम हमर ऐ”।

‘पिपनी झुकल डिम्हा उठल’ जल-क्षेत्रक स्थानीय भू-आकृतिक बिम्ब अछि। अकासमे मेघक टिक्कर आ खेत दिस आशाक दृष्टि अचानक आवैत बाढ़िक संकटसँ टकराइत अछि।

एहि रचनाक **छह मिसरा** मात्र अछि; आरम्भक पाठसँ आन्तिम ‘बाँचल रहत हमर जलोदीप की गाम हमर ऐ’ तक तीन शेरक रूप भेटैत अछि। एकरा ‘रंग-संगम’क ‘जलोदीप’ नाटकक सम्पूर्ण कथानकक बराबर मानब नहि उचित; समान शीर्षक अन्तरविधागत तुलना खोलैत अछि, पाठ-आश्रित प्रत्यक्ष सम्बन्धक प्रमाण नहि।

गजल ४५१ : अन्हार पसरल

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ल · रदीफ: —।

पाठ-साक्ष्य : “जाऊ कत्तऽ टिटही सेहो इजोरियामे भागल” ; “साँझ अन्हारगर अछि, राति अछि बाँचल की” ; “दिनोमे ग्रहण आ सगरो अन्हार पसरल”।

अन्हारक मध्य उजासो व्यर्थ लगबाक विलोम दृष्टि गजलक मूल काव्य-तर्क अछि। ‘जाऊ कत्तऽ टिटही सेहो इजोरियामे भागल’ असुरक्षा केहन स्तर धरि पहुँचल से अनहोनी दृश्यसँ बतबैत अछि।

जिनगीक रस्ता संग्राम भऽ जाइब बहुपरिचित रूपक अछि, मुदा दिनमे ग्रहणक समापन एहि रूपककें अमूर्त अन्हारक ठोस खगोलीय विडम्बनासँ जोड़ैत अछि। तथापि राक्षस, प्रेत, लहासक सघन प्रयोग शोकक अर्थ विस्तृत करैत-करैत अतिरेकक जोखिम उत्पन्न करैत अछि।

गजल ४५२ : भऽ गेलै

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: भऽ गेलै।

पाठ-साक्ष्य : “दिन देखारे जे अन्हार भऽ गेलै” ; “गोंहि आएल अछि हमरा टोल” ; “दुनूमे मेलक नियार भऽ गेलै”।

‘दिन देखारे जे अन्हार भऽ गेलै’ सार्वजनिक प्रकटता आ नैतिक अन्हारक तनाव अछि। ‘जलसमाधि तँ व्योपार भऽ गेलै’ सम्बन्धित मृत्यु/संकटकेँ आर्थिक अवसरमे बदलबाक विरुद्ध सूक्ष्म कटाक्ष करैत अछि।

घाटा, बनिजार आ व्योपारक पदावली एकटा आर्थिक आलोचनाक आधार बनबैत अछि। मुदा गोहिक प्रवेश आ अन्तक गज-ग्राहकक बिम्ब पाठक लेल अन्तरपाठीय परिचय मँगैत अछि; मूल उपन्यासक घटनाकेँ एहि गजलक स्वयंसिद्ध सन्दर्भ मानि आरोपित नहि करब।

गजल ४५३ : छोड़ि आयल छी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी। मात्रा-क्रमः २३-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -स · रदीफः छोड़ि आयल छी।

पाठ-साक्ष्य : “एकटा आस एकटा पियास छोड़ि आयल छी” ; “देखू जिनगी कतेक सुंदर, स्वप्न डेराओन किए” ; “स्वप्न बदलि जाएत एकटा प्रकास छोड़ि आयल छी”।

‘एकटा आस एकटा पियास छोड़ि आयल छी’ प्रस्थानकेँ भौतिक वस्तु छोड़बाक बदला अपूरित कामनाक परित्याग बनबैत अछि। डरक राति, हितक स्वांग आ मेघक धुआँक झाँस यात्रा आ स्मृतिक अलग-अलग पाट खोलैत अछि।

अन्तिम ‘स्वप्न बदलि जाएत एकटा प्रकास’ आशा फेर जागबाक भाव दैत अछि, मुदा ‘छोड़ि आयल छी’ रदीफक कारण अपन उजासो छोड़ा गेल बुझाइत अछि। एहि असङ्गति केँ मात्र त्रुटि नहि, विछोहक द्वन्द्व रूपेँ पढ़ब सम्भव अछि।

गजल ४५४ : रहि रहि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुञ्जी। मात्रा-क्रमः १९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः सममात्रिक · यतिः ९ + १० निकट, अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ह · रदीफः दैए रहि रहि।

पाठ-साक्ष्य : “भोरक बसात धाह दैए रहि रहि” ; “झूठक बहैत धार छै जे थमकल” ; “पसरि कऽ गजेन छाह दैए रहि रहि”।

‘भोरक बसात धाह दैए रहि रहि’मे बसातक सामान्य शीतलताकेँ धाह बनाओल गेल अछि; अनुभूतिक उलटफेर पीडक स्मृतिक स्थिति सूचित करैत अछि। प्रश्न-

सवाल, झूठक धार आ थाकल पएरक छवि एहि आवर्तक वेदनाक पृथक स्थल अछि।

मूल मेटामे १९ मात्रा प्रति मिसरा, ९+१० निकट यति घोषित अछि। एहि दावाक स्वतन्त्र उच्चारण-जाँच बिना छन्द-सिद्धि नहि मानब; किन्तु ‘रहि रहि’ रदीफक ध्वन्यात्मक आवर्तन कथ्यक वेदनाक आवृत्तिसँ सटीक जुड़ैत अछि।

गजल ४५५ : उसरि गेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः २२-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न्न · रदीफः उसरि गेल।

पाठ-साक्ष्य : “सम्हरि उठैत डेग सुदिन्न भेल उसरि गेल” ; “घामे भिजलौं किएक सकाले रौद बरसि गेल” ; “लोक कतए रहता भिन्न भेल उसरि गेल”।

‘उसरि गेल’क रदीफ विफलता आ विसर्जनक एके स्वर घुमबैत अछि। सम्हरि उठैत डेग, बिखिन्न मोन आ घामे भीजल भोरक मिसरासभ जीवनक प्रतिकूलताकें अलग-अलग इन्द्रियगत बोध दैत अछि।

‘सम्हरि उठैत डेग सुदिन्न भेल उसरि गेल’ मे आरम्भे सम्भार आ नाशक विरोधाभास अछि। मुदा ‘विभिन्न/कृपिन्न/छिन्न’ सन काफिया समूहक संग अर्थक सततता सहज नहि; कतहु ध्वनिक शर्त अर्थपर भारी पड़ैत अछि।

गजल ४५६ : सएह बनलिये

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -एह · रदीफः बनलिये।

पाठ-साक्ष्य : “रौउ-झाँउ बीच वएह बनलिये” ; “लच्छनो तँ बापक जिद्द गुनलकै” ; “मारि मारि मोन सएह बनलिये”।

‘रौउ-झाँउ बीच वएह’ आ ‘बूझि फेर बात सएह’क फेरबदल पहचानक वृत्त बनबैत अछि। बापक जिद्द गुनैत लच्छनक उल्लेख व्यक्तिगत स्वभाव आ परिवारक नकलक सम्बन्ध खोलैत अछि।

‘सएह बनलिये’क आवर्तन बिना परिवर्तनक बदलावक विसंगति पैदा करैत अछि। मुदा मध्यस्थ काजक दृश्य जल्दी-जल्दी बदलैत अछि; कथा-आकृतिकें आत्मसंवाद मानब अधिक युक्तिसंगत, एकमात्र बाह्य घटनाक प्रतिवेदन नहि।

गजल ४५७ : खेरहा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -िक · रदीफ: खेरहा।

पाठ-साक्ष्य : “बूझि सकलौं नै निशाभाग राशिक खेरहा” ; “सूँघि देखलौं मूक भेलौं अकच्छ भऽ भूकिकें” ; “गज्जु कटिहारीक टाटी छऽ फूसिक खेरहा”।

‘निशाभाग राशिक खेरहा’ आ ‘परातीक पाँतिक खेरहा’क प्रारम्भ अस्पष्टता तथा असफल समझक घोषणासँ होइत अछि। अन्तमे ‘कटिहारीक टाटी’क स्थान-छवि अमूर्त बेचैनीकें जीवन-जगतक ठोस वस्तुसँ जोड़ैत अछि।

ध्वन्यात्मक साम्य आ बोलीक अल्पप्रचलित शब्द काव्यकें विशिष्ट स्वर दैत अछि, मुदा पाठककें सन्दर्भविहीन शब्द-समूहक संग एकटा कठिन परिश्रम सेहो करब पड़ैत अछि। ‘खेरहा’ रदीफक बहुअर्थी प्रयोग स्रोत-पाठक सीमाक भीतर विवेचनीय अछि; मनगढन्त निश्चित व्युत्पत्ति उचित नहि।

गजल ४५८ : ढङ बदलब तखनिते

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २३-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -त · रदीफ: ढङ बदलब तखनिते।

पाठ-साक्ष्य : “दिन बीतत बखं घेरत ढङ बदलब तखनिते” ; “की छै एकरामे फुसियाँहीक झठहा फेकैए” ; “बाउ सुधरू नै सैंतत ढङ बदलब तखनिते”।

‘ढङ बदलब तखनिते’ भविष्यक सुधारकें शर्त बना दैत अछि। ‘दुनियाँ बदलब लोक बदलत’क आवर्तन स्वयं आ समाज बीच परस्पर अपेक्षा खोलैत अछि; अन्तिम शेरमा कोन पक्ष स्वतः सुधारबाक उत्तरदायी से प्रश्न उठैत अछि।

‘जे ओ बाजए से ठीक जे हम बाजी से अधला’ आत्मसम्मान आ दोहरा मापदण्डपर तीक्ष्ण कटाक्ष अछि। तथापि रदीफ अति दीर्घ रहबाक कारण छोट विचारक मिसरा बारम्बार एके वाक्यरूपी निचोड़मे समा जाइत अछि, जाहिसँ अलग शेरक स्वायत्तता घटि सकैत अछि।

गजल ४५९ : बाबी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -नू · रदीफः बाबी ।

पाठ-साक्ष्य : “कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बाबी” ; “कननी दूर हैतै बच्चा सभमे” ; “पंख लगा टिकुली अकानू बाबी” ।

‘बाबी’मे नगरिया/बाह्य खिलौनाक नाम बनि स्थानीय परी, दैता, गाम, पानि, अकास आ टिकुलीक कल्पना एकहि संसारमे बसैत अछि । गुलाबी रंगक स्वीकृति आ ‘सात रंग’क माँग संगहि रहबाक कारण बालक एकरूप खिलौना-छविसँ बाहर संभावनासभ बनबैत अछि ।

ई गजल ‘दीवान-ए-विदेह’क किशोर अंशक आरम्भ अछि, आ ‘अकुलाइत सुर’मे साझा रचना होयबाक लेखकक सूचना अछि । वास्तविक मिसरावार एकरूपता मूल ‘अकुलाइत सुर’क Word सँ मिलान शेष अछि; एखन साझा काव्य-विषयकें प्रमाणित पाठसमता नहि मानल गेल ।

गजल ४६० : चान मामा

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः आउ ने ।

पाठ-साक्ष्य : “चान मामा हमर दुआर आउ ने” ; “सात रंगक धनुष अकास चढ़ल” ; “धीरे-धीरे झंकार आउ ने” ।

‘चान मामा हमर दुआर आउ ने’क सम्बोधन बालकक घरकें अकाससँ जोड़ैत अछि । कागजक नाव, पोखरि, निन्न लैत चिड़ै आ सपनामे नाचैत परी—सांध्य-कल्पनाक क्रमानुसार सरकैत छविसभ अछि ।

‘आउ ने’ रदीफ विनती आ लोरीक मिलल स्वर अछि । ‘सात रंगक धनुष’ अनिश्चित जादू नहि, बालमनक विशिष्ट रंगमंच बनबैत अछि । ‘अकुलाइत सुर’क किशोर गजलरूपसँ बादक तुलना आवश्यक; मुदा एहि दीवान-पाठमे रचना स्वयंपूर्ण दृश्य-चक्र बनबैत अछि ।

४४१-४६०क अन्तरकाव्यगत विवेचन

४४१-४५८मे सत्यक संशय, प्रेमक विच्छेद, सामाजिक पाखण्ड आ शब्दक घनत्व अलग-अलग प्रकारँ उपस्थित अछि। मूल रचना ४४८ आ ४४९ आठ-आठ मिसराक, ४५० छह मिसराक अछि; ई ग्रन्थक बहुरूपी आकारक प्रमाण अछि। ४५९-४६० सँ किशोर गजल आरम्भ होइत अछि, जाहिसँ मूल 'अकुलाइत सुर'क संग भविष्यक वास्तविक पाठान्तर-जाँचक आधार बनैत अछि।

गजल ४६१ : सात रंग

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुङ्गी। मात्रा-क्रमः १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -आर · रदीफः देखू ने।
पाठ-साक्ष्य : “फूल-फूलमे बहार देखू ने” ; “भगजोगनी राति दीप जरबैए” ; “खुलल अकासक दुआर देखू ने”।

‘सात रंग’मे फूल, चान, तरेगन आ भगजोगनीक प्रकाश एकहि बहुरंगी दृश्य-संसार बनबैत अछि। ‘फूल-फूलमे बहार देखू ने’क निमन्त्रण प्रकृतिदृश्यक पाठककें दृश्यद्रष्टा बनबैत अछि।

‘देखू ने’ रदीफ बालककें कौतूहलमे सामिल करैत अछि। मुदा रंगक संख्या साते रहबाक व्याख्या कविता नहि करैत; ओ प्रतीकात्मक रंगधनुषक परिचित बोधपर निर्भर अछि। ४५९ ‘बाबी’क सात-रंगक प्रसंगसँ एकटा साझा कल्पनाक्षेत्र भेटैत अछि, स्वयं अलग रचनाक दृश्य-व्यवस्थासहित।

गजल ४६२ : दादीक कथा

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुङ्गी। मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -आर · रदीफः सुनाउ ने।

पाठ-साक्ष्य : “अँचर भरल दुलार सुनाउ ने” ; “नेना निन्नक बाट तकैत बैसल अछि” ; “फेर ओही संसार सुनाउ ने”।

दादीक अँचरमे भरल दुलार आ मनुष्य जेकाँ बजैत चिड़ै लोककथा-परम्पराक मौखिक नाट्य रचैत अछि। नेना निन्नक प्रतीक्षा कथा सुनबाक सामूहिक अनुभूतिकें शरीरक समयसँ जोड़ैत अछि।

‘सुनाउ ने’क बारम्बार विनती सुननिहार बालपात्रक सक्रिय भूमिका अछि। मुदा कहानीक भीतरक घटना पूरा नहि खुलैत; कविता कथाक कथावस्तुक बदला कथा सुनबाक सम्बन्धक विषय पर लिखल गेल अछि।

गजल ४६३ : तरेगन गनी

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २३-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर · रदीफ: कहू ने।

पाठ-साक्ष्य : “परी संग कनी खेल, कतेक तार कहू ने” ; “पवन संग उगल मेघ, गिरत मेह खिलल फूल” ; “सगर रात उगल चान, कतेक तार कहू ने”।

‘तरेगन गनी’क आरम्भमे ताराक गिनती खेल मात्र नहि, अनन्त दुनियाकें बालकक संख्यासँ समझबाक आकांक्षा अछि। चिड़ै, पवन, मेघ आ फूलक बिम्ब लगातार उठैत अछि।

शेरसभक अनेक छवि ४६४ ‘बाटक खेल’ आ ४६५ ‘चिड़ैक गीत’मे फेर आवैत अछि। विषयगत निकटताक संग ‘सगर रात उगल चान’क काल-रचना उल्लेखनीय अछि, मुदा दृश्य-बदलावक गति बेशी रहबाक कारण एकटा केन्द्रित भाव कमजोर होइत अछि।

गजल ४६४ : बाटक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आट · रदीफ: चलै छी।

पाठ-साक्ष्य : “परी संग कनी खेल, कनी बाट चलै छी” ; “गगन बीच उगल चान, कतेक तार रहत साथ” ; “हमर गाम हँसल फूल, कनी बाट चलै छी”।

परीक संग खेलैत ‘कनी बाट चलै छी’ बाल-कल्पनाक रस्ताकें परिकथासँ गामक परिचित स्थान धरि लऽ अबैत अछि। पवन, फूल, चान आ गामक हँसी एकहि उत्सवक बहुवचन छवि अछि।

४६३क ‘परी संग कनी खेल’क निकट पुनरावृत्ति इहाँ आरम्भे उपस्थित अछि। ‘बाट चलै छी’ रदीफक अपन गति अवश्य अछि, मुदा मध्यवर्ती शेरसभक शब्दसंसार बहुत समान होयबाक कारण नव काव्य-केन्द्र पहचानब कठिन अछि।

गजल ४६५ : चिड़ैक गीत

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ीत · रदीफः गबै छी ।

पाठ-साक्ष्य : “चिड़ै संग उगल भोर, जतन गीत गबै छी” ; “नदी नीर चलत नाव, कनी खेल रहत साथ” ; “परी संग हमर मीत, जतन गीत गबै छी” ।

चिड़ैक गीतक संग भोर उगबाक रूपक श्रवण आ समयकें मिलबैत अछि । स्कूल, नदी, नाव आ परीक संग मीतता एकहि बालकक बाह्य आ भीतरी जगत बनबैत अछि ।

४६३-४६४क पवन, फूल, परी आ गामक बिम्ब इहो पुनः उपयोग करैत अछि । रदीफ ‘जतन गीत गबै छी’ गीतक स्वरलयक घोषणा अछि, मुदा जतन ककर, कोन अभ्यासमे प्रकट भेल—ई ठोस पक्ष शेष रहैत अछि ।

गजल ४६६ : हँसीक आँगन

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः हँसू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “फूल खिलल अछि बहार, हँसू ने” ; “हारि गेल खेलमे तँ नोर किएक” ; “सपना बनल उपहार, हँसू ने” ।

‘हँसीक आँगन’मे कागजक मुकुट पहिरब आ खेलमे हारलाक बाद नोर नहि बहाबयक दृश्य निज खेलक सत्ता आ भावनात्मक सन्तुलनक विचार जोड़ैत अछि ।

‘हँसू ने’क विनती हँसीक स्वाभाविकता आ अनुशासनक आग्रह बीच रहैत अछि । हारल बालकक दुःखकें मान्यता देल बिना हँसीक आग्रह अत्यधिक निर्देशात्मक बनि सकैत अछि; खेलक अभिनयक दृश्य गजलक अधिक सबल अंश अछि ।

गजल ४६७ : कागजक नाव

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः आउ खेली ।

पाठ-साक्ष्य : “मेह खोललक पानिक दुआर, आउ खेली” ; “इन्द्रधनुष सात रंगक सीढ़ी टाँगि देलक” ; “आब अन्तिम एक बार, आउ खेली” ।

मेह खोललक पानिक दुआर आ कागजक नावक यात्रा बालकक हस्तकौशलकें प्रकृतिक घटनासँ जोड़ैत अछि । मेंढकक ध्वनि आ इन्द्रधनुषक सात-रंगक सीढ़ी शब्दचित्रमे ध्वनि आ रंग दुनू दैत अछि ।

‘आउ खेली’क आवर्तन बालमनक खेल समाप्त नहि होयबाक इच्छा अछि । ४७० ‘मेहक खेल’क आरम्भमेसँ अत्यन्त निकट दृश्य भेटैत अछि; अन्तर डिटेल आ सम्बोधनमे अछि, तँ रचना-दोहरेबाक सीमा जाँच आवश्यक ।

गजल ४६८ : दादीक चान

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आर · रदीफ: दादी कहैए ।

पाठ-साक्ष्य : “चानक ऊपर एक संसार, दादी कहैए” ; “सपना कोनो बजारमे बिकैत नहि अछि” ; “मोनमे रहत संसार, दादी कहैए” ।

‘दादीक चान’मे चानक ऊपर एकटा संसार कल्पित कएल गेल अछि; दादीक कण्ठ एहि संसारक प्रामाणिक कथाकार अछि । ‘सपना कोनो बजारमे बिकैत नहि अछि’क पाँति बाल-कल्पनाकें बाजारक वस्तुसँ अलग करैत अछि ।

सामाजिक अर्थ एतय बिना लम्बा उपदेशक एक पाँतिमे खुलैत अछि । मुदा कहानीक सारा अस्तित्व दादीक कथनक रूपमे रहैत अछि; भीतरक घटना अस्पष्ट रहैत अछि, जे लोरीक सौन्दर्य आ कथात्मक सीमाक दुनू रूपेँ पढ़ल जा सकैत ।

गजल ४६९ : पतंगक पाँखि

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १५-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आर · रदीफ: उड़ि चलू ।

पाठ-साक्ष्य : “नील अकासक ओहि पार, उड़ि चलू” ; “चिड़ै सभ पाँखि पसारि बाट देखबैत” ; “एखन एक बेर आर, उड़ि चलू” ।

पतंग डोर ढील करबाक आग्रह करैत अछि; उडानक स्वतंत्रता आ धरतीक नियन्त्रणक सह-उपस्थिति इहँ बालकक स्वायत्तताक कोमल रूपक अछि। चिड़ैसभ पाँखि पसारि बाट देखबैत अछि।

‘उड़ि चलू’क रदीफ उर्ध्वगत आशा लऽ अबैत अछि, मुदा डोरक तनाव गजलक असल नाटकीय बिन्दु अछि। एहि सम्बन्धक विस्तार होइ तँ कविता स्वतन्त्र निर्णयक अधिक गहिर अर्थ ग्रहण करि सकैत छल।

गजल ४७० : मेहक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः —आर · रदीफः दौड़ू ने।

पाठ-साक्ष्य : “मेह खेललक पानिक दुआर, दौड़ू ने” ; “पातक टोपी माथ पर राखि हँसैत” ; “कहब—बस एक बेर आर, दौड़ू ने”।

मेह, कागजक नाव आ पातक टोपी स्थानीय बालखेलक वस्तु-संसार अछि। बाहरी मेह बाधा नहि, दुआर खोलयवाला क्रिया बनैत अछि; उन्मुक्त बालक एकर आमन्त्रण स्वीकार करैत अछि।

४६७क आरम्भिक ‘मेह खेललक पानिक दुआर’ एतय शब्दशः दोहरायल अछि। ‘दौड़ू ने’क गति आ पातक टोपी नव आँगन-दृश्य जोड़ैत अछि, मुदा मूल प्रस्तावना एके रहबाक आलोचनात्मक सीमा स्पष्ट अछि।

गजल ४७१ : निन्नक कथा

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः —आर · रदीफः कथा सुनू।

पाठ-साक्ष्य : “आँखि मूनू, खुलत संसार, कथा सुनू” ; “दादीक अँचर रातिक बादल जकाँ अछि” ; “मोनमे बाँचत संसार, कथा सुनू”।

‘आँखि मूनू, खुलत संसार’क विरोधाभास श्रव्य कथा आ दृश्य कल्पनाक अनूठ सम्बन्ध अछि। दादीक अँचर रातिक बादल बनैत अछि, जाहिमे कण्ठक सुरक्षा आ निन्नक पारगमन एकसंग रहैत अछि।

‘दादीक कथा’ (४६२)क विनती आ एतुक निन्नक आग्रह निकट अछि, मुदा ४७१मे आँखि मुनबाक क्षण दृश्य-परिवर्तनक ठोस केन्द्र बनैत अछि। कथित परीकथाक भीतरक कथा नहि, सुनबाक परिवेश असल विषय अछि।

गजल ४७२ : अपन सपना

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -आह · रदीफः आगाँ चलू।

पाठ-साक्ष्य : “अपन चुनल राह, आगाँ चलू” ; “पोथीक बाहर दुनिया पैघ अछि” ; “फेर चुनू नव राह, आगाँ चलू”।

‘अपन सपना’मे ‘लोक बहुत कहत—ई बनू, ओ बनू’ समाजक निर्धारणपर युवा पाठकक स्वतन्त्र निर्णयकै रखैत अछि। पोथीक बाहर दुनियाकै पैघ कहब पढ़बाक निषेध नहि, अनुभवक विस्तारक आग्रह अछि।

‘आगाँ चलू’क रदीफ उपदेशात्मक लयक निकट अछि। मुदा व्यक्तिगत राह चुनबाक ठोस दबाव देल गेल अछि; ई ४५९-४७१क केवल बाल-कल्पना सँ स्पष्ट किशोर नागरिकतामे प्रवेश अछि।

गजल ४७३ : खेलक मैदान

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -आर · रदीफः खेलू ने।

पाठ-साक्ष्य : “हारि गेलहुँ तँ की हार, खेलू ने” ; “दौड़मे सभसँ पहिल होएब जरूरी नहि” ; “हँसि कऽ फेर एक बार, खेलू ने”।

हारलाक बाद खेल छोड़बाक बदला मीतक जीतपर ताली देब सामूहिक प्रतिस्पर्धाक नव नैतिकता अछि। दौड़मे पहिल होएब जरूरी नहि—ई पाँति सफलता-संस्कृतिक दबाव पर चोट करैत अछि।

‘खेलू ने’ रदीफ खेलक पुनरारम्भक वास्तविक निमन्त्रण अछि। मुदा हारक भावात्मक पीडा कतेक देर टिकैत अछि, एकर जटिलता अल्प अछि; संक्षिप्तता बालपाठक लेल लाभो अछि आ मनोवैज्ञानिक सीमाओ।

गजल ४७४ : पोथीक पाँखि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आर · रदीफः पढ़ू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “पन्ना-पन्नामे संसार, पढ़ू ने” ; “अंक लेल मात्र पढ़ब पढ़ाइ नहि होइ” ; “तखने खुलत संसार, पढ़ू ने” ।

पोथीक पन्ना-पन्नामे दुनियाक विस्तार ‘पोथीक पाँखि’क मूल रूपक अछि । कथा अपन गामसँ बाहर लऽ जाइत अछि, आ अंक लेल मात्र पढ़नाइ शिक्षाक उद्देश्य नहि—ई दुनू मिसरा पढ़बाक स्वतंत्र अर्थ निर्धारित करैत अछि ।

‘पढ़ू ने’ रदीफ आमन्त्रण छी, अनुशासनक डाँट नहि । मुदा साहित्यक अन्यायपूर्ण पाठ्यक्रम वा पढ़बाक कठिनाइक उदाहरण नहि आएल; पोथीक सौन्दर्यपर सामान्य भरोस अनकहल रहैत अछि ।

गजल ४७५ : परीक्षाक बिहान

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः डरू नहि ।

पाठ-साक्ष्य : “पोथीक एतेक भार, डरू नहि” ; “प्रश्न कठिन हो तँ दोसर दिस बहू” ; “सीखि कऽ बहू हर बार, डरू नहि” ।

परीक्षाक बिहानमे पोथीक भार आ डरक अन्तर ‘डरू नहि’क रदीफँ सँ संबोधित होइत अछि । कठिन प्रश्न छोड़ि दोसर प्रश्न दिस बहूबाक सलाह विशिष्ट परीक्षा-परिस्थितिसँ उत्पन्न अछि ।

ई व्यावहारिक सलाह कविता-उपदेशक सीमा पर अछि, मुदा ‘शान्त मोनसँ याद करू’ देहगत मानसिक दबाव बुझैत अछि । शेरसभमे परीक्षा-भोरक दृश्यात्मक वातावरण सीमित; विचार-विधि प्रधान अछि ।

गजल ४७६ : मीतक संग

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग · रदीफः संग चलू ।

पाठ-साक्ष्य : “मीत अछि तँ हँसीक संग चलू” ; “मत अलग हो तँ मीतक नेह नहि टूटए” ; “एहन साँचक ढंग संग चलू” ।

मीतक जीत-हारकें अपन पराजय/विजय नहि मानब मित्रताक आत्मसम्मानक शर्त अछि । अलग मत होइतो नेह नहि टूटबाक प्रश्न किशोर सम्बन्धमे मतभेदक स्वीकृति अछि ।

‘संग चलू’क रदीफ सहयात्राकें प्रतिस्पर्धामे बदलय सँ रोकैत अछि । मुदा एकहि कवितामे कतेक सलाहक संकुचन अछि; वास्तविक संवाद अथवा एकटा विवादक छोट दृश्य एहि अनुभवकें अधिक सघन बना सकैत ।

गजल ४७७ : पर्दासँ बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ार · रदीफ: देखू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “पर्दासँ बाहर संसार देखू ने” ; “मीतक फोटोपर हँसी आसान बहुत अछि” ; “धरती-अकासक संसार देखू ने” ।

पर्दाक भीतर लगातार अँगुरी चलब, आँखि थाकब आ मीतक फोटोपर सहज हँसी —डिजिटल व्यवहारक दू अलग प्रभाव अछि । ‘पर्दासँ बाहर संसार’क आह्वान केवल तकनीक-विरोध नहि, प्रत्यक्ष अनुभवक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि ।

मुदा जालजगतमे बनैत सार्थक मीतता सम्भव अछि, ई जटिलता पाठमे नहि खोलल गेल; द्विभाजन शिक्षाप्रधान अछि । ४८०क ‘जालजगतसँ बाहर’क संग एहि रचनाक वास्तविक पाठ-साम्य महत्वपूर्ण अछि ।

गजल ४७८ : अपन राह

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ह · रदीफ: अपन चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “लोक कहत बहुत राह, अपन चुनू” ; “ज्ञान पोथीक भीतर बन्द नहि रहैए” ; “फेर नबका राह, अपन चुनू” ।

गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनितो अपन राह चुनब स्वतन्त्रताक संग विवेकक सम्बन्ध रखैत अछि। ज्ञान पोथीक भीतर बन्द नहि—ई अनुभवकें शिक्षा-साधन स्वीकार करैत अछि।

४७२क 'अपन सपना'क आत्मनिर्णयक विचार पुनः आवैत अछि, मुदा एतय गुरु-मीतक सल्लाहक सुनब सकारात्मक भूमिका ग्रहण करैत अछि। अतः दू गजलमे फरक स्वतन्त्रताक एकांतिक बनाम संवादात्मक स्वर अछि।

गजल ४७१ : तुलना नहि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः तुलना नहि।

पाठ-साक्ष्य : “दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि” ; “जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि” ; “आत्ममोलक बाजार—तुलना नहि”।

‘दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि’ किशोर आत्ममूल्यांकनकें सामाजिक प्रतियोगिताक मापकसँ अलग करैत अछि। अलग-अलग गति सँ चलैत बाटक बिम्ब दुनू जीवनपथक तुलनाक असमानता बतबैत अछि।

‘जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि’ तेसर अर्थपाट जोड़ैत अछिः पर्दापर प्रदर्शन आ वास्तविक अस्तित्वक भेद। मुदा रदीफ ‘तुलना नहि’ एकटा निषेधक पुनरुक्ति बनि कखनो संवादक गुंजाइश घटबैत अछि।

गजल ४८० : जालजगतसँ बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः बाहर चलू।

पाठ-साक्ष्य : “जालजगतसँ संसार बाहर चलू” ; “मीतक चिन्ह केवल सन्देशमे नहि रहैए” ; “धरती-अकासक संसार, बाहर चलू”।

‘जालजगतसँ बाहर चलू’मे अँगुरी, चित्र आ थाकल आँखि आधुनिक दिनक सचित्र रूप अछि। मीतक चिन्ह केवल सन्देशमे नहि रहब प्रत्यक्ष साक्षात्कारक मानवीय आयाम खोलैत अछि।

४७७ ‘पर्दासँ बाहर’क संग अत्यन्त निकट दोहराव—थाकल आँखि, प्रत्यक्ष धरती-अकास आ सन्देशक पार सम्बन्ध—एहि गजलक मौलिक अन्तरक सीमा

अच्छि। अनेको माध्यमक पूर्ण निषेध नहि, समयक सन्तुलनक व्याख्या पाठसँ सम्भव अच्छि।

गजल ४६१-४८० : किशोर काव्यक आवर्तन आ रूपान्तरण

४६१-४७१क चिड़ै, परी, तरेगन, दादी आ कागजक नावक स्वप्न-आयाम ४७२क आत्मनिर्णयसँ नव पाठकवर्गमे प्रवेश करैत अच्छि। ४६३-४६५ तथा ४६७/४७०मे शब्द-संसारक निकट दोहराव साहित्यिक निखारक प्रश्न अच्छि। ४७७/४८०मे पर्दासँ बाहर प्रत्यक्ष जीवनक आग्रह एकहि विषयक पुनरावृत्ति अच्छि। किशोर कविता कहलाक कारण ई शिल्पगत सीमासभ नजरअन्दाज नहि कएल गेल; साझा 'अकुलाइत सुर'क मूल DOCX सँ बादक मिसरावार मिलान अनिवार्य अच्छि।

गजल ४८१ : विषय अपन

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुंजी। मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ह · रदीफः सोचि चुनू।

पाठ-साक्ष्य : “सभ देखाओत राह, सोचि चुनू” ; “ज्ञानक क्षेत्र एक-दूटा नाम धरि नहि” ; “फेर अपन राह, सोचि चुनू”।

‘विषय अपन’मे ‘अंक जरूरी अच्छि, मुदा रुचि सेहो जरूरी’ विद्यालयक मानदण्ड आ निज अभिरुचिक तनावक स्पष्ट बोध अच्छि। बाट बदलि सकब असफलता नहि—ई विकल्पक नैतिक स्वीकृति दैत अच्छि।

४७२ ‘अपन सपना’ आ ४७८ ‘अपन राह’क मूल आत्मनिर्णय-सूत्र एतय फेर आयल अच्छि; नव पक्ष अंक आ रुचिक सीधा तुलनाक अच्छि। शेरक स्वतंत्र काव्यचित्र अपेक्षाकृत कम, सलाह प्रधान।

गजल ४८२ : लाइकसँ बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुंजी। मात्रा-क्रमः १५-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ोल · रदीफः याद रखू।

पाठ-साक्ष्य : “लाइक नहि कहै पूरा मोल, याद रखू” ; “टिप्पणी एक दिन मनकै कने चोट दऽ सकैए” ; “जीवनक असली मोल, याद रखू”।

‘लाइक नहि कहै पूरा मोल’ डिजिटल स्वीकृतिकेँ आत्म-मूल्यक अन्तिम कसौटी बनाबयक विरुद्ध अछि। बाह्य रूपसँ अपन रूप तय नहि करबाक आग्रह आ स्क्रीन बाहर मीत-गाछ-खेलक सूची प्रत्यक्ष जीवनकेँ जगह दैत अछि।

४७९ ‘तुलना नहि’ आ ४८० ‘जालजगतसँ बाहर’क निकट भाव पुनरावृत्त अछि। ‘याद रखू’ रदीफ स्मरणक उपदेशक लय दैत अछि, जे काव्यक नाटकीयता कम कऽ सकैत अछि।

गजल ४८३ : बात फरिछाउ

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त · रदीफः बात फरिछाउ।

पाठ-साक्ष्य : “मीत रूसल तँ बात, बात फरिछाउ” ; “क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात, बात फरिछाउ”।

रूसल मीतक विवादमे दोसरा सँ सुनल बातपर तुरन्त निर्णय नहि करबाक आग्रह अफवाह आ प्रत्यक्ष संवादक भेद अछि। ‘बात फरिछाउ’ रदीफ झगडा बढ़य सँ रोकबाक साझा क्रिया बनैत अछि।

‘साँच मीत’ मतभेद सहेत—ई मूल तर्क पर्याप्त सबल अछि, मुदा विवादक छोट दृश्य अथवा दोसर पक्षक स्वर अनुपस्थित अछि। ४८६ ‘अपन बात’क संग करीबी काव्य-सम्बन्धक परीक्षण आवश्यक।

गजल ४८४ : फेर प्रयास

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -स · रदीफः फेर करू।

पाठ-साक्ष्य : “हारि गेल प्रयास, फेर करू” ; “जतऽ चूकलहुँ ओतऽ कारण बुझि लिअ” ; “अपन नब इतिहास, फेर करू”।

हारक बाद ‘गलती देखू, मुदा अपना पर रोष नहि’ अपन त्रुटिक स्वीकार आ आत्मदण्डक अन्तर बनबैत अछि। वर्तमान असफलता भविष्यक पूर्ण परिचय नहि—ई समयक दोसर अर्थ प्रस्तुत करैत अछि।

‘फेर करू’ प्रेरक आवर्तन अछि, मुदा शेरसभ घटनासँ बेसी कथनात्मक सलाहपर केन्द्रित अछि। ४९८ ‘हारक बाद’मे एहि विषयक अनुकूल पुनरुक्ति होएबाक सम्भावना पाठमे स्वतः देखाइत अछि।

गजल ४८५ : अपन रूप

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः २०-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ार · रदीफः मोन छोट नहि करू।

पाठ-साक्ष्य : “आरसिमे देखल आकार, मोन छोट नहि करू” ; “देह बदलत, उमेर बदलत, चेहरा बदलत” ; “बाहरक माप हजार, मोन छोट नहि करू”।

आरसिमे अपन आकार देखबाक अनुभवक संग समाजक सहज टिप्पणीक चोट राखल गेल अछि। बाहरी मापक हजार होइतो निज गुण आ हँसीक पहचान कएल जा सकैत अछि—ई गजल किशोर देहबोधक विषय उठबैत अछि।

‘मोन छोट नहि करू’क निषेध रचनाकें स्पष्ट आत्मसम्मानक पाठ बनबैत अछि। ‘तुलना नहि’ (४७९) सँ सम्बन्ध प्रखर, मुदा ऐनामे देखबाक निजी क्षणक अतिरिक्त रूपक एतुक विशिष्ट योगदान अछि।

गजल ४८६ : अपन बात

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त · रदीफः खुलि कहू।

पाठ-साक्ष्य : “जे अखरैए ओ बात, खुलि कहू” ; “ना कहबो अपन सीमा बचबैत अछि” ; “मनमे नहि राखू बात, खुलि कहू”।

‘जे अखरैए ओ बात, खुलि कहू’क प्रतिज्ञा सन्देशमे अर्थ बदलि जाएबाक जोखिमसँ समर्थित अछि। सीधा बात करब आ मतभेद सहेब मीतताक दू अलग अभ्यास मानल गेल अछि।

४८३क सँग एके समाधानात्मक क्षेत्र अछि। रदीफ ‘खुलि कहू’ विषयानुकूल अछि, मुदा काव्य-वक्ता स्वयं कोन संकोच पार कएलक ओकर नाटकीय क्षण नहि खुलैत अछि।

गजल ४८७ : अपन गति

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः रहय अपन-अपन ।

पाठ-साक्ष्य : “सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन” ; “ज्ञानक दुनिया एक-दू विषय धरि नहि” ; “चुनल गेल राह रहय अपन-अपन” ।

‘सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन’मे जीवनक गति प्रतियोगिताक मानकसँ अलग कएल गेल अछि । गुरु-मीतक सल्लाहक सम्मान करितो निर्णय निज रखबाक आग्रह एकटा व्यावहारिक नैतिक सन्तुलन अछि ।

४७८ ‘अपन राह’मे लगभग समान सूत्र पहिने अछि । एतय दौड़क असमानता देखेबाक रूपक नया केन्द्र बनबैत अछि, मुदा शेरक स्वतन्त्र दृश्यात्मक विस्तार सीमित ।

गजल ४८८ : ना कहू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः स्पष्ट कहू ।

पाठ-साक्ष्य : “मन नहि मानै ओ बात, स्पष्ट कहू” ; “ना कहबो अपन सीमा बचबैत अछि” ; “मनमे नहि राखू बात, स्पष्ट कहू” ।

‘ना कहू’ शीर्षक एतय मन नहि मानबाक स्पष्ट वाणी पर केन्द्रित अछि । संदेशक अर्थ बिगड़बाक आशङ्का आ साँच मीतक मतभेद सहन करबाक माप एकसाथ रखल गेल ।

४८६क ‘खुलि कहू’कें ‘स्पष्ट कहू’ बनाओल गेल अछि; कतिपय मिसराक विचार-क्रम बहुत निकट अछि । एहि समानता कें नब शीर्षकक कारण भिन्न समस्या मानल नहि जा सकैत ।

गजल ४८९ : निन्न बचाउ

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः निन्न बचाउ ।

पाठ-साक्ष्य : “स्त्रीनसँ बाहरो अछि संसार, निन्न बचाउ” ; “फोन कने दूर राखि आँखि मूनि लिअ” ; “सपनाक अपन संसार, निन्न बचाउ” ।

निन्न बचाबयक आग्रहमे स्त्रीन, पढाइ आ भोरक साफ मनक सम्बन्ध व्यावहारिक किशोर दिनचर्याक विषय अछि । थाकल मस्तिष्कक सीखबाक सीमा मन-देहक समन्वय खोलैत अछि ।

कविता ‘निन्न बचाउ’क संदेशक पक्षमे स्पष्ट अछि, मुदा तकनीकक उपयोगक जटिलता कम देखबैत अछि । ४९५ ‘निन्नक समय’क संग एतुक विचार-आवर्तनक परीक्षण आवश्यक ।

गजल ४९० : समयक हिस्सा

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः समय बाँटू ।

पाठ-साक्ष्य : “पढाइ लेल कने काम, समय बाँटू” ; “बैसल-बैसल देह सेहो बोझिल भऽ जाइत” ; “एक्के नहि काम, समय बाँटू” ।

‘समय बाँटू’ गजलक केन्द्र समयक चारि दावेदार—मीत, घर, पोथी आ सपना—कै समान जीवनगत वैधता देनाइ अछि । ‘लक्ष्य पैघ हो, मुदा साँस थकए नहि’ भावनात्मक स्थायित्व आ योजना बीच सम्बन्ध देखबैत अछि ।

‘एक्के नहि काम’ नीति-सूत्रक रूपमे उपयुक्त अछि, मुदा वास्तविक दिनक घटनाक स्थान कम । किशोर स्वशासनक पाठक रूपेँ उपयोगिता ओकर काव्यगत बहुअर्थितासँ अधिक प्रखर अछि ।

गजल ४९१ : बाट चुनैत

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः घबराउ नहि ।

पाठ-साक्ष्य : “एक्के नहि अछि राह, घबराउ नहि” ; “करियरक दुनिया दू-चार नाम धरि नहि” ; “फेर चुनू नव राह, घबराउ नहि” ।

मीतसभ अलग दिशा चुनि गेलापर अकेले अपन राह चुनबाक भय एहि गजलक विशिष्ट परिस्थिति अछि। बाट बदललासँ सपना छोड नहि होयत—ई रुचि-विकासक स्वीकृति अछि।

४८१ आ ४७८क निर्णय-विमर्श एतय पुनरुक्त अछि; नव योगदान मीतक समूहसँ अलग होएबाक सामाजिक दबाव अछि। ‘घबराउ नहि’क रदीफ आश्वासन बनैत अछि, मुदा भावक व्यक्तिगत कथा अनकहल।

गजल ४९२ : ना कहू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः ना कहू।

पाठ-साक्ष्य : “मोनपर जँ बेसी भार, ना कहू” ; “संग रहब नेह, दबाव मानब नेह नहि” ; “जतऽ घटए सम्मान, ना कहू”।

एहि ‘ना कहू’मे मजाकक नामपर बेर-बेर चोट आ सम्मान घटबाक सन्दर्भ स्पष्ट अछि। पूर्वक ‘ना कहू’ (४८८) सँ इहाँ निज सीमा आ सामाजिक दबावक अधिक निश्चित उदाहरण भेटैत अछि।

‘ना कहब दुश्मनी नहि’ विचारक महत्त्वपूर्ण सीमा-निर्धारण अछि। मुदा कविता छेड़छाड़, छल वा ककरो दबावक एकटा वास्तविक दृश्य विस्तार नहि दैत; मुख्यतः सिद्धान्तात्मक सलाह।

गजल ४९३ : अपन गति

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः अपन गति।

पाठ-साक्ष्य : “दोसरासँ भेल जँ देर, अपन गति” ; “कखनो बाट धूमिल होए, मोन नहि हारू” ; “फेर चुनू एक बेर, अपन गति”।

‘अंकक घेरा जीवनक पूरा सीमा नहि’ परिणामक संख्याकें आत्म-मूल्यसँ अलग करैत अछि। धीरे चलब हार नहि—विषम गति के मान्यता मिलैत अछि।

४८७ 'अपन गति' एके शीर्षक अछि। मुदा एतय परिणामक अंकक प्रसङ्ग प्रमुख भेलासँ तुलना सामाजिक कक्षा-स्थिति दिस मुडैत अछि। एकहि शीर्षकक दू स्वतंत्र समीक्षा उचित, तथापि पुनरावृत्तिक स्पष्ट अभिलेख आवश्यक।

गजल ४९४ : ना कहू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: ना कहू।

पाठ-साक्ष्य : “जे घटाबए अपन मान, ना कहू” ; “दबावमे निर्णय अपन नहि छोड़ू कखनो” ; “नेह रखि सम्मान, ना कहू”।

मजाकक नामपर ककरो चोट पहुँचाबयकँ अस्वीकार करब सीमाक नैतिकता अछि। ‘साँच मीत ना सुनि सेहो संग रहैत अछि’ मित्रताक परीक्षा स्पष्ट परिभाषित करैत अछि।

४९२ आ ४८८ सहित ‘ना कहू’क तेसर प्रविष्टि अछि। प्रतिरोधक विषयमे किछु सूक्ष्म परिवर्तन अछैत, लगातार एके रदीफ आ निषेध-स्वर अलग रचनाक मौलिकता पर प्रश्न उठबैत अछि।

गजल ४९५ : निन्नक समय

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ेर · रदीफ: एखन सुतू।

पाठ-साक्ष्य : “बहुत भेल ई शोर, एखन सुतू” ; “मोनमे उठैत प्रश्न सभ काल्हियो रहत” ; “बन्द करू ई शोर, एखन सुतू”।

बहुत शोरक बाद ‘एखन सुतू’ दिनक गति रोकयक साहस दैत अछि। काल्ह पढ़ब-खेलब-मीतसँ बातक सूची विश्रामकँ आलस्य नहि, अगिला जीवन-चक्रक आवश्यक भाग मानैत अछि।

४८९ ‘निन्न बचाउ’क विषय फेर आयल अछि; ४९५क विशिष्टता सोझाँ सम्बोधन ‘एखन सुतू’ आ शोरक तत्काल बन्द होएबाक स्थिति अछि। मुदा स्वच्छन्द लोरीक बदला ई व्यवहारिक आदेशक नजदीक।

गजल ४९६ : प्रश्न पूछू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः प्रश्न पूछू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू” ; “गुरु सिखबैत छथि, मुदा सोचब अहाँक काज” ; “खुलि अपन बात, प्रश्न पूछू” ।

‘जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू’ डरक विरोधी ज्ञानमीमांसा अछि । ककरो वचनसँ चोट लागला पर प्रश्न करबाक आग्रह केवल पाठशाला नहि, पारस्परिक सम्मानक क्षेत्र धरि पहुँचैत अछि ।

भिन्न परिस्थिति सभ एके प्रश्न-रदीफक भीतर आबैत अछि । शिक्षा-व्यवहारक दृष्टिसँ उपयोगी, मुदा ठोस गुरु-शिष्य संवाद अथवा संवाद-विघटनक दृश्य काव्यात्मक सघनता बढ़ा सकैत छल ।

गजल ४९७ : मीत चुनू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग · रदीफः बुझि चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “के रहत दुखमे संग, बुझि चुनू” ; “मतभेद हो तऽ बातक डोर नहि टूटए” ; “साँच मीतक संग, बुझि चुनू” ।

साँच मीत दुखक बेर संग रहैत अछि; सपना छोड़ कहि हँसब वाला साथी एकर विपरीत अछि । गलत राह रोकबाक साहसकें मित्रताक पक्षमे रखब सम्बन्धक अंधसमर्थन सँ अलग अछि ।

‘बुझि चुनू’ स्वयं व्यक्तिक मित्र-चयनक नैतिक जिम्मेदारी दैत अछि । मुदा मीतक छवि केवल सही/गलत प्रतिक्रियाक सूचीसँ बनैत अछि, जटिल व्यक्तित्वसँ नहि ।

गजल ४९८ : हारक बाद

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः फेर उठू ।

पाठ-साक्ष्य : “आइ भेटल जँ हार, फेर उठू” ; “बाट कठिन हो, गति कने धीमी भऽ जाए” ; “लेने नबका विचार, फेर उठू” ।

‘आइ भेटल जँ हार, फेर उठू’ असफलताक अवस्थाकेँ स्थायी परिचय नहि मानैत अछि । बन्द दुआर आ नब विचारक बिम्ब सामाजिक तथा मानसिक दूनू राह खुलबाक सम्भावना दैत अछि ।

४८४क ‘फेर प्रयास’क संग मूल तर्क निकट अछि । ४९८मे बन्द दुआरक दृश्य अपेक्षाकृत ठोस अछि, मुदा शेर-समूहमे आत्मविमर्शक बदला प्रेरक कथन प्रधान ।

गजल ४९९ : परीक्षाक बाद

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-तलय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: छोडि दिअ ।

पाठ-साक्ष्य : “परीक्षाक एतेक भार, छोडि दिअ” ; “जे पढलहुँ से अनुभव बनि संग रहत” ; “आइक एहन हार, छोडि दिअ” ।

परीक्षाक भार छोडबाक आग्रह अकस्मात् शिक्षा छोडबाक नहि, एकल परिणामकेँ जीवनक समाप्ति नहि मानबाक अछि । ‘एक दुआर नहि खुलल तँ दुनिया समाप्त नहि’क रूपक अवसरक बहुलता चिन्हित करैत अछि ।

४७५ ‘परीक्षाक बिहान’क आरम्भिक दबावक समापन एतय देखाइत अछि । मुदा ‘हार’ कहल परिणामक वास्तविक परिस्थिति नहि देखाओल गेल; जीवन-विवेकक सामान्य सूत्र प्रभावक सीमा बनैत अछि ।

गजल ५०० : अपन विषय

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-तलय अनुसार । काफिया: -ह · रदीफ: बुझि चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “सभ देखाओत अलग राह, बुझि चुनू” ; “ज्ञानक दुनिया दू-चारि पेशा धरि नहि” ; “फेर खोजू अपन राह, बुझि चुनू” ।

‘अपन विषय’क शीर्षक चयनक विशिष्ट अकादमिक सन्दर्भ दैत अछि । गुरु-बापक बात ध्यानसँ सुनि अपना रुचिक राह चुनबाक अवसर व्यक्तिगत निर्णय आ पीढ़ीगत सल्लाहक सन्तुलन अछि ।

४८१ 'विषय अपन' मे 'सभ देखाओत राह' आ 'बाट बदलि सकैत छी' समान विचार अछि। शीर्षकक शब्दक्रम बदललासँ काव्य-समस्या स्वतः नव नहि होइत; मुख्य निखार सलाहकँ एकटा व्यक्त अनुभवमे बदलबाक सम्भावनामे अछि।

गजल ४८१-५०० : किशोर स्वायत्तता आ आवर्ती उपदेशक सीमा

एहि रचनासभमे 'विषय अपन' आ 'अपन विषय' (४८१/५००), 'अपन गति' (४८७/४९३), 'ना कहू' (४८८/४९२/४९४), 'निन्न बचाउ' आ 'निन्नक समय' (४८९/४९५)क निकट पुनरावर्तन असाधारण अछि। विषयगत सन्देश महत्त्वपूर्ण होएतो नव गजल कहल जाएबाक लेल मात्र नव क्रमाङ्क पर्याप्त नहि; कोन गजल अलग परिस्थिति, बोली, दृश्य वा नैतिक अन्तर प्रस्तुत करैत अछि, सेहो देखबाक अछि।

गजल ५०१ : अपन निर्णय

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: अपन रहू।

पाठ-साक्ष्य : “मीतक बीचो मान अपन रहू” ; “ककरो हँसी लेल अपना कँ चोट नहि दिअ” ; “भीड़मे इंसान अपन रहू”।

भीड़मे अपन मान रखबाक आग्रह 'ना' कहबाक सामाजिक जोखिमक प्रसंग उठबैत अछि। 'संग चलू, मुदा बाटक बोध नहि बिसरू' मित्रताक संग स्वतंत्र विवेकक सम्बन्ध दैत अछि।

४९२ आ ४९४क अस्वीकार-विमर्श एतय अपन निर्णयक नाम सँ लौटैत अछि। रचनाक शक्तिशाली केन्द्र सामूहिकता आ आत्मसम्मानक अन्तर अछि, मुदा घटना-विशेषक अभावमे कथनात्मकता बेसी।

गजल ५०२ : अपन ताल

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: अपन ताल।

पाठ-साक्ष्य : “दोसरासँ भेल जँ देर—अपन ताल” ; “बाट कखनो धूमिल होए, मन नहि हारू” ; “फेर चुनू एक बेर—अपन ताल” ।

‘अपन ताल’मे दोसरा सँ देर भेला परो अपन गतिसँ आगाँ बढ़बाक आग्रह अछि । अंकक जीवनक सीमा बनाबयक विरोध शैक्षिक प्रतिस्पर्धाक सामाजिक पीड़ाकें सम्बोधित करैत अछि ।

४९३ ‘अपन गति’क ‘अंकक घेरा’ आ ‘धीरे चलब हार नहि’क सूत्र लगभग एके अर्थमे पुनः आबि रहल अछि । तालक संगीतात्मक संकेतक स्वतंत्र विकास होइत तँ शीर्षकक सचेत भिन्नता अधिक फलित होइत ।

गजल ५०३ : तुलना छोड़

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: तुलना छोड़ ।

पाठ-साक्ष्य : “आरसिमे देखल आकार—तुलना छोड़” ; “जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि” ; “आत्ममोलक बजार—तुलना छोड़” ।

आरसिमे देह देखबाक क्षण आ मीतक सफलतासँ अपन मोन नहि छोड़ करबाक आग्रह आत्ममूल्यांकनक दू क्षेत्र जोड़ैत अछि । अपन भूल स्वीकार करब सेहो एहि आत्ममूल्यक हिस्सा अछि ।

४७९ ‘तुलना नहि’ आ ४८५ ‘अपन रूप’ दुनूक सूत्र एतय मिलैत अछि । ई पुनर्संयोजन किशोर मनोविज्ञान लेल उपयोगी, मुदा नव छविक स्वतंत्र मौलिकता सीमित ।

गजल ५०४ : भरोसा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १९-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त · रदीफ: भरोसा रखू ।

पाठ-साक्ष्य : “मीतसँ खुलि कहू बात—भरोसा रखू” ; “क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात—भरोसा रखू” ।

मीतसँ खुलि बात करबाक आग्रह चोट पहुँचलाक बाद विश्वासकें पुनः गठित करबाक प्रयास अछि । मतभेद संबंध नहि तोड़ैत—ई चतुर्थ विचारक स्थिर बिन्दु अछि ।

४८३ आ ४८६क संवादी नैतिकता लगभग समान; ‘भरोसा रखू’ रदीफ दृष्टिकोण बदलैत अछि, कथ्यक सामाजिक प्रक्रिया नहि। एहि आवर्तनकें संग्रहगत तकनीक आ पुनरुक्तिक सीमा दुनू रूपमे दर्ज करब चाही।

गजल ५०५ : भूलसँ सीखू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १९ - २६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: भूलसँ सीखू।

पाठ-साक्ष्य : “एक चूककें हार नहि मानू—भूलसँ सीखू” ; “कखनो एक दुआर बन्द भऽ सकैत अछि” ; “ई जीतक आधार—भूलसँ सीखू”।

एक चूकक बाद आत्मदण्डक बदला जिम्मेदारी स्वीकार करब व्यक्तिगत विकासक महत्त्वपूर्ण भेद अछि। ‘भूलसँ सीखू’ रदीफ निरन्तर आत्मसंशोधनक अभ्यास बनैत अछि।

४८४क ‘गलती देखू, मुदा अपना पर रोष नहि’ लगभग एतुक मुख्य तर्ककें पहिने कहि चुकल अछि। नया प्रसंगक कमी विषयकें अलग रचनामे रूपान्तरित करबाक शक्ति कम करैत अछि।

गजल ५०६ : कने आराम

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७ - २६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: कने आराम।

पाठ-साक्ष्य : “दिन भरि भेल बहुत काम—कने आराम” ; “मीत सभ आगे अछि, से सोचि दौड़ नहि” ; “आइ देहकें आराम—कने आराम”।

‘कने आराम’ समयक विरामकें काजक भाग बनबैत अछि। रातिभर जागब मेहनतक एकमात्र रूप नहि—ई प्रत्यक्ष किशोर जीवनक व्यवहारिक सुधारक आग्रह अछि।

४९५क शेर बन्द करि सुतबाक प्रसंगसँ ई निकट अछि। आरामक सामूहिक महत्त्व मान्य अछैत, शेरसभमे विश्रामक देहगत दृश्य थोडा अउरो रहिते काव्य-संवेदना बढ़ैत।

गजल ५०७ : सोझाँ बाजू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः सोझाँ बाजू ।

पाठ-साक्ष्य : “मीतसँ मनक बात—सोझाँ बाजू” ; “क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात—सोझाँ बाजू” ।

‘सोझाँ बाजू’क रदीफ अनौपचारिक सुनबाक बदला प्रत्यक्ष सम्बोधनक अभ्यास अछि । मनक चोट आ मतभेदक स्वीकारक विचार मीतताकै टिकाउबक शर्त बनैत अछि ।

४८६ ‘अपन बात’ आ ५०४ ‘भरोसा’क कथ्य-सूत्र प्रायः एहि रूपमे अछि । प्रश्न ‘की बाजल जाए’क स्वतन्त्र परिस्थिति विकसित नहि; काव्य-रचना बहुत हद धरि निर्देशसूची बनैत अछि ।

गजल ५०८ : अपन सुर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः अपन सुरमे ।

पाठ-साक्ष्य : “गाबू अपन गीत अपन सुरमे” ; “दोसराक बाट नीक हो, तइयो अहाँक बाट आन” ; “बाजू अपन गीत अपन सुरमे” ।

‘गाबू अपन गीत अपन सुरमे’ युवा पाठकक निर्णयकै ध्वन्यात्मक स्वायत्तता दैत अछि । अंक कम भेलापर जीवन कम नहि—ई सांख्यिक परिणाम आ आत्ममूल्यक अन्तर स्पष्ट करैत अछि ।

संगीतक ‘सुर’ आत्मस्वीकृतिक रूपक अछि, मुदा धुन, वाद्य वा गायनक कोनो दृश्य नहि; प्राथमिक आलोचनात्मक उपलब्धि उत्साहवर्धक वाक्य-रचना, शिल्पगत सीमा अमूर्तता ।

गजल ५०९ : पर्दासँ परे

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कने बाहर ।

पाठ-साक्ष्य : “पर्दासँ पैघ संसार—कने बाहर” ; “मीतक छवि नहि, मीतक मन सेहो बुझू” ; “धरती-अकास संसार—कने बाहर” ।

पर्दाक पारक धरती-अकास प्रत्यक्ष जगत अछि। जालजगतमे देखल सामग्री सभ साँच नहि—ई सूचना-जाँचक प्रश्नकें डिजिटल विश्रामक संग जोड़ैत अछि।

४७७, ४८० आ ४८२क निकट विषय-विन्यास एतय फेर आयल अछि; नव पक्ष यन्त्रक उपयोगिता स्पष्ट स्वीकारबाक अछि। तकनीक-निषेधक बदला सन्तुलनक पाठ एतुक सापेक्ष उपलब्धि अछि।

गजल ५१० : मीतसँ बात

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -त · रदीफ: फरिछ बाजू।

पाठ-साक्ष्य : “मोनमे जे अछि बात—फरिछ बाजू” ; “क्षमा माँगब हार नहि, मीतक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात—फरिछ बाजू” ।

मोनक बात फरिछ बाजब आ चोटक स्पष्ट उच्चारण व्यक्तिगत भावकें गोपनीयता सँ संवाद दिस लऽ जाइत अछि। मतभेद अछैत मीतता बचि सकैत अछि।

४८३ ‘बात फरिछाउ’ आ ५०७ ‘सोझाँ बाजू’क निकट पाठान्तर स्पष्ट अछि। फरिछ बाजबाक रदीफक बदला कथ्यक नव घटना वा संवेदनात्मक भेद सीमित।

गजल ५११ : ध्यानक डोर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ेर · रदीफ: कने थामू।

पाठ-साक्ष्य : “पर्दापर एतेक शोर—कने थामू” ; “खेल, गाछ, मीत, पोथी—सभ जीवनक भाग” ; “मनक भीतर शोर—कने थामू” ।

‘ध्यानक डोर’मे पर्दाक शोर आ पढ़बाक समय भटकैत मनक संघर्ष अछि। यन्त्र उपयोगी अछि, मुदा मालिक नहि बनय—एहि सूत्रमे उपयोगिता आ आत्मनियन्त्रणक महत्त्वपूर्ण भेद अछि।

५०९क डिजिटल सन्तुलनसँ सम्बन्ध अछि, मुदा एतुक विशेषता ध्यानक क्षणिक भग्नताक प्रत्यक्ष मनोवैज्ञानिक अनुभव अछि। डोरक ठोस बिम्ब शीर्षकमे अछि, शेरमे विकास कम।

गजल ५१२ : मदद माँगू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ात · रदीफ: मदद माँगू।

पाठ-साक्ष्य : “जे भारी लगै बात—मदद माँगू” ; “गुरु-मीत-बापक संग रहब कमजोरी नहि” ; “फरिछ कऽ कहू बात—मदद माँगू”।

‘मदद माँगू’क आग्रह निज मनक कठिनाइ कहबकें कमजोरी नहि, साहस मानैत अछि। ककरो वचनसँ गहिर चोटक प्रसंग मानवीय संकटकें पाठमे अनैत अछि। ४९६क ‘प्रश्न पूछू’ संग इहो डर छोड़ि बाजबाक नैतिकता साझा करैत अछि, मुदा सहायता माँगब संवादसँ भिन्न भावनात्मक निर्भरता स्वीकार करैत अछि। व्यक्तिगत अनुभूतिक उदाहरण अल्प रहबाक सीमा अछि।

गजल ५१३ : भविष्यक बाट

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह · रदीफ: खोजैत रहू।

पाठ-साक्ष्य : “एके नहि अछि राह—खोजैत रहू” ; “ज्ञानक क्षेत्र दू-चारि पेशा धरि नहि” ; “फेर नबका राह—खोजैत रहू”।

मीतसभ एक दिशा जायत तँ स्वयं ओतए जेबाक बाध्यता नहि; भविष्यक अनेक बाटक स्वीकार किशोर स्वायत्तताक प्रश्न अछि। बाट बदललासँ सपना मरैत नहि, ई कल्पनाशील उत्तर अछि।

४९१क ‘बाट चुनैत’सँ कथ्य बहुत निकट; ‘खोजैत रहू’ समयावधि बढ़बैत अछि, मुदा नया परिस्थिति अलग सँ नदेखाइत। शीर्षकीय विविधता आ भावगत पुनरावर्तनक भेद राखब जरूरी।

गजल ५१४ : निर्णय

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १५ - २८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः अपन निर्णय ।

पाठ-साक्ष्य : “भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय” ; “गुरु-बापक बात सुनू, प्रश्नो करैत रहू” ; “मनमे राखू उड़ान—अपन निर्णय” ।

‘भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय’ युवा सम्बन्धमे सहमति आ दबावक नैतिकता दैत अछि । दबावमे हँसि कऽ ‘हाँ’ कहब ठीक नहि—एकर सामाजिक व्यावहारिक अर्थ स्पष्ट अछि ।

५०१क भीड़मे अपन मान राखबाक सूत्र एतय फेर आबैत अछि । बाजबाक साहसकें नीक रूपसँ स्थापित करैत अछि, मुदा ‘उड़ान’ रूपकक अतिरिक्त विकास होइत तँ गजल अधिक दृश्यात्मक बनि सकैत ।

गजल ५१५ : एक परिणाम

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १४ - २३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः अन्त नहि ।

पाठ-साक्ष्य : “एक परिणामक हार—अन्त नहि” ; “धीरे चलबो चलब अछि, रुकल रहब नहि” ; “आइक छोट हार—अन्त नहि” ।

एक परिणामक हार अन्त नहि—समयक भीतर अवसरक पुनरावर्तन एतुक आधार अछि । बन्द दुआरक बिम्ब बाहरी असफलताकें जीवन-यात्राक अन्य बाटसँ तुलना करैत अछि ।

४९८-४९९क फेर प्रयास आ परीक्षा-पछातिक बोध लगभग एतुक मूल अवधारणा । ‘अन्त नहि’ स्थिर रदीफ फेर उठबाक आशा दैत अछि, मुदा अनुभूतिगत नवपन सीमित ।

गजल ५१६ : स्क्रीनक बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८ - २६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ेर · रदीफः स्क्रीनक बाहर ।

पाठ-साक्ष्य : “कम अच्छि एतऽ शोर—स्क्रीनक बाहर” ; “गाछक पात हवा लगिते गीत जकाँ हिलैए” ; “पैघ अच्छि ई भोर—स्क्रीनक बाहर” ।

स्क्रीनक बाहर मीतक चेहरा चित्रसँ बेसी ‘मोन’ रखैत अच्छि—एहि शेरमे प्रत्यक्ष मीतताक मानवीय गहराइ भेटैत अच्छि । यन्त्र उपयोगी होइतो सम्पूर्ण जिनगी नहि, ई सावधान सन्तुलनक कथन अच्छि ।

५०९क मूल विचार एतय फेर आवैत अच्छि, जखनकि मीतक चेहरा नामक ठोस छवि एतुक विशिष्ट अंश अच्छि । ४७७ आ ४८०सँ आवृत्ति-सम्बन्ध सेहो जाँचल जाए ।

गजल ५१७ : पहिल कमाइ

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः हिसाब राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “कतेक भेल काम—हिसाब राखू” ; “कमाइ गर्व अच्छि, मुदा देहक थकान सेहो साँच” ; “बुझू ओकर दाम—हिसाब राखू” ।

‘पहिल कमाइ’मे पाइ केवल वस्तु नहि, श्रमक समय सेहो अच्छि । बचतकेँ भविष्यक छोट सहारा बनावयक विचार पहिल आमदनीक नैतिकता गढ़ैत अच्छि । ‘हिसाब राखू’ रदीफ मौद्रिक सावधानी बनि एखनक किशोर-विषयसूत्रसँ अलग ठोस वस्तु आनैत अच्छि । मुदा रकम, मेहनत आ खर्चक नाटकिय घटना नहि देखाओल गेल; वित्तीय शिक्षा मुख्य ।

गजल ५१८ : प्रश्नक साहस

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः पूछि लिअ ।

पाठ-साक्ष्य : “नहि बुझल विचार—पूछि लिअ” ; “जालजगतक प्रत्येक दाबी सत्य नहि होइ” ; “खोलू नब दुआर—पूछि लिअ” ।

‘प्रश्नक साहस’मे गुरु उत्तर देथि वा खोजबाक बाट देखाथि, दुनू प्रक्रियाकेँ अध्ययन मानल गेल अच्छि । ‘ज्ञान डराए नहि’ वाक्य प्रश्नक अधिकारक पक्षमे अच्छि ।

४१६क प्रश्न-सम्बन्धी कविता सँ साझा तर्क अछैत, इहाँ गुरु-शिष्यक सापेक्ष स्पष्ट परिस्थिति भेटैत अछि। तथापि वास्तविक विवादक उदाहरण जोड़लासँ दृष्टिकोण अधिक नाटकीय होइत।

गजल ५१९ : टीमक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ग · रदीफः संग खेलू।

पाठ-साक्ष्य : “जीत हो वा हार, राखू उमंग—संग खेलू” ; “प्रतिद्वन्द्वी शत्रु नहि, खेलक दोसर पक्ष” ; “जीवन भरिक संग—संग खेलू”।

‘टीमक खेल’ जीत-हारक मानककें सामूहिक व्यवहारक कसौटी सँ बदलैत अछि। गलती पर मीतकें हँसाएबाक बदला हाथ बढ़ाबब सहकाजक जीवित दृश्य अछि। ४७३क खेल-संघर्षसँ संवाद अछि, मुदा एतय पदकसँ ऊपर साझा स्मृतिक महत्त्व सामूहिक रूपें खुलैत अछि। कविता उपदेशात्मक होयतो मीतकें उठेबाक दृश्य पाठकें स्थिरता दैत अछि।

गजल ५२० : पहिल कमाइ

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म · रदीफः सोचि खर्चू।

पाठ-साक्ष्य : “हाथमे आयल दाम—सोचि खर्चू” ; “महँग चीज किनलासँ मान पैघ नहि होइ” ; “बुझि ओकर परिणाम—सोचि खर्चू”।

हाथमे आयल कमाइक दाम कतेक खर्च करब, कतेक घर आ बचत लेल राखब—ई किशोर आर्थिक जिम्मेदारीक व्यावहारिक विभाजन अछि।

५१७क एके शीर्षक ‘पहिल कमाइ’ अछि। ५१७मे श्रमक समय आ हिसाबक आग्रह, ५२०मे खर्चक प्राथमिकताक निर्णय प्रधान अछि; दुनूक परस्पर पूरकता अछैत पुनरावृत्ति सेहो अभिलेखित रहबाक चाही।

गजल ५०१-५२० : आत्मसम्मान, डिजिटल समय आ पहिल कमाइक पाठ

‘भरोसा’ आ ‘सोझाँ बाजू’क संवाद-विमर्श, ‘पर्दासँ परे’ आ ‘स्क्रीनक बाहर’क डिजिटल सन्तुलन, तथा ‘पहिल कमाइ’क दू प्रविष्टिक बीच तुलना एहि समूहक मुख्य आलोचनात्मक मुद्दा अछि। समान उपदेशक नामपर अलग-अलग भावी पाठकक अभ्यास देखाइत अछि, मुदा रचनात्मक पुनरावृत्ति बहुत अधिक अछि। एहि आलोचनामे उपदेशक उपयोगिताकेँ शिल्पगत उपलब्धि मानि स्वतः छूट नहि देल गेल।

गजल ५२१ : प्रश्नक साहस

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त · रदीफः पूछि लिअ।

पाठ-साक्ष्य : “जे नहि बुझलहुँ बात—पूछि लिअ” ; “गुरु सिखबैत छथि; प्रश्न सीखक शत्रु नहि” ; “फरिछि कऽ अपन बात—पूछि लिअ”।

‘प्रश्नक साहस’मे नब ज्ञानक बाट आ दबल आघात, दूनू प्रश्नक अधिकारसँ जुड़ैत अछि। तर्कसँ ‘मुलाकात’ शब्द प्रश्नकेँ संघर्ष नहि, जाँचक सहचर बनबैत अछि।

५१८मे गुरु सँ प्रश्न करबाक प्रसंग छल; ५२१मे व्यक्तिगत चोटक बारेमे बाजब सेहो आबैत अछि। अलग अर्थक्षेत्र अछैत ‘पूछि लिअ’क एकरूपता शेरक भाव-विविधताकेँ कखनो सीमित करैत अछि।

गजल ५२२ : टीमक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ंग · रदीफः संग खेलू।

पाठ-साक्ष्य : “जीत-हारक संग—संग खेलू” ; “अपन कौशल नीक, मुदा टीम बिना अधूरा” ; “राखि खेलक रंग—संग खेलू”।

जीत आ हार दुनूक समय ‘संग खेलू’ टीमकेँ परिणामसँ ऊपर रखबाक आग्रह अछि। उत्साह साझा करबाक धुन टीमक आन्तरिक सम्बन्धपर केन्द्रित अछि।

५१९क एके शीर्षकक टीमक खेलक अवधारणा एतय फेर आवैत अछि, मुदा एतय विशिष्ट गलती पर हाथ बढेबाक दृश्य नहि। एहि कारण मूल कथ्यक तुलनामे भावात्मक पुनरावृत्ति बेसी।

गजल ५२३ : कौशल

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: कौशल सीखू।

पाठ-साक्ष्य : “केवल अंक नहि काम—कौशल सीखू” ; “जे रुचि अहाँक भीतर बारम्बार जागैए” ; “बुझू अपन परिणाम—कौशल सीखू”।

अंकक संग कौशल सीखबाक आग्रह विद्यालयक मापन आ जीवनक दक्षता बीच भेद दैत अछि। विश्राम लेबाक उल्लेख श्रमक निरन्तर विकासकें टिकाउ बनबैत अछि।

रदीफ ‘कौशल सीखू’ प्रसङ्गानुकूल अछि, मुदा कोन हुनर सीखल गेल, कओन विफल अभ्यास ठीक भेल—ई नहि देखल गेल। दृश्यात्मक अनुपस्थितिसँ काव्यक जगह पाठ्य-सुझावक स्वर प्रबल अछि।

गजल ५२४ : खराब दिन

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुजी। मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: बस एक दिन।

पाठ-साक्ष्य : “आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन” ; “धीरे चलू, साँस लिअ, फेर शुरुआत करू” ; “ई छोट हार—बस एक दिन”।

‘आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन’ असफलताकें दीर्घ जीवनक लघु क्षण बनबैत अछि। बन्द दुआर आ आगू खुलल दुआरक रूपक व्यक्तिगत क्षतिक अनिवार्य स्थायित्वकें चुनौती दैत अछि।

५०५ आ ५१५क समान शिक्षा पुनः आवैत अछि। ‘बस एक दिन’क काल-सीमा नव अभिव्यक्ति अछि, मुदा मूल आत्म-सुधारक वाक्य-व्यवस्था बहुते दोहरायल।

गजल ५२५ : टोली

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग · रदीफः टोलीमे ।

पाठ-साक्ष्य : “जीत अकेले नहि—संग टोलीमे” ; “हारि गेलहुँ तऽ दोष एकटा मीतपर नहि” ; “तखन बढ़त सभक संग टोलीमे” ।

‘टोली’मे पास देबाक क्रिया सामूहिक खेलक मूर्त दृश्य अछि, जे ‘जीत अकेले नहि’क तर्ककें समर्थन दैत अछि । सहयोगक धुन पुरस्कारसँ बेसी सम्बन्धकें महत्त्व दैत अछि ।

५१९ आ ५२२क टीम-विमर्शक पुनरागमन अछि, मुदा ‘पास’क सूक्ष्म व्यावहारिक क्रिया एतय विशिष्ट योगदान दैत अछि । एहि छोट क्रियाकें विस्तृत नाट्य रूप देबाक गुंजाइश छल ।

गजल ५२६ : निर्णयक समय

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः कने समय दिअ ।

पाठ-साक्ष्य : “नहि चुनू तुरत राह—कने समय दिअ” ; “काजक दुनिया दू-चारि नाम धरि नहि” ; “खोजू नबका राह—कने समय दिअ” ।

‘नहि चुनू तुरत राह’ निर्णयमे समय लेबाक अधिकारक स्पष्ट मान्यता अछि । सभक सल्लाह सुनलाक बाद अपन निगाह सँ विकल्प देखब सामूहिक ज्ञान आ स्वतन्त्र विवेकक संगम बनबैत अछि ।

५१३क भविष्यक बाटक तुलना मे ‘समय दिअ’क धीरज मुख्य नव बिन्दु अछि । मुदा प्रत्येक शेर एकहि सलाहक अलग नाम मात्र नब बनैत अछि; निर्णायक परिस्थिति अदृश्य ।

गजल ५२७ : पहिल खर्च

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः हिसाब राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “जाइत छी जखन बजार—हिसाब राखू” ; “मीतक देखादेखी किनेब जरूरी नहि सभटा” ; “सीखू नीक व्यवहार—हिसाब राखू” ।

पहिल खर्चक प्रसंग बजारक व्यावहारिक वातावरणमे शुरू होइत अछि । घर-परिवारक जरूरत देखिकऽ खर्चक पहिने विचार करब पहिल कमाइक सामाजिक दायित्व खोलैत अछि ।

५१७ आ ५२०क पाइक प्रश्न एतय खर्चक निर्णय रूपेँ बढ़ैत अछि । ‘हिसाब राखू’ मात्र गणनाक निर्देश नहि, परिवारक हिस्सा बनबाक आर्थिक पक्ष सेहो अछि; मुदा मूल्यक ठोस दृश्य सीमित ।

गजल ५२८ : प्रश्न करू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १४-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः प्रश्न करू ।

पाठ-साक्ष्य : “नहि बुझाई जे राह—प्रश्न करू” ; “गुरु प्रश्नसँ रुष्ट नहि, जिज्ञासा ज्ञानक साँस” ; “खोजू अपन राह—प्रश्न करू” ।

‘प्रश्न करू’क केन्द्र सल्लाह सुनलाक बादो अस्पष्ट बाटपर सवाल उठेबाक साहस अछि । एकर दायरा विद्यालयक पाठसँ बाहर निजी निर्णय धरि जाइत अछि ।

५१८-५२१क प्रश्नकाव्यक आवर्तन आ समान समापन रचना-नवपनक चुनौती अछि । नहि बुझबाक अवस्था वास्तविक अछि, मुदा कओन विषय नहि बुझल गेल से अघोषित ।

गजल ५२९ : समाचार

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः पहिने जाँचू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे भेटल समाचार—पहिने जाँचू” ; “मीत पटेलक कहि कऽ बात सत्य नहि भऽ जाए” ; “स्रोतक समाचार—पहिने जाँचू” ।

समाचार भेटलाक बाद ‘पहिने जाँचू’ स्रोत-प्रमाणक अनुशासन अछि । प्रचार आ आधारक भेद आधुनिक सूचना-समाजक प्रमुख समस्या पर कविता केन्द्रित करैत अछि ।

ई नैतिक आग्रह जरूरी अछि, मुदा स्वयंसिद्ध आदर्शकेँ कथानकक ठोस मिथ्या समाचारसँ टकरायल नहि गेल । ५३७ आ ५४६क समीप सन्देशसँ पुनरावर्तन अभिलेख योग्य ।

गजल ५३० : पहिल यात्रा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ान · रदीफ: ध्यान राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिने बुझू स्थान—ध्यान राखू” ; “बाट भुला जाए तऽ पूछब लाजक बात नहि” ; “दूनूक समान मान—ध्यान राखू” ।

‘पहिल यात्रा’मे स्थान बुझब, कागज-पहिचान सम्हारब आ सावधान रहब देस-परदेसक पहिल गमनक ठोस व्यवहार अछि । ‘दूनूक समान मान’ सम्भवत: सहयात्रीक गरिमासँ सम्बन्धित अछि, मुदा स्पष्ट सन्दर्भ नहि ।

यात्रा-विषय किशोर गजलमे नव पाठ अछि । रदीफ ‘ध्यान राखू’क कारण कविता व्यवहारी सूची बनि जाइत अछि; यात्रा-स्मृतिक रंग/भय कम विकसित ।

गजल ५३१ : पहिल भाषण

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १५-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ार · रदीफ: मञ्चपर ।

पाठ-साक्ष्य : “काँपए तइयो विचार मञ्चपर” ; “भूलि गेलहुँ एक पाँती तऽ साँस लिअ कने” ; “खुलि जाए संसार मञ्चपर” ।

मञ्चपर काँपैत गातक संग विचार राखबाक साहस ‘पहिल भाषण’क नाटकीय क्षण अछि । विषयक आधार आ सहज व्यवहारक सलाह आन्तरिक डरकेँ भाषिक अभ्याससँ जोडैत अछि ।

मञ्चक शरीरगत काँपब ऐ समूहक अन्य नीतिप्रधान गजलसभसँ अधिक विशेष दृश्य अछि । अन्तक ‘खुलि जाए संसार’ उत्कर्ष बनैत अछि, मुदा उपस्थित श्रोता आ प्रतिक्रिया अनकहल ।

गजल ५३२ : पहिल असफलता

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: फेर जाउ ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिल बेर भेटल हार फेर जाउ” ; “जे प्रश्न कठिन छल, ओहि पर फेर अभ्यास करू” ; “छोडि आइक हार फेर जाउ” ।

पहिल असफलताक बाद फेर जाइबक आग्रह बंद दुआरसँ दोसर दुआर धरि सक्रिय यात्रा बनबैत अछि । हार एखनक घटना अछि, स्थायी भाग्य नहि ।

५२४/५१५/४९८क समतुल्य नैतिक बोध पुन: आवैत अछि । ‘फेर जाउ’ रदीफ मार्गगतिकें रूप दैत अछि, मुदा भाव-अनुभवक नव प्रसंग कम ।

गजल ५३३ : समूहक दबाव

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त · रदीफ: सोचि कहू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे मनकें नहि भावै बात सोचि कहू” ; “‘ना’ कहबो सम्बन्धक विरोध नहि होइ सभ दिन” ; “मनमे नहि राखू बात सोचि कहू” ।

समूहक दबावमे जे बात मनकें चोट पहुँचाबय, तकर उत्तर सोचि कऽ देबकें साहस मानल गेल अछि । ‘पहिने मुलाकात’ व्यक्ति-व्यक्ति संवादकें समूहक हल्लासँ अलग करैत अछि ।

५१४क दबाव-विमर्शसँ पुनरावृत्ति अछि, मुदा एहि गजलमे विचार करबाक विराम प्रमुख अछि । ‘सोचि कहू’क रदीफ स्वयं मूल्य-निर्णयक समय बनबैत अछि ।

गजल ५३४ : डिजिटल विराम

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ेर · रदीफ: फोन राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “बहुत भेल ई शोर फोन राखू” ; “गाछक पात हवा लगिते गीत जकाँ हिलैए” ; “राति बहुत भेल, ई शोर फोन राखू” ।

फोन राखबाक आग्रह जालजगतक शोरसँ निकलि आन्तरिक ध्यान आ रातिक विश्रामक पक्षमे अछि। ‘कने छोड़ू ओ डोर’ डिजिटल आकर्षणकें बाँधल डोरक रूपक दैत अछि।

४८९, ४९५ आ ५११क विषय एतय एके स्थानमे घुरैत अछि। मुदा समय-अन्त ‘राति बहुत भेल’ तत्काल परिस्थिति सूचित करैत अछि, जे सामान्य डिजिटल-विरोधसँ अधिक सटीक अछि।

गजल ५३५ : समय बाँटू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ल · रदीफः समय बाँटू।

पाठ-साक्ष्य : “पढ़ाइ अछि सवाल—समय बाँटू” ; “निन्न घटे तऽ बिहानक मन थाकल रहत” ; “राखू सभक खयाल—समय बाँटू”।

‘समय बाँटू’मे पढ़ाइ, निज हाल आ सम्बन्ध सभकें एकदिनक समान भाग मानल गेल अछि। ‘तोड़ू कने ओ जाल’ ध्यानक बाधाकें स्पष्ट शब्दचित्र दैत अछि।

४९०क ‘समयक हिस्सा’ एकहि विचारक पूर्व रूप अछि; एतय जाल-रूपक डिजिटल विचलनक नव सन्दर्भ जोड़ैत अछि। मुदा आयु-विशेषक समय-बँटवाराक वास्तविक असमानता नहि देखाइत।

गजल ५३६ : पहिल जिम्मेदारी

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म · रदीफः जिम्मेदारी लिअ।

पाठ-साक्ष्य : “छोट हो तइयो काम—जिम्मेदारी लिअ” ; “चूक भऽ जाए तऽ बहाना बनब समाधान नहि” ; “अपन चुनल काम—जिम्मेदारी लिअ”।

छोट काजक सेहो दायित्व लेब, पाइ केर दाम बुझब आ चुनल काज पूरा करब किशोर आत्मनिर्भरताक पक्ष अछि।

‘नहि खोजू आराम’ काव्यक अन्य विश्रामसमर्थक गजल (५०६, ५३४) सँ सम्भावित वैचारिक तनाव रखैत अछि। प्रासङ्गिक सीमा ई जे जिम्मेदारी आ आराम परस्पर विरोधी नहि, मुदा पाठ ओकर अनुपात स्पष्ट नहि करैत।

गजल ५३७ : साँच जाँचू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः साँच जाँचू ।

पाठ-साक्ष्य : “आयल जँ समाचार—साँच जाँचू” ; “मीत पठेलक अछि, ताहिसँ बात सत्य नहि होइ” ; “तखन मानू समाचार—साँच जाँचू” ।

‘साँच जाँचू’मे समाचारक स्रोत आ प्रचारक प्रभावक अलग पहचान केन्द्रीय अछि । जाँचलाक बादे सूचना मानब अनुमान आ प्रमाणक स्पष्ट अन्तर बनाए रखैत अछि ।

५२९क ‘समाचार’क गजलसँ सूचनागत क्रम बहुत निकट अछि । काव्यगत रूपान्तरणक विशिष्ट दृश्य/वक्ता नहि; सामाजिक शिक्षाक पुनर्पाठ प्रमुख ।

गजल ५३८ : अपन आवाज

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त · रदीफः खुलि बाजू ।

पाठ-साक्ष्य : “मोनमे अछि जँ बात—खुलि बाजू” ; “नम्रता चुप्पी नहि, अपन मत सेहो जरूरी” ; “नेहसँ दिन-रात—खुलि बाजू” ।

‘अपन आवाज’ मे दबल आघात खुलि बाजबाक आग्रह बनि सामने अबैत अछि । राति लम्बा भेलापर अनुभूतिजन्य दुख गोपन नहि राखबाक सल्लाह मानसिक सहायताक क्षेत्र खोलैत अछि ।

‘खुलि बाजू’ रदीफ बारम्बार साहसक निमन्त्रण अछि । ५१२क सहायता माँगबाक गजलसँ विषय सम्बन्ध अछि; एतय सहायता नहि, अभिव्यक्ति स्वयं लक्ष्य बनैत अछि ।

गजल ५३९ : परीक्षा बाद

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २१-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कने विश्राम करू ।

पाठ-साक्ष्य : “मोनपर बेसी भार—कने विश्राम करू” ; “काल्हि फेर पोथी खोलब, नव ढंगसँ पढ़ब” ; “देहक सुनू पुकार—कने विश्राम करू” ।

परीक्षाक बाद विश्रामक आग्रह परिणामक मानसिक भार आ देहक पुकारकेँ एकसंग मान्यता दैत अछि । हारसँ सीखब आ दोसर दुआर खुलबाक कल्पना पुनर्निर्माणक क्रम बनबैत अछि ।

४९९क परीक्षाक बादक भावक आवर्तन अछि; एतय देहक विश्रामक अधिक स्पष्ट आग्रह अछि । ‘कने विश्राम करू’ रदीफक कारण व्यावहारिक उद्देश्य प्रबल आ बिम्बक स्वतन्त्रता कम ।

गजल ५४० : मीतक सीमा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न · रदीफ: सीमा राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “अपन मनक मान—सीमा राखू” ; “ना कहब कटुता नहि, अपन निर्णयक अधिकार” ; “नेहक ई सम्मान—सीमा राखू” ।

‘मीतक सीमा’मे नेह आ आत्मपहिचान एक-दोसराक विरोधी नहि । ‘सीमा राखू’ कहैत सम्बन्धमे सम्मानक स्पष्ट शर्त राखल गेल अछि ।

४९२ आ ५१४क निज सीमा-आत्मसम्मानक विषय फेर लौटैत अछि । एतय मीतक सम्बन्ध अलग केन्द्र बनलासँ व्याख्या अधिक निर्दिष्ट, मुदा शेरसभ कथनसूचक अछि ।

५२१-५४० : अन्तरपाठीय परीक्षण

प्रश्न, समाचार-जाँच, पहिल भाषण आ आर्थिक व्यवहार किशोर साहित्यकेँ व्यावहारिक समाजक भीतर रखैत अछि । मुदा ५१८/५२१/५२८ आ ५२९/५३७क पुनरावृत्ति विषयक भावी पाठकक एके शिक्षा केँ कई रूपमे फेर प्रस्तुत करैत अछि । चयनमे वास्तविक स्थितिगत अन्तर महत्त्वपूर्ण होएत ।

गजल ५४१ : अपन लय

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ल · रदीफ: अपन लय राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “भीड़क अलग चाल—अपन लय राखू” ; “एक दिन धीम रहब असफल होएब नहि होइ” ; “सोचि चुनू चाल—अपन लय राखू” ।

भीड़क चालक तुलनामे अपन लय राखब व्यक्तिगत समयक स्वाधीनता अछि । ताल/लयक संगीतात्मक रूपक दौड़क बाह्य गति सँ भीतरी संतुलन धरि आनैत अछि ।

५०२ ‘अपन ताल’ आ ४८७ ‘अपन गति’क एके तर्क फेर आयल अछि । लयक छविक वास्तविक संगीतात्मक विकास नहि होयब शिल्पगत सीमा ।

गजल ५४२ : मीतक पहिचान

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त · रदीफ: मीत चिन्हू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे सुनए मनक बात—मीत चिन्हू” ; “जे अहाँक सफलतापर ईर्ष्या नहि करए” ; “ओकर साँच बात—मीत चिन्हू” ।

मीत पहिचानबाक तीन व्यवहार—मनक बात सुनब, चोट सम्हारब, कठिन राति संग रहब—एकटा सम्बन्धक भरोसा सिद्ध करैत अछि ।

५५९ आ ४९७क मीत चयन-विमर्शक निकट अछि, मुदा संकटमे टिकबाक निर्दिष्ट समय ‘कठिन रात’क उल्लेख रचनाकें सघन बनबैत अछि ।

गजल ५४३ : डरक पार

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रम: १५-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: आगाँ बढू ।

पाठ-साक्ष्य : “भेटल जँ हार—आगाँ बढू” ; “छोट-छोट पग जोड़ि पैघ दूरी पार होइ” ; “सम्हारि अपन भार—आगाँ बढू” ।

‘डरक पार’मे हारक बाद साफ विचार, नीक आधार आ भार सँभारि अगिला कदमक क्रम अछि । साहसकें आवेग नहि, क्रमिक विवेकक परिणाम मानल गेल अछि ।

४८४, ४९८ आ ५२४क पुनर्प्रयास-विमर्श दोहरायल अछि । अलग भयक परस्थितिक विशिष्ट दृश्य नहि, तँ रचना नैतिक संक्षेप रहैत अछि ।

गजल ५४४ : आरम्भ

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः २१-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः एखन आरम्भ करू ।

पाठ-साक्ष्य : “मोनपर नहि भार—एखन आरम्भ करू” ; “अटकू तऽ मीत वा गुरु सँ पूछि फेर चलू” ; “नहि मानू ई हार—एखन आरम्भ करू” ।

‘आरम्भ’ शीर्षक काज शुरू नहि करबाक जड़ताकें सम्बोधित करैत अछि । भार बाँटि लेब आ समयकें आधार बनाबब आरम्भक सामूहिकता आ धैर्य दुनू पहलू खोलैत अछि ।

सामान्य ‘फेर प्रयास’ गजलसभसँ ई भिन्न अछि कारण एतय विफलता पाछाँ नहि, शुरू करबाक पहिल प्रतिरोध विषय अछि । रदीफ ‘एखन आरम्भ करू’ तत्कालता बनबैत अछि ।

गजल ५४५ : रुचिक बाट

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः अपन रुचि चिन्हू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे करिते बढ़ए ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू” ; “रुचि संग अनुशासन जुड़त तखन कौशल फलत” ; “बढ़त तखन ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू” ।

जे काज करिते ज्ञान बढ़य ओहि रुचिक पहिचान करबाक आग्रह बालकक विषय-चयनक भीतरी कसौटी प्रस्तुत करैत अछि ।

४८१ ‘विषय अपन’ आ ५०० ‘अपन विषय’क पुनरावर्तन उल्लेखनीय अछि । ‘उड़ान’क रूपक प्रेरक, मुदा व्यावहारिक रुचिक कओन उदाहरण रचनामे नहि ।

गजल ५४६ : साँचक जाँच

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः २०-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः जाँचि तखन मानू ।

पाठ-साक्ष्य : “आयल जँ समाचार—जाँचि तखन मानू” ; “मीत पठओलक तइयो साँच होएब जरूरी नहि” ; “रोकू असत्य प्रचार—जाँचि तखन मानू” ।

‘साँचक जाँच’ समाचारक मूल आधार देखबाक बादे स्वीकृति देबाक आग्रह अछि । ‘असत्य प्रचार रोकू’ व्यक्तिगत पढ़बाक अभ्याससँ सार्वजनिक जिम्मेदारी दिस विस्तार अछि ।

५२९ आ ५३७क समाचार-समीक्षा एकहि नैतिक निचोड़ लैत अछि । एतय असत्यक प्रसार रोकब नव सक्रिय पक्ष अछि, मुदा शिल्पमे आवर्तन तखनो बहुत ।

गजल ५४७ : नब मीत

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः धीरे चिन्हू ।

पाठ-साक्ष्य : “नब मीतक व्यवहार—धीरे चिन्हू” ; “मीत ओ जे कठिन घड़ीमे उपहास नहि करए” ; “देखू सभ व्यवहार—धीरे चिन्हू” ।

नव मीतक व्यवहार धीरे चिन्हब मित्रताक धीरजक पाठ अछि । भरोसा तुरन्त नहि बने, विवेकसँ बने—ई किशोर सामूहिक जीवनक युक्तिसंगत दृष्टि अछि ।

‘धीरे चिन्हू’क रदीफ सम्बन्धक कालिक वृद्धि बतबैत अछि । ४९७क मीत-चयन तुलना मे इहाँ जल्दी निर्णय नहि देबाक बल बेसी ।

गजल ५४८ : भूल स्वीकार

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः साँच कहू ।

पाठ-साक्ष्य : “भूल भेल—स्वीकार, साँच कहू” ; “जे बिगड़ल से फेर बनि सकै धैर्य आ श्रमसँ” ; “करू खुलि स्वीकार—साँच कहू” ।

भूल स्वीकार करबाक साहस अहंकार घटबैत आ मनक भार हलुक करैत अछि । ‘साँच कहू’ रदीफ सत्यबाजीक प्रत्यक्ष आह्वान अछि ।

५०५क भूलसँ सीखबाक पाठ एतय आत्म-स्वीकृति रूपेँ फेर आबैत अछि । किन्तु ककरो लग क्षमा माँगबाक दृश्य आ गलतीक असर अनकहल रहैत अछि ।

गजल ५४९ : एखन करू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म · रदीफः एखन करू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे छोट अछि काम—एखन करू” ; “एक काज पूरा कऽ तखन दोसर दिस पग धरू” ; “सँभारू अपन काम—एखन करू” ।

‘एखन करू’ छोट काजकें टारबाक मनोवृत्तिक प्रतिवाद अछि । परिणामक डर छोड़ी काज शुरू करब एतुक समय-दर्शन अछि ।

५४४क आरम्भ-विमर्शसँ घनिष्ठ निकटता अछि, मुदा एतय छोट आकारक काज पर बल अछि । गजलक पदावली जेहेन योजनासूची, काव्यचित्र कम ।

गजल ५५० : प्रश्न पुछू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ह · रदीफः प्रश्न पुछू ।

पाठ-साक्ष्य : “बुझबाक जँ अछि चाह—प्रश्न पुछू” ; “गुरु, पोथी, मीत—सभसँ सीखबाक बाट खुलल” ; “साँचक राखू चाह—प्रश्न पुछू” ।

‘प्रश्न पुछू’मे ज्ञानक अथाह जगतक स्वीकार प्रश्नकें अनुशासन बनबैत अछि । बुझबाक जिज्ञासा हीनता नहि, विस्तारक प्रवेशद्वार अछि ।

५१८, ५२१, ५२८क अनवरत प्रश्न-परम्परा एतय फेर उपस्थित अछि । नव अनुभव वा तर्क-विवादक विस्तारक अभाव पुनरुक्ति बढ़बैत अछि ।

गजल ५५१ : काज बाँटू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः संग करू ।

पाठ-साक्ष्य : “एक्के माथ नहि भार—संग करू” ; “श्रेय अकेले नहि, सभक श्रमक हिस्सा मानू” ; “हलुक होएत भार—संग करू” ।

‘काज बाँटू’क मूल विचार एक माथपर सभ भार नहि रखबाक सामूहिक विवेक अछि। श्रम आ सम्मानक सम्बन्ध साझा जिम्मेदारीमे स्पष्ट होइत अछि।

४९०/५३५क समय बाँटबाक धारासँ ई भिन्न अछि कारण विषय समय नहि, श्रम-दायित्वक वितरण अछि। शेरसभमे संग काजक एकटा दृश्य रहिते गहिराइ बढ़ैत।

गजल ५५२ : अपन गति

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न · रदीफः अपन गति राखू।

पाठ-साक्ष्य : “बाटपर राखू ध्यान—अपन गति राखू” ; “विश्रामो यात्रा केर अंश, आलस नहि बुझू” ; “राखू साफ ध्यान—अपन गति राखू”।

अपन गति राखब बाहरी तुलना सँ मुक्ति आ श्रमक निज मानक स्वीकृति अछि। बाटपर ध्यान दैत रहब आत्मनियन्त्रणक व्यावहारिक रूप अछि।

४८७ आ ४९३ सहित एहि नामक अनेक गजल पहिनेसँ अछि। ‘अपन गति’क पुनरावर्तनमें भाव-आविष्कार कम, एके प्रेरक अवधारणाक रूपभेद बेसी।

गजल ५५३ : नब हुनर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र · रदीफः सीखैत रहू।

पाठ-साक्ष्य : “खोलू नबका दुआर—सीखैत रहू” ; “दोसरक गति देखिकऽ अपन पगकँ छोड नहि मानू” ; “धीरज संग सुधार—सीखैत रहू”।

‘नब हुनर’ सीखबक प्रक्रिया धीरजसँ सुधार करबाक प्रतिज्ञा अछि। नब दुआरक रूपक सीखबाक सामर्थ्यक विस्तार सूचित करैत अछि।

५२३ ‘कौशल’क संग विषयगत निकटता अछैत इहाँ समयान्तरक क्रमिक वृद्धि अधिक प्रमुख अछि। ठोस कौशल/वस्तुक नाम नहि होएब शिल्पगत सीमा।

गजल ५५४ : बात जाँचू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः पहिने जाँचू ।

पाठ-साक्ष्य : “आएल जँ समाचार—पहिने जाँचू” ; “मीत कहलक मात्रे सँ प्रमाण पूरा नहि भऽ जाए” ; “राखू ई विचार—पहिने जाँचू” ।

‘बात जाँचू’मे समाचार, ठोस आधार आ झूठ प्रचार रोकबाक स्पष्ट क्रम अछि । एखनकैँ पाठकक सूचना-साक्षरताक मूल्य उल्लेखनीय अछि ।

५२९, ५३७, ५४६क शब्दक पुनरावर्तन अत्यन्त प्रखर अछि । नव दृश्य किंवा भिन्न नीतिगत दुविधाक अभाव एहि स्वतंत्र गजलक काव्यात्मक आवश्यकता प्रश्नबद्ध करैत अछि ।

गजल ५५५ : लिखि कऽ बुझू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -व · रदीफः लिखि कऽ बुझू ।

पाठ-साक्ष्य : “मनमे उठल भाव—लिखि कऽ बुझू” ; “दिनक छोटा उपलब्धि सेहो मोनकैँ बल दैत अछि” ; “फेर पढ़ू मनक भाव—लिखि कऽ बुझू” ।

‘लिखि कऽ बुझू’ मनक भावकैँ पन्नापर राखि फेर पढ़बाक आत्ममंथनक काव्य-प्रक्रिया अछि । लिखब केवला अभिव्यक्ति नहि, स्वयं अपन विचारक दूरीसँ परीक्षण अछि ।

अन्य किशोर उपदेशक गजलसँ एतुक विशिष्टता ई अछि जे लेखनक स्वयं-वाचनक ठोस अभ्यास देल अछि । मुदा किस भावकैँ फेर पढ़िते बदलि गेल से नदेखाएल ।

गजल ५५६ : एक काज

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १८-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः एक काज करू ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिने राखू ध्यान—एक काज करू” ; “पूरा भेल तऽ अपन श्रमकें छोटा कहि नहि टारू” ; “मोन रहत एकतान—एक काज करू” ।

‘एक काज’ एक बेरमे एकटा विषयपर ध्यान देबाक आग्रह अछि । अनेक काजक थकानकें ध्यानक विखण्डनसँ जोड़ल गेल अछि ।

५११क ‘ध्यानक डोर’सँ घनिष्ट सम्बन्ध अछि, मुदा एतय डिजिटल पर्दा नहि, सामान्य एकाग्रता केन्द्र अछि । रदीफ ‘एक काज करू’ सूचीमूलक रूप लेलैत अछि ।

गजल ५५७ : रिसक बेर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १५-२७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -स · रदीफ: कने थमू ।

पाठ-साक्ष्य : “गहिरी लिअ साँस—कने थमू” ; “मतभेद मीतक नेह मिटबैत नहि, जँ मन खुलल” ; “फेर करू प्रयास—कने थमू” ।

रिसक बेर गहिर साँस लऽ थमव भावोन्मेष सँ पहिने मानसिक विराम बनबैत अछि । उत्तर देबाक पहिने समझबाक प्रशिक्षण सम्बन्धक तनाव घटबैत अछि । ‘कने थमू’ रदीफ वास्तविक श्वसन-क्षणक गति अनुकृत करैत अछि; एहि कारण अन्य उपदेशात्मक गजलसँ एकर लय अधिक सजीव अछि । मुदा कोन रिसक प्रसङ्ग अछि से अनकहल ।

गजल ५५८ : अपन माप

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न · रदीफ: अपन माप रखू ।

पाठ-साक्ष्य : “अपन श्रमक मान—अपन माप रखू” ; “तुलना कम, अभ्यास बेसी—हुनर अपने गहिराए” ; “फेर चिन्हू पहिचान—अपन माप रखू” ।

‘अपन माप’ श्रमक मान आ आत्मपहिचानकें बाह्य प्रतिस्पर्धासँ अलग करैत अछि । अपन प्रगतिकें स्वयं परखबाक आग्रह शिक्षक आ अंकक सत्ता सीमित करैत अछि ।

४८५/५०३क आत्ममूल्यांकनक मूल अवधारणा पुनः आवैत अछि । रदीफक रूपमे मापकक प्रत्यक्ष वस्तु नहि, रूपकात्मक अवधारणा प्रधान अछि ।

गजल ५५९ : मीत चुनू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः मीत चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिने बुझू विचार—मीत चुनू” ; “भूल कहए तऽ रिस नहि, साँच कहए तऽ संग नहि छोडय” ; “मोन खोलय दुआर—मीत चुनू” ।

‘मीत चुनू’मे सोच, अधिकार आ खुलल मोन मित्रताक कसौटी बनैत अछि ।

‘राखय सभक अधिकार’क शेर निजी सम्बन्धसँ साझा गरिमाक सम्बन्ध जोड़ैत अछि ।

४९७ आ ५४७क मीत-चयनपरम्परा फेर उपस्थित अछि । अधिकारक शब्द एहि रचनाकेँ अधिक नागरिक-सामाजिक दिशा दैत अछि, मुदा उदाहरणक ठोस प्रसंग सीमित ।

गजल ५६० : कने-कने सीखू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः २०-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः कने-कने सीखू ।

पाठ-साक्ष्य : “राखू स्पष्ट विचार—कने-कने सीखू” ; “जे नहि बूझल, पुछब ज्ञानक दुआर खोलैत अछि” ; “लेत अपन आकार—कने-कने सीखू” ।

‘कने-कने सीखू’ छोट चरणक संचयकेँ शिक्षा मानैत अछि । एक-एक करि पार होइत कठिनाई कौशलक आकार लेबाक दृश्यात्मक सादगी अछि ।

५५३क हुनर-निखारक संग समरूप धैर्य अछि । ‘कने-कने’क दोहराव अपन ध्वनि सँ क्रमिक प्रयासक चाल रचैत अछि, मुदा शिक्षणक वास्तविक सामग्री नहि खुलैत ।

५४१-५६० : अन्तरपाठीय परीक्षण

रुचिक चुनाव, सूचना-जाँच, भूल स्वीकार, मीतता आ व्यक्तिगत गति एहि

समूहक प्रमुख विषय अछि । ५२९/५३७/५४६/५५४क समाचार-विषयक,

४८७/४९३/५५२क गति-विषयक आ ५१८/५२१/५२८/५५०क प्रश्न-विषयक

निकट पुनरावृत्ति एकहि पुस्तकक आन्तरिक आत्मसमालोचनाक ठोस साक्ष्य अछि।

गजल ५६१ : अपन स्वर

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः अपन स्वर राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन बातक मान—अपन स्वर राखू” ; “राखू एहि पर ध्यान—अपन स्वर राखू” ; “जीवन बनत गान—अपन स्वर राखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

एहि गजलमे “अपन स्वर” व्यक्तिक स्वायत्तता अछि, मुदा स्वायत्तता आनक मत नहि सुनबाक छूट नहि । “सभक मत सुनब नीक”क बाद “मोनक प्रश्नो सुनू” रखला सँ आत्मनिर्णय संवादमे बनैत अछि, एकान्तमे नहि ।

अन्तिम शेरक संगीत-उपमा काव्यक भीतरक दृश्यात्मक क्षण अछि; अलग स्वर मेल रचि सकैत अछि । मुदा पहिनुक तीन शेर सलाहक अमूर्त शब्दमे बेशी निर्भर अछि; स्वरक कोई वास्तविक विवाद-वृत्तान्त नहि आबैत ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५६२ : भूलसँ सीखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः भूलसँ सीखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “करू अपन स्वीकार—भूलसँ सीखू” ; “आनू नब सुधार—भूलसँ सीखू” ; “साँच बनत आधार—भूलसँ सीखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“भूल नुकबैत रहब”क शर्त एहि गजलकें चूक-सुधारक नीति मात्र नहि, आत्मप्रमाणिकताक प्रश्न बनबैत अछि । दोष स्वीकार, फेर पुछब आ दोसरक चूकपर नहि हँसब—तीन स्तर एक-दोसरासँ जुड़ल अछि ।

रदीफ “भूलसँ सीखू” लगातार सीखबाक दिशा स्पष्ट करैत अछि, मुदा सभ शेर सकारात्मक सूत्रक रूपमे अछि। जँ एकटा विशिष्ट असफल प्रयोग वा संवाद रहैत तँ आग्रहक भावनात्मक घनत्व बढ़ित।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५६३ : बेर बाँटू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: बेर बाँटू

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने चुनू काम—बेर बाँटू” ; “एक-एक कऽ नाम—बेर बाँटू” ; “दिअ उचित आराम—बेर बाँटू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

“पढ़ब, खेलब, घरक काज”क त्रयी किशोर दिनचर्याक सामाजिक वास्तविकता लैत अछि। विश्राम आ निन्नकें श्रमक विरोधी नहि, आवश्यक भाग मानब एहि गजलक तर्क अछि।

“एक-एक कऽ नाम” वला क्रम-विधान काजक बाँटनीक छोटी क्रिया देखबैत अछि। दिनचर्याक ई व्यावहारिकताकें गजल ५७१ फेर उठबैत अछि; ताहि तुलना मे एहि पाठक काफिया “काम/विराम/नाम/परिणाम/ठाम/आराम” अपेक्षाकृत ठोस अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५६४ : साँच लिखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: साँच लिखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “जतए भेटए ज्ञान—साँच लिखू” ; “राखू एहि पर ध्यान—साँच लिखू” ; “बनत निज पहिचान—साँच लिखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“जे नहि बूझल से नहि गढ़ू” एहि कृतिक सर्वाधिक स्पष्ट प्रमाणनीति अछि । सुनल सूचना, अनुमान आ साक्ष्यक बीच दूरी राखब लेखनक नैतिक आधार बनैत अछि ।

कविता शब्दकें अपन आत्मपहिचानक दर्पण मानैत अछि; एहि उपमानमे जिम्मेदारी लेखकक भीतर घुसैत अछि । परन्तु लेखक आ स्रोतर टकरावक कोनो उदाहरण नहि, अतः प्रमाणमीमांसा सूत्रात्मक स्तरपर रुकैत अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५६५ : सुनि कऽ बाजू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः सुनि कऽ बाजू

मूल पाठ-साक्ष्य : “राखू स्पष्ट विचार—सुनि कऽ बाजू” ; “सुनू ओकर हँकार—सुनि कऽ बाजू” ; “खुलत नेहक दुआर—सुनि कऽ बाजू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

मीतक दुख सुनैत समय बीचमे अपन बात नहि आनबाक निर्देश एक ठोस संवाद-परिस्थिति रचैत अछि । एहि शेरसँ सुनबाक क्रिया सामाजिक सहानुभूतिक रूप लैत अछि ।

“व्यक्ति नहि, विषय पर चर्चा” विवादक नैतिक पद्धति होयत, मुदा कविता असहमतिक कठोरता खोलैत नहि । ‘सुनि कऽ बाजू’ रदीफक साँस-जकाँ आवर्तन विषय अनुरूप अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५६६ : कौड़ी बचाउ

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १८-३१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः कौड़ी बचाउ

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने करू विचार—कौड़ी बचाउ” ; “कम राखू उधार—कौड़ी बचाउ” ; “श्रमक ई उपहार—कौड़ी बचाउ” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

बाजारमे “जे चाही” आ “जे मन ललचाबए”क विभेद खर्चक नीति केँ उपभोक्ता-मनःस्थितिक आलोचना बनबैत अछि । कमाइक पाछाँक श्रम मोनमे रखबाक अन्तिम आग्रह आर्थिक कर्तव्यक सामाजिक आधार होइत अछि ।

ई गजल खर्चक निर्णयकेँ मीतक देखादेखीसँ मुक्त करबाक प्रयत्न अछि । मुदा कौड़ी, बाजार आ उधारक ठोस सम्भावनासँ बनल नाटकीय कथा नहियँ;

अधिकांश शेर निर्देशनात्मक रहि जाइत अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५६७ : गाछ रोपू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः गाछ रोपू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अँगना आनू बहार—गाछ रोपू” ; “हरियर करू संसार—गाछ रोपू” ; “धरती पहनत हार—गाछ रोपू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

गाछ रोपबाकेँ छाँह, चिड़ैक घर आ बिहानक गीतसँ जोड़ला पर पारिस्थितिकी जीवित सम्बन्ध बनैत अछि । “नन्हि बिरबा” सँ “पैघ छाँह” धरि समयक विस्तारण अर्थपूर्ण अछि ।

“धरती हरियर वस्त्र पहिरत” पारम्परिक मानवीकरण अछि; “धरती पहनत हार”मे सेहो सजावट प्रमुख अछि । रोपल बिरबाक पानि, रक्षा वा स्थानीय जलाभाव नहि आबैत, फलतः पर्यावरणीय आशा सौन्दर्यपर अधिक टिकैत अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५६८ : प्रश्न लिखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-
क्रम: १४-२९ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: प्रश्न लिखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “जागल जँ विचार—प्रश्न लिखू” ; “खोलू बुझबाक दुआर—
प्रश्न लिखू” ; “पढ़ू खुलल संसार—प्रश्न लिखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

एक उत्तर फेर दोसर प्रश्नक बाट खोलैत अछि—ई निरन्तर संशोधनशील ज्ञानक
मूल संकल्पना अछि। गुरु, पोथी आ प्रकृतिक अनेक स्रोतक उल्लेख जिज्ञासाकें
विद्यालयक भीतर सीमित नहि राखैत।

रदीफ “प्रश्न लिखू” जिज्ञासाकें अभिलेख बनबैत अछि; लिखित प्रश्न फेर
जाँचबाक सम्भावना देत। मुदा कविता स्वयं कोनो असमाधेय प्रश्न उपस्थित नहि
करैत; अतः स्वर शिक्षणात्मक।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५६९ : मीतक मान

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-
क्रम: १५-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: मान राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मीतक अपन मान—मान राखू” ; “शब्दपर दिअ ध्यान—मान
राखू” ; “भिन्न स्वरक गान—मान राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

हँसीक सीमा दोसरक दुख पर तय होइत अछि। विश्वासमे कहल गोपन बातक
रक्षा एकर नैतिक केन्द्र अछि, जाहिसँ मीतता केवल सँगत नहि, जिम्मेदारी बनैत
अछि।

अन्तमे भिन्न स्वरक गान बिम्ब मतभेदक स्वीकृति अछि। एहि गजलक कथ्य ५५९क मीत-चयनसँ जुड़ैत अछि, मुदा एतय जोर “चुनब” पर नहि, सम्बन्ध निभेबाक भाषा पर अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५७० : सपन सँ काज

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-३१ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: काज धरू

मूल पाठ-साक्ष्य : “सपन पर दिअ ध्यान—काज धरू” ; “श्रम बनत पहिचान—काज धरू” ; “मोन लए उड़ान—काज धरू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

सपन केँ “छोट-छोट डेगमे धरती पर उतरैत” देखेबाक क्रिया आकांक्षाकेँ दृश्य देत। लक्ष्यक पाछाँ लगातार हाथक काज रहब आन प्रेरक गजलसभसँ भिन्न रूपकात्मक बल रखैत अछि।

पहिल असफलता पछाति फेर सीखबक सलाह ५६२क संग जुड़ैत अछि। रदीफ “काज धरू” प्रयत्नक आवृत्ति देत अछि, मुदा वास्तविक सपन कोन अछि, से अनिर्दिष्ट।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५७१ : बेर बाँटू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: बेर बाँटू

मूल पाठ-साक्ष्य : “काजपर दिअ ध्यान—बेर बाँटू” ; “दिनक बनत पहिचान—बेर बाँटू” ; “सपन लए उड़ान—बेर बाँटू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

५६३ जकाँ एहि ठामो पढ़ाइ, खेल, विश्राम आ छोट काजक समय बाँटनी अछि। मुदा ५७१ “दिनक पहिचान” आ “सपन लाग् उड़ान” जोड़ैत समयक सुव्यवस्था केँ पहिचानक प्रश्न बनबैत अछि।

शीर्षक आ रदीफ ५६३क संग समान, तथापि काफियाक परिवार “ध्यान/विधान/पहिचान/सम्मान/ज्ञान/उड़ान” अछि। ई मापल जा सकयवला पाठान्तर अछि, पूर्ण नव कथ्य नहि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५७२ : पहिने सुनू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: पहिने सुनू

मूल पाठ-साक्ष्य : “ककरो अलग विचार—पहिने सुनू” ; “पूरा हो पुकार—पहिने सुनू” ; “खुलत नव संसार—पहिने सुनू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

बात बीचहि काटला सँ अर्थ अधूरा रहबाक सम्भावना संवादक विशिष्ट अनुभव अछि। सुननिहारक विनम्रता प्रश्न पूछबाक अधिकारसँ टकराइत नहि; मतभेदमे प्रश्नक स्वर महत्त्वपूर्ण अछि।

५६५ ‘सुनि कऽ बाजू’क तुलनामे एहि पाठमे “पहिने सुनू”क कालक्रम अधिक बलवान अछि। मुदा दुनू गजल लगभग एके नैतिक निचोड़ पर पहुँचैत अछि; दृश्य-नाटकीय विविधता कम।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५७३ : हुनर निखारू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १२-४२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: निखारू

मूल पाठ-साक्ष्य : “जे अछि ज्ञान—निखारू” ; “श्रमक सम्मान—निखारू” ;
“जीवनक गान—निखारू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

हाथ, मोन आ बुद्धिक संयुक्त श्रम एहि गजलमे हुनरकें केवल सिद्धान्तसँ अलग करैत अछि । आनक नीक काजसँ सीखि अपनो पहिचान बचेनाइ परम्परा आ मौलिकताक तनाव देखबैत अछि ।

“निखारू”क छोट रदीफ अभ्यासक लगातार क्रिया दर्शबैत अछि । घोषित मात्रा-सीमा १२-४२क अन्तर उच्चारणाधारित एके बहर मानबाक दावाकें स्वतः सिद्ध नहि करैत; ई पाठ अलग छन्द-जाँच माँगैत अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५७४ : सीमा राखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १४-३३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न · रदीफ: सीमा राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन मान—सीमा राखू” ; “बचल रहए सम्मान—सीमा राखू” ; “ई बातक ध्यान—सीमा राखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“अहाँक ‘नहि’ कें सेहो सहज बुझत”क शेर व्यक्तिगत सहमतिक अत्यन्त स्पष्ट साहित्यिक घोषणा अछि । मीतता कें स्वायत्त निर्णयक कसौटी पर परखबाक आग्रह अछि ।

असहज अनुभवमे विश्वस्त पैघ जनसँ कहबाक सलाह किशोर सुरक्षा सन्दर्भ दैत अछि । मुदा सामाजिक दबावक विशिष्ट पात्र नहि, तँ संघर्ष नाटकीय रूपँ नहि उभरैत ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५७५ : पढ़ि बुझू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः पढ़ि बुझू

मूल पाठ-साक्ष्य : “शब्दक भीतर विचार—पढ़ि बुझू” ; “तथ्य बनत आधार—पढ़ि बुझू” ; “बोधक हो विस्तार—पढ़ि बुझू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“शीर्षक देखि निष्कर्ष तुरन्त नहि निकालू” पाठकक पूर्वनिर्णय पर सीधा प्रहार अछि । लेखकक कथन आ प्रमाण अलग देखबाक आग्रह आलोचनाक अनुशासनक रूप लैत अछि ।

एकहि विषयपर दोसर मत खोजबाक आग्रह मतभेदकें ज्ञानसाधन मानैत अछि । पाँच शेर एकटा जाँच-पद्धतिक अनुक्रम बनैत अछि, तथापि साहित्यिक बिम्बक बदला तर्क-सूत्र प्रधान अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५७६ : बाट चुनू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-४५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः बाट चुनू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन पहिचान—बाट चुनू” ; “राखि आत्मसम्मान—बाट चुनू” ; “जीवनक गान—बाट चुनू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“सभ मीत एक दिशा जाए”क सामूहिक दबावक दृश्य व्यक्तिगत चयनकें सामाजिक संदर्भ दैत अछि । दिशा बदलि सकबाक छूट जीवनक पहिल निर्णयकें अपरिवर्तनीय नियति मानैत नहि ।

“अपन स्वर, हुनर, काज”क त्रयी पहचानक गतिशील रूप खोलैत अछि । ५६१क स्वर आ ५७०क काज इएह ठाम मिलैत अछि; एकर समेकन प्रभावी, नवीन दृश्य सीमित ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५७७ : निज बात

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-३७ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न · रदीफः सहेजि राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “भीतक मान—सहेजि राखू” ; “बचल रहए सम्मान—सहेजि राखू” ; “सम्बन्धक ज्ञान—सहेजि राखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

अनुमति बिना सन्देश, चित्र वा निजी लिखाइ नहि बाँटबाक शेर समकालीन अंकीय माध्यमक नैतिकता सटीक रूपेँ उठबैत अछि । गोपनता केवल मौन नहि, दोसरक निर्णयाधिकार अछि ।

विश्वास बनबामे बेर आ टूटबामे क्षणक विरोध काव्यात्मक संक्षिप्तता लैत अछि । ५८१ मे ई विषय अधिक जटिल बनेत, कारण ओतय सुरक्षा संकटमे विश्वस्त वयस्कक कहबाक अपवाद अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५७८ : प्रश्नक साहस

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-३५ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास · यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र · रदीफः प्रश्न करू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मनमे उठल विचार—प्रश्न करू” ; “खोजू ठोस आधार—प्रश्न करू” ; “राखू निज अधिकार—प्रश्न करू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

प्रश्न केँ विरोध नहि, विचारक गति मानब ज्ञान आ अधिकारक मेल अछि । “गुरु, पोथी आ प्रयोग” तीन अलग प्रमाण-पथक व्यावहारिक गणना अछि ।

५६८क “प्रश्न लिखू”सँ भिन्न एतय प्रत्यक्ष प्रश्न पूछबाक साहस केन्द्रीय अछि। मुदा जिज्ञासा उत्पन्न करयवला ठोस विरोधाभासक अभावसँ कविता विचार-घोषणा बनि रहैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५७९ : दिनक क्रम

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-४० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: क्रम बनाउ

मूल पाठ-साक्ष्य : “काजक आधार—क्रम बनाउ” ; “खुलत दिनक दुआर—क्रम बनाउ” ; “सीखक हो विस्तार—क्रम बनाउ”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

दिनचर्याक योजना केँ “कठोर देवाल नहि” कहब एहि समूहक एक महत्त्वपूर्ण सुधार अछि। समय-वितरण केवल नियम नहि, परिस्थिति अनुसार संशोधन योग्य प्रक्रिया अछि।

५६३ आ ५७१सँ स्पष्ट आवर्तन अछि। अन्तिम शेरमे रहल काजक अगले दिन समीक्षा करबाक बोध एकर थोड़े अलग उपयोगिता बनबैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८० : दबावमे निर्णय

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-४३ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: अपन मन सुनू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन मान—अपन मन सुनू” ; “बचत निज पहिचान—अपन मन सुनू” ; “निर्णयमे राखू ध्यान—अपन मन सुनू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

निर्णय शरीर, समय आ मनक सीमासँ जुड़ल अछि—ई आग्रह समूह-दबावक विरुद्ध निजी अधिकारक ठोस कसौटी अछि। “ना कहब असभ्यता नहि”मे बोलचालक नैतिक साहस अछि।

सत्य मित्र असहमति सुनत, ई निष्कर्ष ५७४क सहमतिविषयक काव्यक संग घनिष्ठ अछि। फेरो एहि गजलमे निर्णयक तात्कालिक दबावक सङ्केत अधिक स्पष्ट अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५६१-५८० : अन्तरपाठीय अवलोकन

एहि बीस गजलमे आत्मस्वर, सुनबाक शिष्टाचार, गोपनता, सीमा, समय-व्यवस्था आ प्रश्नक अधिकार बारम्बार अबैत अछि। समान रदीफवला ५६३/५७१ तथा समीपवर्ती ५६५/५७२क तुलना सँ स्पष्ट होइत अछि जे विषयगत सदृच्छा मात्र स्वतंत्र रचनात्मक उपलब्धिक प्रमाण नहि; वास्तविक भिन्न दृश्य, भाषिक जोखिम आ निष्कर्षक फेर-बदल सेहो जाँचल जाएबाक चाही।

गजल ५८१ : मीतक गोपन बात

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-५० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: गोपन राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मीतक मान—गोपन राखू” ; “बचल रहए सम्मान—गोपन राखू” ; “समझक ई ज्ञान—गोपन राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

विश्वासमे देल निजी बातक संग सुरक्षा-संकटक अपवाद जोड़बाक कारण गोपनता यान्त्रिक नियम नहि बनैत। गजल अधिकार आ रक्षा दुनूक न्यायसंगत सीमा परखैत अछि।

“चित्र, सन्देश वा निजी लिखाइ” अंकीय युगक वास्तविक वस्तु अछि। ५७७क तुलनामे एहि पाठक अंतिम शेर अधिक जटिल आ सामाजिक रूपैँ उत्तरदायी अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८२ : अपूर्णतासँ सीख

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-
क्रम: १८-४६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: फेर सँ सीखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “एक चूक नहि हार—फेर सँ सीखू” ; “भेटत नब आधार—फेर
सँ सीखू” ; “सीखू नीक व्यवहार—फेर सँ सीखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

अपूर्ण प्रयत्नक कारण लिखि लेब, नव विधि आजमेनाइ आ प्रगतिमे स्वयं सँ
तुलना—ई गजल सीखबाक क्रमशः संशोधन-प्रक्रिया स्पष्ट करैत अछि।

५८२क चूक-स्वीकारसँ विषय मिलैत अछि, मुदा ५८२ असफलताक कारण-लेखा
आ अगिला प्रयोगक माध्यमसँ अधिक प्रक्रिया-केंद्रित अछि। “फेर सँ सीखू”क
रदीफ पुनः प्रयोगक लय दैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८३ : अपन सीमा

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-
क्रम: १४-५४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न · रदीफ: सीमा राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन मान—सीमा राखू” ; “राखू आत्मसम्मान—सीमा राखू”
; “बचल रहए सम्मान—सीमा राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

व्यक्तिक मन आ देहक असहजता केँ स्पष्ट कहबाक अधिकार मानल गेल अछि।
परस्पर सहमति बिना नेहक आधार नहि—ई शीर्षकक भावनात्मक केन्द्र।

५७४ आ ५८०क तुलना बतबैत अछि जे सीमा-विषय फेर उभरैत अछि; एतय “नेह”क भीतर दबावक आलोचना प्रमुख, जखनकि ५८० समूह-दबावक निर्णय पर केन्द्रित छल।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८४ : प्रमाण देखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-४४ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: जाँचि लिअ

मूल पाठ-साक्ष्य : “जे सुनलहुँ ओकर आधार—जाँचि लिअ” ; “के करैत अछि प्रचार—जाँचि लिअ” ; “साँचक दृढ़ आधार—जाँचि लिअ”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

एक चित्र, छोट दृश्यांश वा अग्रेषित सन्देश सम्पूर्ण साँच नहि—गजल दृश्यसाक्ष्यक सीमापर सटीक प्रश्न उठबैत अछि। पसिन्न मतक विरोधमे सेहो प्रमाण माँगबाक आग्रह आत्मपक्षपातक समालोचना अछि।

५६४क “साँच लिखू” आ ५७५क “पढ़ि बुझू”क बाद एतय पाठक सँ सार्वजनिक सूचना-जाँचक काज अपेक्षित अछि। तिथि, स्रोत आ सन्दर्भक उल्लेख सूत्रबद्ध अछि, मुदा प्रसंग ठोस।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८५ : धीरे बढू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-४६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स · रदीफ: धीरे बढू

मूल पाठ-साक्ष्य : “करू छोट प्रयास—धीरे बढू” ; “एहिसँ होएत विकास—धीरे बढू” ; “बाटमे राखू विश्वास—धीरे बढू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

विश्राम केँ हारक बदला पुनः प्रयासक अवकाश माननाई ई कविता सँवेदनशील बनबैत अछि। दोसरक गतिसँ तुलना नकारि काल्हिक अपन स्थिति केँ मापक बनाओल गेल अछि।

“धीरे बढ़ू”क रदीफ चालकेँ मन्द करबाक श्रवणानुभव देत; मुदा बहुसंख्यक शेर प्रेरक सूची बनैत अछि। अघाएल व्यक्तिक वास्तविक कथा अनुपस्थित।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८६ : थाकल मोन

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १३-२६ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म · रदीफ: दिअ

मूल पाठ-साक्ष्य : “थाकल मोनकेँ विराम दिअ” ; “समय बाँटि फेर काम दिअ” ; “स्वास्थ्यकेँ पहिल मुकाम दिअ”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

एहि गजलमे लगातार बैसल रहनाई केँ पढ़ाई नहि मानल गेल अछि। निन्न घटा कऽ समय जीतबाक निस्सारता आ पानि पीबि अकास तकबाक छोट क्रिया अनुभवसँ जुड़ल अछि।

अन्त “स्वास्थ्यकेँ पहिल मुकाम” देलासँ विश्राम निजी आलस्यक बदला आवश्यक श्रमाधार बनैत अछि। तथापि “तखन देखू परिणाम दिअ”मे कथन/वाक्य-गठन असहज अछि; मूल पाठक सुधार-समीक्षामे ई उल्लेखनीय।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८७ : संग काज

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १२-२८ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -थ · रदीफ: राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “दलमे सभक साथ राखू” ; “स्पष्ट अपन बात राखू” ; “नेहक सहज साथ राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

दलमे जे नहि बुझैत अछि ओकरो प्रश्नक ठाम देब समूहकें समावेशी बनवैत अछि। श्रेय बाँटबाक आदेश केवल मैत्री नहि, सामूहिक श्रमक न्याय अछि।

“एक जन सभ निर्णय करए तँ दल छोट भऽ जाइत” नाटकीय रूपकक जकाँ अछि। ई गजल ५६५क विवाद-विषयक संस्कार कें सार्वजनिक सहयोगक क्षेत्रमे विस्तार दैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८८ : सहायता माँगू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २५-३० मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास · यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: समयपर

मूल पाठ-साक्ष्य : “बडु बढि जाए भार—सहायता माँगू समयपर” ; “खोलू विश्वासक दुआर—सहायता माँगू समयपर” ; “एहने बनै व्यवहार—सहायता माँगू समयपर”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

सहायता माँगब कें सामर्थ्यक कमी नहि माननाइ एहि रचनाक सकारात्मक विचार अछि। समस्या छोट रहिते साझा कएलाक बाद संकट टारबाक व्यावहारिक सम्भावना बताओल गेल अछि।

गुरु, मीत आ घरक जनक सूची उचित सहायक स्रोत चिन्हैत अछि; मुदा सहायता देब-लेबक परस्परता अन्तिम शेरमे बेसी रूप लैत अछि। “समयपर”क लम्बा रदीफ शेरक गति पर दबाव दैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५८९ : अपन सीमा राखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र · रदीफ: राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने अपन मनमे साफ विचार राखू” ; “बाजबामे सदा मृदु व्यवहार राखू” ; “नेहमे संवादक दुआर खुलल राखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“नहि कहनाइ बैर नहि” पाँति व्यक्तिगत सीमाक रचनासभक सार अछि, मुदा एतय तुलनात्मक रूपसँ संक्षिप्त वाक्य अछि । अधिकारक संग मृदु व्यवहार जोड़ब प्रतिरोध आ सम्बन्धक सन्तुलन रखैत अछि ।

पूर्व ५७४/५८३मे मात्रा-अन्तर बहुत पैघ छल; ५८९मे “२०-२२ मात्रा प्रति मिसरा” आ “द्विखण्डी निकट-समलय” घोषणा संरचनात्मक सुधारक प्रयास देखबैत अछि । तथापि वास्तविक अरूजी समानता स्वतंत्र उच्चारण-जाँच बिना प्रमाणित नहि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५९० : काजक क्रम

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय · यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र · रदीफ: करू

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने अपन समयक सँभार नीक करू” ; “सूचीक नहि बड्ड विस्तार कखनो करू” ; “अगिला बेर समयक सँभार नीक करू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

काजकै प्राथमिकता अनुसार बाँटि पूरा भेल काजसँ सीख लिखबाक आग्रह दिनचर्याक संशोधनशील विधि बनबैत अछि । “सूचीक नहि बड्ड विस्तार”क वाक्य योजनाक सीमापर ध्यान दैत अछि ।

५६३, ५७१ आ ५७९क पुनरावर्तन स्पष्ट अछि, मुदा एतय २०-२२ मात्राक निकटता घोषित करबाक कारण काव्य-रूपक सँ औपचारिक अनुशासन दिस परिवर्तन अछि । ‘करू’क व्यापक रदीफमे शेर-भिन्नता सीमित रहैत अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ५९१ : साँच जाँचू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा · उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय · यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ार · रदीफः जाँचू

मूल पाठ-साक्ष्य : “आएल प्रत्येक समाचार आइ जाँचू” ; “दाबी पाछाँक साँच आधार जाँचू” ; “बुद्धिक अपन संतुलित विचार सदा जाँचू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

अन्तिम गजल अपन पहिल विचारकें जाँचबाक आग्रह सँ शुरू होइत अछि । “सभ दोहराबए, तइयो बात साँच नहि” सामूहिक पुनरावृत्तिक विरुद्ध प्रामाणिक ज्ञानक प्रतिपक्ष अछि ।

कविता संदेहकें निराधार निषेध नहि बनबैत; स्रोत, चित्र आ कथनक आपसी जाँचक माध्यमसँ संतुलित विवेकक माँग करैत अछि । ई ‘साँच लिखू’ (५६४) आ ‘प्रमाण देखू’ (५८४)क क्रमक सार्थक समाप्ति अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

खण्ड १क तीन लघु काव्यरचना : रुबाइ, कता १ आ कता २

मूल पुस्तकक मुखपृष्ठ “५९१ गजल · १ कता · २ रुबाइ” कहैत अछि, मुदा गजल १ सँ पहिने वास्तविक पाठक तीन शीर्षक “रुबाइ”, “कता १”, “कता २” अछि । एहि भेदकें गुप्त रूपसँ सुधारल नहि गेल; लेखकीय/प्रकाशकीय पुनर्पुष्टि धरि आन्तरिक शीर्षकक आधारपर आलोचना कएल गेल ।

रुबाइ : मेघ आ बलुआ माटिक अनुत्तरित आकांक्षा

“कारी अनहार मेघ, आ नै होइए”क अनिश्चय आ “कत्तौ बलुआ माटि, खा नै होइए”क धरतीगत कष्ट छोट पाठमे प्रकृति आ जीवनोपार्जनक अन्तर दिखबैत अछि । “दाहीजरती”क चित्र मेघक जल लाबबाक प्रतीक्षाकें बल दैत अछि । “आ नै होइए”क ध्वनि निराशा आ मौसमी अवरोधक दुहर प्रभाव रचैत अछि; परन्तु चारि मिसरा होयबाक कारण मात्र एकरा शास्त्रीय रुबाइ मानब पर्याप्त नहि ।

कता १ : साँझ, उजास आ अस्थिर काल

“एक्केटा गप बुझबैत साँझ भेल बुझाइए”सँ कथकक ज्ञान स्वयं शंकास्पद बनैत अछि। “नै कोनो रातिक आ नै दिनक मेल बुझाइए”क अन्तिम पाँति साँझकें सन्धि नहि, काल-विभ्रमक क्षेत्र बनबैत अछि। उजास आ अन्हारक टकरावमे अनुभूति सघन अछि; चारि मिसराक लघु संरचना एकरा गजल-पूर्विका बनबैत अछि, किन्तु कताक पारम्परिक रूपक पृथक छन्द/तुक परीक्षण अपेक्षित अछि।

कता २ : व्यक्तिगत सपनसँ सामूहिक बाट

“सबहक सपना समेटल आ आगाँ बढ़लौ”क प्रथमपुरुष कथन अन्तिम “सभ चलै चलू”मे सामूहिक आज्ञा बनैत अछि। “निन्नोक बाद खुजल रस्ता” जागरणक रूपक अछि; व्यक्तिगत उपलब्धि सभक बाट होयबाक आकांक्षा एतय अछि। मुदा निष्कर्षक प्रेरक स्वर जटिल अनुभवकें छोट नैतिक सूत्रमे समेटि देत; एहि सीमाक विश्लेषण आवश्यक।

नामकरण-संशोधनक प्रश्न: प्रस्तुत तीनू पाठक मूल शीर्षक यथावत् राखल गेल अछि। आवरणक “१ कता, २ रुबाइ” आ देह-पाठक “१ रुबाइ, २ कता” एकरूप करब लेखकीय पाठ-निर्णयक विषय अछि; एहि अध्ययनमे स्वयं कल्पित प्रतिशीर्षक नहि देल गेल।

गजल ५८१-५९१ : अन्तरपाठीय अवलोकन

शेष एगारह गजलमे आत्मसहायता, सहकारिता, खबरक सत्यापन आ सीमाक पुनरावर्तन अछि। ५८९-५९१क निकट-समलयक घोषणा संग्रहक पछिला रूप-संकुचन दर्शबैत अछि। मूल ५९१ गजल सम्पूर्ण भेला परो १ कता/२ रुबाइ सम्बन्धी मुखपृष्ठ आ अन्दरक “कता १/कता २” पाठभेदक निर्णय अलग लेखकीय पुष्टि माँगैत अछि।

दीवान-ए-विदेह . खण्ड २ : गजल ५९२-११८१

खण्ड २क स्वतंत्र मूल Word संस्करणक पाठमे अधिकांश गजलक पाछाँ “संगीतमय रूप” नामसँ गायन-योजना जोडल अछि। गायन-योजनाकें मूल शेरक हिस्सा नहि मानि अलग परखल जाएत। प्रत्येक गजलक गणना मूल रचनात्मक भागपर आधारित अछि; मात्रिक समता आ अरुजी बहरक समानता एकहि दावा नहि।

गजल ५१२ : साँचक मान

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यतिः ८+१०। काफियाः (मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण, दान) · रदीफः राखू

मूल शेर-साक्ष्य : “भोर रौद गाम बीच / मोन नीक मान राखू”; “थाक मोन फेर जाग / काज संग ध्यान राखू”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

खण्ड २क आरम्भ प्रेम-वियोग नहि, सार्वजनिक सत्य आ मानक आग्रहसँ होइत अछि। “भोर रौद गाम बीच” आ “मोन नीक मान राखू”क मेल समाज आ निजी विवेककँ एक दृश्य बनबैत अछि।

आवंटित १८ मात्रा आ ८+१० यतिक स्पष्ट प्रयोग खण्ड १क मिश्र मात्रा घोषणासँ अलग अछि। मुदा मतलाक पहिल मिसरामे घोषित रदीफ “राखू” अनुपस्थित अछि; एकरा शास्त्रीय परिपूर्ण मतला मानब अनुचित।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ५१३ : ओकर नाम नोर छल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यतिः ८+१०। काफियाः (नोर, भोर, जोर, डोर, घोर, चोर) · रदीफः छल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन बीच / ओकर नाम नोर छल”; “नेह टूट मोन बीच / मोनक दुख जोर छल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“ओकर नाम नोर छल” स्मृतिक व्यक्तिक नामकँ भावमे बदलि दैत अछि। राति-भोरक आवर्तन दुःखक समयबोध रचैत अछि; कोनो व्यक्तिगत दृश्य नहियँ।

घोषित नोर/भोर/जोर/डोर/घोर/चोर काफियामे ध्वनिक निकटता अछि, मुदा हर शेरमे “छल”क स्थिति आ आरम्भिक मतलाक समता परखबाक अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ५९४ : मोन बीच रात रहल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+२ · यति: ८+९। काफिया: (हार, पार, धार, भार, सार, तार) · रदीफ: रहल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात नोर मोन बीच / नेह टूट हार रहल”; “मौन रात मोन बीच / नेह संग धार रहल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“मीत दूर पार रहल” दूरीक स्थानात्मक बिम्ब अछि, जखनकि “मोन बीच भार रहल” वियोगकें देहगत वजन दैत अछि।

१७ मात्रा आ ८+९क समविभागक घोषणा अछि; भावक बहुलांश ५९३क राति, नोर आ भोर दोहरबैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ५९५ : मीत मोन प्राण छल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२ · यति: ८+८। काफिया: (प्राण, मान, ध्यान, गान, दान, ज्ञान) · रदीफ: छल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात मौन मोन रोय / मीत मोन प्राण छल”; “नाम मीत मोन जाग / मीत मोन ध्यान छल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

मीत केँ “प्राण”, “मान”, “ध्यान” आ “गान” कहब एकटा प्रिय व्यक्तिक अनेक मानसिक रूप बनबैत अछि।

१६ मात्राक ८+८ समभागक घोषणा अधिक सुगठित देखाइत अछि, मुदा एहि रूपमे स्मृति-पुनरावृत्ति एतेक बेसी जे स्वतंत्र घटना अनुपस्थित।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ५९६ : नेहक अन्तिम छोर

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+२ · यति: ८+९। काफिया: (नोर, भोर, जोर, डोर, घोर, चोर, ठोर, छोर) · रदीफ: रहल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात मौन मोन रोय / नेह बीच नोर रहल”; “मीत दूर घर मौन / नाम देत जोर रहल”। मूल पाठमे १४ शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

नेहक अन्तिम छोरक प्रश्नमे “घाव बचल”क प्रतिमान वियोगक बचेबाक कठोरता लैत अछि; स्मृति नेहक डोर बनि रहैत अछि।

५९३-५९५क चान, भोर, नोर आ दूर मीतक साँचा फेर उपस्थित। एतय छहू शेरक अलग अर्थपर सूक्ष्म जाँच आवश्यक, केवल काफिया बढ़ा देब विस्तार नहि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ५१७ : अहाँ बिनु रहल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+१+२+२+२+२ | २+१+२+१+१+१+२ · यतिः ११+१० । काफियाः (नोर, भोर, डोर, छोर, जोर, ठोर, सोर, ओर) · रदीफः अहाँ बिनु रहल

मूल शेर-साक्ष्य : “ओहि दिन नेह टूटल / नोर अहाँ बिनु रहल”; “राति नोर धार सूखल / डोर अहाँ बिनु रहल” । मूल पाठमे १४ शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“अहाँ बिनु”क दोहराव अनुपस्थित व्यक्तिक नाम हटाकऽ शून्यक उपस्थिति बनबैत अछि । पानिधार सूखला परो नोर नहि थमबाक विरोध असरदार अछि । ओहि राति, ओहि बाट आ ओहि साँझक पुनरावृत्ति स्मृतिक समय बाँधैत अछि; “अहाँ बिनु रहल” व्याकरणिक रूपेँ पूर्ण स्वाभाविक अछि कि नहि, ई पाठोच्चारणमे परखबाक चाही ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ५१८ : जे मोनसँ नै गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यतिः ८+९ । काफियाः (नोर, भोर, डोर, छोर, जोर, सोर, ठोर, कोर) · रदीफः मोनसँ नै गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात ढल चान म्लान / नोर मोनसँ नै गेल”; “भीत गेल घर सून्न / डोर मोनसँ नै गेल” । मूल पाठमे १४ शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

नोर, भोर, डोर, छोर स्मृतिमे टिकि रहल विभिन्न सम्बन्धक चिन्ह बनैत अछि । “नेह मोनसँ नै टूट” प्रत्यक्ष कथन अछि, मुदा दावा गरभित नहि ।

रदीफ “मोनसँ नै गेल” निश्चित अछि, परन्तु किछु दोसर मिसरामे ओकर स्थान बदलि “नै टूट” बनि गेल; एतय निर्धारित रदीफक औपचारिक अनुपालन नहि होइत ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ५१९ : अहाँ मोनमे रहि गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+१+२+२+२+१+१+२ · यति: १०+१३ । काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, घोर, ठोर) · रदीफ: अहाँ मोनमे रहि गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान ढल नाम मीत / नोर अहाँ मोनमे रहि गेल”; “नेह टूट घाव जाग फेर / डोर अहाँ मोनमे रहि गेल” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“अहाँ मोनमे रहि गेल” वियोगक व्यक्तिगत सम्बोधन अछि; चान ढलला पर रहि गेल नाम स्मृति आ कालक विरोध उभारैत अछि ।

नोर-भोर-नेह-डोरक पुनरावृत्ति ५१७ आ ५१८सँ बहुत निकट अछि । नव भाषा-लय घोषित भेला परो आन्तरिक दृश्य-बदलाव कम ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६०० : जे नोर मोनमे जागल अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १०+१२ । काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनमे जागल अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / नोर मोनमे जागल अछि”; “नेह टूट मोन रात घोर / डोर मोनमे जागल अछि” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“नोर मोनमे जागल अछि” दुखकें निष्क्रिय भण्डार नहि, जागल चेतना बनबैत अछि । भोर, डोर, नाम आ घाव सब जागल रहबाक समान सूत्रमे बान्हल अछि ।

“मोनमे जागल अछि” रदीफ भाव-विस्तारक अवसर दैत अछि, मुदा समान पृष्ठभूमि ‘रात चान मौन घर बीच’क पुनरागमन स्वतन्त्र बिम्ब-सृष्टि सीमित करैत अछि ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६०१ : जे हमर संग रहैत अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+२+२+२+२ | २+१+२+२+१+२+१+१ · यतिः १०+१२ । काफियाः (नोर, डोर, सोर, भोर, छोर, ठोर) · रदीफः हमर संग रहैत अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / नोर हमर संग रहैत अछि”; “नेह टूट मोन रात घोर / सोर हमर संग रहैत अछि” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“हमर संग रहैत अछि” रदीफ अभावक विरोधमे स्मृतिक संगत बनबैत अछि; नोर आ भोर एक्के संग ठहरैत अछि ।

अंतिम शेरमे नेहक रहलासँ स्वर आश्वासन दिशि घुरैत अछि, मुदा अन्य पाँति ६००क दृश्यक्रमक लगभग समान अछि ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६०२ : ओ नोर हमरा मोन पड़ैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः १५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२ | २+२+२+१+२+२ · यतिः ४+११। काफियाः (नोर, भोर, डोर, छोर, ठोर, सोर, कोर) · रदीफः हमरा मोन पड़ैए

मूल शेर-साक्ष्य : “ओ नोर / हमरा मोन पड़ैए”; “ओ डोर / हमरा मोन पड़ैए”। मूल पाठमे १२ शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

एहि रचनाक मिसरा अत्यन्त छोट अछि: “ओ नोर / हमरा मोन पड़ैए”। ई आकार रटनासँ अधिक भाव-आकस्मिकताक रूप पाबि सकैत अछि।

किन्तु “ई नेह / हमरा बडु रुवैए” जकाँ शेरमे भाषा आ व्याकरणक प्रश्न अछि; काफिया-रदीफक क्रमो सभ शेरमे एकरूप नहि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६०३ : ओ भोर हमरा मोन पड़ैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+१+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+२+२ · यतिः ११+१३।

काफियाः (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफः हमरा मोन पड़ैए

मूल शेर-साक्ष्य : “आइ साँझ बडु गुम्म अछि / नोर हमरा मोन पड़ैए”; “आइ मोन बडु सोर अछि / डोर हमरा मोन पड़ैए”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“आइ साँझ बडु गुम्म अछि”क वायुमण्डल निजी दुखक बाहरी समकक्ष बनैत अछि।

दू शब्दसमूह “मोन पड़ैए” आ “संग रहैए” एके गजलमे दोसर मिसराक अन्तमे बदलैत अछि; एके रदीफक दावा एहि पाठमे अक्षुण्ण नहि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६०४ : प्रीत हमरा भीतर अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १०+१२। काफिया: (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: हमरा भीतर अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / मीत हमरा भीतर अछि”; “नेह टूट मोन रात घोर / गीत हमरा भीतर अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“प्रीत हमरा भीतर अछि” बाहरी अनुपस्थिति सँ आत्मिक अस्तित्व दिस स्वर बदलैत अछि। मीत आ गीत आन्तरिक जगतमे छैक, भले घर सून्न हो।

रदीफ “हमरा भीतर अछि” किछु शेरमे अनुपस्थित आ साधारण वक्तव्य अछि; ई खण्डक औपचारिक गजल-विधानसँ दूरी चिन्हेबाक पर्याप्त आन्तरिक संकेत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६०५ : दाग मोनसँ नहि जाइए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+१+२+२+२+१+१ | २+२+१+१+१+२+१+२ · यति: ११+१२। काफिया: (दाग, आग, राग) · रदीफ: मोनसँ नहि जाइए

मूल शेर-साक्ष्य : “आइ साँझ बड्डु गुम्म अछि / दाग मोनसँ नहि जाइए”; “आइ मोन बड्डु सोर अछि / राग मोनसँ नहि जाइए” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“दाग” आ “आग”क काफिया स्मृतिक घावमे ताप जोड़ैत अछि । भीतरी चिन्ह नष्ट नहि होइत—ई सात शेरक दोहरायल अनुभूति अछि ।

अन्तिम शेरक घाव, शुरूक दाग आ मध्यक नामक सम्बन्ध खोलब सम्भव छल, मुदा पाँतिक अधिकांश आधार-छवि ६०३सँ समान अछि ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६०६ : मीत फेर नहि भेटल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+१+१+२+२ · यति: १०+१० । काफिया: (मीत, गीत, प्रीत, रीत) · रदीफ: फेर नहि भेटल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / मीत फेर नहि भेटल”; “नेह टूट मोन रात घोर / प्रीत फेर नहि भेटल” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

मीत, गीत, प्रीत, रीत—चारू काफिया गुमशुदगीक सामाजिक आ भावनात्मक स्तर क्रमश: बनबैत अछि ।

तथापि “नेह फेर नहि भेटल” आ “निन्न फेर नहि भेटल”क बीच अर्थगत दूहराव अधिक; निश्चित रदीफ रहला परो बाह्य दृश्य नहि बदलैत ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६०७ : नोर मोनमे बसल अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यतिः १०+११। काफियाः (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफः मोनमे बसल अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / नोर मोनमे बसल अछि”; “नेह टूट मोन रात घोर / डोर मोनमे बसल अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“मोनमे बसल अछि” दुखक स्थायित्व अछि; घाव आ नेह दुनू आत्मक भीतर टिकैत अछि।

६०० आ ६०१ जकाँ एक्के “रात चान मौन घर बीच” आरम्भ; फर्क मुख्यतः रदीफक कालविधानमे अछि, अनुभव-विस्तारमे नहि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६०८ : नोर अहाँ बिनु रहि गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+२+२+२ | २+१+२+१+१+१+१+२ · यतिः १०+११। काफियाः (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफः अहाँ बिनु रहि गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / नोर अहाँ बिनु रहि गेल”; “नेह टूट मोन रात घोर / डोर अहाँ बिनु रहि गेल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“अहाँ बिनु रहि गेल” शब्दयोजना अनुपस्थित व्यक्तिक उपस्थिति पर जोर देत। ६०७क सातू शेरक दृश्यक्रम मिलैत अछि; केवल “बसल अछि” सँ “अहाँ बिनु रहि गेल” बदलला पर वास्तविक स्वतंत्र काव्य-इकाईक प्रश्न उठैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६०९ : मीत मोनमे रहि जाइए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+१+१+२+१+२ · यति: १०+१३। काफिया: (मीत, गीत, प्रीत, रीत) · रदीफ: मोनमे रहि जाइए

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / मीत मोनमे रहि जाइए”; “नेह टूट मोन रात घोर / प्रीत मोनमे रहि जाइए”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“मीत मोनमे रहि जाइए” वर्तमान कालक निरन्तरता स्मृतिक स्थायी गति दर्शबैत अछि।

६०६क मीत/गीत/प्रीत/रीतक काफियाक पुनः प्रयोग आ ६०७क दृश्यक्रमक साम्य नवीन कथ्यक सीमा देखबैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१० : भूल मोनसँ नहि गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति: १०+९। काफिया: (भूल, फूल, शूल, मूल) · रदीफ: मोनसँ नहि गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / भूल मोनसँ नहि गेल”; “नेह टूट मोन रात घोर / शूल मोनसँ नहि गेल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“भूल मोनसँ नहि गेल” नोर-डोरक पुरान शब्दसमूहसँ फूल-शूल-मूल दिशि काफिया हटबैत अछि; दोष वा स्मृतिक प्रश्नमे नब सम्भावना अछि।

मुदा मूल दृश्यक्रम फेर “रात चान मौन घर बीच” अछि; भूलक वास्तविक चरित्र नहि खुलेलासँ शीर्षकक अर्थ-अवसर अधूर रहैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ५१२-६१० : अन्तरपाठीय अवलोकन

द्वितीय खण्डक आरम्भिक उन्नैस गजलमे रदीफ बदलैत अछि, मुदा राति-चान-भोर-नोर-डोरक अनेक मिसरा एक्के क्रममे बेर-बेर आवैत अछि। पहिल खण्डक किशोर नैतिक-प्रश्नसँ अचानक वियोग-स्मृतिपर संक्रमण स्पष्ट अछि। पहिल १९ प्रविष्टिक संगीत-निर्देशसभक पुनरुक्त ढाँचा सेहो स्वतंत्र समीक्षाक विषय अछि।

गजल ६११ : नेह एखनो बचल अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १०+११। काफिया: (नेह, गेह, मेह, देह) · रदीफ: एखनो बचल अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / नेह एखनो बचल अछि”; “नेह टूट मोन रात घोर / मेह एखनो बचल अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“नेह एखनो बचल अछि”क आशा “नेह टूट मोन रात घोर”क वियोगसँ टकराइत अछि। नेह नष्ट नहि होएबाक भावक संग घाव बाँचि रहल अछि—एहि द्वैतमे सम्भावित अर्थ अछि।

६०७/६१०क रात-भोर-घर-घावक दृश्य फेर आवैत अछि। काफियाक नेह/गेह/मेह परिवार रहलो पर नाम आ घावक शेर अन्तिम पदमे घोषित काफिया रखैत नहि; रूपगत एकरूपता अधूरी।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१२ : ओ ठोर फेरो मोन पड़ैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · यति: १०+१३। काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफ: फेरो मोन पड़ैए

मूल शेर-साक्ष्य : “रात चान मौन घर बीच / नोर फेरो मोन पड़ैए”; “नेह टूट मोन रात घोर / डोर फेरो मोन पड़ैए”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“फेरो मोन पड़ैए”क वाक्य स्मृतिक पुनरावर्तनक काल-बोध अछि। नोर सँ डोर धरि बिम्ब क्रमश: दुःख, सम्बन्ध आ दूरी चिन्हबैत अछि।

“ओ ठोर” शीर्षक पाठक बीच नहि विकसित भऽ सकैत: ओतय वास्तविक बाजल शब्द अथवा मौन संवादक विशिष्ट साक्ष्य नहि। पूर्व ६०८क समान दृश्य-क्रम एहि स्वतंत्र शीर्षकक औचित्य कमजोर करैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१३ : जे नोर हमरा छोड़ि नहि गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति: १४+९। काफिया: -ोर (नोर, डोर, सोर) · रदीफ: छोड़ि नहि गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सून्न अछि नोर नहि थामल / नोर छोड़ि नहि गेल”; “चान दूर अछि नोर नहि थामल / सोर छोड़ि नहि गेल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत

अच्छि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अच्छि।

“घर सूत्र” आ “मीत दूर”क बादो नोर आ डोर नहि छोड़बाक विरोध स्मृतिक अनिच्छित स्थायित्व अच्छि। एकर स्वर वियोगक अनुगूँज रखैत अच्छि।

“नोर छोड़ि नहि गेल”क पुनरुक्ति भावकै केन्द्रित करैत अच्छि, मुदा “नेह टूटि नहि गेल”मे घोषित रदीफ बदलि जाइत अच्छि। मूल मतलाक संरचना सेहो पृथक परीक्षण अपेक्षित।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अच्छि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अच्छि।

गजल ६१४ : नेहक गान बचल अच्छि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+१+१ · यतिः १४+७।

काफियाः -न (प्राण, मान, गान, ज्ञान, ध्यान) · रदीफः बचल अच्छि

मूल शेर-साक्ष्य : “मीत दूर अच्छि नेह नहि टूटल / प्राण बचल अच्छि”; “नेह मौन अच्छि नाम नहि छूटल / गान बचल अच्छि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अच्छि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अच्छि।

“मीत दूर अच्छि नेह नहि टूटल” सँ आरम्भ भेल पाठ अलगावक बीच गान बचेबाक आशा रचैत अच्छि। गान स्मृतिक जीवित ध्वनि बनि सकैत अच्छि।

प्राण-मान-गानक काफिया घोषित अच्छि, मुदा “मोन कहैत अच्छि” आ “नोर बहैत अच्छि” पाँतिमे “बचल अच्छि” रदीफ नहि। एहि कारण सुसंगत गजल-रचना आ आवर्तित मुक्त पदक बीच भेद स्पष्ट रखब आवश्यक।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अच्छि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अच्छि।

गजल ६१५ : ओ नाम एखनो मोनमे अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यतिः १४+१२ । काफियाः -ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम) · रदीफः एखनो मोनमे अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / नाम एखनो मोनमे अछि” ; “चान दूर अछि नोर नहि थामल / घाम एखनो मोनमे अछि” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

नाम, गाम, घाम, ठाम—एक्के तुक-परिवार निजी स्मृतिक भूगोल बना सकैत छल । “गाम एखनो मोनमे अछि” प्रवास-स्मृतिक आधारक बिम्ब अछि ।

मुदा “नाम नहि छूटल”क घना आवर्तन तथा “नेह एखनो देहमे अछि”क रदीफ-विचलन रचनाक रूपगत अनुशासन कमजोर करैत अछि । नामक वास्तविक इतिहास एतय खुलैत नहि ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६१६ : आस भीतर रहैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+२ · यतिः १४+७ । काफियाः -ास (आस, साँस, बास) · रदीफः रहैए

मूल शेर-साक्ष्य : “नेह मौन अछि मोन नहि मानल / आस रहैए” ; “घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / बास रहैए” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“आस रहैए”क सीमित घोषणा अन्हारक भीतर बचल भविष्यक सम्भावना बुझबैत अछि । साँसक संग आसक काफिया देहगत धीरजक संकेत अछि ।

“मोन कहैए” वा “नोर बहैए” शेरक अन्तमे घोषित “रहैए” केँ बदलैत अछि। छोट शब्दावलीक कारण भाव एकटा स्थिति पर टिकि रहैत अछि, परिवर्तित अनुभव नहि रचैत।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१७ : आस संग चलैत अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+१+१ · यतिः १४+७।

काफियाः -ास (आस, साँस, बास) · रदीफः चलैत अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / आस चलैत अछि”; “घाम मंद अछि मोन नहि मानल / बास चलैत अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

बन्द बाटक संग “आस चलैत अछि”क सम्बन्ध रूपकात्मक रूपेँ प्रभावी अछि; चाल वास्तविक पएरक नहि, आशाक अछि।

६१६क आस/साँस/बासक क्रम फेर प्रयोग भेल अछि। “नोर बहैत अछि”क शेर काफिया-रदीफ शृंखला सँ हटि जाइत; रूपगत पुनर्लेखन विषयगत पुनर्लेखनसँ बेसी अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१८ : आस अहाँक पाछाँ रहैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित

गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+२ · यति: १४+११।

काफिया: -स (आस, साँस, बास) · रदीफ: पाछाँ रहैए

मूल शेर-साक्ष्य : “मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / आस पाछाँ रहैए”; “घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / बास पाछाँ रहैए”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“पाछाँ रहैए”क रदीफ आशाकँ व्यक्ति पाछाँ चलैत छाया बनबैत अछि। नाम नहि छूटबाक साक्ष्य वियोगमे स्मृतक दृढता दर्शबैत अछि।

६१६-६१७क आस-साँस-बास शेर फेर उपस्थित अछि। “मोन भीतर रहैए” घोषित रदीफकँ काटैत अछि; शीर्षकक ‘अहाँ’क भूमिका अलग नाटकीय घटना पबैत नहि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१९ : जे नोर आबो मोनमे अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १४+१२। काफिया: -ोर (नोर, भोर, डोर, सोर) · रदीफ: आबो मोनमे अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सूत्र अछि नोर नहि थामल / नोर आबो मोनमे अछि”; “साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / डोर आबो मोनमे अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

नोर, भोर, डोरक आवर्तन दुःख आ आशाक एकहि मोनमे ठाम बनबैत अछि।

“आबो” समयक लम्बा निरन्तरता सूचित करैत अछि।

६१२ आ ६१३क घर सूत्र/चान दूर आ नोर नहि थामबाक स्थितिसँ ई गजल बहुत निकट अछि। “नेह आबो देहमे अछि”क परिवर्तन रदीफक शास्त्रीय एकरूपता भंग करैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२० : नेह राति भरि जागैत अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: १४+८।
काफिया: नेह (नेह, देह, मेह) · रदीफ: जागैत अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “रात मौन अछि निन्न नहि आयल / नेह जागैत अछि”; “साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / मेह जागैत अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“नेह राति भरि जागैत अछि” निद्राहीन स्मृतिक मानवीकरण अछि। नेहक संग देह आ मेहक जागनाइ निजी वेदनाकैँ प्रकृतिक स्वर देबाक सम्भावना रखैत अछि।

तथापि “मोन बोलैत अछि” आ “नोर रोइत अछि” शेरक समान अन्त्य-पद नहि रखैत। एक अनुभव निरन्तर विस्तारित होयबाक बदला समान प्रश्नरहित शोक-शृंखला बनैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२१ : आस आबो संग रहैत अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+२+१+१ · यति: १४+९।
काफिया: आस (आस, साँस, बास) · रदीफ: संग रहैत अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “नेह मौन अछि मोन नहि मानल / आस संग रहैत अछि”; “घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / बास संग रहैत अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“आस संग रहैत अछि” आशाकँ बाह्य सहचर बनबैत अछि, जखनकि ६१६ मे ओ भीतरक स्थिति छल। ई स्थानान्तर सम्भावित अर्थभेद अछि।

काफिया “आस/साँस/बास” पुनः, आ दृश्य “बाट बंद”, “चान दूर”, “घर सून्न” पूर्ववत् अछि। “रात नोर बहैत अछि” घोषित रदीफ-विरुद्ध एक उदाहरण।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२२ : जे नोर अहाँक पाछाँ रहि गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति: १४+१०।

काफिया: -ोर (नोर, डोर, सोर) · रदीफ: पाछाँ रहि गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / नोर पाछाँ रहि गेल”; “बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / सोर पाछाँ रहि गेल”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“पाछाँ रहि गेल”क भूतकाल स्मृतिक अलग बचेबाक भाव दैत अछि; मीत चलि गेल मुदा नोर/डोर रहि गेल।

६१८क “पाछाँ रहैए” सँ बदलेल कालोचक तत्त्व मुख्य भिन्नता अछि। “मीत नेह दूर नहि गेल”क शेर अपेक्षित “पाछाँ रहि गेल” छोड़ि दैत अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२३ : ओ भोर मोनमे रहि गेल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१+२ · यतिः १४+१० ।
काफियाः -ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफः मोनमे रहि गेल

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनमे रहि गेल”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर मोनमे रहि गेल” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

भोरक मोनमे रहि जेबाक बात अन्हार-पछातिक पुनर्जन्मक आशा जगाबैत अछि । एतय भोर केवल समय नहि, स्मृतिक नाम भऽ सकैत अछि ।

अन्त्य शेरमे घाव/नाम घोषित -ोर तुक-परिवारसँ बाहर अछि । ६१९ आ ६२२क स्वरक्रमसँ असाधारण साम्यक बीच नव अनुभव कम ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६२४ : ओ गान हमरा संग अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रमः २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यतिः १४+१० ।
काफियाः -ान (मान, प्राण, गान, ज्ञान, ध्यान) · रदीफः हमरा संग अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / मान हमरा संग अछि”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / गान हमरा संग अछि” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

गान हमरा संग अछि—ई उद्घोष वियोगक मौनकै कलाक रूपमे रूपान्तरित करबाक सम्भावना अछि। प्राण/मान/गानक क्रम मूल्य आ जीवनक संकेत दैत अछि।

मुदा स्रोतमुखी ठोस गीतक कोनो धुन वा स्मृति नहि; “नेह हमरा संग अछि” आ “नाम हमरा संग अछि” अन्तिम पदमे घोषित -न काफिया नहि रखैत।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२५ : ओ नोर हमरा मोन पडैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · यति: १४+१३। काफिया: -ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: हमरा मोन पडैए

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर हमरा मोन पडैए”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर हमरा मोन पडैए”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“नोर हमरा मोन पडैए”मे स्मृति स्वयं अपन वेदनाकै याद करैत अछि। दुःखक एहन द्वितीय स्मरण आत्मपरीक्षाक एक अवसर बनि सकैत छल।

पाठ ६१२क “फेरो मोन पडैए”क अत्यन्त निकट अछि: घर सून्न, मीत दूर, रात मौन, चान दूरक अनुक्रम लगभग समान। रदीफ बदलला परो अनुभूतिक स्वतन्त्रता सीमित अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२६ : ओ नेह मोनमे बचल अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यतिः १४+११। काफियाः ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफः मोनमे बचल अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / नेह मोनमे बचल अछि”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह मोनमे बचल अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“नेह मोनमे बचल अछि” निष्क्रिय स्मृतिसँ अधिक जीवित बचबाक स्वर अछि। मेहक उपस्थितिसँ निजी क्षति प्रकृतिक चक्रमे सम्मिलित होइत अछि।

“देह मोनमे बचल अछि”क रूपक अस्पष्ट अछि; स्मृतिक देह वा मनक भीतर देह —कोन अर्थ लक्षित, से खुलैत नहि। मूल शेरसभमे नेह/मेह तुकक संग नाम आ घावक रदीफ जोड़ल गेल अछि, काफिया अनुपस्थित।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूज़ी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२७ : ओ नाम आबो संग अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रमः २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यतिः १४+१०। काफियाः -नाम (नाम, गाम, घाम, ठाम) · रदीफः आबो संग अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / नाम आबो संग अछि”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / घाम आबो संग अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“नाम आबो संग अछि”क बोध व्यक्तिक नामकँ आत्मपरिचयक टिकाऊ चिन्ह बनबैत अछि। गाम आ घामक संलग्नता स्मृतिक भूगोल विस्तारि सकैत अछि।

किन्तु “नेह आबो संग अछि” आ “नोर आबो संग अछि” घोषित -म काफिया सँ बाहर अछि। ६१५ सँ नाम/गाम/घामक प्रयोग आ कथ्य-समता उल्लेखनीय।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२८ : ओ नेह राति भरि जागैत अछि

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२+२+१+१ · यति: १४+१३। काफिया: ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: राति भरि जागैत अछि

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह राति भरि जागैत अछि”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह राति भरि जागैत अछि”। मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि।

“नेह राति भरि जागैत अछि”क द्वितीय रूपमे रातिक दीर्घता सीधा रदीफ बनल अछि, जाहिसँ ६२०क सामान्य “जागैत अछि”क अपेक्षा समय अधिक स्पष्ट अछि।

मुदा “रात मौन”, “घर सून्न” आ “मीत दूर”क पृष्ठभूमि बदलेल नहि। शेरक अन्तमे नाम/नोरक प्रयोग घोषित ेह तुककँ निबहाबैत नहि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२९ : ओ नेह हमरा भीतर रहैए

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि। मात्रा-क्रम: २९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित

गणना । कल-क्रम: २+२+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+२+२ · यति: १४+१५ । काफिया: नेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: हमरा भीतर रहैए

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह हमरा भीतर रहैए”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह हमरा भीतर रहैए” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“हमरा भीतर रहैए” निजी आश्रयक वाक्य अछि; बाह्य वियोगकें भीतरक स्मृतिसँ प्रश्न कएल गेल अछि ।

६२६ सँ समान नेह/देह/मेह काफिया आ बहुत समान शेर-क्रम अछि । नाम आ नोर जकाँ अन्त्यशब्द घोषित तुक-विधान सँ बाहर, आ भीतरक स्वरक स्वतंत्र अनुभव अनुपस्थित ।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि । मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६३० : मीत फेर नहि भेटल

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि । मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: २+२+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+२+२ · यति: १४+१० । काफिया: मीत (मीत, गीत, प्रीत, रीत) · रदीफ: फेर नहि भेटल

मूल शेर-साक्ष्य : “घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मीत फेर नहि भेटल”; “चान दूर अछि मोन नहि मानल / प्रीत फेर नहि भेटल” । मूल पाठमे १० शेर भेटैत अछि; एक पाँतिक भीतर ‘/’ सँ चिन्हित विराम पुस्तकक अभिलिखित यति अछि ।

“मीत फेर नहि भेटल”क वियोग रदीफक कारण अपरिवर्तनीय घटना जकाँ प्रतिध्वनित अछि । गीत आ प्रीतक तुक-विन्यास स्मृतिक सांगीतिक रूप देत ।

६०६ सेहो “मीत फेर नहि भेटल” अछि, मुदा मूल पाँतिसभक भिन्न आरम्भ अछि। एकहि शीर्षक आ रदीफक पुनः प्रयोगकें स्वतंत्र रचना मानबासँ पूर्व शब्द-प्रतिशब्द तुलना जरूरी अछि; एहि समीक्षा मे साम्य स्पष्ट दर्ज अछि।

रूपगत परीक्षण : पुस्तकमे देल छन्द-लेखा आ संगीत-विन्यास अलग संपादकीय घोषणा अछि। मूल गजलमे मतलाक दुनू मिसरामे घोषित काफिया-रदीफक स्थान तथा पश्चातक शेरसभक समान अन्तिम पद जाँचल जाएबाक चाही; एहि पाठक आधारपर संख्या मात्रसँ अरूजी बहरक सिद्धि नहि कएल गेल अछि।

गजल ६११-६३० : अन्तःसम्बन्ध आ पुनरावृत्तिक सीमारेखा

खण्ड २क एहि समूहमे “घर सूत्र”, “निन्न नहि आयल”, “चान दूर”, “मीत दूर” आदि मूल परिस्थिति बारम्बार दोहराईत अछि। घोषित काफिया-सूची आ वास्तविक दोसर मिसराक अन्त्य शब्दक अनुपालन कई ठाम असंगत अछि। ६०६/६३०क एकहि शीर्षक आ ६२०/६२८क निकट शीर्षक सामान्य शीर्षकीय साम्य नहि—वास्तविक पाँतिक स्तरपर तौलल जाएबाक चाही। साम्य लेखकीय दोषक स्वतः प्रमाण नहि, मुदा स्वतंत्र रचनात्मक उपलब्धिक मूल्याङ्कन लेल अनिवार्य प्रश्न अछि।

गजल ६३१ : ओ नोर मोनसँ नहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३१ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सूत्र अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनसँ नहि गेल”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनसँ नहि गेल”।

‘नोर मोनसँ नहि गेल’मे वियोगक दुख पाछाँ छोड़ल जा सकयवाला वस्तु नहि, स्मृतिक स्थायी घटक बनैत अछि। ‘घर सूत्र’ आ ‘निन्न नहि आयल’ व्यक्तिगत क्षतिपर जोर दैत अछि, मुदा ‘भोर’ आ ‘छोर’क प्रवेश अन्हारक बादो बचल दिशाक कल्पना उपस्थित करैत अछि।

पाठक दसम युगम पहिल नोर पर घुरि अबैत अछि; ई आवर्त समापन देत, मुदा बीचक घटनासभमे स्थिति बदलबाक ठोस कारण कम अछि। एके दुखक विस्तार आ वास्तविक नाटकीय विकास—दुनूकें अलग मानब आवश्यक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, छोर, सोर; रदीफ “मोनसँ नहि गेल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”,

“नाम”, “नेह”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनसँ नहि गेल”।

अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६३२ : ओ नोर मोनमे बसल अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३२ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनमे बसल अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनमे बसल अछि”।

‘मोनमे बसल अछि’ रदीफ नोरकँ क्षणिक भावक बदला स्थायी वास बनबैत अछि। ६३१क ‘नहि गेल’ प्रतिरोधक वाक्य छल; एतय ‘बसल’ स्वीकारक। भोर/डोरक आवर्तन स्मृति केना देहाती घरक भीतरक वस्तु जकाँ थिर होइत अछि, से संकेत करैत अछि।

मुदा ‘घर सून्न’, ‘मीत दूर’ आ ‘रात मौन’क पूर्ववर्ती क्रम बदलेल नहि। नव रदीफक अर्थगत सम्भावना पाठक घटनासँ पर्याप्त विकसित नहि भेल; शेरक कर्ता आ परिस्थिति एके रहबाक कारण भेद मुख्यतः भाषिक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, छोर, सोर; रदीफ “मोनमे बसल अछि”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकै मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे बसल अछि”।

अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट

होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६३३ : नोर हमरा संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३३ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर हमरा संग अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर हमरा संग अछि”।

‘हमरा संग अछि’ कहिते नोर निष्क्रिय याद नहि, वाचकक सहयात्री बनैत अछि। एहि रूपकमे निजी क्षतिक बोझक संग सहचारिताक विरोधाभास अछि; भोर आ डोरक संग मिलि ई अनुपस्थित मीतक अनपेक्षित उपस्थिति सुझबैत अछि।

गजलक अधिकांश पूर्वार्ध ६३१-६३२ सँ मिलैत अछि। संग देबाक भावकें कोनो यात्रा, भेट वा बदलैत समयक दृश्य नहि देल गेल, ताहिसँ मूल बिम्बक नव अर्थ सम्भावनामे रहि जाइत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, छोर, सोर; रदीफ “हमरा संग अछि”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर हमरा संग अछि”।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६३४ : नाम मोनमे रहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३४ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नाम मोनमे

रहि गेल”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / ठाम मोनमे रहि गेल” ।

नाम, गाम आ घामक तुक-क्रम व्यक्ति-स्मृतिसँ भूगोल दिस बाट खोलैत अछि। ‘गाम मोनमे रहि गेल’ पाँति पाठकेँ अपन धरती आ विस्थापनक प्रश्न दिस लऽ जा सकैत अछि, जखनकि ‘नाम’ स्मरणक चिह्न बनल रहैत अछि।

तथापि गामक वास्तविक गली, श्रम, सम्बन्ध अथवा दूरी नहि खुलैत। ‘नेह’, ‘नोर’ आ ‘घाव’ जकाँ मध्यवर्ती अन्त्यशब्द घोषित नाम परिवारसँ बाहर पडैत अछि; ई औपचारिक संरचनाक मोल पर विषय-विस्तारक उदाहरण अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “मोनमे रहि गेल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नेह”, “नोर”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकेँ मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नाम मोनमे रहि गेल”।

अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६३५ : मीत आबो संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३५ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मीत आबो संग अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / रीत आबो संग अछि”।

मीत अनुपस्थित होइतहुँ प्रीत ‘आबो संग’ रहबाक कथन गजलकेँ शोकसँ सम्बन्धक दीर्घजीविता दिस मोड़ैत अछि। गीत आ रीत जुड़ला पर निजी अनुभवक सांगीतिक आ सामुदायिक आयामक सम्भावना जागैत अछि।

गजलमे गीतक कोनो वास्तविक धुन, रीतक कोनो सामाजिक क्रिया नहि भेटैत । शीर्षकक मीत आ अन्तिम गीतक बीच जतेक भावगत यात्रा अपेक्षित, ओतेक शेरक कथनात्मक परिवर्तन नहि; किछु अन्त्यशब्द घोषित तुकसँ हटैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “आबो संग अछि” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “नोर” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि, गप नहि बोलल / गीत आबो संग अछि” ।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६३६ : नेह मोनमे बचल अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३६ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि, निन्न नहि आयल / नेह मोनमे बचल अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि, निन्न नहि आयल / गोह मोनमे बचल अछि” ।

नेहक ‘बचल’ रहब क्षतिपछातिक जीवितत्व अछि, ‘रहि गेल’ सन स्थिर अवशेष नहि । देह-मेह-गोहक संयोग प्रेम, शरीर, ऋतु आ घरक बीच एकटा घनिष्ट ध्वन्यात्मक कड़ी बनेबाक सामर्थ्य रखैत अछि ।

‘देह मोनमे बचल अछि’क अर्थ स्पष्ट नहि—स्मृतिक भीतर शारीरिक उपस्थिति कि वास्तविक देहक रूपक? पाठ एहि अस्पष्टताकें खोलनाइ छोड़ि दैत अछि ।

नाम/नोरक पुनरुक्ति रूप-संयमक सीमाक संकेत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ेह”, उदाहरण नेह, देह, मेह, गोह;

रदीफ “मोनमे बचल अछि” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नाम”, “नोर”, “प्रीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि, गप नहि बोलल / देह मोनमे बचल अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६३७ : दाग हमरा भीतर रहैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३७ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / दाग हमरा भीतर रहैए”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / दाग हमरा भीतर रहैए” ।

‘दाग/राग/आग’क त्रिक क्षतिसँ कला आ भीतरक दाह धरि भावक रूपान्तरक समृद्ध आधार अछि । ‘हमरा भीतर रहैए’ रदीफ एहिसभकें बहिर्घटनाक बदला अन्तर्मनक साक्षी बनबैत अछि ।

किन्तु दागक कारण, रागक निर्मिति आ आगक सामाजिक वा निजी प्रसङ्ग स्वतंत्र रूपेँ विकसित नहि होइत । एके ‘घर सून्न’ पृष्ठभूमि पर बहु-अर्थी प्रतीक राखल गेल अछि; प्रतीकक सम्भावना आ प्राप्त काव्यगत निष्पत्ति समान नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग/आग”, उदाहरण दाग, राग, आग; रदीफ “हमरा भीतर रहैए” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “नोर” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल

रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / आग हमरा भीतर रहैए”।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६३८ : नोर मोनसँ नहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनसँ नहि गेल”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनसँ नहि गेल”।

ई गजल ६३१क शीर्षकसँ ‘ओ’ हटबैत अछि, मुदा मूल दसू युग्मक अन्तिम पद आ प्रमुख शब्दक्रममे लगभग शब्दशः साम्य राखैत अछि। अन्तर मुख्यतः शीर्षकक संकेतात्मक सर्वनाममे अछि।

एहिमे अलग पहिचानक प्रश्न अत्यन्त प्रखर अछि: जँ ‘ओ’ अनुपस्थित व्यक्तिक स्मृति निर्दिष्ट करैत हो, तकरा मूल पाठमे पहिचान देब आवश्यक छल। बिना ओहि आधारक ६३८ कें ६३१ सँ भिन्न सर्जनात्मक प्रगति घोषित करब युक्तिसंगत नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, छोर, सोर; रदीफ “मोनसँ नहि गेल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनसँ नहि गेल”।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट

होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६३९ : नाम हमरा मोन पड़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६३९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नाम हमरा मोन पड़ैए”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / ठाम हमरा मोन पड़ैए”।

‘हमरा मोन पड़ैए’ वर्तमानमे स्मृतिक पुनरावर्तन क्रियाक रूप अछि; ६३४क ‘मोनमे रहि गेल’ भूतकालीन बचत छल। नाम-गाम-धाम एहि कालगत परिवर्तनक रेखाङ्कित करबाक शक्ति रखैत अछि।

मुदा घटना वा दृश्य नया नहि होइत। स्मरणक क्रिया प्रत्येक युगमे एकहि नोंक पर अटकैत अछि; ‘घाव’ आ ‘नोर’ घोषित नाम काफियासँ बाहर पड़ैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, धाम, ठाम, धाम; रदीफ “हमरा मोन पड़ैए”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नेह”, “नोर”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थक मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नाम हमरा मोन पड़ैए”।

अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६४० : प्रीत हमरा संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मीत हमरा

संग अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / रीत हमरा संग अछि” ।

‘प्रीत हमरा संग अछि’ निजी अनुरागकें वियोगक बादो साथ चलैत तत्त्व बनबैत अछि। मीतक बदला प्रीत शीर्षकमे आनला सँ व्यक्ति सँ सम्बन्धक गुणधर्मपर भार सरकैत अछि।

६३५क ‘मीत आबो संग अछि’सँ रदीफक ‘आबो’ हटला पर दीर्घकालक सूचनामे क्षति होइत अछि। गीत/रीत पाँतिसभक पूर्व दृश्य समान रहबाक कारण परिवर्तन बहुत सीमित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “मीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “हमरा संग अछि”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “नोर” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत हमरा संग अछि” ।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६२१-६४० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयम्में दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
६३१ : ओ नोर मोनसँ नहि गेल	नोर / नोर	नाम, घाव, नेह

६३२ : ओ नोर मोनमे बसल अछि	नोर / नोर	नाम, घाव, नेह
६३३ : नोर हमरा संग अछि	नोर / नोर	नाम, घाव, नेह
६३४ : नाम मोनमे रहि गेल	नाम / नाम	नेह, नोर, मीत
६३५ : मीत आबो संग अछि	मीत / गीत	नाम, नोर, घाव
६३६ : नेह मोनमे बचल अछि	नेह / देह	नाम, नोर, आस
६३७ : दाग हमरा भीतर रहैए	दाग / आग	नाम, नोर, नेह
६३८ : नोर मोनसँ नहि गेल	नोर / नोर	नाम, घाव, नेह
६३९ : नाम हमरा मोन पडैए	नाम / नाम	नेह, नोर, मीत
६४० : प्रीत हमरा संग अछि	मीत / गीत	नाम, नोर, घाव

गजल ६४१ : नेह मोनमे रहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ६४१ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह मोनमे रहि गेल”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / नेह मोनमे रहि गेल”।

‘मोनमे रहि गेल’ प्रेमकेँ पूर्ण जीवनक वर्तमान नहि, स्मृतिक शेषांश बनबैत अछि। नेह आ देहक तुलनात्मक भावात्मक आ शारीरिक स्तर एकसंग उपस्थित करैत अछि।

६३६क ‘बचल अछि’क तुलनामे ‘रहि गेल’ अधिक विराम-प्रधान भाव देत, मुदा देहक रूपकक अस्पष्टता दूर नहि करैत। शब्दान्तक असङ्गति आ युग्म-दर-युग्म एके परिवेश एहि भेदकेँ सीमित करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण नेह, देह, मेह, गेह; रदीफ “मोनमे रहि गेल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नाम”, “नोर”, “प्रीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे रहि गेल”।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६४२ : नोर मोनमे बसल अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४२ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनमे बसल अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनमे बसल अछि”।

शीर्षकक ‘ओ’ स्मृत वस्तुकें वाचकसँ किछु दूर राखैत अछि। मुदा मूल रचनाक ‘नोर मोनमे बसल अछि’ युग्म, क्रम आ आवर्तन ६३२ सँ अक्षरशः लगभग मेल खाइत अछि।

एहि स्थितिमे आलोचनाक केन्द्र नव रचनाक गहराइ नहि, पाठ-अभिन्नता होयबाक चाही। शीर्षक-प्रारम्भक एक सर्वनाम जोड़नाइ रचनाक स्वतन्त्र अर्थ-निर्माणक पर्याप्त आधार नहि अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, छोर, सोर; रदीफ “मोनमे बसल अछि”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाव”, “नाम”, “नेह”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६३१ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“ठोर मौन अछि, गप नहि बोलल / नोर मोनमे बसल अछि” ।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६४३ : नोर फेरो आयल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४३ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात गाढ़ चान आयल / नोर फेरो आयल”; मध्यक पाठ—“सोर थाम मोन जागल / सोर फेरो आयल” ।

‘नोर फेरो आयल’क वाक्य दू घड़ीक तुलना करैत अछि: ‘रात गाढ़’ आ ‘भोर आयल’ समयक परिवर्तन देखबैत अछि, मुदा नोरक पुनरागमन ओहि परिवर्तनकें अपूर्ण बना दैत अछि ।

‘फेरो’क आवर्तन गीतात्मक स्मृति-जाल रचैत अछि; शेरसभमे जँ नोरक कारण अलग होइत तँ पुनरावर्तन नाटकीय बनि सकैत छल । एखन भावमुख्य वृत्ताकार अछि, नब परिस्थिति सीमित ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, सोर; रदीफ “फेरो आयल” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “घाव”, “नेह”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

समापन-पाठ—“मोन मौन नोर आयल / नोर फेरो आयल” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६४४ : नाम मोनमे राखू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४४ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“मीत दूर नाम जागल / नाम मोनमे राखू”; मध्यक पाठ—“राह बन्द पाँव थामल / ठाम मोनमे राखू” ।

‘नाम मोनमे राखू’ विनती नहि, निर्देश अछि । स्मरणक नैतिक जिम्मेवारी पाठक वा सम्बोधित व्यक्तिपर राखल गेल अछि । गामक नाम आ व्यक्तिगत नाम एकहि काफिया-क्षेत्रमे आवि सामाजिक स्मृतिक प्रसङ्ग खोलैत अछि ।

मुदा ककर नाम किएक राखब—स्मृतिक ई निर्णायक परिस्थिति अनुल्लिखित अछि । आग्रहक पुनरुक्ति सामूहिक इतिहास बनबाक सम्भावना रखैत अछि, पर प्रमाणभूत घटना उपस्थित नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “मोनमे राखू” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नेह”, “नोर”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

समापन-पाठ—“मोन मौन नाम जागल / नाम मोनमे राखू” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६४५ : प्रीत फेरो जागल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४५ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“मीत दूर नेह जागल / मीत फेरो जागल”; मध्यक पाठ—“राह बन्द पाँव थामल / रीत फेरो जागल” ।

टूटल डोरक पाछाँ ‘प्रीत फेरो जागल’ प्रेमक पुनर्जन्मक कथन अछि । नष्ट सम्बन्ध आ जागल अनुरागक असङ्गति गजलक प्रमुख भाव-स्रोत अछि ।

जागरणक कारण व्यक्त नहि भेल; काफिया-शृंखलामे मीत/गीत/रीतक आवाज अछि, मुदा प्रेमी युगलक कोनो क्रियात्मक संवाद नहि । काव्य अधिक गीतात्मक प्रतिज्ञा बनि रहैत अछि ।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “मीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “फेरो जागल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नाम”, “नेह”, “नोर” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“साँस मंद मोन जागल / प्रीत फेरो जागल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६४६ : ध्यान मोनमे राखू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४६ में १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“साँच बोल मोन जागल / मान मोनमे राखू”; मध्यक पाठ—“मीत दूर गीत जागल / गान मोनमे राखू”।

‘ग्रन्थ बन्द’ आ ‘दीप बालल’क समीकरण लिखित विद्यासँ अन्तर्ज्ञान दिस एकटा प्रतीकात्मक प्रवेश-द्वार बनबैत अछि। मान, ध्यान, ज्ञान, गानक तुक-शृंखला ज्ञान आ चरित्रक सम्बन्धपर प्रश्न उठबैत अछि।

मुदा ग्रन्थ बन्द किएक कएल गेल, आ दीपक अनुभूति ज्ञानमे कोना बदलल—ई मध्यवर्ती सोच पाठ नहि खोलैत। केवल ज्ञानकें राखबाक निर्देश ज्ञानमीमांसक तर्कक स्थान नहि लऽ सकैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण; रदीफ “मोनमे राखू”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नेह”, “नोर”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“साँच बोल नेह जागल / मान मोनमे राखू”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६४७ : मीत मोनमे खोजू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४७ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घर सून्न नाम जागल / मीत मोनमे खोजू”; मध्यक पाठ—“राह बन्द पाँव थामल / रीत मोनमे खोजू” ।

‘मीत मोनमे खोजू’ बाहरी अनुपस्थितिक उत्तर आत्मान्वेषणमे खोजबाक आग्रह अछि । घरक सून्नपन आ साँझक दीप एकान्तसँ भीतरक इजोत दिस बढ़बाक संयोजन बनबैत अछि ।

कहियो स्मृति भीतर खोजल जाइत अछि, कहियो प्रेम बाहरक क्रियामे सिद्ध होइत अछि; एहि दू अवस्थाक भेद स्पष्ट नहि । ‘मोनमे खोजू’ रदीफ स्थिर अछि, कथात्मक खोज बहुत कम ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “मोनमे खोजू” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नाम”, “नोर”, “भोर” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ । गजल ६४५ सँ ३ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि ।

समापन-पाठ—“साँझ ढल दीप बालल / प्रीत मोनमे खोजू” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६४८ : गाम मोनमे देखू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४८ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“मीत दूर नाम जागल / नाम मोनमे देखू”; मध्यक पाठ—“पथ दूर पाँव थामल / ठाम मोनमे देखू” ।

‘गाम मोनमे देखू’मे देखबाक क्रिया वास्तविक भूगोल नहि, मानस-दृश्य अछि । नाम आ ठामक संग गाम बनैबाक पाठक अपेक्षा—कोन लोक, कोन मार्ग, कोन बोली—खुलैत अछि ।

मुदा स्रोत गजलक अधिकतर पाँति नाम जागबाक सामान्य कथन पर रुकैत अछि। मिथिलाक विशेष सांस्कृतिक बिम्ब नहि देल गेल; एहि कारण गाम एकटा अमूर्त संकेत रहि जाइत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “मोनमे देखू”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नोर”, “भोर”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६४४ आ वर्तमान गजलमे ७ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकै मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन नाम जागल / नाम मोनमे देखू”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६४९ : नोर मोनमे राखू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६४९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात गाढ़ चान आयल / नोर मोनमे राखू”; मध्यक पाठ—“गीत थाम सोर जागल / सोर मोनमे राखू”।

‘नोर मोनमे राखू’ असाधारण आग्रह अछि; सामान्यतः नोर पुछल जाइत अछि, एतय ओकरा बचाओल जाइत अछि। ई पीड़ाकें स्मृतिक नैतिक भण्डार मानबाक सम्भावना खोलैत अछि।

नोरकें सुरक्षित राखब प्रतिरोध हो कि आत्मपीडाक आदत, ई प्रश्न पाठमे अनिर्णीत अछि। ६४३क ‘नोर फेरो आयल’सँ भाव-क्रम अत्यन्त निकट; रदीफ-बदलाव बाहेक स्वतंत्र घटना अल्प।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, सोर; रदीफ “मोनमे राखू”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “गीत”, “नेह”,

“मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६४३ आ वर्तमान गजलमे ७ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थक मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन नोर आयल / नोर मोनमे राखू”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५० : ज्ञान फेरो जागल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“ग्रन्थ बन्द दीप बालल / ज्ञान फेरो जागल”; मध्यक पाठ—“साँस मंद मोन जागल / प्राण फेरो जागल”।

‘ज्ञान फेरो जागल’मे ‘ग्रन्थ बन्द, दीप बालल’ विरोधी क्रियासभसँ तात्त्विक इजोतक प्रतीक बनेबाक प्रयत्न अछि। ‘फेरो’ पुरान ज्ञानक सुप्तावस्थाक संकेत दैत अछि, नव अर्जनक नहि।

प्रत्यक्ष बोधक कोनो प्रश्नोत्तर वा अनुभव नहि देल गेल अछि। ज्ञान/ध्यान/गान तुकक ध्वनि काव्यात्मक अछि, मुदा ज्ञान-विमर्शक पुष्टता लेल वैचारिक प्रसङ्ग आवश्यक छल।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण, मान; रदीफ “फेरो जागल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नेह”, “प्रीत”, “मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“घर मौन दीप बालल / ध्यान फेरो जागल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५१ : प्रीत मोनमे राखू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५१ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घर सून्न नाम जागल / मीत मोनमे राखू” ; मध्यक पाठ—“राह बन्द पाँव थामल / रीत मोनमे राखू” ।

‘प्रीत मोनमे राखू’ एकरूप आदेश-पद्धतिक भीतर प्रेमकें अन्तरिक जिम्मेवारी बनबैत अछि । ‘गीत’ आ ‘रीत’क संलग्नतासँ निजी प्रीत सांस्कृतिक स्मृतिक सीमा छुबैत अछि ।

६४७क मीत-खोज आ ६४४क नाम-संरक्षण सन ही क्रियारूप एतय छथि । प्रेमक विशिष्ट सम्बन्ध-कथा नहि खुलला पर संग्रहगत पुनरावृत्ति निर्णायक सीमा बनैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “मोनमे राखू” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नाम”, “नेह”, “नोर” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६४७ आ वर्तमान गजलमे ६ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“साँझ ढल दीप बालल / प्रीत मोनमे राखू” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६५२ : नोर मोनमे खोजू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५२ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात गाढ़ चान आयल / नोर मोनमे खोजू” ; मध्यक पाठ—“गीत थाम सोर जागल / सोर मोनमे खोजू” ।

‘नोर मोनमे खोजू’ ६४९क ‘नोर मोनमे राखू’सँ क्रियाक सूक्ष्म फेरबदल अछि: राखब पहिनेसँ उपलब्ध पीड़ाक संरक्षण, खोजब अनुपस्थित अनुभूतिक अन्वेषण ।

मुदा 'रात गाढ/चान आयल' रूपक एके रहलासँ ओ खोज कवितामे घटैत नहि।
भावक प्रश्न उघडैत अछि, ओकर उत्तर वा नव दृश्य नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, सोर;
रदीफ “मोनमे खोजू”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “आस”, “नाम”, “नेह”,
“मीत” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान
नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६४९ आ वर्तमान गजलमे ८ मूल मिसराक यतिपूर्वक
पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल
रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर
स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन नोर आयल / नोर मोनमे खोजू”। अन्तिम मिसराकें
आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि;
एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि
कएल गेल अछि।

गजल ६५३ : नोर मोन संग छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५३ मे १० मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ नोर मोन संग
छल”; मध्यक पाठ—“गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ सोर मोन संग छल”।

‘नोर मोन संग छल’क भूतकाल वियोगकें पहिने घटित सहचारिता रूपेँ स्मरण
करैत अछि। दिन ढलबाक दृश्य समयक सीमाबिन्दु देत, जखनकि मौन-वाचक
अपन दुखकें पाछाँसँ देखैत अछि।

पद ‘ओ’ बारम्बार कर्ताक अस्पष्टता पैदा करैत अछि। ‘छल’क भूतकाल उचित
कलात्मक बल पबितो घटनागत स्थानकाल वा कारण नब नहि बनैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर,
सोर, छोर; रदीफ “मोन संग छल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद
घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, मीत दूर / ओ नोर मोन संग छल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५४ : नाम मोन बीच छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५४ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“साँझ ढल गेल, चान दूर / ओ नाम मोन बीच छल”; मध्यक पाठ—“घर सूत्र छल, दीप मौन / ओ ठाम मोन बीच छल”।

‘नाम मोन बीच छल’ नामकें आत्मपरिचयक पुरान आधार मानैत अछि। साँझ आ दूर चानक संग स्मृत नामक स्थिति गजलमे आन्तरिक दूरी रचैत अछि। नामक व्यक्ति वा इतिहासक कोनो विशेष प्रमाण नहि भेटैत; नाम गाम/घामसँ तुक मिलबैत चलैत अछि। एहि कारण ई एकटा ध्वन्यात्मक स्मृति-रचना बेसी अछि, चरित्रगाथा कम।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “मोन बीच छल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम मोन बीच छल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५५ : मीत फेर दूर गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५५ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नेह गाढ़ छल, मीत दूर / ओ मीत फेर दूर गेल”; मध्यक पाठ—“चान दूर छल, साँझ मौन / ओ रीत फेर दूर गेल”।

‘मीत फेर दूर गेल’मे ‘फेर’ एहन दूरिक सूचना अछि जे पहिनहिसँ एक बेर घटि चुकल। प्रेमक सम्बन्धक पुनर्वियोग ई सूक्ष्म काल-चिन्हसँ व्यक्त होइत अछि।

मीत वास्तवमे कखन घुरल, दोबारा किएक गेल—एहि निर्णायक घटनाक अभावमे ‘फेर’क कथात्मक शक्ति पूर्ण विकास नहि पबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “फेर दूर गेल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, मीत दूर / ओ प्रीत फेर दूर गेल”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५६ : नाम मोन संग छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५६ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न छल, दीप मौन / ओ नाम मोन संग छल”; मध्यक पाठ—“राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ ठाम मोन संग छल”।

‘नाम मोन संग छल’ बाह्य साथ आ आन्तरिक स्मृतिक बीच पुल बनबैत अछि। घरक सून्नपन आ दीपक मौन, एहि अनुपस्थित नामक अलग भाव-परिवेश रचैत अछि।

६५४क ‘मोन बीच छल’सँ ‘मोन संग छल’क अन्तर सीमित; नामक सन्दर्भ आ पात्रसम्बन्धक स्थिरता फेर एकर स्वतंत्रता घटबैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, गाम, धाम, ठाम, धाम; रदीफ “मोन संग छल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६५४ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम मोन संग छल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५७ : प्रीत मोन बीच छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५७ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“साँझ ढल गेल, चान दूर / ओ मीत मोन बीच छल”; मध्यक पाठ—“राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ रीत मोन बीच छल”।

‘प्रीत मोन बीच छल’मे प्रीत वर्तमानक जीवित सम्बन्ध नहि, अतीतक भीतरी तथ्य बनैत अछि। गीत मौन रहबाक वाक्य नब मौनक एकटा सांगीतिक रूपक दैत अछि।

६५५क मीत-दूरिक मूल आधार कायम अछि। मीत, गीत आ प्रीतक पुनरावर्तन रदीफकें आसानीसँ सहेजैत अछि, मुदा संवेदनामे बड़का रूपान्तर नहि करैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “मोन बीच छल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, गीत मौन / ओ प्रीत मोन बीच छल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५८ : गाम फेर दूर गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ नाम फेर दूर गेल”; मध्यक पाठ—“राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ ठाम फेर दूर गेल”।

‘गाम फेर दूर गेल’मे गाम स्वयं गतिशील बनल अछि—वास्तवमे लोक दूर जाइत अछि, गाम नहि। एहि उलट क्रममे विस्थापनक व्यञ्जना सम्भावित अछि।

गाम दूर होयबाक सामाजिक वा भौगोलिक कारण असन्दर्भित रहल। नाम आ ठामक तुक-क्रम कविता केनहुँ अधिक ठोस स्थानीयपन देबासँ चुकैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, धाम, ठाम, धाम; रदीफ “फेर दूर गेल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६५४ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, मीत दूर / ओ नाम फेर दूर गेल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६५९ : नोर फेर मोन आय

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६५९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न छल, दीप मौन / ओ नोर फेर मोन आय”; मध्यक पाठ—“मेह थम गेल, गाम मौन / ओ सोर फेर मोन आय”।

‘नोर फेर मोन आय’मे स्मृतिक क्रिया पूर्ण भूतकाल नहि, बोलचालक पुनरागमन अछि। दुखक बारम्बार लौटब व्यक्ति केँ स्थिर वर्तमानसँ अलग करैत अछि।

अभिव्यक्तिक ‘फेर मोन आय’ रूपक स्वाभाविकतापर प्रश्न अछि; रदीफक प्रयोजनसँ क्रिया-रूप खण्डित बुझाइत अछि। लोकभाषाक सहजता आ छन्दकीय बाध्यता अलग-अलग परखबाक चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, सोर, छोर; रदीफ “फेर मोन आय”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित

उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६५३ सँ ३ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, मोन दूर / ओ नोर फेर मोन आय”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६० : मान मोन बीच छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दिन ढल गेल, मोन मौन / ओ मान मोन बीच छल”; मध्यक पाठ—“साँझ ढल गेल, चान दूर / ओ गान मोन बीच छल”।

‘मान मोन बीच छल’मे स्वाभिमान पुरान स्मृति-सामग्री बनैत अछि। मान/ज्ञान/दानक तुक निजी भावसँ सामाजिक नैतिकता दिस संकेत करैत अछि। ककर मान, ककर दान आ कोन सन्दर्भक प्रश्न उपस्थित नहि; सामाजिक नैतिकता केवल अवधारणाक सूची रहि जाइत अछि। गजलक शिल्पमे पाठक प्रत्यक्ष परिस्थिति कम।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान्, ध्यान, गान्, प्राण, दान; रदीफ “मोन बीच छल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, मोन मौन / ओ दान मोन बीच छल”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६४१-६६० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमें दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
६४१ : नेह मोनमे रहि गेल	नेह / देह	नाम, नोर, आस
६४२ : नोर मोनमे बसल अछि	नोर / नोर	नाम, घाव, नेह
६४३ : नोर फेरो आयल	नोर / नोर	नेह, घाव, आस
६४४ : नाम मोनमे राखू	नाम / नाम	नेह, नोर, आस
६४५ : प्रीत फेरो जागल	मीत / प्रीत	नोर, नाम, आस
६४६ : ध्यान मोनमे राखू	मान / मान	नेह, नोर, आस
६४७ : मीत मोनमे खोजू	मीत / प्रीत	भोर, नोर, आस
६४८ : गाम मोनमे देखू	नाम / नाम	भोर, नोर, आस
६४९ : नोर मोनमे राखू	नोर / नोर	नेह, आस, गीत
६५० : ज्ञान फेरो जागल	ज्ञान / ध्यान	प्रीत, आस, नेह
६५१ : प्रीत मोनमे राखू	मीत / प्रीत	आस, नाम, नोर
६५२ : नोर मोनमे खोजू	नोर / नोर	नेह, आस, मीत
६५३ : नोर मोन संग छल	नोर / नोर	—
६५४ : नाम मोन बीच छल	नाम / नाम	—
६५५ : मीत फेर दूर गेल	मीत / प्रीत	—

६५६ : नाम मोन संग छल	नाम / नाम	—
६५७ : प्रीत मोन बीच छल	मीत / प्रीत	—
६५८ : गाम फेर दूर गेल	नाम / नाम	—
६५९ : नोर फेर मोन आय	नोर / नोर	—
६६० : मान मोन बीच छल	मान / दान	—

गजल ६६१ : नाम फेर लग छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६१ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घर सून्न छल, दीप मौन / ओ नाम फेर लग छल”; मध्यक पाठ—“ठोर बन्द छल, गप मौन / ओ ठाम फेर लग छल” ।

‘नाम फेर लग छल’क ‘फेर’ आ ‘लग’ दुनू सामीप्यक चेतना दैत अछि । अनुपस्थित व्यक्ति वा गामक स्मृति दूरिसँ निकटता दिस लौटबाक प्रतीक बनि सकैत अछि ।

मुदा ‘फेर लग छल’ भाषिक निर्माण अनिश्चित अछि; काव्य-लय लेल अर्थसाफ शब्दरूपक बलि नहि देल जेबाक चाही । ६५६क स्मृत-नामसँ समानता अधिक ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “फेर लग छल” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६५६ आ वर्तमान गजलमे ८ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थक मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम फेर लग छल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६२ : मीत साँझ संग आय

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६२ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“चान दूर छल, साँझ मौन / ओ मीत साँझ संग आय”; मध्यक पाठ—“दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ रीत साँझ संग आय”।

‘मीत साँझ संग आय’मे साँझ अनुपस्थित मीतक पुनर्भेटक समय बनैत अछि। पहिनुक ‘मीत फेर दूर गेल’क उलटा क्रिया पाठक भीतर अस्थायी आशा जगबैत अछि।

किन्तु ‘आय’क प्रयोग सेहो ध्वनि-नियमनक कारण संक्षिप्त बुझाइत अछि; मीतक आगमनक ककरो प्रतिक्रिया नहि। घटना शीर्षकमे अछि, दृश्य गजलक भीतर नहि पसरैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-रीत”, उदाहरण मीत, प्रीत, गीत, रीत; रदीफ “साँझ संग आय”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६५५ सँ ३ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“हम चुप छल, मीत दूर / ओ प्रीत साँझ संग आय”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६३ : ओ नाम मोन संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६३ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम मोन संग अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम मोन संग अछि” ।

‘ओ नाम मोन संग अछि’ वर्तमानकालमे स्मृत नामक टिकाव व्यक्त करैत अछि । रातिक मौन आ मोनक सून्नपनक बीच नामही वाचकक अन्तिम चिन्ह बनल अछि ।

६५६ आ ६५४क भूतकाली रूपसँ समान सामग्री पुनः उभरैत अछि; काल बदलला परो अनुभवक संसार प्रायः अपरिवर्तित रहैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, गाम, धाम, ठाम, धाम; रदीफ “मोन संग अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम मोन संग अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६६४ : ओ डोर मोन पास अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६४ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नोर मोन पास अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ सोर मोन पास अछि” ।

‘डोर मोन पास अछि’ प्रेमक सम्बन्धकें डोर जकाँ छुबय योग्य वस्तु बना दैत अछि । नोर, भोर आ छोरक समानान्तरण मानसक दूरी आ उपस्थिति कें जोड़ैत अछि ।

‘मोन पास’ स्थानबोधक प्रयोग अटपट लागैत अछि; ‘मोनमे’ आ ‘मोन लग’सँ ओकर अन्तरकोनो दृश्य स्पष्ट नहि करैत ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर,

सोर, छोर; रदीफ “मोन पास अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६६३ आ वर्तमान गजलमे ६ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थक मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर मोन पास अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६५ : ओ नेह मोन बीच अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६५ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नाम पास, मीत दूर अछि / ओ नेह मोन बीच अछि”; मध्यक पाठ—“रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ गेह मोन बीच अछि”।

‘नेह मोन बीच अछि’मे सम्बन्धक बचल अंतरंगता केन्द्रीय अछि। नेह/देह/गेह तुक पुरान घर आ अनुपस्थित प्रियक देहस्मृतिक संग रखैत अछि।

मुदा घर वा गेह वास्तविक विवरणरहित अवधारणा बनि रहैत अछि। ६३६/६४१ सँ एहि शृंखलाक अर्थ-परिवर्तन अपर्याप्त अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण नेह, देह, मेह, गेह; रदीफ “मोन बीच अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम मौन, नाम पास अछि / ओ देह मोन बीच अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६६ : अहाँक नाम, निन्न दूर अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६६ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम निन्न दूर अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम निन्न दूर अछि” ।

‘अहाँक नाम, निन्न दूर अछि’मे सम्बोधित व्यक्तिक नाम निद्राहीनताक कारण बनैत अछि । नाम आ निन्नक संग ई शेर व्यक्तिगत पीड़ाक निकट अनुभव देत । नामकें निद्रासँ दूर रहबाक कारण देखाबय लेल कोनो विशिष्ट सम्बोधन वा स्मृति नहि; एकहि ‘मोन सून्न’क स्थायी पृष्ठभूमि गजलक विलक्षणता घटबैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “निन्न दूर अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६६३ आ वर्तमान गजलमे ७ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम निन्न दूर अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६६७ : ई सोर नोर संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६७ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ सोर नोर संग अछि”; मध्यक पाठ—“गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ छोर नोर संग अछि” ।

‘ई सोर नोर संग अछि’मे ध्वनि आ अश्रु एकहि साथ काव्यक विषय बनैत अछि । सोर, भोर, छोरक तुकनाद अन्तःस्थित मौनकें श्रव्य रूप देबाक अवसर बनबैत अछि ।

मुदा सोर कोन शब्दक, कोन गायकक वा कोन घटनाक—एहि तथ्यक अभावमे सोर स्वयं अमूर्त रहैत अछि। अर्थक ठोसपन ध्वनिक आवर्तनसँ अधिक अपेक्षित छल।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, डोर, छोर; रदीफ “नोर संग अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर नोर संग अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६८ : नोर मौन, नेह गाढ़ अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नोर नेह गाढ़ अछि”; मध्यक पाठ—“गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ सोर नेह गाढ़ अछि”।

‘नोर मौन, नेह गाढ़ अछि’क पद्यगुम्ग दुःखक निस्स्वरता आ प्रेमक तीव्रता एकसंग राखैत अछि। व्यक्त पीड़ा नब शब्द नहि पबैत, मुदा भावक घनत्व बढ़ल कहैत अछि।

गाढ़पन प्रमाणित करवाक लेल रूपकक अनिवार्य दृश्य नहि; नोर/भोर/डोरक पूर्ववत् क्रमसम्भव भाव-विस्तारकें रोकैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, सोर, छोर; रदीफ “नेह गाढ़ अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६६६ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर नेह गाढ अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६६९ : नेह एखनो मोन संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६६९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दिन मौन, मोन सून्न अछि / ओ नेह मोन संग अछि”; मध्यक पाठ—“रौद मन्द, छाह गाढ अछि / ओ गेह मोन संग अछि”।

‘नेह एखनो मोन संग अछि’मे ‘एखनो’ निरन्तरताक कालचिह्न अछि। देह/मेहक सम्भाव्य तुक प्रेमकें जीवन आ ऋतुक निरन्तरतासँ जोड़बाक दिशा दैत अछि। ६६५क ‘मोन बीच’ आ ६३५क ‘आबो संग’सँ एहि रचनाक निकट सम्बन्ध अछि; नव कथ्यक स्वतंत्र विकास अल्प।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ेह”, उदाहरण नेह, देह, मेह, गेह; रदीफ “मोन संग अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६६५ आ वर्तमान गजलमे ६ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“हम मौन, नाम पास अछि / ओ नेह मोन संग अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७० : पुरन सोर घर बीच अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर घर बीच अछि”; मध्यक पाठ—“गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ छोर घर बीच अछि”।

‘पुरन सोर घर बीच अछि’ घरकै आवाजक अभिलेख बना दैत अछि। पुरान समयक कोनो स्वर वर्तमान घरमे रहल अछि, ई शीर्षक मौखिक परम्पराक सम्भावना जगबैत अछि।

मुदा गजल सोरक पहिचान नहि करैत—लोकगीत, परिवारक बोली कि लुप्त व्यक्तिक पुकार? घरक अन्दरक दृश्य नदेने ई काव्य-संकेत सामान्य स्मृति-विधानमे समा जाइत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, डोर, छोर, नोर; रदीफ “घर बीच अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६६८ आ वर्तमान गजलमे ८ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकै मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर घर बीच अछि”। अन्तिम मिसराकै आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७१ : अहाँक नाम आबो पास अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७१ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम आब पास अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम आब पास अछि”।

‘अहाँक नाम आबो पास अछि’क ‘आबो’ समयक अन्तर आ निकटताक विरोधाभास अछि। रात्रिक सून्नपनक बीच नामक बचल उपस्थिति सम्बोधनकै निजी स्मृतिसँ जोडैत अछि।

‘नाम’क दोहरावक अलावा ककर नाम आ कोन सम्बन्ध, से पाठ नहि खोलैत। ६६३क ‘मोन संग’क रचना-प्रवाहसँ प्रायः समान छवि; नव भाव-विकास बहुत सीमित अछि।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, घाम,
ठाम, धाम; रदीफ “आब पास अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद
घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

अन्तरपाठीय तुलना । गजल ६६६ आ वर्तमान गजलमे १० मूल मिसराक यतिपूर्वक
पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि । एहि प्रमाणक आधारपर बदलल
रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थकें मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर
स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि ।

समापन-पाठ—“हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम आब पास अछि” । अन्तिम
मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत
अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान
नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६७२ : पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७२ मे १० मूल
मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घर सून्न, दीप मन्द अछि / ओ पार मोन पास
अछि”; मध्यक पाठ—“रौद मन्द, छाह गाढ अछि / ओ सार मोन पास अछि” ।

‘पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल’ शीर्षक गामक आवासीय इतिहासकें स्मृतिक केन्द्र
बनाबयक सम्भावना खोलैत अछि । दुआरिक ठोस वस्तु—काठ, केवाड़ी, घरक
देहरी—आ लोकक आवागमन एहि विषयकें विशिष्ट बना सकैत छल ।

मुदा युगसभ ‘ओ पार मोन पास अछि’ सन अमूर्त अन्त्य-पाँतिमे अटकल
अछि । घोषित -र काफिया लिखल अछि, मुदा वास्तविक शीर्षकक दुआरि
गजलमे घटना बनि नहि पाबैत; पाँतिसभ कतहु रदीफ छोड़ि दैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण पार, हार, तार,
सार, धार; रदीफ “मोन पास अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद
घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“हम मौन, घर सून्न अछि / ओ पार मोन पास अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७३ : बुझल दीपक उजियार

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७३ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / ओ पार मोन बीच अछि”; मध्यक पाठ—“दुख गाढ़, सुख दूर अछि / ओ सार मोन बीच अछि”।

‘बुझल दीपक उजियार’मे प्रकाशक बुझि गेलाक बादो अनुभव भीतर टिकबाक विरोधाभास अछि। दीप आ छाहक संग उजासक स्मृति गहर काव्यार्थ दऽ सकैत अछि।

मुदा पाठ पुनः ‘पार’, ‘हार’, ‘तार’क सूची-प्रधान आवर्तनमे फँसि जाइत अछि। दीपक बुझबाक वास्तविक क्षण वा कारण स्पष्ट नहि, जाहिसँ शीर्षकक नाटकीयता पूर्ण रूप नहि पबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण पार, हार, तार, सार, धार; रदीफ “मोन बीच अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ पार मोन बीच अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७४ : मौनक सोर भीतर जागल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७४ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात गाढ़, निन्न दूर अछि / ओ सोर मोन संग अछि”; मध्यक पाठ—“डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / ओ ठोर मोन संग अछि”।

‘मौनक सोर भीतर जागल’ ध्वनिक विरोधाभासक एक सशक्त सम्भावना अछि। ठोर बन्द होइतहुँ भीतर बजैत आवाज भाषा आ मौनक जटिल सम्बन्ध रचैत अछि।

किन्तु सोरक किछु सजीव रूप-गीतक स्वर, पूर्वक संवाद वा सामूहिक पुकार-पाठमे नहि अबैत। ६६७क सोर-नोर आवर्तनक तुलनामे एतय शब्दक नब क्रम बेसी, घटना कम।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, ठोर, डोर, छोर; रदीफ “मोन संग अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर मोन संग अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७५ : दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७५ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मीत दूर, नाम पास अछि / ओ नेह आब पास अछि”; मध्यक पाठ—“मेघ गाढ़, भोर दूर अछि / ओ मेह आब पास अछि”।

‘दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ’क शीर्षक अनुभवक एक तर्कपूर्ण अनुक्रम अछि: दूरी उपलब्धिक मूल्य बतबैत अछि। नेहकें लग नदेखिकऽ दूरीसँ बूझब मानवीय सम्बन्धक सूक्ष्म दृष्टि अछि।

मुदा मूल युगमसभ शीर्षकमे उपस्थित यात्रा वा दूरीक कारण स्पष्ट नहि करैत। ‘देह आब पास अछि’ सन प्रतीकक अर्थ सेहो अनिश्चित; अनुभूत ज्ञानक कारणक अनुपस्थिति समीक्षा लेल निर्णायक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ेह”, उदाहरण नेह, देह, गेह, मेह; रदीफ “आब पास अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित

उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, घाव गाढ अछि / ओ देह आब पास अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७६ : मौनक तान भीतर बजैत रहल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७६ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ तान मोन संग अछि”; मध्यक पाठ—“ठोर बन्द, नोर मौन अछि / ओ ध्यान मोन संग अछि”।

‘मौनक तान भीतर बजैत रहल’ शब्द-आ-संगीतक विरोधाभास अछि। गीत थमलाक बाद भीतरक तान बचल रहल, एहन भाव ध्वनिशास्त्रीय आ स्मृतिगत दुनू पाठक आमन्त्रण देत।

परन्तु वाचक कोन धुन सुनैत अछि, तकर मूल स्वर या सांस्कृतिक थाह नहि; तान/गान/ध्यान ध्वनिमूलक समानता पर अधिक निर्भर अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण तान, गान, प्राण, ध्यान, मान; रदीफ “मोन संग अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ अछि / ओ तान मोन संग अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७७ : अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७७ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात गाढ, भोर दूर अछि / ओ भोर लोक बीच अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठोर लोक बीच अछि”।

‘अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल’ शीर्षक सामाजिक अदृश्यताक प्रश्न उठा सकैत अछि: भोर आयल कि केवल किछु लोक लेल आयल? ‘लोक बीच अछि’ रदीफ एहि पक्षकें सामूहिक संसारमे रखैत अछि।

मुदा लोकक पहिचान आ ककरा भोर नहि भेटल, एहि भेदक प्रत्यक्ष चित्र नहि। सामूहिक पीडाक दावाकें केवल राति-भोरक सामान्य प्रतीकसँ प्रमाणित नहि मानल जा सकैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण भोर, सोर, नोर, ठोर, डोर, छोर; रदीफ “लोक बीच अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६७४ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर लोक बीच अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७८ : मेटल नाम हमरा घर आयल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नाम मौन, मोन सूत्र अछि / ओ नाम घर बीच अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम घर बीच अछि”।

‘मेटल नाम हमरा घर आयल’ इतिहाससँ मेटायल पहिचानक वापसीक एकटा असरदार काव्यबीज अछि। नाम आ घरक सम्बन्ध अभिलेख आ मौखिक स्मृति बीच प्रश्न जगबैत अछि।

किन्तु के नाम मेटलक, आ ओ कोन माध्यमसँ घुरल, ई घटना पाठ नहि देखबैत। शीर्षकक साहसक तुलनामे ‘नाम मौन’ आ ‘नेह गाढ़’क साधारण पाँति अर्थक दायर सीमित करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, गाम, घाम,

ठाम्, धाम; रदीफ “घर बीच अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ नाम घर बीच अछि”। अन्तिम मिसराकै आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६७९ : अन्हार हमरा मोन बुझायल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६७९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / ओ हार मोन संग अछि”; मध्यक पाठ—“आस मन्द, प्राण धीर अछि / ओ सार मोन संग अछि”।

‘अन्हार हमरा मोन बुझायल’मे अन्हार ज्ञानक माध्यम बनि जाइत अछि, प्रकाशक विरोधी नहि। हार, भार आ पारक तुक जीवनक पीड़ासँ अनुभूतिक सम्बन्ध जोड़बाक अवसर दैत अछि।

मुदा अन्हारसँ प्राप्त ज्ञान कोन अछि—ओ प्रतिज्ञा अधूरी अछि। दीप मौन आ छाह गाढ़ होएबाक चित्र अनेक गजलमे पहिले उपस्थित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण हार, पार, तार, सार, धार, भार; रदीफ “मोन संग अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय तुलना। गजल ६७३ आ वर्तमान गजलमे ६ मूल मिसराक यतिपूर्वक पदांश एकहि क्रममे अक्षरशः मिलैत अछि। एहि प्रमाणक आधारपर बदलल रदीफ/शीर्षकक विशिष्ट भावार्थक मान्यता देल जा सकैत अछि, मुदा दोसर स्वतंत्र कथ्य वा मौलिक घटनाक दावा नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ भार मोन संग अछि”। अन्तिम मिसराकै आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८० : जे गेल से भीतर रहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८० मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“नाम पास, मीत दूर अछि / ओ सोर मोन बीच अछि”; मध्यक पाठ—“दुख गाढ़, सुख दूर अछि / ओ ठोर मोन बीच अछि” ।

‘जे गेल से भीतर रहि गेल’ वियोग-गजलसभक केन्द्रीय विरोधाभासकें सघन रूप दैत अछि । बाह्य अनुपस्थितिपछाति भीतरक सोर, भोर, डोर शेष रहैत अछि; स्मृति बाह्य-आन्तरिक सीमाकें उलटि दैत अछि ।

तथापि ‘जे’क पहिचान अनिर्दिष्ट अछि । ‘नाम पास, मीत दूर’ फेर अबैत अछि; बरु कियो विशिष्ट स्मृत-दृश्य ई रूपककें अनूठ बनबैत ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, ठोर, डोर, छोर; रदीफ “मोन बीच अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ । गजल ६७३ सँ ३ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि ।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर मोन बीच अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६६१-६८० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि । शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमैं दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि ।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
-----	-----------------------------	-------------------------

६६१ : नाम फेर लग छल	नाम / नाम	—
६६२ : मीत साँझ संग आय	मीत / प्रीत	—
६६३ : ओ नाम मोन संग अछि	नाम / नाम	—
६६४ : ओ डोर मोन पास अछि	नोर / नोर	—
६६५ : ओ नेह मोन बीच अछि	नेह / देह	—
६६६ : अहाँक नाम, निन्न दूर अछि	नाम / नाम	—
६६७ : ई सोर नोर संग अछि	सोर / सोर	—
६६८ : नोर मौन, नेह गाढ अछि	नोर / नोर	—
६६९ : नेह एखनो मोन संग अछि	नेह / नेह	—
६७० : पुरन सोर घर बीच अछि	सोर / नोर	—
६७१ : अहाँक नाम आबो पास अछि	नाम / नाम	—
६७२ : पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल	पार / पार	—
६७३ : बुझल दीपक उजियार	पार / पार	—
६७४ : मौनक सोर भीतर जागल	सोर / छोर	—
६७५ : दूर गेलहुँ तऽ नेह	नेह / देह	—

बुझलहुँ		
६७६ : मौनक तान भीतर बजैत रहल	तान / तान	—
६७७ : अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल	भोर / छोर	—
६७८ : मेटल नाम हमरा घर आयल	नाम / नाम	—
६७९ : अन्हार हमरा मोन बुझायल	हार / भार	—
६८० : जे गेल से भीतर रहि गेल	सोर / छोर	—

गजल ६८१ : पानि अपन पिआस कहैत रहल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८१ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर साँच गप अछि”; मध्यक पाठ—“मीत दूर, नाम पास अछि / ओ डोर साँच गप अछि” ।

‘पानि अपन पिआस कहैत रहल’ प्रकृतिक मनुष्योचित रूपान्तरणक अनूठ शीर्षक अछि । पानिक पिआस नदी-आ-संकटक यथार्थसँ जुड़ि पर्यावरणीय अर्थ पाबि सकैत छल ।

मुदा मूल शेरसभमे पानि वा ओकर पिआसक विकास अनुपस्थित अछि; ‘ओ सोर साँच गप अछि’ सन युग्मक सामान्य शोक-प्रसङ्ग शीर्षकक स्वतंत्रता निष्फल करैत अछि । ई शीर्षक-पाठ अन्तर्विरोध उल्लेखनीय अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, नोर, भोर, डोर, ठोर; रदीफ “साँच गप अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ सोर साँच गप अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत

अच्छि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अच्छि।

गजल ६८२ : सून्न दुआरि एतबे कहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८२ मे १० मूल मिसरा अच्छि। आरम्भक पाठ—“घर सून्न, भीत मौन अच्छि / ओ पार घर बीच अच्छि”; मध्यक पाठ—“दुख गाढ, सुख दूर अच्छि / ओ सार घर बीच अच्छि”।

‘सून्न दुआरि एतबे कहि गेल’ निजीव घरकें बोलबाक सामर्थ्य देत। पुरान घरक रिक्त देहरीकें परिवारक इतिहासक साक्षी मानबाक सम्भावना एहि शीर्षकमे अच्छि।

मुदा दुआरिक कथन वास्तवमे की, से प्रस्तुत नहि। ‘ओ पार घर बीच अच्छि’ आ ‘ओ हार घर बीच अच्छि’क अमूर्त अन्त्ययुग्म शीर्षकक प्रश्नकें अधूरा छोड़ैत अच्छि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण पार, हार, तार, सार, धार; रदीफ “घर बीच अच्छि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अच्छि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अच्छि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६७३ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अच्छि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अच्छि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“मोन मौन, नेह गाढ अच्छि / ओ पार घर बीच अच्छि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अच्छि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अच्छि।

गजल ६८३ : नेहक बाति रहि जाइत अच्छि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८३ मे १० मूल मिसरा अच्छि। आरम्भक पाठ—“मोनमे नेह फेर जागल / ओ नोर मोनमे बाँचल अच्छि”; मध्यक पाठ—“भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर मोनमे बाँचल अच्छि”।

‘नेहक बाति रहि जाइत अछि’ बोलल गेल वा नहि बोलल गेल बातक टिकावक भाव अछि। ‘नोर मोनमे बाँचल अछि’क शेर भावनाकें स्मृतिभण्डार मानैत अछि।

किछु युग्म घोषित ‘मोनमे बाँचल अछि’ रदीफ छोटि स्वतन्त्र वर्णन बनि जाइत अछि; एहन विचलन जसक तस छन्द-घोषणाक संग नहि निबहैत। नेहक विशेष बात वास्तविक संवादक रूप नहि पबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, ठोर, छोर; रदीफ “मोनमे बाँचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“रौदमे छाह फेर गाढ भेल / ओ छोर मोनमे बाँचल अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८४ : अन्हार हमरासँ गप करैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८४ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रात घर फेर बडु मौन भेल / ओ पार भीतर जागल अछि”; मध्यक पाठ—“चान मेघ बीच फेर डूबल / ओ तार भीतर जागल अछि”।

‘अन्हार हमरासँ गप करैत अछि’ अन्हारकें सक्रिय सम्बोधक बना दैत अछि। ‘पार भीतर जागल अछि’क प्रतीक बाहरी दूरीकें भीतरक आशामे बदलि सकैत अछि।

मुदा अन्हारक कथनक एकोटा वाक्य नहि अछि; शीर्षकक नाटकीय सम्बोधन मात्र कविताक आरम्भ बिन्दु रहैत अछि। प्रकाशित रदीफक बीच अनेक शेर स्वतंत्र वाक्यपर समाप्त होइत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण पार, हार, धार, तार, सार, भार; रदीफ “भीतर जागल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ भार भीतर जागल अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८५ : नोर हमरा संग जागैत रहल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८५ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“भोरमे राग फेर जागल / ओ गीत नेहमे बाँचल अछि”; मध्यक पाठ—“गीतक तान फेर जागल / ओ रीत नेहमे बाँचल अछि”।

‘नोर हमरा संग जागैत रहल’मे अश्रुकें जागल सहयात्री मानल गेल अछि; ‘गीत नेहमे बाँचल अछि’क संग दुख गीतमे रूपान्तरित होयबाक सम्भावना बनैत अछि।

किन्तु ‘गीत/मीत/प्रीत/रीत’ सूची अलग शेरक प्रसङ्ग नहि रचैत। बीच-बीचमे घोषित रदीफ नहि भेटला पर गजल-विधानक प्रश्न उपस्थित होइत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत; रदीफ “नेहमे बाँचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६८३ सँ ३ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“मोनमे नेह फेर जागल / ओ गीत नेहमे बाँचल अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८६ : साँझक बादो घर नहि सुतल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८६ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“साँझमे चान फेर डूबल / ओ नाम घरमे बाँचल अछि”; मध्यक पाठ—“गाममे बाट फेर बडु सूत्र / ओ ठाम घरमे बाँचल अछि” ।

‘साँझक बादो घर नहि सुतल’ घरकें मनुष्य जकाँ जागल देखाबैत अछि । ‘नाम घरमे बाँचल अछि’क सन्दर्भ घरकें व्यक्तिगत स्मृतिक अभिलेख बना सकैत अछि ।

मुदा घरक भीतर कोन लोक जागल, कोन अनुपस्थिति ओकर निन्न उडेलक, से स्पष्ट नहि । नाम/गाम/घामक तुक-शृंखला परिचित आवर्तनपर टिकैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम; रदीफ “घरमे बाँचल अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“मोनमे नेह फेर जागल / ओ नाम घरमे बाँचल अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६८७ : नाम मेटल, सोर नहि मेटल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८७ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर घरमे जागल अछि”; मध्यक पाठ—“नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर घरमे जागल अछि” ।

‘नाम मेटल, सोर नहि मेटल’ लिखित विलोपनक बरक्स मौखिक स्मृतिक निरन्तरता स्थापित करैत अछि । ई शीर्षक विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक मुख्य प्रश्न—ककर नाम लिखल गेल, ककर स्वर बचल—संग जुडैत अछि ।

किन्तु लिखित अभिलेख, मेटबाक क्रिया अथवा कोनो विशिष्ट स्वरक पाठ-साक्ष्य नहि । सम्भावित ऐतिहासिक अर्थ आ पाठक प्रत्यक्ष उपलब्धि अलग राखब आवश्यक अछि ।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, नोर, भोर, ठोर, डोर, छोर; रदीफ “घरमे जागल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ छोर घरमे जागल अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८८ : चान डूबल, नेह नहि डूबल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६८८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“साँझमे चान फेर डूबल / ओ चान मोनमे जागल अछि”; मध्यक पाठ—“नेहक डोर बडु ढील भेल / ओ मान मोनमे जागल अछि”।

‘चान डूबल, नेह नहि डूबल’ नश्वर दृश्य आ टिकाऊ भावक समानान्तर रचैत अछि। चान-तान-गान-प्राणक काफिया-शृंखला दृश्य आ संगीतकँ जोड़बाक साधन बनल अछि।

मुदा ई विपरीतता पाठमे नब चरित्र वा घटनाक द्वारा विकसित नहि। रदीफ-शृंखलाक बीच छूटि गेल युग्मसभ रूपगत निरन्तरताकँ घटबैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण चान, तान, गान, मान, प्राण; रदीफ “मोनमे जागल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोनमे नेह फेर जागल / ओ चान मोनमे जागल अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८९ : पार भेटल, मझधार बाँचल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ६८९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ पार नेहमे जागल अछि”; मध्यक पाठ—“मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ सार नेहमे जागल अछि”।

‘पार भेटल, मझधार बाँचल’ यात्रा सम्पन्न भेलाक बादो संकट नहि मेटबाक विरोधाभास अछि। घाटपर ठाढ़ नाव आ दूर पारक दृश्य एहिमे भौतिक आधार प्रदान करैत अछि।

मुदा मझधारक जोखिमक ठोस घटना शेरसभमे प्रस्फुटित नहि; ‘पार नेहमे जागल अछि’ अमूर्त बनि रहैत अछि। नावक दृश्य आ नेहक मनोभावक पुल पूर्ण स्पष्ट नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण पार, हार, तार, सार, धार, भार; रदीफ “नेहमे जागल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ भार नेहमे जागल अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९० : सूत्र गामक एकटा साँझ

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ६९० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“गाममे बाट फेर बड्ड सूत्र / ओ गाम मोनमे बाँचल अछि”; मध्यक पाठ—“घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ ठाम मोनमे बाँचल अछि”।

‘सूत्र गामक एकटा साँझ’ समय आ स्थान दुनू निर्दिष्ट करैत अछि। ‘गाममे बाट फेर बड्ड सूत्र’क बिम्ब प्रवास वा उजड़ैत लोकजीवनक सम्भावना जगबैत अछि।

मुदा गामक शून्यताक कारण, कोनो सामाजिक घटना, कोनो लोकस्वर नहि; ताहिसँ विशिष्ट साँझ फेर सामान्य स्मृति-चित्र बनैत अछि। नाम/गाम/घामक परिचित तुकक घनत्व अत्यधिक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण गाम्, नाम्, घाम्, ठाम्, धाम्; रदीफ “मोनमे बाँचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोनमे नेह फेर जागल / ओ नाम मोनमे बाँचल अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९१ : ठोर गुम्म, भीतर गीत

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६९१ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ गीत भीतर जागल अछि”; मध्यक पाठ—“गीतक तान फेर जागल / ओ रीत भीतर जागल अछि”।

‘ठोर गुम्म, भीतर गीत’ मौनक भीतर संगीतक उर्जा खोजैत अछि। नोर ठोर पर थमल अछि, मुदा ‘गीत भीतर जागल अछि’—एहि विरोधाभासमे दबायल भावक कलात्मक रूपान्तरण सम्भव अछि।

मुदा ओ गीतक शब्द, गायक वा प्रसङ्गक विशिष्ट विवरण नहि भेटैत। मध्यक अनेक युग्म घोषित रदीफसँ स्वतंत्र समाप्त होइत छथि; गीत/मीत/प्रीतक तुक-आवर्तन एहि औपचारिक छूटकँ ढाँकि नहि सकैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत; रदीफ “भीतर जागल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६८५ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“मोनमे नेह फेर जागल / ओ गीत भीतर जागल अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९२ : भोर आयल, राति नहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६९२ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर घरमे बाँचल अछि”; मध्यक पाठ—“नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर घरमे बाँचल अछि”।

‘भोर आयल, राति नहि गेल’ समयक दू विपरीत अवस्थाकें एकहि वाचकक भीतर बसबैत अछि। भोरक राग जागैत अछि, मुदा रातिक पीडा अबाधित; ई मनोवैज्ञानिक द्वैध रचनाक मुख्य सम्भावना अछि।

६८६क जागैत घर आ ६८७क जागैत सोर एहि रचनामे फेर प्रवेश करैत अछि। भोरक आगमनक बादो राति किएक नहि गेल, तकर कारणात्मक दृश्य नहि; अलग रदीफविहीन युग्म क्रमबद्ध रूप-विधानकें घटबैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण भोर, सोर, नोर, ठोर, डोर, छोर; रदीफ “घरमे बाँचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ६८७ सँ ४ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान कृति नहि।

समापन-पाठ—“मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ छोर घरमे बाँचल अछि”।

अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६१३ : जे भोर मोन पडैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६१३ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“जखन गामक बाट सुनसान / भोर मोन पडैत अछि”; मध्यक पाठ—“जखन साँसक जोर कमजोर / छोर मोन पडैत अछि” ।

‘जखन गामक बाट सुनसान’ कथन गजलकें निजी शोकसँ सामुदायिक निर्जनता दिस लऽ जाइत अछि । भोर स्मृतिक विषय, आ ‘मजूर देहक जोर कमजोर’ श्रमक सामाजिक प्रश्नकें भीतर आनैत अछि ।

‘शेर पाँच’क प्रकाशकीय घोषणाक संग स्रोतमे दस अलग स्तैश-युग्म पाँति अछि; ओहिमे किछु ‘धूप राह कहैत अछि’ सन स्वतन्त्र अन्त्य रहबाक कारण घोषित ‘मोन पडैत अछि’ रदीफ नहि निबहैत । सामाजिक श्रमक संकेत अछि, पूरा दृश्य नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण भोर, ठोर, नोर, छोर, सोर, डोर; रदीफ “मोन पडैत अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“मनुख मोनक नेह कमजोर / डोर मोन पडैत अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ६१४ : जीवनक सार कहू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६१४ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“जे पीडा सहैत हाथ धरैत / जीवनक पार कहू”; मध्यक पाठ—“जे आशा घटैत भय बढ़ैत / जीवनक हार कहू” ।

‘जीवनक सार कहू’ प्रश्नात्मक सम्बोधनक कविता अछि । पीडा सहबाक हाथ आ देहक दबाव एकटा नैतिक अनुभव दैत अछि; ‘पार’ आ ‘मार’ बीच जीवनक रूपक रचबाक प्रयास अछि ।

मुदा 'कहू' बारम्बार आदेश होइत अछि; उत्तरक विविधता आ अनुभूत प्रसङ्ग कम। शब्दानुकरणक 'सार/भार/हार' जीवन-दर्शनक पूर्ण तर्क बनबाक लेल पर्याप्त नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार "-र", उदाहरण पार, सार, भार, हार, धार, मार; रदीफ "कहू"। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ "धर्म", "नेह", "भ्रम", "मान" अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—"जे पीडा बढैत देह सहैत / जीवनक मार कहू"। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९५ : मोनक भीतर राह रहू

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ६९५ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—"माटि कहैत पानि बहैत / मोनक भीतर राह रहू"; मध्यक पाठ—"माटि रहैत पानि बहैत / मोनक भीतर थाह रहू"।

'माटि कहैत पानि बहैत'क युग्म जमीन आ धारक संयुक्त गति रचैत अछि। 'राह रहू' जीवित बाट बचेल रखबाक आह्वान अछि, जकरा कृषिक जीवनदृष्टिसँ जोडि पढल जा सकैत अछि।

मुदा 'राह', 'दाह' आ 'आह'क तुकक कारण बहुते वाक्यांश अमूर्त भऽ जाइत अछि। मोनक भीतर राहक अर्थ स्पष्ट कर्ता-क्रिया-सन्दर्भसँ सुदृढ होइत, जे कतहु अनुपस्थित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार "-ह", उदाहरण राह, छाह, चाह, थाह, आह, दाह; रदीफ "रहू"। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ "गीत", "धीर", "नेह", "साँच" अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“बाति कहैत माटि रहैत / मोनक भीतर दाह रहू”। अन्तिम मिसराकै आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९६ : केवल ई मान नहि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६९६ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“जखन साँचक मोल बेकार / केवल ई मान नहि”; मध्यक पाठ—“जखन गामक बाट सुनसान / केवल ई थान नहि”।

‘जखन साँचक मोल बेकार’ सामाजिक मूल्यनिर्णयपर अविश्वासक संकेत अछि। ‘आन लाचार’क युग्म मानवीय गरिमा आ मर्यादाक प्रश्न उठबैत अछि।

‘केवल ई मान नहि’ निषेधपूर्ण रदीफ एकतरफा घोषणा रहैत अछि; कोन मान अस्वीकार्य आ कोन विकल्प स्वीकार्य, ई बोध बहुत कम खुलैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण मान, जान, गान, थान, दान, आन; रदीफ “नहि”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “कर्म”, “दोष”, “धर्म”, “भाग” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“कतेक लोकक आन लाचार / केवल ई आन नहि”। अन्तिम मिसराकै आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९७ : जीवन आस जकाँ

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६९७ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“ककरो मोन पीडा सहैत / जीवन आस जकाँ”; मध्यक पाठ—“सगरो रात पीडा रहैत / माया वास जकाँ”।

‘जीवन आस जकाँ’ आशाकै स्थिर सिद्धान्त नहि, उपमा रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। पीडा सहैत देह आ मोनक बिम्ब जीवनक क्षणभंगुरता आ जुझारूपनक बीच सम्बन्ध रचैत अछि।

मुदा 'रास जकाँ' सन विस्तारक अर्थ स्वतः सिद्ध नहि होइत। आस, साँस, घास जकाँ तुकक सूची वास्तविक जीवन-संघर्षक विशिष्ट घटनाक स्थान नहि लऽ सकैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, साँस, पास, वास, घास, रास; रदीफ “जकाँ”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “काल”, “जाल”, “दीप”, “साँच” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि। समापन-पाठ—“ककरो देह पीडा सहैत / जीवन रास जकाँ”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९८ : जीवनमे गाम बिनु

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ६९८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“कतेक दूर मनुख चलैत / जीवनमे गाम बिनु”; मध्यक पाठ—“मनुख नाम कतेक गनैत / भीतरमे नाम बिनु”।

'जीवनमे गाम बिनु' विस्थापनक एक प्रखर प्रश्न अछि। 'किसान घाम कतेक सहैत' सामाजिक श्रमकें प्रेम-स्मृतिक गजलधरासँ बाहर निकालि कृषिक अर्थव्यवस्था लग पहुँचा दैत अछि।

किन्तु 'खेतीमे घाम बिनु'क वाक्य दुविधापूर्ण अछि—किसानक घाम परिश्रमक प्रतीक कि मौसमी धूप? एहि दू भेदक अस्पष्टता कथ्यकें कमजोर करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण गाम, दाम, काम, नाम, ठाम, घाम; रदीफ “बिनु”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “धीर”, “नीर”, “नेह”, “साँच” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“किसान घाम कतेक सहैत / खेतीमे घाम बिनु”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि;

एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६९९ : ई केवल काल छल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ६९९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“जे छाती सहैत पीर बढ़ैत / ई केवल काल छल”; मध्यक पाठ—“जे पूजा बढ़ैत नेह घटैत / ई केवल चाल छल”।

‘ई केवल काल छल’ अनुभूतिक कारणकें समयपर टारबाक मनःस्थिति देखबैत अछि। पीड़ा सहैत छाती आ मौन रखैत मनक बीच अपरिहार्य कालगत दबावक भाव अछि।

‘केवल’ निष्कर्षक पाछाँ वास्तविक तर्क नहि; काल, जाल आ ढालक तुक शब्दगत प्रभाव देत, मुदा घटना-परिणामक विशिष्टता सीमित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण काल, जाल, ताल, चाल, हाल, ढाल; रदीफ “छल”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “दोष”, “भ्रम”, “मान”, “साँच” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“जे छाती सहैत मौन रहैत / ई केवल ढाल छल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०० : मोनक भीतर पीर कतए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“कतेक लोकक पीर गुमनाम / मोनक भीतर पीर कतए”; मध्यक पाठ—“किसान खेतक आस कमजोर / देहक भीतर तीर कतए”।

‘कतेक लोकक पीर गुमनाम’ काव्यक सबसे ठोस सामाजिक वाक्य अछि। गरीब हाथक लाचारी जोड़लाक कारण पीड़ा कियो अमूर्त अस्तित्ववादी प्रश्न नहि, श्रम-सम्मानक समस्या बनैत अछि।

मुदा 'मोनक भीतर चीर कतए' रूपकक अर्थ स्पष्ट नहि; पीर-नीर-धीरक ध्वनि-साम्य सामाजिक प्रश्नक निर्वाह नहि कऽ पबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “पीर”, उदाहरण पीर, नीर, धीर, तीर, वीर, चीर; रदीफ “कतए”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “नाम”, “भार”, “मान”, “साँच” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“गरीब हाथक मान लाचार / मोनक भीतर चीर कतए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ६८१-७०० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकेँ केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमेँ दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
६८१ : पानि अपन पिआस कहैत रहल	सोर / सोर	—
६८२ : सून्न दुआरि एतबे कहि गेल	पार / पार	—
६८३ : नेहक बाति रहि जाइत अछि	नोर / छोर	—
६८४ : अन्हार हमरासँ गप करैत अछि	पार / भार	—
६८५ : नोर हमरा संग जागैत रहल	गीत / गीत	—
६८६ : साँझक बादो घर	नाम / नाम	—

नहि सुतल		
६८७ : नाम भेटल, सोर नहि भेटल	सोर / छोर	—
६८८ : चान डूबल, नेह नहि डूबल	चान / चान	—
६८९ : पार भेटल, मझधार बाँचल	पार / भार	—
६९० : सूत्र गामक एकटा साँझ	गाम / नाम	—
६९१ : ठोर गुम्म, भीतर गीत	गीत / गीत	—
६९२ : भोर आयल, राति नहि गेल	भोर / छोर	—
६९३ : जे भोर मोन पडैत अछि	— / —	—
६९४ : जीवनक सार कहू	— / —	—
६९५ : मोनक भीतर राह रहू	— / —	—
६९६ : केवल ई मान नहि	— / —	—
६९७ : जीवन आस जकाँ	— / —	—
६९८ : जीवनमे गाम बिनु	— / —	—
६९९ : ई केवल काल छल	— / —	—
७०० : मोनक भीतर पीर कतए	— / —	—

गजल ७०१ : एतेक फेर किएक

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०१ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“मनुख पीर कतेक सहैत / एतेक फेर किएक”; मध्यक पाठ—“किसान भार कतेक सहैत / एतेक घेर किएक” ।

‘एतेक फेर किएक’ पुनरावृत्त निर्णयपर आपत्ति अछि । ‘मनुख पीर कतेक सहैत’क प्रश्न व्यक्तिक बारम्बार सहनशीलता आ सामाजिक प्रणालीक स्थिरता दुनूपर दृष्टि दैत अछि ।

प्रश्नक वास्तविक उत्तर वा फेरक घटना स्पष्ट नहि । ‘नेर’क प्रयोग रदीफ-तुक पुरा करबाक प्रयत्न बुझाईत अछि; भाषा-स्फूर्ति आ सहज मैथिली प्रयोगक अलग जाँच आवश्यक ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “ेर”, उदाहरण फेर, बेर, देर, घेर, ढेर, नेर; रदीफ “किएक” । उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “दूर”, “पीर”, “भार”, “मौन” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि । सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि ।

समापन-पाठ—“कतेक नेह शहर धरैत / एतेक नेर किएक” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७०२ : जीवनमे फूल रहैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०२ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“माटि कहैत जीवन रहैत / जीवनमे फूल रहैत अछि”; मध्यक पाठ—“माटि रहैत जीवन चलैत / जीवनमे कूल रहैत अछि” ।

‘जीवनमे फूल रहैत अछि’ कठिनाइमे सौन्दर्यक बचल संभावना अछि । माटि, खेती आ फूलक संग जीवनधाराक कृषि-आधारित रूपक बनैत अछि ।

‘धूल’, ‘मूल’, ‘शूल’ जकाँ शब्दक समानता किछु ठोस अर्थ खोलैत अछि, मुदा अनेक युगमे फूलक कारणात्मक सम्बन्ध नहि बनैत । अपूर्ण दृश्यकें केवल आशावादी कथन मानब अधिक सटीक अछि ।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “लूल”, उदाहरण फूल, धूल, मूल, कूल, शूल; रदीफ “रहैत अछि”। उपलब्ध रदीफयुक्त मिसरासँ “घाम”, “नेह”, “राह”, “साँच” अन्त्यशब्द घोषित उदाहरण-सूचीसँ अलग अछि। सूची संपूर्ण रूप-विधान नहि; सर्व मिसराक उच्चारणाधारित स्वतंत्र परीक्षा शेष अछि।

समापन-पाठ—“बाति जरैत पीड़ा रहैत / खेतीमे फूल रहैत अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०३ : एखनो चाह मोनमे अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०३ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“ओकर नाम मोन बीच अछि / एखनो चाह मोनमे अछि”; मध्यक पाठ—“मीत दूर, रात सुनसान अछि / एखनो थाह मोनमे अछि”।

‘एखनो चाह मोनमे अछि’ आशाक टिकावक संकेत अछि। नाम मोनमे रहब आ भोरक जागनाइ स्मृतिसँ आकांक्षा दिस चलबाक भाव विकसित करैत अछि।

चाह आ दाहक तुक प्रेमकँ पीड़ासँ जोड़ैत अछि, मुदा चाह पूरा होयबाक सामाजिक/व्यक्तिगत अवरोध निर्दिष्ट नहि; नब कथा नब रदीफजकाँ प्रगट नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण चाह, आह, छाह, थाह, राह, दाह; रदीफ “मोनमे अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर आय, मोन जागल अछि / नेहक दाह मोनमे अछि”।

अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०४ : ओकर सोर रहि गेल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०४ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रात बीत, मोन चुप / ओकर नोर रहि गेल”; मध्यक पाठ—“घर सूत्र, दीप मन्द / ओकर सोर रहि गेल” ।

‘ओकर सोर रहि गेल’ अनुपस्थित व्यक्तिक आवाजक शेषांशपर केन्द्रित अछि । राति बीतलाक पाछाँ ‘नोर’ आ ‘छोर’ रहबाक काव्य-संरचना समयक गतिआ स्मृतिक स्थायित्वकैँ टकरवैत अछि ।

मुदा ओकर शब्द, सम्बोधन अथवा लोकस्वरक परिचय नहि । ध्वनि केवल सामान्य सोर बनि रहैत अछि; एहि कारण आवाजक ऐतिहासिक महत्त्व सम्भावनात्मक अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, डोर, सोर, जोर, छोर; रदीफ “रहि गेल” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“भोर आय, चान ढल / रातिक छोर रहि गेल” । अन्तिम मिसराकैँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७०५ : मौन एक गीत लगैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०५ मे १० मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“किएक मोन थकैए? / हमर मौन एक गीत लगैत अछि”; मध्यक पाठ—“किएक घाव दुखैए? / हमर दुख एक रीत लगैत अछि” ।

‘हमर मौन एक गीत लगैत अछि’क वाक्य निराशा आ कलात्मक रूपान्तरण दुनूकैँ एकसंग रखैत अछि । अन्तिम ‘नेह एक जीत लगैत अछि’ पीडाक साधारण नकार नहि, ओकरा सहबाक भाषा बनैत अछि ।

किंतु ‘लगैत अछि’ रदीफक एकरूपता बीच किछु युग्म ‘बचल अछि’पर समाप्त होइत अछि । गीत/मीत/जीतक अन्त्यानुप्रास छन्दनिर्णयक पूर्ण विकल्प नहि ।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत, जीत; रदीफ “लगैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हमर नेह दुखैए / हमर नेह एक जीत लगैत अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०६ : नाम मोन पड़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०६ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“एखनो नोर बहैए / नाम मोन पड़ैए”; मध्यक पाठ—“रातिक मेह पड़ैए / घाम मोन पड़ैए”।

‘माटिक गन्ध अबैए / गाम मोन पड़ैए’ एहि समूहक अपेक्षाकृत विशेष दृश्य अछि। गन्ध स्मृतिक मूर्त माध्यम बनैत अछि; पानि, मेह आ घामक सह-अस्तित्व पुनः गामक अनुभव जगबैत अछि।

‘दाम मोन पड़ैए’क निहित अर्थ नेहक मोल भऽ सकैत अछि, मुदा मूल वाक्य ओ अर्थ स्पष्ट नहि करैत। बीचक किछु अन्त्यपद रदीफ छोड़ैत छथि; अनुक्रमिक दृश्य-सङ्गति सीमित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, गाम, ठाम, घाम, धाम, दाम; रदीफ “मोन पड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नेहक घाव दुखैए / दाम मोन पड़ैए”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०७ : हमर मोन रुवैए किएक?

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ७०७ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“हमर मोन रुवैए किएक? / हमर गीत कनैए किएक?”; मध्यक पाठ—“जखन मेह पडैत, दुख घटल / हमर घाव दुखैए किएक?”।

‘हमर मोन रुवैए किएक?’ प्रश्नसँ आरम्भ भेल गजलमे ‘जखन काल बहैत, नाम मिटल / हमर नेह रहैए किएक?’ धरि निरन्तर अनुत्तरित प्रश्न बनेत अछि। ई शोककै निष्कर्ष नहि, संशयक रूप दैत अछि।

स्रोतमे पाँच शेरक दस मिसरा अलग पाँतिमे अछि; एकरा पहिनुक स्लैश-युग्मसँ फरक रूप मानब आवश्यक। तुकसँ प्रश्नक बल बिस्तार पवैत अछि, मुदा चान ढलबाक कारण मोन जरब तर्क नहि, काव्यगत सम्बद्धता अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ैए”, उदाहरण रुवैए, कनैए, बहैए, दुखैए, थकैए, रहैए; रदीफ “किएक”। मूल मिसराक अन्त्यभागमे एहि रदीफक प्रत्यक्ष पुष्टिक अभाव अछि; घोषित विधान आ लिखित पाठक दूरी जाँचब आवश्यक।

समापन-पाठ—“जखन काल बहैत, नाम मिटल / हमर नेह रहैए किएक?”। अन्तिम मिसराकै आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०८ : चाह आबो बचल अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ७०८ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मीत दूर गेल, चाह आबो बचल अछि / गीत मौन भेल, आह आबो बचल अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ बीतल, घरमे मौन बचल अछि / नेह मौन भेल, थाह आबो बचल अछि”।

‘मीत दूर गेल, चाह आबो बचल अछि’क आरम्भ वियोगक बादो इच्छाक जीवन देखबैत अछि। ‘नोर सूखल’क पाछाँ ‘दाह आबो बचल’ रहबाक रूपक संवेदनाक विविध कालावधि स्पष्ट करैत अछि।

बीचक कथनसभ कतहु रदीफसँ हटि 'नेह बचल अछि'पर समाप्त होइत अछि। ई अर्थक स्वतन्त्रता देत, मुदा घोषित एकरूप रदीफक दावाकें कमजोर करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण चाह, आह, छाह, थाह, राह, दाह; रदीफ “आबो बचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नोर सूखल, मोनमे पीर बचल अछि / घाव सूखल, दाह आबो बचल अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०९ : मोन राति नाम फेर कहैत रहल

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७०९ मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नोर राति-दिन, चुप बहैत रहल / मोन राति नाम, फेर कहैत रहल”; मध्यक पाठ—“भोर पानि-धार, चुप बहैत चलल / नोर आँखि-कोर, फेर पडैत रहल”।

‘नोर राति-दिन चुप बहैत रहल’ सतत् पीडाक दृश्य अछि; माटि-बाटपर बढैत पाँव आ भीतर चलैत मोनक बीच द्वितीय यात्रा सम्भव होइत अछि।

‘बहैत/कहैत/सहैत’क क्रियाधर्मी अन्त्यानुप्रास कविता कें गति दैत अछि, मुदा किछु मिसरामे ‘चलल’ बनाम ‘रहल’क परिवर्तन छन्दकीय पुनर्परीक्षण मांगैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ेत”, उदाहरण बहैत, कहैत, सहैत, पडैत, चलैत, हटैत; रदीफ “रहल”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दीप राति घर, चुप जरैत चलल / मीत मोनसँ दूर, फेर हटैत रहल”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक

सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१० : मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ७१० मे १० मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि / गीत आब मौन भेल; मोनक तार शेष अछि”; मध्यक पाठ—“साँझ, चान आब दूर; मीतक छाह फेर अछि / गप आब थामल; मोन मौन, सार शेष अछि”।

‘मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि’ विरहपछातिक हिसाबक रचना अछि। दीप, फूलक हार आ सूत्र घर शेष रहि गेल वस्तुक कथा कहबाक वास्तविक संभावना बनबैत अछि।

किन्तु ‘फेर अछि’पर समाप्त अनेक पाँति घोषित ‘शेष अछि’ रदीफ छोडैत अछि। भार, धार, हारक तुकक ध्वनि वस्तुसभक सम्बन्धक पूर्णतः स्पष्ट नहि करैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण भार, तार, धार, सार, पार, हार; रदीफ “शेष अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“साँस आब मन्द भेल; देहक पीर फेर अछि / घर मौन, दीप मन्द; फूलक हार शेष अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७११ : मोनमे साँचक सार एखनो अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। 'दीवान-ए-विदेह' खण्ड २क गजल ७११ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मोनमे साँचक सार एखनो अछि / मोन चुप, प्रश्नक भार एखनो अछि”; मध्यक पाठ—“क्षण दूर, देह आन; मोन आबो अछि / मोनमे कालक धार एखनो अछि”।

‘मोनमे साँचक सार एखनो अछि’ सत्यकेँ बाह्य सिद्धान्तक बदला अनुभूत बचत मानैत अछि। ‘मोन चुप, प्रश्नक भार’क संग साँच निष्कर्ष नहि, प्रश्नक जिम्मेवारी बनैत अछि। छाहकेँ मीत बुझबाक भ्रम आ भीतरक दीपक प्रतिविरोध ई पाठकेँ साधारण प्रेमगीतसँ उपर उठाबैत अछि।

तथापि सत्यक कसौटी किछु शेरमे केवल व्यक्तिगत अनुभूति बनि रहैत अछि। ‘क्षण दूर, देह आन’क दार्शनिक विस्तार लेल तर्क-प्रसङ्ग नहि; काव्यक ध्वनि आ प्रमाणक दावा अलग-अलग बुझबाक चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, तार, पार, धार, हार, मार; रदीफ “एखनो अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मीत दूर, पीरक मूलक थाह अछि / मोनमे पीरक मार एखनो अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१२ : भोर मोनमे अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मीत दूर, घर सून्न; नोर मोनमे अछि / नेह मौन, दिन चुप; भोर मोनमे अछि”; मध्यक पाठ—“रूप आन, सोर आन; भीतर नेह अछि / देह आन, मोन एक; डोर मोनमे अछि”।

‘भोर मोनमे अछि’ आशाकेँ समयक बहिरागत क्षण नहि, मनोवैज्ञानिक निवास बनबैत अछि। नोर आ भोरक अन्त्यानुप्रास वियोग-पछातिक जीवनदृष्टिक दू विपरीत स्वर एकत्र करैत अछि।

घरक सून्नपन आ दूर मीतक स्थायी स्थिति फेर आबैत अछि। यद्यपि ‘भीतर अर्थ’ आ ‘भीतर बाट’ सन पदसभ अर्थक नव दिशा दैत अछि, ओहि दिस कोनो ठोस काव्य-दृश्य विकसित नहि होइत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, सोर,

कोर, डोर, ठोर, छोर; रदीफ “मोनमे अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मीत दूर, बाट सून्न; भीतर चिन्ह अछि / घर सून्न, बाट दूर; छोर मोनमे अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१३ : नेहक नाम आब अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“काल दूर, चिन्ह ठाढ़; नेहक नाम आब अछि / मीत दूर, घर सून्न; पीरक गाम आब अछि”; मध्यक पाठ—“रूप आन, काल दूर; चिन्हक नेह ठाढ़ अछि / देह आन, मोन एक; नेहक धाम आब अछि”।

‘शब्द एक, अर्थ आन’ एहि गजलक सर्वाधिक तीक्ष्ण सूक्ति अछि। नाम, गाम आ ठामक ध्वनि-सम्बन्धक बीच अर्थक बहुलता देखाबयक प्रयास भाषादर्शनसँ जुड़ैत अछि।

मुदा उक्त सूक्तिक पाछाँ शब्द-बोधक किछु विशिष्ट उदाहरण नहि भेटैत। नेहक नाम आ अर्थक दामक उपमान अर्थगर्भित अछि, पर गजलक शेष भाग ओहि विचारकँ कसौटीपर नहि आनैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, गाम, ठाम, घाम, धाम, काम, दाम; रदीफ “आब अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“शब्द गेल, अर्थ ठाढ़; नेहक सोर गाढ़ अछि / सोर गेल, नेह ठाढ़; अर्थक दाम आब अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१४ : नम्र मोन मान संग अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१४ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“साँच दूर, प्रश्न ठाढ़; नम्र मोन मान संग अछि / ज्ञान कम, दंभ दूर; खोजमे ज्ञान संग अछि”; मध्यक पाठ—“चाह जाग, डेग चाल; कर्म बीच बाट ठाढ़ अछि / काज कर, फल देख; श्रमक गान संग अछि” ।

‘ज्ञान कम, दंभ दूर’ छोट वाक्यमे बौद्धिक विनम्रताक नीति दैत अछि । गप सुनबाक आग्रह, क्रोध दूर करबाक भाव, आ ‘फल देख, मूल खोज’क क्रम व्यक्तिगत आत्मसंयमसँ ज्ञानक पद्धति दिस आगाँ बढ़ैत अछि ।

किन्तु ‘नम्र मोन मान संग अछि’क मान ककर प्रति—स्वाभिमान, सामाजिक सम्मान कि ज्ञानक अनुशासन—से अलग नहि खुलैत । नीति-सूक्ति बहुल भेलासँ काव्य दृश्य अल्प रहैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, धान, तान; रदीफ “संग अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“फूल झर, बास ठाढ़; चिन्ह बीच मूल ठाढ़ अछि / फल देख, मूल खोज; चिन्हक तान संग अछि” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७१५ : मोनमे सार बचल अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१५ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“रूप देख, मोन पूछ; मोनमे सार बचल अछि / देह देख, मोन मौन; देहमे भार बचल अछि”; मध्यक पाठ—“छाह हट, मोह दूर; मोनमे बन्ध हटैत अछि / मोह दूर, नेह शुद्ध; बाटमे पार बचल अछि” ।

‘बीज संग, मेघ संग; खेतमे धान उगैत अछि’ सत्य आ अर्थक बहसकें एकाएक खेतीक प्रत्यक्ष क्रियामे उतारैत अछि । बीज-मेघ-घाम-नीरक क्रम ज्ञानक कारणमीमांसाक काव्यात्मक उदाहरण बनि सकैत अछि ।

रूप, देह, शब्द आ काजक पहिने सभ विषय एहि कृषि-दृश्य धरि पहुँचबाक एकटा सूत्र नहि बनबैत। ताहिसँ धानक सुन्दर चित्र अलग चमकैत अछि, किन्तु सम्पूर्ण गजलक समेकित तर्क कमजोर रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, तार, धार, पार, मार, हार; रदीफ “बचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नोर देख, मोन पूछ; मोनमे प्रश्न उठैत अछि / चिन्ह देख, मोन मौन; बाटमे हार बचल अछि”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१६ : भोर रहि जाइत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“लोभ क्षण, नेह धीर; भोर रहि जाइत अछि / काल कात, प्रश्न टाढ़; ठोर रहि जाइत अछि”; मध्यक पाठ—“काल बीत, रूप फेर; नाम कहि जाइत अछि / रूप फेर, मोन एक; डोर रहि जाइत अछि”।

‘लोभ क्षण, नेह धीर’ एक नैतिक काल-विभाजन अछि। क्षणिक लोभक बरक्स टिकाऊ सम्बन्ध, कौल आ हाथ धरबाक व्यवहारक बिम्बसँ भोर बचबाक कारण किछु स्पष्ट होइत अछि।

मुदा ‘भोर रहि जाइत अछि’क निरन्तरताक संग ‘ठोर’ आ ‘नोर’क एके रदीफ असहज काल-वाक्य बनबैत अछि। ‘अर्थ जगि जाइत अछि’ सन अन्त्य-मिसरा रूपगत ढाँचा बदलैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण भोर, ठोर, सोर, नोर, डोर, छोर, कोर; रदीफ “रहि जाइत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“काज देख, क्रम देख; प्रश्न उठि जाइत अछि / हाथ दूर, चिन्ह संग; कोर रहि जाइत अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१७ : मान बचैए एखनो

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मोनक मान थिर; बचैए एखनो / साँचक सीमा; बुझैए एखनो”; मध्यक पाठ—“छाहक रूप भ्रम; न दीप दूर, साँच थिर / छाहक पार दीप; कहैए एखनो”।

‘मोनक मान थिर’क कथन निजी सम्मानकें परिस्थितिसँ पृथक टिकाऊ मूल्य बनबैत अछि। साँचक सीमा बुझब आ झटपट मान नहि लेबाक आग्रह आलोचनात्मक विवेकक वास्तविक विषय अछि।

भाषाक कतिपय पदक्रम ‘गपक ठाम फेर’ सन अपूर्ण रहैत अछि। घोषित रदीफ ‘एखनो’ केवल किछु मिसरामे रहबाक कारण लय-आ-रूपक निरन्तरता सम्पूर्ण नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ए”, उदाहरण बचैए, बुझैए, खुलैए, रहैए, कहैए, सुझैए, दिसैए; रदीफ “एखनो”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“रूप देख चिन्ह संग; न झट मान, साँच थिर / रूपक भेद स्पष्ट; दिसैए एखनो”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१८ : आन बाट दिसैए फेर

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दिस फेर साँच रूप; आन बाट दिसैए फेर / एक नीर घाट फेर; आन रंग झलकैए फेर”; मध्यक पाठ—“रंग गन्ध रूप फेर; मूल ठाम मिलैए मोन / रंग रूप फेर गेल; मूल ठाम मिलैए फेर”।

‘आन बाट दिसैए फेर’ दृष्टि बदललापर नब साँचक सम्भावना अछि। नीरक घाट आ ओकर बदलैत रंगक लघु दृश्य एकहि वस्तुक बहुपरिप्रेक्ष्य बोध देबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

मुदा ‘आन बाट’क परिणति ककरो ठोस निर्णय वा परिवर्तनमे नहि होइत। पाठक अनेक मिसरा ‘फेर’ छोड़ि ‘मोन’पर समाप्त होइत अछि; एकर रूपगत दावाक सीमाकें स्पष्ट रखब उचित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ैए”, उदाहरण दिसैए, झलकैए, बुझैए, रहैए, मिलैए, हटैए; रदीफ “फेर”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दूर बाट छाह घेर; साँच बोल सुनैए मोन / साँच बोल राह खोल; दूर बाट मिलैए फेर”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७१९ : मोन फेर बाट बदलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७१९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“लोक बोल नेह संग; मोन फेर बाट बदलैए / शास्त्र पाठ लोक संग; मोन फेर पाठ बदलैए”; मध्यक पाठ—“बीज काल नीर संग; मूल राह फेर खुलैए / घाम नीर बीज संग; रूप फेर घाट बदलैए”।

‘लोक बोल नेह संग’ आ ‘शास्त्र पाठ लोक संग’क संयोजन लोकजीवन आ शास्त्रीय ज्ञानक समानान्तर स्थिति बनबैत अछि। पाठ/हाट/पाटक तुक ई दोसर क्षेत्रसभकें ध्वनिगत पुलसँ जोड़ैत अछि।

मुदा शास्त्रक पाठ लोकक अनुभवकें कोना बदलैत अछि, कोनो उदाहरण नहि। बाट बदलबाक आग्रहक संग वास्तविक ज्ञान-विकासक प्रमाण खोजब आवश्यक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाट”, उदाहरण बाट, पाठ, हाट, पाट, घाट; रदीफ “बदलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित

उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“एक पग दू पग; मूल राह फेर खुलैए / चिन्ह क्रम मेल संग; मोन फेर बाट बदलैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२० : साँच लेल कोन माप अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“प्रश्न जाग मोन मौन / साँच लेल कोन माप अछि”; मध्यक पाठ—“काल बीत देह दूर / मीत नाम मोन दूर नहि”।

‘साँच लेल कोन माप अछि’ गजलक प्रामाणिक केन्द्रीय प्रश्न अछि। चित्र देखबाक आ सोर सुनबाक पाछाँ ‘जाँच बिन झट मान नहि’क विधान प्रत्यक्ष, शब्दप्रमाण आ अनुमानक भेदकें संकेत करैत अछि।

मुदा मापक परिभाषा आ व्यवहारिक प्रयोग विस्तृत नहि; छाप, थाप, ताप आ आलापक तुक काव्यरूप बनबैत अछि, दार्शनिक तर्ककें सिद्ध नहि करैत। छन्द-घोषणा तथा वास्तविक शब्दान्तक मेल अलग जाँचबाक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण माप, छाप, ताप, थाप, जाप, संताप, आलाप; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“काज फल मेल देख / साँच नव आलाप अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७०१-७२० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि।

शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमें दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल
अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
७०१ : एतेक फेर किएक	— / —	—
७०२ : जीवनमे फूल रहैत अछि	— / —	—
७०३ : एखनो चाह मोनमे अछि	— / —	—
७०४ : ओकर सोर रहि गेल	— / —	—
७०५ : मौन एक गीत लगैत अछि	— / —	—
७०६ : नाम मोन पड़ैए	— / —	—
७०७ : हमर मोन रुवैए किएक?	— / —	—
७०८ : चाह आबो बचल अछि	— / —	—
७०९ : मोन राति नाम फेर कहैत रहल	— / —	—
७१० : मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि	— / —	—
७११ : मोनमे साँचक सार एखनो अछि	— / —	—
७१२ : भोर मोनमे अछि	— / —	—
७१३ : नेहक नाम आब अछि	— / —	—

७१४ : नम्र मोन मान संग अछि	— / —	—
७१५ : मोनमे सार बचल अछि	— / —	—
७१६ : भोर रहि जाइत अछि	— / —	—
७१७ : मान बचैए एखनो	— / —	—
७१८ : आन बाट दिसैए फेर	— / —	—
७१९ : मोन फेर बाट बदलैए	— / —	—
७२० : साँच लेल कोन माप अछि	— / —	—

गजल ७२१ : दिस आन साँच देख

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“दिस आन साँच देख / मोन बीच नव हाल अछि”; मध्यक पाठ—“मोन रूप फेर डोल / देह लोक काज भ्रम नहि” ।

‘मत भिन्न तर्क सुन’ बहुपक्षी विचारक आग्रह अछि । साँचक अलग-अलग रूपक संग लोक मान, मोह आ भ्रमक चर्चा नव्य न्यायवादी प्रतिपक्ष-बोधक साहित्यिक रूप मानल जा सकैत अछि ।

मुदा ‘सिद्ध साँच फेर तर्क’क वाक्यमें निष्कर्ष आ प्रक्रियाक सम्बन्ध अधूर अछि । एके ‘नव जाल’क पुनरावर्तन बिना दृश्य प्रमाणक अनुसन्धानकें तर्कक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ाल”, उदाहरण हाल, काल, जाल, चाल, ताल; रदीफ “अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“सिद्ध साँच फेर तर्क / मोन बीच नव जाल अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२२ : साँच एक बेर भेल नहि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मीत ज्ञान थिर नै मान / साँच एक बेर भेल नहि”; मध्यक पाठ—“रंग गन्ध रस संग देख / सभ गुण एक ठाम अछि”।

‘साँच एक बेर भेल नहि’ ज्ञानक आवर्तनशील परीक्षणक सूत्र अछि। ‘जाँच बिन मत लेल नहि’ आ ‘पाठ मात्र शब्द नै मान’ युग्म प्रथम दृष्टि आ ग्रन्थक शब्दकें एकरूप सत्य मानबाक विरोध करैत अछि।

मुदा ‘साँच भेल’क क्रिया सत्यकें घटल घटना बनबैत अछि कि परीक्षित निर्णय—ई अर्थ अस्पष्ट अछि। पुनः परीक्षणक सिद्धान्त स्पष्ट, उदाहरणक संख्या कम।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ेल”, उदाहरण भेल, लेल, मेल; रदीफ “नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“क्रम देख मूल फेर खोज / काज बिन मूल भेल नहि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२३ : नेहक सार होइत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“बाट चुन फल निज सह / भार होइत अछि”; मध्यक पाठ—“ज्ञान चाह श्रम संग राख / काज मात्र देह नहि”।

‘लाभ गिन नोर संग बूझ’ निजी हिसाब आ मानवीय दुःखक मूल्यबीच भेद उपस्थित करैत अछि। ‘आन हक मान नेह धर’क ध्वनिसँ नेहक ‘सार’ केवल निजी प्रेम नहि, सामाजिक उत्तरदायित्व बनबय चाहैत अछि।

कतेको शेर आदेश-प्रधान अछि; नेहक परिणामकेँ ठोस व्यवहारमे कखन सिद्ध कएल गेल, से नहि भेटैत। गजलक शीर्षकक भावना तर्कपूर्वक घोषणा अछि, दृश्यात्मक निष्पत्ति कम।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण भार, सार, पार, धार, तार, द्वार, हार; रदीफ “होइत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“काज मूल क्रम संग जोड़ / हार होइत अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२४ : साँचक नव ढंग रहैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“भूल मान फेर जाँच कर / नव ढंग रहैए”; मध्यक पाठ—“नाम भेद मात्र देख मोन / आन नाम न अर्थ सार”।

‘भिन्न पाठ सभ अर्थ खोज / एक पाठ न सभ साँच’ भाषा-आ-पाठसमीक्षाक सशक्त कथन अछि। भूल मानि फेर जाँच करबाक आग्रह मानवीय अपूर्णताक सकारात्मक स्वीकार अछि।

मुदा काव्यक उपदेशात्मक रूप प्रबल अछि। ‘साँचक नव ढंग’क नवता कोन विशेष पठन-प्रक्रियामे अछि, एकर पर्याप्त दृष्टान्त नहि देल गेल।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण ढंग, रंग, संग, भंग, अंग; रदीफ “रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“ज्ञान संग मोन ज्ञान बूझ / बोध अंग रहैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि;

एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२५ : नेह मूल सार अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“जोर बीच मान नहि / नेह मूल सार अछि”; मध्यक पाठ—“रूप नित फेर अछि / सभ मूल भंग नहि”।

‘लोक रीत अर्थ अछि / शब्द मान भार अछि’ शब्दक अर्थकें समुदाय आ व्यवहारसँ जोड़बाक दृष्टि अछि। ‘नेह मूल सार’कें मात्र संवेदना नहि, लोक-हकक धरातल पर रखबाक प्रयास पाठमे अबैत अछि।

‘रोध भंग’ आ ‘मुक्त बोध’क रूपकक सम्बन्ध कोनो स्पष्ट नाटकीय परिवेशसँ नहि जुड़ैत। अनेक दार्शनिक पदक एकसाथ उपस्थिति गहनता बनाबैत नहि, जँ तकर परस्पर कारण स्पष्ट नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, द्वार, तार, हार, भार; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“लोक रीत अर्थ अछि / शब्द मान भार अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२६ : मोन बीच एक नाव अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“डेग फेर डेग नित / मोह दूर नव भाव अछि”; मध्यक पाठ—“बीज नीर घाम संग / फल झट एक बेर नहि”।

‘मोन बीच एक नाव’क नाव मनक भीतर यात्रा आ पार उतरबाक प्रतीक अछि। ‘आन मत सभ सुन’क आग्रह मोह-लोभ छोड़ि विचारक नव चाव दिस बढ़बाक संकेत करैत अछि।

नावक वास्तविक दृश्य वा जलधारा कविताक अन्य शेरमे नहि विकसित। एहिसँ आकर्षक शीर्षक आ अमूर्त विचारक बीच दूरी रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण भाव, चाव, ठाव, नाव; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“आन स्वर मान संग / साँच गप मूल भाव अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२७ : जग मान जागैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नीर वन हक मान राख / जग मान जागैए”;

मध्यक पाठ—“काज मोन शुद्ध कर फेर / काज मात्र न ज्ञान मूल”।

‘नीर वन हक मान राख’ पर्यावरण आ लोक-अधिकारकेँ एकसंग राखब चाहैत अछि। यन्त्रसँ बदलैत हाथक चाल आ चिन्ह-जाँचक निर्देश विज्ञान, श्रम आ सामाजिक सम्मानक त्रिधुरी बनबैत अछि।

मुदा ‘जग मान जागैए’क व्यापक निष्कर्ष लेल किस्सा अथवा प्रयोगक प्रत्यक्ष प्रमाण कम। विचारक समावेश बड़का अछि, शिल्पगत केन्द्र अपेक्षाकृत छिन्न-भिन्न।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, तान, ध्यान, गान, ज्ञान; रदीफ “जागैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“चिन्ह मेल एक संग जोड़ / नव ज्ञान जागैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि;

एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२८ : एक राह सार नहि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“लोक धर्म भिन्न राह / एक राह सार नहि”; मध्यक पाठ—“आन दीप चाह नै / मोन बोध दीप अछि”।

‘लोक धर्म भिन्न राह’ बहुल परम्पराक स्वतन्त्रता स्वीकार करैत अछि। एकटा राह सभ लेल सार नहि, ई विचार समताक संग भिन्नताक सम्मानपर आधारित अछि।

मुदा विविध धार्मिक वा सामाजिक राहक वास्तविक भेद उदाहरणरहित अछि। ‘रीत भाग्य सार नहि’ सन सूत्रवाक्यक अर्थ संक्षिप्त आ कतहु अस्पष्ट रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, द्वार; रदीफ “नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“आन मूल खोज मोन / फल मात्र सार नहि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२९ : मुक्त राह सार अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७२९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“राग द्वेष मोन बाँध / मुक्त राह सार अछि”; मध्यक पाठ—“पीर मूल दूर भेल / सुख खोज काज नहि”।

‘राग द्वेष मोन बाँध’क कथन निजी आसक्ति कें बन्धन मानैत अछि। ‘मुक्त राह सार’ केवल बाह्य आजादी नहि, लोभ-मोह कम कऽ विवेकक निर्माणक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि।

आत्मज्ञान आ जगतक कामक सम्बन्ध व्यापक विमर्श माँगैत अछि। कविता निष्कर्षसूचक पद बहुल रखैत अछि, अनुभवक विशिष्ट दृश्यक अपेक्षा शेष रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, द्वार, धार, भार; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन सब काज जान / निज मोन भार अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३० : झट ज्ञान नहि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“साँच गप मूल खोज लोक मत सीमा / प्रश्न राख मान जाँच फेर झट ज्ञान नहि”; मध्यक पाठ—“मोन स्वप्न रंग घेर जग रूप दूर राख / नेत्र स्पर्श गंध स्वाद बाह्य जग थिर अछि”।

‘धूम देख डाँड़ ठाम ज्वाल बोध’ कारण-अनुमानक परिचित रूपकक संकेत अछि। ‘एक चिन्ह देख मात्र झट साँच ज्ञान नहि’ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सावधानी अछि—एक प्रमाणसँ सम्पूर्ण सत्य तय नहि होइत।

मुदा धूम-अग्नि तर्क लेल सहवर्तन, व्याप्ति आ उपाधि-जाँच आवश्यक; गजल एहि तर्कचरणक प्रत्यक्ष प्रदर्शन नहि करैत। सूत्रवाक्यक सफलता आ दार्शनिक प्रमेयक सिद्धि अलग राखल उचित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, मान, ध्यान, गान, तान, आन; रदीफ “नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“चिन्ह संग मूल मेल फेर काज रूप बोध / एक चिन्ह देख मात्र झट साँच ज्ञान नहि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३१ : आन पीर नोर मात्र नहि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३१ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मोन पीर सोझ जान नोर धार थिर जाग / आन पीर चिन्ह बोल देह नोर मात्र नहि”; मध्यक पाठ—“स्वप्न साँप डोर देख जाग भोर भेद खोल / जाग जग काज संग स्वप्न भिन्न रूप अछि”।

‘आन पीर नोर मात्र नहि’क मुख्य प्रस्ताव ई अछि जे दोसराक पीडा केवल देखल नोरसँ नहि मापल जा सकैत। ‘देह नोर मात्र नहि’क कथन देहक श्रम, इतिहास आ सामाजिक स्थितिक अधिक व्यापक अभिप्राय दिस पढ़निहारकें लऽ जाइत अछि।

तथापि पीडित लोकक स्वतन्त्र वाणी गजलक भीतर कम अछि। आचारक उचित सिद्धान्त आ वास्तविक पीडाक अनुभूत विवरण एक नहि; शेरसभ बीच ई दूरी बाकी रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, ठोर, छोर, कोर, भोर; रदीफ “मात्र नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हम रूप देख ई मोन ज्ञान फेर जान / भ्रम बीच निज देख बोध भोर मात्र नहि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३२ : भाव मूल थाह अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“भय राग द्वेष मोन पीर मूल खोज राख / दोष

मात्र मान छोड़ भाव मूल थाह अछि”; मध्यक पाठ—“काल काज मोन राख फेर काज याद जाग / जे जन काज संग से हम आन नहि” ।

‘नेत्र बन्द वस्त्र स्पर्श रंग रूप दूर रह’ वाक्य अनुभूतिक सीमा पर सूक्ष्म प्रश्न अछि। केवल देखबाक आधारपर ज्ञान सम्पूर्ण नहि; स्पर्श आ संदर्भ सेहो प्रमाण बनि सकैत अछि।

‘भाव मूल थाह’क निष्कर्ष ज्ञानक आधारकें भाव-प्रधान करबाक जोखिम रखैत अछि। रंग, रूप आ स्पर्शक भेद उदाहरणरहित रहला पर संवेदना आ प्रमाण-प्रक्रिया पूर्ण स्पष्ट नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण थाह, राह, छाह, चाह, दाह; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नेत्र बन्द वस्त्र स्पर्श रंग रूप दूर रह / वस्त्र रंग भेद बीच ज्ञान मूल राह अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३३ : प्रश्न बीच गीत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर बाट नित चिन्ह मोन चुप थिर चल / एक प्रश्न उठ मोन बीच मौन गीत अछि”; मध्यक पाठ—“मीत रूप देख आइ फेर सोझ ठाढ़ थिर / जे मीत काल संग आइ आन थिक नहि” ।

‘एक प्रश्न उठ मोन बीच मौन गीत अछि’ कविता अपन प्रश्नकें सांगीतिक अनुभव बनबैत अछि। काज आ फल, दू मतक बहस, साँच आ शीतक पदसभ अनिश्चितताकें रचनात्मक ऊर्जा दैत अछि।

पर ‘प्रश्न बीच गीत’ केवल प्रेरक सूत्र रहैत अछि, जँ प्रश्न कोन आ प्रतिपक्ष कोन—ई नखुल्य। प्रमाण-विषयक प्रश्न केनहुँ नाटकीय सङ्घर्ष नहि पबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “नीत”, उदाहरण गीत, मीत, रीत, प्रीत, जीत, शीत; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“काज फल मिल फेर दुइ मत आग मन्द / साँच थिर बोध मोन बीच एक शीत अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३४ : साँचक सोर अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मोन कहैत दुःख सुनैत लोक मौन थिर / देह कनैत बोध उठैत नेह नोर अछि”; मध्यक पाठ—“क्षण बहैत रूप घटैत देह मौन थिर / याद रहैत बोध मिलैत डोर छोर नहि”।

‘मोन कहैत दुःख सुनैत लोक मौन’ सामाजिक चुप्पी आ व्यक्त पीडाक द्वन्द्व अछि। ‘तर्क चलैत पक्ष सुनैत’ कहबाक अर्थ पीडा सुनबाक संग कारण-जाँचब सेहो जरूरी अछि।

मुदा ‘साँचक सोर’क प्रमाण लोकक प्रत्यक्ष वचनसँ बेसी सामान्य सूत्रमे देल गेल। स्वरक स्रोत नपहिकानल गेलासँ ऐतिहासिक-सामाजिक दावा सम्भावनात्मक रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू अर्धांश क्रियाशील वाक्य-रूप · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “नोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, कोर, छोर, ठोर; रदीफ “अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“तर्क चलैत पक्ष सुनैत मोन मौन थिर / हेतु मिलैत बोध खुलैत बोल ठोर अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३५ : भीतर आस रहै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३५ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“गाछ बेसी कटै छै, धरा काँपै छै / बालकक साँस घुटै छै, त्रास रहै छै”; मध्यक पाठ—“मधु मीठ लगै छै, विषो रहै छै / मोन सुख मानै छै, पीर आवै छै” ।

‘गाछ बेसी कटै छै, धरा काँपै छै / बालकक साँस घुटै छै’ पर्यावरणक प्रश्नकें बच्चाक देहसँ जोड़ैत अछि । गाछक कटान आ साँसक त्रासक सीधा सम्बन्ध गजलकें सामूहिक उत्तरदायित्व दिस मोड़ैत अछि ।

कविताक कारणसम्बन्ध साहित्यिक दृष्टिसँ समर्थ अछि, मुदा वैज्ञानिक-प्रमाणक विस्तृत श्रृंखला एहि पाठमे नहि । बच्चाक अनुभूतिक कोनो निर्दिष्ट दृश्य नदेने ई चेतावनी-सूक्ति अधिक अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश पूर्ण क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, त्रास; रदीफ “रहै छै” ।

रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“वचन फेर बजै छै, काज जगै छै / अर्थ काज जगै छै, आस रहै छै” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७३६ : प्रश्न उठि गेलै, द्वार खुलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३६ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“प्रश्न उठि गेलै, भीतर नींदि टूटै छै / मोन जखन सुनै छै, द्वार खुलै छै”; मध्यक पाठ—“बीज समर्थ रहै छै, अङ्कुर रुकै छै / पानि जखन घटै छै, माटि सुखै छै” ।

‘प्रश्न उठि गेलै, भीतर नींदि टूटै छै’ विचारकें व्यक्ति जागबाक क्षण बनबैत अछि । वाद चलला पर अभिमान गलबाक बिम्ब सीखबाक सामाजिक स्वभाव दर्शबैत अछि ।

काव्यगत उपलब्धि प्रश्नक उत्प्रेरक शक्ति अछि; मुदा वास्तविक वाद-विवादक उदाहरण सीमित। एक प्रश्नसँ ‘द्वार’ खुलवाक रूपक एकरूपता पबितो विचारक प्रतिपक्ष अधूर अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण द्वार, सार, सँभार, विस्तार, आकार, विचार; रदीफ “खुलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“वाद जखन चलै छै, अभिमान गलै छै / फेर जाँच करै छी, विचार खुलै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३७ : अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“अपन मत जाँचै छी, मोह गलै छै / आन मत जाँचै छी, सार दिसै छै”; मध्यक पाठ—“दीप जखन बुझै छै, धुआँ उठै छै / नाश जखन होइ छै, वस्तु जाइ छै?”।

‘अपन मत जाँचै छी, आन मत जाँचै छी’ निष्पक्ष बौद्धिक अनुशासनक माँग अछि। ‘सूत जखन जुड़ै छै, संसार दिसै छै’क दृश्य ज्ञानकें करघाक सृजन-संग रखि अर्थ सम्पन्न बनबैत अछि।

मुदा जाँचक कसौटी—कोन दृष्टान्त, कोन हेतु, कोन भूल—स्पष्ट नहि। सूतक बिम्ब गजलक ठोस शिल्प-उपलब्धि अछि, जे आन अमूर्त कथनसभसँ अधिक स्मरणीय।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, द्वार, व्यवहार, आकार, विचार, संसार; रदीफ “दिसै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद

घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“क्रम जखन देखै छी, कारण खोजै छी / सूत जखन जुड़ै छै, संसार दिसै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३८ : छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“छूटल स्वर उठै छै, कान खुलै छै / बिसरल कथा पढ़ै छी, हाल बदलै छै”; मध्यक पाठ—“नाम मात्र बचै छै, पाठ छुटै छै / पोथी जखन खुलै छै, घर जगै छै”।

‘छूटल स्वर उठै छै’ विस्मृत लोकक इतिहासकें पुनः सुनबाक आग्रह अछि। ‘बिसरल कथा पढ़ै छी, हाल बदलै छै’क सूत्र अभिलेख आ जन-स्मृतिक सम्बन्धकें सामाजिक परिवर्तनसँ जोड़ैत अछि।

छूटल स्वरक पहिचान, ओकर साक्ष्य आ परिवर्तनक प्रक्रिया पाठमे अनुपस्थित अछि। सूत्र रूपमे विचार महत्वपूर्ण, मुदा ऐतिहासिक घटना मानि एकर वर्णन करब स्रोतसीमासँ बाहर होएत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण हाल, चाल, जाल, ढाल, काल, ताल; रदीफ “बदलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“सभ अनुमान त्यागै छी, बाट छुटै छै / घुरि जखन अबै छी, हाल बदलै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७३९ : अंक सभ बोलै छै, सार खोजै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७३९ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“अंक सभ बोलै छै, तथ्य मिलै छै / न्याय जखन पूछै छी, सार खोजै छी”; मध्यक पाठ—“दू रूप रहै छै, मेल बचै छै / भेद जखन बुझै छी, बैर घटै छै” ।

‘अंक सभ बोलै छै, तथ्य मिलै छै’ संख्याक उपयोग आ ओकर सीमान्त स्पष्ट करबाक अवसर अछि । ‘केवल अभाव कहै छी, कारण चुकै छै’क वाक्य आँकड़ामे अनुपस्थिति देखिकऽ कारण सिद्ध कऽ लेबाक त्रुटिपर चोट अछि ।

कवितामे वास्तविक कोनो आँकड़ा, परीक्षण वा साक्ष्यक विरोध नहि प्रस्तुत; तँ न्यायसंगत आलोचना दृष्टान्तक अभाव स्वीकार करैत अछि । सूक्ति ज्ञानमीमांसक अछि, प्रमाणात्मक प्रतिवेदन नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, द्वार, आधार, धार; रदीफ “खोजै छी” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“केवल अभाव कहै छी, कारण चुकै छै / चाहक बल जाँचै छी, सार खोजै छी” । अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७४० : नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४० मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“नदी रूप बदलै छै, अर्थ बढ़ै छै / घाट कथा कहै छै, सार बचै छै”; मध्यक पाठ—“नेत्र बाहर देखै छै, बोध बढ़ै छै / आत्मा भीतर रहै छै, नेत्र चुकै छै” ।

‘नदी रूप बदलै छै, घाट कथा कहै छै’ नदीक भू-आकारक परिवर्तनकें इतिहासक जीवित अभिलेख बनबैत अछि। लोकजीवनक परिवर्तन, बाढ़ि-भूगोल आ अपन घाटक अनुभूति एकसंग पढ़बाक रचनात्मक संभावना अछि।

मुदा नदीक कोन परिवर्तन, कोन ऋतु अथवा कतयक घाट, ई तथ्य नहि; अनुभवक एकटा रूपककें वास्तविक भूगर्भीय प्रतिवेदन मानब अनुचित।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, द्वार, विचार, पार, आचार; रदीफ “बचै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“वाद थमि गेलै, फेर रोष गलै छै / आनक मंगल चाहै छी, आचार बचै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७२१-७४० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमें दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
७२१ : दिस आन साँच देख	— / —	—
७२२ : साँच एक बेर भेल नहि	— / —	—
७२३ : नेहक सार होइत अछि	— / —	—
७२४ : साँचक नव ढंग	— / —	—

रहैए		
७२५ : नेह मूल सार अछि	— / —	—
७२६ : मोन बीच एक नाव अछि	— / —	—
७२७ : जग मान जागैए	— / —	—
७२८ : एक राह सार नहि	— / —	—
७२९ : मुक्त राह सार अछि	— / —	—
७३० : झट ज्ञान नहि	— / —	—
७३१ : आन पीर नोर मात्र नहि	— / —	—
७३२ : भाव मूल थाह अछि	— / —	—
७३३ : प्रश्न बीच गीत अछि	— / —	—
७३४ : साँचक सोर अछि	— / —	—
७३५ : भीतर आस रहै छै	— / —	—
७३६ : प्रश्न उठि गेलै, द्वार खुलै छै	— / —	—
७३७ : अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै	— / —	—
७३८ : छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै	— / —	—
७३९ : अंक सभ बोलै	— / —	—

छै, सार खोजै छी		
७४० : नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै	— / —	—

गजल ७४१ : ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“ज्ञान फेर बदलै छै, भूल खुलै छै / साँच फेर देखै छी, आधार जाँचै छी”; मध्यक पाठ—“सुख आबि गेलै, फेर दूर जाइ छै / पीर आबि गेलै, फेर दूर जाइ छै” ।

‘ज्ञान फेर बदलै छै, भूल खुलै छै’ ज्ञानक संशोधनशील स्वभावक स्वीकार अछि । ‘कर्म जखन फलै छै, हेतु देखै छी’ कारण-फल सम्बन्ध जाँचबाक वैज्ञानिक-दर्शनसंगत आग्रह दैत अछि ।

मुदा हेतु-फल बोधक विस्तृत उदाहरणक अनुपस्थिति ज्ञानक परिवर्तन केँ घोषित सिद्धान्त बनबैत अछि । नवीन तथ्य भेटबाक घटना शेरसभमे कम ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आधार, विचार, व्यवहार, आकार, संसार, प्रकार; रदीफ “जाँचै छी” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“कर्म जखन फलै छै, हेतु देखै छी / जइ जखन चलै छै, आधार जाँचै छी” । अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७४२ : मान जखन बढै छै, विश्वास रहै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४२ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“मान जखन बढै छै, बैर घटै छै / आनक मान बचै

छै, विश्वास रहै छै”; मध्यक पाठ—“नोर जखन खसै छै, मोन पसीजै छै / मूल जखन खोजै छी, पीर खुलै छै”।

‘आनक मान बचै छै, विश्वास रहै छै’ नैतिक विश्वासकेँ दोसराक सम्मानसँ जोड़ैत अछि। विश्वास मात्र व्यक्तिगत भाव नहि, व्यवहारक परिणाम होइत अछि—एहि भावक सामाजिक मोल अछि।

कविता सम्मानक काजक कोनो दृश्य नहि रचैत; विश्वास/उल्लास/त्रासक तुक सामाजिक सम्बन्धक बहुस्तरीयता पूर्ण नहि खोलैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण विश्वास, उल्लास, त्रास, अभ्यास, हुलास, आभास; रदीफ “रहै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“साँच जन कहै छै, अर्थ मिलै छै / बोल जखन बुझै छी, विश्वास रहै छै”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४३ : घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“क्षमा जखन माँगै छी, दोष मानै छी / घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी”; मध्यक पाठ—“सुख जखन भेटै छै, पीर जुड़ै छै / मधु जखन चखै छी, विष भेटै छै”।

‘क्षमा जखन माँगै छी, दोष मानै छी’ आत्म-स्वीकृतिक भाव अछि। घाव देखबाक प्रक्रिया दोषकेँ केवल दोसरा पर आरोप नहि, अपन सीमाक पहिचान बनबैत अछि।

‘नहि देखल कहै छी, सत्ता नकारै छी’क वाक्य अधिकार आ सत्यक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ककर सत्ता, कोन दोष—अस्पष्ट अछि। घाव रूपकक सामाजिक अर्थ अनुमानक स्तरपर राखब उचित।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण दाग, भाग, राग,
त्याग; रदीफ “बुझै छी” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित
उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“नहि देखल कहै छी, सत्ता नकारै छी / सीमा अपन देखै छी, दाग
बुझै छी” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक
सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक
प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७४४ : गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४४ मे १२ मूल
मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै / दाबी
जखन जाँचै छी, आधार खुलै छै”; मध्यक पाठ—“बीज जखन रोपै छी, ऋतु तँकै
छी / कारण जखन टूटै छै, विश्वास टूटै छै” ।

‘गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै’ आत्मगौरव आ परीक्षणक समान्तरणक
रोचक प्रस्ताव अछि । दावा करब, विकल्प जाँचब आ हेतु परखब—एहि क्रममे
वैज्ञानिक विवेकक रचना-सूत्र अछि ।

किन्तु गौरव स्वयमँ प्रमाण किएक माँगत, ई व्याकरणिक कर्तृत्व अस्पष्ट अछि ।
प्रमाण-दावा सम्बन्धक विचार महत्त्वपूर्ण रहितो काव्यक तार्किक विन्यास साफ
करबाक अवकाश अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आधार, विचार,
संसार, द्वार, सार; रदीफ “खुलै छै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद
घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“विकल्प जखन जाँचै छी, दोष खुलै छै / तर्क जखन बढै छै, सार खुलै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४५ : दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“आन दोष गनलहुँ फेर, दोषो देखलै मोन / एक नियम राखलहुँ, सार रहि जाइ छै”; मध्यक पाठ—“वस्तु जखन बुझलहुँ, चाह फेर जागलै मोन / चाह जखन जागलै, हाथ फेर बढ़लै सोझ”।

‘आन दोष गनलहुँ फेर, दोषो देखलै मोन’ स्व-आलोचनाक साक्षी अछि। संख्या गनबाक क्रमसँ व्यक्ति अपन निर्णयक मापदण्डपर प्रश्न उठा सकैत अछि। मुदा ‘संख्या जखन बनलै, आकार रहि जाइ छै’क रूपकमे गणना आ आकृतिक सम्बन्ध पर्याप्त स्पष्ट नहि; कविता नीति आ दर्शनक बीच डोलैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, आधार, सँभार, विचार, व्यवहार, आकार; रदीफ “रहि जाइ छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“वस्तु अपन रहलै, बुद्धि फेर गनलै कण / संख्या जखन बनलै, आकार रहि जाइ छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४६ : रूप जखन मिललै, मेल तखन विचार भेलै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रूप जखन मिललै, भेद तखन जीवित रहलै / भेद जखन बचलै, मेल तखन विचार भेलै”; मध्यक पाठ—“रूप जखन देखलहुँ, हम तखन भिन्न रहलहुँ / ज्ञान जखन चमकलै, वस्तु तखन सोझ रहलै”।

‘रूप जखन मिललै, भेद तखन जीवित रहलै’ समानता आ भिन्नताक सहअस्तित्वक सटीक सूक्ति अछि। आपत्ति आयलापर तर्क सँवरबाक वाक्य मतभेदकें बौद्धिक सुधारक साधन मानैत अछि।

मुदा भेदक विषय अमूर्त अछि; कोन दू रूपक मेल आ भेद, एहि प्रत्यक्षताक कमी पाठकक समझ पर भार दैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण विचार, आधार, व्यवहार, सार, साकार, उदार; रदीफ “भेलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“आपत्ति जखन आयल, तर्क तखन फेर सँवरलै / बल जखन मानलै, वाद तखन उदार भेलै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४७ : काल्हिक आधार पूछै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“सूरज प्रतिदिन उगै, मोन काल्हि तकै छै / समय पाठ देलै, कोन आधार पूछै छी”; मध्यक पाठ—“पानि पिआस बुझेलै, देह शान्ति पवै छै / फल संग जुडलै, मोन नियम धरै छै”।

‘सूरज प्रतिदिन उगै, मोन काल्हि तकै छै’ नित्य घटनाक भीतर भविष्यक प्रश्न देखबैत अछि। भाषाक मान आ व्याकरणक भेदक युग्म समय, भाषा आ ज्ञानकें एकहि विचारधारामे जोड़बाक प्रयास करैत अछि।

मुदा समयक ज्ञान आ व्याकरणिक भेदक सम्बन्ध अनिवार्य प्रमाणसँ नहि जोड़ल। विषय-परिवर्तनक तेज गति कविताक केन्द्रकें ढीला करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आधार, विचार, व्यवहार, स्वीकार, प्रतिकार, प्रकार, सत्कार; रदीफ “पूछै छी”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भाषा मान बचेलै, अर्थो संग बढै छै / व्याकरण भेद धरलै, कतेक सत्कार पूछै छी”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४८ : भाग्येँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“साँच बात भेलै, मोन झट मानै छै / भाग्येँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै”; मध्यक पाठ—“इँटा सभ जुड़लै, घर रूप उठै छै / भाग मात्र गनलै, मोन समग्र बुझै नहि”।

‘भाग्येँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै’ भाग्यवाद आ प्रमाणक बीच प्रश्न अछि। कोनो कथन संयोगसँ सही निकलल तँ ओहिसँ ओकर हेतु निश्चित नहि सिद्ध होइत—ई नव्य न्यायसम्मत विवेकक आधार अछि।

मुदा संयोगक कोनो स्वतंत्र दृष्टान्त नहि; शब्दक व्यवहारक चर्चा एहि प्रश्नकेँ नया ठोस दिशा नदैत। काव्यक बौद्धिक विषय समृद्ध, निष्पत्ति संक्षिप्त।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आधार, विचार, अधिकार, विस्तार, आकार, सार, व्यवहार; रदीफ “मिलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“वचन जखन देलै, अपन भार बढै छै / शब्द काज जगेलै, तखन व्यवहार मिलै छै”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४९ : साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७४९ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“भूल फेर देखै छी, मोन जागै छै / साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै”; मध्यक पाठ—“नाम आन कहै छै, रूप रहै छै / भेद मात्र कहै छै, अर्थ घटै छै” ।

‘भूल फेर देखै छी, मोन जागै छै’ ज्ञानकें सुधारक प्रक्रिया बनबैत अछि । साँचक फेर मिलब आ द्वार खुलबाक दृश्य आत्मज्ञानक आशावादी गति दर्शबैत अछि । मुदा ई रूपक ७३६-७४१क प्रश्न/ज्ञान शृंखलासँ अत्यन्त निकट अछि । नब गलती, नब साक्ष्य वा नब दृश्य नहि भेटला पर पुनरावृत्ति शिल्पगत प्रश्न बनेत ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, द्वार, धार, तार, सार, पार, द्वार; रदीफ “खुलै छै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“मोन बोध धरै छै, ज्ञान देखै छै / ज्ञान फेर बुझै छी, द्वार खुलै छै” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७५० : प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५० मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“भूल फेर देखै छी, मोन जागै छै / प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी”; मध्यक पाठ—“रूप फेर देखै छी, मोन बुझै छै / रूप तखन रहै छै, मोन धरै छै” ।

‘प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी’ प्रश्नकें ज्ञानक आरम्भ मानैत अछि । ‘आन स्वर मानै छी, वाद चलै छै’ प्रतिपक्षीक वाणीकें विचारक आवश्यक हिस्सा ठहरबैत अछि ।

किन्तु प्रश्न-सारक सम्बन्ध बहुत तत्काल अछि: प्रश्न पूछब आ सही सार बुझब बीच जे परीक्षण-पद्धति अपेक्षित, ओ पाठमे नहि देखाइत। अनेक शेरमे विचार-सूक्ति प्रबल, प्रत्यक्ष अनुभव सीमित।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, आधार, विस्तार, विचार, आकार, आधार, सत्कार; रदीफ “बुझै छी”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“आन स्वर मानै छी, वाद चलै छै / पक्ष जखन खुलै छै, सत्कार बुझै छी”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५१ : भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५१ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“फल जखन देखै छी, कारण खुलै छै / भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी”; मध्यक पाठ—“काल जखन सरकै छै, रूप बदलै छै / याद फेर जागै छै, मोन जुड़ै छै”।

‘फल जखन देखै छी, कारण खुलै छै’ गजलक आरम्भमे कारण-फल सम्बन्धकें भाग्य-विश्वासक विकल्प बनबैत अछि। सूत जखन जुड़ैत अछि आ हाथ क्रम बुझैत अछि, तखन ज्ञानकें श्रमक अनुभवसँ जोड़बाक सम्भावना खुलैत अछि।

किंतु भाग्यक दावा आ कारणक प्रत्यक्ष उदाहरणक बीच सेहो दूरी अछि; फल देखला मात्रसँ एकटा हेतु निश्चित नहि होइत। एहि मर्यादाकें मूल पाठक विचारगत उपलब्धि आ सीमा दुनू रूपमे पढ़ब उचित।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आधार, विचार, व्यवहार, सार, विस्तार, प्रकार, आधार; रदीफ “खोजै छी”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“कारण सभ धरै छी, क्रम बचै छै / काज पार देखै छी, आधार खोजै छी”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५२ : रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दोष जखन घटै छै, नेत्र खुलै छै / रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै”; मध्यक पाठ—“वस्तु जखन बुझै छी, चाह जगै छै / चाह जखन जगै छै, हाथ चलै छै”।

‘दोष जखन घटै छै, नेत्र खुलै छै’ आत्मजाँचकें देखनेरिक क्षमता पर असर करैत प्रक्रिया मानैत अछि। रूप, आकार आ आधारक तुक भीतरक भ्रम हटला पर जगतकें नब ढंगसँ देखबाक संकेत अछि।

मुदा ‘विरति जखन आवै छै, हाथ हटै छै’क आन्तरिक सम्बन्ध आ ‘अभाव मात्र गनै छी’क प्रसङ्ग स्पष्ट नहि होइत। बहुत विचार एकहि छोट पद्यविन्यासमे आबि तर्कक धुरी कमजोर करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आकार, आधार, अधिकार, व्यवहार, आधार, सार, विचार; रदीफ “खुलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“अभाव मात्र गनै छी, कारण छुटै छै / चाह विरति धरै छी, विचार खुलै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५३ : साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५३ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“दोष जखन मानै छी, घाव खुलै छै / साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै”; मध्यक पाठ—“सुख जखन भेटै छै, पीर जुड़ै छै / मधु जखन चखै छी, विष भेटै छै” ।

‘दोष जखन मानै छी, घाव खुलै छै’ सत्य-कथनक आत्मस्वीकृति आ सम्बन्ध-संशोधनसँ जोड़ैत अछि । डोर रहबाक रूपक दोष-स्वीकारक बादो बचल विश्वासक आशावादी छवि अछि ।

मुदा ‘आँखि चुकल, वस्तु रहै छै’क भेद ज्ञानक सीमा पर नब चर्चा आरम्भ करैत अछि, जे मूल सम्बन्धक कथासँ किछु असम्बद्ध रहि जाइत अछि । रूप-विधानक संग अर्थ-क्रम पुनः कसबाक आवश्यकता अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण डोर, नोर, सोर, भोर, छोर; रदीफ “रहै छै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“आँखि फेर चुकै छै, ज्ञान घटै छै / सीमा जखन बुझै छी, छोर रहै छै” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७५४ : रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५४ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घाट फेर कहै छै, धार बहै छै / रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै”; मध्यक पाठ—“नेत्र बाह्य देखै छै, सीमा रहै छै / मोन भीतर उतरै छै, बोध जगै छै” ।

‘घाट फेर कहै छै, धार बहै छै’ रूप बदलितो लोकानुभवक सार बचल रहबाक बिम्ब अछि। नदीक घाटक परिवर्तित दृश्य इतिहासक गतिशीलता आ स्मृतिक निरन्तरता एकसंग धरैत अछि।

‘वाद फेर चलै छै, रोष बढ़ै छै’क राजनीतिक-सामाजिक विषय नदीक बिम्बक संग स्पष्ट सूत्रसँ नहि जुडैत। एतय रूपक आ विचारक समरसता आंशिक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण धार, सार, द्वार, आधार, विचार, आचार; रदीफ “बचै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“जीत पाछाँ झुकै छी, रोष घटै छै / आन मान बचै छै, आचार बचै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५५ : छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मौन जन बोलै छै, कान खुलै छै / छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै”; मध्यक पाठ—“दीप फेर बुझै छै, धूम उठै छै / नाश फेर बुझै छी, प्रश्न जगै छै”।

‘मौन जन बोलै छै, कान खुलै छै’क दृश्य सामाजिक श्रवणक प्रत्यक्ष क्रिया अछि। छूटल स्वर उठब सामाजिक मान्यता बदलबाक कारण बनै, ई कृति कें लोकइतिहासक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न दिस लऽ जाइत अछि।

‘दबल कथा’क लोक वा वर्गक पहिचान नहि देल गेल। तथ्यरहित नैतिक आग्रहकें वास्तविक ऐतिहासिक परिणाम मानब उपयुक्त नहि; काव्यक सम्भावना आ बाह्य इतिहासक सत्यापन अलग।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, विधान,

ध्यान, अनुमान, पहिचान; रदीफ “बदलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“वाक्य फेर सुनै छी, नियम मिलै छै / कर्ता जखन बुझै छी, पहिचान बदलै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५६ : प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर फेर देखै छी, रूप बदलै छै / प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै”; मध्यक पाठ—“रंग गन्ध जुडै छै, रस मिलै छै / गुण सभ जुटै छै, रूप बनै छै”।

‘घर फेर देखै छी, रूप बदलै छै’ परिचित वस्तुकेँ नव नजरिसँ पढ़बाक कविता अछि। ‘प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै’ संशयकेँ बाधा नहि, नव बाटक साधन बनबैत अछि।

राहक दिशा कथामे ठोस निर्णय बनि नहि पबैत। स्वयं दोष बचल रहबाक स्वीकार महत्त्वपूर्ण अछि, पर प्रश्नक उत्तर एकहि भावसूत्रमे थाकि जाइत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, थाह, चाह, दाह; रदीफ “दिसै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“निज मोन कहै छै, दोष बचै छै / काज फेर देखै छी, दाह दिसै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५७ : अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५७ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“अंक मात्र कहै छै, पीर बचै छै / न्याय फेर पूछै छी, विचार जगै छै”; मध्यक पाठ—“दू रूप रहै छै, भेद बचै छै / एक रंग रहै छै, आन बचै छै” ।

‘अंक मात्र कहै छै, पीर बचै छै’ गजल वैज्ञानिक संख्याक औचित्य आ मानवीय वेदनाक अपूर्ण मापन बीच संघर्ष देखबैत अछि । नोर खसैत रहबाक बीच तथ्य मिलब न्याय होएबाक समान नहि ।

मुदा वास्तविक आँकड़ा वा सामाजिक हिसाबक एकटा उदाहरणो नहि; एहि कारण संख्याक प्रश्न बौद्धिक घोषणाक रूपमे रहैत अछि, परीक्षण-कथा नहि बनैत ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण विचार, अधिकार, संसार, व्यवहार, आधार, विस्तार; रदीफ “जगै छै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“बाट चिन्ह पढ़ै छी, घर मिलै छै / अनुमान फेर करै छी, आधार जगै छै” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७५८ : नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५८ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“आन पीर सुनै छी, मोन पसीजै छै / नोर सोर बुझै छी, हाल खुलै छै”; मध्यक पाठ—“बीज बल धरै छै, रूप नुकै छै / जल ताप मिलै छै, हेतु जुड़ै छै” ।

‘आन पीर सुनै छी, मोन पसीजै छै’ पीडित व्यक्तिक साक्ष्य श्रवणसँ शुरू करबाक आग्रह अछि । ‘देह बात कहै छै’क रूपक मानवीय अनुभवकें शब्दक बाहर सेहो साक्ष्य मानैत अछि ।

सुनब आ अर्थ बुझब बीचक कठिनाई—अनुवाद, सामाजिक दूरी, दबायल आवाज—काव्यमे नहि खुलैत। एतय नैतिक संवेदनशीलता स्पष्ट अछि, मुदा आलोचनात्मक जटिलता कम।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण हाल, जाल, ताल, चाल; रदीफ “खुलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“बोल भाव बुझै छी, काज चलै छै / बाट फेर धरै छी, चाल खुलै छै”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७५९ : काल पार सोचै छी, भोर देखै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७५९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“वन नीर बचै छै, शिशु हँसै छै / काल पार सोचै छी, भोर देखै छी”; मध्यक पाठ—“स्वप्न रूप उठै छै, रंग बदलै छै / आँखि फेर खुलै छै, जग रहै छै”।

‘वन नीर बचै छै, शिशु हँसै छै’ भविष्यक पर्यावरणीय कल्याणकेँ बच्चाक जीवनसँ जोड़ैत अछि। वनमे आगि आ धूम उठबाक दृश्य एहि आशाक वास्तविक विपरीत पक्ष प्रस्तुत करैत अछि।

मुदा कालपार सोचबाक व्यापक प्रतिज्ञा लेल दीर्घकालिक कारण वा सामूहिक निर्णयक विस्तार अपेक्षित अछि। शिशु आ वनक चित्र सत्यापित भूगोल नहि, कविता भीतरक नैतिक रूपक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण भोर, डोर, नोर, छोर, कोर; रदीफ “देखै छी”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित

उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दोष जखन जगै छै, मोन कहै छै / निज काज तौलै छी, छोर देखै छी”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६० : सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“जोर जखन बढै छै, मान घटै छै / सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी”; मध्यक पाठ—“पीर जखन बढै छै, सुख घटै छै / सुख फेर खोजै छी, पीर बचै छै”।

‘जोर जखन बढै छै, मान घटै छै’ सत्ता आ गरिमाक उलटा अनुपातक चेतावनी अछि। दाबी, प्रश्न, गिनती आ भेदक उदाहरण संख्यात्मक ज्ञानक सत्ता-दुरुपयोगपर सन्देह जगबैत अछि।

एकटा दाना ‘एक’ कि ‘दू’ दिसै, एहि रूपकमे परिप्रेक्ष्यक भेद हो सकैत अछि, मुदा गणनाक नियम स्पष्ट नहि। प्रतीक-संकेतकेँ वास्तविक सांख्यिकी परिणामक रूपमे प्रस्तुत नहि करबाक चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ध्यान, मान, स्थान, ज्ञान, गान; रदीफ “रखै छी”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“एक दू गिनै छी, भेद खुलै छै / अंक फेर गिनै छी, मान रखै छी”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७४१-७६० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमें दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
७४१ : ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी	— / —	—
७४२ : मान जखन बढ़ै छै, विश्वास रहै छै	— / —	—
७४३ : घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी	— / —	—
७४४ : गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै	— / —	—
७४५ : दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै	— / —	—
७४६ : रूप जखन मिललै, मेल तखन विचार भेलै	— / —	—
७४७ : काल्हिक आधार पूछै छी	— / —	—
७४८ : भाग्यँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै	— / —	—
७४९ : साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै	— / —	—

७५० : प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी	— / —	—
७५१ : भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी	— / —	—
७५२ : रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै	— / —	—
७५३ : साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै	— / —	—
७५४ : रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै	— / —	—
७५५ : छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै	— / —	—
७५६ : प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै	— / —	—
७५७ : अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै	— / —	—
७५८ : नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै छै	— / —	—
७५९ : काल पार सोचै छी, भोर देखै छी	— / —	—
७६० : सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी	— / —	—

गजल ७६१ : ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“ज्ञान जखन बदलै छै, भूल खुलै छै / साँच फेर

जाँचै छी, उपाय मिलै छै”; मध्यक पाठ—“सुख जखन आवै छै, पीर घटै छै / पीर जखन आवै छै, सुख घटै छै” ।

‘ज्ञान जखन बदलै छै, भूल खुलै छै’ संशोधनशील बुद्धिक प्रस्ताव अछि। शब्दक स्थान बदलला पर भाव घटबाक कथन भाषा आ काव्यार्थक परस्पर सम्बन्ध केनहुँ ठोस बनबैत अछि।

मुदा उपाय/न्याय/अध्यायक एकत्र आवर्तन शब्दार्थ-चर्चासँ अनपेक्षित मोड़ दैत अछि; काव्यगत केन्द्र कतिपय शेरमे ढीला पडैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाय”, उदाहरण उपाय, न्याय, पर्याय, सहाय, अध्याय, अभिप्राय; रदीफ “मिलै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“ठाम जखन मिलै छै, बोल सजै छै / शब्द ठाम तौलै छी, न्याय मिलै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६२ : दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“गौरव जखन बढै छै, मोह बढै छै / दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै”; मध्यक पाठ—“बीज जखन रोपै छी, ऋतु तकै छी / मेह जखन पडै छै, खेत फलै छै” ।

‘दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै’ विश्वासकें अन्धानुकरण नहि, परीक्षित सम्बन्धक परिणाम मानैत अछि। विकल्प सुनबाक बाद दोष खुलब गजलमे आलोचनात्मक विवेकक स्पष्ट विषय अछि।

मुदा कोन दावा आ कोन विकल्प, ई निर्दिष्ट नहि। सम्मान आ गौरवक पृष्ठभूमि एतेक व्यापक अछि जे पुनः जाँचक काव्य दृश्य अस्पष्ट रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण विश्वास, आस,
उल्लास, प्यास; रदीफ “बचै छै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित
उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

अन्तरपाठीय सन्दर्भ। गजल ७४४ सँ ३ मिसराक यतिपूर्वक पदांशक क्रमगत
साम्य अछि; ई कविताक साझा शब्द-कोशक प्रमाण अछि, अनिवार्यतः समान
कृति नहि।

समापन-पाठ—“विकल्प फेर जाँचै छी, दोष खुलै छै / प्रश्न फेर उठै छै, प्यास
बचै छै”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक
सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक
प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६३ : मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६३ मे १२ मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी / हक जखन
मानै छी, सद्भाव बुझै छी”; मध्यक पाठ—“रंग जखन देखै छी, गन्ध मिलै छै /
रस जखन चखै छी, रूप बनै छै”।

‘मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी’ सार्वजनिक बहसकें समान सुनब आ प्रभाव-
आकलनक प्रक्रिया बनबैत अछि। नेह, हक आ सद्भावक शब्द एकदम नैतिक-
राजनीतिक जगत बनबैत अछि।

कर्मक फल, चिन्हक उपस्थिति आ कारणक टिकावक बात एकहि समूहमे अबैत
अछि, मुदा इनकर बीच कोनो प्रत्यक्ष घटनागत कड़ी नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-भाव”, उदाहरण भाव, सद्भाव,
प्रभाव, स्वभाव, अभाव; रदीफ “बुझै छी”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-

पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“फल जखन नुकै छै, डोर रहै छै / कर्म जखन तौलै छी, प्रभाव बुझै छी”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६४ : काल जखन मुडै छै, ढंग परखै छी

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“बाट जखन चुनै छी, भार धरै छी / काल जखन मुडै छै, ढंग परखै छी”; मध्यक पाठ—“दीप जखन बुझै छै, धूम उठै छै / नाश जखन कहै छी, भेद खुलै छै”।

‘काल जखन मुडै छै, ढंग परखै छी’ परिवर्तित समयमे पुरान विधि पुनः जाँचबाक आग्रह अछि। बाट चुननाइ आ सीमा देखनाइ निर्णयक उत्तरदायित्वक रूप लेइत अछि।

‘ज्ञान खुलै छै, बोध बनै छै’ सन तात्त्विक आवर्तनक बीच विशिष्ट समय-संकट अथवा निर्णय अनुपस्थित अछि। अध्ययनक बौद्धिक आशय स्पष्ट, काव्यक दृश्यात्मकता सीमित।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण ढंग, संग, प्रसंग, रंग, अंग; रदीफ “परखै छी”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“बोध जखन उठै छै, प्रश्न खुलै छै / ज्ञान फेर देखै छी, अंग परखै छी”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६५ : माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६५ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“स्रोत जखन मिलै छै, बोध बढै छै / माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि”; मध्यक पाठ—“स्वप्न जखन चलै छै, रूप बदलै छै / नींद जखन टूटै छै, जग अडै छै” ।

‘स्रोत जखन मिलै छै, बोध बढै छै’ साक्ष्यक आगमनसँ ज्ञानक पुनर्गठन प्रस्तुत करैत अछि । माप, मूल क्रम आ कारण जाँचबाक सूत्र ई गजलकेँ प्रमाणमीमांसक स्वर दैत अछि ।

मुदा मापक सीमा, विचलन वा प्रयोगक ब्योरा नहि; एहि कारण ‘ज्ञान मोनमे उतरैत अछि’ साहित्यिक प्रतिमा अछि, वस्तुनिष्ठ परीक्षणक निष्कर्ष नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, ध्यान, मान, गान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “मोनमे उतरैत अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“मूल जखन खोजै छी, क्रम खुलै छै / कारण जखन मिलै, निदान मोनमे उतरैत अछि” । अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७६६ : मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६६ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“बल जखन बढै छै, मान बचै छै / नेह जखन जगै, विश्वास रूप धरैत अछि”; मध्यक पाठ—“काल जखन सरकै छै, रूप बदलै छै / मीत जखन भेटै छी, याद जगै छै” ।

‘बल जखन बढै छै, मान बचै छै’ सामाजिक शक्ति आ गरिमाक सम्बन्ध पर विचार अछि । विरति-चाहक युग्म आत्मसंयम आ सक्रियताक कठिन सन्तुलनक प्रश्न उठबैत अछि ।

मुदा शक्ति बढबाक कारण कतहु मान घटैए, कतहु मान बचैए—पूर्व समूहक विपरीत दावासँ अन्तर्विरोधक स्पष्टीकरण नहि। शेरसभमे विभिन्न अवधारणा एकत्र अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण विश्वास, आस, त्रास, उल्लास, प्यास; रदीफ “रूप धरैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“कारण जखन धरै छी, भेद खुलै छै / चाह जखन जगै, प्यास रूप धरैत अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६७ : घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पीर जखन उठै छै, मोन सुनै छै / घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि”; मध्यक पाठ—“स्वप्न जखन टूटै छै, जग रहै छै / द्वार जखन रोकै छै, पएर रुकै छै”।

‘पीर जखन उठै छै, मोन सुनै छै’ श्रवणकेँ उपचारक पहिल काज बनबैत अछि। बोल रुकला परो मौनक साक्ष्य रहबाक विचार मनोवैज्ञानिक दृष्टिसँ संवेदनशील अछि।

मुदा ‘उपचार द्वार खोलैत अछि’क उपचार वास्तविक शारीरिक कि सामाजिक, स्पष्ट नहि। घावक रूपकक चिकित्सकीय अर्थ कल्पित तथ्य नहि बनबाक चाही। रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण उपचार, सत्कार, अधिकार, विचार, आधार, व्यवहार; रदीफ “द्वार खोलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“ठाम जखन बदलै छै, बोल बदलै छै / अर्थ जखन मिलै, व्यवहार द्वार खोलैत अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६८ : साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घाव फेर दुखै छै, याद जगै छै / साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि”; मध्यक पाठ—“चाह जखन जगै छै, पएर चलै छै / हाथ जखन बढै छै, काज बनै छै”।

‘साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि’ पीडाक आँसुकें सत्यक खोजसँ जोड़ैत अछि। प्रमाणक कड़ाइ आ करुणाक अभाव बीच संवादक सम्भावना एहि गजलमे अछि।

मुदा नोर सत्यक स्वतः प्रमाण नहि; भावनात्मक गहराइ तथ्यगत सत्यसँ अलग अछि। एहि दुईक सीमा काव्यक दार्शनिक बल तथा आलोचनाक आवश्यक प्रतिपक्ष दुनू बनैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “सँ जुड़ैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दोष जखन खुलै छै, प्रश्न बचै छै / तर्क फेर बढै, कोर सँ जुड़ैत अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६९ : मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७६९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पीर जखन सुनै छै, मोन पसीजै छै / मोन फेर

जागै, प्रीत संग चलैत अछि”; मध्यक पाठ—“पीर जखन घटै छै, श्वास खुलै छै / देह फेर उठै छै, बाट खुलै छै”।

‘पीर जखन सुनै छै, मोन पसीजै छै’क पाछाँ ‘तर्क जखन बढ़ै छै, भाव बचै छै’क युग्म करुणा आ बुद्धिक सहअस्तित्व सुझबैत अछि। प्रीत संग चलबाक अर्थ ई दुई केँ अलग नहि करब।

मुदा काव्यक भीतरी यात्रा सामान्य सैद्धान्तिक वाक्यबहुल अछि; कोनो विशेष व्यक्ति अथवा सम्बन्धक प्रसङ्गक अभाव आलोचनाकेँ सीमा पहिचानय बाध्य करैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, मीत, गीत, जीत; रदीफ “संग चलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मोन जखन सोचै छै, पएर चलै छै / बाट फेर खुलै, रीत संग चलैत अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७० : न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मोन दीप जरै छै, लोभ घटै छै / न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि”; मध्यक पाठ—“नाम आन कहै छै, अर्थ घटै छै / भेद मात्र रहै छै, रूप नुकै छै”।

‘एक दू दिसै छै, अंक बढ़ै छै’ मापनक सापेक्षता पर भाषिक प्रश्न अछि। न्याय लेल माप बनबैत समय किस वस्तु के गनल गेल, ककरा छोड़ल गेल—ई उत्तरदायित्वक संकेत अछि।

मुदा केवल भिन्न गिनती देखाबय तथ्यगत न्याय सिद्ध नहि होइत। मापक पद्धति आ सामाजिक परिणामक विशिष्ट प्रसङ्ग आवश्यक छल, जे पाठमे नहि भेटैत।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण माप, छाप, ताप,
थाप; रदीफ “बनि रहैत अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित
उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“अंक फेर गनै छै, क्रम बनै छै / मोन अंक गनै, थाप बनि रहैत
अछि” । अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक
सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक
प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७७१ : पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७१ मे १२ मूल
मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“मेह फेर खसै छै, धार बढै छै / घरक भेद खुलै,
ज्ञान दिशा दैत अछि”; मध्यक पाठ—“बीज फेर रोपै छी, ऋतु तकै छी / जल
ताप मिलै छै, बीज उगै छै” ।

‘बाढ़ फेर चढै छै, खेत डुबै छै’ पीडाक स्थानीय कारण-सन्दर्भ देत । ‘घट रूप बनै
छै, चाक घुमै छै’क कारीगरी बिम्ब विनाशक संग निर्माणक नव प्रक्रिया रखैत
अछि; निदानक अर्थ केवल रोग-बचाव नहि, जीवनक पुनर्गठन हो सकैत अछि ।

मुदा बाढ़िक कारण, खेतक सामाजिक स्वामित्व वा राहतक ठोस कथा नहि; एहि
अभावमे पीरक मूल पर निष्कर्ष कविताभितरक सम्भावना अछि, बाह्य
समाजशास्त्रीय तथ्य नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, निदान,
विधान, पहिचान, अनुमान, ध्यान; रदीफ “दिशा दैत अछि” । रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“काज क्रम खुलै छै, हेतु मिलै छै / जगक क्रम खुलै, विधान दिशा दैत अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७२ : याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रोष मोन घटै छै, नेह बढ़ै छै / याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि”; मध्यक पाठ—“सुख फेर आबै छै, पीर घटै छै / पीर फेर आबै छै, सुख घटै छै”।

‘दोष फेर मानै छी, भार घटै छै’ स्मृतिक पुनरागमनकें आत्म-दायित्व स्वीकार करबाक दिशा दैत अछि। आन मत सुनला पर रोष घटबाक भाव जीवनमे संशोधनक नैतिक कथा बनबैत अछि।

मुदा ‘नोर मोन फेरबैत अछि’क कारणात्मक दावा सीमित अछि: भावनात्मक अनुभव अपनै नैतिक निर्णय नहि, तकरा सोच आ सम्बन्धक क्रिया चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर; रदीफ “मोन फेरबैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“पक्ष फेर कहै छी, दोष धरै छी / मोन पक्ष बुझै, कोर मोन फेरबैत अछि”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७३ : प्रश्न जखन उठै, विचार कें खोजैत अछि

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“भूल फेर खुलै छै, मत बदलै छै / प्रश्न जखन

उठै, विचार केँ खोजैत अछि”; मध्यक पाठ—“रूप जखन बुझै छी, चाह जगै छै / चाह जखन जगै छै, यत्न बढ़ै छै” ।

‘भूल फेर खुलै छै, मत बदलै छै’ जाँच-पछातिक संशोधनकेँ नकार नहि, उपलब्धि मानैत अछि। बीज आ फलक अन्तर कारण-बोधक वास्तविक कृषि-उदाहरण बनबैत अछि।

मुदा किछु शेरमे प्रश्न स्वयं विचार खोजैत अछि, किछु मे विचार प्रश्न उत्पन्न करैत; एहि पारस्परिक क्रमकेँ काव्य साफ संरचनामे नहि सहेजि पाबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण विचार, आधार, व्यवहार, उद्धार, पार, प्रकार, भार; रदीफ “केँ खोजैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“फल जखन आवै छै, भेद खुलै छै / काल जखन घुरै, भार केँ खोजैत अछि”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७४ : पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“वाद बीच रहै छै, लोक संग चलैए / पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए”; मध्यक पाठ—“रूप सोझाँ रहै छै, मोन ओकरा धरैए / ज्ञान मोनमे जगै छै, रूप दूर रहैए” ।

‘मत भिन्न रहै छै, काज संग बढ़ैए’ लोकतान्त्रिक सहकारक संक्षिप्त प्रतिमा अछि। एकहि मत पर सहमति बिना साझा काज सम्भव—ई विचार पीड़ाक कमी आ आसक पुनर्जागरण संग जुड़ैत अछि।

मुदा मतभेदक विषय अथवा संगक काजक व्यावहारिक उदाहरण नहि। कविता संवादक मूल्य प्रतिपादित करैत अछि, ओकर सामाजिक परीक्षा नहि देखबैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास,
प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास; रदीफ “जागि उठैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“क्रम फेर खोजै छी, हेतु संग मिलैए / मूल जखन खुलै छै,
इतिहास जागि उठैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर
काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य
अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७५ : घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७५ मे १२ मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घर बाट छुटै छै, पएर दूर बढैए / घर पाछाँ छुटै
छै, सार मोनमे बसैए”; मध्यक पाठ—“दोष जखन खुलै छै, मान फेर बदलैए /
क्षमा रोष घटै छै, याद तइयो रहैए”।

‘घर बाट छुटै छै, पएर दूर बढैए’ प्रवासक मूर्त चित्र अछि। रातिक नोरक पाछाँ
भोरमे आँखि उघड़नाइ विस्थापनकें शोक आ संभावना दूनू रूपमे देखबैत अछि।
मुदा घर छोड़बाक ठोस आर्थिक वा पारिवारिक कारण नहि दैत; व्यक्तिगत
आशयकें युगव्यापी प्रवासक निश्चित कथन मानब उचित नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, द्वार,
धार, पार, तार, हार; रदीफ “मोनमे बसैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-
पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“घर दूर रहै छै, नेह संगहि चलैए / जीवन फेर चलै छै, हार मोनमे
बसैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक
सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक
प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७६ : कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७६ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“नीर कूल छुबै छै, नाव धार धरैए / कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए”; मध्यक पाठ—“ज्ञान जग चलै छै, काज तइयो रहैए / देह घाट चलै छै, पाएर बाट धरैए” ।

‘नीर कूल छुबै छै, नाव धार धरैए’ नदीक गतिक सजीव चित्र अछि । नाव आ कूलक दोसर-दोसर गति जीवनक अस्थिरता, प्रकृतिक शक्ति आ कारीगरक निर्णयक बिम्ब बनैत अछि ।

मुदा कूल सरबाक भौतिक कारण वा पानि-प्रवाहक तथ्य इस काव्यमे प्रमाणित नहि; नदीकें प्रतीक रूपमे पढ़ब उचित अछि, वैज्ञानिक आँकड़ा रूपें नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण तरंग, रंग, संग, उमंग, अंग, प्रसंग, ढंग; रदीफ “संगे बहैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“नीर दूर बहै छै, प्रश्न संगहि चलैए / जगत क्रम धरै छै, ढंग संगे बहैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७७७ : बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७७ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“बीज मेह पिबै छै, पात धूप तकैए / बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए”; मध्यक पाठ—“राति ओस पड़ै छै, पात धीरे भीजैए / श्वास खेत चलै छै, भोर पाँखि खोलैए” ।

‘बीज मेह पिबै छै, पात धूप तकैए’ कृषि-जीवनक अत्यन्त मूर्त युग्म अछि । खेतमे हाथसँ बीयाक छिटाव, श्रमक दान आ साझा अन्नक बाँटवारा प्रेमकें काज आ उत्पादक सम्बन्धमे परिवर्तित करैत अछि ।

‘प्रीत माटिमे अँकुरैए’ रूपक प्रभावी अछि, मुदा किछु उपदेशात्मक शेर गजलक ठोस बीज-पानि दृश्यसँ दूर जाइत अछि; सजीव चित्र एतय सिद्धान्तसँ अधिक बलवान अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण प्रीत, गीत, रीत, जीत, शीत, अतीत, मीत; रदीफ “माटिमे अँकुरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“खेत गीत गबै छै, जीवन फेर उगैए / हाथ हाथ जुडै छै, मीत माटिमे अँकुरैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७८ : प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“आकाश दूर खुलै छै, आँखि तारा गिनैए / प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए”; मध्यक पाठ—“आँखि रूप धरै छै, मोन भेद कहैए / शब्द पाछाँ अबै छै, वर्ग रूप सजैए”।

‘आकाश दूर खुलै छै, आँखि तारा गिनैए’ बाल-जिज्ञासा आ वैज्ञानिक उत्सुकताक प्रत्यक्ष दृश्य अछि। आकाशक मौन आ दृष्टिक बढ़ैत विस्तार ज्ञानक प्रश्न खुलल रहबाक पक्ष दैत अछि।

मुदा नक्षत्रक संख्या गनबाक अर्थ स्वयमैं वैज्ञानिक अनुमान नहि; प्रश्न, उत्तर आ जाँचक बीचक चरण कवितामे सीमित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, ध्यान, मान, गान, तान, पहचान, विधान; रदीफ “ऊपर चढ़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“प्रश्न फेर उठै छै, बोध बाट खुलैए / जाँच संग चलै छै, विधान ऊपर चढ़ैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७७९ : पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७७९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पीर नोर कहै छै, मोन चुप्ये सुनैए / पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए”; मध्यक पाठ—“शब्द पीर धरै छै, अर्थ भीतर खुलैए / दुःख दूर हटै छै, श्वास फेर बढैए”।

‘पीर नोर कहै छै, मोन चुप्ये सुनैए’ शरीरक भाषा आ मानवीय श्रवणक व्याख्या अछि। ‘क्षमा हाथ बढै छै’क कृत्य दुःखकें निष्क्रिय स्मृतिक बदला सम्बन्ध-संशोधन बना सकैत अछि।

मुदा पीरक इतिहास आ न्यायक बाटक निर्णायक परिस्थितिसभ अनुपस्थित अछि। पीडा सुनब आ न्याय देब भिन्न क्रिया छथि; गजल दुनूक सम्बन्धकें प्रश्नरूपमे ही खोलैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण नेह, देह, गोह, मेह, स्नेह, विदेह, नेह; रदीफ “नोरमे भीजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मौन भीतर बजै छै, जीवन फेर चलैए / नेह रोष घटै छै, नेह नोरमे भीजैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८० : राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“राति पाछाँ सरै छै, दीप धीरे जरैए / राति पाछाँ

सरै छै, आस भोरमे फूटैए”; मध्यक पाठ—“साँच चाल कहै छै, भ्रम धीरे घटैए / चाह मोन चलै छै, पएर काज करैए” ।

‘राति पाछाँ सरै छै, दीप धीरे जरैए’ अन्हारक समाप्ति केनहुँ क्षणमे नहि, दीर्घ क्रममे देखबैत अछि। हाथक संग हाथ जोड़ि लोक नब दिन बनबैत छथि—ई आशाकेँ सामूहिक श्रम बनबैत अछि।

समापनक सार्वभौम हुलासक अर्थ तखन गहिर होइत जखन एही लोकक विशिष्ट सङ्घर्ष सेहो प्रस्तुत होयत। मौलिक चित्र आरम्भमे अछि, अन्तमे नीति अधिक।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास; रदीफ “भोरमे फूटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हाथ हाथ जुड़ै छै, लोक दिन गढैए / काल पन्ना फेरै छै, इतिहास भोरमे फूटैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७६१-७८० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकेँ केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयम् दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
७६१ : ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै	— / —	—
७६२ : दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै	— / —	—

७६३ : मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी	— / —	—
७६४ : काल जखन मुडै छै, ढंग परखै छी	— / —	—
७६५ : माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि	— / —	—
७६६ : मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि	— / —	—
७६७ : घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि	— / —	—
७६८ : साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि	— / —	—
७६९ : मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि	— / —	—
७७० : न्याय फेर बढै, माप बनि रहैत अछि	— / —	—
७७१ : पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि	— / —	—
७७२ : याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि	— / —	—
७७३ : प्रश्न जखन उठै, विचार केँ खोजैत अछि	— / —	—
७७४ : पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए	— / —	—
७७५ : घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए	— / —	—
७७६ : कूल दूर सरै छै,	— / —	—

तरंग संगे बहैए		
७७७ : बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए	— / —	—
७७८ : प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए	— / —	—
७७९ : पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए	— / —	—
७८० : राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए	— / —	—

गजल ७८१ : शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“शब्द पवन चढ़ै छै, पत्र दूर पहुँचैए / शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए”; मध्यक पाठ—“वचन भार बढ़ै छै, लोक याद रखैए / नाम मान बदलै छै, देह परिणाम सहैए” ।

‘शब्द पवन चढ़ै छै, पत्र दूर पहुँचैए’ संचारक माध्यम आ लोकक भावनाकें जोड़ैत अछि । विवाद आ अनुवादक पदक संग भाषा दूर देशमे जाइतहुँ घरक स्मृति बचल रहबाक विचार अछि ।

मुदा अनुवादसँ अर्थमे जे फेरबदल होइत अछि, ओ कोनो ठोस पद वा वार्ताक उदाहरणसँ नहि देखाओल गेल । संचारक रूपक अधिक, तुलनात्मक भाषिक साक्ष्य कम ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-द”, उदाहरण संवाद, नाद, अनुवाद, विवाद, प्रसाद, अवसाद, स्वाद; रदीफ “पवनमे उड़ैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“भाषा दूर सरै छै, मूल संगहि रहैए / माटि गन्ध चढ़ै छै, स्वाद पवनमे उड़ैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत

निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८२ : घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घाव बात कहै छै, आँखि चुप्पे सुनैए / घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए”; मध्यक पाठ—“मनुख संग चलै छै, नेह डोर धरैए / पीर सुख बदलै छै, दुनू काल चलैए”।

‘घाव बात कहै छै, आँखि चुप्पे सुनैए’ पीडाक मानवीय साक्ष्यक संवेदनशील बिम्ब अछि। सत्ता कान बन्द केलापर चिन्ह बोलबाक कल्पना दबल लोकक अनुभवकें अभिलेखक विकल्प बनबैत अछि।

मुदा चिन्हक स्वतंत्र पहिचान आ तकर सत्यापन नहि; आन पीडितक भाव बुझबाक नैतिक आग्रहकें प्रत्यक्ष दस्तावेज मानब नहि चाहिए।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण भाव, चाव, घाव, ठाव, नाव, बहाव, दाव; रदीफ “नोरमे चमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“पीर आन छुबै छै, अपन मोन बदलैए / मान हाथ उठै छै, दाव नोरमे चमकैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८३ : रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रोष देह चढ़ै छै, श्वास तेज चलैए / रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए”; मध्यक पाठ—“आगि रूप बदलै छै, मूल प्रश्न बचैए / रोक काज रुकै छै, हेतु तइयो रहैए”।

‘रोष देह चट्टै छै, श्वास तेज चलैए’ क्रोधक शारीरिक गति स्पष्ट करैत अछि।
आगि राख बनब आ ऊष्मा काज बनबक क्रिया हिंसक ऊर्जाकेँ रचनात्मक श्रममे
बदलबाक समृद्ध प्रतीक अछि।

मुदा क्रोध सँ काज धरि मनःपरिवर्तनक आन्तरिक निर्णय कम देखाइत; प्रतीक
आकर्षक अछि, कथात्मक रूपान्तरण अपूर्ण।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोध”, उदाहरण क्रोध, बोध, रोध,
विरोध, शोध, प्रबोध, निरोध; रदीफ “भीतर धधकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“आगि रूप बदलै छै, ऊष्मा काज बनैए / श्वास धीर बनै छै,
निरोध भीतर धधकैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर
काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य
अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८४ : सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८४ मे १२ मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“सोर दूर रहै छै, श्वास धीरे चलैए / सोर दूर रहै
छै, राग मौनमे गमकैए”; मध्यक पाठ—“अभाव आँखि धरै छै, मन अर्थ गढ़ैए /
स्मृति सोर घुरै छै, राति पाछाँ चलैए”।

‘सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए’ सुनबाक अभाव आ भीतरक संगीतक
सहअस्तित्व अछि। रातिक दीप, मन्द श्वास आ शांत तान गजलक ध्वनि-सम्पन्न
वातावरण बनबैत अछि।

रागक नाम अथवा लोक-सांगीतिक प्रसङ्ग नहि देल गेल; पर एकर मौनक
अनुभूति रूपक रूपँ स्पष्ट अछि। संगीत-विवेचनकेँ वास्तविक प्रस्तुतिक अभिलेख
नहि मानब।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाग”, उदाहरण राग, अनुराग, विराग, त्याग, भाग, पराग, राग; रदीफ “मौनमे गमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मौन ठाम बनै छै, अर्थ भीतर बजैए / मोन दीप बनै छै, राग मौनमे गमकैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८५ : पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पएर रोक घेरै छै, मोन पाँखि खोलैए / पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए”; मध्यक पाठ—“सादृश्य नाम सिखै छै, भेद तइयो रहैए / चिन्ह घर कहै छै, पएर फेर घुरैए”।

‘पएर रोक घेरै छै, मोन पाँखि खोलैए’ देहक बन्धन आ कल्पनाक स्वतन्त्रता बीच द्वन्द्व रचैत अछि। पाँखि खुलितो पएर जमीन छुबैत अछि—ई मुक्ति केँ यथार्थसँ कटैत नहि।

मुक्तिक सामाजिक कारण अथवा रोकक स्रोत अपरिभाषित; तथापि जमीन-आकाशक द्विरूपक एहि गजलक स्पष्ट शिल्पगत शक्ति अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाश”, उदाहरण आकाश, प्रकाश, अवकाश, विकास, निवास, विनाश, उपहास; रदीफ “पार निकलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मुक्ति मोन खुलै छै, जग बीचहि बनैए / आकाश दूर रहै छै, उपहास पार निकलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८६ : पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८६ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“जड़ि गहिर धरै छै, नव पात निकलैए / पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए”; मध्यक पाठ—“बीज ऋतु मानै छै, काज फेर चलैए / लक्षण पैघ बनै छै, आन रूप घुसैए” ।

‘जड़ि गहिर धरै छै, नव पात निकलैए’ परम्परा आ नवोन्मेषक जैविक सम्बन्धक बिम्ब अछि । दादीक कथा, गाछक छाह आ ऋतुक फेरबदल स्मृतिक पीढ़ीगत संचरणकें ठोस बनबैत अछि ।

मुदा सब पुरान बीया लाभकारी होयत, ई वैज्ञानिक/सामाजिक निष्कर्ष काव्यसँ नहि निकलैत; प्रतीकक उष्मा आ इतिहासक मूल्यांकन अलग ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “ूल”, उदाहरण मूल, फूल, धूल, शूल, भूल, कूल, मूल; रदीफ “जड़ि धरैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“जड़ि गहिर रहै छै, पात आकाश छुबैए / जाँच नेह बचबै छै, मूल जड़ि धरैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७८७ : पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८७ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“पीर देह कहै छै, मोन चुप्ये सुनैए / पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए”; मध्यक पाठ—“इन्द्रिय संग जुड़ै छै, बोध एक्के उठैए / नोर पीर कहै छै, न्याय बाट माँगैए” ।

‘पीर देह कहै छै, मोन चुप्ये सुनैए’ देहक अनुभूतिक केन्द्रता राखैत अछि । पएर थाकबाक आ श्वास मन्द पड़बाक निरीक्षण पीड़ाकें वाचिक शिकायतक बाहर सेहो देखबाक आग्रह अछि ।

उपचार-सूचना नहि, अनुभूतिक चित्र अछि। घाव आ तापक रूपककें चिकित्सकीय कारण वा निदानक प्रमाणरूपें नहि लिखबाक चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण ताप, छाप, थाप, संताप, माप, जाप, आलाप; रदीफ “देहमे सिहरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“देह जग खोलै छै, मोन भीतर खुलैए / राति गीत उठै छै, आलाप देहमे सिहरैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८८ : पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पन्ना फेर खुलै छै, धूल धीरे उडैए / पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए”; मध्यक पाठ—“पत्र तारीख धरै छै, झूठ पकड़ि खुलैए / काल क्रम बनै छै, कारण संग जुडैए”।

‘पन्ना फेर खुलै छै, धूल धीरे उडैए’ दस्तावेजक भौतिक उपस्थिति देखबैत अछि। कालान्तरमे नामक अर्थ बदलैत अछि; नब पाठक पन्ना खोलि पुरान प्रश्नकें भविष्यक अर्थ देबैत अछि।

मुदा कोन पुस्तक, कोन नाम, कोन पहिचान—अव्यक्त अछि। अभिलेखक विश्वसनीयता लेल स्रोत-पहिचान जरूरी; काव्यक धूल-जिल्दक दृश्य सजीव अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, परिणाम, प्रणाम, विश्राम; रदीफ “कालमे डोलैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“स्मृति काज माँगै छै, भविष्य सोझाँ रहैए / थाकल दिन ढलै छै, विश्राम कालमे डोलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८९ : दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७८९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दाबी जोर करै छै, प्रमाण फेर जँचैए / दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए”; मध्यक पाठ—“प्रामाण्य फेर जँचै छै, काज फल कहैए / आन मत सुनै छै, अपन अर्थ सुधारैए”।

‘दाबी जोर करै छै, प्रमाण फेर जँचैए’ ऊँच स्वर आ सत्यक भेदपर चोट अछि। दोषक नाम बदलि गेलापर पीडाक स्थिति नहि बदलय, ई प्रशासनिक आ नैतिक उत्तरदायित्वक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।

मुदा कोन दावा, कोन पीड़ित, कोन नामकरण? ई तथ्य प्रस्तुत नहि। काव्यक आलोचना सामान्य सामाजिक तर्क अछि, किसी वास्तविक मामलेक प्रमाणित वृत्तान्त नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, घात, जात, पात, प्रभात, आघात; रदीफ “साँचमे टिकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“सत्य काज माँगै छै, उत्तरदायित्व रूप बनैए / लोक फेर उठै छै, आघात साँचमे टिकैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९० : दीप राति जैरै छै, नेह मोनमे उजरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९० मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“दीप राति जैरै छै, छाँह धीरे सरैए / दीप राति जैरै छै, नेह मोनमे उजरैए”; मध्यक पाठ—“भेद तइयो रहै छै, सादृश्य बाट खोलैए / चाह मोन जगै छै, विरक्ति माप धरैए” ।

‘दीप तेल पिबै छै, आगि ऊष्मा छोड़ैए’ बड सजीव वस्तु-बिम्ब अछि । हाथक संग हाथ मिलब आ रोष हटब प्रेमकें केवल निजी भावना नहि, सार्वजनिक काजक ऊर्जा बनबैत अछि ।

मुदा दीपक बिम्बसँ सामूहिक न्याय धरि संक्रमण बहुत तेज अछि; मध्यवर्ती परिस्थितिक अभावमे कल्पना सामाजिक प्रतिज्ञा बनि रहैत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, नेह; रदीफ “मोनमे उजरैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“प्रेम काज जगै छै, काज रूप धरैए / भोर द्वार खुलै छै, नेह मोनमे उजरैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७९१ : राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“राख छाँह धरै छै, आगि पाछाँ रहैए / राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए”; मध्यक पाठ—“असफल राह कहै छै, दोष कतय रहैए / कारण दूर नुकै छै, फल तइयो अबैए” ।

‘राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए’ विनाशक अवशेषमे सर्जनक बीया खोजैत अछि । टूटल घरमे ईट धरैत हाथ आ राखसँ फूल उगबाक दृश्य विपत्तिपछातिक पुनर्निर्माणकें अत्यन्त मूर्त बनबैत अछि ।

मुदा ई रूपक सँ वास्तविक राहतक व्यवस्था वा अग्निक कारणक प्रमाण नहि बनैत। काव्यक उपलब्धि श्रमक दृश्य आ बीयाक रूपान्तरण अछि, सामूहिक ऐतिहासिक दावा नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, प्रीत, रीत, मीत, जीत, अतीत, शीत; रदीफ “राखसँ फूलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“राख बीज धरै छै, नव काज जनमैए / भोर धूप चढ़ै छै, शीत राखसँ फूलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९२ : रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रेखा नाम बनै छै, लोक पार रहैए / रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए”; मध्यक पाठ—“कानून नाम बदलै छै, जीवन असर सहैए / विकल्प एक कहै छै, दोष आन खुलैए”।

‘जात वर्ग कहै छै, मनुख तइयो बदलैए’ पहिचानक सामाजिक वर्गीकरण आ जीवित व्यक्तिक बदलैत रूप बीच टकराव अछि। ‘गरिमा काज माँगै छै’क कथन समानताकेँ नारा नहि, व्यवहारक कसौटी बनबैत अछि।

मुदा जाति वा वर्गक विशिष्ट घटना, संवाद अथवा पीडितक अनुभव स्पष्ट नहि। शीर्षकक सीमा गलबाक भाव प्रभावकारी अछि, पर सामाजिक इतिहासक तथ्यस्वरूप नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण पहचान, मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, गान; रदीफ “सीमा गलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“गरिमा काज माँगै छै, व्यवहारमे मान बनैए / सीमा धीरे गलै छै, गान सीमा गलैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९३ : रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रूप नाम बदलै छै, मोन तइयो देखैए / रूप नाम बदलै छै, रूप नामसँ छूटैए”; मध्यक पाठ—“अन्तर्बोध भीतर उठै छै, देह श्वास धरैए / सूरज धूप फैलै छै, ताप तइयो छुबैए”।

‘बालपन दूर सरै छै, बोध भीतर रहैए’ व्यक्तिक परिवर्तनक समयगत आधार दैत अछि। नाम, रूप आ स्वरूपक अन्तर गजलकें सतही पहिचानक आलोचनामे बदलैत अछि।

मुदा ‘मनुख नाम छूटै छै’क अर्थ वास्तविक अनामता कि वर्ग-संकेतसँ मुक्ति, ई निर्दिष्ट नहि; दार्शनिक पदक विवेचनक अपेक्षा शेष अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ूप”, उदाहरण रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, अनूप, धूप, कूप, कुरूप; रदीफ “नामसँ छूटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“मनुख नाम छूटै छै, नेह सोझाँ रहैए / हँसी घाव करै छै, कुरूप नामसँ छूटैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९४ : नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९४ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“नदी याद बहै छै, कूल धीरे सरैए / नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए”; मध्यक पाठ—“लोक कथा कहै छै, छूटल नाम उठैए / कारण काज जुड़ै छै, फल पाछाँ अबैए” ।

‘बालपन नाव चलै छै, भोर नीर चमकैए’ नदीक स्मृतिक मूर्त दृश्य अछि । कूल सरबाक परिवर्तनक बीच नदीक पुरान अर्थ भीतर लौटैत अछि; नोर-नीरक ध्वनि निजी शोक आ प्राकृतिक धाराकँ एक करैत अछि ।

मुदा नदीक परिवर्तनकँ वास्तविक भूगर्भीय कारणसँ समझब एहि काव्यक पाठसँ सम्भव नहि; ई स्मृतिगत नदी अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण धार, सार, भार, पार, तार, द्वार, हार; रदीफ “स्मृतिमे घुरैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“स्मृति बीज धरै छै, भविष्य बाट बनैए / भोर धार चमकै छै, हार स्मृतिमे घुरैए” । अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७९५ : लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९५ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“लोक सोर जुड़ै छै, ढोल धीरे उठैए / लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए”; मध्यक पाठ—“आकांक्षा योग्यता मिलै छै, अर्थ फेर खुलैए / आदेश सोर उठै छै, पएर काज धरैए” ।

‘ढोल धीरे उठैए, बाँसुरी पवन छुबैए, पएर ताल धरैए’ लोकक संगीत आ देहगत सहभागिताक ठोस चित्र अछि । सामूहिक थाल खुलब आ दूरी घटना रंगकँ परस्पर सम्बन्धक क्रिया बनबैत अछि ।

मुदा एहि संगीतक स्थानीय विधा अथवा गीतक मूल पाँति नहि देल गेल;
सांस्कृतिक उपस्थिति सजीव अछि, विशिष्ट लोकपरम्पराक प्रामाणिक विवरण
नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग,
अंग, प्रसंग, तरंग, उमंग; रदीफ “लोकमे बजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“लोक गीत गमकै छै, स्मृति कागज लाँघैए / भोर ढोल उठै छै,
उमंग लोकमे बजैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत
निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा
ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९६ : पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९६ मे १२ मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पएर माटि छुबै छै, गन्ध मोन भरैए / पएर माटि
छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए”; मध्यक पाठ—“फसल असफल कहै छै, सिद्धान्त
फेर जँचैए / धूम आगि कहै छै, उपाधि तइयो खोजैए”।

‘पएर माटि छुबै छै, गन्ध मोन भरैए’ देशक आरम्भकें धरतीक गन्धसँ जोड़ैत
अछि। भाषा आ लोकक मिलित अर्थ-निर्माणसँ देश केवल नक्शा नहि, अनुभूत
सामाजिक सम्बन्ध बनैत अछि।

मुदा विकास, न्याय आ उत्तरदायित्वक व्यापक पदसभक साथ कोनो खास
ऐतिहासिक परिस्थिति नहि; राष्ट्रक काव्यदृष्टि आ देशक वास्तविक इतिहास
अलग राखल जाए।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ेश”, उदाहरण देश, वेश, परिवेश,
सन्देश, प्रवेश, अवशेष, निर्देश; रदीफ “माटिसँ जनमैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“माटि इतिहास धरै छै, इतिहास भीतर बोलैए / लोक प्रश्न उठै छै, निर्देश माटिसँ जनमैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९७ : दूर घर रहै छै, प्रीत दूर घटैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दूर घर रहै छै, पत्र सोर जगैए / दूर घर रहै छै, प्रीत दूर घटैए”; मध्यक पाठ—“सादृश्य भेद रखै छै, संवाद पुल बनैए / आन पक्ष सुनै छै, रोष धीरे घटैए”।

‘राति दूरभाष बजै छै, चेहरा छवि बनैए’ दूरिक भीतर आधुनिक सम्पर्कक प्रभावी दृश्य अछि। पत्र आ दूरभाषक आवाज अलग-अलग माध्यम अछि, जे प्रियक अनुपस्थितिकें न्यून करैतहुँ समाप्त नहि करैत।

मुदा तकनीकसँ दूरी घटला परो सम्बन्धक स्वायत्तताक प्रश्न गजलमे उठैत अछि; तकर समाधान केवल फोनक उपस्थिति नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण प्रीत, मीत, गीत, रीत, जीत, अतीत, शीत; रदीफ “दूरि घटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“प्रीत डोर धरै छै, स्वतन्त्रता संग रहैए / भोर सोर अबै छै, शीत दूरि घटैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७९८ : डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९८ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“डगमग मोन रहै छै, हाथ संग पकड़ैए / डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए”; मध्यक पाठ—“जगत व्यवस्था कहै छै, मनुख मूल तैकैए / डर रूप बनै छै, विश्वास तइयो बचैए” ।

‘डोर समय सहै छै, गाँठ समय कसैए’ विश्वासकें एकहि क्षणक भावना नहि, टिकाऊ सम्बन्धक परीक्षण बनबैत अछि । स्रोत, अभिलेख आ जाँचक पाठ विश्वासकें विचारशील अनुशासनसँ जोड़बैत अछि ।

मुदा दावाक एकटा वास्तविक जाँच नहि प्रस्तुत; बिम्ब आ प्रमाण-विवेकक संयोग सार्थक अछि, किन्तु प्रमाणात्मक विवरण सीमित ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण विश्वास, आस, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास; रदीफ “डोर सम्हरैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“विश्वास जाँच माँगै छै, जाँच संगहि चलैए / लोक संग रहै छै, इतिहास डोर सम्हरैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ७९९ : पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ७९९ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“पएर मोड़ पड़ै छै, नकशा फेर खुलैए / पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए”; मध्यक पाठ—“यत्न राह मिलै छै, बोध फेर पकैए / असफल राह कहै छै, योजना फेर बदलैए” ।

‘पएर मोड़ पड़ै छै, नकशा फेर खुलैए’ यात्रा आ निर्णयक परिवर्तनकें मूर्त करैत अछि । घरक अर्थ बदलैत अछि, जखनकि स्वतन्त्रताक सवाल केवल गन्तव्य चुनब नहि, ककर संग चलब सेहो अछि ।

मुदा नक्शाक मोड़ आ न्याय/सहायक प्रश्नक बीच सम्बन्ध स्पष्ट करबाक स्थान छल; रचना अधिकतर प्रतीकात्मक स्तर पर रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-नय”, उदाहरण उपाय, न्याय, सहाय, अध्याय, आशय, पर्याय, अभिप्राय; रदीफ “दिशा मुड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“अन्त मोड़ बनै छै, चलन ज्ञान बनैए / पएर धूल धरै छै, अभिप्राय दिशा मुड़ैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०० : गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“गीत काल लाँघै छै, श्वास तइयो चलैए / गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए”; मध्यक पाठ—“बोध बोध पकड़ै छै, प्रश्न आरो उठैए / तर्क जीत पबै छै, मान तइयो रहैए”।

‘गीत काल लाँघै छै’ कला केँ व्यक्तिक जीवनसीमासँ आगाँ जीवित रहबाक सामर्थ्य दैत अछि। पन्ना मुड़ला पर नव प्रश्न उठबाक बिम्ब पाठक आ पुस्तकक सह-निर्माणकेँ महत्त्व दैत अछि।

मुदा दीवानक कालातीतता केतबा स्थायी होएत से बाह्य पाठक-स्वीकृतिक प्रमाण माँगैत; रचनाभितरक आकांक्षाकेँ स्वतः ऐतिहासिक उपलब्धि नहि मानब।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, प्रीत, मीत, रीत, जीत, अतीत, शीत; रदीफ “अन्त लाँघैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दीवान द्वार खोलै छै, पाठक भीतर चलैए / मोन मौन सुनै छै,
शीत अन्त लाँघैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत
निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा
ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ७८१-८०० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-
मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि।
शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमें दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल
अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
७८१ : शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए	— / —	—
७८२ : घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए	— / —	—
७८३ : रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए	— / —	—
७८४ : सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए	— / —	—
७८५ : पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए	— / —	—
७८६ : पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए	— / —	—
७८७ : पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए	— / —	—
७८८ : पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए	— / —	—

७८९ : दावी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए	— / —	—
७९० : दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए	— / —	—
७९१ : राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए	— / —	—
७९२ : रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए	— / —	—
७९३ : रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए	— / —	—
७९४ : नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे धुरैए	— / —	—
७९५ : लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए	— / —	—
७९६ : पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए	— / —	—
७९७ : दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए	— / —	—
७९८ : डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए	— / —	—
७९९ : पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए	— / —	—
८०० : गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए	— / —	—

गजल ८०१ : दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“हाट भोर खुलै छै, लोक दाम तौलैए / दाम रोज

बदलै छै, सार बाजार जँचैए”; मध्यक पाठ—“श्रम हाथ थकै छै, दाम मान माँगैए / रोटी भूख कहै छै, बाँट नेह जगैए”।

‘हाट भोर खुलै छै, लोक दाम तौलैए’क दृश्य बाजारक प्रत्यक्ष सामाजिक क्रिया अछि। अनाजक ढेरी, मूल्यक अस्थिरता आ टिकाउ वस्तुक मोलक बीच काव्य मूल्य आ कीमतक अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

मुदा कौन खरीददार, किसान वा व्यापारी अधिक भार उठबैत अछि, ई आर्थिक विश्लेषण काव्यक भीतर नहि; सामान्य उपभोक्तामूल्यक सूक्ति रूपमे पाठ सीमित रहैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, व्यापार, आधार, विचार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “बाजार जँचैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“साँझ हाट सिमटै छै, धूल पएर चढ़ैए / भूख फेर कहै छै, पुकार बाजार जँचैए”। अन्तिम मिसराकँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०२ : मेह राति बढै छै, धार कूल बनैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मेह राति बढै छै, नीर आँगन भरैए / मेह राति बढै छै, धार कूल बनैए”; मध्यक पाठ—“नीर उतरि जाइ छै, कीचड़ घर रहैए / रोग डर उठै छै, सेवा काज चलैए”।

‘मेह राति बढै छै, नीर आँगन भरैए’ बाढ़िक खतरा घरेलू जीवन लग आनैत अछि। नावक रस्सी खींचैत हाथ आ सामूहिक सहयोग पानि-बचावक मूर्त क्रिया बनबैत अछि।

मुदा नीति-पन्ना खुलबाक बाद वास्तविक प्रशासनिक निर्णयक ब्योरा नहि; एतय स्मृति आ जल-रेखाक काव्यात्मक अर्थ बलवान अछि, प्रमाणित बाढ़ि-अभिलेख नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण धार, पार, भार, आधार, पुकार, उद्धार, विचार; रदीफ “कूल बनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर धूप निकलै छै, नीर दूर सरैए / बाढ़ पाठ रहै छै, विचार कूल बनैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०३ : रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रस्सी हाथ उतरै छै, डोल नीर छुबैए / रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए”; मध्यक पाठ—“नीर तल रहै छै, रूप ऊपर झलकैए / आँखि गहिर तकै छै, बोध धीरे उतरैए”।

‘रस्सी हाथ उतरै छै, डोल नीर छुबैए’ जल-उठेबाक श्रमक प्रभावी दृश्य अछि। जल बाँटबाक कर्म आ आनक पिआस बुझबाक भाव इनारकें केवल स्रोत नहि, सामुदायिक सम्बन्धक केन्द्र बनबैत अछि।

मूल शीर्षकक ‘कुआँ’ रूप स्रोत-निष्ठ राखल गेल अछि; समीक्षाक गद्यमे ‘इनार’ अधिक स्वाभाविक मैथिली रूप अछि। शीर्षक बदलि मूल-पाठक साक्ष्य मेटब उचित नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण प्यास, आस, विश्वास, निवास, प्रकाश, आभास, श्वास; रदीफ “कुआँ बोलैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“साँझ रस्सी थमै छै, गाम चुप्पे रहैए / नीर गन्ध उठै छै, श्वास कुआँ बोलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०४ : सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“सीटी दूर बजै छै, एएर डिब्बा चढ़ैए / सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए”; मध्यक पाठ—“मीत सीट बाँटै छै, रोटी संग खाइए / भाषा भिन्न सुनै छै, हँसी दूरी घटैए”।

‘सीटी दूर बजै छै, एएर डिब्बा चढ़ैए’ प्रवासक तत्काल दृश्य बनबैत अछि। माय हाथ हिलब, टिकट कटब आ प्लेटफार्मपर नोरक छवि यात्राक सामाजिक दामकें शाब्दिक आँकड़ासँ बेसी असरदार ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि।

मुदा यात्राक आर्थिक कारण अथवा गन्तव्य नहि; श्रम-प्रवासक सामान्य अनुभव दिखैत अछि, कुनै विशिष्ट ऐतिहासिक घटना नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह; रदीफ “रेल चलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“सीटी साँझ बजै छै, प्लेटफार्म नोर धरैए / विदा स्वर उठै छै, आह रेल चलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०५ : दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०५ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“दीप कोन जरै छै, पाठक मौन बसैए / दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए”; मध्यक पाठ—“मौन कक्ष रहै छै, भीतर वाद चलैए / प्रश्न उत्तर माँगै छै, बुद्धि फेर जगैए” ।

‘धूल जिल्द धरै छै, हाथ स्नेह झाड़ैए’ पुस्तकालयक वस्तुगत अनुभव अछि । पाठक बदलैत छथि, पुस्तक बचल रहैत अछि, आ प्रत्येक पीढ़ी अर्थक एकटा नव परत जोड़ैत अछि ।

मुदा ग्रन्थक विशिष्ट बौद्धिक विवाद प्रस्तुत नहि, तँ पोथीकेँ सामाजिक स्मृतिरूपेँ पढ़ब ठीक, वास्तविक ग्रन्थ-इतिहासक दावामे परिवर्तित करब नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान, प्रमाण, गान; रदीफ “पन्ना खुलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“दीप धीरे घटै छै, आखर मोन बसैए / पुस्तक बन्द होइ छै, गान पन्ना खुलैए” । अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८०६ : डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०६ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“डाक पएर चलै छै, मोहर राह धरैए / डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए”; मध्यक पाठ—“पत्र प्रेम कहै छै, भार सेहो धरैए / वचन नाम जुड़ै छै, जिम्मा संग बढैए” ।

‘डाक पएर चलै छै, मोहर राह धरैए’ चिट्ठीक यात्रा देहधर्मी क्रियामे परिवर्तित अछि । माय नाम पढ़ैत छथि, बालक दौड़ि अबैत अछि—एहि घरेलू दृश्यसभमे प्रवासक दूरीक तात्कालिक असर भेटैत अछि ।

मुदा चिट्ठीक वास्तविक विषय वा ओकर सामाजिक प्रसङ्ग अज्ञात अछि। मूल काव्यक शक्ति पहुँचबाक दृश्य अछि, चिट्ठीक सम्पूर्ण कथा नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, द्वार, पार, तार, विचार, समाचार, पुकार; रदीफ “चिट्ठी पहुँचैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“कागज मोड़ खुलै छै, दूरी फेर घटैए / मोन आवाज सुनै छै, पुकार चिट्ठी पहुँचैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०७ : जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“जड़ि माटि पकड़ै छै, डार आकाश छुबैए / जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए”; मध्यक पाठ—“कुल्हाड़ी तेज चमकै छै, प्रश्न लोक उठैए / लाभ छोट लगै छै, काल भार कहैए”।

‘जड़ि गहिर धरै छै, डार आकाश छुबैए’ गाछक वर्तमान आ पुरान जड़िक बीच सम्बन्ध अछि। दादीक कथा सुनैत बालक, थाकल यात्रीक छाह पाबब, गाछकें साझा जीवन-स्थान बनवैत अछि।

मुदा पर्यावरणीय संरक्षणक नीतिगत प्रश्नसँ ई सजीव मानवीय चित्र अलग अछि। छाहक सहज देन सामुदायिकता संकेत करैत अछि, प्रशासनिक प्रमाण नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण मूल, फूल, धूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल; रदीफ “छाँह रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर पाखी गबै छै, गाछ सोर धरैए / जड़ि पात जोड़ै छै, अनुकूल छाँह रहैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०८ : माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“माटि हाथ नमै छै, जल कोमल करैए / माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए”; मध्यक पाठ—“घड़ा टूटि जाइ छै, माटि फेर मिलैए / नाश रूप कहै छै, मूल तइयो रहैए”।

‘माटि हाथ नमै छै, पएर चाक चलै छै’ कुम्हारक शिल्पक प्रत्यक्ष कामक रूप अछि। गुरु देखैत बालक भूल सुधारैत अछि; एतय परम्परा केवल स्मृति नहि, हस्तान्तरित कौशल बनैत अछि।

रचनाक विशिष्ट उपलब्धि ई सीखवाक दृश्य अछि। मुदा माटिक रूपसँ सामाजिक वर्गसंघर्षक सम्पूर्ण निष्कर्ष निकालब पाठ-साक्ष्यसँ अधिक होएत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, धूप, कूप, अनूप, भूप; रदीफ “चाक घुमैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“साँझ चाक थमै छै, माटि गन्ध उठैए / कारीगर माथ झुकै छै, भूप चाक घुमैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८०९ : पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८०९ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“पर्दा धीरे उठै छै, दीप चेहरा छुबैए / पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए”; मध्यक पाठ—“मंच सत्ता दिखै छै, हाशिया सोर उठैए / छूटल पात्र बोलै छै, इतिहास फेर खुलैए” ।

‘पर्दा धीरे उठै छै, दीप चेहरा छुबैए’ रंगमंचक आरम्भक स्पष्ट दृश्य अछि । वाद्यक ताल, अभिनेताक श्वास आ अन्तिम दृश्यक प्रश्न दर्शक-सम्बन्धक कलात्मक काज बनबैत अछि ।

मुदा कोन पात्रक नाटक, कोन निर्णयक दृश्य—ई निर्दिष्ट नहि । रंगमंचीय रूपक समृद्ध अछि, नाटक-विशेषक ऐतिहासिक समीक्षा नहि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, अंग, प्रसंग, तरंग, उमंग, ढंग; रदीफ “मंच धड़कैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“दीप धीरे बुझै छै, खाली ठाम बोलैए / दर्शक घर चलै छै, ढंग मंच धड़कैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८१० : आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१० मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“आँखि गोल चमकै छै, प्रश्न ओठ चढ़ैए / आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए”; मध्यक पाठ—“जात नाम सुनै छै, भेद मोन अटकैए / समान खेल कहै छै, लोक किएक बाँटैए” ।

‘आँखि गोल चमकै छै, प्रश्न ओठ चढ़ैए’ बाल-जिज्ञासाक सजीव बिम्ब अछि । तारा गननाइ, मायसँ कथा सुननाइ, आ पीढ़ी दर पीढ़ी भाषाक अर्थ बदलनाइ बालककें निष्क्रिय श्रोता नहि, नब अर्थक निर्माता बनबैत अछि ।

मुदा बालकक प्रश्नक वास्तविक शब्द स्पष्ट नहि; एहिसँ जनमल उत्तरक जटिलता पाठकक कल्पनापर छोड़ल गेल अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, सोर, डोर, छोर, जोर, कोर; रदीफ “बालक पूछैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“राति दीप बुझै छै, प्रश्न तइयो जगैए / सपना रूप धरै छै, कोर बालक पूछैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८११ : केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८११ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“केश धीर बदलै छै, चाल तनिक घटैए / केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए”; मध्यक पाठ—“मीत नाम घटै छै, फोन मौन रहैए / पुरना गीत उठै छै, आँखि नोर धरैए”।

‘केश धीर बदलै छै, चाल तनिक घटैए’ उमेरक परिवर्तनकें देहक साधारण दृश्यसँ शुरू करैत अछि। हाथसँ हाथ मिलबाक आ मौन भरोस देबाक भाव वृद्धावस्थाक अनुभवकें अकेलापन मात्र नहि, सम्बन्धक पुनर्निर्माणक रूप दैत अछि।

मुदा उमेर ढलबाक अनुभव कोन परिवारक, कोन सम्बन्धक—विशेष पात्र नहि। वृद्धावस्थाक सार्वभौम रूपक प्रभावी अछि, विशिष्ट जीवन-कथा नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ास”, उदाहरण श्वास, आस, निवास, प्रयास, आभास, इतिहास, विश्वास; रदीफ “उमिर ढलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हाथ हाथ मिलै छै, मौन भरोस दैए / अन्त प्रश्न रहै छै, विश्वास उमिर ढलैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१२ : नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नाव नीर उतरै छै, चप्पू ताल धरैए / नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए”; मध्यक पाठ—“परिजन पार रहै छै, पर्व याद जगैए / गीत हवा लाँचै छै, मन दूरी घटैए”।

‘नाव नीर उतरै छै, चप्पू ताल धरैए’ नदी पार करबाक क्रियाक ठोस चित्र अछि। ‘धार सीमा काटैए’कें राज्य-सीमाक दावे नहि, जलक गतिशील बन्धन आ मनुष्यक बाटक प्रतीक रूपमे पढ़ल उचित अछि।

‘द्वार सीमा काटैए’क वाक्य अर्थमे किछु अस्पष्टता रहैत अछि। नदी-आ-नावक वर्णन सुन्दर अछि, मुदा सामाजिक सीमाक प्रश्न केनहुँ घटनामे नहि खुलैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण धार, पार, भार, आधार, पुकार, विचार, द्वार; रदीफ “सीमा काटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर घाट खुलै छै, नाव पएर भरैए / लोक हाथ मिलै छै, द्वार सीमा काटैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१३ : काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“काठ रेखा जागै छै, छेनी सोर करैए / काठ रेखा

जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए”; मध्यक पाठ—“दोष सूक्ष्म रहै छै, आँखि फेर पकड़ैए / सुधार हाथ करै छै, रूप मान पवैए” ।

‘काठ रेखा जागै छै, छेनी सोर करैए’ मूर्तिकार अथवा बढइक प्रत्यक्ष श्रमक चित्र अछि। गुरु शिष्य बनबाक उलटबदल पीढ़ीक सहकौशल आ कारीगरीक नवता दर्शबैत अछि।

मुदा ‘प्रताप हाथ गढ़ैए’क तुक-समर्थित वाक्य अर्थ-स्पष्टता घटबैत अछि। छेनी, छाप आ काठक वास्तविक काज ई गजलक प्रधान उपलब्धि अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण छाप, माप, थाप, ताप, आलाप, संताप, प्रताप; रदीफ “हाथ गढ़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“शिष्य गुरु बनै छै, ढंग फेर बदलैए / कौशल पीढ़ी चलै छै, प्रताप हाथ गढ़ैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१४ : मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मेह राति पड़ै छै, टप टप सुनैए / मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए”; मध्यक पाठ—“धान मेह पिबै छै, किसान आस धरैए / बेसी नीर पड़ै छै, खेत संकट कहैए” ।

‘मेह राति पड़ै छै, टप टप सुनैए’ ध्वन्यात्मक आरम्भ अछि। छप्परपर पड़ैत मेहकें नेहक धुन बनबैत कविता घरक सम्बन्ध आ ऋतुक निकटता अनुभव करबैत अछि।

मुदा ‘उमेह’ जकाँ अन्त्य-पदक भाषिक स्वाभाविकता प्रश्नाकुल अछि; रदीफ पूरा करबाक प्रयत्न लोकप्रयुक्त मैथिलीकें असहज नहि बनाबय।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, उमेह; रदीफ “छप्पर बजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“पाखी डार झाड़ै छै, नीर मोती बनैए / गाम साँस बढै छै, उमेह छप्पर बजैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१५ : रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रोटी हाथ बाँटै छै, दाल गन्ध उठैए / रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए”; मध्यक पाठ—“काज बाँटि चलै छै, रसोई श्रम नुकैए / सेवा नाम नुकै छै, देह ताप सहैए”।

‘रोटी हाथ बाँटै छै, दालि गन्ध उठैए’ भोजनक साझेदारीक संवेदनशील दृश्य अछि। एक थारी लग बैसबाक क्रिया आ मँजीराक धीम ताल लोक-सामुदायिकता बनबैत अछि।

मुदा भोजनक साझा राजनीति, भेदभाव वा श्रमक कथा विस्तार नहि पबैत। ई गजल गन्ध, स्पर्श आ ध्वनिक लघु चित्रक रूपमे बेसी सफल अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-द”, उदाहरण स्वाद, संवाद, प्रसाद, अनुवाद, विवाद, अवसाद, नाद; रदीफ “थारी जुड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“गीत धीमे उठै छै, मँजीरा ताल धरैए / भोजन लोक जोड़ै छै, नाद थारी जुड़ैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१६ : गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१६ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“गवाही स्वर उठै छै, कक्ष मौन धरैए / गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए”; मध्यक पाठ—“कानून शब्द रहै छै, प्रसंग अर्थ बदलैए / तात्पर्य फेर जँचै छै, निर्णय धीरे बनैए” ।

‘गवाही स्वर उठै छै, कक्ष मौन धरैए’ न्यायालयक नाटकीय वातावरण तुरन्त बनबैत अछि । प्रश्न बचल रहबाक अर्थ फैसला भऽ गेलापर सत्य-जाँचक नैतिक प्रक्रिया समाप्त नहि होइत, ई संकेत अछि ।

मुदा ककर गवाही, कोन अपराध, कोन साक्ष्य निर्णायक—ई तथ्य नहि । कानूनी निष्कर्षक स्थानपर काव्यमय प्रमाण-विवेक अछि; तकर सीमाकेँ स्पष्ट रखब आवश्यक ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण प्रमाण, विधान, अनुमान, निदान, ध्यान, मान, ज्ञान; रदीफ “न्याय तौलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“कक्ष खाली होइ छै, प्रश्न तइयो बचैए / न्याय सीखि चलै छै, ज्ञान न्याय तौलैए” । अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८१७ : स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१७ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“स्वप्न रूप बदलै छै, देह शय्या रहैए / स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए”; मध्यक पाठ—“नाम पाछाँ जुडै छै, पहिल रूप दिसैए / अवधारणा फेर बनै छै, बोध साफ खुलैए” ।

‘स्वप्न रूप बदलै छै, देह शय्या रहैए’ स्वप्नक गति आ देहक अचलताक बीच सुन्दर विरुद्धस्थिति अछि। भोरक पाखी आ चलैत पएर स्वप्नकें जागल व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।

मुदा ‘भूप भोर जगबैए’क तुक-आधारित प्रयोगक अर्थ स्पष्ट नहि। काव्यक विषय स्वप्नसँ कर्मक दिशा अछि, राजसत्ता वा भूपक निश्चित कथा नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ूप”, उदाहरण रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, धूप, कूप, अनूप, भूप; रदीफ “भोर जगबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर पाखी गबै छै, स्वप्न छाँह सैरैए / जागल पएर चलै छै, भूप भोर जगबैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१८ : बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“बत्ती राति जरै छै, दुकान द्वार खुलैए / बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए”; मध्यक पाठ—“ऐप राह बतै छै, पएर तइयो चलैए / यंत्र दिशा दै छै, निर्णय मनुख करैए”।

‘बत्ती राति जरै छै, दुकान द्वार खुलैए’ नगरक रात्रि-जीवनक दृश्य अछि। रातिक सफाई करैत हाथक उल्लेख नगरकें केवल इजोत आ व्यापारक नहि, अदृश्य श्रमक शहर बनबैत अछि।

मुदा श्रमिकक निज आवाज वा विशिष्ट काजक परिस्थितिक विस्तार अल्प। नगरक समाजशास्त्रीय इतिहास बनाय देने ई लघु दृश्य अधिकाधिक प्रभावी होइत, मुदा मूल पाठ ओ सीमा नहि लाँघैत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, नोर, भोर,

छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “नगर जागैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“राति धीरे ढलै छै, सफाई हाथ चलैए / दिन सोझाँ अबै छै, कोर नगर जागैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८१९ : आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८१९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“आखर पात सजै छै, हाथ रेखा खींचैए / आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए”; मध्यक पाठ—“बड़ भाषा छबै छै, छोट आखर नुकैए / ज्ञान हाशिया जाइ छै, न्याय प्रश्न उठैए”।

‘आखर पात सजै छै, हाथ रेखा खींचैए’ लिपिकेँ श्रम आ अभ्यासक जीवित प्रक्रिया बनबैत अछि। भविष्यक बालक पढ़ैत अछि, पुरखा स्वर सुनाइत अछि—एहि द्विकालिकता लिपि-संरक्षणक नैतिक अर्थ देत।

मुदा कोन लिपि, ओकर विशेष अक्षर वा दस्तावेज, ई वर्णित नहि। पाँतिसभ भाषा-संरक्षणक कवितामय आग्रह अछि, लिपिवैज्ञानिक दस्तावेज नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-मेल”, उदाहरण बोल, मोल, खोल, डोल, तोल, झोल, गोल; रदीफ “लिपि बचैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भविष्य बालक पढ़ै छै, पुरखा सोर सुनैए / काल चक्र घुमै छै, गोल लिपि बचैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२० : चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२० मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“चिता शान्त पड़ै छै, धुआँ आकाश चढ़ैए / चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए”; मध्यक पाठ—“सम्पत्ति सूची बनै छै, सम्बन्ध फेर जँचैए / अधिकार प्रश्न उठै छै, न्याय द्वार खोलैए” ।

‘चिता शान्त पड़ै छै, धुआँ आकाश चढ़ैए’ मृत्यु-पछातिक शोकक स्पष्ट आरम्भ अछि । फूल आ राखक सह-अस्तित्व मृत्युकें मेटब नहि, ओकर स्मृतिक संग नव दिन बितायब सिखबैत अछि ।

मुदा ‘अनुकूल राख बोलैए’क अर्थ स्वाभाविक नहि; मृत्यु-पछातिक सान्त्वना केनहुँ बलपूर्वक निष्कर्ष बनि जाइत अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ूल”, उदाहरण फूल, धूल, मूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल; रदीफ “राख बोलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“भोर पात चमकै छै, शोक संग रहैए / नव दिन उगै छै, अनुकूल राख बोलैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८०१-८२० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि । शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमैं दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि ।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
-----	--------------------------------	----------------------------

८०१ : दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए	— / —	—
८०२ : मेह राति बढै छै, धार कूल बनैए	— / —	—
८०३ : रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए	— / —	—
८०४ : सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए	— / —	—
८०५ : दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए	— / —	—
८०६ : डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए	— / —	—
८०७ : जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए	— / —	—
८०८ : माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए	— / —	—
८०९ : पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए	— / —	—
८१० : आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए	— / —	—
८११ : केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए	— / —	—
८१२ : नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए	— / —	—
८१३ : काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढैए	— / —	—
८१४ : मेह राति पडै छै,	— / —	—

नेह छप्पर बजैए		
८१५ : रोटी हाथ बाँटे छै, स्वाद थारी जुड़ैए	— / —	—
८१६ : गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए	— / —	—
८१७ : स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए	— / —	—
८१८ : बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए	— / —	—
८१९ : आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए	— / —	—
८२० : चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए	— / —	—

गजल ८२१ : दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“दू हाथ मिलै छै, परिवार सोर उठैए / दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए”; मध्यक पाठ—“मत भिन्न उठै छै, संवाद राह खोलैए / मौन दण्ड बनै छै, दूरी बेसी बढैए” ।

‘दू हाथ मिलै छै, परिवार सोर उठैए’ सम्बन्धक सार्वजनिक मान्यता आ व्यक्तिगत साझेदारीक दृश्य अछि । उमेर ढललापर हाथ तइयो मिलैत रहब अनुबन्धक दीर्घकालक संकेत दैत अछि ।

मुदा बन्धनक परस्पर सहमति वा स्वतंत्र निर्णयक जटिलता नाटकीय रूपमे नहि देखाइत । स्नेहक भाव प्रबल, पात्रक मनोविकास अल्प ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, उमेह; रदीफ “बंधन जँचैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद

घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“उमिर साथ ढलै छै, हाथ तइयो मिलैए / मित्रता गहिर बनै छै, उमेह बंधन जँचैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२२ : ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“ट्रेन गाम छोड़ै छै, शहर नाम पुकारैए / ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए”; मध्यक पाठ—“गाम बाजार बदलै छै, दाम रूप बदलैए / बाहर आँखि कहै छै, भीतर लोक समझैए”।

‘ट्रेन गाम छोड़ै छै, शहर नाम पुकारैए’ गाम-नगरक दू दिशाक जीवित दृश्य अछि। माय द्वार लग ठाढ़ छथि, सीटी उठैत अछि; आवाज प्रवासी आ घरक बीच खिंचल डोर बनैत अछि।

‘द्वार पएर घुरैए’क व्याकरणिक कर्ता अनिश्चित अछि—ककर पएर घुरैत अछि? गजलक शिल्पक बल ट्रेनक ध्वनि आ मायिक दृष्टिमे अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण द्वार, पार, भार, आधार, विचार, समाचार, पुकार; रदीफ “पएर घुरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“माय द्वार तकै छै, ट्रेन सीटी दैए / नोर आवाज उठै छै, पुकार पएर घुरैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२३ : घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२३ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“घंटी भोर बजै छै, बालक पाँति बनैए / घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए”; मध्यक पाठ—“कमजोर आँखि कहै छै, आगे सीट चाहैए / सुविधा राह बनै छै, सीख बराबर बढ़ैए” ।

‘घंटी भोर बजै छै, बालक पाँति बनैए’ विद्यालयक आरम्भक दृश्य अछि । पाठ आ छुट्टीक दूटा ध्वनि शिक्षा केँ अनुशासन आ उन्मुक्त बालजीवनक बीच राखैत अछि ।

मुदा ज्ञानक उपलब्धि केनहुँ पाठ-वस्तु अथवा बालकक प्रश्नसँ नहि देखाओल गेल; कक्षा वातावरणक संकेत बेसी ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान, प्रमाण, गान; रदीफ “कक्षा जागैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“छुट्टी सोर उठै छै, पएर बाहर दौड़ैए / दिन पाठ रहै छै, गान कक्षा जागैए” । अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८२४ : पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२४ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“पीर धीरे कहै छै, मोन ठाम बनैए / पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए”; मध्यक पाठ—“डर रोग बढ़बै छै, भरोस श्वास सम्हरैए / बात साफ कहै छै, सहमति मान बचैए” ।

‘पीर धीरे कहै छै, मोन ठाम बनैए’ पीडाकेँ जगह देबाक करुणामय विचार अछि । ‘भेद देह सुनैए’ शरीरक अनुभव आ सामाजिक विभेद दुनूक सम्भावना खोलैत अछि ।

किन्तु वेद/खेद/छेदक अन्त्यानुप्रास सामाजिक भेदक विशिष्ट रूप स्पष्ट नहि करैत; ई सीमा रचनाक समग्र निर्णायक पाठमे स्वीकार करनी चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ेद”, उदाहरण भेद, वेद, खेद, छेद, अभेद, निषेध, विभेद; रदीफ “देह सुनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“पीर घटि जाइ छै, जीवन रंग पबैए / मनुख भेद रहै छै, विभेद देह सुनैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२५ : पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पएर माथ रुकै छै, नजर दूर चलैए / पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए”; मध्यक पाठ—“मत भिन्न रहै छै, संवाद तइयो चलैए / प्रतिपक्ष हाथ मिलै छै, जीत मान बचैए”।

‘पएर माथ रुकै छै, नजर दूर चलैए’ देहक स्थिरता आ कल्पनाक यात्राक द्वन्द्व रचैत अछि। आकाशक पार खुलबाक रूपक कठिन चढाई केनहुँ ज्ञानान्वेषणसँ जोड़ैत अछि।

मुदा ऊँच पहाड़क वास्तविक दृश्य कम; पठन, दीप आ आधारक विमर्शक संग शारीरिक यात्राक सम्बन्ध अधूर।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण पार, सार, द्वार, धार, तार, विस्तार, आधार; रदीफ “आकाश खुलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दीप धीरे जैरै छै, पाठक साँस धरैए / अन्त राह मुडै छै, आधार आकाश खुलैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२६ : घड़ी भोर बजै छै, काल फेर सरकै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“घड़ी भोर बजै छै, लोक काल गिनैए / काल फेर सरकै छै, मान घड़ी बोलैए”; मध्यक पाठ—“पीर राति लम्बै छै, नींद दूर रहै / सुख क्षण छोटै छै, मोन याद धरै”।

‘घड़ी भोर बजै छै, लोक काल गिनैए’ समय मापवाक उपकरण आ मनुष्यक अनुभव बीच अन्तर रचैत अछि। बीतल दिन जुडैत अछि, मुदा पहिचान केवल गिनती बनि नहि रहैत।

मुदा घड़ीक संख्या व सामाजिक समयक भिन्नता ककरा असर करैत, कोनो उदाहरण नहि। कविताक आकर्षण उपकरणक ध्वनि आ गामक समय-स्मृतिमे अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, निदान, प्रमाण, पहिचान; रदीफ “घड़ी बोलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“साँझ घण्टा बजै छै, मोन घर तकै / बीते दिन जुडै छै, पहिचान घड़ी बोलैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२७ : धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“धान बीज सुकै छै, हाथ दाना छानै / अगिला

ऋतु टिकै छै, सार कोठार बचैए”; मध्यक पाठ—“एक जाति घटै छै, जोखिम गाम बढै / विविध बीज रहै छै, ऋतु मार सहै”।

‘धान बीज सुकै छै, हाथ दाना छानै’ कृषि-चक्रक व्यवहारिक सावधानीक चित्र अछि। कोठार बचा कऽ अगिला ऋतु लेल बीया रखब, वर्तमान उपभोग आ भविष्यमुखी जिम्मेवारीक सन्तुलन बनबैत अछि।

किन्तु बीया, अन्न आ भुखमरीक वास्तविक बाँट-नीति कविता विस्तारसँ नहि देत; ई माटि-आ-कोठारक सूक्ष्म श्रम-दृश्य अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार; रदीफ “कोठार बचैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“कोठार द्वार खुलै छै, गाम श्वास लैए / भूख सोर उठै छै, पुकार कोठार बचैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२८ : दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै / आँखि फेर रुकै छै, नोर दर्पण देखैए”; मध्यक पाठ—“छवि उलटि दिसै छै, हाथ तइयो चलै / दिशा भेद खुलै छै, बुद्धि राह धरै”।

‘दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै’ अएना आ उमेरक चिन्हसँ आत्मस्मृतिक काव्य बनैत अछि। काँचक स्थिर प्रतिबिम्ब आ बदलैत चेहराक अन्तर जीवनक समयकें दृश्यमान बनबैत अछि।

मुदा ‘नोर दर्पण देखैए’क कर्तृत्व प्रतीकात्मक रूपेँ सम्भव, वास्तविक क्रिया रूपेँ नहि। भाव-स्पष्टताक लेल एहि भेदकें पाठक समझ पर छोड़ल गेल अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर,
भोर, छोर, जोर, कोर; रदीफ “दर्पण देखैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-
पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर फेर उगै छै, काँच प्रकाश धरै / जीवन रेखा टिकै छै, कोर
दर्पण देखैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत
निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा
ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२९ : तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८२९ मे १२ मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै / हाथ लय धरै
छै, गीत करघा गबैए”; मध्यक पाठ—“सूता टूटि जाइ छै, काज क्षण रुकै / गाँठ
फेर बँधै छै, चाल पुनः चलै”।

‘तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै’ करघाक तकनीकी क्रियाक प्रभावी दृश्य अछि।
गीत आ श्रमक ताल मिलि कापड़क रूप बनेत; कौशलक सामाजिक सम्मानक
प्रश्न सहज भावमे उठैत अछि।

मुदा बुनकरक आर्थिक संकट अथवा जातिगत पेशाक प्रश्न मूल रचनाक पाठसँ
स्वतः सिद्ध नहि; शिल्पक मूर्त दृश्य स्वयमँ प्रमुख उपलब्धि अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, रीत, प्रीत,
मीत, जीत, अतीत, विनीत; रदीफ “करघा गबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“कपड़ा मोड़ बनै छै, श्रम मान रहै / स्वर धीरे नमै छै, विनीत
करघा गबैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत

निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३० : ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“ढोल दूर बजै छै, बालक पएर दौडै / रंग झण्डा लहरै छै, आस मेला हँसैए”; मध्यक पाठ—“भिन्न बोल सुनै छै, गाम लोक मिलै / नाम रीत बदलै छै, नेह दूरी घटै”।

‘ढोल दूर बजै छै, बालक पएर दौडै’ मेला आ लोकउत्सवक सजीव क्षण अछि। झण्डाक रंग, उडैत धूरि आ बचल रातिक आभास उत्सवकें दृश्य, ध्वनि आ समयक मेल बनबैत अछि।

मुदा आयोजनक स्थान, रीति वा लोकसंगीतक मूल धुन नहि; काव्य एक सामान्य मेलाक दृश्य रचैत अछि, विशेष सांस्कृतिक अभिलेख नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, निवास, प्रकाश, आभास; रदीफ “मेला हँसैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर धूल उडै छै, रंग मोन रहै / बीते राति बचै छै, आभास मेला हँसैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३१ : पएर ढलान चढै छै, कुहरा दूर सरै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३१ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पएर ढलान चढै छै, श्वास ताल धरै / कुहरा दूर सरै छै, राह पहाड बोलैए”; मध्यक पाठ—“हिम धूप गलै छै, झरना रूप बदलै / काल ऋतु चक्रै छै, गाम जल पवै”।

‘पएर ढलान चढै छै, श्वास ताल धरै’ देहक श्रमकेँ आरोहणक लय बनबैत अछि। कुहराक सरब आ चोटीपर मौन रहब यात्रा केवल लक्ष्य पाबब नहि, देहक सीमा बुझबाक प्रक्रिया बनबैत अछि।

मुदा पहाड़क भौगोलिक पहिचान वा बाह्य यात्राक दावा नहि; काव्यक दृश्य बोधात्मक अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह; रदीफ “पहाड़ बोलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“राति तारा उगै छै, चोटी मौन रहै / हृदय श्वास नमै छै, आह पहाड़ बोलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३२ : मधुमाछि भोर उडै छै, फूल गन्ध खोजै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“मधुमाछि भोर उडै छै, फूल गन्ध खोजै / पंख सोर मिलै छै, मूल छत्ता बजैए”; मध्यक पाठ—“छत्ता षट्कोण बनै छै, मोम दीवार जुडै / रूप क्रम दिसै छै, कार्य संग मिलै”।

‘मधुमाछि भोर उडै छै, फूल गन्ध खोजै’ जीवन-जगतक परस्पर निर्भरता देखबैत अछि। छत्ता आ फूलक सम्बन्ध ऋतुचक्र, श्रमक संगठन आ फूलक गन्धक दृश्य बनबैत अछि।

परागणक वैज्ञानिक विश्लेषण एहि काव्यक पाठमे विस्तारसँ नहि; मधुमाछिक व्यवहारक रूपकेँ बगैर बाह्य स्रोतक वैज्ञानिक प्रतिवेदन नहि बनायब।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण मूल, फूल, धूल,

कूल, शूल, भूल, अनुकूल; रदीफ “छत्ता बजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“फूल ऋतु घुरै छै, पंख फेर उड़ै / जगत मेल बनै छै, अनुकूल छत्ता बजैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३३ : चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै / आकाश रूप बदलै छै, रंग चन्द्र ढकैए”; मध्यक पाठ—“छाया धीरे सरकै छै, चन्द्र फेर खुलै / क्षण भय घटे छै, मोन शान्त होइ”।

‘चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै’ प्रकाश आ अन्हारक बदलैत कोण देखबैत अछि। चान पूर्ण दिखबापर मनक प्रश्न बचल रहब विज्ञान आ अनुभवक दोसर-दोसर स्तर अछि।

मुदा चन्द्रक कला अथवा छाँहक गतिक वास्तविक खगोलीय विवरण नहि। कविता जिज्ञासाक संकेत अछि, खगोल-पाठ नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, ढंग, संग, अंग, तरंग, प्रसंग, उमंग; रदीफ “चन्द्र ढकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“चन्द्र पूर्ण दिसै छै, मोन प्रश्न रहै / भय ज्ञान बदलै छै, उमंग चन्द्र ढकैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३४ : पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३४ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै / पएर दिन चलै छै, मेल पुल थामैए”; मध्यक पाठ—“बाढ़ नीर चढ़ै छै, खम्भा धक्का सहै / धरती नींव खिसकै छै, कारण फेर खुलै” ।

‘पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै’ आवागमनक सार्वजनिक वस्तुकेँ सामाजिक मेलक प्रतीक बनबैत अछि । पएरक दिनभरि चलब सीमा-संरचनाकेँ मनुष्यक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि ।

किन्तु पुलक निर्माण, खर्च वा लाभक असमान वितरण मूल पाठमे नहि; ‘जेल पुल थामैए’ जकाँ अन्त्यशब्दक अर्थ अस्पष्ट अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ेल”, उदाहरण मेल, खेल, बेल, तेल, रेल, भेल, जेल; रदीफ “पुल थामैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“पएर फेर चलै छै, दू कूल मिलै / सीमा मन टूटै छै, जेल पुल थामैए” । अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८३५ : सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढ़ै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३५ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“सीसा टाइप सजै छै, हाथ पाँति गिनै / स्याही रोल चढ़ै छै, छाप अक्षर छपैए”; मध्यक पाठ—“समाचार तेज फैलै छै, साँच तइयो जँचै / मुद्रित रूप रहै छै, प्रमाण फेर जँचै” ।

‘सीसा टाइप सजै छै, हाथ पाँति गिनै’ छपाखानाक कामक ठोस दृश्य अछि । स्याहीक रोल, गड्डीक बाँधनाइ आ डाकसँ वितरित अक्षर साहित्यकेँ श्रम आ तकनीकक सह-निर्माण बनबैत अछि ।

मुदा छापाखानाक वास्तविक इतिहास वा विशेष संस्करणक सूचना नहि; जे उपलब्ध अछि से मुद्रणक काव्यात्मक कार्य-प्रक्रिया अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधार्श स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण छाप, माप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप; रदीफ “अक्षर छपैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर गड्डी बँधै छै, डाक राह धरै / लोक विचार बढै छै, प्रताप अक्षर छपैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३६ : रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“रेडियो भोर बजै छै, घर सोर भरै / दूर स्वर अबै छै, बोल रेडियो सुनैए”; मध्यक पाठ—“आपदा खबर अबै छै, लोक राह बदलै / समय सूचना मिलै छै, जीवन जोखिम घटै”।

‘रेडियो भोर बजै छै, घर सोर भरै’ आँगनमे दूर स्वरक आगमन देखबैत अछि। नाँव घुमब, संसारक स्वर मिलब, तकनीककेँ घरक भीतरक लोकसम्बन्धमे बदलबैत अछि।

मुदा कोन प्रसारण वा ऐतिहासिक समय, एकर पुष्टि नहि; रेडियो सामान्य सामाजिक स्मृतिक वस्तु बनल अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधार्श स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण बोल, डोल, मोल, खोल, गोल, झोल, तोल; रदीफ “रेडियो सुनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर फेर अबै छै, नाँव हाथ घुमै / दुनिया स्वर मिलै छै, तोल रेडियो सुनैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३७ : पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै / पीढ़ी नाम पूछै छै, भाव फोटो जगबैए”; मध्यक पाठ—“फोटो कटि सकै छै, सन्दर्भ तइयो बदलै / दाबी तेज फैलै छै, इतिहास रूप बिगडै”।

‘पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै’ दृश्य-अभिलेखक मार्मिक क्षण अछि। नव पीढ़ी पुरखा नाम पूछैत अछि; तस्वीर स्मृतिद्वारा पीढ़ीक दूरी घटबैत अछि।

मुदा फोटो वास्तविक पहिचानक सम्पूर्ण प्रमाण नहि—कोन काल, कोन व्यक्ति, कोन संदर्भ, ई अनुल्लिखित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण भाव, चाव, नाव, ठाव, घाव, प्रभाव, स्वभाव; रदीफ “फोटो जगबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नव पीढ़ी तकै छै, पुरखा नाम सीखै / स्मृति रीत बनै छै, स्वभाव फोटो जगबैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३८ : ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३८ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“ताला द्वार लटकै छै, घर मौन रहै / हाथ धातु घुमै छै, जाल चाभी खुलैए”; मध्यक पाठ—“पुरना ताला जामै छै, तेल थोडा पडै / रोक धीरे हटै छै, द्वार फेर चलै”।

‘ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै’ घरेलू वस्तुकेँ समयक चिह्न बनबैत अछि। भोरमे ताला खुलिते दिनक काज जागनाइ श्रमक आरम्भक चित्र अछि। मुदा ‘जाल चाभी खुलैए’ सन अन्त्यपदक भाषिक सङ्गति प्रश्न उठबैत अछि; ताला-चाबी रूपक अधिक स्वाभाविक मैथिली अभिव्यक्ति माँगैत अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण जाल, चाल, काल, ताल, पाल, माल, लाल; रदीफ “चाभी खुलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“भोर ताला खुलै छै, दिन काज जगै / पहिल किरण पड़ै छै, लाल चाभी खुलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८३९ : सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८३९ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“सूखल पात सरसरै छै, हवा गरम बहै / चिनगी छोट उठै छै, नीर जंगल जरैए”; मध्यक पाठ—“आगि पाछाँ रहै छै, राख माटि ढकै / बीज किछु बचै छै, ऋतु फेर जगै”।

‘सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै’ वनागिक आरम्भक सटीक दृश्य अछि। आगिक पाछाँ राख, नव पात आ धरतीक घावक संग विनाश आ पुनर्जन्मक दू समय रचैत अछि।

मुदा वनागिक कारण, बचाव अथवा पारिस्थितिक तथ्य एहि कविताक भीतर स्पष्ट नहि; काव्यगत बिम्ब आ वैज्ञानिक दावा अलग राखब चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीर”, उदाहरण नीर, पीर, धीर, तीर, भीर, समीर, शरीर; रदीफ “जंगल जरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नव पात उगै छै, राख तइयो यादै / धरती घाव भैरै छै, शरीर जंगल जरैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४० : नहर खेत मुडै छै, नीर रेखा चलै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“नहर खेत मुडै छै, नीर रेखा चलै / धान प्यास घटै छै, उपाय नहर बहैए”; मध्यक पाठ—“मेह कम पडै छै, नीर मोल बढ़ै / फसल चयन बदलै छै, किसान जोखिम तौलै”।

‘नहर खेत मुडै छै, नीर रेखा चलै’ सिंचाइक सहज रूपक अछि। साझा श्रम आ धानक प्यास घटनाक सामाजिक-आर्थिक अर्थ खोलैत अछि।

मुदा पानिक न्यायपूर्ण वितरण, किनारीक किसानक स्थिति अथवा नहरक प्रामाणिक परियोजनाक साक्ष्य नहि; पाठमे सिंचाइक आशा अछि, योजनागत प्रतिवेदन नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाय”, उदाहरण उपाय, सहाय, न्याय, अध्याय, आशय, विनय, समुदाय; रदीफ “नहर बहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नीर पालि चलै छै, खेत हरियर होइ / साझा श्रम जुडै छै, समुदाय नहर बहैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८२१-८४० : तुलनात्मक परीक्षण

एहि बीस गजलक रदीफ-समूहक दोहरावकें केवल रचनासंख्या नहि, मूल पहिल-मिसराक प्रत्यक्ष साम्य आ घोषित काफियाक अनुपालनसँ परखल गेल अछि। शब्दगत पुनरावर्तन स्वयमें दोष नहि; मुदा नव रचनाक साहित्यिक उपलब्धि लेल अलग दृश्य, तर्क वा भाव-विकास अपेक्षित अछि।

गजल	समीक्षाक निर्णायक अन्त्य-पद	काफिया-सूचीक भिन्न शब्द
८२१ : दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए	— / —	—
८२२ : ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए	— / —	—
८२३ : घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए	— / —	—
८२४ : पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए	— / —	—
८२५ : पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए	— / —	—
८२६ : घड़ी भोर बजै छै, काल फेर सरकै	— / —	—
८२७ : धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै	— / —	—
८२८ : दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै	— / —	—
८२९ : तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै	— / —	—
८३० : ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै	— / —	—
८३१ : पएर ढलान चढ़ै	— / —	—

छै, कुहरा दूर सरै		
८३२ : मधुमाछि भोर उडै छै, फूल गन्ध खोजै	— / —	—
८३३ : चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढै	— / —	—
८३४ : पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुडै	— / —	—
८३५ : सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढै	— / —	—
८३६ : रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै	— / —	—
८३७ : पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै	— / —	—
८३८ : ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै	— / —	—
८३९ : सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै	— / —	—
८४० : नहर खेत मुडै छै, नीर रेखा चलै	— / —	—

गजल ८४१ : पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४१ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै / पुरखा स्वर बचै छै, नाम पत्थर कहैए”; मध्यक पाठ—“एक अक्षर टूटै छै, अर्थ दू बनै / विद्वान मत धरै छै, दाबी फेर जँचै” ।

‘पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै’ शिलालेखक नश्वर टिकावक दृश्य अछि । अक्षर घिसला परो पुरखा स्वरक अर्थ नव पाठकक व्याख्यासँ बदलैत अछि ।

मुदा कोन शिलालेख आ कोन काल, ई ननिर्दिष्ट; काव्य अभिलेख-स्मृतिक विषय अछि, पुरातात्त्विक स्रोत नहि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, गाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, आयाम; रदीफ “पत्थर कहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नव पाठक अबै छै, पुरना प्रश्न जगै / इतिहास गहिर खुलै छै, आयाम पत्थर कहैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४२ : बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४२ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै / ऊँच डार बनै छै, आकार बाँस झुकैए”; मध्यक पाठ—“बाँस झुरमुट बढै छै, पाखी घर बनै / माटि कटाव घटै छै, नीर राह बचै”।

‘बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै’ लचीलापन आ स्थिर मूलक विरोधाभास रचैत अछि। हवा सँ झुकैत बाँसक सहनशक्ति मनुष्यक स्वीकार आ अनुकूलनक रूपक बनैत अछि।

मुदा मानवीय जीवनक कौन काज बाँसक लचकसँ मेल खाइत, तकर स्पष्ट उदाहरण नहि। दृश्य प्राथमिक शक्ति अछि, नीति सम्भावना।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण आकार, प्रकार, संस्कार, विस्तार, संसार, अधिकार, स्वीकार; रदीफ “बाँस झुकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“हवा फेर चलै छै, झुरमुट सोर उठै / लचक मोन सीखै छै, स्वीकार बाँस झुकैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४३ : पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४३ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै / आकाश नील भैरै छै, सुवास पतंग उडैए”; मध्यक पाठ—“पाखी राह कटै छै, काँच डोर दुखै / खेल हानि बनै छै, नैतिक प्रश्न उठै”।

‘पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै’ बालजगतक वस्तुगत अनुभव अछि। उड़ान आ डोरक सन्तुलन स्वतन्त्रता आ सम्बन्धक महीन चित्र बनबैत अछि।

मुदा तुक लेल ‘सुवास पतंग उडैए’क अर्थ अनावश्यक अस्पष्ट अछि; पतंगक दृश्य अपनै पर्याप्त प्रभावकारी।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण सुवास, मिठास, विकास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, आभास; रदीफ “पतंग उडैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“कागज मोड़ रहै छै, आकाश याद धरै / उड़ान मोन बचै छै, आभास पतंग उडैए”। अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४४ : चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४४ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै / भात भाप उठै छै, सुवास धुआँ उठैए”; मध्यक पाठ—“रसोई श्रम नुकै छै, थारी सजि जाइ / खेनिहार प्रशंसा करै छै, पकौनिहार नाम नुकै”।

‘चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै’ घरक दैनिक श्रमक सुगन्धपूर्ण दृश्य अछि। भातक भाप, धुआँ आ रीतक पुनरागमन घरेलू समयकेँ एकटा सामूहिक अनुभव बनबैत अछि।

मुदा रसोइ बनाबयवालाक श्रम/स्त्री-अनुभव स्वतंत्र स्वरमे नहि आएल; केवल भोजनक सुगन्ध सँ सामाजिक काजक पूर्ण मूल्यांकन नहि होइत।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण सुवास, मिठास, आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, आभास; रदीफ “धुआँ उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“अगिला भोर अबै छै, आगि फेर जरै / जीवन रीत बचै छै, आभास धुआँ उठैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४५ : राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४५ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै / यात्री माथ उठै छै, काल तारा दिखैए”; मध्यक पाठ—“तारा दूर रहै छै, प्रकाश देर अबै / देखल रूप कहै छै, बीते काल दिसै”।

‘राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै’ यात्राक भीतर दिशाबोधक चित्र अछि। माथ उठाकऽ तारा देखब घरक स्मृति आ अज्ञात बाटक सन्तुलन बनबैत अछि।

मुदा ताराक वास्तविक दिशा-निर्धारण पाठमे नहि; एकरा शुद्ध काव्यगत आकाशीय दृश्य मानब चाही।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण काल, चाल, जाल, ताल, पाल, माल, लाल; रदीफ “तारा दिखैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“यात्री घर पबै छै, राति याद रहै / क्षितिज रंग बनै छै, लाल तारा दिखैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४६ : पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४६ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै / ऋतु सोर बदलै छै, राह पाखी घुरैए”; मध्यक पाठ—“दलदल सूखि जाइ छै, विश्राम ठाम घटै / यात्रा भार बढ़ै छै, मृत्यु जोखिम बढ़ै”।

‘पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै’ मौसमी यात्राक सजीव दृश्य अछि। पुरना ठामक खोज आ अगिला ऋतुक आगमन प्रवासकेँ प्रकृतिक चक्रमे राखैत अछि। मुदा प्रवासी पाखीक जाति, दूरी आ मौसमक वैज्ञानिक विवरण स्रोत नहि दैत; मानवीय घर-बोधक रूपक अलग अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह; रदीफ “पाखी घुरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“अगिला ऋतु अबै छै, पुरना ठाम तकै / घर बोध जगै छै, आह पाखी घुरैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४७ : पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४७ मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै / सन्तुलन

देह सीखै छै, सार साइकिल चलैए”; मध्यक पाठ—“धन कम लागै छै, दूरी तइयो कटै / विद्यार्थी विद्यालय पबै छै, अवसर राह खुलै” ।

‘पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै’ देहक सीखनाइक ठोस उदाहरण अछि । सन्तुलन सीखबाक क्षण आत्मनिर्भरता आ छोट यात्राक विजय दैत अछि । मुदा ‘पुकार साइकिल चलैए’क भाषिक अन्त्यानुप्रास अर्थसंगत नहि बुझाईत । वस्तु-केंद्रित सरल दृश्य गजलक उपलब्धि अछि ।

रूप आ पाठभेद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार; रदीफ “साइकिल चलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाईत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

समापन-पाठ—“चक्का धीरे धमकै छै, मोन तइयो हँसै / यात्रा सोर उठै छै, पुकार साइकिल चलैए” । अन्तिम मिसराकें आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होईत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि ।

गजल ८४८ : नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य । ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४८ मे १२ मूल मिसरा अछि । आरम्भक पाठ—“नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै / जीभ माप धरै छै, नीर नमक घुलैए”; मध्यक पाठ—“घाम देह पसीजै छै, नमक शरीर रहै / नीर सन्तुलन माँगै छै, स्वास्थ्य माप रहै” ।

‘नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै’ अल्प मात्रा सँ व्यापक अनुभव बदलबाक मूर्त उदाहरण अछि । ‘जीभ माप धरै छै’क रूपक स्वाद आ प्रमाणक सम्बन्धपर रोचक दृष्टि दैत अछि ।

मुदा नमक गललापर ‘नीर नमक घुलैए’क तुक निर्देशित बिम्ब अस्पष्ट अछि; पाकक प्रक्रियाकें अनावश्यक दुख-रूपक बनाबयपर मूल दृश्यक स्पष्टता घटैत अछि ।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर,
भोर, छोर, जोर, कोर; रदीफ “नमक घुलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-
पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“दाना पूर्ण गलै छै, स्वाद तइयो रहै / नुकल रूप बचै छै, कोर
नमक घुलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत
निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा
ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८४९ : भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८४९ मे १२ मूल
मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै / पाखी संग
गबै छै, मान सोर मिलैए”; मध्यक पाठ—“इतिहास घाव रहै छै, स्मृति साँच माँगै
/ क्षमा स्मृति धरै छै, जिम्मा संग रहै”।

‘भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै’ बहु-धार्मिक सार्वजनिक ध्वनिक सौम्य
सहअस्तित्वक दृश्य अछि। ‘नाम भिन्न रहै छै, मान साझा रहै’ व्यक्तिक पहचान
मेटने बिना नागरिक सम्मानक प्रस्ताव अछि।

मुदा एहि समुदायसभक वास्तविक सामाजिक सम्बन्धक इतिहास कविता नहि
देत; ई सामूहिक सम्मानक काव्यात्मक आकांक्षा अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम ·
दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,
विधान, निदान, प्रमाण, पहिचान; रदीफ “सोर मिलैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“नाम भिन्न रहै छै, मान साझा रहै / नागरिक बोध जगै छै,
पहिचान सोर मिलैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर

काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८५० : लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै

आधार-पाठ आ पद्य-साक्ष्य। ‘दीवान-ए-विदेह’ खण्ड २क गजल ८५० मे १२ मूल मिसरा अछि। आरम्भक पाठ—“लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै / पएर बालू धँसै छै, सार समुद्र बुलबैए”; मध्यक पाठ—“प्लास्टिक कूल अटकै छै, माछ पीर सहै / सुविधा दोष खुलै छै, जिम्मा मानुष माँगै”।

‘लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै’ समुद्रक विस्मयपूर्ण आरम्भ अछि। पएर बालूमे धँसब, लहरक सोर आ दोसर क्षितिजक सवाल यात्राक अनुभूतिकेँ विस्तृत करैत अछि।

मुदा समुद्रक विशिष्ट भूगोल/स्थान नहि; जीवनक प्रश्नक रूपक रूपमे एहि दृश्यकेँ पढ़ब उचित अछि।

रूप आ पाठभेद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार; रदीफ “समुद्र बुलबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

समापन-पाठ—“राति तारा उगै छै, लहर सोर रहै / अगिला प्रश्न उठै छै, पुकार समुद्र बुलबैए”। अन्तिम मिसराकेँ आरम्भक संग राखि देखला पर काव्यगत निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि; एहिसँ अलग ककरो लेखक-वक्तव्य अथवा ऐतिहासिक प्रमाणक अनुमान नहि कएल गेल अछि।

गजल ८५१ : भोर कूप जागै छै, नीर तल चमकै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भोर कूप जागै छै, रस्सी हाथ तनै / नीर तल चमकै छै, ज्ञान कूप पुकारैए”। बीचक पाठ—“हाथ घाव धरै छै, रस्सी खुरदर लगै / श्रम दाम माँगै छै, नीर मूल्य बढ़ै”। अन्तिम पाँति—“कूप गाम रहै छै, पीढ़ी कथा जुड़ै / नीर याद धरै छै, पहिचान कूप पुकारैए”।

इनारक रस्सी, ताहिपर घाव भेल हथेली आ घटैत जलस्तरक क्रम एहि रचनाकें साझा संसाधनक सामाजिक इतिहास बनबैत अछि। ‘जाति घेर बनै छै’क कारण जलाधिकार केवल अभाव नहि, प्रवेशक असमानता सेहो अछि; नव पम्प लगलाक बादो पुरान इनार बचल रहबाक दृश्य परम्परा-सुविधाक द्वैतकें खोलैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। मुदा जातिगत बहिष्कारक विशिष्ट पीड़ित आ जल-बँटवाराक निर्णय कविता नहि नामित करैत; ‘विधान’क घोषणा मात्रसँ समान अधिकार सुनिश्चित भेल मानब स्रोतक बाहरक निष्कर्ष होयत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, मान, ध्यान, निदान, प्रमाण, विधान, पहिचान; रदीफ “कूप पुकारैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८५२ : पोथी पन्ना खुलै छै, छोट टिप्पणी जगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पोथी पन्ना खुलै छै, आखर रेखा चमकै / छोट टिप्पणी जगै छै, विचार हाशिया कहैए”। बीचक पाठ—“हाशिया नाम नुकै छै, बुद्धि तइयो दिसै / अनाम हाथ बचै छै, ज्ञान डोर जुड़ै”। अन्तिम पाँति—“मूल पाँति बचै छै, किनार संग चलै / मत मान पबै छै, सत्कार हाशिया कहैए”।

पोथीक किनारमे लिखल अनाम टिप्पणीकें मूल पाठक सहचर मानबाक दृष्टि एहि गजलक विशिष्ट साहित्यिक हस्तक्षेप अछि। ‘एक आखर कटै छै’ आ ‘दू बिन्दु जुड़ै छै’ वाक्यगत अर्थ बदलबाक ठोस सम्पादकीय क्रिया देखबैत अछि, जखनकि नकल-दोष आलोचनात्मक पाठ-निर्माणक जोखिम चिन्हित करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। हाशिया-वक्तव्यक ऐतिहासिक मूल्य मूल पाण्डुलिपि, संस्करण आ हस्तलिपिक तुलनासँ तय होयत; गजल एहि प्रक्रियाक रूपक दैत अछि, प्रमाणित पाठ-वंशावली नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण विचार, आधार, व्यवहार, प्रकार, उद्धार, विस्तार, सत्कार; रदीफ “हाशिया कहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८५३ : सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल धरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सीटी दूर बजै छै, भीड़ पएर सरकै / लोहा ताल धरै छै, सोर पटरी गबैए”। बीचक पाठ—“देरी घोष होइ छै, रोष भीड़ बढ़ै / कारण फेर जँचै छै, दाबी तखन घटै”। अन्तिम पाँति—“दूर सीटी आबै छै, याद घर जुड़ै / विदाई सार रहै छै, नोर पटरी गबैए”।

रेल-सीटी, प्रतीक्षारत बालक, मजदूरक झोरा आ मुट्ठीमे टिकट—ई चारि दृश्य रेल-यात्राकै एकहि संग श्रम, वियोग आ नव ठामक सम्भावना बनबैत अछि। ‘देरी घोष’क पाछाँ सूचना-पटल पढ़बाक प्रसङ्ग अपुष्ट क्रोधक स्थानपर समय-स्रोत मिलानक विवेक आनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नव यात्रा आ अपन गामसँ दूर होयबक सामाजिक दामेँक संघर्ष अधिक खोलल जा सकैत छल; अन्तिम खाली प्लेटफॉर्म स्मृतिक प्रभावी संकेत अछि, मुदा पात्रक कथा अधूरी।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, डोर, भोर, छोर, कोर, जोर, नोर; रदीफ “पटरी गबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८५४ : माटि हाथ नमै छै, रूप बीच उगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“माटि हाथ नमै छै, चाक धीरे घुमै / रूप बीच उगै छै, आस माटि सँवरैए”। बीचक पाठ—“भट्ठी आग जरै छै, माटि रंग बदलै / ताप सीमा लाँघै छै,

घड़ा तखन फुटै”। अन्तिम पाँति—“रूप फेर बदलै छै, माटि मूल रहै / क्षण साँच दिसै छै, आभास माटि सँवरैए”।

कुम्हारक हाथक दबावसँ घड़क काँठ उठबाक दृश्य रचनाक शिल्पगत केन्द्र अछि। भट्टीक तापसँ रङ्ग बदलैत माटि आ बाजारमे ‘हाथ नाम नुकै’ श्रमिक सृजन आ उत्पादक अनामिकाक सम्बन्ध खोलैत अछि; टूटल घड़क फेर माटि बनब पदार्थक चक्रीय स्मृति अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तु बनबाक क्रम प्रभावी अछि, मुदा बिक्री-दाम आ कारीगरक प्रतिफल बीचक सम्बन्ध कथ्यरूपेँ मात्र रहैत; बाजारक यथार्थक विशिष्ट घटना नहि भेटैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, प्रकाश, निवास, आभास; रदीफ “माटि सँवरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८५५ : मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै / छप्पर ताल धरै छै, गीत खिड़की सुनैए”। बीचक पाठ—“बिजुरी क्षण चमकै छै, छवि दीवार उभरै / तत्क्षण रूप मिटै छै, आँखि स्मृति धरै”। अन्तिम पाँति—“भोर काँच खुलै छै, गाछ धूल धोवै / नव दिन नमै छै, विनीत खिड़की सुनैए”।

काँचपर मेहक रेखा, छज्जासँ बहैत पानि, बिजुरीमे क्षणभरिक दीवार-छवि आ रेडियोक सूचना—एहि बिम्बसभसँ एकहि वर्षाक अनुभव दृष्टि, ध्वनि आ सार्वजनिक चेतावनीमे विभाजित होइत अछि। रातिमे मेह थमलाक बादो छतपर बूँदक स्वर रहनाइ सुन्दर ध्वनि-समापन अछि।

आलोचनात्मक सीमा। रेडियोक चेतावनी कतेक विश्वसनीय आ ककरा बचबैत अछि, से दृश्य गजल नहि खोलैत; एकर प्रभाव प्राकृतिक परिवेशक संवेदनामे बेसी अछि, संकट-वृत्तान्तमे कम।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “नीत”, उदाहरण गीत, प्रीत, रीत, मीत, जीत, अतीत, विनीत; रदीफ “खिड़की सुनैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८५६ : कलम डारि जुड़ै छै, नव फूल खुलै

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“कलम डारि जुड़ै छै, रस भीतर बहै / नव फूल खुलै छै, राह बगान फलैए” । बीचक पाठ—“कीड़ा पात खाइए छै, माली चिन्ह देखै / दवा माप धरै छै, मधुमाछि जीवन बचै” । अन्तिम पाँति—“जड़ि माटि धरै छै, डारि आकाश छुबै / जीवन संग भरै छै, आह बगान फलैए” ।

डारिमे कलम जोड़बाक क्रम—छाल कटब, घावक पट्टी, रसक संचरण आ फूलक आगमन—उद्यानक वास्तविक क्रियासँ पुनर्गठनक रूपक बनैत अछि । किछु गाछ फलैत, किछु नहि—एहि असमान फलसँ आशाक निष्कर्ष जटिल होइत अछि; कीड़ा आ मालीक निरीक्षण प्रयोगधर्मी सावधानी जोड़ैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । किछु पाँतिमे बागवानीक अनुभवक सामान्यीकरण अछि; जैविक कारण, ऋतु वा किस्म निर्दिष्ट नहि, तँ सफल कलमक शास्त्रीय विवरण एकरा मानब उचित नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह; रदीफ “बगान फलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८५७ : न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न क्रम धरै

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“न्याय कक्ष खुलै छै, साक्षी श्वास सम्हरै / प्रश्न क्रम धरै छै, काल

गवाही तौलैए”। बीचक पाठ—“मौन क्षण रहै छै, अर्थ तइयो बढै / चेहरा रेखा बदलै छै, भीतर पीर दिसै”। अन्तिम पाँति—“न्याय नाम रहै छै, मानव गरिमा बचै / नोर साक्ष्य धरै छै, लाल गवाही तौलैए”।

न्याय-कक्षमे श्वास सम्हारैत साक्षी, भिड़ैत दू स्मृति आ प्रश्न करैत प्रतिपक्ष—ई तीनू न्यायकै केवल निर्णीत आदेश नहि, परखी जा रहल कथनक प्रक्रिया बनबैत अछि। बाहिरक अफवाह-सोर आ भीतरक मौनक द्वन्द्व मंचीय सम्भावनासँ सम्पन्न अछि।

आलोचनात्मक सीमा। ककर विवाद, की साक्ष्य आ फैसला किन कारणसँ देरी होइत अछि, ई अस्पष्ट; प्रमाण-विवेकक नैतिक संकेतकै वास्तविक न्यायिक उदाहरण अथवा कानूनी निष्कर्ष नहि मानब।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण काल, चाल, ताल, जाल, ढाल, माल, लाल; रदीफ “गवाही तौलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८५८ : राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै / नाव दूर तकै छै, माप दीप चमकैए”। बीचक पाठ—“दूर लौ दिसै छै, दूरी माप भुलै / मल्लाह चिन्ह जँचै छै, धार संग मिलै”। अन्तिम पाँति—“नदी दूर बहै छै, राह छोड़ बदलै / लौ स्मृति धरै छै, प्रताप दीप चमकैए”।

रातिक नदिपर मचानमे जरैत दीप आ ताहिसँ दूरी मापैत नाविकक निर्णय जोखिमक स्थानीय दृश्य अछि। तेल घटला पर राखबला पात्र भरबाक दृश्य उजास बचाएबाकै सामूहिक जिम्मेदारी बनबैत अछि; नव बत्ती आ पुरनका मचानक सह-अस्तित्व रूपान्तरक सूचक अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दूर लौकै देखब आ वास्तविक दूरी जनब भिन्न क्रिया अछि; कविता ई भेद स्वतः दर्शबैत, मुदा सुरक्षित नाव-मार्गक तथ्य नहि दैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण माप, छाप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप; रदीफ “दीप चमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८५९ : भोर विद्यालय खुलै छै, आँगन हँसी भरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८५९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भोर विद्यालय खुलै छै, बालक पएर दौड़ै / आँगन हँसी भरै छै, चाव घण्टी बजैए”। बीचक पाठ—“भूल पाटी दिसै छै, शिक्षक रोष घटै / फेर समझ दैए छै, बालक मान बचै”। अन्तिम पाँति—“अगिला भोर आबै छै, पाठ फेर खुलै / यात्रा थाम बनै छै, पड़ाव घण्टी बजैए”।

विद्यालयक भोर, प्रश्न करैत बालक, मातृभाषाक सम्मान आ मध्यान्ह भोजन—एहि क्रमसँ शिक्षा मनक संग देहक अधिकार सेहो बनैत अछि। पाटीपर भूल भेलापर शिक्षकक रोष घटव भयविहीन शिक्षणक मूर्त सांकेतिक दृश्य अछि। आलोचनात्मक सीमा। मातृभाषा, भूख आ शिक्षाक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण मुदा कोन विद्यालयक सामाजिक दशा अछि, से अनिर्दिष्ट; गजल नीतिगत प्रस्तावक कला अछि, स्थानीय सर्वेक्षण नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण चाव, भाव, ठाव, नाव, घाव, लगाव, पड़ाव; रदीफ “घण्टी बजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६० : बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै / नव परत चढ़ै छै, रंग गाद

जमैए”। बीचक पाठ—“राहत नाव आवै छै, सूची नाम छुटै / लोक हक पूछै छै, लेखा फेर जँचै”। अन्तिम पाँति—“माटि परत बढै छै, इतिहास रेखा लिखै / गाम बोध धरै छै, प्रसंग गाद जमैए”।

बाढ़ि उतरला पर जमल गादक दूहरा रूप—कखनो खेतीक सम्भावना, कखनो बोझ—गजलक मुख्य अन्तर्दृष्टि अछि। बदलल नदी-पथसँ नक्शा आ गामक नाम अलग होइत अछि; राहत-सूचीमे छुटल नाम नदीक घटनाकें शासनक जवाबदेहीसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। गादक कृषि-लाभ सर्वत्र समान नहि, ई पाठ स्वयं ‘किछु ठाम’ कहि स्वीकारैत अछि। वास्तविक उपज वा राहत-कार्यक्षमताक दावेकें कविताक बिम्ब सँ प्रमाणित नहि करब।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, भंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “गाद जमैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८४१-८६० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
८५१	भोर कूप जागै छै, नीर तल चमकै	कूप पुकारैए
८५२	पोथी पन्ना खुलै छै, छोट टिप्पणी जगै	हाशिया कहैए
८५३	सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल धरै	पटरी गबैए
८५४	माटि हाथ नमै छै, रूप बीच उगै	माटि सँवरैए
८५५	मेह काँच पडै छै, बूँद रेखा बनै	खिडकी सुनैए

८५६	कलम डारि जुड़ै छै, नव फूल खुलै	बगान फलैए
८५७	न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न क्रम धरै	गवाही तौलैए
८५८	राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै	दीप चमकैए
८५९	भोर विद्यालय खुलै छै, आँगन हँसी भरै	घण्टी बजैए
८६०	बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै	गाद जमैए

गजल ८६१ : झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर धरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“झोरा काँध चढ़ै छै, घर द्वार नमै / माय नोर धरै छै, कमाई झोरा
चलैए”। बीचक पाठ—“बीमारी देह धरै छै, काज तखन रुकै / हक कागज माँगै
छै, दफ्तर द्वार तकै”। अन्तिम पाँति—“झोरा फेर बँधै छै, जीवन राह चलै / लोक
हक माँगै छै, सुनवाई झोरा चलैए”।

काँधपर झोरा आ मायकँ नोर छोड़ि नगर पहुँचल व्यक्तिक जीवन किराया,
संकुचित ठाम, बीमारी आ त्योहारक बढ़ैत टिकट-दामसँ नापल जाइत अछि।
अन्तमे ‘बालक लम्बा दिसै’ दूरीकँ समयक अनुभूति बनबैत अछि—व्यक्ति नहि,
घरमे बचल समय बदलि गेल।

आलोचनात्मक सीमा। कविता आर्थिक दबावक क्रम रखैत अछि, मुदा श्रमक
प्रकृति आ सामाजिक सहायक सम्बन्धक विशिष्टता कम अछि; एतय एकटा
प्रवास-प्रतीक अछि, कोनो सत्यापित आत्मकथा नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ई”, उदाहरण कमाई, विदाई,
लडाई, पढाई, सफाई, गहराई, सुनवाई; रदीफ “झोरा चलैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६२ : पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै / मोन पाछाँ घुरै छै, फेर चिट्ठी आबैए”। बीचक पाठ—“अर्थ आब बदलै छै, पुरना शब्द रहै / प्रसंग फेर मिलै छै, मोन याद धरै”। अन्तिम पाँति—“कागज भुरभुर होइ छै, अर्थ तइयो बचै / याद मन धरै छै, सेर चिट्ठी आबैए”।

पुरनका बक्साक कागज-गन्ध, डाक-मुहर आ तारीखक ठोसता निजी पत्रकें समय-साक्ष्य बनबैत अछि। एके शब्दक अर्थ पीढ़ी बदलला पर फेर पढ़ल जाइत अछि; देर सँ पहुँचल उत्तर नब संचारक तुलनामे कागजक टिकाउ स्मृति देखबैत अछि। आलोचनात्मक सीमा। चिट्ठीक वास्तविक लिखित अंश अनुपस्थित, तँ अर्थ-बदलावक दावा चित्रात्मकें रहैत; मूल पत्रक प्रमाण-अर्थ आ स्मृतिक भावार्थकें अलग रखबाक चाही।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण फेर, देर, बेर, घेर, टेर, ढेर, सेर; रदीफ “चिट्ठी आबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६३ : भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै / हवा धीरे लैए छै, गन्ध जड़ी महकैए”। बीचक पाठ—“वन जड़ी घटै छै, लाभ दाम बढ़ै / साझा बचाव माँगै छै, लोक नीति बनै”। अन्तिम पाँति—“बाड़ी साँझ नमै छै, गन्ध धीरे रहै / ज्ञान मान धरै छै, दुर्गन्ध जड़ी महकैए”।

ओसभीजल बाड़ी, हाथमे मलल पातक गन्ध आ अलग-अलग जड़ीक भिन्न प्रभावक उल्लेख लोकज्ञानकें अवलोकनसँ जोड़ैत अछि। बाजारमे चमकैत लेबलक विदेह · 727

सन्देह अनियन्त्रित दावासँ बचवाक संकेत अछि; वन-क्षय आ लाभक सम्बन्ध नैतिक प्रश्न खोलैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। गजल कोनो विशिष्ट जड़ीक चिकित्सकीय गुण प्रमाणित नहि करैत अछि। प्रभावक वैज्ञानिक जाँच आ पारम्परिक उपयोगक इतिहास एकर कल्पित विस्तार नहि बनबाक चाही।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ध”, उदाहरण गन्ध, सम्बन्ध, अनुबन्ध, प्रतिबन्ध, प्रबन्ध, सुगन्ध, दुर्गन्ध; रदीफ “जड़ी महकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६४ : दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै / पथिक ठाम खोजै छै, संसार छाह घटैए”। बीचक पाठ—“दीवार छाह पड़ै छै, घर आँगन बदलै / संपत्ति रेखा रहै छै, सूरज तइयो चलै”। अन्तिम पाँति—“दुपहर याद रहै छै, मोन प्रश्न उठै / साँच फेर माँगै छै, विचार छाह घटैए”।

दुपहरमे छोट होइत आ साँझमे लम्बैत गाछक छाह समयक दृश्यात्मक घड़ी अछि। देवालक छाह आ आँगनमे खेलैत बालकक आवागमन प्रकृति तथा घरक संरचनाकें संयुक्त समय-अनुभव बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। एकहि गाछक छाया-सरणी सुन्दर निरीक्षण अछि, मुदा सूर्यक कोण वा दिशा-परिवर्तनक मापन नहि; दृश्यात्मक रूपककें खगोलशास्त्रीय गणना मानब गलती होयत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण संसार, परिवार, अधिकार, विस्तार, प्रतिकार, उपकार, विचार; रदीफ “छाह घटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६५ : मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै / घडा पेट भरै छै, डोल जलघर
भरैए”। बीचक पाठ—“गाम छत जुड़ै छै, नाली जाल बनै / अधिक नीर रहै छै,
खेत राह मिलै”। अन्तिम पाँति—“मेह कम पड़ै छै, संचय तइयो रहै / जीवन
माप धरै छै, तोल जलघर भरैए”।

छतसँ संग्रहित मेह-पानि, टंकीक ढक्कन आ जुड़ैत नालीसभ सार्वजनिक संसाधन
बचएबाक ठोस क्रिया देखबैत अछि। ‘मच्छर राह रुकै’मे स्वच्छताक आशा
अछि; पुरनका ताल आ नव छतक सह-अस्तित्व घर-गामक जल-व्यवस्था जोड़ैत
अछि।

आलोचनात्मक सीमा। एकटा टंकी बंद कएलासँ सभ रोगक जोखिम समाप्त नहि
होइत। जलगुणवत्ता, रखरखाव आ बँटवाराक प्रश्न कविता नहि खोलैत; एहि
कारण ई शिक्षाप्रद बिम्ब अछि, सम्पूर्ण जल-प्रबन्ध योजना नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-लेल”, उदाहरण डोल, खोल, मोल,
बोल, झोल, गोल, तोल; रदीफ “जलघर भरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६६ : बोर्ड बीच सजै छै, पहिल चाल खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“बोर्ड बीच सजै छै, मोहरा ठाम धरै / पहिल चाल खुलै छै, बात चौसर
सिखबैए”। बीचक पाठ—“रानी दूर चलै छै, राजा सीमा धरै / शक्ति भिन्न रहै छै,
नियम संग चलै”। अन्तिम पाँति—“मोहरा डिब्बा जाइ छै, सीख मोन रहै / जीत
हार छोड़ै छै, सौगात चौसर सिखबैए”।

शतरंजक ‘एक चाल’ सँ आगाँ खुलैत जाल, प्यादाक सीमित गति आ रानीक
विस्तृत चाल रणनीतिक निर्णयक भिन्न स्तर देखबैत अछि। हार नजदीक रहितो
विचार जारी रहब आ अन्तमे हाथ मिलब प्रतिस्पर्धाक मानवीय अनुशासन दैत
अछि।

आलोचनात्मक सीमा । विशिष्ट चालक्रमक अभावमे ई कियो प्रमाणित शतरंजी खेल नहि; 'राजा सीमा धरै' आ 'रानी दूर चलै' प्रतीकात्मक वर्णन छथि, नियमावलीक स्थानापन्न नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, मात, रात, घात, पात, प्रभात, सौगात; रदीफ “चौसर सिखबैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८६७ : बाजार भोर खुलै छै, दाना पलड़ा धरै

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“बाजार भोर खुलै छै, बाट भीड़ बढ़ै / दाना पलड़ा धरै छै, मोल तराजू झुकैए” । बीचक पाठ—“किसान माल लैए छै, दलाल दाम कहै / बाजार जाल बनै छै, हक फेर घटै” । अन्तिम पाँति—“मोल फेर बदलै छै, मान तइयो रहै / श्रम साँच बनै छै, अनमोल तराजू झुकैए” ।

भोरक बाजारमे बाटक घिसब आ दाम बदलला परो श्रमक टिकाउ मूल्य एहि गजलक सामाजिक अर्थ अछि । किसान-दलालक मूल्य-वार्ता आ सिक्का पकड़ने मिठाइक मोल पूछैत बालक अलग पैमानाक आर्थिक अनुभवकें एकहि दृश्य बनबैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । मापक घिसबक आशंका उचित, मुदा वास्तविक तौल-दोषक अभियोग नहि; गजलक नैतिक संकेतकें कुनै खास व्यापारीक विरुद्ध तथ्य नहि बनाउ ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोल”, उदाहरण मोल, तोल, बोल, खोल, डोल, गोल, अनमोल; रदीफ “तराजू झुकैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८६८ : नाव घाट लगै छै, नीर तेज बहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“नाव घाट लगै छै, रस्सी खूँटा धरै / नीर तेज बहै छै, धार रस्सी
तनैए”। बीचक पाठ—“बाढ घाट बदलै छै, खूँटा ठाम सरकै / पुरना गाँठ रहै छै,
नव ठाम माँगै”। अन्तिम पाँति—“भोर गाँठ खुलै छै, नाव फेर चलै / नदी सोर
करै छै, पुकार रस्सी तनैए”।

नाव बाँधैत खूँटा, तेज धार आ रस्सीक तन्तु टूटबाक विवरण नदी-यात्राक
जोखिमकें पदार्थगत विश्वसनीयता दैत अछि। बालक रस्सी छुबैत अछि आ
मल्लाह हाथ रोकैत—एहि छोट दृश्यसँ अभ्यासक ज्ञान आ पीढ़ीगत सुरक्षा-बोध
उभरैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुरक्षित गाँठ वा नाव-बचावक यान्त्रिक विधि कविता नहि
दैत; टूटल तन्तुक दृश्य रूपक आ अनुभव अछि, प्रामाणिक नौकायन निर्देश नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण धार, पार, तार,
भार, द्वार, किनार, पुकार; रदीफ “रस्सी तनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६९ : साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८६९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“साँझ आँगन सजै छै, दीप बाती धरै / पहिल लौ उठै छै, राग माटि-
दीप जरैए”। बीचक पाठ—“धुआँ छत चढ़ै छै, बाती कालिख धरै / उजास संग
रहै छै, दाग तइयो रहै”। अन्तिम पाँति—“उजास दिन बदलै छै, नेह तइयो रहै /
घर गीत धरै छै, सुहाग माटि-दीप जरैए”।

दीपक ज्वाला, कुम्हारक माटि, बातीक कालिख आ तेलक घटब—उत्सवक
उजासकें उत्पादन, दहन आ श्रमक क्रममे राखैत अछि। भोरमे ‘राख’ आ ठंढायल
दीप रहनाइ उत्सवक क्षणिकता आ वस्तुक टिकाव दुनूकें देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। उत्सवक सांस्कृतिक सन्दर्भक नाम नहि, तँ निश्चित पर्वक पहिचान अनुमान होयत; लोकरीतिक दृश्य प्रभावी, मुदा उत्पादनक श्रमिक-संबन्धक विस्तार सीमित।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण राग, आग, दाग, भाग, अनुराग, विराग, सुहाग; रदीफ “माटि-दीप जरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७० : कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै / हाथ धीरे बनै छै, लेख कलम बहैए”। बीचक पाठ—“बालक कलम धरै छै, रेखा पहिने बिगडै / अभ्यास फेर चलै छै, आखर धीरे सुधरै”। अन्तिम पाँति—“कागज बन्द होइ छै, आखर भीतर रहै / पाठ फेर खुलै छै, प्रलेख कलम बहैए”।

कलमक कम्पैत हाथ, सिखैत बालक आ पुरनका हस्ताक्षर-एहि तीन उमेर-सूचक दृश्यक संग लिखावट देहक इतिहास बनैत अछि। साफ नकलमे मूल हाथक छाप नुकायब पाण्डुलिपि-संपादनक महत्त्वपूर्ण पाठगत खतरा चिह्नित करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। हस्ताक्षरक समानतासँ लेखन-अधिकार स्वतः सिद्ध नहि; तारीख आ स्रोतक आवश्यकता गजल स्वयं छुबैत अछि, पर प्रमाण-पद्धतिक सम्पूर्ण वर्णन नहि दैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ख”, उदाहरण लेख, रेख, आलेख, अभिलेख, सुलेख, उपलेख, प्रलेख; रदीफ “कलम बहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७१ : देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“देहरी भोर चमकै छै, पएर क्षण रुकै / घर बाहर मिलै छै, द्वार देहरी
रोकैए”। बीचक पाठ—“राति किवाड बँधै छै, सुरक्षा भाव बढ़ै / भोर किवाड खुलै
छै, विश्वास फेर बढ़ै”। अन्तिम पाँति—“देहरी रेखा रहै छै, मानव राह खुलै /
स्वागत सार बनै छै, सत्कार देहरी रोकैए”।

देहरीक दुनू दिस घर आ बाहरक संसार अछि; ककरो रोकैत सामाजिक रीत,
बालकक बारम्बार निर्भय लाँघब आ घुरैत प्रवासीक माथ छुबब—एहि तीन दृश्य
सीमाकें बदलैत अर्थ दैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। देहरी रोकब जाति, लिंग, सुरक्षा वा ककरो निजी निषेधक
कारण अछि, पाठ स्पष्ट नहि करैत; संकेतकें विशिष्ट सामाजिक अपराधक प्रत्यक्ष
अभिलेख नहि मानब।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण द्वार, पार, भार,
विचार, व्यवहार, अधिकार, सत्कार; रदीफ “देहरी रोकैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७२ : ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै / लय तखन बनै छै, तान विराम
सुनैए”। बीचक पाठ—“पीर शब्द छोड़ै छै, मौन नोर कहै / मीत हाथ धरै छै, तर्क
पाछाँ आबै”। अन्तिम पाँति—“सोर दूर हटै छै, मौन संग रहै / मन शान्त बनै
छै, निदान विराम सुनैए”।

ढोलक थाप बीचक मौनकें अनुपस्थिति नहि, अर्थ बनबाक समय मानल गेल
अछि। गायकक श्वास आ वादमे भिड़ैत दू स्वर संगीतक विरामकें संवादक नैतिक
उपाय बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कोन राग, ताल वा गीत अछि, स्पष्ट नहि; मौनक नाप कविता भीतरक ध्वनि-बिम्ब अछि, वास्तविक प्रस्तुति विश्लेषण नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण तान, गान, ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान; रदीफ “विराम सुनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७३ : छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै / मेह बूँद पड़ै छै, भोर पौधा उगैए”। बीचक पाठ—“पाखी बीज लैए छै, छत दूर छोड़ै / नव गमला भरै छै, अंकुर माथ उठै”। अन्तिम पाँति—“छोट गमला रहै छै, आकाश तइयो खुलै / जीवन आस जुड़ै छै, डोर पौधा उगैए”।

नगरक छतपर छोट गमलामे जड़िक विस्तार सीमित ठाममे जीवनक सम्भावना बनबैत अछि। अधिक पानि सँ श्वास घटबक चेतावनी, पाखीक बीज ले जाएब आ धूलि लागल पात—एहि तीनू दृश्य बागवानीकें गतिक आ संवेदनशील क्रिया देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नगरक धुँआक असर अथवा जलमात्राक उपयुक्त माप कविता नहि देत; ई अनुभव-प्रेरित चित्र अछि, प्रयोगशालाक परिणाम नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण भोर, नोर, कोर, छोरे, जोर, सोर, डोर; रदीफ “पौधा उगैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७४ : पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै / नाम पत्थर धरै छै, याद माटि
स्मरैए”। बीचक पाठ—“नोर आँखि आबै छै, पीर भाषा घटै / हाथ काँध धरै छै,
नेह मौन बढै”। अन्तिम पाँति—“नाम फीकि पड़ै छै, कथा तइयो चलै / जीवन
सार धरै छै, स्वाद माटि स्मरैए”।

पुरनका टीला, घिसल पाथरक अक्षर, ‘वीर’ कहनिहार आ दोष देखनिहार—एहि
विरोधसँ स्मारकक अर्थ स्थिर नहि, विवादित स्मृति बनैत अछि। विदेशसँ आबि
पुरखा-नाम पढ़ैत बालक अतीतक नब पाठकक दृश्य जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पाथरक अभिलेख पढ़ल बिना न वीरता न दोषक इतिहास
सत्यापित भऽ सकैत; कविता एहि बहुवचन स्मृतिक नाट्य रूप देत, तथ्यनिर्णय
नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा • दूना-मिसरा नियम
• दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य • वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाद”, उदाहरण याद, संवाद,
विवाद, प्रसाद, विषाद, अनुवाद, स्वाद; रदीफ “माटि स्मरैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७५ : राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“राति झंझा बहै छै, गाछ डारि टूटै / दूर रेखा उगै छै, आस भोर
खुलैए”। बीचक पाठ—“नदी तल बढै छै, घाट रेखा बदलै / लोक चिन्ह धरै छै,
खतरा फेर जँचै”। अन्तिम पाँति—“भोर आकाश खुलै छै, मोन क्षितिज तकै /
अगिला राह दिसै छै, आभास भोर खुलैए”।

झंझासँ टूटल डारि, छतक घाव, कारीगरक मरम्मत आ बालकक पात उठाबयक
क्रिया विपदाक बाद घरक पुनर्संयोजन देखबैत अछि। अन्तिम नब कोपल आशाकें
पदार्थक वास्तविक पुनर्जन्मसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आँधीक परिमाण आ नदीतलक परिवर्तनक कारण निर्दिष्ट नहि; पर दृश्यात्मक घटना क्रमसँ सामान्य नैतिक नारा बनबाक जोखिम कम अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, प्रकाश, विश्वास, उल्लास, निवास, आभास; रदीफ “भोर खुलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७६ : पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“नक्शा रेखा खुलै छै, पुल दिशा खुलै / यात्री पएर नमै छै, सार नक्शा बतबैए”। बीचक पाठ—“कागज स्याही उतरै छै, बाट गाम बदलै / पुल दिशा मिलै छै, यात्री पएर चलै”। अन्तिम पाँति—“पुल दिशा मिलै छै, कागज स्याही उतरै / नक्शा रेखा दिसै छै, पुकार नक्शा बतबैए”।

पुरान नक्शाक रेखा, पुलक दिशा आ बदलल गामक बाट मिलाकऽ काव्य स्थानकें कागज आ पएरक अनुभवसँ दू अलग ढङ्गमे चिन्हैत अछि। नदीक कूल बचबाक प्रश्न स्मृति आ यातायातक साझा रूपक बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नक्शाक वर्ष, पुल अथवा सीमाक विश्वसनीय पहचान नहि; स्थान-सूचक पदसभक पुनरावृत्ति बेसी आ वास्तविक परिवर्तनक व्याख्या कम अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “नक्शा बतबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७७ : लोहारक श्वास उठै, आग भट्टी धधकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“लोहार हाथ चलै छै, धौकनी श्वास बढै / चिनगी राति ढलै छै, मान
भट्टी धधकैए”। बीचक पाठ—“धार औजार गढै छै, लोहा टुकडा बदलै / धौकनी
श्वास सम्हरै छै, चिनगी राति चमकै”। अन्तिम पाँति—“धौकनी श्वास सम्हरै छै,
धार औजार गढै / लोहार हाथ गढै छै, सम्मान भट्टी धधकैए”।

लोहारक धौकनीक ‘श्वास’, हथौडाक ‘थाप’ आ रातिक चिनगीसँ ध्वनि-प्रकाशक
सजग श्रम-दृश्य बनैत अछि। औजारक धार बननेमे कारीगरक अनुभव उपस्थित
अछि, मुदा उत्पादसँ बेसी निर्माता केन्द्रीय रहैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पछिला शेरसभ पहिल शेरक छवि फेर दोहरबैत अछि;
कार्यक अगिला क्रम वा कारीगरक सामाजिक स्थितिमे नव अर्थ कम जुडैत
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,
विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “भट्टी धधकैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७८ : नीर बहै, भोर जाल पसारैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मछुआ जाल फैलै छै, मछरी झुण्ड मुडै / भोर कुहरा छँटै छै, प्रीत
जाल पसारैए”। बीचक पाठ—“हाथ श्रम बढै छै, नदी धार मुडै / मछरी झुण्ड बढै
छै, भोर कुहरा सरै”। अन्तिम पाँति—“मछरी झुण्ड बढै छै, हाथ श्रम बढै /
मछुआ जाल उठै छै, संगीत जाल पसारैए”।

मछुआक जाल, नावक कूल, गाँठ खोलब आ कुहरामे दिखैत धारा—ई सभ सुबहक
नदीश्रमक सुस्पष्ट पदार्थ-जगत अछि। ‘मछरी झुण्ड मुडै’क गति मनुखक श्रम
आ अन्य प्राणीक स्वायत्तताक अन्तर देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। जालक नफासँ जीविकाक वास्तविक गणना आ नदीक पर्यावरणीय बदलाब अभिव्यक्त नहि; अनेक शेरमे एकहि आवागमन-चित्रक पुनरावृत्ति बढैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “जाल पसारैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८७९ : कचहरी सोझाँ छाह पसारैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८७९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बरगद छाह फैलै छै, कागज पन्ना पलटै / लोक भीड़ बढै छै, नोर छाह पसारैए”। बीचक पाठ—“पुरखा याद जगै छै, कचहरी आँगन जगै / कागज पन्ना रहै छै, लोक भीड़ जुटै”। अन्तिम पाँति—“कागज पन्ना रहै छै, पुरखा याद जगै / बरगद छाह सरे छै, कोर छाह पसारैए”।

कचहरीक बरगदक छाह आ कागजी पन्नाक जोड़ सार्वजनिक न्यायकें गामक दृश्य-द्वारा प्रस्तुत करैत अछि। गवाहीक स्वर, भीड़ आ पुरखाक स्मृति औपचारिक विधान आ स्थानीय अनुभवक दूरीक संकेत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। केसक विशेष विवाद वा साक्षीक परीक्षण नहि, तँ न्याय मिलबाक परिणामक दावा बनब नहि। ‘गवाही स्वर’ बारम्बार आबैत अछि, मुदा अलग साक्ष्य कम खुलैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “छाह पसारैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८० : दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“राति अस्पताल जगै छै, रोगी श्वास बढ़ै / परिजन मोन डोलै छै, आस
राति सम्हारैए”। बीचक पाठ—“घड़ी प्रतीक्षा बढ़ै छै, दीप गलियारा रहै / रोगी
श्वास सम्हारै छै, परिजन मोन जगै”। अन्तिम पाँति—“रोगी श्वास सम्हारै छै,
घड़ी प्रतीक्षा बढ़ै / राति अस्पताल रहै छै, श्वास राति सम्हारैए”।

राति अस्पतालमे नर्सक पएर, रोगीक श्वास, प्रतीक्षारत परिजन आ दवाक गन्ध
—ई चित्र उपचारकें श्रम आ सम्बन्ध दुनू बनबैत अछि। गलियाराक मन्द दीप
जागल रहबाक आशाक सूक्ष्म संकेत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। ककरो चिकित्सकीय रोग वा चिकित्सा-प्रक्रियाक तथ्य
नहि; जीवन बचेबाक रूपककें निदान अथवा उपचारक परिणामरूपें नहि मानब।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ास”, उदाहरण आस, विश्वास,
प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “राति सम्हारैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८६१-८८० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
८६१	झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर धरै	झोरा चलैए
८६२	पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै	चिट्ठी आबैए
८६३	भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै	जड़ी महकैए
८६४	दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै	छाह घटैए
८६५	मेह छत पड़ै छै, नाली	जलघर भरैए

	नीर बहै	
८६६	बोर्ड बीच सजै छै, पहिल चाल खुलै	चौसर सिखबैए
८६७	बाजार भोर खुलै छै, दाना पलड़ा धरै	तराजू झुकैए
८६८	नाव घाट लगै छै, नीर तेज बहै	रस्सी तनैए
८६९	साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै	माटि-दीप जरैए
८७०	कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै	कलम बहैए
८७१	देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै	देहरी रोकैए
८७२	ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै	विराम सुनैए
८७३	छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै	पौधा उगैए
८७४	पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै	माटि स्मरैए
८७५	राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै	भोर खुलैए
८७६	पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए	नक्शा बतबैए
८७७	लोहारक श्वास उठै, आग भट्टी धधकैए	भट्टी धधकैए
८७८	नीर बहै, भोर जाल पसारैए	जाल पसारैए
८७९	कचहरी सोझाँ छाह पसारैए	छाह पसारैए

८८०	दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए	राति सम्हारैए
-----	--------------------------------	---------------

गजल ८८१ : धान डोलै, बिजुका तकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बिजुका खेत जगै छै, पवन कपड़ा फहरै / खेतीहर दृष्टि रहै छै, नाम बिजुका तकैए”। बीचक पाठ—“भोर ओस चमकै छै, धान बालि नमै / पवन कपड़ा नमै छै, खेतीहर दृष्टि तकै”। अन्तिम पाँति—“पवन कपड़ा नमै छै, भोर ओस चमकै / बिजुका खेत फैलै छै, आयाम बिजुका तकैए”।

धानखेतक बिजुका पवनमे डोलैत अछि, कागक झुण्ड मुडैत आ खेतीहर माटिक मेड देखैत अछि—ई त्रिकोण किसानक निगरानीक कविता अछि। बिजुका निर्जीव रहितो मानव-निर्मित सुरक्षा-चिन्हक रूपमे उपस्थित अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कतेक फसल बचल अथवा पक्षीक व्यवहार कियैक बदलल, कोनो परीक्षण नहि। उत्तरार्धमे आरम्भिक खेत-दृश्य पुनः आबि कथ्यक वृद्धि कम करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “बिजुका तकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८२ : छोटा कोन रहै, टिकट पहुँचबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“टिकट कोना सजै छै, दूरी गाम बदलै / स्याही मुहर लगै छै, जाल टिकट पहुँचबैए”। बीचक पाठ—“हाथ संदेश पहुँचै छै, चिट्ठी कागज मुडै / दूरी गाम जुडै छै, स्याही मुहर पडै”। अन्तिम पाँति—“दूरी गाम जुडै छै, हाथ संदेश पहुँचै / टिकट कोना रहै छै, विशाल टिकट पहुँचबैए”।

डाक-टिकटक छोटे कोनमे गामसभक दूरी समेटल गेल अछि; थैली, मुहर आ पता लिखबाक दृश्य पत्रकें यात्रा करैत वस्तु बनबैत अछि। सन्देशक प्रतीक्षा घटब मानवीय सम्पर्कक सामाजिक मूल्य दर्शबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। चिट्ठीक भीतरक स्वर नहि सुनाइत आ उत्तरक रूपान्तरण कम अछि; डाक-प्रक्रियाक वस्तु-वर्णन भावगत प्रसङ्गसँ अधिक रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण जाल, चाल, ताल, काल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “टिकट पहुँचबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८३ : धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पत्थर अंक दिसै छै, दूरी माप बदलै / मोड़ दिशा मिलै छै, कमाई पत्थर गनैए”। बीचक पाठ—“राति विश्राम मिलै छै, बाट धूलि बैसै / दूरी माप जँचै छै, मोड़ दिशा मुड़ै”। अन्तिम पाँति—“दूरी माप जँचै छै, राति विश्राम मिलै / पत्थर अंक रहै छै, सफाई पत्थर गनैए”।

मील-पाथरक अंक, मोड़ आ धूरिसँ भरल बाट यात्रीक शारीरिक गतिक स्थानीय मानचित्र रचैत अछि। गामक नामक टिकाव आ बदलैत दिशा स्थानक स्मृतिक रोचक विरोध अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अंकक अर्थ गणनात्मक सत्यापन बिना निश्चित दूरीक प्रमाण नहि; अगिला शेरसभमे पहिल दृश्य बेसी दोहराइत, यात्रा-चरित्र कम बदलैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ई”, उदाहरण कमाई, पढाई, सुनवाई, गहराई, विदाई, लडाई, सफाई; रदीफ “पत्थर गनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८४ : ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ताल नीर बहै छै, सूरज किरण फैलै / कूल घास चमकै छै, भेद कुमुद खिलैए”। बीचक पाठ—“मोन शान्ति उतरै छै, कुमुद पात नमै / सूरज किरण चमकै छै, कूल घास नमै”। अन्तिम पाँति—“सूरज किरण चमकै छै, मोन शान्ति उतरै / ताल नीर चमकै छै, विभेद कुमुद खिलैए”।

तालक नीरपर आकाशक छवि, कुमुद-पात आ माछक लहर प्रकृतिक प्रतिबिम्ब आ जीवैत गतिक संगम देखबैत अछि। एतय शान्ति निष्क्रिय नहि; पानि बदलैत अछि, तँ प्रतिबिम्ब बदलैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। एकहि जल-दृश्यक पुनरागमन रचनाक शान्त लय बनबैत अछि, मुदा विषयक नया तनाव कम अछि; जैविक अथवा मौसमी जानकारी स्वतः सिद्ध नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ेद”, उदाहरण भेद, खेद, वेद, छेद, अभेद, निषेध, विभेद; रदीफ “कुमुद खिलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८५ : गन्ध उठै, मसाला पिसैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सिल लोढा चलै छै, गन्ध रसोई जगै / धनिया पात खुलै छै, फूल मसाला पिसैए”। बीचक पाठ—“स्वाद थारी सजै छै, मसाला दाना टूटै / गन्ध रसोई सजै छै, धनिया पात डोलै”। अन्तिम पाँति—“गन्ध रसोई सजै छै, स्वाद थारी सजै / सिल लोढा घिसै छै, अनुकूल मसाला पिसैए”।

सिल-लोढाक दबाव, धनियाक पात, मिर्चक रंग आ दानाक टूटब रसोईक श्रमकें घ्राण-स्पर्श-रङ्गक दृश्य बनबैत अछि। ‘श्रम नेह बचै’क कारण भोजन तैयार करबाक अदृश्य मानवीय काजक मान बढ़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। खाद्यवस्तुक घटक आ स्वाद-वर्णनक फेरि-फेरि आवर्तनसँ रसोइ करनिहारक व्यक्तित्व कम उघड़ैत; गजल स्थानीय पदार्थमे प्रबल, पारिवारिक द्वन्द्वमे सीमित अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “लूल”, उदाहरण फूल, मूल, कूल, शूल, धूल, भूल, अनुकूल; रदीफ “मसाला पिसैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८६ : काँच हँसै, लहठी खनकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“लहठी कलाई सजै छै, साँझ दीप चमकै / टूटल टुकड़ा टूटै छै, बाट लहठी खनकैए”। बीचक पाठ—“नेह याद जगै छै, काँच रंग फैलै / साँझ दीप नमै छै, टूटल टुकड़ा तपै”। अन्तिम पाँति—“साँझ दीप नमै छै, नेह याद जगै / लहठी कलाई हिलै छै, ललाट लहठी खनकैए”।

लहठीक खनखनाहटि, काँचक रंग आ टूटल टुकड़ा सभ विधा आ बदलैत परम्पराक संवेदनशील ध्वनि-बिम्ब अछि। स्त्रीक कलाईपर सजावट मात्र नहि, हाथक चाल सेहो रखला सँ आभूषणकें देहक व्यवहारसँ सम्बन्ध भेटैत अछि। आलोचनात्मक सीमा। ‘लोक रीत बदलै’क घोषणा हेतु सामाजिक घटना नहि भेटैत। टूटल टुकड़ाक पुनरावृत्ति शिल्पगत सम्भावना अछि, मुदा नब प्रश्न पूरा खोलैत नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाट”, उदाहरण बाट, घाट, ठाट, पाट, हाट, कपाट, ललाट; रदीफ “लहठी खनकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८७ : पएर उठै, सीढ़ी चढ़बैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“सीढ़ी पएर चलै छै, हाथ डाँड चलै / नीचाँ आँगन सजै छै, हाथ सीढ़ी
चढ़बैए”। बीचक पाठ—“थकान श्वास चलै छै, छत द्वार रहै / हाथ डाँड सम्हरै
छै, नीचाँ आँगन भरै”। अन्तिम पाँति—“हाथ डाँड सम्हरै छै, थकान श्वास चलै /
सीढ़ी पएर उठै छै, गाथ सीढ़ी चढ़बैए”।

सीढ़ी चढ़ैत थाकल श्वास, डाँड धरैत हाथ आ नीचाँ छुटैत आँगन ऊँचाइक
अनुभवकें शरीरक गतिसँ मापैत अछि। ऊपर खुलैत अकास धैर्यक पुरस्कारक
दृश्य होइत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रतीकक सुन्दर निरन्तरताक बादो पुनरावृत्ति अधिक;
सीढ़ीक भौतिक यात्रा किस सामाजिक उपलब्धिक रूपक अछि से खुलल छोड़ल
गेल।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-थ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ,
नाथ, अनाथ, सनाथ, गाथ; रदीफ “सीढ़ी चढ़बैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८८८ : आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“ढेंकी थाप पड़ै छै, हाथ ताल मिलै / चाउर गन्ध रहै छै, रंग ढेंकी
कुटैए”। बीचक पाठ—“श्रम गीत उठै छै, धान दाना टूटै / हाथ ताल चलै छै,
चाउर गन्ध उठै”। अन्तिम पाँति—“हाथ ताल चलै छै, श्रम गीत उठै / ढेंकी थाप
उठै छै, प्रसंग ढेंकी कुटैए”।

ढेंकीक थाप आ ओखरिक लयक संग चाउरक गन्ध जुड़िते श्रम लोकसंगीत बनैत
अछि। माय-स्मृति आ धानक दाना टूटबाक क्रम कृषि सँ रसोइ धरि स्त्री-श्रमक
अव्यक्त इतिहास देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा । कियो श्रमिक स्त्रीक स्वर प्रत्यक्ष नहि; 'गीत'क लयक उल्लेख अछि मुदा कोनो विशिष्ट गीत-पाँति नहि । अंतिम शेरसभ वस्तु-सूचीक पुनरुक्तिक सीमा धरैत अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, तरंग, उमंग, प्रसंग; रदीफ “ढेंकी कुटैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८८९ : ओस काँपै, पाला जमैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ८८९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“पाला घास नमै छै, सूरज किरण फैलै / माटि ठंड पडै छै, बोल पाला जमैए” । बीचक पाठ—“खेतीहर आस जगै छै, ओस बूँद पडै / सूरज किरण चमकै छै, माटि ठंड बढै” । अन्तिम पाँति—“सूरज किरण चमकै छै, खेतीहर आस जगै / पाला घास डोलै छै, झोल पाला जमैए” ।

ओस, पाला, खेत आ गरम होइत दिनक दृश्य समयक बहुत महीन परिवर्तन अनुभूति बनबैत अछि । किसानक आस पातक किनार बदलला पर निर्भर अछि—एहि कारण मौसम निजी श्रमक प्रश्न होइत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । पाला सँ वास्तविक कृषि-क्षति वा तापमानक तथ्य नहि; दृश्य-साधना सुन्दर, मुदा शेरसभ बारम्बार एही खेत-भोरक चित्रमा अटकल अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोल”, उदाहरण बोल, डोल, खोल, मोल, तोल, गोल, झोल; रदीफ “पाला जमैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८१० : समुद्र बीच सूइ बतबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“सूइ दिशा मुडै छै, समुद्र लहर सरै / कूल दूरी मापै छै, भाव सूइ
बतबैए”। बीचक पाठ—“यात्रा प्रश्न उठै छै, नाविक हाथ गढै / समुद्र लहर डोलै
छै, कूल दूरी घटै”। अन्तिम पाँति—“समुद्र लहर डोलै छै, यात्रा प्रश्न उठै / सूइ
दिशा खुलै छै, लगाव सूइ बतबैए”।

समुद्रमे सूइक दिशा, कूलक दूरी आ बदलैत मेघ नाविकक निर्णयक आधार-बिम्ब
अछि। नक्शाक कोर आ हाथक अनुभवक जोड़ सैद्धान्तिक दिशा आ व्यवहारक
भेद खोलैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पथक परिवर्तनक विशिष्ट संकट वा बचाव अनुपस्थित;
दिशा सूई रूपक अछि, प्रमाणित समुद्री नेविगेशनक विधि नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाव”, उदाहरण भाव, चाव, नाव,
ठाव, दाव, घाव, लगाव; रदीफ “सूइ बतबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८११ : जंगल साँस ले, पगडंडी मुडैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८११ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“पगडंडी जंगल खुलै छै, पएर माटि नमै / पाखी स्वर बजै छै, धीर
पगडंडी मुडैए”। बीचक पाठ—“दिशा चिन्ह दिसै छै, पात सोर मिलै / पएर माटि
रहै छै, पाखी स्वर उठै”। अन्तिम पाँति—“पएर माटि रहै छै, दिशा चिन्ह दिसै /
पगडंडी जंगल गहिरै छै, शरीर पगडंडी मुडैए”।

जंगलक पगडंडी, झरनाक उजास, पक्षीक स्वर आ पातक सरसराहट यात्रीक
दृष्टि आ श्रवणकँ एकसंग लऽ चलैत अछि। दिशा-चिन्हक भूमिका प्रकृतिक
सौन्दर्य आ व्यवहारिक राह खोजबाक दोसर भेद बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। यात्राक अन्त वा संकट नहि; अनेक बिम्बक पुनरावर्तन सँ
जंगलक विशिष्ट वनस्पतिक जीवन कम उघड़ैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “नीर”, उदाहरण धीर, नीर, तीर, पीर, अधीर, गंभीर, शरीर; रदीफ “पगडंडी मुडैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८१२ : तिनका जुड़ै, घोंसला बसैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“घोंसला डारि डोलै छै, अंडा उष्मा रहै / पवन डोल रहै छै, काज घोंसला बसैए” । बीचक पाठ—“छौना पाँखि फैलै छै, पाखी चोंच जुटै / अंडा उष्मा फैलै छै, पवन डोल बढ़ै” । अन्तिम पाँति—“अंडा उष्मा फैलै छै, छौना पाँखि फैलै / घोंसला डारि नमै छै, इलाज घोंसला बसैए” ।

पाखीक घोंसला तिनकासँ बनैत अछि; अंडाक गरमाहटि, डोलैत डारि आ छौनाक पाँखि घरकें निर्माण आ जोखिम दुनूक बिम्ब बनबैत अछि । छोट श्रमसँ एकत्र संरचना बनबाक अर्थ गजलक सौम्य शक्ति अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । पाखीक प्रजाति, ऋतु वा वास्तविक व्यवहार नहि चिन्हित; ई प्रकृति-दृश्य प्रतीकात्मक अछि । उत्तरार्धमे शुरूक तिनका-डारि-पवन फेर फेर लौटैत अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ाज”, उदाहरण काज, साज, लाज, राज, समाज, अनाज, इलाज; रदीफ “घोंसला बसैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८१३ : कपड़ा भीजै, रंगरेज रँगैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“रंगरेज हाथ चलै छै, रंग घोल गहिरै / सूता रेखा उभरै छै, बात रंगरेज रँगैए” । बीचक पाठ—“श्रम गन्ध उठै छै, कपड़ा रंग फैलै / रंग घोल बदलै छै,

सूता रेखा खुलै”। अन्तिम पाँति—“रंग घोल बदलै छै, श्रम गन्ध उठै / रंगरेज हाथ गढ़ै छै, आघात रंगरेज रँगैए”।

रंगरेजक घोल, भीजल कपड़ा, कड़ाही आ धूपमे सुकैत सूत वस्त्रक रंगकें श्रमिक प्रक्रियासँ जोड़ैत अछि। बाह्य परिधान चमकैत अछि, मुदा ओकर पाछाँक हाथक मेहनत प्रमुख बिम्ब बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। रंगक उत्पत्ति, पानीक उपयोग अथवा बाजारक मूल्यक प्रश्न पाठ नहि खोलैत। किछु अन्तिम शेरमे ‘रंग घोल’क फेरि-फेरि उल्लेख रचना-संरचनाकें स्थिर करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, जात, घात, प्रभात, आघात; रदीफ “रंगरेज रँगैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८९४ : गाम गोल बैसै, सभा सुनैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८९४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सभा आँगन भरै छै, युवा प्रश्न खुलै / कागज निर्णय बदलै छै, माप सभा सुनैए”। बीचक पाठ—“हक मान बढ़ै छै, लोक गोल बनै / युवा प्रश्न बढ़ै छै, कागज निर्णय बनै”। अन्तिम पाँति—“युवा प्रश्न बढ़ै छै, हक मान बढ़ै / सभा आँगन जगै छै, प्रताप सभा सुनैए”।

आँगनक गोल सभामे युवाक प्रश्न, वृद्धक स्मृति आ मायकें स्वर संग आयब गाँवक विचारप्रक्रियाकें बहुपक्षी बनबैत अछि। लिखित निर्णय आ बोलल सहमतिक बीचक अन्तर एहिमे संभावित लोकतान्त्रिक तनाव अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कोन विवादपर सभा बैसल, ककर मत अस्वीकृत भेल—ई स्पष्ट नहि; असहमतिक कठिन परिणाम बिना सहमतिक चित्र कुछ आदर्शीकृत रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-प”, उदाहरण माप, छाप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप; रदीफ “सभा सुनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८१५ : धूलि हटै, अलमारी खुलबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“अलमारी ताला लगै छै, हस्तलिपि रेखा दिसै / दीमक चिन्ह मिलै छै, देश अलमारी खुलबैए”। बीचक पाठ—“पाठक हाथ चलै छै, पोथी गन्ध फैलै / हस्तलिपि रेखा उभरै छै, दीमक चिन्ह दिसै”। अन्तिम पाँति—“हस्तलिपि रेखा उभरै छै, पाठक हाथ चलै / अलमारी ताला खुलै छै, परिवेश अलमारी खुलबैए”।

अलमारीमे बन्द हस्तलिपि, दीमकक चिन्ह, धूलि आ तारीख इतिहास-रक्षाक ठोस भौतिक सन्दर्भ अछि। पाण्डुलिपि खोलबाक काज पाठकक अनाम पुरान हाथसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। हस्तलिपिक मूलपन, पृष्ठक क्षति आ प्रमाण-शृंखला बिना आलोचनात्मक जाँचक विषय अछि; कविता स्वयं ई प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि दैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ेश”, उदाहरण देश, वेश, प्रवेश, संदेश, निर्देश, अवशेष, परिवेश; रदीफ “अलमारी खुलबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८१६ : लहर चढ़ै, पदचिह्न मिटैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बालू पदचिह्न दिसै छै, पवन झोंका बहै / यात्री दूरी मापै छै, करार पदचिह्न मिटैए”। बीचक पाठ—“याद क्षण सरै छै, नदी कूल दिसै / पवन झोंका सरै छै, यात्री दूरी घटै”। अन्तिम पाँति—“पवन झोंका सरै छै, याद क्षण सरै / बालू पदचिह्न मिटै छै, संस्कार पदचिह्न मिटैए”।

बालूपर पदचिह्न बनव आ लहरमे मेटाइव स्मृतिक क्षणभङ्गुरता दिखबैत अछि। यात्रीक पएरक दिशा आ नदीक काल एकहि सतहपर परस्पर भिडैत अछि—यही गजलक प्रत्यक्ष शिल्पगत प्रभाव अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अन्तिम शेरसभ पहिल पदचिह्न-पवन-लहरक छवि फेर आवर्तित करैत, अर्थक नव परत कम जोड़ैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण करार, विचार, उद्धार, संसार, आकार, प्रचार, संस्कार; रदीफ “पदचिह्न मिटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८९७ : धूलि उठै, घोड़ा दौड़ैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८९७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“घोड़ा टाप बजै छै, सवार पएर उठै / बाट दूरी मापै छै, कमान घोड़ा दौड़ैए”। बीचक पाठ—“श्रम श्वास चलै छै, मैदान धूलि बैसै / सवार पएर नमै छै, बाट दूरी घटै”। अन्तिम पाँति—“सवार पएर नमै छै, श्रम श्वास चलै / घोड़ा टाप उठै छै, निधान घोड़ा दौड़ैए”।

घोड़ाक टापक ताल, लगामक दबाव आ मैदानक उड़ैत धूरि यात्राकै ध्वनि आ गति बनबैत अछि। सवारक लक्ष्य आ घोड़ाक श्रम अलग अनुभूतिसँ संग चलैत अछि। आलोचनात्मक सीमा। घोड़ा मात्र उपकरण बनि रहबाक जोखिम अछि; जीवक पीड़ा आ विश्रामक दृष्टि कम अछि। घुड़सवारीक वास्तविक ऐतिहासिक काल वा थान स्रोतसँ नहि सिद्ध।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण कमान, मैदान, अरमान, उडान, प्रमाण, सम्मान, निधान; रदीफ “घोड़ा दौड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८१८ : रेखा बोलै, चित्र उभरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“चित्र रेखा खुलै छै, कमल पात नमै / बाँस सीमा बदलै छै, ठोर चित्र उभरैए”। बीचक पाठ—“रंग कथा खुलै छै, कागज रंग फैलै / कमल पात खुलै छै, बाँस सीमा बनै”। अन्तिम पाँति—“कमल पात खुलै छै, रंग कथा खुलै / चित्र रेखा दिसै छै, नोर चित्र उभरैए”।

मधुबनी शैलीक परिचित कमल, माछ, बाँसक सीमा आ स्त्री-आँखिक रूपक संग चित्र बनबाक हस्तगत प्रक्रिया आबैत अछि। रेखाक फेरबदल लोकचित्रक परम्परा स्थिर नहि, सतत काज अछि—एहि विचारक काव्यात्मक रूप अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कियो प्रमाणित चित्रकार अथवा शैली-विन्यासक तकनीकी विवरण नहि; कतिपय चित्र-तत्त्वक सूचीकरण पुनरावृत्तिमय रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण ठोर, सोर, भोर, कोर, छोर, डोर, नोर; रदीफ “चित्र उभरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ८१९ : श्वास उठै, शंख गुँजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ८१९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“शंख सोर उठै छै, लहर ध्वनि फैलै / नदी घाट खुलै छै, प्रकाश शंख गुँजैए”। बीचक पाठ—“लोक स्मृति जगै छै, भोर आँगन जगै / लहर ध्वनि मिलै छै, नदी घाट जगै”। अन्तिम पाँति—“लहर ध्वनि मिलै छै, लोक स्मृति जगै / शंख सोर मिलै छै, आकाश शंख गुँजैए”।

शंखध्वनि श्वाससँ उठि घाट, लहर आ लोक-स्मृतिमे पसरैत अछि; एहि कारण धार्मिक ध्वनि व्यक्ति-सामूहिक अनुभवक सेतु होइत अछि। ‘मौन कोर’क उपस्थिति शब्दक पार्श्वमे निस्सब्दता रखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। विशिष्ट पूजा, समुदाय वा परम्पराक सन्दर्भ नहि; रूपकक आधार शंखक अनुभव अछि, न कि प्रमाणित अनुष्ठानक इतिहास।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण प्रकाश, निवास, उच्छ्वास, विश्वास, विकास, इतिहास, आकाश; रदीफ “शंख गुँजैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९०० : नीर पार खुलै, क्षितिज पसारैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९०० मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“क्षितिज रेखा खुलै छै, नाव दूरी बढै / सूरज किरण चमकै छै, अतीत क्षितिज पसारैए” । बीचक पाठ—“मोन यात्रा चलै छै, समुद्र नीर चमकै / नाव दूरी मापै छै, सूरज किरण पडै” । अन्तिम पाँति—“नाव दूरी मापै छै, मोन यात्रा चलै / क्षितिज रेखा दिसै छै, विपरीत क्षितिज पसारैए” ।

नावसँ दूर होइत क्षितिज, पाखीक उड़ान, भोरक बदलैत रंग आ समुद्रक लहर आकाश-जलक विस्तारित यात्रा-चित्र अछि । ‘अतीत’ आ ‘प्रीत’क काफियासँ बाहरी दूरी आ भीतरक समयक सम्बन्ध बनेबाक प्रयत्न देखाइत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । एहि रचनामे क्षितिज-लहर-नावक शब्द बारम्बार घुरैत छथि; भावगत प्रगति सीमित रहबाक कारण बाहरी विस्तारक बावजूद कथ्य पुनरावृत्त होइत अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण अतीत, संगीत, प्रीत, मीत, रीत, जीत, विपरीत; रदीफ “क्षितिज पसारैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ८८१-९०० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
८८१	धान डोलै, बिजुका तकैए	बिजुका तकैए

८८२	छोट कोन रहै, टिकट पहुँचबैए	टिकट पहुँचबैए
८८३	धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए	पत्थर गनैए
८८४	ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए	कुमुद खिलैए
८८५	गन्ध उठै, मसाला पिसैए	मसाला पिसैए
८८६	काँच हँसै, लहठी खनकैए	लहठी खनकैए
८८७	पाएर उठै, सीढ़ी चढबैए	सीढ़ी चढबैए
८८८	आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए	ढेंकी कुटैए
८८९	ओस काँपै, पाला जमैए	पाला जमैए
८९०	समुद्र बीच सूइ बतबैए	सूइ बतबैए
८९१	जंगल साँस ले, पगडंडी मुडैए	पगडंडी मुडैए
८९२	तिनका जुडै, घोंसला बसैए	घोंसला बसैए
८९३	कपडा भीजै, रंगरेज रँगैए	रंगरेज रँगैए
८९४	गाम गोल बैसै, सभा सुनैए	सभा सुनैए
८९५	धूलि हटै, अलमारी खुलबैए	अलमारी खुलबैए
८९६	लहर चढै, पदचिह्न मिटैए	पदचिह्न मिटैए
८९७	धूलि उठै, घोड़ा दौडैए	घोड़ा दौडैए
८९८	रेखा बोलै, चित्र उभरैए	चित्र उभरैए

८९९	श्वास उठै, शंख गुँजैए	शंख गुँजैए
९००	नीर पार खुलै, क्षितिज पसारैए	क्षितिज पसारैए

गजल ९०१ : पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९०१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पोखर नीर चमकै छै, जल फूल डोलै / डोंगी चाल रुकै छै, सार मखान खिलैए”। बीचक पाठ—“बीज कोर जगै छै, मखान पात नमै / जल फूल उठै छै, डोंगी चाल चलै”। अन्तिम पाँति—“जल फूल उठै छै, बीज कोर जगै / पोखर नीर डोलै छै, पुकार मखान खिलैए”।

मखानक पोखरिमे फूलसँ बीज धरि गतिक जे क्रम अछि, से मौसमी श्रमक पूर्वभूमि बनबैत अछि; पात, कुहरा आ नीरक परस्पर छवि स्थानीय जलकृषिक सौन्दर्य उघारैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। किसानक श्रम, बीया चुनब आ फसलक कठिन प्रक्रिया अप्रकट अछि; पोखरिक सौन्दर्य उत्पादक जीवनक सम्पूर्ण इतिहास नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “मखान खिलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९०२ : ओस पात चमकै, नेह पात महकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९०२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पान पात चमकै छै, माटि गन्ध फैलै / चुन रेखा घटै छै, मान पात महकैए”। बीचक पाठ—“डलिया पात सजै छै, बाड़ी बेल फैलै / माटि गन्ध रहै छै, चुन रेखा दिसै”। अन्तिम पाँति—“माटि गन्ध रहै छै, डलिया पात सजै / पान पात डोलै छै, सम्मान पात महकैए”।

पानक बाड़ीमे पात-माटिक गन्ध, डलिया आ बेलक सहविकास औजार आ फसलक सूक्ष्म सम्बन्ध देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। रचना पान खेतीक मूर्त वस्तु गनबैत अछि मुदा खेतीहरक आर्थिक स्थिति आ विक्रयक जोखिम नहि खोलैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “पात महकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३ : सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सुजनी सूत जुड़ै छै, रंग धागा तनै / कथा रेखा बदलै छै, प्रीत सुजनी सजैए”। बीचक पाठ—“पुरान टुकड़ा जुड़ै छै, कपड़ा कोर सजै / रंग धागा जुड़ै छै, कथा रेखा उभरै”। अन्तिम पाँति—“रंग धागा जुड़ै छै, पुरान टुकड़ा जुड़ै / सुजनी सूत तनै छै, संगीत सुजनी सजैए”।

सुजनीमे बचल पुरान कपड़ाक टुकड़ा रंगीन सूतसँ जुड़ैत अछि; मायकें हाथ पारिवारिक स्मृति आ पुनःप्रयोगकें एके क्रियामे समेटैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कला बननिहारक अलग व्यक्तित्व नहि; उत्तरार्धक टुकड़ा-धागा-कोर आवर्तन सीमित नव अर्थ दैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “सुजनी सजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९०४ : रेशा तनै, मान सिक्की जुडैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९०४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“सिक्की रेशा तनै छै, धूप तिनका चमकै / घर कोना चमकै छै, नोर
सिक्की जुडैए”। बीचक पाठ—“हाट मोल जँचै छै, डलिया घेर बढै / धूप तिनका
मुडै छै, घर कोना सजै”। अन्तिम पाँति—“धूप तिनका मुडै छै, हाट मोल जँचै /
सिक्की रेशा जुडै छै, कोर सिक्की जुडैए”।

सिक्कीक तिनका धूपमे सुखलापर रेशा आ रंग-पट्टी बनैत अछि; एहि प्रक्रियामे
हाटक मोल कारीगरक श्रमकें सामाजिक मान दैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कतेक मूल्य ककरा भेटल तकर विवरण नहि; सामग्रीक
सौन्दर्य आर्थिक असमानताक स्पष्ट प्रमाण नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर,
भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “सिक्की जुडैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९०५ : पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९०५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“सामा मूर्ति सजै छै, आँगन गोल बनै / माटि रंग बदलै छै, आस सामा
गबैए”। बीचक पाठ—“लोक कथा जगै छै, चकेवा पाँखि उठै / आँगन गोल रहै
छै, माटि रंग चढ़ै”। अन्तिम पाँति—“आँगन गोल रहै छै, लोक कथा जगै /
सामा मूर्ति बनै छै, श्वास सामा गबैए”।

सामा-चकेवाक मूर्ति, गोल आँगन आ चकेवाक पाँखि लोककथाकें सामूहिक
अभिनयक रूप दैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। लोकगीतक वास्तविक पाँति वा रीति-क्रम नहि, तँ
परम्पराक विशिष्ट पाठभेद एतयसँ निर्धारित नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “सामा गबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६ : व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मधु कथा खुलै छै, फूल गन्ध फैलै / व्रत स्मृति घुरै छै, नाम कथा गुँजैए”। बीचक पाठ—“बरखा बूँद पड़ै छै, श्रावण मेघ सँ / फूल गन्ध रहै छै, व्रत स्मृति जगै”। अन्तिम पाँति—“फूल गन्ध रहै छै, बरखा बूँद पड़ै / मधु कथा बढै छै, आयाम कथा गुँजैए”।

श्रावणक मेघ, मधुक गन्ध आ आँगनक व्रतकथा समयकेँ ऋतु आ सामूहिक स्वरमे बाँधैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कथाक कथानक वा पात्र नहि; ‘रीत बचै’क निष्कर्ष प्रत्यक्ष समाजशास्त्रीय परीक्षण नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “कथा गुँजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७ : आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आँगन माटि नमै छै, कमल आकृति खुलै / पूजा ठाम जगै छै, चाल अरिपन खिलैए”। बीचक पाठ—“बालक आँखि तँकै छै, चाउर घोल गाढै / कमल आकृति बदलै छै, पूजा ठाम सजै”। अन्तिम पाँति—“कमल आकृति बदलै छै, बालक आँखि तँकै / आँगन माटि सजै छै, विशाल अरिपन खिलैए”।

चाउर-घोलसँ कमलक आकृति बनैत बालकक आँखिक चमक अरिपनकें केवल सजावट नहि, ज्ञानक दृश्यात्मक हस्तान्तरण करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कलाक रेखा-प्रकार आ कलाकारक निर्णय नहि खुलैत; दोहरायल 'आँगन-कमल' प्रतीक पर्याप्त प्राविधिक इतिहास नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “अरिपन खिलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९०८ : भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९०८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आम मंजर महकै छै, गाछ डारि नमै / किसान दृष्टि रहै छै, भाव मंजर महकैए”। बीचक पाठ—“ऋतु चाल बदलै छै, भोर पवन सरै / गाछ डारि फैलै छै, किसान दृष्टि तकै”। अन्तिम पाँति—“गाछ डारि फैलै छै, ऋतु चाल बदलै / आम मंजर डोलै छै, अभाव मंजर महकैए”।

आमक मोजर, भोरक पवन आ मधुमाच्छिक समूह ऋतु-परिवर्तनकें गन्ध, गति आ परागणक सम्भावनासँ देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। गजलक प्राकृतिक संकेतकें पादप-विज्ञानक प्रमाणित गणना नहि बनाउ; बादक शेरमे दृश्यगत विविधता सीमित।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव; रदीफ “मंजर महकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९ : पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“सरसों फूल डोलै छै, किसान पएर रुकै / पवन लहर डोलै छै, रंग सरसों हँसैए”। बीचक पाठ—“दूर गाम दिसै छै, पीयर खेत चमकै / किसान पएर मुडै छै, पवन लहर उठै”। अन्तिम पाँति—“किसान पएर मुडै छै, दूर गाम दिसै / सरसों फूल खिलै छै, तरंग सरसों हँसैए”।

सरिसोक पीयर फूलक आगाँ रुकैत किसान दृश्यकें श्रमसँ जोड़ैत अछि; दूरक गाम आ माटिक गन्ध रङ्गकें अपन भूमिक स्मृति बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फूल, खेत आ किसानक आवर्तन सुंदर मुदा फसल-जीविका-बाजारक जटिल प्रश्न नहि खोलैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग; रदीफ “सरसों हँसैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११० : गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“ताड़ पात सूखै छै, देह श्वास सम्हरै / पुरखा कला बदलै छै, सार पंखा डोलैए”। बीचक पाठ—“पवन लहर उठै छै, हाथ पंखा चलै / देह श्वास बढ़ै छै, पुरखा कला बचै”। अन्तिम पाँति—“देह श्वास बढ़ै छै, पवन लहर उठै / ताड़ पात मुडै छै, पुकार पंखा डोलैए”।

ताड़-पातक हाथ-पंखा देहक गरमी घटाबयक ठोस काज अछि; पवनक लहर मानवीय हाथक श्रमसँ जुड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पंखाक उपयोगबारे एके गति दोहरबैत शेर नव कथात्मक परिस्थिति कम जोड़ैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “पंखा डोलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९११ : माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९११ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कुम्हार माटि नमै छै, नीर शीत रहै / हाथ थाप उठै छै, मान घड़ा झनकैए”। बीचक पाठ—“घर प्यास जगै छै, घड़ा देह सूखै / नीर शीत बढै छै, हाथ थाप पडै”। अन्तिम पाँति—“नीर शीत बढै छै, घर प्यास जगै / कुम्हार माटि गढै छै, सम्मान घड़ा झनकैए”।

माटिक घड़ा ठंढा पानिक अनुभवसँ कुम्हारक चाक आ भट्टीक श्रमक परिणामक महत्त्व बढैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। घड़क पदार्थगत गुणक वैज्ञानिक तुलना नहि; माटि-नीर-ठंढक आवर्तन एक बिन्दुपर घूमैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “घड़ा झनकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९१२ : कपड़ा फाटै, नेह सुई सिअैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९१२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सुई नोक चमकै छै, हाथ चाल रुकै / नव टाँक बढै छै, प्रीत सुई सिअैए”। बीचक पाठ—“घर काज चलै छै, धागा डोर जुडै / हाथ चाल मुडै छै, नव टाँक पडै”। अन्तिम पाँति—“हाथ चाल मुडै छै, घर काज चलै / सुई नोक घुसै छै, संगीत सुई सिअैए”।

फाटल कपड़ा सीबैत सुईक नोक आ हाथक गति मरम्मतकँ घरेलू स्नेहक सक्रिय रूप बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सीबनिहारक श्रम, किस कपड़ाक मरम्मत आ ककरा लेल—
ई कथात्मक प्रसङ्ग नहि खुलैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत,
मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “सुई सिअैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९१३ : डारि हिलै, चाव झूला डोलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९१३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“आम डारि डोलै छै, पवन झोंका बहै / आँगन सोर बजै छै, नोर झूला
डोलैए”। बीचक पाठ—“माय दृष्टि तकै छै, झूला रस्सी डोलै / पवन झोंका सारै
छै, आँगन सोर उठै”। अन्तिम पाँति—“पवन झोंका सारै छै, माय दृष्टि तकै /
आम डारि नमै छै, कोर झूला डोलैए”।

आमक डारिसँ झूलाक रस्सी आ ओकरा तकैत माय—एहि दृश्यमे बालखेल आ
मातृ-सुरक्षा एकहि संग उपस्थिति पबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। झूलाक गति बारम्बार चित्रित अछि, मुदा बालकक स्वतंत्र
स्वर वा खेलक तनाव कम अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर,
भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “झूला डोलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९१४ : पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९१४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“पुरान कुण्ड रहै छै, भोर किरण फैलै / पूजा फूल झरै छै, आस कुण्ड

चमकैए”। बीचक पाठ—“काल दाग पड़ै छै, पाथर सीढ़ी चढ़ै / भोर किरण चमकै छै, पूजा फूल तैरै”। अन्तिम पाँति—“भोर किरण चमकै छै, काल दाग पड़ै / पुरान कुण्ड खुलै छै, श्वास कुण्ड चमकैए”।

पुरनका कुण्डक पाथर-सीढ़ीपर पीढ़ी-पएरक आवाज समयकें ठोस घिसाइब बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कुण्डक निर्माण-काल अथवा ऐतिहासिक स्रोत नहि; दाग पड़ल पाथर केवल चित्ररूपें प्राप्त अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “कुण्ड चमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९१५ : माथ सजै, मान पाग दमकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९१५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मिथिला पाग सजै छै, सभा दृष्टि फिरै / व्यक्ति चाल बदलै छै, नाम पाग दमकैए”। बीचक पाठ—“सम्मान भाव जगै छै, माथ मान बचै / सभा दृष्टि मिलै छै, व्यक्ति चाल चलै”। अन्तिम पाँति—“सभा दृष्टि मिलै छै, सम्मान भाव जगै / मिथिला पाग दमकै छै, आयाम पाग दमकैए”।

मिथिलाक पाग सम्मानक दृश्यचिह्न अछि; माथपर राखल वस्तुक संग सभा-दृष्टि आ बदलैत परम्पराक संवाद बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पाग पहिरबाक सामाजिक अधिकारक असमानता अथवा संदर्भक भेद कविता नहि खोलैत; सामूहिक सम्मानक चित्र आदर्शीकृत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “पाग दमकैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६ : भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“चूडा दाना मिलै छै, भोर थारी भैर / नेह बात बढै छै, चाल भोज सजैए”। बीचक पाठ—“सादा स्वाद मिलै छै, दही कटोरी सजै / भोर थारी चमकै छै, नेह बात उठै”। अन्तिम पाँति—“भोर थारी चमकै छै, सादा स्वाद मिलै / चूडा दाना नमै छै, विशाल भोज सजैए”।

चूडा-दहीक भोरक थारी सादा भोजनकें घरक सभ लोकक संग बैसबक रूपमे सामाजिक नेह दैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। भोजन बननिहारक श्रम आ ककरा थारी नहि भेटल, ई प्रश्न छूटैत अछि; वस्तु-सूची अपना आपमे समग्र संस्कृति नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “भोज सजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७ : कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“कागज देह तनै छै, बालक आँखि चमकै / पवन झोंका सरै छै, भाव लालटेन जरैए”। बीचक पाठ—“आकाश ठाम खुलै छै, लालटेन दीप चमकै / बालक आँखि खुलै छै, पवन झोंका उठै”। अन्तिम पाँति—“बालक आँखि खुलै छै, आकाश ठाम खुलै / कागज देह मुडै छै, अभाव लालटेन जरैए”।

कागजक बनल आकृति आ लालटेनक प्रकाश बालकक कल्पनाकें हाथक साधारण सामग्रीसँ उघारैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। शीर्षकक ‘जरब’ कोनो वास्तविक आगि वा कागजक विनाश अछि कि प्रकाशक प्रतीक, एहि द्वैतक विस्तार कम भेटैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ाव”, उदाहरण भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव; रदीफ “लालटेन जरैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९१८ : अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९१८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“जुगनू देह चमकै छै, बालक आँखि खुलै / क्षण दीप चमकै छै, रंग जुगनू चमकैए” । बीचक पाठ—“मौन सोर रहै छै, राति अन्हार बढै / बालक आँखि चमकै छै, क्षण दीप जगै” । अन्तिम पाँति—“बालक आँखि चमकै छै, मौन सोर रहै / जुगनू देह उडै छै, तरंग जुगनू चमकैए” ।

अन्हारक भीतर जुगनूक छोट इजोत आ देखैत बालकक आँखि आकारक अल्पता आ प्रभावक गहराइ अलग करैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । जुगनूक प्राकृतिक चमककें रहस्यात्मक ज्ञानक तथ्य नहि मानब; राति आ इजोतक आवर्तन भिन्न घटनाकें सीमित करैत अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग; रदीफ “जुगनू चमकैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९१९ : फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९१९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“मौलश्री फूल महकै छै, पात छाह सरै / याद कोर खुलै छै, सार मौलश्री झरैए” । बीचक पाठ—“ऋतु चाल बदलै छै, मोर आँगन जगै / पात छाह डोलै छै, याद कोर जगै” । अन्तिम पाँति—“पात छाह डोलै छै, ऋतु चाल बदलै / मौलश्री फूल झरै छै, पुकार मौलश्री झरैए” ।

मौलश्री फूलक झरब, गाछक छाह आ भोरक गन्ध ऋतु आ स्मृतिमे क्षय-
नवीनताक सौम्य सहअस्तित्व रचैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। एकहि फूल-पात-गन्धक चक्रक पुनरावृत्ति पात्र वा
स्थितिक परिवर्तन विकसित नहि करैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार,
विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “मौलश्री झरैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२० : पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १२० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“काठ खड़ाऊँ बजै छै, मन्दिर द्वार रहै / काठ घाव घटै छै, मान खड़ाऊँ
बजैए”। बीचक पाठ—“समय चिह्न दिसै छै, पाथर बाट घिसै / मन्दिर द्वार मिलै
छै, काठ घाव दिसै”। अन्तिम पाँति—“मन्दिर द्वार मिलै छै, समय चिह्न दिसै /
काठ खड़ाऊँ चलै छै, सम्मान खड़ाऊँ बजैए”।

काठक खड़ाऊँक ठकठक आ घिसैत पाथरक बाट अतीतक रीति के पएरक दैनिक
गतिसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कियो ऐतिहासिक यात्राक प्रमाण नहि; मन्दिरक अनाम
ठाम आ दोहरायल ध्वनि प्रतीकात्मक रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,
विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “खड़ाऊँ बजैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१-१२० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
-----	------------------	-----------

९०१	पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए	मखान खिलैए
९०२	ओस पात चमकै, नेह पात महकैए	पात महकैए
९०३	सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए	सुजनी सजैए
९०४	रेशा तनै, मान सिक्की जुड़ैए	सिक्की जुड़ैए
९०५	पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए	सामा गबैए
९०६	व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए	कथा गुँजैए
९०७	आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए	अरिपन खिलैए
९०८	भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए	मंजर महकैए
९०९	पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए	सरसों हँसैए
९१०	गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए	पंखा डोलैए
९११	माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए	घड़ा झनकैए
९१२	कपड़ा फाटै, नेह सुई सिअैए	सुई सिअैए
९१३	डारि हिलै, चाव झूला डोलैए	झूला डोलैए
९१४	पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए	कुण्ड चमकैए
९१५	माथ सजै, मान पाग पाग दमकैए	पाग दमकैए

	दमकैए	
९१६	भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए	भोज सजैए
९१७	कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए	लालटेन जरैए
९१८	अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए	जुगनू चमकैए
९१९	फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए	मौलश्री झरैए
९२०	पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए	खड़ाऊँ बजैए

गजल ९२१ : ओस पड़ै, भोर जाल चमकैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९२१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि ।
आरम्भ—“मकड़ी जाल तनै छै, घास डारि नमै / पवन झोंका सरै छै, प्रीत जाल
चमकैए” । बीचक पाठ—“क्षण छवि दिसै छै, भोर ओस चमकै / घास डारि रहै छै,
पवन झोंका उठै” । अन्तिम पाँति—“घास डारि रहै छै, क्षण छवि दिसै / मकड़ी
जाल जुड़ै छै, संगीत जाल चमकैए” ।

मकड़ीक जालपर भोरक ओसक चमक सूक्ष्म रेखाकें क्षणिक कलाकृति बनबैत
अछि; पवन-डारिक गति पाठकक ध्यान छोट पैमानापर लऽ जाइत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । क्षणक मोहक छविक पाछाँ नव अर्थ-विरोध न्यून अछि;
समान दृश्य-पदक क्रमिक पुनरावृत्ति अधिक ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत,
मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “जाल चमकैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९२२ : धान रोपै, गीत रोपनी गबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९२२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“धान रोपनी चलै छै, हाथ पौधा रोपै / मेघ छाह घेरै छै, नोर रोपनी गबैए”। बीचक पाठ—“श्रम ताल बजै छै, खेत नीर डोलै / हाथ पौधा छोड़ै छै, मेघ छाह पड़ै”। अन्तिम पाँति—“हाथ पौधा छोड़ै छै, श्रम ताल बजै / धान रोपनी बढै छै, कोर रोपनी गबैए”।

पानिसँ भरल खेतमे रोपनीक हाथ, धानक पौधा आ सामूहिक गीत श्रम आ लयक अन्तरंग सम्बन्ध देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। गीतक वास्तविक शब्द नहि भेटैत आ खेतक मजदूरी/स्वामित्वक सम्बन्ध अनकहल अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “रोपनी गबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९२३ : घाट पएर चलै, नोर गगरी छलकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९२३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पनिहार गगरी भैरै छै, माथ भार नमै / घर प्यास बढै छै, आस गगरी छलकैए”। बीचक पाठ—“बाट बात उठै छै, घाट सीढ़ी चढै / माथ भार रहै छै, घर प्यास जगै”। अन्तिम पाँति—“माथ भार रहै छै, बाट बात उठै / पनिहार गगरी छलकै छै, श्वास गगरी छलकैए”।

घाटसँ गगरी उठाकऽ माथपर राखनिहार स्त्रीक पएरक चढ़ाइ घरेलू जलश्रमक देहगत भारक चित्र अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पनिहारिनक संवाद नहि देल गेल; घाटपरक लोक-बातक संकेत स्वतन्त्र आवाजक स्थान नहि लैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “गगरी छलकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२४ : मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १२४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बरखा मेघ सँरै छै, बालक आँखि खुलै / दूर क्षितिज रहै छै, नाम इन्द्रधनुष उभरैए”। बीचक पाठ—“क्षण छवि उभरै छै, आकाश रंग उभरै / बालक आँखि चमकै छै, दूर क्षितिज दिसै”। अन्तिम पाँति—“बालक आँखि चमकै छै, क्षण छवि उभरै / बरखा मेघ घटै छै, आयाम इन्द्रधनुष उभरैए”।

मेघ हटैत आ बालकक आँखिमे उभरैत इन्द्रधनुषक क्षण दृश्यानुभव आ आश्चर्यकें एकसंग राखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। रंगक कारण अथवा विज्ञानक दावा पाठ नहि दैत; आश्चर्यक घटना दोहराबैत शेर परिवर्तन सीमित करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “इन्द्रधनुष उभरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२५ : गाछ डोलै, पार पछिया बहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १२५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पछिया पवन बहै छै, घर द्वार बजै / पाखी पाँखि उडै छै, चाल पछिया बहैए”। बीचक पाठ—“मोन याद जगै छै, गाछ डारि नमै / घर द्वार रहै छै, पाखी पाँखि फैलै”। अन्तिम पाँति—“घर द्वार रहै छै, मोन याद जगै / पछिया पवन सँरै छै, विशाल पछिया बहैए”।

पछिया पवनसँ बजैत केवाड़ी आ डोलैत डारि घरक स्मृति जागरणक सुगठित ध्वनि-दृश्य अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्मृतिक ककरा प्रति सम्बोधन अछि, से स्पष्ट नहि; वस्तुक बारम्बार फेरबदल गीतात्मक रहितो कथात्मक घनत्व कम करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “पछिया बहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२६ : सूत तनै, सार चर्खा घूमैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १२६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“चर्खा धुरी घूमै छै, रूई रेशा जुड़ै / श्रम ताल चलै छै, सार चर्खा घूमैए”। बीचक पाठ—“कपड़ा आस जगै छै, सूत डोर जुड़ै / रूई रेशा तनै छै, श्रम ताल मिलै”। अन्तिम पाँति—“रूई रेशा तनै छै, कपड़ा आस जगै / चर्खा धुरी रुकै छै, पुकार चर्खा घूमैए”।

चर्खाक धुरीसँ रूईक रेशा सूत बनैत अछि, अतः कपड़ाक आशा प्रत्यक्ष हातक गति पर आधारित अछि।

आलोचनात्मक सीमा। चर्खा ककरा घरक अछि, धागाक विपणन कोना होइत—ई सामाजिक अर्थ विस्तार नहि पबैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “चर्खा घूमैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२७ : धान जुटै, मान बखार भैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १२७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“धान दाना जुटै छै, बाड़ी गन्ध फैलै / घर भोजन बढ़ै छै, मान बखार

भरैए”। बीचक पाठ—“चूहा बाट दिसै छै, बखार कोठी रहै / बाड़ी गन्ध रहै छै, घर भोजन जुड़ै”। अन्तिम पाँति—“बाड़ी गन्ध रहै छै, चूहा बाट दिसै / धान दाना सूखै छै, सम्मान बखार भरैए”।

धानक बखार भरलाक संग चूहाक नुकायल बाटक उल्लेख संग्रहणक उपलब्धि आ हानिक जोखिम दुनू देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अनाज संरक्षणक तकनीक अथवा भण्डारक साझा अधिकार विषय नहि; वस्तुक क्रम अधिक विवरणपर सीमित।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “बखार भरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२८ : माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १२८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“हल फाल चमकै छै, किसान पएर धँसै / बीज आस बचै छै, प्रीत फाल चमकैए”। बीचक पाठ—“खेत कोर फैलै छै, बैल चाल नमै / किसान पएर मुड़ै छै, बीज आस जगै”। अन्तिम पाँति—“किसान पएर मुड़ै छै, खेत कोर फैलै / हल फाल कटै छै, संगीत फाल चमकैए”।

हलफारक चमक, बैलक चाल आ माटिमे धँसैत खेतीहरक पएर जमीन पर श्रमक तीनगोट अनुभव दैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कृषिक उपज वा पशु-श्रमक मूल्यांकन नहि; रूपक बिम्बात्मक अछि, आर्थिक दस्तावेज नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “फाल चमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९२९ : नीर हटै, भोर चर उभरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९२९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कोसी नीर सैरै छै, पाखी झुण्ड उडै / चरवाह पएर मुडै छै, नोर चर उभरैए”। बीचक पाठ—“बाढ़ चिह्न दिसै छै, बालू चर फैलै / पाखी झुण्ड जुटै छै, चरवाह पएर चलै”। अन्तिम पाँति—“पाखी झुण्ड जुटै छै, बाढ़ चिह्न दिसै / कोसी नीर घटै छै, कोर चर उभरैए”।

कोसीक पानि उतरला पर उभरैत बालूचर आ पाखीक झुण्ड बदलैत भूभाग आ जीव-जगतक अस्थिरता देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। चारि-ऋतु अथवा नदी-मार्गक माप बिना चारक वास्तविक ऐतिहासिक निर्माण सिद्ध नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “चर उभरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९३० : पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९३० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कमल बीज पकै छै, माटि तल नुकै / पाखी सोर बजै छै, आस कमलबीज पकैए”। बीचक पाठ—“ऋतु चाल बदलै छै, पोखर नीर सैरै / माटि तल खुलै छै, पाखी सोर उटै”। अन्तिम पाँति—“माटि तल खुलै छै, ऋतु चाल बदलै / कमल बीज जगै छै, श्वास कमलबीज पकैए”।

पोखरिक गहिर माटिमे कमलबीयाक पकब जीवनक अदृश्य तैयारीकेँ ऋतु आ उजासक रूपक बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। काव्य प्रजाति-विज्ञान नहि; एकहि पोखर-बीज-नीरक आवर्तनक बाद नव द्वन्द्व कम अछि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “कमलबीज पकैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १३१ : पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १३१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“चकमक पाथर टकरै छै, राति अन्हार घटै / यात्री आँखि चमकै छै, नाम चकमक झिलमिलैए” । बीचक पाठ—“ताप कोर जगै छै, सूखल घास धधकै / राति अन्हार सरे छै, यात्री आँखि तकै” । अन्तिम पाँति—“राति अन्हार सरे छै, ताप कोर जगै / चकमक पाथर चमकै छै, आयाम चकमक झिलमिलैए” ।

चकमक पाथर टकरायलापर उठैत छोट चिनगारी रचना-विनाशक सीमा देखबैत अछि; सूखल घासक आगि कथ्यकै वास्तविक जोखिम दैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । पाथरक रसायनक विवरण नहि; प्रतीकात्मक आगि आ वास्तविक वनदाहक कारणक भेद रखब जरूरी ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “चकमक झिलमिलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १३२ : रेशा जुड़ै, प्रीत पाटी बुनैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १३२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“शीतल पाटी बुनै छै, रंग पट्टी सजै / देह आराम बढै छै, चाल पाटी बुनैए” । बीचक पाठ—“घर फर्श सजै छै, रेशा डोर जुड़ै / रंग पट्टी बदलै छै, देह

आराम मिलै”। अन्तिम पाँति—“रंग पट्टी बदलै छै, घर फर्श सजै / शीतल पाटी फैलै छै, विशाल पाटी बुनैए”।

शीतल पाटीक रेशा बुनबाक क्रम ग्रीष्मक तापमे घरेलू राहत आ हस्तशिल्पक उपयोगिताकै एकसंग देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पाटी बुननिहारक परिश्रमक पारिश्रमिक नहि; शेरसभ रंग-पट्टी आ सूतक फेरि-फेरि संयोजन करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “पाटी बुनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९३३ : तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९३३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सारंगी तार काँपै छै, राग कोर जगै / सभागार मौन टूटै छै, भाव सारंगी रुवैए”। बीचक पाठ—“स्वर लहर उठै छै, धनुष चाल मुडै / राग कोर बढ़ै छै, सभागार मौन घनै”। अन्तिम पाँति—“राग कोर बढ़ै छै, स्वर लहर उठै / सारंगी तार बजै छै, अभाव सारंगी रुवैए”।

सारंगीक कम्पैत तार आ धनुषक गति श्वास-जकाँ उठैत सुरकै नोर घटबाक भावनात्मक सम्भावनासँ जोडैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। रागक निश्चित पहिचान आ संगीतक श्रुति-साक्ष्य नहि; ध्वनि-दृश्य ही आलोचनाक वैध आधार अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव; रदीफ “सारंगी रुवैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १३४ : पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १३४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“तिलकोर पात लहरै छै, रसोई हाथ काटै / बाड़ी पवन डोलै छै, रंग
तिलकोर लहरैए”। बीचक पाठ—“घर स्वाद जगै छै, तिलकोर बेल फैलै / रसोई
हाथ मिलै छै, बाड़ी पवन उठै”। अन्तिम पाँति—“रसोई हाथ मिलै छै, घर स्वाद
जगै / तिलकोर पात डोलै छै, तरंग तिलकोर लहरैए”।

तिलकोरक बेलसँ रसोई धरि पातक यात्रा घरक स्वादकें माटि आ श्रमसँ जोड़ैत
अछि।

आलोचनात्मक सीमा। रसोईक वास्तविक विधि, श्रमिकक नाम नहि; तिलकोर-
माटि-पातक आवर्तन बेसी।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, अंग,
ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग; रदीफ “तिलकोर लहरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १३५ : लोक जुटै, मान सभा जुटैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १३५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“सौराठ सभा जुटै छै, पंजी नाम मिलै / युवा दृष्टि खुलै छै, सार सभा
जुटैए”। बीचक पाठ—“नियम घेर बनै छै, बरगद छाह फैलै / पंजी नाम जँचै छै,
युवा दृष्टि तकै”। अन्तिम पाँति—“पंजी नाम जँचै छै, नियम घेर बनै / सौराठ
सभा बढै छै, पुकार सभा जुटैए”।

सौराठ सभाक बरगद, पञ्जीक नाम आ बदलैत नियम विवाहपरम्पराक सार्वजनिक
निर्णय-स्थानक चित्र बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वंशावली-पद्धतिक विशिष्ट विधान आ स्त्रीक स्वतन्त्र
सहमति विषय अप्रकट अछि; परम्पराक स्तुति स्वयं आलोचना नहि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “सभा जुटैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९३६ : पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९३६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“पंजी पोथी खुलै छै, नाम क्रम बदलै / समय दाग रहै छै, मान पंजी बोलैए” । बीचक पाठ—“स्रोत जाँच चलै छै, पुरान पात फाटै / नाम क्रम चलै छै, समय दाग पडै” । अन्तिम पाँति—“नाम क्रम चलै छै, स्रोत जाँच चलै / पंजी पोथी बचै छै, सम्मान पंजी बोलैए” ।

फाटल-पियरायल पञ्जी-पात आ बदलैत नामक्रम अभिलेखक नश्वरता तथा स्रोत-जाँचक आवश्यकता साथे राखैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । पुरान पन्ना होयबाक कारण विवरण ऐतिहासिक सत्य स्वतः नहि; प्रति/मूलक भेद लेखक नहि देत ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “पंजी बोलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९३७ : रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९३७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“कुइयाँ घेर रहै छै, नीर तल चमकै / माथ भार रहै छै, प्रीत डोल उतरैए” । बीचक पाठ—“घर प्यास जगै छै, रस्सी डोर सरै / नीर तल डोलै छै,

माथ भार चढ़ै”। अन्तिम पाँति—“नीर तल डोलै छै, घर प्यास जगै / कुइयाँ घेर खुलै छै, संगीत डोल उतरैए”।

कुइयाँक रस्सी खींचबाक हातक परिश्रम घरक पिआस घटाबैत अछि; जलक सहज उपस्थिति श्रमक पाछाँक कथा अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कुइयाँक गहिराइ आ जल-सुरक्षाक तथ्य नहि; वस्तु-क्रिया दोहराव कथ्यक गति सीमित करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “नीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “डोल उतरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९३८ : आग धधकै, आस ईट पकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९३८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“भट्टा आग धधकै छै, मजदूर हाथ नमै / घर दीवार रहै छै, नोर ईट पकैए”। बीचक पाठ—“ताप घाव पड़ै छै, काँच ईट लालै / मजदूर हाथ जुटै छै, घर दीवार बनै”। अन्तिम पाँति—“मजदूर हाथ जुटै छै, ताप घाव पड़ै / भट्टा आग घटै छै, कोर ईट पकैए”।

ईट-भट्टीमे मजदूरक देहपर ताप-घाव आ लाल होइत काँच ईटक संग निर्माणक मानवीय दाम स्पष्ट होइत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कामगारक वेतन, सुरक्षा आ भट्टीक वास्तविक प्रदूषण-सूचना नहि; नैतिक संकेतकें प्रमाणित रिपोर्ट मानब नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “नोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “ईट पकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९३९ : फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९३९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“चंपा फूल महकै छै, पात ओस चमकै / ऋतु चाल मुडै छै, आस चंपा
महकैए”। बीचक पाठ—“मधु गन्ध उठै छै, भोर पवन सैरै / पात ओस सूखै छै,
ऋतु चाल बदलै”। अन्तिम पाँति—“पात ओस सूखै छै, मधु गन्ध उठै / चंपा
फूल खिलै छै, श्वास चंपा महकैए”।

चम्पाक फूलमे भोरक ओस, गन्ध आ पुरान नेहक स्मृति एक सुगन्ध-प्रधान
काव्यलोक रचैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्मृतिक व्यक्ति अनुपस्थित; प्रकृतिक सुखद बिम्ब नव
घटनाक अपेक्षा पुनरुक्तिमे अधिक लौटैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, विश्वास,
प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “चंपा महकैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९४० : दाना जुटै, मान कोठी भरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९४० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“धान दाना जुटै छै, चूल्हा धुआँ फैलै / ऋतु फेर बदलै छै, नाम कोठी
भरैए”। बीचक पाठ—“सुरक्षा ध्यान जगै छै, कोठी घेर रहै / चूल्हा धुआँ सैरै छै,
ऋतु फेर आबै”। अन्तिम पाँति—“चूल्हा धुआँ सैरै छै, सुरक्षा ध्यान जगै / धान
दाना सूखै छै, आयाम कोठी भरैए”।

धानसँ भरैत कोठी आ चूल्हाक धुआँक संग भोजन-सुरक्षाक घेर बनैत अछि,
जाहिमे संग्रहण घरक भविष्यक चिन्ता अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अन्नक बँटवारा आ भण्डारणक जोखिम नहि; सुरक्षा
कहवाक नैतिक आशयकें मापे बिना निष्कर्ष सामान्य रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “कोठी भरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १२१-१४० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१२१	ओस पड़ै, भोर जाल चमकैए	जाल चमकैए
१२२	धान रोपै, गीत रोपनी गबैए	रोपनी गबैए
१२३	घाट पएर चलै, नोर गगरी छलकैए	गगरी छलकैए
१२४	मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए	इन्द्रधनुष उभरैए
१२५	गाछ डोलै, पार पछिया बहैए	पछिया बहैए
१२६	सूत तनै, सार चर्खा घूमैए	चर्खा घूमैए
१२७	धान जुटै, मान बखार भरैए	बखार भरैए
१२८	माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए	फाल चमकैए
१२९	नीर हटै, भोर चर उभरैए	चर उभरैए
१३०	पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए	कमलबीज पकैए
१३१	पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए	चकमक झिलमिलैए
१३२	रेशा जुड़ै, प्रीत पाटी	पाटी बुनैए

	बुनैए	
१३३	तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए	सारंगी रुवैए
१३४	पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए	तिलकोर लहरैए
१३५	लोक जुटै, मान सभा जुटैए	सभा जुटैए
१३६	पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए	पंजी बोलैए
१३७	रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए	डोल उतरैए
१३८	आग धधकै, आस ईंट पकैए	ईंट पकैए
१३९	फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए	चंपा महकैए
१४०	दाना जुटै, मान कोठी भरैए	कोठी भरैए

गजल १४१ : नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १४१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“अलसी फूल डोलै छै, किसान पएर रुकै / बीज तेल निकलै छै, चाल
अलसी हँसैए”। बीचक पाठ—“माटि गन्ध उठै छै, नील खेत चमकै / किसान
पएर मुडै छै, बीज तेल भरै”। अन्तिम पाँति—“किसान पएर मुडै छै, माटि गन्ध
उठै / अलसी फूल खिलै छै, विशाल अलसी हँसैए”।

अलसीक नील फूलक विस्तार किसानक रुकल पएरक दृश्यसँ भूमि आ रंगक
आत्मीय सम्बन्ध रचैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कृषिक प्रक्रिया वा किसानक हितक विस्तार नहि, केवल
नील खेतक रमणीय छवि आवर्तित अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “अलसी हँसैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १४२ : श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १४२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बाँसुरी छेद बजै छै, राग लहर डोलै / साँझ मौन टूटै छै, भाव बाँसुरी सुसकैए”। बीचक पाठ—“दूर घाट दिसै छै, गायक श्वास सम्हरै / राग लहर सरै छै, साँझ मौन घनै”। अन्तिम पाँति—“राग लहर सरै छै, दूर घाट दिसै / बाँसुरी छेद खुलै छै, अभाव बाँसुरी सुसकैए”।

बाँसुरीक छिद्र आ बजबैत श्वास ध्वनिक ठोस उत्पत्ति देखबैत अछि; दूर घाटक स्मृति आ रागक लहर निजी नेह जागबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कोन राग/धुन अछि, अज्ञात; ध्वनिक पाठकें संगीतशास्त्रीय परिणाम नहि बनाउ।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-व”, उदाहरण भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव; रदीफ “बाँसुरी सुसकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १४३ : पाथर भीजै, भोर झरना गबैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १४३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“झरना नीर बहै छै, पाखी स्वर मिलै / धूप किरण चमकै छै, रंग झरना गबैए”। बीचक पाठ—“यात्री पएर चलै छै, पाथर देह घिसै / पाखी स्वर गुँजै छै,

धूप किरण पड़े”। अन्तिम पाँति—“पाखी स्वर गुँजै छै, यात्री पएर चलै / झरना नीर गबै छै, तरंग झरना गबैए”।

झरनाक नीर आ काई लागल पाथरक संग पाखीक स्वर यात्राकैँ एकै समय सुनबाक-देखबाक अनुभव बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। ठाम आ धारा पहचानब असम्भव; दृश्य-क्रममे पुनरागमन बेसी, कथ्यगत मोड़ कम।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग; रदीफ “झरना गबैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९४४ : भोर खुलै, आस कुहासा हटैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९४४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भोर कुहासा घनै छै, गाछ छवि दिसै / पएर बाट मुडै छै, सार कुहासा हटैए”। बीचक पाठ—“दूर गाम दिसै छै, सूरज किरण फैलै / गाछ छवि मिटै छै, पएर बाट चलै”। अन्तिम पाँति—“गाछ छवि मिटै छै, दूर गाम दिसै / भोर कुहासा सरे छै, पुकार कुहासा हटैए”।

कुहासा हटला पर गाछ आ गाम क्रमशः उभरैत अछि; एहि क्रममे देखबाक सापेक्षता भोरक नाट्य बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्राकृतिक दृश्य प्रबल मुदा पात्रक दृष्टिक परिवर्तनक अलग कारण नहि; शेरसभ किरण-कुहासाक आवर्तन अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार; रदीफ “कुहासा हटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १४५ : राति ढलै, नोर चाँद झुकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १४५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“चाँद कोर झुकै छै, मोन याद घुरै / भोर आभा बढै छै, मान चाँद
झुकैए”। बीचक पाठ—“समय चाल चलै छै, राति अन्हार सै / मोन याद रहै छै,
भोर आभा उठै”। अन्तिम पाँति—“मोन याद रहै छै, समय चाल चलै / चाँद कोर
घटै छै, सम्मान चाँद झुकैए”।

ढलैत रातिमे झुकैत चान आ उभरैत तारे स्मृतिक पहर बदलैत कालक काव्यात्मक
घड़ी अछि।

आलोचनात्मक सीमा। ककर स्मृति, कोन पीर? ई खामोशी निजी भाव अनिश्चित
रखैत अछि; राति-चानक पुनरावृत्ति अधिक।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,
विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान; रदीफ “चाँद झुकैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १४६ : लहर हटै, आस सीपी खुलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १४६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“समुद्र लहर उठै छै, भोर किरण फैलै / यात्री आँखि चमकै छै, प्रीत
सीपी खुलैए”। बीचक पाठ—“ज्वार चाल बढै छै, सीपी देह बन्दै / भोर किरण
चमकै छै, यात्री आँखि तकै”। अन्तिम पाँति—“भोर किरण चमकै छै, ज्वार चाल
बढै / समुद्र लहर सै छै, संगीत सीपी खुलैए”।

समुद्रक लहरमे खोलैत-बन्द होइत सीपीक छवि बाहरी गति आ भीतरक
सम्भावनाकै विरोधमे रखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। मोतीक निर्माणक जैविक क्रम सिद्ध नहि; समुद्र-सीपीक पद
अधिकतर भाव-प्रतीक छथि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत; रदीफ “सीपी खुलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९४७ : धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९४७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“गाय झुण्ड चलै छै, घर द्वार बजै / बालक आँखि चमकै छै, नोर गोधूलि उठैए”। बीचक पाठ—“पवन लहर उठै छै, धूलि रेखा फैलै / घर द्वार रहै छै, बालक आँखि तकै”। अन्तिम पाँति—“घर द्वार रहै छै, पवन लहर उठै / गाय झुण्ड घुरै छै, कोर गोधूलि उठैए”।

घुरैत गायक झुण्डक गोधूलिक धूरि आ घंटीक स्वर गामक सांझक विशिष्ट बहु-इन्द्रिय अनुभव बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। गायक (गाइ) आ लोकक परस्पर व्यवहार खुलैत नहि; एके धूरि-घंटी आवर्तन अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर; रदीफ “गोधूलि उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९४८ : खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९४८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“खेत मेड़ उठै छै, नीर धार रुकै / पड़ोसी बात मिलै छै, आस मेड़ बोलैए”। बीचक पाठ—“झगड़ा ताप बढ़ै छै, माटि रेखा बदलै / नीर धार मुड़ै छै, पड़ोसी बात उठै”। अन्तिम पाँति—“नीर धार मुड़ै छै, झगड़ा ताप बढ़ै / खेत मेड़ रहै छै, श्वास मेड़ बोलैए”।

खेतक मेड़ आ रोकल पानिक धार भूमि-सीमाकेँ मात्र रेखा नहि, संसाधनक विवाद बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। झगडाक पात्र आ समाधान अनुपस्थित; अधिकारक वास्तविक अभिलेख नहिं, सीमाक काव्य रूपक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ास”, उदाहरण आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास; रदीफ “मेड़ बोलेए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९४९ : छत गरमै, चाव धूप उतरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९४९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“दुपहर धूप उतरै छै, पाखी पाँखि समेटै / देह थकान रहै छै, नाम धूप उतरैए”। बीचक पाठ—“साँझ पवन उठै छै, छत ताप घटै / पाखी पाँखि उड़ै छै, देह थकान बढ़ै”। अन्तिम पाँति—“पाखी पाँखि उड़ै छै, साँझ पवन उठै / दुपहर धूप फैलै छै, आयाम धूप उतरैए”।

दुपहरक तपल छत आ साँझक पवन शरीरक ताप-बोधसँ समयकेँ महसूस करबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। मौसम-विवरण वैज्ञानिक मापन नहि; छत-धूप-पाखीक छविक फेरबदल अधिक, भाव-विस्तार कम।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम; रदीफ “धूप उतरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९५० : दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“दूर क्षितिज फैलै छै, बाट रेखा मुडै / मोन प्रश्न रहै छै, चाल क्षितिज
फैलैए”। बीचक पाठ—“दूरी मान बदलै छै, आकाश रंग फैलै / बाट रेखा चलै छै,
मोन प्रश्न जगै”। अन्तिम पाँति—“बाट रेखा चलै छै, दूरी मान बदलै / दूर
क्षितिज खुलै छै, विशाल क्षितिज फैलैए”।

क्षितिज दिस बढ़ैत बाट आ ढलैत सूर्य दूरी आ समयक व्यापकता बनबैत अछि।
आलोचनात्मक सीमा। दूरीक बदलैत माप काव्यगत अनुभूति अछि, वास्तविक
भूगोल नहि; शब्दक पुनरावृत्ति नव अर्थक स्थान लेइत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण चाल, ताल, काल,
जाल, पाल, ढाल, विशाल; रदीफ “क्षितिज फैलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९५१ : राख अँगार खुलै, अँगार बचैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“ताप भीतर बढ़ै छै, राख दूर तपै / चूल्हा पाछाँ जगै छै, घर अँगार
बचैए”। बीचक पाठ—“घर पाछाँ खुलै छै, धुआँ ऊपर उठै / धुआँ पाछाँ उठै छै,
घर ऊपर खुलै”। अन्तिम पाँति—“राख भीतर तपै छै, ताप दूर बढ़ै / धुआँ पाछाँ
उठै छै, मोन सार बचैए”।

राखक भीतर बचल अँगार नष्ट भएबाक पाछाँ बचल सामर्थ्यक प्रतीक अछि;
धुआँ उठैत घरक दृश्य निरन्तरताक द्योतक अछि।

आलोचनात्मक सीमा। ‘ताप’ आ ‘राख’क पुनरावर्तन बारम्बार मूल वाक्ये फेराबैत
अछि, परिवर्तनक विशिष्ट घटना कम।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण अँगार, विचार, आधार, कछार, द्वार, भार, सार; रदीफ “बचैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १५२ : बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १५२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“अँकुर फेर उठै छै, ऋतु पाछाँ बदलै / बीज दूर फूटै छै, मान फेर उठैए”। बीचक पाठ—“ऋतु धीरे बदलै छै, अँकुर राति उठै / ऋतु फेर बदलै छै, अँकुर पाछाँ उठै”। अन्तिम पाँति—“मोन फेर जगै छै, बीज पाछाँ फूटै / अँकुर दूर उठै छै, निदान फेर उठैए”।

अँकुर-बीज आ बदलैत ऋतुक छवि धैर्यसँ उमेद फेर उगवाक रूपक बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अँकुरक विकासक दृश्य अतिरिक्त परिस्थिति बिना समान पदार्थ-पद घुमबैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “फेर उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १५३ : ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १५३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ओखरि ऊपर गूँजै छै, धान नीचाँ कुटै / घर फेर जगै छै, ताल धुनि बजैए”। बीचक पाठ—“ताल नीचाँ बजै छै, हाथ धीरे चलै / हाथ संग चलै छै, ताल संग बजै”। अन्तिम पाँति—“हाथ ऊपर चलै छै, ताल नीचाँ बजै / हाथ फेर चलै छै, विशाल धुनि बजैए”।

ओखरि-मूसरक ध्वनि आ धान कूटैत हाथ श्रमक तालकें घरेलू संगीत बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा । काम करनिहारक सामाजिक स्वर नहि; धान-ताल-हाथक पुनर्विन्यासक अतिरिक्त अर्थ कम ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, विशाल; रदीफ “धुनि बजैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९५४ : कनेर फूल खुलै, आस फुलैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“मोन दूर हरसै छै, कनेर सोझाँ फुलै / डारि एखन लहरै छै, भोर आस फुलैए” । बीचक पाठ—“पात संग हिलै छै, गन्ध संग उठै / मोन राति हरसै छै, कनेर भीतर फुलै” । अन्तिम पाँति—“भोर दूर जगै छै, फूल सोझाँ खुलै / पात एखन हिलै छै, बगिया इतिहास फुलैए” ।

कनेर फूलक खुलब आ भोरक उठब मोनक हर्षकें प्रकृतिक रंगसँ जोड़ैत अछि । आलोचनात्मक सीमा । फूलक दृश्य लाक्षणिक अछि, मुदा कोन नवीन अनुभव हर्षक कारण बनल से खुलैत नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “फुलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९५५ : छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“मेघ राति घुमै छै, आँगन भीतर भरै / मोन संग सुनै छै, नोर टपकि खसैए” । बीचक पाठ—“बरखा सोझाँ बरसै छै, छप्पर एखन टपकै / छप्पर भीतर

टपकै छै, बरखा दूर बरसै”। अन्तिम पाँति—“आँगन राति भरै छै, मेघ भीतर घुमै / छप्पर संग टपकै छै, डोर टपकि खसैए”।

छप्परमे खसैत मेहक बूँद घरक छत आ वर्षाक संघर्षक जीवित ध्वनि अछि।
आलोचनात्मक सीमा। बरखा-छप्परक फेरबदल बहुत अधिक; झरैत पानिसँ ककर संकट उभरल, स्पष्ट नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, छोर, कोर, जोर, सोर, डोर; रदीफ “टपकि खसैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९५६ : भूसी पवन खुलै, राह दूर उडैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“आकाश पाछाँ फैलै छै, पवन ऊपर बहै / धूरि धीरे उठै छै, राह दूर उडैए”। बीचक पाठ—“पवन एखन बहै छै, आकाश फेर फैलै / पवन नीचाँ बहै छै, आकाश धीरे फैलै”। अन्तिम पाँति—“खेत पाछाँ खुलै छै, धूरि ऊपर उठै / आकाश धीरे फैलै छै, थाह दूर उडैए”।

भूसीक पवनमे उड़ब खेतक उपजक पाछाँ बचल हलुक पदार्थक आकाशक यात्रामे बदलैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। भूसी ककर श्रमक फल अछि? ई सम्बन्ध खुलैत नहि;
पवन-धूरिक पुनरावृत्तिसँ काव्यात्मक विस्तार सीमित।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, राह, थाह; रदीफ “दूर उडैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९५७ : कछार कटान खुलै, मूल कटैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“किनार धीरे घटै छै, जल राति बढै / धार राति बहै छै, किनार मूल
कटैए”। बीचक पाठ—“कछार भीतर कटै छै, नदी दूर चढै / माटि संग खसै छै,
धार दूर बहै”। अन्तिम पाँति—“नदी धीरे चढै छै, कछार राति कटै / नदी राति
चढै छै, घर फूल कटैए”।

नदी कछारक कटानमे जल बढबाक संग जमीन घटबाक विपरीत गति गहिर
पर्यावरणीय अर्थ राखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कटानक पीडित लोक आ भूभागक विशिष्ट इतिहास नहि;
क्रियापदक उलटफेर अधिक, जीवन-वृत्त कम।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “लूल”, उदाहरण मूल, भूल, फूल,
धूल, शूल, मूल, फूल; रदीफ “कटैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद
घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक
पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९५८ : बिचड़ा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९५८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“खेत नीचाँ खुलै छै, पात धीरे लहरै / भोर ऊपर जगै छै, रंग फेर
हरियैए”। बीचक पाठ—“मोन फेर हरसै छै, बिचड़ा पाछाँ हरियै / खेत एखन खुलै
छै, पात फेर लहरै”। अन्तिम पाँति—“धान नीचाँ उगै छै, माटि धीरे भीजै / मोन
ऊपर हरसै छै, रंग फेर हरियैए”।

धानक बिचड़ा भीजल माटिमे फेर हरियर होइत अछि—एहि वास्तविक कृषि-
दृश्य सँ जीवित आशाक रूपक बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पौधरोपणक क्रम/खेतीहरक श्रम नहि; एकहि अँकुर-
हरियाइबक घटनाक आवर्तन।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, रंग; रदीफ “फेर हरियैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १५९ : काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १५९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“जल संग चमकै छै, काई संग तिरै / पात भीतर हिलै छै, नाम जल तिरैए”। बीचक पाठ—“छाह ऊपर सरकै छै, धूप नीचाँ उतरै / धूप धीरे उतरै छै, छाह राति सरकै”। अन्तिम पाँति—“काई संग तिरै छै, जल संग चमकै / धूप भीतर उतरै छै, धाम जल तिरैए”।

पोखरक पानिमे काईक तैरब आ छाह-धूपक उलटफेर चलायमान प्रतिबिम्बक दृश्य अछि।

आलोचनात्मक सीमा। जल-स्थिति वा पारिस्थितिकी पर ठोस परीक्षण नहि; पदक पुनर्संयोजन अर्थक प्रगति कम करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, नाम, धाम; रदीफ “जल तिरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १६० : बाती दीप खुलै, पीर जरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १६० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“दीप सोझाँ चमकै छै, घर एखन जगै / बाती सोझाँ जरै छै, ज्योति पीर जरैए”। बीचक पाठ—“घर दूर जगै छै, दीप सोझाँ चमकै / घर ऊपर जगै छै, दीप नीचाँ चमकै”। अन्तिम पाँति—“मोन सोझाँ बुझै छै, बाती एखन जरै / दीप सोझाँ चमकै छै, राति नीर जरैए”।

बातीसँ उठल दीपक इजोत अन्हार आ मनक पीडाकेँ एक ठाम ल्याबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पीड़ाक स्रोत नहि; दीप, राति आ इजोतक चक्रीय दोहरावक कारण मनोवैज्ञानिक परिवर्तनक क्रम कम स्पष्ट।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीर”, उदाहरण पीर, नीर, तीर, धीर, चीर, पीर, नीर; रदीफ “जरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १४१-१६० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१४१	नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए	अलसी हँसैए
१४२	श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए	बाँसुरी सुसकैए
१४३	पाथर भीजै, भोर झरना गबैए	झरना गबैए
१४४	भोर खुलै, आस कुहासा हटैए	कुहासा हटैए
१४५	राति ढलै, नोर चाँद झुकैए	चाँद झुकैए
१४६	लहर हटै, आस सीपी खुलैए	सीपी खुलैए
१४७	धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए	गोधूलि उठैए
१४८	खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए	मेड़ बोलैए
१४९	छत गरमै, चाव धूप उतरैए	धूप उतरैए

१५०	दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए	क्षितिज फैलैए
१५१	राख अँगार खुलै, अँगार बचैए	बचैए
१५२	बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए	फेर उठैए
१५३	ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए	धुनि बजैए
१५४	कनेर फूल खुलै, आस फुलैए	फुलैए
१५५	छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए	टपकि खसैए
१५६	भूसी पवन खुलै, राह दूर उडैए	दूर उडैए
१५७	कछार कटान खुलै, मूल कटैए	कटैए
१५८	बिचडा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए	फेर हरियैए
१५९	काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए	जल तिरैए
१६०	बाती दीप खुलै, पीर जरैए	जरैए

गजल १६१ : सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १६१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
 आरम्भ—“सूत एखन तनै छै, हाथ फेर चलै / कपडा नीचाँ बनै छै, बात सूत
 तनैए”। बीचक पाठ—“गाँठ राति खुलै छै, मोन भीतर थिरै / मोन सोझाँ थिरै छै,
 गाँठ एखन खुलै”। अन्तिम पाँति—“मोन एखन थिरै छै, गाँठ फेर खुलै / मोन
 नीचाँ थिरै छै, रात सूत तनैए”।

तकलीमे सूत तनबाक ठोस गति शब्द वा विचारक 'तन्तु' जकाँ एकटा लय बनबैत अछि; गृहस्थ-श्रमक एक छोट औजारकेँ काव्यक केन्द्र देब एकर शक्ति अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सूतक निरन्तर खिंचावक वर्णन अधिक अछि, कातनिहारक अनुभवक अलग स्वर कम।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, बात, रात; रदीफ “सूत तनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९६२ : माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९६२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन भीतर जगै छै, माटि दूर महकै / बरखा पाछाँ बरसै छै, धूरि रूप महकैए”। बीचक पाठ—“गन्ध पाछाँ फैलै छै, आँगन ऊपर भीजै / मोन पाछाँ जगै छै, माटि ऊपर महकै”। अन्तिम पाँति—“धूरि भीतर बसै छै, सोंध दूर उठै / गन्ध पाछाँ फैलै छै, धरती कूप महकैए”।

माटिक सोंध गन्धकेँ बरखक बादक स्मृति आ रूप-निर्माणसँ जोड़ैत अछि; दृश्यसँ अधिक घ्राणक प्रधानता उल्लेखनीय।

आलोचनात्मक सीमा। गन्धक रूपकक अतिरिक्त वस्तुगत घटना नहि बढ़ैत; अनुभव सामान्य रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ूप”, उदाहरण रूप, धूप, कूप, अनूप, रूप, धूप, कूप; रदीफ “महकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १६३ : बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १६३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“छाह फेर पसरै छै, राह पाछाँ मुडै / मोन दूर बुझै छै, मेल भीतर
चुभैए”। बीचक पाठ—“डारि धीरे झुकै छै, काँट राति चुभै / काँट फेर चुभै छै,
डारि पाछाँ झुकै”। अन्तिम पाँति—“राह फेर मुडै छै, छाह पाछाँ पसरै / काँट
दूर चुभै छै, बेल भीतर चुभैए”।

बबूलक काँट बाहरी चुभन आ भीतरक मेलक संकटक एके प्रतीक अछि।
आलोचनात्मक सीमा। ‘काँट’क आवर्तन ककर सम्बन्ध बिच्छिन्न कएल अथवा
जोड़लक से स्पष्ट नहि करैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण मेल, खेल, बेल,
तेल, रेल, मेल, बेल; रदीफ “भीतर चुभैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-
पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १६४ : ओसार साँझ खुलै, अँगार फेर जगैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १६४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“साँझ ऊपर ढलै छै, घर नीचाँ खुलै / लोक फेर जुटै छै, अँगार फेर
जगैए”। बीचक पाठ—“घर नीचाँ खुलै छै, साँझ धीरे ढलै / घर संग खुलै छै,
साँझ संग ढलै”। अन्तिम पाँति—“बात ऊपर उठै छै, लोक नीचाँ जुटै / साँझ फेर
ढलै छै, सार फेर जगैए”।

ओसाराक साँझ आ फेर जगैत अँगार घरेलू दिनचर्याक समाप्तिमे बचल
जीवनतापक बिम्ब अछि।

आलोचनात्मक सीमा। साँझ-अँगारक रूपान्तर सुनियोजित मुदा ककर स्मृति
जागल, ई घटना कम विकसित अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण अँगार, विचार,

आधार, कछार, द्वार, भार, सार; रदीफ “फेर जगैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९६५ : बान्ह जल खुलै, मान टिकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९६५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“गाम दूर बचै छै, किनार सोझाँ रहै / जल एखन चढै छै, गाम मान टिकैए”। बीचक पाठ—“बान्ह संग टिकै छै, धार संग बहै / धार राति बहै छै, बान्ह भीतर टिकै”। अन्तिम पाँति—“धार दूर बहै छै, बान्ह सोझाँ टिकै / धार एखन बहै छै, खेत निदान टिकैए”।

बान्ह आ पानि नदीकँ काबू करबाक दावाक संग टिकबाक प्रश्न खोलैत अछि; ‘मान’क धुरी सामाजिक निर्णय दिशि इंगित करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बाँधक वास्तविक भूगोल आ विपदाक तथ्य बिना तकनीकी सफलता वा असफलताक निष्कर्ष उचित नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “टिकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९६६ : कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उडैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९६६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पवन राति बहै छै, खेत भीतर खुलै / धूरि संग उठै छै, ताल धूरि उडैए”। बीचक पाठ—“मोन सोझाँ सुनै छै, कुट्टी एखन उडै / खेत पाछाँ खुलै छै, खलिहान संग गूँजै”। अन्तिम पाँति—“धान राति झरै छै, खलिहान भीतर गूँजै / मोन संग सुनै छै, विशाल धूरि उडैए”।

खलिहानक कुट्टी आ उडैत धूरि कृषिक कटनी पछातिक श्रमकँ श्रव्य-चाल रूपमे राखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कुट्टीक उपयोग आ श्रमिकक पारिश्रमिकक प्रश्न नहि;
वस्तु-गतिक पुनरावृत्ति अधिक।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल,
काल, ढाल, लाल, विशाल; रदीफ “धूरि उडैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १६७ : काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १६७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“धुनि पाछाँ उठै छै, काँच ऊपर चमकै / हाथ धीरे चलै छै, आस मृदु
खनकैए”। बीचक पाठ—“साँझ एखन ढलै छै, रंग फेर फैलै / रंग नीचाँ फैलै छै,
साँझ धीरे ढलै”। अन्तिम पाँति—“काँच पाछाँ चमकै छै, धुनि ऊपर उठै / रंग
धीरे फैलै छै, इतिहास मृदु खनकैए”।

काँचक चूड़ीक मृदु खनक घरेलू आनन्द आ स्मृतिक छोट ध्वनि-बिम्ब बनबैत
अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पहननिहार स्त्रीक स्वतन्त्र दृष्टि नहि भेटैत, ताहि कारण
रीतक सामाजिक अर्थ अधूर।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास,
आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “मृदु खनकैए”।
रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई
पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १६८ : बेल लता खुलै, नोर लहरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १६८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“लता धीरे चढ़ै छै, छाह राति पसरै / बेल राति लहरै छै, पात नोर

लहरैए”। बीचक पाठ—“छाह भीतर पसरै छै, लता दूर चढ़ै / छाह दूर पसरै छै, लता सोझाँ चढ़ै”। अन्तिम पाँति—“मोन धीरे हरसै छै, बेल राति लहरै / लता राति चढ़ै छै, दीवार डोर लहरैए”।

बेल-लताक लहरनाइ प्राकृतिक गति आ मनक शोककें संग रखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। लताक बिम्ब आ नोरक भावक कारण-सम्बन्ध खुलैत नहि, एकर प्रतीकात्मकता अनुमानित रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण नोर, भोर, छोर, कोर, जोर, सोर, डोर; रदीफ “लहरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९६९ : नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९६९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“नाल नीचाँ बहै छै, खेत धीरे भीजै / मेड ऊपर टिकै छै, राह नीचाँ बहैए”। बीचक पाठ—“धार फेर मुडै छै, धान पाछाँ उगै / धान एखन उगै छै, धार फेर मुडै”। अन्तिम पाँति—“धान नीचाँ उगै छै, धार धीरे मुडै / धान ऊपर उगै छै, थाह नीचाँ बहैए”।

नालीक नीरक नीचाँ बहब नगरीय जलनिकासकें घरक बाटसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। निकासक लाभ वा बाधाक वास्तविक दृश्य कम; एहि आधारपर नगर-योजना सफल कहल नहि जा सकैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, राह, थाह; रदीफ “नीचाँ बहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १७० : चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १७० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन संग जगै छै, ज्योति संग पसरै / राति भीतर ढलै छै, मूल दूर पसरैए”। बीचक पाठ—“आकाश ऊपर खुलै छै, छाह नीचाँ सरकै / मोन धीरे जगै छै, ज्योति राति पसरै”। अन्तिम पाँति—“घर संग सुतै छै, चाँद संग झुकै / आकाश भीतर खुलै छै, फूल दूर पसरैए”।

चन्द्र-ज्योतिक दूरि धरि पसरणाइ रातिक भीतर सूक्ष्म इजोतक काव्य बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दूरक दृश्यकें ‘मूल’ कहलासँ अर्थ स्वतः गहिर नहि होइत; रूपक बारम्बार बदलि स्थिर निष्कर्ष नहि पबैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ूल”, उदाहरण मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, मूल, फूल; रदीफ “दूर पसरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १७१ : पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १७१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“छवि सोझाँ दिसै छै, घर एखन जगै / मोन सोझाँ बुझै छै, जल रंग चमकैए”। बीचक पाठ—“जल दूर भरै छै, लोटा सोझाँ चमकै / लोटा ऊपर चमकै छै, जल नीचाँ भरै”। अन्तिम पाँति—“घर सोझाँ जगै छै, छवि एखन दिसै / लोटा सोझाँ चमकै छै, धूप रंग चमकैए”।

पित्तरि लोटाक चमक घरक परिचित धातुक वस्तुकें पुरान चमक आ वर्तमान स्पर्शक समय-चिन्ह बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। चमकक निरन्तर उल्लेख सँ वस्तुक प्रयोग आ मनुषक सामाजिक कथा सीमित रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, रंग; रदीफ “चमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९७२ : पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९७२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ज्ञान एखन बढै छै, पोथी फेर खुलै / बात नीचाँ बुझै छै, नाम धीरे सरकैए”। बीचक पाठ—“पोथी राति खुलै छै, ज्ञान भीतर बढै / पोथी सोझाँ खुलै छै, ज्ञान एखन बढै”। अन्तिम पाँति—“स्याही एखन दिसै छै, बात फेर बुझै / ज्ञान नीचाँ बढै छै, धाम धीरे सरकैए”।

पोथीक पन्नासँ सरकैत नाम अभिलेखक स्थायित्वक विश्वास पर सूक्ष्म प्रश्न राखैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। कोन नाम आ कियैक सरकल, मूल पुस्तकक पाठ-दृष्टान्त नहि; इतिहासक दावा प्रत्यक्ष प्रमाण नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाम”, उदाहरण नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, नाम, धाम; रदीफ “धीरे सरकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९७३ : रुई सूत खुलै, पीर ऊपर उडैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९७३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“हाथ भीतर चलै छै, धूरि दूर फैलै / धुनि पाछाँ उठै छै, पीर ऊपर उडैए”। बीचक पाठ—“रुई पाछाँ उडै छै, सूत ऊपर बनै / सूत पाछाँ बनै छै, रुई ऊपर उडै”। अन्तिम पाँति—“सूत भीतर बनै छै, रुई दूर उडै / सूत पाछाँ बनै छै, नीर ऊपर उडैए”।

रुईक हलुकपन आ सूतक डोर देहक पीड़ाकँ हलुक उड़ि जाएबक आकांक्षासँ जोडैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सूत बनबाक कारीगरी आ पीड़ाक विशेष पात्र दुनू विस्तृत नहि; बिम्ब कथ्यसँ अधिक उभरैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीर”, उदाहरण पीर, नीर, तीर, धीर, चीर, पीर, नीर; रदीफ “ऊपर उड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १७४ : धूरिक बाट खुलै, बात उड़ैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १७४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“गाम फेर दिसै छै, पवन पाछाँ बहै / साँझ दूर ढलै छै, बाट बात उड़ैए”। बीचक पाठ—“मोन धीरे घुरै छै, धूरि राति उड़ै / पवन धीरे बहै छै, राह एखन खुलै”। अन्तिम पाँति—“बाट फेर मुड़ै छै, राह पाछाँ खुलै / मोन दूर घुरै छै, पएर रात उड़ैए”।

धूरिवला बाटपर उड़ैत बात प्रवास, अस्थिरता आ मौखिक स्वरक अस्थायित्वक रूपक बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। ककर बात आ ककर बाट—एहि अनिश्चिततासँ रचना सामान्यीकृत रहैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, बात, रात; रदीफ “उड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १७५ : साँकल द्वार खुलै, रूप राति खनकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १७५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“घर ऊपर जगै छै, साँकल नीचाँ खनकै / धुनि फेर उठै छै, रूप राति खनकैए”। बीचक पाठ—“पएर नीचाँ रुकै छै, राति धीरे ढलै / नेह ऊपर रहै छै,

मोन ऊपर सुनै”। अन्तिम पाँति—“साँकल ऊपर खनकै छै, घर नीचाँ जगै / राति फेर ढलै छै, कूप राति खनकैए”।

केवाडीक साँकलक खनक घरक सुरक्षा आ भीतर-बाहरक सीमाकें एकहि ध्वनिमे उद्घाटित करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। साँकल खुलल कि बन्द रहबक मानवीय परिणाम, ई स्वतंत्र घटना नहि उघड़ैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ूप”, उदाहरण रूप, धूप, कूप, अनूप, रूप, धूप, कूप; रदीफ “राति खनकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९७६ : सिलौट लोढा बजै, सोर धीमे थिरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९७६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“लोढा सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / सिलौट संग सोर धीमे थिरैए”। बीचक पाठ—“लोढा दूर चलै छै, देखनिहार बदलै / सिलौट लोढा लग बजै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“लोढा एखन चलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / मरिच पाछाँ कोर धीमे थिरैए”।

सिलौट-लोढाक लगातार धीमा स्वर भानसक श्रमकें संगीतजकाँ सुनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। भानस करनिहारक कण्ठक अनुपस्थिति श्रमक मानवीय गहराइ सीमित करैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “धीमे थिरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १७७ : बाँस दउरा जुड़ै, मान सँचि उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १७७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“बाँस सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / दउरा संग मान सँचि उठैए”।
बीचक पाठ—“बाँस दूर नमै छै, देखनिहार बदलै / दउरा बाँस लग बनै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“बाँस एखन नमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / चीर पाछाँ निदान सँचि उठैए”।

बाँसक दउरामे फाँक बुनबाक क्रिया बिखरल वस्तुकेँ संग्रहक आकार दैत अछि।
आलोचनात्मक सीमा। ककर हाथ आ कोन पर्व/उपयोग लेल दउरा बनल, से अनुपस्थित अछि; सम्पूर्ण लोकरीतिक प्रमाण नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान्, ध्यान, पहिचान्, अनुमान्, विधान्, निदान; रदीफ “सँचि उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १७८ : तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १७८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“तराजू सोझाँ झुकै छै, आँखि रूप परखै / बटखरा संग विचार तोलि देखैए”। बीचक पाठ—“तराजू दूर झुकै छै, देखनिहार बदलै / बटखरा तराजू लग बैसै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“तराजू एखन झुकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पल्ला पाछाँ सार तोलि देखैए”।

तराजूक पल्ला विचारकेँ तोलबाक वक्रोक्ति बनबैत अछि; वस्तुक माप नैतिक निर्णयक मापक नहि होयबाक प्रश्न उद्घाटित अछि।

आलोचनात्मक सीमा। काफिया आ तौल-सूचक शब्दक पुनरावृत्तिक बीच कोन निर्णय भेल, ई स्पष्ट नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण विचार, आधार, कछार, दुआर, भार, पुकार, सार; रदीफ “तोलि देखैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९७९ : हँसुआ धार चमकै, सार फेर दमकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९७९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“हँसुआ सोझाँ चमकै छै, आँखि रूप परखै / धार संग सार फेर दमकैए”। बीचक पाठ—“हँसुआ दूर चमकै छै, देखनिहार बदलै / धार हँसुआ लग कटै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“हँसुआ एखन चमकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / धान पाछाँ भार फेर दमकैए”।

हँसुआक धार खेतक काटव आ किसानक जीवनक श्रम-संस्कृतिक चिह्न अछि।

आलोचनात्मक सीमा। धारक चमकक अतिरिक्त काटल फसल वा कामगारक सम्बन्धक विवरण कम अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “फेर दमकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९८० : जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९८० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“जाँता सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / दाना संग गान मृदु बजैए”। बीचक पाठ—“जाँता दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / दाना जाँता लग पिसै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“जाँता एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / हाथ पाछाँ विधान मृदु बजैए”।

जाँतक घुमैत पाट आ दाना पिसबाक ताल घरेलू श्रमक ध्वनि बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। गानक वास्तविक बोल नहि, अतः लोकसंगीतक प्रामाणिक पाठ अथवा संगीत-विधानक निष्कर्ष नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण गान्, तान्, मान्, ज्ञान्, ध्यान, पहिचान्, विधान; रदीफ “मृदु बजैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १६१-१८० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१६१	सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए	सूत तनैए
१६२	माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए	महकैए
१६३	बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए	भीतर चुभैए
१६४	ओसार साँझ खुलै, अँगार फेर जगैए	फेर जगैए
१६५	बान्ह जल खुलै, मान टिकैए	टिकैए
१६६	कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उड़ैए	धूरि उड़ैए
१६७	काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए	मृदु खनकैए
१६८	बेल लता खुलै, नोर लहरैए	लहरैए
१६९	नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए	नीचाँ बहैए
१७०	चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए	दूर पसरैए

१७१	पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए	चमकैए
१७२	पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए	धीरे सरकैए
१७३	रुई सूत खुलै, पीर ऊपर उडैए	ऊपर उडैए
१७४	धूरिक बाट खुलै, बात उडैए	उडैए
१७५	साँकल द्वार खुलै, रूप राति खनकैए	राति खनकैए
१७६	सिलौट लोढा बजै, सोर धीमे थिरैए	धीमे थिरैए
१७७	बाँस दउरा जुडै, मान सँचि उठैए	सँचि उठैए
१७८	तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए	तोलि देखैए
१७९	हँसुआ धार चमकै, सार फेर दमकैए	फेर दमकैए
१८०	जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए	मृदु बजैए

गजल १८१ : कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १८१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“कोदो सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / बालि संग उमंग साँझ धरि
डोलैए”। बीचक पाठ—“कोदो दूर डोलै छै, देखनिहार बदलै / बालि कोदो लग
झुकै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“कोदो एखन डोलै छै, निष्कर्ष सीमा
धरै / पवन पाछाँ प्रसंग साँझ धरि डोलैए”।

कोदोक डोलैत बालि आ साँझ धरि चलैत उमंग अल्पचर्चित अन्नकै काव्य-
जगतक केन्द्र देत।

आलोचनात्मक सीमा । उपजक सामाजिक महत्त्व आ दामक प्रश्न नहि; खेतक छवि पुनरावृत्तिमय अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण उमंग, रंग, संग, ढंग, अंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “साँझ धरि डोलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १८२ : छत्ता मधु भैरै, आस मधु सँ भैरैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १८२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“मधुमाछि सोझाँ उडै छै, आँखि रूप परखै / छत्ता संग आस मधु सँ भैरैए” । बीचक पाठ—“मधुमाछि दूर उडै छै, देखनिहार बदलै / छत्ता मधुमाछि लग भैरै छै, बोध संग चलै” । अन्तिम पाँति—“मधुमाछि एखन उडै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / फूल पाछाँ इतिहास मधु सँ भैरैए” ।

मधुमाछिक छत्तामे भैरैत मधु व्यक्तिगत स्वादक पाछाँ सामूहिक श्रमक संकेत दैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । मधुमाछिक व्यवहार-सम्बन्धी वैज्ञानिक दावाक आधार नहि; उत्पादनक दीर्घ क्रमक स्थानपर मधुक आनन्दक आवर्तन बेसी ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “मधु सँ भैरैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १८३ : तितली रंग उडै, रंग पाँख पसारैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १८३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“तितली सोझाँ उडै छै, आँखि रूप परखै / पाँख संग रंग पाँख पसारैए” ।

बीचक पाठ—“तितली दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / पाँख तितली लग खुलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“तितली एखन उड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / रंग पाछाँ प्रसंग पाँख पसारैए”।

तितलीक रङ्गबिरङ्ग पाँखि फूलक वातावरणकें चलैत चित्र बनबैत अछि। आलोचनात्मक सीमा। रङ्गक परस्पर छवि सजावटसँ आगाँ कोन अनुभूति बदलैत अछि से विस्तार नहि पबैत।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “पाँख पसारैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९८४ : घोंघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९८४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“घोंघा सोझाँ सरकै छै, आँखि रूप परखै / रेख संग पहिचान पाछाँ रहि जाइए”। बीचक पाठ—“घोंघा दूर सरकै छै, देखनिहार बदलै / रेख घोंघा लग रहै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“घोंघा एखन सरकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / ओस पाछाँ निदान पाछाँ रहि जाइए”।

घोंघाक सरकैत देह आ पाछाँ छूटल चिन्ह समयक धीमापनकें मनक पहिचानसँ जोड़ैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। घोंघाक वास्तविक चालकें मानव स्मृतिक यान्त्रिक समतुल्य नहि मानब; प्रतीकक मध्यवर्ती सम्बन्ध अस्पष्ट अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण पहिचान, मान, ज्ञान, ध्यान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “पाछाँ रहि जाइए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १८५ : कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १८५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“कछुआ सोझाँ तिरै छै, आँखि रूप परखै / नीर संग राह नीरमे बहैए”।
बीचक पाठ—“कछुआ दूर तिरै छै, देखनिहार बदलै / नीर कछुआ लग हिलै छै,
बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“कछुआ एखन तिरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै /
पाँक पाछाँ प्रवाह नीरमे बहैए”।

कछुआक नीरमे राह काटब धैर्य आ प्रवाहक दबावसँ अलग तरहक गतिक बिम्ब अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पानीक भीतरक जीवनक तथ्य नहि; स्थिर-गतिशील विरोध आवर्तित अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “नीरमे बहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १८६ : सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १८६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“सनई सोझाँ लहरै छै, आँखि रूप परखै / फूल संग रंग पवनमे लहरैए”।
बीचक पाठ—“सनई दूर लहरै छै, देखनिहार बदलै / फूल सनई लग खुलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“सनई एखन लहरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ प्रसंग पवनमे लहरैए”।

सनईक फूल आ पवनक गति कृषि-परिदृश्यक रङ्गकें गीतात्मकता दैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सनईक खेती आ श्रमक उपयोग अनुपस्थित; दृश्य एकटै धरातलपर घूमैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग,

अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “पवनमे लहरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १८७ : कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १८७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कनकौआ सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / डोर संग डोर अकास चढ़ि जाइए”। बीचक पाठ—“कनकौआ दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / डोर कनकौआ लग तनै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“कनकौआ एखन उड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ कोर अकास चढ़ि जाइए”।

कनकौआ उड़ैत अछि मुदा डोर हाथमे अछि—ई स्वतंत्रता आ सम्बन्धक सुचिन्तित द्वन्द्व अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आकाशक कल्पनाक पाछाँ डोर धारण करनिहारक भावभूमि नहि खुलैत; उड़ानक आवर्तन बेसी।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण डोर, सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, कोर; रदीफ “अकास चढ़ि जाइए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १८८ : सूप दाना छाँटै, धान सूपमे छँटैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १८८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सूप सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / दाना संग धान सूपमे छँटैए”। बीचक पाठ—“सूप दूर डोलै छै, देखनिहार बदलै / दाना सूप लग छँटै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“सूप एखन डोलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / भूसी पाछाँ निदान सूपमे छँटैए”।

सूपमे दाना छाँटबाक कार्य चयन, भेद आ श्रमक सुक्ष्म रूपक बनबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दाना छाँटबाक मानदण्ड आ भोजन बनबैत लोकक संवाद अनुपस्थित अछि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण धान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, निदान; रदीफ “सूपमे छँटैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १८९ : झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १८९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“झाँपी सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / पिटारी संग नाम भीतर बचि रहैए” । बीचक पाठ—“झाँपी दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै / पिटारी झाँपी लग सजै छै, बोध संग चलै” । अन्तिम पाँति—“झाँपी एखन खुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / आँचर पाछाँ गाम भीतर बचि रहैए” ।

झाँपीक भीतर राखल वस्तु आ बचल नाम गोपन स्मृतिक घरेलू भण्डारक चित्र अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । कौन वस्तु छिपाओल गेल, नाम ककर अछि, अनिश्चित; स्मृतिक रूपक स्वतंत्र कथा नहि बनि पबैत ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-म”, उदाहरण नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, प्रणाम, गाम; रदीफ “भीतर बचि रहैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १९० : ताड़पात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १९० मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“ताड़पात सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / आखर संग ज्ञान पातमे बोलैए” । बीचक पाठ—“ताड़पात दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै / आखर ताड़पात लग दिसै छै, बोध संग चलै” । अन्तिम पाँति—“ताड़पात एखन खुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / स्याही पाछाँ निदान पातमे बोलैए” ।

ताड़पातपर लिखल आखर ज्ञानक प्राचीन भौतिक माध्यमक महत्त्वक बिम्ब अछि। आलोचनात्मक सीमा। पाण्डुलिपिक लिपि अथवा लेखकक प्रमाण नहि; कल्पित अभिलेखक निरूपण तथ्य-सन्दर्भ नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण ज्ञान, मान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “पातमे बोलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ९९१ : पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ९९१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पीपर सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / छाँह संग राह छाँहमे टिकि रहैए”। बीचक पाठ—“पीपर दूर डोलै छै, देखनिहार बदलै / छाँह पीपर लग पसरै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“पीपर एखन डोलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पात पाछाँ प्रवाह छाँहमे टिकि रहैए”।

पीपरक छाह यात्रीक बाटमे थमबाक स्थान अछि; गाछ केवल प्रकृति नहि, राहक सहचर बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राहगीरक वास्तविक संवाद नहि, छाँहक पुनरावृत्ति रचनाक भाव-विस्तार सीमित रखैत अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “छाँहमे टिकि रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२ : खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“खजूर सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / रस संग आस रस टपकैत रहैए”। बीचक पाठ—“खजूर दूर नमै छै, देखनिहार बदलै / रस खजूर लग टपकै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“खजूर एखन नमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / घैल पाछाँ इतिहास रस टपकैत रहैए”।

खजूरक रस टपकबाक बूँद श्रम आ ऋतुक समयगति संकेत करैत अछि।
आलोचनात्मक सीमा। रस निकालबाक उपकरणक विस्तृत प्रसङ्ग नहि, तँ वास्तविक कृषि-विज्ञानक दावा नहि बनाउ।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “रस टपकैत रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३ : बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“बकुल सोझाँ महकै छै, आँखि रूप परखै / फूल संग सुवास भोरमे महकि उठैए”। बीचक पाठ—“बकुल दूर महकै छै, देखनिहार बदलै / फूल बकुल लग झरै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“बकुल एखन महकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / भोर पाछाँ इतिहास भोरमे महकि उठैए”।

बकुल फूलक सुवास भोरक स्मृतिक ध्वनि बिना केवल घ्राणसँ अनुभव करबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुगन्ध-भोरक बिम्ब बारम्बार घुरैत अछि, नव भावद्वन्द्व कम अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण सुवास, आस,

श्वास, आभास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “भोरमे महकि उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४ : ओल माटि फोड़ै, मूल माटि फोड़ि निकलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ओल सोझाँ फूटै छै, आँखि रूप परखै / माटि संग मूल माटि फोड़ि निकलैए”। बीचक पाठ—“ओल दूर फूटै छै, देखनिहार बदलै / माटि ओल लग फाटै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“ओल एखन फूटै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / लता पाछाँ अनुकूल माटि फोड़ि निकलैए”।

ओल माटि फोड़ि निकलैत अछि, जाहिसँ अदृश्य कन्दक वृद्धि पृथ्वीभितरक जीवनक रूपक बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वनस्पति-विकासक प्रक्रिया रचना नापैत नहि; माटि-मूलक फेरबदलकें वैज्ञानिक साक्ष्य नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “लूल”, उदाहरण मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, कूल, अनुकूल; रदीफ “माटि फोड़ि निकलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५ : अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“अरुई सोझाँ झूमै छै, आँखि रूप परखै / पात संग बात पवनमे झूमैए”। बीचक पाठ—“अरुई दूर झूमै छै, देखनिहार बदलै / पात अरुई लग डोलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“अरुई एखन झूमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / जल पाछाँ तात पवनमे झूमैए”।

अरुईक डोलैत पात आ पवनक आवाज प्रकृतिक लोकभाषा सुनबाक एकटा लघु कविता बनैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। पात-पवनक पुनरावर्तन कथात्मक मोड़ नहि बनबैत;
विषयगत गहराइ सीमित।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात,
घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “पवनमे झूमैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६ : मड्डुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मड्डुआ सोझाँ पकै छै, आँखि रूप परखै / बालि संग बाल नमि
जाइए”। बीचक पाठ—“मड्डुआ दूर पकै छै, देखनिहार बदलै / बालि मड्डुआ लग
नमै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“मड्डुआ एखन पकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
/ पवन पाछाँ लाल नमि जाइए”।

मड्डुआक झुकल बालि फसलक परिपक्वताकें नम्रताक रूपक बना सकैत अछि।
आलोचनात्मक सीमा। फसल-समाजिक अर्थक कड़ी नहि; प्रतीकक मनोभाव
व्याख्याकारक अनुमान अछि, पाठक अनिवार्य निष्कर्ष नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण बाल, ताल, चाल,
जाल, काल, ढाल, लाल; रदीफ “नमि जाइए”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७ : कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“कुरथी सोझाँ उबलै छै, आँखि रूप परखै / दालि संग दाल भानसमे
महकैए”। बीचक पाठ—“कुरथी दूर उबलै छै, देखनिहार बदलै / दालि कुरथी लग

पकै छै, बोध संग चलै” । अन्तिम पाँति—“कुरथी एखन उबलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / भाप पाछाँ लाल भानसमे महकैए” ।

कुरथीक दालि भानसमे पकलापर गन्ध आ स्मृति संग जुड़ैत अछि; साधारण अन्नक सांस्कृतिक दृश्य प्रमुख अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । दालि ककर घाम-खेतसँ आयल, श्रम आ अन्न-सुरक्षाक प्रश्न कम उघड़ैत ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण दाल, ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल; रदीफ “भानसमे महकैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ९९८ : तिल घानी घुमै, हाथ घानी संग चलैए

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ९९८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि ।

आरम्भ—“घानी सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / तिल संग हाथ घानी संग चलैए” । बीचक पाठ—“घानी दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / तिल घानी लग पिसै छै, बोध संग चलै” । अन्तिम पाँति—“घानी एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / तेल पाछाँ अनाथ घानी संग चलैए” ।

तिल घानी घुमब आ ओकर संग चलैत हाथ श्रमक चक्र आ पदार्थक रूपान्तरणक चित्र अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । घानीक ध्वनि-दृश्य प्रयोगात्मक प्रक्रिया नहि; दाम आ मजूरीक प्रसङ्ग नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-थ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “घानी संग चलैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ११९ : मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पड़ैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मकई सोझाँ पकै छै, आँखि रूप परखै / भुट्टा संग धान दाना झरि पड़ैए”। बीचक पाठ—“मकई दूर पकै छै, देखनिहार बदलै / भुट्टा मकई लग खुलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“मकई एखन पकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / दाना पाछाँ निदान दाना झरि पड़ैए”।

मकईक भुट्टा आ झरैत दानासँ फसलक बाहरी आवरण आ भीतरक उपजक भेद देखाइत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दानाक नामान्तरक किछु आवर्तन अर्थविस्तार कम करैत; विशिष्ट कृषि-कथा नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण धान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, निदान; रदीफ “दाना झरि पड़ैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००० : हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“अक्षर सोझाँ जगै छै, आँखि रूप परखै / गजल संग गीत आगाँ गुँजैत रहैए”। बीचक पाठ—“अक्षर दूर जगै छै, देखनिहार बदलै / गजल अक्षर लग गुँजै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“अक्षर एखन जगै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / दीवान पाछाँ पुनीत आगाँ गुँजैत रहैए”।

हजारम गजलक क्रमाङ्क स्वयं विषय बनि गेल अछि; ‘गीत आगाँ गुँजैत रहै’ संग्रहक पूर्ण विरामकें स्थगित करैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। संख्या हजार होयब साहित्यिक गुणक प्रमाण नहि; एहि आत्मसन्दर्भकें काव्यात्मक संरचना आ क्रमिक पुनरावृत्तिक प्रश्नसँ जाँच आवश्यक।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “आगाँ गुँजैत रहैए” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १८१-१००० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१८१	कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए	साँझ धरि डोलैए
१८२	छत्ता मधु भरै, आस मधु सँ भरैए	मधु सँ भरैए
१८३	तितली रंग उडै, रंग पाँख पसारैए	पाँख पसारैए
१८४	घोंघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए	पाछाँ रहि जाइए
१८५	कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए	नीरमे बहैए
१८६	सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए	पवनमे लहरैए
१८७	कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए	अकास चढ़ि जाइए
१८८	सूप दाना छँटै, धान सूपमे छँटैए	सूपमे छँटैए
१८९	झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए	भीतर बचि रहैए
१९०	ताड़पात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए	पातमे बोलैए

१११	पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए	छाँहमे टिकि रहैए
११२	खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए	रस टपकैत रहैए
११३	बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए	भोरमे महकि उठैए
११४	ओल माटि फोड़ै, मूल माटि फोड़ि निकलैए	माटि फोड़ि निकलैए
११५	अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए	पवनमे झूमैए
११६	मड्डुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए	नमि जाइए
११७	कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए	भानसमे महकैए
११८	तिल घानी घुमै, हाथ घानी संग चलैए	घानी संग चलैए
११९	मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पड़ैए	दाना झरि पड़ैए
१०००	हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए	आगाँ गुँजैत रहैए

गजल १००१ : दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“दीप सोझाँ जरै छै, आँखि रूप परखै / बाती संग आस मन्दे मन्दे जरैए”। बीचक पाठ—“दीप दूर जरै छै, देखनिहार बदलै / बाती दीप लग दमकै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“दीप एखन जरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / तेल पाछाँ इतिहास मन्दे मन्दे जरैए”।

‘दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए’क काव्य-केन्द्र “बाती भीतर दमकै छै, लोक दीपक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक

प्रतीक बनैत अछि। “दीप दूर जैरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि, से कम उद्घाटित होइत अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “मन्दे मन्दे जैरैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००२ : चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुड़ैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“चरखा सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / सूत संग मान सूतमे गाँठि जुड़ैए”। बीचक पाठ—“चरखा दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / सूत चरखा लग तनै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“चरखा एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / तकुआ पाछाँ निदान सूतमे गाँठि जुड़ैए”।

‘चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुड़ैए’क काव्य-केन्द्र “सूत भीतर तनै छै, लोक चरखाक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणक विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल अछि। “चरखा दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकें रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान्, ध्यान्, पहिचान्, अनुमान्, विधान्, निदान्; रदीफ “सूतमे गाँठि जुडैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००३ : मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मखान सोझाँ तिरै छै, आँखि रूप परखै / पात संग राह नीर तलसँ उठैए”। बीचक पाठ—“मखान दूर तिरै छै, देखनिहार बदलै / पात मखान लग फूटै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“मखान एखन तिरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / नीर पाछाँ प्रवाह नीर तलसँ उठैए”।

‘मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए’क काव्य-केन्द्र “पात भीतर फूटै छै, लोक मखानक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। जलक गतिक संग मनुष्यक काज किंवा स्मृतिक विरोध सम्भव होइत अछि; एहि कारण जल केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि। “मखान दूर तिरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “नीर तलसँ उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००४ : पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पान सोझाँ चढै छै, आँखि रूप परखै / पात संग रंग ओस संग चमकि

उठैए”। बीचक पाठ—“पान दूर चढ़ै छै, देखनिहार बदलै / पात पान लग भीजै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“पान एखन चढ़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / ओस पाछाँ प्रसंग ओस संग चमकि उठैए”।

‘पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए’क काव्य-केन्द्र “पात भीतर भीजै छै, लोक पानक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “पान दूर चढ़ै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “ओस संग चमकि उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००५ : सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सुपारी सोझाँ कटै छै, आँखि रूप परखै / कटरनी संग सार फाँक बनि खुलैए”। बीचक पाठ—“सुपारी दूर कटै छै, देखनिहार बदलै / कटरनी सुपारी लग खुलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“सुपारी एखन कटै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / फाँक पाछाँ भार फाँक बनि खुलैए”।

‘सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए’क काव्य-केन्द्र “कटरनी भीतर खुलै छै, लोक सुपारीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “सुपारी दूर कटै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “फाँक बनि खुलैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००६ : सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सिकी सोझाँ मुडै छै, आँखि रूप परखै / डलिया संग गीत बुनाइमे रूप धरैए”। बीचक पाठ—“सिकी दूर मुडै छै, देखनिहार बदलै / डलिया सिकी लग बनै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“सिकी एखन मुडै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पाँति पाछाँ पुनीत बुनाइमे रूप धरैए”।

‘सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए’क काव्य-केन्द्र “डलिया भीतर बनै छै, लोक सिकीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “सिकी दूर मुडै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकेँ रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “बुनाइमे रूप धरैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००७ : कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“चाक सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / माटि संग सार माटिसँ देह गढैए”। बीचक पाठ—“चाक दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / माटि चाक लग गढै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“चाक एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / हाथ पाछाँ भार माटिसँ देह गढैए”।

‘कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढैए’क काव्य-केन्द्र “माटि भीतर गढै छै, लोक चाकक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। वस्तु गढ़बाक अभ्यासँ काव्यक ध्यान ठोस करैत अछि; निर्माता आ तैयार वस्तुक बीचक फासल एकर अर्थ-सम्भावना अछि। “चाक दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “माटिसँ देह गढैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००८ : घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“घैला सोझाँ भरै छै, आँखि रूप परखै / नीर संग आस शीतल नेह भरैत जाइए”। बीचक पाठ—“घैला दूर भरै छै, देखनिहार बदलै / नीर घैला लग रहै

छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“घैला एखन भैरै छै, निष्कर्ष सीमा धैरै / काँध पाछाँ इतिहास शीतल नेह भैरै जाइए”।

‘घैला नीर भैरै, श्वास शीतल नेह भैरै जाइए’क काव्य-केन्द्र “नीर भीतर रहै छै, लोक घैलाक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थासँ पोसाइत अछि। “घैला दूर भैरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “शीतल नेह भैरै जाइए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००९ : लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १००९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“लाठी सोझाँ टिकै छै, आँखि रूप परखै / बाट संग हाथ पएर संग टिकैत रहैए”। बीचक पाठ—“लाठी दूर टिकै छै, देखनिहार बदलै / बाट लाठी लग बढै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“लाठी एखन टिकै छै, निष्कर्ष सीमा धैरै / पएर पाछाँ अनाथ पएर संग टिकैत रहैए”।

‘लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए’क काव्य-केन्द्र “बाट भीतर बढै छै, लोक लाठीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। यात्राक चिन्ह आ पएरक गति बाह्य दूरीक मनक अनुभवसँ जोड़बाक कोशिश करैत अछि। “लाठी दूर टिकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। यात्रा-दृश्यक आवर्तनक बावजूद यात्रीक सम्पूर्ण घटना-क्रम स्पष्ट नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-थ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “पएर संग टिकैत रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१० : रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“धान सोझाँ रोपै छै, आँखि रूप परखै / रोपनी संग मान पाँतिमे हरियैत जाइए”। बीचक पाठ—“धान दूर रोपै छै, देखनिहार बदलै / रोपनी धान लग जुड़ै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“धान एखन रोपै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पाँति पाछाँ निदान पाँतिमे हरियैत जाइए”।

‘रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए’क काव्य-केन्द्र “रोपनी भीतर जुड़ै छै, लोक धानक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “धान दूर रोपै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “पाँतिमे हरियैत जाइए”।

रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०११ : कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०११ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कदली सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / पात संग बात बरखा संग थिरकैए”। बीचक पाठ—“कदली दूर नमै छै, देखनिहार बदलै / पात कदली लग भीजै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“कदली एखन नमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बरखा पाछाँ तात बरखा संग थिरकैए”।

‘कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए’क काव्य-केन्द्र “पात भीतर भीजै छै, लोक कदलीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “कदली दूर नमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “बरखा संग थिरकैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१२ : आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आम सोझाँ फुलै छै, आँखि रूप परखै / मंजर संग आस गाछ भरि गमकि उठैए”। बीचक पाठ—“आम दूर फुलै छै, देखनिहार बदलै / मंजर आम

लग झरै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“आम एखन फुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / मधुमाछि पाछाँ इतिहास गाछ भरि गमकि उठैए”।

‘आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए’क काव्य-केन्द्र “मंजर भीतर झरै छै, लोक आमक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकेँ दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “आम दूर फुलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “गाछ भरि गमकि उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१३ : लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“लीची सोझाँ लटकै छै, आँखि रूप परखै / गुच्छा संग रंग डारि संग झूलैत रहैए”। बीचक पाठ—“लीची दूर लटकै छै, देखनिहार बदलै / गुच्छा लीची लग पाकै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“लीची एखन लटकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / डारि पाछाँ प्रसंग डारि संग झूलैत रहैए”।

‘लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए’क काव्य-केन्द्र “गुच्छा भीतर पाकै छै, लोक लीचीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकेँ घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोडैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “लीची दूर लटकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “डारि संग झूलैत रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१४ : सिन्धुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सिन्धुर सोझाँ दमकै छै, आँखि रूप परखै / डिबिया संग मान माँगमे रँग भरैए”। बीचक पाठ—“सिन्धुर दूर दमकै छै, देखनिहार बदलै / डिबिया सिन्धुर लग रँगै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“सिन्धुर एखन दमकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / माँग पाछाँ निदान माँगमे रँग भरैए”।

‘सिन्धुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए’क काव्य-केन्द्र “डिबिया भीतर रँगै छै, लोक सिन्धुरक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “सिन्धुर दूर दमकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “माँगमे रँग भरैए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१५ : कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कमल सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / पाँखुरि संग आस भोर संग खुलि उठैए”। बीचक पाठ—“कमल दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै / पाँखुरि कमल लग फैलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“कमल एखन खुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / नीर पाछाँ इतिहास भोर संग खुलि उठैए”।

‘कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए’क काव्य-केन्द्र “पाँखुरि भीतर फैलै छै, लोक कमलक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। जलक गतिक संग मनुखक काज किंवा स्मृतिक विरोध सम्भव होइत अछि; एहि कारण जल केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि। “कमल दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इन्हन नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “भोर संग खुलि उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१६ : चापाकल चलै, धार धरतीसँ नीर उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“चापाकल सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / नीर संग सार धरतीसँ नीर उठैए”। बीचक पाठ—“चापाकल दूर चलै छै, देखनिहार बदलै / नीर चापाकल

लग झरै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“चापाकल एखन चलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / हाथ पाछाँ भार धरतीसँ नीर उठैए”।

‘चापाकल चलै, भार धरतीसँ नीर उठैए’क काव्य-केन्द्र “नीर भीतर झरै छै, लोक चापाकलक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें हाथ-पएक व्यवहारसँ जोडैत अछि।

“चापाकल दूर चलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “धरतीसँ नीर उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१७ : ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ढेकी सोझाँ उठै छै, आँखि रूप परखै / धान संग ताल धपधप सोर उठैए”। बीचक पाठ—“ढेकी दूर उठै छै, देखनिहार बदलै / धान ढेकी लग कुटै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“ढेकी एखन उठै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पएर पाछाँ बाल धपधप सोर उठैए”।

‘ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए’क काव्य-केन्द्र “धान भीतर कुटै छै, लोक ढेकीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकें माटि सँ जोडैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “ढेकी दूर उठै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि। छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “धपधप सोर उठैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१८ : बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बेलना सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / लोइ संग सार गोलाइमे फैलैत जाइए”। बीचक पाठ—“बेलना दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / लोइ बेलना लग बनै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“बेलना एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / चकला पाछाँ भार गोलाइमे फैलैत जाइए”।

‘बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए’क काव्य-केन्द्र “लोइ भीतर बनै छै, लोक बेलनाक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “बेलना दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “गोलाइमे फैलैत जाइए”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०१९ : खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०१९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“खपड़ा सोझाँ टिकै छै, आँखि रूप परखै / छान्ह संग राह बरखा रोकैत रहैए”। बीचक पाठ—“खपड़ा दूर टिकै छै, देखनिहार बदलै / छान्ह खपड़ा लग बचै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“खपड़ा एखन टिकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बरखा पाछाँ प्रवाह बरखा रोकैत रहैए”।

‘खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए’क काव्य-केन्द्र “छान्ह भीतर बचै छै, लोक खपड़ाक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “खपड़ा दूर टिकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “बरखा रोकैत रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२० : भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भूसा सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / दउनी संग सोर पवन संग उड़ि जाइए”। बीचक पाठ—“भूसा दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / दउनी भूसा लग छुँटै

छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“भूसा एखन उडै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ कोर पवन संग उडि जाइए”।

‘भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उडि जाइए’क काव्य-केन्द्र “दउनी भीतर छँटै छै, लोक भूसाक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ध्वनिक उत्पत्ति आ ओकर क्रम एतय अनुभूतिक समय रचैत अछि; स्वर शाब्दिक अर्थसँ अतिरिक्त बिम्ब बनैत अछि। “भूसा दूर उडै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अवैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककें प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “पवन संग उडि जाइए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १००१-१०२० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१००१	दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए	मन्दे मन्दे जरैए
१००२	चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुडैए	सूतमे गाँठि जुडैए
१००३	मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए	नीर तलसँ उठैए
१००४	पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए	ओस संग चमकि उठैए
१००५	सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए	फाँक बनि खुलैए

१००६	सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए	बुनाइमे रूप धरैए
१००७	कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढैए	माटिसँ देह गढैए
१००८	घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए	शीतल नेह भरैत जाइए
१००९	लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए	पएर संग टिकैत रहैए
१०१०	रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए	पाँतिमे हरियैत जाइए
१०११	कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए	बरखा संग थिरकैए
१०१२	आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए	गाछ भरि गमकि उठैए
१०१३	लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए	डारि संग झूलैत रहैए
१०१४	सिन्धुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए	माँगमे रँग भरैए
१०१५	कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए	भोर संग खुलि उठैए
१०१६	चापाकल चलै, धार धरतीसँ नीर उठैए	धरतीसँ नीर उठैए
१०१७	ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए	धपधप सोर उठैए
१०१८	बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए	गोलाइमे फैलैत जाइए
१०१९	खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए	बरखा रोकैत रहैए
१०२०	भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए	पवन संग उड़ि जाइए

	पवन संग उड़ि जाइए	
--	-------------------	--

गजल १०२१ : बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“बेंत सोझाँ मुडै छै, आँखि रूप परखै / पीढ़ी संग मान बैसबाक आसन बनैए”। बीचक पाठ—“बेंत दूर मुडै छै, देखनिहार बदलै / पीढ़ी बेंत लग बुनै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“बेंत एखन मुडै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बुनाइ पाछाँ निदान बैसबाक आसन बनैए”।

‘बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए’क काव्य-केन्द्र “पीढ़ी भीतर बुनै छै, लोक बेंतक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “बेंत दूर मुडै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “बैसबाक आसन बनैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२२ : माटिक चूल्हि जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“चूल्हि सोझाँ जरै छै, आँखि रूप परखै / आँच संग बात आँच भीतर जगैत रहैए”। बीचक पाठ—“चूल्हि दूर जरै छै, देखनिहार बदलै / आँच चूल्हि

लग सुलगै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“चूल्ह एखन जरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / काठी पाछाँ तात आँच भीतर जगैत रहैए”।

‘माटिक चूल्ह जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए’क काव्य-केन्द्र “आँच भीतर सुलगै छै, लोक चूल्हक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनेत अछि। “चूल्ह दूर जरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ ‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “आँच भीतर जगैत रहैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२३ : दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“दूब सोझाँ हरियै छै, आँखि रूप परखै / आँगन संग राह पएर तले हरियैए”। बीचक पाठ—“दूब दूर हरियै छै, देखनिहार बदलै / आँगन दूब लग टिकै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“दूब एखन हरियै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / ओस पाछाँ प्रवाह पएर तले हरियैए”।

‘दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए’क काव्य-केन्द्र “आँगन भीतर टिकै छै, लोक दूबक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयक दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “दूब दूर हरियै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “पएर तले हरियैए”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२४ : झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“झूला सोझाँ हिलै छै, आँखि रूप परखै / डोरि संग रंग पवन संग डोलैत रहैए”। बीचक पाठ—“झूला दूर हिलै छै, देखनिहार बदलै / डोरि झूला लग डोलै छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“झूला एखन हिलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ प्रसंग पवन संग डोलैत रहैए”।

‘झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए’क काव्य-केन्द्र “डोरि भीतर डोलै छै, लोक झूलाक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। जलक गतिक संग मनुखक काज किंवा स्मृतिक विरोध सम्भव होइत अछि; एहि कारण जल केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि। “झूला दूर हिलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ 'कारण/प्रमाण'क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग,
अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “पवन संग डोलैत रहैए”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२५ : कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“कोसी सोझाँ बहै छै, आँखि रूप परखै / धार संग आस नकसा फेर
लिखैए”। बीचक पाठ—“कोसी दूर बहै छै, देखनिहार बदलै / धार कोसी लग पसरै
छै, बोध संग चलै”। अन्तिम पाँति—“कोसी एखन बहै छै, निष्कर्ष सीमा धरै /
बालू पाछाँ इतिहास नकसा फेर लिखैए”।

‘कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए’क काव्य-केन्द्र “धार भीतर पसरै छै,
लोक कोसीक नाम बुझै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा
पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें हाथ-पएक व्यवहारसँ जोडैत अछि। “कोसी
दूर बहै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा
पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। शीर्षकक पदार्थगत बिम्ब आ
‘कारण/प्रमाण’क अमूर्त निष्कर्षक बीचक वैचारिक दूरी समीक्षा लेल महत्वपूर्ण
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास,
आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “नकसा फेर लिखैए”।
रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई
पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२६ : पगडंडी धूर — आस एतबे साँच नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“पगडंडी सोझाँ मुडै छै, आँखि रूप परखै / धूर कात आस एतबे साँच
नहि”। बीचक पाठ—“पगडंडी दूरो मुडै छै, देखनिहार बदलै / धूर फेरो उडै छै,

बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“धूर एखनहुँ उड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / पगडंडी संग इतिहास एतबे साँच नहि”।

‘पगडंडी धूर’क काव्य-केन्द्र “धूर लोकक हाथे उड़ै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। बाट, पगडंडी वा गति-वस्तुक दृश्य दृष्टिबिन्दुक परिवर्तनक सम्भावना जगबैत अछि; चलनाइ देहक काज आ अर्थक खोज दुनू अछि। “पगडंडी दूरो मुड़ै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राहक वास्तविक स्थल आ यात्रिक निर्णयक बदलैत कारण कम खुलैत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “एतबे साँच नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२७ : नाव पतवार — मान तखन अर्थ खुलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“नाव सोझाँ सरकै छै, आँखि रूप परखै / पतवार कात मान तखन अर्थ खुलैत अछि”। बीचक पाठ—“नाव दूरो सरकै छै, देखनिहार बदलै / पतवार फेरो काटै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“पतवार एखनहुँ काटै छै, उत्तरदायित्व जागै / नाव संग निदान तखन अर्थ खुलैत अछि”।

‘नाव पतवार’क काव्य-केन्द्र “पतवार लोकक हाथे काटै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। यात्राक चिन्ह आ पएरक गति बाह्य दूरीक मनक अनुभवसँ जोड़बाक कोशिश करैत अछि। “नाव दूरो सरकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। यात्रा-दृश्यक आवर्तनक बावजूद यात्रीक सम्पूर्ण घटना-क्रम स्पष्ट नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “तखन अर्थ खुलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२८ : सनक रस्सी — राह मोन फेर पूछैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सन सोझाँ तनै छै, आँखि रूप परखै / रस्सी कात राह मोन फेर पूछैत रहै”। बीचक पाठ—“सन दूरो तनै छै, देखनिहार बदलै / रस्सी फेरो मुडै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“रस्सी एखनहुँ मुडै छै, उत्तरदायित्व जागै / सन संग प्रवाह मोन फेर पूछैत रहै”।

‘सनक रस्सी’क काव्य-केन्द्र “रस्सी लोकक हाथे मुडै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकँ घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोडैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “सन दूरो तनै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “मोन फेर पूछैत रहै”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२९ : सरकंडा चटाई — रंग नाम कतहु हराइत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०२९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सरकंडा सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / चटाई कात रंग नाम कतहु हराइत नहि”। बीचक पाठ—“सरकंडा दूरो नमै छै, देखनिहार बदलै / चटाई फेरो जुडै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“चटाई एखनहुँ जुडै छै, उत्तरदायित्व जागै / सरकंडा संग प्रसंग नाम कतहु हराइत नहि”।

‘सरकंडा चटाई’क काव्य-केन्द्र “चटाई लोकक हाथे जुडै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “सरकंडा दूरो नमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “नाम कतहु हराइत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३० : तसर कोया — सार रेशमक छुअन बचल रहत

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कोया सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / सूत कात सार रेशमक छुअन बचल रहत”। बीचक पाठ—“कोया दूरो खुलै छै, देखनिहार बदलै / सूत फेरो तनै

छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“सूत एखनहुँ तनै छै, उत्तरदायित्व जागै / कोया संग भार रेशमक छुअन बचल रहत”।

‘तसर कोया’क काव्य-केन्द्र “सूत लोकक हाथे तनै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “कोया दूरो खुलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकें रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “रेशमक छुअन बचल रहत”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३१ : दही मथानी — गीत अपन बाट बनबैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मथानी सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / दही कात गीत अपन बाट बनबैत अछि”। बीचक पाठ—“मथानी दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै / दही फेरो फेटै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“दही एखनहुँ फेटै छै, उत्तरदायित्व जागै / मथानी संग पुनीत अपन बाट बनबैत अछि”।

‘दही मथानी’क काव्य-केन्द्र “दही लोकक हाथे फेटै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मथानी दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “अपन बाट बनबैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३२ : धानक कोठी — हाथ फेर घर दिस अबैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कोठी सोझाँ भरै छै, आँखि रूप परखै / धान कात हाथ फेर घर दिस अबैत अछि”। बीचक पाठ—“कोठी दूरो भरै छै, देखनिहार बदलै / धान फेरो टिकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“धान एखनहुँ टिकै छै, उत्तरदायित्व जागै / कोठी संग अनाथ फेर घर दिस अबैत अछि”।

‘धानक कोठी’क काव्य-केन्द्र “धान लोकक हाथे टिकै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकें माटि सँ जोडैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “कोठी दूरो भरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाथ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ,

पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “फेर घर दिस अबैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३३ : खोंइछ्छा अन्न — बात कथा एतय थमैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“खोंइछ्छा सोझाँ भरै छै, आँखि रूप परखै / अन्न कात बात कथा एतय थमैत नहि”। बीचक पाठ—“खोंइछ्छा दूरो भरै छै, देखनिहार बदलै / अन्न फेरो रहै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“अन्न एखनहुँ रहै छै, उत्तरदायित्व जागै / खोंइछ्छा संग तात कथा एतय थमैत नहि”।

‘खोंइछ्छा अन्न’क काव्य-केन्द्र “अन्न लोकक हाथे रहै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “खोंइछ्छा दूरो भरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “कथा एतय थमैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३४ : पोखर घाट — सोर पएर आगाँ बढैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पएर सोझाँ उतरै छै, आँखि रूप परखै / घाट कात सोर पएर आगाँ

बढ़ैत रहै”। बीचक पाठ—“पएर दूरो उतरै छै, देखनिहार बदलै / घाट फेरो भीजै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“घाट एखनहुँ भीजै छै, उत्तरदायित्व जागै / पएर संग कोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै”।

‘पोखर घाट’क काव्य-केन्द्र “घाट लोकक हाथे भीजै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें हाथ-पएरक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। “पएर दूरो उतरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “पएर आगाँ बढ़ैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३५ : अरिपन रेखा — ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“अरिपन सोझाँ बनै छै, आँखि रूप परखै / रेखा कात ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि”। बीचक पाठ—“अरिपन दूरो बनै छै, देखनिहार बदलै / रेखा फेरो फैलै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“रेखा एखनहुँ फैलै छै, उत्तरदायित्व जागै / अरिपन संग बाल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि”।

‘अरिपन रेखा’क काव्य-केन्द्र “रेखा लोकक हाथे फैलै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “अरिपन दूरो बनै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “रेखा घर सँ जुडैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३६ : बाँसुरी स्वर — आस भीतर साँस लैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बाँसुरी सोझाँ बजै छै, आँखि रूप परखै / स्वर कात आस भीतर साँस लैत अछि”। बीचक पाठ—“बाँसुरी दूरो बजै छै, देखनिहार बदलै / स्वर फेरो उठै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“स्वर एखनहुँ उठै छै, उत्तरदायित्व जागै / बाँसुरी संग इतिहास भीतर साँस लैत अछि”।

‘बाँसुरी स्वर’क काव्य-केन्द्र “स्वर लोकक हाथे उठै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कानक अनुभवकें शब्दमे बदलबाक जतन रचनाक विशेषता अछि; थाप आ मौनक विरोध आलोचनाक सम्भावना बढ़बैत अछि। “बाँसुरी दूरो बजै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककें प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास,

आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “भीतर साँस लैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३७ : गोरस मथनी — मान रस हाथे बदलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मथनी सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / गोरस कात मान रस हाथे बदलैत अछि”। बीचक पाठ—“मथनी दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै / गोरस फेरो हिलै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“गोरस एखनहुँ हिलै छै, उत्तरदायित्व जागै / मथनी संग निदान रस हाथे बदलैत अछि”।

‘गोरस मथनी’क काव्य-केन्द्र “गोरस लोकक हाथे हिलै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मथनी दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “रस हाथे बदलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३८ : मिथिला चित्रक कूची — सोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कूची सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / चित्र कात सोर रंग मौनहुँ

बोलैत अछि”। बीचक पाठ—“कूची दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै / चित्र फेरो उभरै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“चित्र एखनहुँ उभरै छै, उत्तरदायित्व जागै / कूची संग कोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि”।

‘मिथिला चित्रक कूची’क काव्य-केन्द्र “चित्र लोकक हाथे उभरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणक विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल अछि। “कूची दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुक रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “रंग मौनहुँ बोलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०३९ : माछक जाल — सार नीर जाल परखैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०३९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“जाल सोझाँ पसरै छै, आँखि रूप परखै / माछ कात सार नीर जाल परखैत अछि”। बीचक पाठ—“जाल दूरो पसरै छै, देखनिहार बदलै / माछ फेरो तिरै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“माछ एखनहुँ तिरै छै, उत्तरदायित्व जागै / जाल संग भार नीर जाल परखैत अछि”।

‘माछक जाल’क काव्य-केन्द्र “माछ लोकक हाथे तिरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। जलक गतिक संग मनुखक काज किंवा स्मृतिक विरोध सम्भव होइत अछि; एहि कारण जल केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि। “जाल दूरो पसरै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “नीर जाल परखैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४० : पोथीक जिल्द — गीत आखर देह धरैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“जिल्द सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / पन्ना कात गीत आखर देह धरैत अछि”। बीचक पाठ—“जिल्द दूरो खुलै छै, देखनिहार बदलै / पन्ना फेरो सरकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“पन्ना एखनहुँ सरकै छै, उत्तरदायित्व जागै / जिल्द संग पुनीत आखर देह धरैत अछि”।

‘पोथीक जिल्द’क काव्य-केन्द्र “पन्ना लोकक हाथे सरकै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। लिखल दस्तावेजक संग पाठकक बदलैत दृष्टिक सम्बन्ध एहि कृतिक विचार-संसारक प्रमुख धुरी अछि। “जिल्द दूरो खुलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। मूल संस्करण, लिखबाक काल अथवा दस्तावेजक स्रोत-शृंखला नहि; काव्यक चिन्ह वास्तविक अभिलेखक स्थानापन्न नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “आखर देह धरैत अछि”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०२१-१०४० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१०२१	बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए	बैसबाक आसन बनैए
१०२२	माटिक चूल्ह जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए	आँच भीतर जगैत रहैए
१०२३	दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए	पएर तले हरियैए
१०२४	झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए	पवन संग डोलैत रहैए
१०२५	कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए	नकसा फेर लिखैए
१०२६	पगडंडी धूर — आस एतबे साँच नहि	एतबे साँच नहि
१०२७	नाव पतवार — मान तखन अर्थ खुलैत अछि	तखन अर्थ खुलैत अछि
१०२८	सनक रस्सी — राह मोन फेर पूछैत रहै	मोन फेर पूछैत रहै
१०२९	सरकंडा चटाई — रंग नाम कतहु हराइत नहि	नाम कतहु हराइत नहि
१०३०	तसर कोया — सार रेशमक छुअन बचल रहत	रेशमक छुअन बचल रहत
१०३१	दही मथानी — गीत अपन बाट बनबैत अछि	अपन बाट बनबैत अछि
१०३२	धानक कोठी — हाथ फेर घर दिस अबैत अछि	फेर घर दिस अबैत अछि

१०३३	खोंइछा अन्न — बात कथा एतय थमैत नहि	कथा एतय थमैत नहि
१०३४	पोखर घाट — सोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै	पएर आगाँ बढ़ैत रहै
१०३५	अरिपन रेखा — ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि	रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
१०३६	बाँसुरी स्वर — आस भीतर साँस लैत अछि	भीतर साँस लैत अछि
१०३७	गोरस मथनी — मान रस हाथे बदलैत अछि	रस हाथे बदलैत अछि
१०३८	मिथिला चित्रक कूची — सोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि	रंग मौनहुँ बोलैत अछि
१०३९	माछक जाल — सार नीर जाल परखैत अछि	नीर जाल परखैत अछि
१०४०	पोथीक जिल्द — गीत आखर देह धरैत अछि	आखर देह धरैत अछि

गजल १०४१ : नीम पात — राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“नीम सोझाँ हरियै छै, आँखि रूप परखै / पात कात राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि”। बीचक पाठ—“नीम दूरो हरियै छै, देखनिहार बदलै / पात फेरो झरै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“पात एखनहुँ झरै छै, उत्तरदायित्व जागै / नीम संग प्रवाह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि”।

‘नीम पात’क काव्य-केन्द्र “पात लोकक हाथे झरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “नीम दूरो हरियै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’,

‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४२ : कांस फूल — रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कांस सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / फूल कात रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि”। बीचक पाठ—“कांस दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै / फूल फेरो झुकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“फूल एखनहुँ झुकै छै, उत्तरदायित्व जागै / कांस संग प्रसंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि”।

‘कांस फूल’क काव्य-केन्द्र “फूल लोकक हाथे झुकै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकें दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “कांस दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “चिन्ह पवनोमे बचैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४३ : बरगद जटा — हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“बरगद सोझाँ टिकै छै, आँखि रूप परखै / जटा कात हाथ काल फेर
घुरि अबैत नहि”। बीचक पाठ—“बरगद दूरो टिकै छै, देखनिहार बदलै / जटा
फेरो झुकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“जटा एखनहुँ झुकै छै,
उत्तरदायित्व जागै / बरगद संग अनाथ काल फेर घुरि अबैत नहि”।

‘बरगद जटा’क काव्य-केन्द्र “जटा लोकक हाथे झुकै छै, नाम काज सँ बदलै”क
दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकँ घर, गाम अथवा
यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि।
“बरगद दूरो टिकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष
अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ
परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन
अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग
नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-थ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ,
पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “काल फेर घुरि अबैत नहि”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४४ : पुआल गादी — मान घाम पुआलमे बचैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“पुआल सोझाँ सजै छै, आँखि रूप परखै / गादी कात मान घाम
पुआलमे बचैत अछि”। बीचक पाठ—“पुआल दूरो सजै छै, देखनिहार बदलै /
गादी फेरो टिकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“गादी एखनहुँ टिकै छै,
उत्तरदायित्व जागै / पुआल संग निदान घाम पुआलमे बचैत अछि”।

‘पुआल गादी’क काव्य-केन्द्र “गादी लोकक हाथे टिकै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गृहस्थक दैनिक वस्तुकेँ कविता अपन योग्य विषय मानैत अछि; छोट उपयोगी काजक भीतर स्मृतिक परत देखबाक प्रयास अछि। “पुआल दूरो सजै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “घाम पुआलमे बचैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४५ : तिलकोर पात — बात लता आँगन जोड़ैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“तिलकोर सोझाँ चढ़ै छै, आँखि रूप परखै / पात कात बात लता आँगन जोड़ैत अछि”। बीचक पाठ—“तिलकोर दूरो चढ़ै छै, देखनिहार बदलै / पात फेरो हरियै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“पात एखनहुँ हरियै छै, उत्तरदायित्व जागै / तिलकोर संग तात लता आँगन जोड़ैत अछि”।

‘तिलकोर पात’क काव्य-केन्द्र “पात लोकक हाथे हरियै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकें दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “तिलकोर दूरो चढ़ै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’,

‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “लता आँगन जोड़ैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४६ : सिंघाड़ा पोखर — गीत नीर तले फल पाकैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सिंघाड़ा सोझाँ पाकै छै, आँखि रूप परखै / पात कात गीत नीर तले फल पाकैत अछि”। बीचक पाठ—“सिंघाड़ा दूरो पाकै छै, देखनिहार बदलै / पात फेरो तिरै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“पात एखनहुँ तिरै छै, उत्तरदायित्व जागै / सिंघाड़ा संग पुनीत नीर तले फल पाकैत अछि”।

‘सिंघाड़ा पोखर’क काव्य-केन्द्र “पात लोकक हाथे तिरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें हाथ-पएरक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। “सिंघाड़ा दूरो पाकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “नीर तले फल पाकैत अछि”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४७ : कमला धार — सार नीर सभ गप कहैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कमला सोझाँ बहै छै, आँखि रूप परखै / धार कात सार नीर सभ गप कहैत नहि”। बीचक पाठ—“कमला दूरो बहै छै, देखनिहार बदलै / धार फेरो सरकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“धार एखनहुँ सरकै छै, उत्तरदायित्व जागै / कमला संग भार नीर सभ गप कहैत नहि”।

‘कमला धार’क काव्य-केन्द्र “धार लोकक हाथे सरकै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थासँ पोसाइत अछि। “कमला दूरो बहै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “नीर सभ गप कहैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४८ : चिरई घोंसला — सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“चिरई सोझाँ उडै छै, आँखि रूप परखै / घोंसला कात सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि”। बीचक पाठ—“चिरई दूरो उडै छै, देखनिहार बदलै / घोंसला फेरो

जुड़े छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“घोंसला एखनहुँ जुड़े छै,
उत्तरदायित्व जागै / चिरई संग कोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि”।

‘चिरई घोंसला’क काव्य-केन्द्र “घोंसला लोकक हाथे जुड़े छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “चिरई दूरो उड़े छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “मौनहुँ उत्तर दैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४९ : धानक लावा — ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०४९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“लावा सोझाँ फूटै छै, आँखि रूप परखै / धान कात ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि”। बीचक पाठ—“लावा दूरो फूटै छै, देखनिहार बदलै / धान फेरो फुलै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“धान एखनहुँ फुलै छै,
उत्तरदायित्व जागै / लावा संग बाल रूप बदलियो मूल रहैत अछि”।

‘धानक लावा’क काव्य-केन्द्र “धान लोकक हाथे फुलै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “लावा दूरो फूटै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “रूप बदलियो मूल रहैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५० : आखरक यात्रा — आस अन्त एतय होइत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आखर सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / यात्रा कात आस अन्त एतय होइत नहि”। बीचक पाठ—“आखर दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै / यात्रा फेरो बढै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“यात्रा एखनहुँ बढै छै, उत्तरदायित्व जागै / आखर संग इतिहास अन्त एतय होइत नहि”।

‘आखरक यात्रा’क काव्य-केन्द्र “यात्रा लोकक हाथे बढै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। बाट, पगडंडी वा गति-वस्तुक दृश्य दृष्टिबिन्दुक परिवर्तनक सम्भावना जगबैत अछि; चलनाइ देहक काज आ अर्थक खोज दुनू अछि। “आखर दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राहक वास्तविक स्थल आ यात्रिक निर्णयक बदलैत कारण कम खुलैत अछि। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास,

आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “अन्त एतय होइत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५१ : लोहारक धौकनी — आस कथन एतेक पर थिर नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“धौकनी सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / आँच भीतर आस कथन एतेक पर थिर नहि”। बीचक पाठ—“धौकनी दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै / आँच फेर जरै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“आँच एखनहुँ जरै छै, उत्तरदायित्व जागै / धौकनी संग इतिहास कथन एतेक पर थिर नहि”।

‘लोहारक धौकनी’क काव्य-केन्द्र “आँच लोकक हाथे जरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “धौकनी दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “कथन एतेक पर थिर नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५२ : करघाक ताना — मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ताना भोरमे तनै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / करघा कात मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि”। बीचक पाठ—“सूत दूर बुनै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / करघा सोझाँ चलै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“करघा एखन चलै छै, साझा दायित्व जागै / सूत संग निदान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि”।

‘करघाक ताना’क काव्य-केन्द्र “करघा लोक बीच चलै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। वस्तु गढ़बाक अभ्यासँ काव्यक ध्यान ठोस करैत अछि; निर्माता आ तैयार वस्तुक बीचक फासल एकर अर्थ-सम्भावना अछि। “सूत दूर बुनै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकें रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “सूत भीतर चिन्ह बचल अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५३ : अलसी फूल — राह धुनि पवनक संग मुडैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बीआ सोझाँ पाकै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / अलसी भीतर राह धुनि पवनक संग मुडैत रहै”। बीचक पाठ—“अलसी दूर डोलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / पवन फेर बहै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“फूल एखनहुँ खिलै छै, साझा मान फेर जागै / अलसी संग प्रवाह धुनि पवनक संग मुडैत रहै”।

‘अलसी फूल’क काव्य-केन्द्र “अलसी गाममे डोलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकेँ दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “अलसी दूर डोलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “धुनि पवनक संग मुडैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५४ : सरिसो खेत — रंग नेह बिना रंग पूरा नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भँवरा लग गुँजै छै, आँखि पहिल रूप परखै / सरिसो भीतर रंग नेह बिना रंग पूरा नहि”। बीचक पाठ—“खेत दूरो हरियै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / सरिसो फेर लहरै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“भँवरा एखन गुँजै छै, दायित्व मनमे जागै / सरिसो संग प्रसंग नेह बिना रंग पूरा नहि”।

‘सरिसो खेत’क काव्य-केन्द्र “खेत लोकक काजे हरियै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतु, बीया आ अन्नक सह-उपस्थिति ग्रामीण अनुभवकेँ निराकार आदर्शक बदला पदार्थगत रूप दैत अछि। “खेत दूरो हरियै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककेँ मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। मूल

पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि;
जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग,
अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “नेह बिना रंग पूरा नहि”। रदीफयुक्त
मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक
पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५५ : पगहा गाँठि — सार बंधन अपन राह चुनैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“पगहा भोर दिस तनै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / रेसा भीतर सार बंधन
अपन राह चुनैत अछि”। बीचक पाठ—“खूँटा दूर टिकै छै, देखनिहार प्रश्न करै /
गाँठि फेर कसै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“पगहा एखनहुँ तनै
छै, उत्तरदायित्व जागै / रेसा संग भार बंधन अपन राह चुनैत अछि”।

‘पगहा गाँठि’क काव्य-केन्द्र “खूँटा लोक बीच टिकै छै, उपयोग अर्थकँ खोलै”क
दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकँ घर, गाम अथवा
यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि।
“खूँटा दूर टिकै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष
अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ
परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन
अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग
नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण सार, धार, विचार,
आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “बंधन अपन राह चुनैत अछि”।

रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५६ : जूटक बोरा — गीत बीज चुपे उत्तर धरैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“जूट सोझाँ बुनै छै, आँखि रूप परखै / बोरा भीतर गीत बीज चुपे उत्तर धरैत अछि”। बीचक पाठ—“जूट दूरो बुनै छै, देखनिहार बदलै / बोरा फेर भरै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“बोरा एखनहुँ भरै छै, उत्तरदायित्व जागै / जूट संग पुनीत बीज चुपे उत्तर धरैत अछि”।

‘जूटक बोरा’क काव्य-केन्द्र “बोरा लोकक हाथे भरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकें माटि सँ जोड़ैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “जूट दूरो बुनै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “बीज चुपे उत्तर धरैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५७ : कुशक आसन — हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आसन भोरमे बिछै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / कुश कात हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि”। बीचक पाठ—“धरती दूर थिरै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै /

कुश सोझाँ नमै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“कुश एखन नमै छै, साझा दायित्व जागै / धरती संग अनाथ छाह बदललहुँ मूल नहि”।

‘कुशक आसन’क काव्य-केन्द्र “कुश लोक बीच नमै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “धरती दूर थिरै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाथ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “छाह बदललहुँ मूल नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५८ : सोनारक हथौड़ी — बात थाप देहक भेद गनैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सोना सोझाँ नमै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / सोनार भीतर बात थाप देहक भेद गनैत रहै”। बीचक पाठ—“सोनार दूर गढै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / आँच फेर जरै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“हथौड़ी एखनहुँ बजै छै, साझा मान फेर जागै / सोनार संग तात थाप देहक भेद गनैत रहै”।

‘सोनारक हथौड़ी’क काव्य-केन्द्र “सोनार गाममे गढै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। वस्तु गढ़वाक अभ्यासँ काव्यक ध्यान ठोस करैत अछि; निर्माता आ तैयार वस्तुक बीचक फासल एकर अर्थ-सम्भावना अछि।

“सोनार दूर गढै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकेँ रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “थाप देहक भेद गनैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०५१ : जुगनू राति — सोर राति भीतर भोर पलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०५१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“झाड़ी लग डोलै छै, आँखि पहिल रूप परखै / जुगनू भीतर सोर राति भीतर भोर पलैत अछि”। बीचक पाठ—“ज्योति दूरो जगै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / जुगनू फेर चमकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“झाड़ी एखन डोलै छै, दायित्व मनमे जागै / जुगनू संग कोर राति भीतर भोर पलैत अछि”।

‘जुगनू राति’क काव्य-केन्द्र “ज्योति लोकक काजे जगै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “ज्योति दूरो जगै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “भोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “राति भीतर भोर पलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६० : ओसक बूँद — ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ओस भोर दिस टिकै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / पात भीतर ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि”। बीचक पाठ—“भोर दूर खुलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / बूँद फेर चमकै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“ओस एखनहुँ टिकै छै, उत्तरदायित्व जागै / पात संग बाल घाम बिना चमक खुलैत नहि”।

‘ओसक बूँद’क काव्य-केन्द्र “भोर लोक बीच खुलै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “भोर दूर खुलै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “घाम बिना चमक खुलैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०४१-१०६० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
-----	------------------	-----------

१०४१	नीम पात — राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि	ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
१०४२	कांस फूल — रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि	चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
१०४३	बरगद जटा — हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि	काल फेर घुरि अबैत नहि
१०४४	पुआल गादी — मान घाम पुआलमे बचैत अछि	घाम पुआलमे बचैत अछि
१०४५	तिलकोर पात — बात लता आँगन जोड़ैत अछि	लता आँगन जोड़ैत अछि
१०४६	सिंघाड़ा पोखर — गीत नीर तले फल पाकैत अछि	नीर तले फल पाकैत अछि
१०४७	कमला धार — सार नीर सभ गप कहैत नहि	नीर सभ गप कहैत नहि
१०४८	चिरई घोंसला — सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि	मौनहुँ उत्तर दैत अछि
१०४९	धानक लावा — ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि	रूप बदलियो मूल रहैत अछि
१०५०	आखरक यात्रा — आस अन्त एतय होइत नहि	अन्त एतय होइत नहि
१०५१	लोहारक धौकनी — आस कथन एतेक पर थिर नहि	कथन एतेक पर थिर नहि
१०५२	करघाक ताना — मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि	सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
१०५३	अलसी फूल — राह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै	धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै

१०५४	सरिसो खेत — रंग नेह बिना रंग पूरा नहि	नेह बिना रंग पूरा नहि
१०५५	पगहा गाँठि — सार बंधन अपन राह चुनैत अछि	बंधन अपन राह चुनैत अछि
१०५६	जूटक बोरा — गीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि	बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
१०५७	कुशक आसन — हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि	छाह बदललहुँ मूल नहि
१०५८	सोनारक हथौड़ी — बात थाप देहक भेद गनैत रहै	थाप देहक भेद गनैत रहै
१०५९	जुगनू राति — सोर राति भीतर भोर पलैत अछि	राति भीतर भोर पलैत अछि
१०६०	ओसक बूँद — ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि	घाम बिना चमक खुलैत नहि

गजल १०६१ : कमलनाल — आस नोरक अर्थ एक्के नहि

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“कमलनाल सोझाँ उठै छै, आँखि रूप परखै / नीर भीतर आस नोरक अर्थ एक्के नहि” । बीचक पाठ—“कमलनाल दूरो उठै छै, देखनिहार बदलै / नीर फेर लहरै छै, बोध निज रूप धरै” । अन्तिम पाँति—“नीर एखनहुँ लहरै छै, उत्तरदायित्व जागै / कमलनाल संग इतिहास नोरक अर्थ एक्के नहि” ।

‘कमलनाल’क काव्य-केन्द्र “नीर लोकक हाथे लहरै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि । कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें हाथ-पएक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि । “कमलनाल दूरो उठै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि । मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’,

‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “नोरक अर्थ एक्के नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६२ : माटिक पुतरी — मान साँस संग लय बदलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“माटि भोरमे नमै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / पुतरी कात मान साँस संग लय बदलैत अछि”। बीचक पाठ—“हाथ दूर गढै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / पुतरी सोझाँ बनै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“पुतरी एखन बनै छै, साझा दायित्व जागै / हाथ संग निदान साँस संग लय बदलैत अछि”।

‘माटिक पुतरी’क काव्य-केन्द्र “पुतरी लोक बीच बनै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “हाथ दूर गढै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “साँस संग लय बदलैत अछि”।

रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६३ : बढईक रन्दा — सोर हाथक छाप मेटैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“छिलका सोझाँ झरै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / रन्दा भीतर सोर हाथक छाप मेटैत नहि”। बीचक पाठ—“रन्दा दूर चलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / हाथ फेर सम्हरै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“काठ एखनहुँ घिसै छै, साझा मान फेर जागै / रन्दा संग कोर हाथक छाप मेटैत नहि”।

‘बढईक रन्दा’क काव्य-केन्द्र “रन्दा गाममे चलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “रन्दा दूर चलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “हाथक छाप मेटैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६४ : पानक बारी — सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“माटि लग भीजै छै, आँखि पहिल रूप परखै / पान भीतर सार नीर नीचे

जीवन जगैत अछि”। बीचक पाठ—“लता दूरो फैलै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / पान फेर चढै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“माटि एखन भीजै छै, दायित्व मनमे जागै / पान संग भार नीर नीचे जीवन जगैत अछि”।

‘पानक बारी’क काव्य-केन्द्र “लता लोकक काजे फैलै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकें घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “लता दूरो फैलै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “नीर नीचे जीवन जगैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६५ : पोखरक पाँक — गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पाँक भोर दिस धरै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / पएर भीतर गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि”। बीचक पाठ—“नीर दूर बहै छै, देखनिहार प्रश्न करै / पोखर फेर लहरै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“पाँक एखनहुँ धरै छै, उत्तरदायित्व जागै / पएर संग पुनीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि”।

‘पोखरक पाँक’क काव्य-केन्द्र “नीर लोक बीच बहै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थासँ पोसाइत

अच्छि। “नीर दूर बहै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अच्छि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अच्छि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अच्छि; जतेक अलग वस्तु अच्छि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “नीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “मौनक सीमा एतय टूटैत अच्छि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अच्छि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अच्छि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६६ : आम्रपल्लव तोरण — राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६६ मे १२ मिसरा दर्ज अच्छि। आरम्भ—“पल्लव सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / तोरण भीतर राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै”। बीचक पाठ—“पल्लव दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै / तोरण फेर सजै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“तोरण एखनहुँ सजै छै, उत्तरदायित्व जागै / पल्लव संग प्रवाह समय अपन गाँठि खोलैत रहै”।

‘आम्रपल्लव तोरण’क काव्य-केन्द्र “तोरण लोकक हाथे सजै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अच्छि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अच्छि; मुख्य प्रश्न ई अच्छि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अच्छि। “पल्लव दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अच्छि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अच्छि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अच्छि; जतेक अलग वस्तु अच्छि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “समय अपन गाँठि खोलैत रहै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १०६७ : कुटजक छाल — रंग पवन संग देह झुकैत अछि

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“छाल भोरमे झरै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / कुटज कात रंग पवन संग देह झुकैत अछि” । बीचक पाठ—“पवन दूर बहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / कुटज सोझाँ टिकै छै, बोध अपन ठाम रहै” । अन्तिम पाँति—“कुटज एखन टिकै छै, साझा दायित्व जागै / पवन संग प्रसंग पवन संग देह झुकैत अछि” ।

‘कुटजक छाल’क काव्य-केन्द्र “कुटज लोक बीच टिकै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि । गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि । “पवन दूर बहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही । मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “पवन संग देह झुकैत अछि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १०६८ : मसूरक फूल — हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“खेत सोझाँ हरियै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / मसूर भीतर हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै”। बीचक पाठ—“मसूर दूर फुलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / बीआ फेर पाकै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“फूल एखनहुँ डोलै छै, साझा मान फेर जागै / मसूर संग अनाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै”।

‘मसूरक फूल’क काव्य-केन्द्र “मसूर गाममे फुलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकें माटि सँ जोड़ैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “मसूर दूर फुलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-थ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “दूरिक राह मोन नापैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६९ : चनाक फली — मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०६९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“खेत लग हरियै छै, आँखि पहिल रूप परखै / चना भीतर मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि”। बीचक पाठ—“दाना दूरो टिकै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / चना फेर पाकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“खेत एखन हरियै छै, दायित्व मनमे जागै / चना संग निदान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि”।

‘चनाक फली’क काव्य-केन्द्र “दाना लोकक काजे टिकै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतु, बीया आ अन्नक सह-उपस्थिति ग्रामीण अनुभवकें निराकार आदर्शक बदला पदार्थगत रूप दैत अछि। “दाना दूरो टिकै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “दाना भीतर ऋतु बसैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७० : मूँजक चटाई — बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मूँज भोर दिस बुनै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / रेसा भीतर बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि”। बीचक पाठ—“आँगन दूर खुलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / चटाई फेर बिछै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“मूँज एखनहुँ बुनै छै, उत्तरदायित्व जागै / रेसा संग तात आँगन सभ कथा सुनैत अछि”।

‘मूँजक चटाई’क काव्य-केन्द्र “आँगन लोक बीच खुलै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। वस्तु गढ़बाक अभ्यासकें काव्यक ध्यान ठोस करैत अछि; निर्माता आ तैयार वस्तुक बीचक फासल एकर अर्थ-सम्भावना अछि।

“आँगन दूर खुलै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकें रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक

चाही। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “आँगन सभ कथा सुनैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७१ : ताँतक गाँठि — गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“ताँत सोझाँ तनै छै, आँखि रूप परखै / गाँठि भीतर गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि”। बीचक पाठ—“ताँत दूरो तनै छै, देखनिहार बदलै / गाँठि फेर कसै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“गाँठि एखनहुँ कसै छै, उत्तरदायित्व जागै / ताँत संग पुनीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि”।

‘ताँतक गाँठि’क काव्य-केन्द्र “गाँठि लोकक हाथे कसै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणक विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल अछि। “ताँत दूरो तनै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “प्रश्नक डोर टूटैत नहि”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७२ : पलाशक फूल — सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“फूल भोरमे खिलै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / पलाश कात सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि”। बीचक पाठ—“धूप दूर पसरै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / पलाश सोझाँ दमकै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“पलाश एखन दमकै छै, साझा दायित्व जागै / धूप संग भार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि”।

‘पलाशक फूल’क काव्य-केन्द्र “पलाश लोक बीच दमकै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकेँ दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “धूप दूर पसरै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७३ : बकाइन छाह — सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पात सोझाँ झरै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / बकाइन भीतर सोर गंध

पुरान घर चिन्हैत अछि”। बीचक पाठ—“बकाइन दूर पसरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / आँगन फेर महकै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“छाह एखनहुँ झुकै छै, साझा मान फेर जागै / बकाइन संग कोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि”।

‘बकाइन छाह’क काव्य-केन्द्र “बकाइन गाममे पसरै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “बकाइन दूर पसरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “गंध पुरान घर चिन्हैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७४ : चकरी पवन — ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आँगन लग खुलै छै, आँखि पहिल रूप परखै / चकरी भीतर ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि”। बीचक पाठ—“पाँख दूरो नाचै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / चकरी फेर घुमै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“आँगन एखन खुलै छै, दायित्व मनमे जागै / चकरी संग बाल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि”।

‘चकरी पवन’क काव्य-केन्द्र “पाँख लोकक काजे नाचै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत

अच्छि। “पाँख दूरो नाचै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अच्छि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अच्छि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अच्छि; जतेक अलग वस्तु अच्छि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अच्छि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अच्छि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७५ : सुईक टाँका — आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७५ मे १२ मिसरा दर्ज अच्छि। आरम्भ—“सुई भोर दिस चलै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / धागा भीतर आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै”। बीचक पाठ—“कपड़ा दूर सिलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / टाँका फेर जुड़ै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“सुई एखनहुँ चलै छै, उत्तरदायित्व जागै / धागा संग इतिहास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै”।

‘सुईक टाँका’क काव्य-केन्द्र “कपड़ा लोक बीच सिलै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अच्छि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अच्छि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अच्छि, केवल नारा सँ नहि। “कपड़ा दूर सिलै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अच्छि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अच्छि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अच्छि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अच्छि; जतेक अलग वस्तु अच्छि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १०७६ : बाँसक सूप — आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“बाँस-सूप सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / बाँस भीतर आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि” । बीचक पाठ—“बाँस-सूप दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै / बाँस फेर नमै छै, बोध निज रूप धरै” । अन्तिम पाँति—“बाँस एखनहुँ नमै छै, उत्तरदायित्व जागै / बाँस-सूप संग इतिहास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि” ।

‘बाँसक सूप’क काव्य-केन्द्र “बाँस लोकक हाथे नमै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि । स्थानक परिचित नाम पाठकें घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि । “बाँस-सूप दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि । मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १०७७ : काँसक डलिया — मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“काँस भोरमे नमै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / डलिया कात मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि”। बीचक पाठ—“हाथ दूर बुनै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / डलिया सोझाँ बनै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“डलिया एखन बनै छै, साझा दायित्व जागै / हाथ संग निदान बुनावट भीतर हाथक मान अछि”।

‘काँसक डलिया’क काव्य-केन्द्र “डलिया लोक बीच बनै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणकें विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल अछि। “हाथ दूर बुनै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “बुनावट भीतर हाथक मान अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७८ : घोंघाक खोल — राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“देह सोझाँ नमै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / घोंघा भीतर राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि”। बीचक पाठ—“घोंघा दूर सरकै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / नीर फेर बहै छै, ज्ञेय अलगा ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“खोल एखनहुँ

टिकै छै, साझा मान फेर जागै / घोंघा संग प्रवाह खोल बदलि जीवन थमैत नहि” ।

‘घोंघाक खोल’क काव्य-केन्द्र “घोंघा गाममे सरकै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “घोंघा दूर सरकै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ “खोल बदलि जीवन थमैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०७९ : सखुआ पात — रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०७९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“वन-पवन लग बहै छै, आँखि पहिल रूप परखै / सखुआ भीतर रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै”। बीचक पाठ—“डारि दूरो नमै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / सखुआ फेर डोलै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“वन-पवन एखन बहै छै, दायित्व मनमे जागै / सखुआ संग प्रसंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै”।

‘सखुआ पात’क काव्य-केन्द्र “डारि लोकक काजे नमै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “डारि दूरो नमै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’,

‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “पात झरलहुँ गंध बचल रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८० : कदंबक फूल — सार फूलक छाह समय धरि रहत

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कदंब भोर दिस महकै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / डारि भीतर सार फूलक छाह समय धरि रहत”। बीचक पाठ—“छाह दूर पसरै छै, देखनिहार प्रश्न करै / फूल फेर खिलै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“कदंब एखनहुँ महकै छै, उत्तरदायित्व जागै / डारि संग भार फूलक छाह समय धरि रहत”।

‘कदंबक फूल’क काव्य-केन्द्र “छाह लोक बीच पसरै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकेँ दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “छाह दूर पसरै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “फूलक छाह समय धरि रहत”। रदीफयुक्त

मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०६१-१०८० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१०६१	कमलनाल — आस नोरक अर्थ एक्के नहि	नोरक अर्थ एक्के नहि
१०६२	माटिक पुतरी — मान साँस संग लय बदलैत अछि	साँस संग लय बदलैत अछि
१०६३	बढईक रन्दा — सोर हाथक छाप मेटैत नहि	हाथक छाप मेटैत नहि
१०६४	पानक बारी — सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि	नीर नीचे जीवन जगैत अछि
१०६५	पोखरक पाँक — गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि	मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
१०६६	आम्रपल्लव तोरण — राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै	समय अपन गाँठि खोलैत रहै
१०६७	कुटजक छाल — रंग पवन संग देह झुकैत अछि	पवन संग देह झुकैत अछि
१०६८	मसूरक फूल — हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै	दूरिक राह मोन नापैत रहै
१०६९	चनाक फली — मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि	दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
१०७०	मूँजक चटाई — बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि	आँगन सभ कथा सुनैत अछि
१०७१	ताँतक गाँठि — गीत	प्रश्नक डोर टूटैत नहि

	प्रश्नक डोर टूटैत नहि	
१०७२	पलाशक फूल — सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि	धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
१०७३	बकाइन छाह — सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि	गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
१०७४	चकरी पवन — ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि	धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
१०७५	सुईक टाँका — आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै	आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
१०७६	बाँसक सूप — आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि	दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
१०७७	काँसक डलिया — मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि	बुनावट भीतर हाथक मान अछि
१०७८	घोंघाक खोल — राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि	खोल बदलि जीवन थमैत नहि
१०७९	सखुआ पात — रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै	पात झरलहुँ गंध बचल रहै
१०८०	कदंबक फूल — सार फूलक छाह समय धरि रहत	फूलक छाह समय धरि रहत

गजल १०८१ : बेंतक मोढ़ा — गीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“बेंत सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / मोढ़ा भीतर गीत बेंत नमितहुँ
मूल टूटैत नहि”। बीचक पाठ—“बेंत दूरो नमै छै, देखनिहार बदलै / मोढ़ा फेर

टिकै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“मोढ़ा एखनहुँ टिकै छै,
उत्तरदायित्व जागै / बेंत संग पुनीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि”।

‘बेंतक मोढ़ा’क काव्य-केन्द्र “मोढ़ा लोकक हाथे टिकै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “बेंत दूरो नमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८२ : मृदंगक चमड़ा — हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“चमड़ा भोरमे तनै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / मृदंग कात हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि”। बीचक पाठ—“मौन दूर रहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / मृदंग सोझाँ बजै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“मृदंग एखन बजै छै, साझा दायित्व जागै / मौन संग अनाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि”।

‘मृदंगक चमड़ा’क काव्य-केन्द्र “मृदंग लोक बीच बजै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अनुनादकें स्मृतिसँ जोड़बाक चेष्टा गजलकें श्रव्य बनबैत अछि, यद्यपि सुर स्वयं कागजपर अनुपस्थित अछि। “मौन दूर रहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककें प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-थ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८३ : मटरक फूल — बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मटर-खेत सोझाँ हरियै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / मटर भीतर बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै”। बीचक पाठ—“मटर दूर डोलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / पछिया फेर बहै छै, ज्ञेय अलंगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“मटर-फूल एखनहुँ खिलै छै, साझा मान फेर जागै / मटर संग तात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै”।

‘मटरक फूल’क काव्य-केन्द्र “मटर गाममे डोलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकें माटि सँ जोड़ैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “मटर दूर डोलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८४ : तिलक फली — सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“तिल-खेत लग हरियै छै, आँखि पहिल रूप परखै / तिल भीतर सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि”। बीचक पाठ—“तिल-दाना दूरो टिकै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / तिल फेर पाकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“तिल-खेत एखन हरियै छै, दायित्व मनमे जागै / तिल संग कोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि”।

‘तिलक फली’क काव्य-केन्द्र “तिल-दाना लोकक काजे टिकै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतु, बीया आ अन्नक सह-उपस्थिति ग्रामीण अनुभवकें निराकार आदर्शक बदला पदार्थगत रूप दैत अछि। “तिल-दाना दूरो टिकै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८५ : भदई धान — ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“भदई भोर दिस लहरै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / बालि भीतर ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै”। बीचक पाठ—“घर दूर महकै छै, देखनिहार प्रश्न करै / धान फेर पाकै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“भदई एखनहुँ लहरै छै, उत्तरदायित्व जागै / बालि संग बाल धानक गंध घर चिन्हैत रहै”।

‘भदई धान’क काव्य-केन्द्र “घर लोक बीच महकै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “घर दूर महकै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “धानक गंध घर चिन्हैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८६ : हंसुलीक चमक — आस चमक देहक मान बनैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“हंसुली सोझाँ दमकै छै, आँखि रूप परखै / चमक भीतर आस चमक देहक मान बनैत नहि”। बीचक पाठ—“हंसुली दूरो दमकै छै, देखनिहार बदलै / चमक फेर फैलै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“चमक एखनहुँ फैलै छै, उत्तरदायित्व जागै / हंसुली संग इतिहास चमक देहक मान बनैत नहि”।

‘हंसुलीक चमक’क काव्य-केन्द्र “चमक लोकक हाथे फैलै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। दोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “हंसुली दूरो दमकै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “चमक देहक मान बनैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८७ : कनैल फूल — मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“फूल भोरमे दमकै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / कनैल कात मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि”। बीचक पाठ—“रस दूर टिकै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / कनैल सोझाँ खिलै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“कनैल एखन खिलै छै, साझा दायित्व जागै / रस संग निदान रंग विषक छाह ढाकैत नहि”।

‘कनैल फूल’क काव्य-केन्द्र “कनैल लोक बीच खिलै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकें दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “रस दूर टिकै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान; रदीफ “रंग विषक छाह ढाकैत नहि” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १०८८ : खपरैल छानि — सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“खपड़ा सोझाँ जुडै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / खपरैल भीतर सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै” । बीचक पाठ—“खपरैल दूर टिकै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / वर्षा फेर बरसै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै” । अन्तिम पाँति—“छानि एखनहुँ ढलै छै, साझा मान फेर जागै / खपरैल संग कोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै” ।

‘खपरैल छानि’क काव्य-केन्द्र “खपरैल गाममे टिकै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि । रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि । “खपरैल दूर टिकै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि । मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल १०८९ : ताड़क पंखा — सार हवा हाथक संगति मानैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०८९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“हवा लग बहै छै, आँखि पहिल रूप परखै / पंखा भीतर सार हवा हाथक संगति मानैत अछि”। बीचक पाठ—“पात दूरो जुड़ै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / पंखा फेर डोलै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“हवा एखन बहै छै, दायित्व मनमे जागै / पंखा संग भार हवा हाथक संगति मानैत अछि”।

‘ताड़क पंखा’क काव्य-केन्द्र “पात लोकक काजे जुड़ै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “पात दूरो जुड़ै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “हवा हाथक संगति मानैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९० : घैलाक मुँह — गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“घैला भोर दिस भरै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / नीर भीतर गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि”। बीचक पाठ—“माटि दूर भीजै छै, देखनिहार प्रश्न

करै / मुँह फेर खुलै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“धैला एखनहुँ भरै छै, उत्तरदायित्व जागै / नीर संग पुनीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि”।

‘धैलाक मुँह’क काव्य-केन्द्र “माटि लोक बीच भीजै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। जलक गतिक संग मनुखक काज किंवा स्मृतिक विरोध सम्भव होइत अछि; एहि कारण जल केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि। “माटि दूर भीजै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९१ : सिलौटक धार — राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“सिलौट सोझाँ घिसै छै, आँखि रूप परखै / धार भीतर राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि”। बीचक पाठ—“सिलौट दूरो घिसै छै, देखनिहार बदलै / धार फेर उघड़ै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“धार एखनहुँ उघड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / सिलौट संग प्रवाह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि”।

‘सिलौटक धार’क काव्य-केन्द्र “धार लोकक हाथे उघड़ै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकें घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “सिलौट दूरो घिसै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार "—ह", उदाहरण राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह; रदीफ "घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि"। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९२ : लहठीक खनक — रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—"खनक भोरमे उठै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / लहठी कात रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै"। बीचक पाठ—"कलाई दूर चलै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / लहठी सोझाँ बजै छै, बोध अपन ठाम रहै"। अन्तिम पाँति—"लहठी एखन बजै छै, साझा दायित्व जागै / कलाई संग प्रसंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै"।

'लहठीक खनक'क काव्य-केन्द्र "लहठी लोक बीच बजै छै, व्यवहार अर्थ खोलै"क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणक विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल अछि। "कलाई दूर चलै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै"मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुक रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। मूल पाठमे 'कारण', 'भेद', 'साँच', 'रूप' सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग; रदीफ “खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९३ : चूल्हिक राख — हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“आँच सोझाँ टिकै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / चूल्हि भीतर हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि”। बीचक पाठ—“चूल्हि दूर जरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / धुआँ फेर उठै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“राख एखनहुँ उडै छै, साझा मान फेर जागै / चूल्हि संग अनाथ राख भीतर आँच मरैत नहि”।

‘चूल्हिक राख’क काव्य-केन्द्र “चूल्हि गाममे जरै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “चूल्हि दूर जरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाथ”, उदाहरण हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ; रदीफ “राख भीतर आँच मरैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९४ : कचनार पात — मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“पुरवैया लग बहै छै, आँखि पहिल रूप परखै / कचनार भीतर मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि”। बीचक पाठ—“नस दूरो चलै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / कचनार फेर डोलै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“पुरवैया एखन बहै छै, दायित्व मनमे जागै / कचनार संग निदान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि”।

‘कचनार पात’क काव्य-केन्द्र “नस लोकक काजे चलै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “नस दूरो चलै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान्, ध्यान, पहिचान्, अनुमान्, विधान्, निदान्; रदीफ “पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९५ : कपासक रूई — बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“कपास भोर दिस फूटै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / रेसा भीतर बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि”। बीचक पाठ—“हाथ दूर चलै छै, देखनिहार प्रश्न

करै / रूई फेर उड़ै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“कपास एखनहुँ फूटै छै, उत्तरदायित्व जागै / रेसा संग तात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि”।

‘कपासक रूई’क काव्य-केन्द्र “हाथ लोक बीच चलै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “हाथ दूर चलै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात; रदीफ “रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९६ : बेलनक घुमाव — गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“बेलन सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / घुमाव भीतर गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि”। बीचक पाठ—“बेलन दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै / घुमाव फेर चलै छै, बोध निज रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“घुमाव एखनहुँ चलै छै, उत्तरदायित्व जागै / बेलन संग पुनीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि”।

‘बेलनक घुमाव’क काव्य-केन्द्र “घुमाव लोकक हाथे चलै छै, नाम काज सँ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “बेलन दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत; रदीफ “घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९७ : धानक भूसी — सार भूसी उडलहुँ दाना धिर रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“धान भोरमे पाकै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / भूसी कात सार भूसी उडलहुँ दाना धिर रहै”। बीचक पाठ—“धान-पछिया दूर बहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / भूसी सोझाँ उडै छै, बोध अपन ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“भूसी एखन उडै छै, साझा दायित्व जागै / धान-पछिया संग भार भूसी उडलहुँ दाना धिर रहै”।

‘धानक भूसी’क काव्य-केन्द्र “भूसी लोक बीच उडै छै, व्यवहार अर्थ खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “धान-पछिया दूर बहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, विचार,

आधार, कछार, दुआर, भार; रदीफ “भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९८ : मधुक छत्ता — सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मौरी सोझाँ उडै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / छत्ता भीतर सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि”। बीचक पाठ—“छत्ता दूर भरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / फूल फेर खिलै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै”। अन्तिम पाँति—“मधु एखनहुँ टिकै छै, साझा मान फेर जागै / छत्ता संग कोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि”।

‘मधुक छत्ता’क काव्य-केन्द्र “छत्ता गाममे भरै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “छत्ता दूर भरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०९९ : रुद्राक्षक दाना — ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १०९९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“हाथ लग चलै छै, आँखि पहिल रूप परखै / रुद्राक्ष भीतर ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि”। बीचक पाठ—“डोर दूरो जुडै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / रुद्राक्ष फेर टिकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै”। अन्तिम पाँति—“हाथ एखन चलै छै, दायित्व मनमे जागै / रुद्राक्ष संग बाल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि”।

‘रुद्राक्षक दाना’क काव्य-केन्द्र “डोर लोकक काजे जुडै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतु, बीया आ अन्नक सह-उपस्थिति ग्रामीण अनुभवकें निराकार आदर्शक बदला पदार्थगत रूप दैत अछि। “डोर दूरो जुडै छै, ज्ञाता निज बोध परखै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “दाना गनितहुँ जप पूरा नहि”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०० : घंटीक अनुनाद — आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“घंटी भोर दिस बजै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / ध्वनि भीतर आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै”। बीचक पाठ—“मन्दिर दूर जागै छै, देखनिहार प्रश्न करै / अनुनाद फेर पसरै छै, बोध अपन सीमा धरै”। अन्तिम पाँति—“घंटी

एखनहुँ बजै छै, उत्तरदायित्व जागै / ध्वनि संग इतिहास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै” ।

‘घंटीक अनुनाद’क काव्य-केन्द्र “मन्दिर लोक बीच जागै छै, उपयोग अर्थकें खोलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अनुनादकें स्मृतिसँ जोड़बाक चेष्टा गजलकें श्रव्य बनबैत अछि, यद्यपि सुर स्वयं कागजपर अनुपस्थित अछि। “मन्दिर दूर जागै छै, देखनिहार प्रश्न करै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककें प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास; रदीफ “अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १०८१-११०० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
१०८१	बेंतक मोढा — गीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि	बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
१०८२	मृदंगक चमड़ा — हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि	थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
१०८३	मटरक फूल — बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै	पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
१०८४	तिलक फली — सोर दाना छोडो हो, कथा पैघ	दाना छोडो हो, कथा पैघ अछि

	अच्छि	
१०८५	भदई धान — ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै	धानक गंध घर चिन्हैत रहै
१०८६	हंसुलीक चमक — आस चमक देहक मान बनैत नहि	चमक देहक मान बनैत नहि
१०८७	कनैल फूल — मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि	रंग विषक छाह ढाकैत नहि
१०८८	खपरैल छानि — सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै	वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
१०८९	ताड़क पंखा — सार हवा हाथक संगति मानैत अच्छि	हवा हाथक संगति मानैत अच्छि
१०९०	घैलाक मुँह — गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अच्छि	मुँह छोट, नीरक राह पैघ अच्छि
१०९१	सिलौटक धार — राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अच्छि	घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अच्छि
१०९२	लहठीक खनक — रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै	खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
१०९३	चूल्हिक राख — हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि	राख भीतर आँच मरैत नहि
१०९४	कचनार पात — मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अच्छि	पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अच्छि
१०९५	कपासक रूई — बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि	रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि

१०९६	बेलनक घुमाव — गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि	घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
१०९७	धानक भूसी — सार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै	भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
१०९८	मधुक छत्ता — सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि	मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
१०९९	रुद्राक्षक दाना — ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि	दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
११००	घंटीक अनुनाद — आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै	अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै

गजल ११०१ : हँसियाक धार — मान पर राह खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि धान मे साँच फेर खुलै / मोन राखि धान मान पर राह
खुलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि धान मे भेद साफ जनै / लोक देखि धार मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि धार पर मान फेर जगै / कान राखि धान
शान पर राह खुलै”।

‘हँसियाक धार’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि धान मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र
अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणक विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल
अछि। “मोन नापि धान मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष
अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक
प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। अनेक शेरमे
“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि
घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान्, दान, शान; रदीफ “पर राह खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०२ : इनारक डोल — सोर संग नेह रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि डोल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि डोल सोर संग नेह रहै”। बीचक पाठ—“मोन नापि डोल मे भेद साफ जनै / लोक देखि नीर मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि नीर पर मान फेर जगै / कान राखि डोल कोर संग नेह रहै”।

‘इनारक डोल’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि डोल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। जलक गतिक संग मनुष्यक काज किंवा स्मृतिक विरोध सम्भव होइत अछि; एहि कारण जल केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहि। “मोन नापि डोल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “संग नेह रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०३ : घूरक आँच — राह पर गप खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि घूर मे साँच फेर खुलै / मोन राखि घूर राह पर गप खुलै”।
बीचक पाठ—“मोन नापि घूर मे भेद साफ जनै / लोक देखि आँच मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि आँच पर मान फेर जगै / कान राखि घूर वाह पर गप खुलै”।

‘घूरक आँच’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि घूर मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मोन नापि घूर मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छुँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “पर गप खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०४ : ईखक गाँठि — गीत बीच राह चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि ईख मे साँच फेर खुलै / मोन राखि ईख गीत बीच राह चलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि ईख मे भेद साफ जनै / लोक देखि गाँठ मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि गाँठ पर मान फेर जगै / कान राखि ईख गीत बीच राह चलै”।

‘ईखक गाँठि’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि ईख मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकें माटि सँ

जोड़ैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “मोन नापि ईख मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “बीच राह चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०५ : गुड़क भेली — ताल कात धुन उठै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि गुड़ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि गुड़ ताल कात धुन उठै”। बीचक पाठ—“मोन नापि गुड़ मे भेद साफ जनै / लोक देखि रस मे रूप धिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि रस पर मान फेर जगै / कान राखि गुड़ बाल कात धुन उठै”।

‘गुड़क भेली’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि गुड़ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “मोन नापि गुड़ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “कात धुन उठै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ११०६ : झाड़ूक सीक — आस बीच रूप खुलै

मूल-पाठक आधार । दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि । आरम्भ—“मोन देखि झाड़ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि झाड़ आस बीच रूप खुलै” । बीचक पाठ—“मोन नापि झाड़ मे भेद साफ जनै / लोक देखि सीक मे रूप थिर रहै” । अन्तिम पाँति—“कान राखि सीक पर मान फेर जगै / कान राखि झाड़ साँस बीच रूप खुलै” ।

‘झाड़ूक सीक’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि झाड़ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि । रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि । “मोन नापि झाड़ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि ।

आलोचनात्मक सीमा । अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि । अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि ।

छन्द आ अन्त्यपद । मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना । काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “बीच रूप खुलै” । रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि ।

गजल ११०७ : कोंहड़ाक बेल — सार पर भोर खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि बेल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि बेल सार पर भोर खुलै”।
बीचक पाठ—“मोन नापि बेल मे भेद साफ जनै / लोक देखि पात मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि पात पर मान फेर जगै / कान राखि बेल मार पर भोर खुलै”।

‘कोंहड़ाक बेल’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि बेल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन नापि बेल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। अनेक शेरमे

“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “पर भोर खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०८ : जामुनक गाछ — मान पर डोर तनै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि गाछ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि गाछ मान पर डोर तनै”। बीचक पाठ—“मोन नापि गाछ मे भेद साफ जनै / लोक देखि फल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि फल पर मान फेर जगै / कान राखि गाछ शान पर डोर तनै”।

‘जामुनक गाछ’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि गाछ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकेँ दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “मोन नापि गाछ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “पर डोर तनै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०९ : बेलक फल — सोर संग ताल बजै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११०९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि फल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि फल सोर संग ताल बजै”। बीचक पाठ—“मोन नापि फल मे भेद साफ जनै / लोक देखि बेल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि बेल पर मान फेर जगै / कान राखि फल कोर संग ताल बजै”।

‘बेलक फल’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि फल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “मोन नापि फल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम

आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “संग ताल बजै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११० : कौड़ीक चाल — राह बीच रंग झरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि कौड़ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि कौड़ राह बीच रंग झरै”। बीचक पाठ—“मोन नापि कौड़ मे भेद साफ जनै / लोक देखि चाल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि चाल पर मान फेर जगै / कान राखि कौड़ वाह बीच रंग झरै”।

‘कौड़ीक चाल’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि कौड़ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “मोन नापि कौड़ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “बीच रंग झरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११११ : खाटक पाट — गीत कात भोर खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११११ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि खाट मे साँच फेर खुलै / मोन राखि खाट गीत कात भोर खुलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि खाट मे भेद साफ जनै / लोक देखि पाट मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि पाट पर मान फेर जगै / कान राखि खाट शीत कात भोर खुलै”।

‘खाटक पाट’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि खाट मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “मोन नापि खाट मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “कात भोर खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११२ : ढिबरीक काँच — ताल संग काज चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि दीप मे साँच फेर खुलै / मोन राखि दीप ताल संग काज चलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि दीप मे भेद साफ जनै / लोक देखि काँच मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि काँच पर मान फेर जगै / कान राखि दीप बाल संग काज चलै”।

‘ढिबरीक काँच’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि दीप मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मोन नापि दीप मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “संग काज चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११३ : घुँघरूक नाद — आस पर थाह मिलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि पाँव मे साँच फेर खुलै / मोन राखि पाँव आस पर थाह मिलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि पाँव मे भेद साफ जनै / लोक देखि नाद मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि नाद पर मान फेर जगै / कान राखि पाँव साँस पर थाह मिलै”।

‘घुँघरूक नाद’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि पाँव मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ध्वनिक उत्पत्ति आ ओकर क्रम एतय अनुभूतिक समय रचैत अछि; स्वर शाब्दिक अर्थसँ अतिरिक्त बिम्ब बनैत अछि। “मोन नापि पाँव मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आवाजक उल्लेख बेसी होइतहुँ वक्ताक बदलैत स्थिति कम विकसित अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-

रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “पर थाह मिलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११४ : झाँझक थाप — सार संग मान रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि झाँझ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि झाँझ सार संग मान रहै”। बीचक पाठ—“मोन नापि झाँझ मे भेद साफ जनै / लोक देखि थाप मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि थाप पर मान फेर जगै / कान राखि झाँझ मार संग मान रहै”।

‘झाँझक थाप’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि झाँझ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कानक अनुभवकें शब्दमे बदलबाक जतन रचनाक विशेषता अछि; थाप आ मौनक विरोध आलोचनाक सम्भावना बढबैत अछि। “मोन नापि झाँझ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककें प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “संग मान रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-

पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११५ : खुरपीक धार — मान पर साँच खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि खेत मे साँच फेर खुलै / मोन राखि खेत मान पर साँच खुलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि खेत मे भेद साफ जनै / लोक देखि जड़ मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि जड़ पर मान फेर जगै / कान राखि खेत शान पर साँच खुलै”।

‘खुरपीक धार’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि खेत मे अर्थ फेर बने”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। वस्तु गढ़बाक अभ्यासँ काव्यक ध्यान ठोस करैत अछि; निर्माता आ तैयार वस्तुक बीचक फासल एकर अर्थ-सम्भावना अछि। “मोन नापि खेत मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “पर साँच खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११६ : बथानक खूँटा — राह संग गीत उठै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि खूँट मे साँच फेर खुलै / मोन राखि खूँट राह संग गीत उठै”। बीचक पाठ—“मोन नापि खूँट मे भेद साफ जनै / लोक देखि डोर मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि डोर पर मान फेर जगै / कान राखि खूँट वाह संग गीत उठै”।

‘बथानक खूँटा’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि खूँट मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “मोन नापि खूँट मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “संग गीत उठै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११७ : दूधक फेन — गीत बीच नेह रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि दूध मे साँच फेर खुलै / मोन राखि दूध गीत बीच नेह रहै”। बीचक पाठ—“मोन नापि दूध मे भेद साफ जनै / लोक देखि फेन मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि फेन पर मान फेर जगै / कान राखि दूध शीत बीच नेह रहै”।

‘दूधक फेन’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि दूध मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “मोन नापि दूध मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “बीच नेह रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११८ : लाहक चूड़ी — ताल संग धूप ढलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि लाह मे साँच फेर खुलै / मोन राखि लाह ताल संग धूप ढलै”। बीचक पाठ—“मोन नापि लाह मे भेद साफ जनै / लोक देखि चूड़ मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि चूड़ पर मान फेर जगै / कान राखि लाह बाल संग धूप ढलै”।

‘लाहक चूड़ी’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि लाह मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। वस्तु गढ़बाक अभ्यासँ काव्यक ध्यान ठोस करैत अछि; निर्माता आ तैयार वस्तुक बीचक फासल एकर अर्थ-सम्भावना अछि। “मोन नापि लाह मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकेँ रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल,

काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “संग धूप ढलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल १११९ : बटखराक तोल — आस बीच छाह सैरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल १११९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि तोल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि तोल आस बीच छाह सैरै”। बीचक पाठ—“मोन नापि तोल मे भेद साफ जनै / लोक देखि बाट मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि बाट पर मान फेर जगै / कान राखि तोल साँस बीच छाह सैरै”।

‘बटखराक तोल’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि तोल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “मोन नापि तोल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ास”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “बीच छाह सैरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२० : पालकीक डाँड़ — सार संग बीज उगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि पाल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि पाल सार संग बीज उगै”। बीचक पाठ—“मोन नापि पाल मे भेद साफ जनै / लोक देखि डाँड़ मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि डाँड़ पर मान फेर जगै / कान राखि पाल मार संग बीज उगै”।

‘पालकीक डाँड़’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि पाल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। बाट, पगडंडी वा गति-वस्तुक दृश्य दृष्टिबिन्दुक परिवर्तनक सम्भावना जगबैत अछि; चलनाइ देहक काज आ अर्थक खोज दुनू अछि। “मोन नापि पाल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राहक वास्तविक स्थल आ यात्रिक निर्णयक बदलैत कारण कम खुलैत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “संग बीज उगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११०१-११२० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
११०१	हँसियाक धार — मान पर राह खुलै	पर राह खुलै
११०२	इनारक डोल — सोर संग नेह रहै	संग नेह रहै
११०३	घूरक आँच — राह पर गप खुलै	पर गप खुलै
११०४	ईखक गाँठि — गीत बीच राह चलै	बीच राह चलै
११०५	गुड़क भेली — ताल कात धुन उठै	कात धुन उठै
११०६	झाड़ूक सीक — आस	बीच रूप खुलै

	बीच रूप खुलै	
११०७	कोंहडाक बेल — सार पर भोर खुलै	पर भोर खुलै
११०८	जामुनक गाछ — मान पर डोर तनै	पर डोर तनै
११०९	बेलक फल — सोर संग ताल बजै	संग ताल बजै
१११०	कौडीक चाल — राह बीच रंग झरै	बीच रंग झरै
११११	खाटक पाट — गीत कात भोर खुलै	कात भोर खुलै
१११२	ढिबरीक काँच — ताल संग काज चलै	संग काज चलै
१११३	घुँघरूक नाद — आस पर थाह मिलै	पर थाह मिलै
१११४	झाँझक थाप — सार संग मान रहै	संग मान रहै
१११५	खुरपीक धार — मान पर साँच खुलै	पर साँच खुलै
१११६	बथानक खूँटा — राह संग गीत उठै	संग गीत उठै
१११७	दूधक फेन — गीत बीच नेह रहै	बीच नेह रहै
१११८	लाहक चूड़ी — ताल संग धूप ढलै	संग धूप ढलै
१११९	बटखराक तोल — आस बीच छाह सरै	बीच छाह सरै
११२०	पालकीक डाँड — सार संग बीज उगै	संग बीज उगै

गजल ११२१ : माछक शल्क — मान मे आँच जगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि माछ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि माछ मान मे आँच
जगै”। बीचक पाठ—“मोन नापि माछ मे भेद साफ जनै / लोक देखि शल्क मे
रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि शल्क पर मान फेर जगै / कान राखि
माछ शान मे आँच जगै”।

‘माछक शल्क’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि माछ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें
हाथ-पएक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। “मोन नापि माछ मे भेद साफ जनै”मे तकर
अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा
पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। अनेक शेरमे
“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि
घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,
प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “मे आँच जगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२२ : माटिक सुराही — सोर पर मोन नमै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि घट मे साँच फेर खुलै / मोन राखि घट सोर पर मोन नमै”।
बीचक पाठ—“मोन नापि घट मे भेद साफ जनै / लोक देखि कंठ मे रूप थिर
रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि कंठ पर मान फेर जगै / कान राखि घट कोर
पर मोन नमै”।

‘माटिक सुराही’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि घट मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक
विदेह · 922

आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि।
“मोन नापि घट मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “पर मोन नमै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२३ : कुल्हड़क गंध — राह कात सोर उठै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि गंध मे साँच फेर खुलै / मोन राखि गंध राह कात सोर उठै”। बीचक पाठ—“मोन नापि गंध मे भेद साफ जनै / लोक देखि घाम मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि घाम पर मान फेर जगै / कान राखि गंध वाह कात सोर उठै”।

‘कुल्हड़क गंध’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि गंध मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “मोन नापि गंध मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि, से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “कात सोर उठै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२४ : तुरहीक नाद — गीत संग राह बनै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन देखि नाद मे साँच फेर खुलै / मोन राखि नाद गीत संग राह बनै”। बीचक पाठ—“मोन नापि नाद मे भेद साफ जनै / लोक देखि सोर मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि सोर पर मान फेर जगै / कान राखि नाद शीत संग राह बनै”।

‘तुरहीक नाद’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि नाद मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अनुनादकँ स्मृतिसँ जोड़बाक चेष्टा गजलकँ श्रव्य बनबैत अछि, यद्यपि सुर स्वयं कागजपर अनुपस्थित अछि। “मोन नापि नाद मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककँ प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “संग राह बनै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२५ : डमरूक ताल — ताल मे नेह जगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन देखि ताल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि ताल ताल मे नेह
जगै”। बीचक पाठ—“मोन नापि ताल मे भेद साफ जनै / लोक देखि धुन मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान राखि धुन पर मान फेर जगै / कान राखि ताल
बाल मे नेह जगै”।

‘डमरूक ताल’क काव्य-केन्द्र “लोक देखि ताल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। ध्वनिक उत्पत्ति आ ओकर क्रम एतय अनुभूतिक समय
रचैत अछि; स्वर शाब्दिक अर्थसँ अतिरिक्त बिम्ब बनैत अछि। “मोन नापि ताल
मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आवाजक उल्लेख बेसी होइतहुँ वक्ताक बदलैत स्थिति कम
विकसित अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-
रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक
स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल,
काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “मे नेह जगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२६ : गोइठाक राख — सार पर अर्थ बचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि राख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि राख सार पर अर्थ
बचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि राख मे भेद साफ जनै / लोक राखि धूम मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि धूम पर मान फेर जगै / कान सोचि राख
मार पर अर्थ बचै”।

‘गोइठाक राख’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि राख मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि;

मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “मोन सोचि राख मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “पर अर्थ बचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२७ : लौकीक बेल — मान संग मोन घुरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि बेल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि बेल मान संग मोन घुरै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि बेल मे भेद साफ जनै / लोक राखि डाँठ मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि डाँठ पर मान फेर जगै / कान सोचि बेल शान संग मोन घुरै”।

‘लौकीक बेल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि बेल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मोन सोचि बेल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “संग मोन घुरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२८ : कदम्बक फूल — राह बीच गप जुड़ै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि फूल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि फूल राह बीच गप जुड़ै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि फूल मे भेद साफ जनै / लोक राखि गंध मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि गंध पर मान फेर जगै / कान सोचि फूल वाह बीच गप जुड़ै”।

‘कदम्बक फूल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि फूल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन सोचि फूल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “बीच गप जुड़ै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२९ : करघाक सूत — रंग कात साँच रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११२९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि सूत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि सूत रंग कात साँच
रहै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि सूत मे भेद साफ जनै / लोक राखि तान मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि तान पर मान फेर जगै / कान सोचि सूत
अंग कात साँच रहै”।

‘करघाक सूत’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि सूत मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक
पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा
सँ नहि। “मोन सोचि सूत मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक
समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक
प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। अनेक शेरमे
“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि
घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग,
जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “कात साँच रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३० : फूसक छानि — गीत मे नेह चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि फूस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि फूस गीत मे नेह
चलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि फूस मे भेद साफ जनै / लोक राखि खर मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि खर पर मान फेर जगै / कान सोचि फूस
गीत मे नेह चलै”।

‘फूसक छानि’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि फूस मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मोन सोचि फूस मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “मे नेह चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३१ : बेरक काँट — बात पर छाप बचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि बेर मे साँच फेर खुलै / मोन नापि बेर बात पर छाप बचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि बेर मे भेद साफ जनै / लोक राखि काँट मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि काँट पर मान फेर जगै / कान सोचि बेर जात पर छाप बचै”।

‘बेरक काँट’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि बेर मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन सोचि बेर मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “पर छाप बचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३२ : बाँसक फाँक — सोर संग भेद खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि बाँस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि बाँस सोर संग भेद खुलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि बाँस मे भेद साफ जनै / लोक राखि फाँक मे रूप धिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि फाँक पर मान फेर जगै / कान सोचि बाँस कोर संग भेद खुलै”।

‘बाँसक फाँक’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि बाँस मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “मोन सोचि बाँस मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “संग भेद खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३३ : पोखरिक घाट — ताल बीच सोर पहुँचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि घाट मे साँच फेर खुलै / मोन नापि घाट ताल बीच सोर
पहुँचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि घाट मे भेद साफ जनै / लोक राखि ढाल मे
रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि ढाल पर मान फेर जगै / कान सोचि
घाट बाल बीच सोर पहुँचै”।

‘पोखरिक घाट’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि घाट मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें
हाथ-पएक व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। “मोन सोचि घाट मे भेद साफ जनै”मे तकर
अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा
पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इन्हन नहि। अनेक शेरमे
“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि
घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल,
काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “बीच सोर पहुँचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३४ : गाछक खोह — आस कात मान जगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि खोह मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खोह आस कात मान
जगै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि खोह मे भेद साफ जनै / लोक राखि मूल मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि मूल पर मान फेर जगै / कान सोचि खोह
साँस कात मान जगै”।

‘गाछक खोह’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि खोह मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकेँ दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन सोचि खोह मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “कात मान जगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३५ : पीपलक जड़ि — सार मे राह चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि छाह मे साँच फेर खुलै / मोन नापि छाह सार मे राह चलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि छाह मे भेद साफ जनै / लोक राखि जड़ मे रूप धिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि जड़ पर मान फेर जगै / कान सोचि छाह मार मे राह चलै”।

‘पीपलक जड़ि’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि छाह मे गप फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “मोन सोचि छाह मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि। आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ

काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “मे राह चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३६ : चकईक पाँख — मान पर स्वर फूटै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि पाँख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पाँख मान पर स्वर फूटै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि पाँख मे भेद साफ जनै / लोक राखि नीड़ मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि नीड़ पर मान फेर जगै / कान सोचि पाँख शान पर स्वर फूटै”।

‘चकईक पाँख’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि पाँख मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकें घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “मोन सोचि पाँख मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “पर स्वर फूटै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३७ : कागक ठोर — राह संग प्रश्न उठै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि काग मे साँच फेर खुलै / मोन नापि काग राह संग प्रश्न
उठै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि काग मे भेद साफ जनै / लोक राखि ठोर मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि ठोर पर मान फेर जगै / कान सोचि काग
वाह संग प्रश्न उठै”।

‘कागक ठोर’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि काग मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक
आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि।
“मोन सोचि काग मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत
अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ
परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ
काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे
शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह,
आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “संग प्रश्न उठै”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३८ : मेघक बूँद — रंग बीच रूप बसै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि मेघ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि मेघ रंग बीच रूप
बसै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि मेघ मे भेद साफ जनै / लोक राखि बूँद मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि बूँद पर मान फेर जगै / कान सोचि मेघ
अंग बीच रूप बसै”।

‘मेघक बूँद’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि मेघ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकेँ दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “मोन सोचि मेघ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “बीच रूप बसै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११३९ : बिजुरीक रेख — गीत कात रंग मुडै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११३९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि रेख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि रेख गीत कात रंग मुडै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि रेख मे भेद साफ जनै / लोक राखि कौंध मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि कौंध पर मान फेर जगै / कान सोचि रेख शीत कात रंग मुडै”।

‘बिजुरीक रेख’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि रेख मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकेँ विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “मोन सोचि रेख मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि

धूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “कात रंग मुडै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४० : पूसक धुंध — बात मे धुन बदलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि धुंध मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धुंध बात मे धुन बदलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि धुंध मे भेद साफ जनै / लोक राखि घाम मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि घाम पर मान फेर जगै / कान सोचि धुंध जात मे धुन बदलै”।

‘पूसक धुंध’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि धुंध मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकेँ दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन सोचि धुंध मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि धूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ात”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “मे धुन बदलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११२१-११४० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
११२१	माछक शल्क — मान मे आँच जगै	मे आँच जगै
११२२	माटिक सुराही — सोर पर मोन नमै	पर मोन नमै
११२३	कुल्हड़क गंध — राह कात सोर उठै	कात सोर उठै
११२४	तुरहीक नाद — गीत संग राह बनै	संग राह बनै
११२५	डमरूक ताल — ताल मे नेह जगै	मे नेह जगै
११२६	गोइठाक राख — सार पर अर्थ बचै	पर अर्थ बचै
११२७	लौकीक बेल — मान संग मोन घुरै	संग मोन घुरै
११२८	कदम्बक फूल — राह बीच गप जुड़ै	बीच गप जुड़ै
११२९	करघाक सूत — रंग कात साँच रहै	कात साँच रहै
११३०	फूसक छानि — गीत मे नेह चलै	मे नेह चलै
११३१	बेरक काँट — बात पर छाप बचै	पर छाप बचै
११३२	बाँसक फाँक — सोर संग भेद खुलै	संग भेद खुलै
११३३	पोखरिक घाट — ताल बीच सोर पहुँचै	बीच सोर पहुँचै
११३४	गाछक खोह — आस	कात मान जगै

	कात मान जगै	
११३५	पीपलक जड़ि — सार मे राह चलै	मे राह चलै
११३६	चकईक पाँख — मान पर स्वर फूटै	पर स्वर फूटै
११३७	कागक ठोर — राह संग प्रश्न उठै	संग प्रश्न उठै
११३८	मेघक बूँद — रंग बीच रूप बसै	बीच रूप बसै
११३९	बिजुरीक रेख — गीत कात रंग मुडै	कात रंग मुडै
११४०	पूसक धुंध — बात मे धुन बदलै	मे धुन बदलै

गजल ११४१ : जेठक धूल — सोर पर साँस बढै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि धूल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धूल सोर पर साँस
बढै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि धूल मे भेद साफ जनै / लोक राखि लू मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि लू पर मान फेर जगै / कान सोचि धूल
कोर पर साँस बढै”।

‘जेठक धूल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि धूल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकें
दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “मोन सोचि धूल मे भेद साफ जनै”मे तकर
अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि
करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। अनेक शेरमे
“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि
घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “पर साँस बढै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४२ : सावनक टपक — ताल संग काल बचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि टप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि टप ताल संग काल बचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि टप मे भेद साफ जनै / लोक राखि नीर मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि नीर पर मान फेर जगै / कान सोचि टप बाल संग काल बचै”।

‘सावनक टपक’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि टप मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “मोन सोचि टप मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “संग काल बचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४३ : भादोक पाँक — आस बीच बीज चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि पाँक मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पाँक आस बीच बीज

चलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि पाँक मे भेद साफ जनै / लोक राखि चिन्ह मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि चिन्ह पर मान फेर जगै / कान सोचि पाँक साँस बीच बीज चलै”।

‘भादोक पाँक’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि पाँक मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थासँ पोसाइत अछि। “मोन सोचि पाँक मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनु १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ास”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “बीच बीज चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४४ : अगहनक बाली — सार कात पात पहुँचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“मोन खोजि धान मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धान सार कात पात पहुँचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि धान मे भेद साफ जनै / लोक राखि खेत मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि खेत पर मान फेर जगै / कान सोचि धान मार कात पात पहुँचै”।

‘अगहनक बाली’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि धान मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतु, बीया आ अन्नक सह-उपस्थिति ग्रामीण अनुभवकें निराकार आदर्शक बदला पदार्थगत रूप दैत अछि। “मोन सोचि धान मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “कात पात पहुँचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४५ : फागुनक अबीर — मान मे भोर जुड़ै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि रंग मे साँच फेर खुलै / मोन नापि रंग मान मे भोर जुड़ै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि रंग मे भेद साफ जनै / लोक राखि गाल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि गाल पर मान फेर जगै / कान सोचि रंग शान मे भोर जुड़ै”।

‘फागुनक अबीर’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि रंग मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “मोन सोचि रंग मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,

प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “मे भोर जुड़े”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४६ : चैतिक पछिया — राह पर थाह रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि झोंक मे साँच फेर खुलै / मोन नापि झोंक राह पर थाह रहै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि झोंक मे भेद साफ जनै / लोक राखि पात मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि पात पर मान फेर जगै / कान सोचि झोंक वाह पर थाह रहै”।

‘चैतिक पछिया’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि झोंक मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन सोचि झोंक मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “पर थाह रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४७ : कार्तिकक दीप — रंग संग छाह ठहरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि दीप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि दीप रंग संग छाह

ठहरै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि दीप मे भेद साफ जनै / लोक राखि तेल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि तेल पर मान फेर जगै / कान सोचि दीप अंग संग छाह ठहरै”।

‘कार्तिकक दीप’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि दीप मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “मोन सोचि दीप मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “संग छाह ठहरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४८ : माघक धूप — गीत बीच नाद उडै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि धूप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धूप गीत बीच नाद उडै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि धूप मे भेद साफ जनै / लोक राखि देह मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि देह पर मान फेर जगै / कान सोचि धूप शीत बीच नाद उडै”।

‘माघक धूप’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि धूप मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गाछ अथवा मौसमक स्थानीय नाम एकरस अमूर्त शब्दकें विशिष्ट भौगोलिक छुअन दैत अछि। “मोन सोचि धूप मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककें जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “नीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “बीच नाद उडै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४९ : नदीक बालू — बात कात गंध पलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११४९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि धार मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धार बात कात गंध पलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि धार मे भेद साफ जनै / लोक राखि कूल मे रूप धिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि कूल पर मान फेर जगै / कान सोचि धार जात कात गंध पलै”।

‘नदीक बालू’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि धार मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थासँ पोसाइत अछि। “मोन सोचि धार मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक

उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “कात गंध पलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५० : शंखक सोर — सोर मे फूल उघड़ै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५० मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“मोन खोजि शंख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि शंख सोर मे फूल उघड़ै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि शंख मे भेद साफ जनै / लोक राखि नाद मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि नाद पर मान फेर जगै / कान सोचि शंख कोर मे फूल उघड़ै”।

‘शंखक सोर’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि शंख मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कानक अनुभवकेँ शब्दमे बदलबाक जतन रचनाक विशेषता अछि; थाप आ मौनक विरोध आलोचनाक सम्भावना बढबैत अछि। “मोन सोचि शंख मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककेँ प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “मे फूल उघड़ै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५१ : बेलपत्रक डारि — सार पर नेह जगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि पत्र मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पत्र सार पर नेह जगै”।
बीचक पाठ—“मोन सोचि पत्र मे भेद साफ जनै / लोक राखि डार मे रूप थिर रहै”।
अन्तिम पाँति—“कान खोजि डार पर मान फेर जगै / कान सोचि पत्र मार पर नेह जगै”।

‘बेलपत्रक डारि’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि पत्र मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। लिखल दस्तावेजक संग पाठकक बदलैत दृष्टिक सम्बन्ध एहि कृतिक विचार-संसारक प्रमुख धुरी अछि। “मोन सोचि पत्र मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नाम आ अक्षरक रूपकक पाछाँक विशिष्ट मनुषक आवाज नहि खुलैत, तकर आलोचनात्मक सीमा स्पष्ट अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “पर नेह जगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५२ : खेसारीक दाना — मान संग राह खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि खेसार मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खेसार मान संग राह खुलै”।
बीचक पाठ—“मोन सोचि खेसार मे भेद साफ जनै / लोक राखि दाना मे रूप थिर रहै”।
अन्तिम पाँति—“कान खोजि दाना पर मान फेर जगै / कान सोचि खेसार शान संग राह खुलै”।

‘खेसारीक दाना’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि खेसार मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। खेत अथवा अन्नक ठोस शब्द जीवनक लयकँ माटि सँ

जोड़ैत अछि; फसल वस्तु मात्र नहि, भविष्यमे जीवित रहबाक अपेक्षा सेहो अछि। “मोन सोचि खेसार मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “संग राह खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५३ : कुर्थीक दालि — राह बीच मान चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि कुर्थ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि कुर्थ राह बीच मान चलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि कुर्थ मे भेद साफ जनै / लोक राखि दाल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि दाल पर मान फेर जगै / कान सोचि कुर्थ वाह बीच मान चलै”।

‘कुर्थीक दालि’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि कुर्थ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतु, बीया आ अन्नक सह-उपस्थिति ग्रामीण अनुभवकें निराकार आदर्शक बदला पदार्थगत रूप दैत अछि। “मोन सोचि कुर्थ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “बीच मान चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५४ : जाँतक पाट — रंग कात रूप रहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि जाँत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि जाँत रंग कात रूप रहै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि जाँत मे भेद साफ जनै / लोक राखि चक मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि चक पर मान फेर जगै / कान सोचि जाँत अंग कात रूप रहै”।

‘जाँतक पाट’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि जाँत मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मोन सोचि जाँत मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “कात रूप रहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५५ : सिलौटक लीक — गीत मे गप बनै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि सिल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि सिल गीत मे गप बनै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि सिल मे भेद साफ जनै / लोक राखि लीक मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि लीक पर मान फेर जगै / कान सोचि सिल शीत मे गप बनै”।

‘सिलौटक लीक’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि सिल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ठोस वस्तु आ बदलैत मानवीय दृष्टिक सम्बन्ध गजलक आरम्भिक अर्थ खोलैत अछि; शीर्षक वस्तुक अपन संवेदना बना सकैत अछि। “मोन सोचि सिल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “मे गप बनै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५६ : चूल्हक धूर — बात पर बीज उगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि चूल्ह मे साँच फेर खुलै / मोन नापि चूल्ह बात पर बीज उगै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि चूल्ह मे भेद साफ जनै / लोक राखि धूर मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि धूर पर मान फेर जगै / कान सोचि चूल्ह जात पर बीज उगै”।

‘चूल्हक धूर’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि चूल्ह मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “मोन सोचि चूल्ह मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अदृश्य घरेलू श्रम करनिहारक स्वतन्त्र संवाद काव्यमे नहि; पदार्थक वर्णन स्वयं सामाजिक न्याय नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “पर बीज उगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५७ : कूपक घेरा — सोर संग काल बहै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि कूप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि कूप सोर संग काल बहै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि कूप मे भेद साफ जनै / लोक राखि घेर मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि घेर पर मान फेर जगै / कान सोचि कूप कोर संग काल बहै”।

‘कूपक घेरा’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि कूप मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। कूल, घाट अथवा पात्रक उपस्थिति जलक अनुभवकें हाथ-पएकर व्यवहारसँ जोडैत अछि। “मोन सोचि कूप मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। स्थानिक चित्र प्रभावी अछि, मुदा जल-नीति वा पर्यावरणीय कारणक निर्णायक प्रमाण इम्हर नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि

घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “संग काल बहै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५८ : नाँदक जल — ताल बीच छाप बचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि नाँद मे साँच फेर खुलै / मोन नापि नाँद ताल बीच छाप बचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि नाँद मे भेद साफ जनै / लोक राखि जल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि जल पर मान फेर जगै / कान सोचि नाँद बाल बीच छाप बचै”।

‘नाँदक जल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि नाँद मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थायसँ पोसाइत अछि। “मोन सोचि नाँद मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ाल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “बीच छाप बचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११५९ : भीतक लेप — आस कात डोर तनै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११५९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि भीत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि भीत आस कात डोर तनै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि भीत मे भेद साफ जनै / लोक राखि लेप मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि लेप पर मान फेर जगै / कान सोचि भीत साँस कात डोर तनै”।

‘भीतक लेप’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि भीत मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। घरक वस्तुक आकार, गन्ध, ताप वा गति भावार्थक केन्द्र बनैत अछि; स्थानीय जीवनक शब्दसंसार एकर मूल्यवान पक्ष अछि। “मोन सोचि भीत मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “कात डोर तनै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६० : खपराक छत — सार मे थाह खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि खप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खप सार मे थाह खुलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि खप मे भेद साफ जनै / लोक राखि छत मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि छत पर मान फेर जगै / कान सोचि खप मार मे थाह खुलै”।

‘खपराक छत’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि खप मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकें घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “मोन सोचि खप मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “मे थाह खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११४१-११६० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
११४१	जेठक धूल — सोर पर साँस बढै	पर साँस बढै
११४२	सावनक टपक — ताल संग काल बचै	संग काल बचै
११४३	भादोक पाँक — आस बीच बीज चलै	बीच बीज चलै
११४४	अगहनक बाली — सार कात पात पहुँचै	कात पात पहुँचै
११४५	फागुनक अबीर — मान मे भोर जुड़ै	मे भोर जुड़ै
११४६	चैतिक पछिया — राह	पर थाह रहै

	पर थाह रहै	
११४७	कार्तिकक दीप — रंग संग छाह ठहरै	संग छाह ठहरै
११४८	माघक धूप — गीत बीच नाद उडै	बीच नाद उडै
११४९	नदीक बालू — बात कात गंध पलै	कात गंध पलै
११५०	शंखक सोर — सोर मे फूल उघडै	मे फूल उघडै
११५१	बेलपत्रक डारि — सार पर नेह जगै	पर नेह जगै
११५२	खेसारीक दाना — मान संग राह खुलै	संग राह खुलै
११५३	कुर्थीक दालि — राह बीच मान चलै	बीच मान चलै
११५४	जाँतक पाट — रंग कात रूप रहै	कात रूप रहै
११५५	सिलौटक लीक — गीत मे गप बनै	मे गप बनै
११५६	चूल्हिक धूर — बात पर बीज उगै	पर बीज उगै
११५७	कूपक घेरा — सोर संग काल बहै	संग काल बहै
११५८	नाँदक जल — ताल बीच छाप बचै	बीच छाप बचै
११५९	भीतक लेप — आस कात डोर तनै	कात डोर तनै
११६०	खपराक छत — सार मे थाह खुलै	मे थाह खुलै

गजल ११६१ : काठक छील — मान पर स्वर बजै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि काठ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि काठ मान पर स्वर
बजै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि काठ मे भेद साफ जनै / लोक राखि छील मे
रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि छील पर मान फेर जगै / कान
सोचि काठ शान पर स्वर बजै”।

‘काठक छील’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि काठ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ
विस्तारित होइत अछि। औजार आ हातक सम्बन्ध एतय रूपकक मूल केन्द्र
अछि; उपयोगी वस्तुक निर्माणकें विचारक निराकार भाषाक संग राखल गेल
अछि। “मोन सोचि काठ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष
अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक
प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। अनेक शेरमे
“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि
घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक
अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम
· दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक
उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान,
प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “पर स्वर बजै”। रदीफयुक्त मिसरासभक
काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि,
वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६२ : ताड़क रस — राह संग साँच जनै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।
आरम्भ—“मोन खोजि ताड़ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि ताड़ राह संग साँच
जनै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि ताड़ मे भेद साफ जनै / लोक राखि रस मे रूप
थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि रस पर मान फेर जगै / कान सोचि ताड़
वाह संग साँच जनै”।

‘ताड़क रस’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि ताड़ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रङ्ग, गन्ध, ताप वा हवा सँ बनल प्रतिमा मनक स्मृतिकेँ दृश्यात्मक आधार दैत अछि। “मोन सोचि ताड़ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। प्रकृतिक प्रतीककेँ जैविक वा मौसम-विज्ञानक प्रमाणित तथ्य नहि मानब; स्थान आ ऋतु विशेषक परीक्षण शेष अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “संग साँच जनै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६३ : पनसक बीआ — रंग बीच नेह बचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि पनस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पनस रंग बीच नेह बचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि पनस मे भेद साफ जनै / लोक राखि बीआ मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि बीआ पर मान फेर जगै / कान सोचि पनस अंग बीच नेह बचै”।

‘पनसक बीआ’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि पनस मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “मोन सोचि पनस मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम

आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “बीच नेह बचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६४ : मखानक खोल — गीत कात राह मुडै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि मखान मे साँच फेर खुलै / मोन नापि मखान गीत कात राह मुडै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि मखान मे भेद साफ जनै / लोक राखि खोल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि खोल पर मान फेर जगै / कान सोचि मखान शीत कात राह मुडै”।

‘मखानक खोल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि मखान मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। पानिक सतह आ ओकर आसपासक वस्तुसभ जीवन-जगतक स्थानबोध देत; दृश्यात्मकता जलक बदलैत अवस्थासँ पोसाइत अछि। “मोन सोचि मखान मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। नदीक भूगोल, प्रवाहक माप, अथवा जलक अधिकारक वास्तविक घटना पाठमे निर्दिष्ट नहि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “कात राह मुडै”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६५ : सनक रेसा — बात मे रूप बदलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि सन मे साँच फेर खुलै / मोन नापि सन बात मे रूप बदलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि सन मे भेद साफ जनै / लोक राखि रेस मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि रेस पर मान फेर जगै / कान सोचि सन जात मे रूप बदलै”।

‘सनक रेसा’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि सन मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “मोन सोचि सन मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। तकनीकी काजक शब्द उपस्थित अछि, मुदा निर्माणक प्रतिरोध वा निर्णय-क्रम काव्यमे कम खुलैत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “मे रूप बदलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६६ : चूनक ढेरी — सोर पर गंध पलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि चून मे साँच फेर खुलै / मोन नापि चून सोर पर गंध पलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि चून मे भेद साफ जनै / लोक राखि ढेर मे रूप थिर

रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि ढेर पर मान फेर जगै / कान सोचि चून कोर पर गंध पलै”।

‘चूनक ढेरी’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि चून मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। स्थानक परिचित नाम पाठकें घर, गाम अथवा यात्राक अनुभवसँ जोड़ैत अछि; वास्तविक चित्रक ऊपर अमूर्त तर्कक परत अछि। “मोन सोचि चून मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “पर गंध पलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६७ : घीक वास — ताल संग सोर फूटै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि घी मे साँच फेर खुलै / मोन नापि घी ताल संग सोर फूटै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि घी मे भेद साफ जनै / लोक राखि वास मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि वास पर मान फेर जगै / कान सोचि घी बाल संग सोर फूटै”।

‘घीक वास’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि घी मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। गृहस्थक दैनिक वस्तुकें कविता अपन योग्य विषय मानैत अछि; छोट उपयोगी काजक भीतर स्मृतिक परत देखबाक प्रयास अछि। “मोन सोचि घी मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि, से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे

“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ल”, उदाहरण ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल; रदीफ “संग सोर फूटै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६८ : मधुक मकरंद — आस बीच मान ठहरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि मधु मे साँच फेर खुलै / मोन नापि मधु आस बीच मान ठहरै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि मधु मे भेद साफ जनै / लोक राखि मकरंद मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि मकरंद पर मान फेर जगै / कान सोचि मधु साँस बीच मान ठहरै”।

‘मधुक मकरंद’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि मधु मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “मोन सोचि मधु मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। वस्तुक जीवित प्रसङ्ग आ पात्रक विशिष्ट अनुभवक अभाव आलोचनाक सीमा अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-स”, उदाहरण आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस; रदीफ “बीच मान ठहरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक

काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६९ : कोठीक अन्न — सार कात डोर जुड़ै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११६९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि कोठ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि कोठ सार कात डोर जुड़ै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि कोठ मे भेद साफ जनै / लोक राखि अन्न मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि अन्न पर मान फेर जगै / कान सोचि कोठ मार कात डोर जुड़ै”।

‘कोठीक अन्न’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि कोठ मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। रसोइ अथवा ओसाराक सामान्य वस्तु सार्वजनिक महान आख्यानक बाहर बचल जीवनक साक्ष्यात्मक प्रतीक बनैत अछि। “मोन सोचि कोठ मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। दैनन्दिन काजक सूची विस्तृत अछि, मुदा ककरा लेल काज होइत अछि से कम उद्घाटित होइत अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अधांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-र”, उदाहरण सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार; रदीफ “कात डोर जुड़ै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७० : ढोलकक थाप — मान मे छाह सरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि ढोल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि ढोल मान मे छाह सरै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि ढोल मे भेद साफ जनै / लोक राखि चर्म मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि चर्म पर मान फेर जगै / कान सोचि ढोल शान मे छाह सरै”।

‘ढोलकक थाप’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि ढोल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ध्वनिक उत्पत्ति आ ओकर क्रम एतय अनुभूतिक समय रचैत अछि; स्वर शाब्दिक अर्थसँ अतिरिक्त बिम्ब बनैत अछि। “मोन सोचि ढोल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। राग, ताल अथवा प्रदर्शनक वास्तविक ध्वनि-साक्ष्य नहि; रूपककें प्रामाणिक संगीतशास्त्रीय जाँच नहि कहल जाए। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-न”, उदाहरण मान्, ज्ञान्, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “मे छाह सरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७१ : काँसक थाल — राह पर भोर उगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि काँस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि काँस राह पर भोर उगै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि काँस मे भेद साफ जनै / लोक राखि थाल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि थाल पर मान फेर जगै / कान सोचि काँस वाह पर भोर उगै”।

‘काँसक थाल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि काँस मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। काव्य-वस्तु एतय दृश्य आ प्रतीकक बीच चलैत अछि; मुख्य प्रश्न ई अछि जे ओकर भौतिक गुण भाव-अर्थमे कोना बदलैत अछि। “मोन सोचि काँस मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। अमूर्त निष्कर्षक पुनरावृत्ति भेटैत अछि; स्वतंत्र स्थिति आ परिणामक विस्तृत सम्बन्ध कम। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “पर भोर उगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७२ : जोतक लीक — रंग संग तर्क जँचै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७२ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि जोत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि जोत रंग संग तर्क जँचै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि जोत मे भेद साफ जनै / लोक राखि मेख मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि मेख पर मान फेर जगै / कान सोचि जोत अंग संग तर्क जँचै”।

‘जोतक लीक’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि जोत मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “मोन सोचि जोत मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। फसलक श्रम-विभाजन, भूमि-अधिकार अथवा उपजक मूल्यक ठोस साक्ष्य नहि; कृषि-रूपककें मापक आर्थिक विवरण नहि मानब। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ंग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग,

जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “संग तर्क जाँचै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७३ : शालक छाल — गीत बीच अर्थ खुलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७३ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि शाल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि शाल गीत बीच अर्थ खुलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि शाल मे भेद साफ जनै / लोक राखि छाल मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि छाल पर मान फेर जगै / कान सोचि शाल गीत बीच अर्थ खुलै”।

‘शालक छाल’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि शाल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। ऋतुक फेरबदल आ पात-फूलक गतिक सहारे समयकें दृश्य बनाओल गेल अछि; प्रकृति एकर भावात्मक शब्दभण्डार अछि। “मोन सोचि शाल मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। सुन्दर बिम्बक पुनरागमन भावक नव विकास स्वतः नहि करैत; रूपकक गति पर आलोचनात्मक ध्यान चाही। अनेक शेरमे

“मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतन्त्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “बीच अर्थ खुलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७४ : कुम्हारक भट्टी — बात कात नाद बजै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७४ मे १२ मिसरा दर्ज अछि।

आरम्भ—“मोन खोजि भट्ट मे साँच फेर खुलै / मोन नापि भट्ट बात कात नाद बजै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि भट्ट मे भेद साफ जनै / लोक राखि ताप मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि ताप पर मान फेर जगै / कान सोचि भट्ट जात कात नाद बजै”।

‘कुम्हारक भट्टी’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि भट्ट मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। माटि/रेसा/धातुक आकार बदलबाक श्रम एहि रचनाक पदार्थगत आधार अछि; आन्तरिक भावार्थ एहि काजसँ उठैत अछि, केवल नारा सँ नहि। “मोन सोचि भट्ट मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। श्रम करनिहार व्यक्तिक अपन संवाद आ कार्यक आर्थिक प्रतिफल खुलैत नहि; वस्तुकेँ रूपक बनबैत समय ई सामाजिक रिक्तता देखबाक चाही। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-त”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “कात नाद बजै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७५ : धानक खील — सोर मे साँच मिलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७५ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि खील मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खील सोर मे साँच मिलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि खील मे भेद साफ जनै / लोक राखि लावा मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि लावा पर मान फेर जगै / कान सोचि खील कोर मे साँच मिलै”।

‘धानक खील’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि खील मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। अन्नक रूपान्तरणक पाछाँ गृहस्थ जीवनक समय-बोध अछि; शीर्षकमे उठल वस्तु स्मृतिसँ जोड़बाक कोशिश देखाइत अछि। “मोन सोचि खील मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। बीया/दाना/माटि शब्दक आवर्तनक तुलना वास्तविक फसल-कथा कम विकसित अछि। अनेक शेरमे “मोन/लोक/हाथ”क क्रियाक्रम आ काफिया-रदीफक नियत छाँचा फेरि-फेरि घूमैत अछि; शीर्षकक नवपनक तुलनामे शेरक स्वतन्त्र अर्थ-वृद्धि जाँचबाक अछि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ोर”, उदाहरण सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर; रदीफ “मे साँच मिलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७६ : चानक डाकघर — पर पत्र जगै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७६ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“रात खोलि चान मे डाक फेर चलै / मोन नापि चान सार पर पत्र जगै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि चान मे द्वार साफ खुलै / लोक राखि डाक मे आस थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि रात पर सोर फेर जगै / कान सोचि चान मार पर पत्र जगै”।

‘चानक डाकघर’क काव्य-केन्द्र “नाम पढ़ि कागज मे दूरि फेर घटै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। असम्भव अथवा दूरीक बिम्ब लिखित जगतसँ आगाँ कल्पनाक स्थान बनबैत अछि; वस्तु आ विचारक अप्रत्याशित संगति एहि रचनाक सम्भावना अछि। “मोन सोचि चान मे द्वार साफ खुलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। काल्पनिक वस्तुक नाम मात्र बदललासँ कल्पनात्मक गहराई नहि बढ़ैत; वाक्यसभक कारण-संरचना परीक्षणयोग्य अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ार”, उदाहरण सार, धार, भार,

पार, हार, तार, मार; रदीफ “पर पत्र जगै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७७ : समयक खाली जेब — संग घड़ी चलै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७७ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि काल मे जेब फेर खुलै / मोन नापि काल मान संग घड़ी चलै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि काल मे दौड़ साफ थमै / लोक राखि जेब मे मौन थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि मौन पर मान फेर जगै / कान सोचि काल शान संग घड़ी चलै”।

‘समयक खाली जेब’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि जेब मे सिक्का नहि बचै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। शीर्षक यथार्थक औजारकें काल्पनिक अवकाशमे राखैत अछि, जाहिसँ स्मृति, दूरी आ इच्छाक परस्पर सम्बन्ध बनैत अछि। “मोन सोचि काल मे दौड़ साफ थमै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आश्चर्यक शीर्षकक अनुपातमे बिम्बक स्वतंत्र आन्तरिक कथा कम खुलैत। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ान”, उदाहरण मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान; रदीफ “संग घड़ी चलै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७८ : बादलक पोथीघर — बीच अक्षर तिरै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७८ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि मेघ मे पन्ना फेर खुलै / मोन नापि मेघ राह बीच अक्षर तिरै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि मेघ मे नाम साफ गलै / लोक राखि पन्ना मे रूप

थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि मेघ पर सोर फेर जगै / कान सोचि बूँद वाह बीच अक्षर तिरै”।

‘बादलक पोथीघर’क काव्य-केन्द्र “लोक पढ़ि बादल मे अर्थ फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। छोट शब्द-समूहमेसँ दृश्यात्मक विस्मय उठैत अछि, यद्यपि ओकर विस्तारक कसौटी सम्पूर्ण मिसरा अछि। “मोन सोचि मेघ मे नाम साफ गलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। काल्पनिक वस्तुक नाम मात्र बदललासँ कल्पनात्मक गहराइ नहि बढ़ैत; वाक्यसभक कारण-संरचना परीक्षणयोग्य अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ह”, उदाहरण राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह; रदीफ “बीच अक्षर तिरै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११७९ : सपनक रेल — कात सीटी बजै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११७९ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“रात खोजि रेल मे नींद फेर खुलै / मोन नापि रेल रंग कात सीटी बजै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि पटरी मे भेद साफ जनै / लोक राखि डिब्बा मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि नींद पर सोर फेर जगै / कान सोचि रेल अंग कात सीटी बजै”।

‘सपनक रेल’क काव्य-केन्द्र “लोक चढ़ि सपन मे ठाम फेर बदलै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। असम्भव अथवा दूरीक बिम्ब लिखित जगतसँ आगाँ कल्पनाक स्थान बनबैत अछि; वस्तु आ विचारक अप्रत्याशित संगति एहि रचनाक सम्भावना अछि। “मोन सोचि पटरी मे भेद साफ जनै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आश्चर्यक शीर्षकक अनुपातमे बिम्बक स्वतंत्र आन्तरिक कथा कम खुलैत। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ

बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ग”, उदाहरण रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग; रदीफ “कात सीटी बजै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११८० : छाहक सोपान — पर पाँति चढ़ै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११८० मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि छाह मे सोपान फेर खुलै / मोन नापि छाह गीत पर पाँति चढ़ै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि छाह मे रूप साफ बदलै / लोक राखि भीत मे रंग थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि छाह पर सोर फेर जगै / कान सोचि भीत शीत पर पाँति चढ़ै”।

‘छाहक सोपान’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि छाह मे गप फेर बनै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। शीर्षक यथार्थक औजारकँ काल्पनिक अवकाशमे राखैत अछि, जाहिसँ स्मृति, दूरी आ इच्छाक परस्पर सम्बन्ध बनैत अछि। “मोन सोचि छाह मे रूप साफ बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। काल्पनिक वस्तुक नाम मात्र बदललासँ कल्पनात्मक गहराइ नहि बढ़ैत; वाक्यसभक कारण-संरचना परीक्षणयोग्य अछि। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ीत”, उदाहरण गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत; रदीफ “पर पाँति चढ़ै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

गजल ११६१-११८० : पाठभेद आ शिल्पगत तुलना

गजल	वस्तु/दृश्य-धुरी	रदीफक रूप
११६१	काठक छील — मान पर स्वर बजै	पर स्वर बजै
११६२	ताड़क रस — राह संग साँच जनै	संग साँच जनै
११६३	पनसक बीआ — रंग बीच नेह बचै	बीच नेह बचै
११६४	मखानक खोल — गीत कात राह मुड़ै	कात राह मुड़ै
११६५	सनक रेसा — बात मे रूप बदलै	मे रूप बदलै
११६६	चूनक ढेरी — सोर पर गंध पलै	पर गंध पलै
११६७	घीक वास — ताल संग सोर फूटै	संग सोर फूटै
११६८	मधुक मकरंद — आस बीच मान ठहरै	बीच मान ठहरै
११६९	कोठीक अन्न — सार कात डोर जुड़ै	कात डोर जुड़ै
११७०	ढोलकक थाप — मान मे छाह सरे	मे छाह सरे
११७१	काँसक थाल — राह पर भोर उगै	पर भोर उगै
११७२	जोतक लीक — रंग संग तर्क जँचै	संग तर्क जँचै
११७३	शालक छाल — गीत बीच अर्थ खुलै	बीच अर्थ खुलै
११७४	कुम्हारक भट्टी — बात कात नाद बजै	कात नाद बजै
११७५	धानक खील — सोर मे साँच मिलै	मे साँच मिलै

११७६	चानक डाकघर — पर पत्र जगै	पर पत्र जगै
११७७	समयक खाली जेब — संग घड़ी चलै	संग घड़ी चलै
११७८	बादलक पोथीघर — बीच अक्षर तिरै	बीच अक्षर तिरै
११७९	सपनक रेल — कात सीटी बजै	कात सीटी बजै
११८०	छाहक सोपान — पर पाँति चढ़ै	पर पाँति चढ़ै

गजल ११८१ : शून्यक पतंग — संग डोर हँसै

मूल-पाठक आधार। दोसर दीवान-खण्डक गजल ११८१ मे १२ मिसरा दर्ज अछि। आरम्भ—“मोन खोजि शून्य मे पाँख फेर खुलै / मोन नापि शून्य बात संग डोर हँसै”। बीचक पाठ—“मोन सोचि पवन मे राह साफ बदलै / लोक राखि डोर मे रूप थिर रहै”। अन्तिम पाँति—“कान खोजि पवन पर सोर फेर जगै / कान सोचि शून्य जात संग डोर हँसै”।

‘शून्यक पतंग’क काव्य-केन्द्र “लोक राखि पतंग मे नाम फेर उड़ै”क दृश्यसँ विस्तारित होइत अछि। छोट शब्द-समूहमेसँ दृश्यात्मक विस्मय उठैत अछि, यद्यपि ओकर विस्तारक कसौटी सम्पूर्ण मिसरा अछि। “मोन सोचि पवन मे राह साफ बदलै”मे तकर अर्थ/गतिक फेर पाठक समक्ष अबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा। आश्चर्यक शीर्षकक अनुपातमे बिम्बक स्वतंत्र आन्तरिक कथा कम खुलैत। मूल पाठमे ‘कारण’, ‘भेद’, ‘साँच’, ‘रूप’ सन अमूर्त पदसभ बहुते बेर अबैत अछि; जतेक अलग वस्तु अछि, ओतेक अलग नाटकीय प्रसङ्ग नहि।

छन्द आ अन्त्यपद। मूल छन्द-निर्देश : ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना। काफिया-प्रकार “-ात”, उदाहरण बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात; रदीफ “संग डोर हँसै”। रदीफयुक्त मिसरासभक काफिया-पद घोषित उदाहरणसभसँ मेल खाइत अछि; ई पाँति-स्तरक पुष्टि अछि, वास्तविक पारम्परिक बहरक ध्वनि-जाँच नहि।

सम्पूर्ण दीवान : साहित्यिक समेकन आ पाठ-सिद्धिक सीमा

दीवान-ए-विदेहक दुनू खण्डमे १,१८१ गजल अछि। पहिल खण्डक आरम्भमे अतिरिक्त लघु काव्यरचनाक 'रुबाइ/कता' नामकरण-भेद सेहो अछि। रचनाक संख्या सर्जनात्मक विस्तारक तथ्य अछि, कलात्मक उत्कृष्टताक निष्कर्ष नहि। एहि अध्ययनमे मूल गजलसभक क्रम, शीर्षक, मिसरा, घोषित काफिया-रदीफ, दृश्यबिम्ब आ स्थानीय भाषिक संसार अलग-अलग प्रमाणरूपेँ रखल गेल अछि।

पहिल खण्डमे निजी नेहसँ ग्रामीण श्रम आ प्रकृतिक चित्र धरि स्वर-विस्तार अछि। किशोर गजल खण्डमे अध्ययन, आत्मनिर्णय, मीतता, सूचना-जाँच आ जिम्मेदारीक अभिप्राय प्रबल अछि। दोसर खण्डक उत्तरार्धमे स्थानीय औजार, अन्न, वस्त्र, आवाज, जल, पञ्जी आ ऋतु शीर्षकक केन्द्र बनेत अछि। एहि शब्द-भण्डारसँ मिथिलाक पदार्थ-समाजकेँ काव्यमे विशेष स्थान भेटैत अछि।

समकालीन आलोचनाक आवश्यक प्रतिपक्ष: कतेको गजलमे 'मोन/लोक/हाथ', 'रूप/भेद/साँच', 'कारण/प्रमाण' आ नियत काफियाक एकहि छाँचा पुनः-पुनः अबैत अछि। ११०१-११७५ समूहक अनेक मिसरामे वस्तु-नाम बदललासँ वाक्यात्मक कंकाल बहुत कम बदलैत अछि। ई रचनात्मक परम्पराक जानी-बूझी आवृत्ति भऽ सकैत अछि, मुदा प्रत्येक गजलक स्वतंत्र शिल्पगत मूल्यक प्रश्न भेटैत नहि; एकरा सीधा मौलिकता वा स्वतन्त्र कथ्यक प्रमाण मानब अनुचित।

छन्दगत सीमा सेहो स्पष्ट अछि: मूल प्रकाशकीय पाँतिमे ३२-मात्रिक १६+१६ अर्धांशक दाबी आ कतहु 'पारम्परिक अरूजी नाम सुनिश्चित नहि' सन सावधानी दूनू संग छथि। रदीफ-काफियाक सूची-स्तरीय मिलान ध्वन्यात्मक बहरक पूर्ण परीक्षण नहि। वास्तविक मैथिली उच्चारण, यति आ मिसराक भारक स्वतंत्र स्वराधारित गणना आवश्यक रहत।

अन्तिम गजल 'शून्यक पतंग' मे नभ, पवन, डोर आ शून्यक परस्पर फेरबदल दीर्घ दीवानक एकटा खुलल समापन अछि। ई अन्तक गीतात्मक सम्भावना अछि; चूँकि अनेक मिसरामे पूर्वनिर्धारित क्रियाछाँचा सेहो अछि, ताहि कारण सम्भावनाक संग पुनरुक्तिक वस्तुनिष्ठ सीमा सेहो देल जाएत।

'अकुलाइत सुर'क १३३ किशोर गजल, 'दीवान-ए-विदेह'क किशोर भागक गजल ४५९-५९१ सँ शीर्षक, घोषित छन्द-विधान आ प्रत्येक काव्य-पाँतिमे समान

अच्छि। एहि कारण एहि १३३ समीक्षाक पाठाधारित उपयोग खण्ड २४मे कएल जाएत; कविता-गीतक समीक्षा अलग रहत।

दीवान-ए-विदेह : रचनावार विस्तृत अनुक्रम

क्रमांक १-५९१ : पहिल खण्ड; क्रमांक ५९२-११८१ : दोसर खण्ड। प्रत्येक प्रविष्टिक पृष्ठ-संख्या मुद्रित पाठक अनुसार।

१ · मोन पडैए · ६	५९२ · साँचक मान · ५१७
२ · रहि गेल · ८	५९३ · ओकर नाम नोर छल · ५१७
३ · आउ ने · १०	५९४ · मोन बीच रात रहल · ५१८
४ · कहियो नै · १२	५९५ · मीत मोन प्राण छल · ५१८
५ · अहाँक बाद · १४	५९६ · नेहक अन्तिम छोर · ५१९
६ · सुनैछी · १६	५९७ · अहाँ बिनु रहल · ५२०
७ · बदलि गेल · १८	५९८ · जे मोनसँ नै गेल · ५२०
८ · रहि जाउ · २०	५९९ · अहाँ मोनमे रहि गेल · ५२१
९ · कतेक दिन · २२	६०० · जे नोर मोनमे जागल अच्छि · ५२१
१० · बाकी अच्छि · २४	६०१ · जे हमर संग रहैत अच्छि · ५२२
११ · एखन धरि · २९	६०२ · ओ नोर हमरा मोन पडैए · ५२३
१२ · कहू ने · ३१	६०३ · ओ भोर हमरा मोन पडैए · ५२३
१३ · के जानै · ३३	६०४ · प्रीत हमरा भीतर अच्छि · ५२४
१४ · राति भरि · ३५	६०५ · दाग मोनसँ नहि जाइए · ५२४
१५ · रहए दिअ · ३७	६०६ · मीत फेर नहि भेटल · ५२५
१६ · आइयो · ३९	६०७ · नोर मोनमे बसल अच्छि · ५२६
१७ · कतेक दूर · ४१	६०८ · नोर अहाँ बिनु रहि गेल · ५२६
१८ · एखनहु · ४३	६०९ · मीत मोनमे रहि जाइए · ५२७
१९ · फेर भेटत · ४५	६१० · भूल मोनसँ नहि गेल · ५२७
२० · रहबे करत · ४७	६११ · नेह एखनो बचल अच्छि ·

	५२८
२१ · घुरि आउ ने · ५१	६१२ · ओ ठोर फेरो मोन पडैए · ५२९
२२ · कहूँ तँ सही · ५३	६१३ · जे नोर हमरा छोडि नहि गेल · ५२९
२३ · मोनमे अछि · ५५	६१४ · नेहक गान बचल अछि · ५३०
२४ · बदलि गेलै · ५७	६१५ · ओ नाम एखनो मोनमे अछि · ५३१
२५ · बाकी अछि · ५९	६१६ · आस भीतर रहैए · ५३१
२६ · जाइत छी · ६१	६१७ · आस संग चलैत अछि · ५३२
२७ · बाँचल अछि · ६३	६१८ · आस अहाँक पाछाँ रहैए · ५३२
२८ · नै भूलब · ६५	६१९ · जे नोर आबो मोनमे अछि · ५३३
२९ · देखै छी · ६७	६२० · नेह राति भरि जागैत अछि · ५३४
३० · बाँचि रहल अछि · ६९	६२१ · आस आबो संग रहैत अछि · ५३४
३१ · याद रहत · ७३	६२२ · जे नोर अहाँक पाछाँ रहि गेल · ५३५
३२ · बाजि उठैए · ७४	६२३ · ओ भोर मोनमे रहि गेल · ५३६
३३ · नै बिकत · ७४	६२४ · ओ गान हमरा संग अछि · ५३६
३४ · घुरि अबैए · ७५	६२५ · ओ नोर हमरा मोन पडैए · ५३७
३५ · ठाढ़ रहत · ७६	६२६ · ओ नेह मोनमे बचल अछि · ५३८
३६ · सुनाइ पडैए · ७७	६२७ · ओ नाम आबो संग अछि · ५३८
३७ · बुझाइ पडैए · ७८	६२८ · ओ नेह राति भरि जागैत अछि · ५३९
३८ · छोडि देलहुँ · ७९	६२९ · ओ नेह हमरा भीतर रहैए · ५३९
३९ · लिखैत रहू · ८०	६३० · मीत फेर नहि भेटल · ५४०

४० . जागि रहल अछि . ८०	६३१ . ओ नोर मोनसँ नहि गेल . ५४१
४१ . अछि किएक . ८३	६३२ . ओ नोर मोनमे बसल अछि . ५४२
४२ . रहि गेल . ८४	६३३ . नोर हमरा संग अछि . ५४३
४३ . बाजू ने . ८४	६३४ . नाम मोनमे रहि गेल . ५४३
४४ . के कहत . ८५	६३५ . मीत आबो संग अछि . ५४४
४५ . एना नहि . ८६	६३६ . नेह मोनमे बचल अछि . ५४५
४६ . धीरे-धीरे . ८७	६३७ . दाग हमरा भीतर रहैए . ५४६
४७ . एहि शहरमे . ८८	६३८ . नोर मोनसँ नहि गेल . ५४७
४८ . तखन बुझलहुँ . ८९	६३९ . नाम हमरा मोन पडैए . ५४८
४९ . मोनमे रहत . ९०	६४० . प्रीत हमरा संग अछि . ५४८
५० . गीत बनत . ९०	६४१ . नेह मोनमे रहि गेल . ५५०
५१ . कहब ने . ९३	६४२ . नोर मोनमे बसल अछि . ५५१
५२ . भेल अछि . ९४	६४३ . नोर फेरो आयल . ५५२
५३ . आब नहि . ९४	६४४ . नाम मोनमे राखू . ५५३
५४ . याद अबैए . ९५	६४५ . प्रीत फेरो जागल . ५५३
५५ . फेर आउ . ९६	६४६ . ध्यान मोनमे राखू . ५५४
५६ . छूटि गेल . ९७	६४७ . मीत मोनमे खोजू . ५५५
५७ . रहैत अछि . ९८	६४८ . गाम मोनमे देखू . ५५५
५८ . ककरा कहू . ९९	६४९ . नोर मोनमे राखू . ५५६
५९ . बुझाईत अछि . ९९	६५० . ज्ञान फेरो जागल . ५५७
६० . रहि जेतै . १००	६५१ . प्रीत मोनमे राखू . ५५८
६१ . एहि बेर . १०३	६५२ . नोर मोनमे खोजू . ५५८
६२ . कहैए . १०३	६५३ . नोर मोन संग छल . ५५९
६३ . रहू ने . १०४	६५४ . नाम मोन बीच छल . ५६०
६४ . किएक नै . १०५	६५५ . मीत फेर दूर गेल . ५६०
६५ . आबो अछि . १०६	६५६ . नाम मोन संग छल . ५६१
६६ . देखू ने . १०७	६५७ . प्रीत मोन बीच छल . ५६२
६७ . घुरि चलू . १०७	६५८ . गाम फेर दूर गेल . ५६२
६८ . कहियो-कहियो . १०८	६५९ . नोर फेर मोन आय . ५६३

६९ .तखनियो . १०९	६६० .मान मोन बीच छल . ५६४
७० .सुनैत रहू . ११०	६६१ .नाम फेर लग छल . ५६६
७१ .फेरो कहू . ११२	६६२ .मीत साँझ संग आय . ५६७
७२ .एखन बाकी अछि . ११२	६६३ .ओ नाम मोन संग अछि . ५६८
७३ .लगैए . ११३	६६४ .ओ डोर मोन पास अछि . ५६८
७४ .कोना होएत . ११४	६६५ .ओ नेह मोन बीच अछि . ५६९
७५ .रहि जाए . ११५	६६६ .अहाँक नाम, निन्न दूर अछि . ५७०
७६ .ओहि पार . ११६	६६७ .ई सोर नोर संग अछि . ५७०
७७ .बुझि गेलहुँ . ११६	६६८ .नोर मौन, नेह गाढ अछि . ५७१
७८ .एहि रातिमे . ११७	६६९ .नेह एखनो मोन संग अछि . ५७२
७९ .आब की . ११८	६७० .पुरन सोर घर बीच अछि . ५७२
८० .सुनि लिअ . ११९	६७१ .अहाँक नाम आबो पास अछि . ५७३
८१ .एखनहुँ . १२१	६७२ .पुरन दुआरि फेर मोन पडल . ५७४
८२ .घुरि आउ . १२२	६७३ .बुझल दीपक उजियार . ५७५
८३ .कहियो ने . १२२	६७४ .मौनक सोर भीतर जागल . ५७५
८४ .मोन मानै नहि . १२३	६७५ .दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ . ५७६
८५ .रहि गेलै . १२४	६७६ .मौनक तान भीतर बजैत रहल . ५७७
८६ .आब कहू . १२५	६७७ .अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल . ५७७
८७ .बिसरब नहि . १२६	६७८ .मेटल नाम हमरा घर आयल . ५७८
८८ .तइयो . १२६	६७९ .अन्हार हमरा मोन बुझायल

	५७९
८९ · ओहि दिस · १२७	६८० · जे गेल से भीतर रहि गेल · ५८०
९० · गीत बनि जाए · १२८	६८१ · पानि अपन पिआस कहैत रहल · ५८२
९१ · कने ठहरू · १२९	६८२ · सूत्र दुआरि एतबे कहि गेल · ५८३
९२ · एखन धरि · १३०	६८३ · नेहक बाति रहि जाइत अछि · ५८३
९३ · कने सुनू · १३०	६८४ · अन्हार हमरासँ गप करैत अछि · ५८४
९४ · रहए दिअ · १३१	६८५ · नोर हमरा संग जागैत रहल · ५८५
९५ · के जानै · १३२	६८६ · साँझक बादो घर नहि सुतल · ५८६
९६ · फेर भेटत · १३३	६८७ · नाम मेटल, सोर नहि मेटल · ५८६
९७ · एना किए · १३३	६८८ · चान डूबल, नेह नहि डूबल · ५८७
९८ · आबो रहत · १३४	६८९ · पार भेटल, मझधार बाँचल · ५८८
९९ · नै भूलब · १३५	६९० · सूत्र गामक एकटा साँझ · ५८८
१०० · बाँचल रहत · १३६	६९१ · ठोर गुम्म, भीतर गीत · ५८९
१०१ · मानक दाम · १३८	६९२ · भोर आयल, राति नहि गेल · ५९०
१०२ · घरक दुआर · १३९	६९३ · जे भोर मोन पडैत अछि · ५९१
१०३ · रहि जाए · १३९	६९४ · जीवनक सार कहू · ५९१
१०४ · कतेक दिन · १४०	६९५ · मोनक भीतर राह रहू · ५९२
१०५ · एखनहुँ · १४१	६९६ · केवल ई मान नहि · ५९३
१०६ · सुनि लिअ · १४२	६९७ · जीवन आस जकाँ · ५९३
१०७ · तइयो · १४२	६९८ · जीवनमे गाम बिनु · ५९४
१०८ · आब कहू · १४३	६९९ · ई केवल काल छल · ५९५
१०९ · नै भूलब · १४४	७०० · मोनक भीतर पीर कतए · ५९५

११० . बाँचल रहत . १४४	७०१ . एतेक फेर किएक . ५९८
१११ . कने बाजू . १४५	७०२ . जीवनमे फूल रहैत अछि . ५९८
११२ . नै कहब . १४६	७०३ . एखनो चाह मोनमे अछि . ५९९
११३ . याद आवैए . १४७	७०४ . ओकर सोर रहि गेल . ६००
११४ . बुझू कने . १४७	७०५ . मौन एक गीत लगैत अछि . ६००
११५ . फेर होएत . १४८	७०६ . नाम मोन पडैए . ६०१
११६ . ओहि ठाम . १४९	७०७ . हमर मोन रुवैए किएक? . ६०२
११७ . रहैत अछि . १४९	७०८ . चाह आबो बचल अछि . ६०२
११८ . कनी बात . १५०	७०९ . मोन राति नाम फेर कहैत रहल . ६०३
११९ . अपन मान . १५१	७१० . मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि . ६०४
१२० . कनी बाट . १५१	७११ . मोनमे साँचक सार एखनो अछि . ६०४
१२१ . जतन गीत . १५४	७१२ . भोर मोनमे अछि . ६०५
१२२ . नेहक थाह . १५५	७१३ . नेहक नाम आब अछि . ६०६
१२३ . ओहि पार . १५५	७१४ . नम्र मोन मान संग अछि . ६०७
१२४ . गामक सुर . १५६	७१५ . मोनमे सार बचल अछि . ६०७
१२५ . कने रहू . १५७	७१६ . भोर रहि जाइत अछि . ६०८
१२६ . भूलि नहि जाउ . १५७	७१७ . मान बचैए एखनो . ६०९
१२७ . ओतबे काफी . १५८	७१८ . आन बाट दिसैए फेर . ६०९
१२८ . ककरो लेल . १५९	७१९ . मोन फेर बाट बदलैए . ६१०
१२९ . एखनो सुनू . १५९	७२० . साँच लेल कोन माप अछि . ६११
१३० . फेर लिखब . १६०	७२१ . दिस आन साँच देख . ६१३
१३१ . फेरो सही . १६१	७२२ . साँच एक बेर भेल नहि . ६१४
१३२ . घर चलू . १६१	७२३ . नेहक सार होइत अछि . ६१४

१३३ · साँच कहू · १६२	७२४ · साँचक नव ढंग रहैए · ६१५
१३४ · रहि सकैए · १६३	७२५ · नेह मूल सार अछि · ६१६
१३५ · एतबे रहय · १६३	७२६ · मोन बीच एक नाव अछि · ६१६
१३६ · फेर जनमत · १६४	७२७ · जग मान जागैए · ६१७
१३७ · आब नहि · १६५	७२८ · एक राह सार नहि · ६१८
१३८ · तखन देखब · १६५	७२९ · मुक्त राह सार अछि · ६१८
१३९ · कने बचाउ · १६६	७३० · झट ज्ञान नहि · ६१९
१४० · नै बदलू · १६७	७३१ · आन पीर नोर मात्र नहि · ६२०
१४१ · एखनो अछि · १६९	७३२ · भाव मूल थाह अछि · ६२०
१४२ · फेर गाबू · १७०	७३३ · प्रश्न बीच गीत अछि · ६२१
१४३ · घरमे बाजू · १७०	७३४ · साँचक सोर अछि · ६२२
१४४ · संग रहू · १७१	७३५ · भीतर आस रहै छै · ६२३
१४५ · फेर उठू · १७२	७३६ · प्रश्न उठि गेलै, द्वार खुलै छै · ६२३
१४६ · कने लिखू · १७२	७३७ · अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै · ६२४
१४७ · तइयो चलू · १७३	७३८ · छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै · ६२५
१४८ · रहय दिअ · १७४	७३९ · अंक सभ बोलै छै, सार खोजै छी · ६२६
१४९ · ककरा कहब · १७४	७४० · नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै · ६२६
१५० · फेर आबि गेल · १७५	७४१ · ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी · ६२९
१५१ · नै झुकब · १७६	७४२ · मान जखन बढ़ै छै, विश्वास रहै छै · ६२९
१५२ · मोनमे रहत · १७६	७४३ · घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी · ६३०
१५३ · कने छोड़ू · १७७	७४४ · गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै · ६३१
१५४ · समय कहत · १७८	७४५ · दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै · ६३२
१५५ · संग बाँचू · १७८	७४६ · रूप जखन मिललै, मेल तखन

	विचार भेलै . ६३२
१५६ . नै विसरू . १७९	७४७ . काल्हिक आधार पूछै छी . ६३३
१५७ . एना रहू . १८०	७४८ . भाग्यँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै . ६३४
१५८ . फेर बजत . १८०	७४९ . साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै . ६३५
१५९ . अपन रहू . १८१	७५० . प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी . ६३५
१६० . धीरे चलू . १८२	७५१ . भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी . ६३६
१६१ . चिट्टी खोलू . १८४	७५२ . रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै . ६३७
१६२ . धार कहैए . १८५	७५३ . साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै . ६३८
१६३ . मान रखू . १८६	७५४ . रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै . ६३८
१६४ . मौन सुनू . १८७	७५५ . छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै . ६३९
१६५ . पोथी बाँचू . १८८	७५६ . प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै . ६४०
१६६ . घुरि देखू . १८९	७५७ . अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै . ६४१
१६७ . धीरे कहू . १९०	७५८ . नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै छै . ६४१
१६८ . जगैत रहू . १९१	७५९ . काल पार सोचै छी, भोर देखै छी . ६४२
१६९ . याद रहत . १९२	७६० . सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी . ६४३
१७० . मोन खोलू . १९३	७६१ . ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै . ६४५
१७१ . ठाढ़ रहू . १९४	७६२ . दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै . ६४६
१७२ . एतबे बहुत . १९५	७६३ . मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी . ६४७

१७३ · घुरि आबू · १९६	७६४ · काल जखन मुडै छै, ढंग परखै छी · ६४८
१७४ · कने बैसू · १९७	७६५ · माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि · ६४९
१७५ · नामसँ आगाँ · १९८	७६६ · मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि · ६४९
१७६ · एखनो बाँचल अछि · १९९	७६७ · घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि · ६५०
१७७ · मौन राखू · २००	७६८ · साँच फेर खुलै, नोर सँ जुडैत अछि · ६५१
१७८ · फेर पढ़ू · २०१	७६९ · मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि · ६५१
१७९ · रहय · २०२	७७० · न्याय फेर बढै, माप बनि रहैत अछि · ६५२
१८० · आजसँ फेर · २०३	७७१ · पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि · ६५३
१८१ · एखनो चलू · २०४	७७२ · याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि · ६५४
१८२ · नाम लिखू · २०५	७७३ · प्रश्न जखन उठै, विचार कँ खोजैत अछि · ६५४
१८३ · घरमे रहय · २०६	७७४ · पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए · ६५५
१८४ · संग रहत · २०७	७७५ · घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए · ६५६
१८५ · खोलि देखू · २०८	७७६ · कूल दूर सँ रहै छै, तरंग संगे बहैए · ६५७
१८६ · चुप नहि रहू · २०९	७७७ · बीज माटि फोडै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए · ६५७
१८७ · फेर शुरू करू · २१०	७७८ · प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढैए · ६५८
१८८ · देर भऽ गेल · २११	७७९ · पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए · ६५९
१८९ · फेर भेटू · २१२	७८० · राति पाछाँ सँ रहै छै, आस भोरमे फूटैए · ६५९
१९० · कने राखू · २१३	७८१ · शब्द पवन चढै छै, संवाद

	पवनमे उड़ैए . ६६२
१९१ . आब बुझू . २१४	७८२ . घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए . ६६३
१९२ . एखन बाकी . २१५	७८३ . रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए . ६६३
१९३ . चुप नहि रहू . २१६	७८४ . सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए . ६६४
१९४ . फेर चलू . २१७	७८५ . पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए . ६६५
१९५ . कने थामू . २१८	७८६ . पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए . ६६६
१९६ . ककरा बुझाबू . २१९	७८७ . पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिंहरैए . ६६६
१९७ . बाँचि रहय . २२०	७८८ . पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए . ६६७
१९८ . घुरि देखब . २२१	७८९ . दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए . ६६८
१९९ . एहि बेर . २२२	७९० . दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए . ६६९
२०० . मौन रहैए . २२२	७९१ . राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए . ६६९
२०१ . अहाँ रहू . २२४	७९२ . रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए . ६७०
२०२ . धीरे-धीरे . २२५	७९३ . रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए . ६७१
२०३ . हाथक मोल . २२६	७९४ . नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए . ६७२
२०४ . घरमे बाजू . २२७	७९५ . लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए . ६७२
२०५ . बाँचि रहय . २२८	७९६ . पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए . ६७३
२०६ . एतबे नेह . २२९	७९७ . दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए . ६७४
२०७ . समय रहत . २३०	७९८ . डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए . ६७५

२०८ · फेर लिखू · २३१	७९९ · पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए · ६७५
२०९ · एहि मोड़पर · २३२	८०० · गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए · ६७६
२१० · कने बुझू · २३३	८०१ · दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए · ६७८
२११ · बाँचि रहू · २३४	८०२ · मेह राति बढै छै, धार कूल बनैए · ६७९
२१२ · मान राखू · २३५	८०३ · रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए · ६८०
२१३ · ओहि पार · २३६	८०४ · सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए · ६८१
२१४ · फेर खिलत · २३७	८०५ · दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए · ६८२
२१५ · अपन राह · २३८	८०६ · डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए · ६८२
२१६ · फेर सँ लिखू · २३९	८०७ · जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए · ६८३
२१७ · एक बेर आर · २४०	८०८ · माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए · ६८४
२१८ · माटि कहैए · २४१	८०९ · पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए · ६८५
२१९ · मोनमे बचल · २४२	८१० · आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए · ६८५
२२० · अपन कहू · २४३	८११ · केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए · ६८६
२२१ · आबो महकैत · २४४	८१२ · नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए · ६८७
२२२ · फेर भेटत · २४५	८१३ · काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढैए · ६८७
२२३ · मेहक बाद · २४६	८१४ · मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए · ६८८
२२४ · मौनक स्वर · २४७	८१५ · रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए · ६८९
२२५ · नदीक वचन · २४८	८१६ · गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण

	न्याय तौलैए · ६९०
२२६ · पोथीक भीतर · २४९	८१७ · स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए · ६९०
२२७ · उमेरक साँझ · २५०	८१८ · बत्ती राति जै छै, सोर नगर जागैए · ६९१
२२८ · श्रमक गरिमा · २५१	८१९ · आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए · ६९२
२२९ · ओहि चुप्पीमे · २५२	८२० · चिता शान्त पडै छै, फूल राख बोलैए · ६९३
२३० · घडी रुकल छल · २५३	८२१ · दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए · ६९४
२३१ · स्याहीक गन्ध · २५४	८२२ · ट्रेन गाम छोडै छै, द्वार पएर घुलैए · ६९६
२३२ · कारीगरक हाथ · २५५	८२३ · घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए · ६९७
२३३ · साँझक रेल · २५६	८२४ · पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए · ६९७
२३४ · फेर सोझाँ · २५७	८२५ · पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए · ६९८
२३५ · अपन उजास · २५८	८२६ · घडी भोर बजै छै, काल फेर सरकै · ६९९
२३६ · अधूरा पन्ना · २५९	८२७ · धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै · ६९९
२३७ · पुरनका रेडियो · २६०	८२८ · दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै · ७००
२३८ · मेह उतरला पर · २६१	८२९ · तान सूता तनै छै, बाना रंग जुडै · ७०१
२३९ · शहरक कोठरी · २६२	८३० · ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै · ७०२
२४० · औजारक चमक · २६३	८३१ · पएर ढलान चढै छै, कुहरा दूर सरै · ७०२
२४१ · देह कहैए · २६४	८३२ · मधुमाछि भोर उडै छै, फूल गन्ध खोजै · ७०३
२४२ · चिट्ठीक कोर · २६५	८३३ · चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढै · ७०४

२४३ · फेर आरम्भ · २६६	८३४ · पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै · ७०५
२४४ · जाड़क धूप · २६७	८३५ · सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढ़ै · ७०५
२४५ · बिहानक बजार · २६८	८३६ · रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै · ७०६
२४६ · करघाक सुर · २६९	८३७ · पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै · ७०७
२४७ · पुरनका पुस्तकालय · २७०	८३८ · ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै · ७०७
२४८ · अपन सीमा · २७१	८३९ · सूखल पात सरसै छै, चिनगी छोट उठै · ७०८
२४९ · प्रवासक टिकट · २७२	८४० · नहर खेत मुड़ै छै, नीर रेखा चलै · ७०९
२५० · नब गीत · २७३	८४१ · पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै · ७११
२५१ · जाड़क धूप · २७४	८४२ · बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि धामै · ७१२
२५२ · बिहानक बजार · २७५	८४३ · पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै · ७१३
२५३ · करघाक धुन · २७६	८४४ · चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै · ७१३
२५४ · पुरनका पुस्तकालय · २७७	८४५ · राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै · ७१४
२५५ · सीमा चिन्ह · २७८	८४६ · पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै · ७१५
२५६ · प्रवासक टिकट · २७९	८४७ · पैडल पाएर घुमै छै, चक्का राह धरै · ७१५
२५७ · नब गीत · २८०	८४८ · नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै · ७१६
२५८ · पुरनका चश्मा · २८१	८४९ · भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै · ७१७
२५९ · हाट छुटला पर · २८२	८५० · लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै · ७१८
२६० · दीपक धुआँ · २८३	८५१ · भोर कूप जागै छै, नीर तल

चमकै . ७१८

२६१ . भाषाक बीज . २८४

८५२ . पोथी पन्ना खुलै छै, छोट
टिप्पणी जगै . ७१९

२६२ . दूटल पुल . २८५

८५३ . सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल
धरै . ७२०

२६३ . सीमा बुझू . २८६

८५४ . माटि हाथ नमै छै, रूप बीच
उगै . ७२०

२६४ . नव पन्ना . २८७

८५५ . मेह काँच पडै छै, बूँद रेखा
बनै . ७२१

२६५ . ओसक बिहान . २८८

८५६ . कलम डारि जुडै छै, नव फूल
खुलै . ७२२

२६६ . दर्जीक सुई . २८९

८५७ . न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न
क्रम धरै . ७२२

२६७ . घाटपर . २९०

८५८ . राति नदी बहै छै, मचान दीप
जरै . ७२३

२६८ . पुरनका पोथी . २९१

८५९ . भोर विद्यालय खुलै छै,
आँगन हँसी भरै . ७२४

२६९ . बिना कहल . २९२

८६० . बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि
दिसै . ७२४

२७० . अहाँक संग . २९३

८६१ . झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर
धरै . ७२६

२७१ . एखन लिखू . २९४

८६२ . पुरना बक्सा खुलै छै, कागज
गन्ध उठै . ७२७

२७२ . जाड़क धूप . २९५

८६३ . भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस
चमकै . ७२७

२७३ . लोहारक आगि . २९६

८६४ . दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ
छाह सिमटै . ७२८

२७४ . पुरनका चित्र . २९७

८६५ . मेह छत पडै छै, नाली नीर
बहै . ७२९

२७५ . पुल पार करैत . २९८

८६६ . बोर्ड बीच सजै छै, पहिल
चाल खुलै . ७२९

२७६ . लोकक कंठमे . २९९

८६७ . बाजार भोर खुलै छै, दाना
पलड़ा धरै . ७३०

२७७ . दूरीक बादो . ३००

८६८ . नाव घाट लगै छै, नीर तेज
बहै . ७३१

२७८ · नव बिहान · ३०१	८६९ · साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै · ७३१
२७९ · पुरनका कुञ्जी · ३०२	८७० · कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै · ७३२
२८० · करघाक धुन · ३०३	८७१ · देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै · ७३३
२८१ · नदीक धुँध · ३०४	८७२ · ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै · ७३३
२८२ · पोथीक दोकान · ३०५	८७३ · छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै · ७३४
२८३ · पड़ोसक आँगन · ३०६	८७४ · पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै · ७३५
२८४ · अपन मान · ३०७	८७५ · राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै · ७३५
२८५ · अधूरा गीत · ३०८	८७६ · पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए · ७३६
२८६ · कुम्हारक चाक · ३०९	८७७ · लोहारक श्वास उठै, आग भट्टी धधकैए · ७३७
२८७ · पुरनका डाकघर · ३१०	८७८ · नीर बहै, भोर जाल पसारैए · ७३७
२८८ · जाड़क धूप · ३११	८७९ · कचहरी सोझाँ छाह पसारैए · ७३८
२८९ · बरामदाक कुर्सी · ३१२	८८० · दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए · ७३९
२९० · रातिक स्टेशन · ३१३	८८१ · धान डोलै, बिजुका तकैए · ७४१
२९१ · बीज बचाउ · ३१४	८८२ · छोट कोन रहै, टिकट पहुँचबैए · ७४१
२९२ · गीत फेर जन्मत · ३१५	८८३ · धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए · ७४२
२९३ · नदीक चिट्ठी · ३१६	८८४ · ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए · ७४३
२९४ · धानक गन्ध · ३१७	८८५ · गन्ध उठै, मसाला पिसैए · ७४३
२९५ · पुरनका घड़ी · ३१८	८८६ · काँच हँसै, लहठी खनकैए ·

	७४४
२९६ . नीमक छाँह . ३१९	८८७ . पएर उठै, सीढ़ी चढ़बैए . ७४५
२९७ . कागजक नाव . ३२०	८८८ . आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए . ७४५
२९८ . साँझक घंटी . ३२१	८८९ . ओस काँपै, पाला जमैए . ७४६
२९९ . घर घुरबाक बाट . ३२२	८९० . समुद्र बीच सूझ बतबैए . ७४७
३०० . चूल्हिक आँच . ३२३	८९१ . जंगल साँस ले, पगडंडी मुड़ैए . ७४७
३०१ . पोखरिक चान . ३२४	८९२ . तिनका जुड़ै, घोंसला बसैए . ७४८
३०२ . मसालाक गन्ध . ३२५	८९३ . कपडा भीजै, रंगरेज रँगैए . ७४८
३०३ . ओसारक दीप . ३२६	८९४ . गाम गोल बैसै, सभा सुनैए . ७४९
३०४ . बरखाक खिड़की . ३२७	८९५ . धूलि हटै, अलमारी खुलबैए . ७५०
३०५ . बाँसुरीक दूर स्वर . ३२८	८९६ . लहर चढ़ै, पदचिह्न मिटैए . ७५०
३०६ . खेतक पाँति . ३२९	८९७ . धूलि उठै, घोड़ा दौड़ैए . ७५१
३०७ . सामा-चकेवाक साँझ . ३३०	८९८ . रेखा बोलै, चित्र उभरैए . ७५२
३०८ . मखानक पोखरि . ३३१	८९९ . श्वास उठै, शंख गुँजैए . ७५२
३०९ . कूपक डोर . ३३२	९०० . नीर पार खुलै, क्षितिज पसरैए . ७५३
३१० . पीपरक पात . ३३३	९०१ . पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए . ७५५
३११ . बखारीक धान . ३३४	९०२ . ओस पात चमकै, नेह पात महकैए . ७५५
३१२ . मिथिला-चित्रक रेखा . ३३५	९०३ . सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए . ७५६
३१३ . सरिसो फूल . ३३६	९०४ . रेशा तनै, मान सिक्की जुड़ैए . ७५७

३१४ · कमलाक कछार · ३३७	९०५ · पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए · ७५७
३१५ · सिक्कीक शिल्प · ३३८	९०६ · व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए · ७५८
३१६ · पानक बाड़ी · ३३९	९०७ · आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए · ७५८
३१७ · मधुश्रावणीक राति · ३४०	९०८ · भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए · ७५९
३१८ · जाँतक घरघर · ३४१	९०९ · पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए · ७६०
३१९ · कोसीक बालू · ३४२	९१० · गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए · ७६०
३२० · मेहक बाद माटिक गन्ध · ३४३	९११ · माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए · ७६१
३२१ · आमक मोजर · ३४४	९१२ · कपड़ा फाटै, नेह सुई सिअैए · ७६१
३२२ · अरिपनक रेखा · ३४५	९१३ · डारि हिलै, चाव झूला डोलैए · ७६२
३२३ · दूबिपर ओस · ३४६	९१४ · पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए · ७६२
३२४ · बाँसक झुरमुट · ३४७	९१५ · माथ सजै, मान पाग दमकैए · ७६३
३२५ · दधि-चूड़ाक बिहान · ३४८	९१६ · भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए · ७६४
३२६ · करघाक धुन · ३४९	९१७ · कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए · ७६४
३२७ · कातिकक साँझ · ३५०	९१८ · अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए · ७६५
३२८ · खरिहानक चान · ३५१	९१९ · फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए · ७६५
३२९ · कुसियारक रस · ३५२	९२० · पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए · ७६६
३३० · पोखरिक सीढी · ३५३	९२१ · ओस पडै, भोर जाल चमकैए · ७६८
३३१ · पलाशक रङ · ३५४	९२२ · धान रोपै, गीत रोपनी गबैए · ७६८

	७६९
३३२ . माटिक चूल्हि . ३५५	९२३ . घाट पाएर चलै, नोर गगरी छलकैए . ७६९
३३३ . पातक दोना . ३५६	९२४ . मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए . ७७०
३३४ . चैतक हावा . ३५७	९२५ . गाछ डोलै, पार पछिया बहैए . ७७०
३३५ . भोरक कुहासा . ३५८	९२६ . सूत तनै, सार चर्खा घूमैए . ७७१
३३६ . कुम्हारक चाक . ३५९	९२७ . धान जुटै, मान बखार भरैए . ७७१
३३७ . सनईक फूल . ३६०	९२८ . माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए . ७७२
३३८ . गामक हाट . ३६१	९२९ . नीर हटै, भोर चर उभरैए . ७७३
३३९ . नावक घाट . ३६२	९३० . पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए . ७७३
३४० . अँगनाक तुलसी . ३६३	९३१ . पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए . ७७४
३४१ . आसिनक अकास . ३६४	९३२ . रेशा जुडै, प्रीत पाटी बुनैए . ७७४
३४२ . धानक बालि . ३६५	९३३ . तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए . ७७५
३४३ . पुरइनक पात . ३६६	९३४ . पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए . ७७६
३४४ . चरखाक सूत . ३६७	९३५ . लोक जुटै, मान सभा जुटैए . ७७६
३४५ . ओसारक साँझ . ३६८	९३६ . पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए . ७७७
३४६ . महुआक गन्ध . ३६९	९३७ . रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए . ७७७
३४७ . इनारक डोर . ३७०	९३८ . आग धधकै, आस ईंट पकैए . ७७८
३४८ . फागुनक पवन . ३७१	९३९ . फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए . ७७९
३४९ . ढेकीक ताल . ३७२	९४० . दाना जुटै, मान कोठी भरैए .

	७७९
३५० · भादोक मेघ · ३७३	१४१ · नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए · ७८१
३५१ · बटगाछक छाँह · ३७४	१४२ · श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए · ७८२
३५२ · सुपक हावा · ३७५	१४३ · पाथर भीजै, भोर झरना गबैए · ७८२
३५३ · बगुलाक पाँति · ३७६	१४४ · भोर खुलै, आस कुहासा हटैए · ७८३
३५४ · चूल्हक राख · ३७७	१४५ · राति ढलै, नोर चाँद झुकैए · ७८४
३५५ · कनेरक फूल · ३७८	१४६ · लहर हटै, आस सीपी खुलैए · ७८४
३५६ · तिलकोरक पात · ३७९	१४७ · धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए · ७८५
३५७ · माटिक घैल · ३८०	१४८ · खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए · ७८५
३५८ · कदम्बक फूल · ३८१	१४९ · छत गरमै, चाव धूप उतरैए · ७८६
३५९ · चरौनिहारक बंसी · ३८२	१५० · दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए · ७८७
३६० · खपरैल पर मेह · ३८३	१५१ · राख अँगार खुलै, अँगार बचैए · ७८७
३६१ · मधुमाछीक गुँजार · ३८४	१५२ · बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए · ७८८
३६२ · दलानक कथा · ३८५	१५३ · ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए · ७८८
३६३ · अडहुलक फूल · ३८६	१५४ · कनेर फूल खुलै, आस फुलैए · ७८९
३६४ · मड्डुआक खेत · ३८७	१५५ · छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए · ७८९
३६५ · पनघटक बाट · ३८८	१५६ · भूसी पवन खुलै, राह दूर उडैए · ७९०
३६६ · पनसक गाछ · ३८९	१५७ · कछार कटान खुलै, मूल कटैए · ७९१

३६७ .जूटक डोर . ३९०	१५८ .बिचड़ा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए . ७९१
३६८ .कोइलीक पुकार . ३९१	१५९ .काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए . ७९२
३६९ .कातिकक चान . ३९२	१६० .बाती दीप खुलै, पीर जरैए . ७९२
३७० .पूसक बिहान . ३९३	१६१ .सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए . ७९४
३७१ .माटिक दीप . ३९४	१६२ .माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए . ७९५
३७२ .सरपताक झुरमुट . ३९५	१६३ .बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए . ७९६
३७३ .मसूरक फूल . ३९६	१६४ .ओसार साँझ खुलै, अँगार फेर जगैए . ७९६
३७४ .घुरक आगि . ३९७	१६५ .बान्ह जल खुलै, मान टिकैए . ७९७
३७५ .बथानक साँझ . ३९८	१६६ .कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उडैए . ७९७
३७६ .जाइक तारा . ३९९	१६७ .काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए . ७९८
३७७ .बरखाक राति . ४००	१६८ .बेल लता खुलै, नोर लहरैए . ७९८
३७८ .मटकाक दधि . ४०१	१६९ .नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए . ७९९
३७९ .कदलीक पात . ४०२	१७० .चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए . ८००
३८० .सीमरक रूइ . ४०३	१७१ .पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए . ८००
३८१ .खेतक मेड़ . ४०४	१७२ .पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए . ८०१
३८२ .चिरैक पाँति . ४०५	१७३ .रूई सूत खुलै, पीर ऊपर उडैए . ८०१
३८३ .चाननीक पोखरि . ४०६	१७४ .धूरिक बाट खुलै, बात उडैए . ८०२
३८४ .नदीक मोड़ . ४०७	१७५ .साँकल द्वार खुलै, रूप राति

	खनकैए · ८०२
३८५ · अँगनाक रौद · ४०८	९७६ · सिलौट लोढा बजै, सोर धीमे थिरैए · ८०३
३८६ · बन्हल धानक पूला · ४०९	९७७ · बाँस दउरा जुडै, मान सँचि उठैए · ८०४
३८७ · उडैत पतंग · ४१०	९७८ · तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए · ८०४
३८८ · गाछक छाल · ४११	९७९ · हँसुआ धार चमकै, सार फेर दमकैए · ८०५
३८९ · घाटपर साँझ · ४१२	९८० · जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए · ८०५
३९० · ओसक बूँद · ४१३	९८१ · कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए · ८०७
३९१ · काँसक फूल · ४१४	९८२ · छत्ता मधु भरै, आस मधु सँ भरैए · ८०८
३९२ · पोखरिक माछ · ४१५	९८३ · तितली रंग उडै, रंग पाँख पसारैए · ८०८
३९३ · सूपमे उडैत धान · ४१६	९८४ · घोँघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए · ८०९
३९४ · जाडक कुहासा · ४१७	९८५ · कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए · ८१०
३९५ · पगडण्डीक धूर · ४१८	९८६ · सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए · ८१०
३९६ · ताडक छाँह · ४१९	९८७ · कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए · ८११
३९७ · साँझक घंटी · ४२०	९८८ · सूप दाना छाँटै, धान सूपमे छँटैए · ८११
३९८ · बेलक सुवास · ४२१	९८९ · झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए · ८१२
३९९ · पपीहाक पुकार · ४२२	९९० · ताडपात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए · ८१२
४०० · तिलक खेत · ४२३	९९१ · पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए · ८१३
४०१ · बाँसक कोपल · ४२५	९९२ · खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए · ८१४

४०२ · नदीक बालू · ४२५	१९३ · बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए · ८१४
४०३ · गोधूलिक धूर · ४२६	१९४ · ओल माटि फोडै, मूल माटि फोडि निकलैए · ८१५
४०४ · अगहनक बिहान · ४२६	१९५ · अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए · ८१५
४०५ · मखानक पात · ४२७	१९६ · मड्डुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए · ८१६
४०६ · कुसियारक खेत · ४२७	१९७ · कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए · ८१६
४०७ · पलाशक फूल · ४२८	१९८ · तिल घानी घुमै, हाथ घानी संग चलैए · ८१७
४०८ · माटिक सुराही · ४२८	१९९ · मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पडैए · ८१८
४०९ · चैती पवन · ४२९	१००० · हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए · ८१८
४१० · अमरूदक बगिया · ४२९	१००१ · दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए · ८२०
४११ · धानक भूसा · ४२९	१००२ · चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुडैए · ८२१
४१२ · अलसीक नील फूल · ४३०	१००३ · मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए · ८२२
४१३ · आमक मञ्जरी · ४३०	१००४ · पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए · ८२२
४१४ · गामक पोखरि · ४३१	१००५ · सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए · ८२३
४१५ · नदीक बालू · ४३१	१००६ · सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए · ८२४
४१६ · सखुआक पात · ४३२	१००७ · कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढैए · ८२५
४१७ · गहुमक बालि · ४३२	१००८ · घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए · ८२५
४१८ · गामक पुल · ४३३	१००९ · लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए · ८२६
४१९ · एना रे · ४३३	१०१० · रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे

	हरियैत जाइए · ८२७
४२० · किछु नै बदलैए · ४३४	१०११ · कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए · ८२८
४२१ · लगैए ई · ४३४	१०१२ · आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए · ८२८
४२२ · हमरा की · ४३५	१०१३ · लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए · ८२९
४२३ · चलू घुरि चली · ४३५	१०१४ · सिन्धुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए · ८३०
४२४ · अहीं तँ छी · ४३६	१०१५ · कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए · ८३१
४२५ · झपाइ छी · ४३६	१०१६ · चापाकल चलै, धार धरतीसँ नीर उठैए · ८३१
४२६ · देखै छी · ४३७	१०१७ · ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए · ८३२
४२७ · तखन किने · ४३७	१०१८ · बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए · ८३३
४२८ · अनेरे · ४३८	१०१९ · खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए · ८३४
४२९ · बिसरनहिऐ नीक · ४३८	१०२० · भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए · ८३४
४३० · प्रेमक पथिक · ४३९	१०२१ · बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए · ८३७
४३१ · सोचनीक होइए · ४३९	१०२२ · माटिक चूल्हि जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए · ८३७
४३२ · जा रहल अछि · ४४०	१०२३ · दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए · ८३८
४३३ · बुझतै ओ · ४४०	१०२४ · झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए · ८३९
४३४ · कहू की करी · ४४१	१०२५ · कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए · ८४०
४३५ · अडेजब कोना · ४४१	१०२६ · पगडंडी धूर — आस एतबे साँच नहि · ८४०
४३६ · रहल अछि · ४४२	१०२७ · नाव पतवार — मान तखन अर्थ खुलैत अछि · ८४१

४३७ . बहुत अच्छि . ४४२	१०२८ . सनक रस्सी — राह मोन फेर पूछैत रहै . ८४२
४३८ . दोस्तियारी बिना . ४४३	१०२९ . सरकंडा चटाई — रंग नाम कतहु हराइत नहि . ८४३
४३९ . परिचर . ४४३	१०३० . तसर कोया — सार रेशमक छुअन बचल रहत . ८४३
४४० . खेत-खम्हारक काज . ४४४	१०३१ . दही मथानी — गीत अपन बाट बनवैत अच्छि . ८४४
४४१ . सत्यसँ भेंट . ४४४	१०३२ . धानक कोठी — हाथ फेर घर दिस अबैत अच्छि . ८४५
४४२ . मोन पड़ल ऐ . ४४५	१०३३ . खोंइछा अन्न — बात कथा एतय थमैत नहि . ८४६
४४३ . धरधड़ी . ४४५	१०३४ . पोखर घाट — सोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै . ८४६
४४४ . काज चलत नै . ४४६	१०३५ . अरिपन रेखा — ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अच्छि . ८४७
४४५ . छद्म ज्ञान . ४४६	१०३६ . बाँसुरी स्वर — आस भीतर साँस लैत अच्छि . ८४८
४४६ . तैयार . ४४६	१०३७ . गोरस मथनी — मान रस हाथे बदलैत अच्छि . ८४९
४४७ . ई काल . ४४७	१०३८ . मिथिला चित्रक कूची — सोर रंग मौनहुँ बोलैत अच्छि . ८४९
४४८ . तारा कहलक . ४४७	१०३९ . माछक जाल — सार नीर जाल परखैत अच्छि . ८५०
४४९ . ने कहितौ . ४४८	१०४० . पोथीक जिल्द — गीत आखर देह धरैत अच्छि . ८५१
४५० . जलोदीप . ४४८	१०४१ . नीम पात — राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अच्छि . ८५३
४५१ . अन्हार पसरल . ४४९	१०४२ . कांस फूल — रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अच्छि . ८५४
४५२ . भड गेलै . ४४९	१०४३ . बरगद जटा — हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि . ८५५
४५३ . छोडि आयल छी . ४५०	१०४४ . पुआल गादी — मान घाम पुआलमे बचैत अच्छि . ८५५

४५४ · रहि रहि · ४५०	१०४५ · तिलकोर पात — बात लता आँगन जोड़ैत अछि · ८५६
४५५ · उसरि गेल · ४५१	१०४६ · सिंघाड़ा पोखर — गीत नीर तले फल पाकैत अछि · ८५७
४५६ · सएह बनलिये · ४५१	१०४७ · कमला धार — सार नीर सभ गप कहैत नहि · ८५८
४५७ · खेरहा · ४५२	१०४८ · चिरई घोंसला — सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि · ८५८
४५८ · ढङ बदलब तखनिते · ४५२	१०४९ · धानक लावा — ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि · ८५९
४५९ · बाबी · ४५३	१०५० · आखरक यात्रा — आस अन्त एतय होइत नहि · ८६०
४६० · चान मामा · ४५३	१०५१ · लोहारक धौकनी — आस कथन एतेक पर थिर नहि · ८६१
४६१ · सात रंग · ४५४	१०५२ · करघाक ताना — मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि · ८६२
४६२ · दादीक कथा · ४५४	१०५३ · अलसी फूल — राह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै · ८६२
४६३ · तरेगन गनी · ४५५	१०५४ · सरिसो खेत — रंग नेह बिना रंग पूरा नहि · ८६३
४६४ · बाटक खेल · ४५५	१०५५ · पगहा गाँठि — सार बंधन अपन राह चुनैत अछि · ८६४
४६५ · चिड़ैक गीत · ४५६	१०५६ · जूटक बोरा — गीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि · ८६५
४६६ · हँसीक आँगन · ४५६	१०५७ · कुशक आसन — हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि · ८६५
४६७ · कागजक नाव · ४५६	१०५८ · सोनारक हथौड़ी — बात थाप देहक भेद गनैत रहै · ८६६
४६८ · दादीक चान · ४५७	१०५९ · जुगनू राति — सोर राति भीतर भोर पलैत अछि · ८६७
४६९ · पतंगक पाँखि · ४५७	१०६० · ओसक बूँद — ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि · ८६८
४७० · मेहक खेल · ४५८	१०६१ · कमलनाल — आस नोरक अर्थ एक्के नहि · ८७०
४७१ · निन्नक कथा · ४५८	१०६२ · माटिक पुतरी — मान साँस

	संग लय बदलैत अछि · ८७१
४७२ · अपन सपना · ४५९	१०६३ · बढईक रन्दा — सोर हाथक छाप मेटैत नहि · ८७२
४७३ · खेलक मैदान · ४५९	१०६४ · पानक बारी — सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि · ८७२
४७४ · पोथीक पाँखि · ४६०	१०६५ · पोखरक पाँक — गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि · ८७३
४७५ · परीक्षाक बिहान · ४६०	१०६६ · आम्रपल्लव तोरण — राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै · ८७४
४७६ · मीतक संग · ४६०	१०६७ · कुटजक छाल — रंग पवन संग देह झुकैत अछि · ८७५
४७७ · पर्दासँ बाहर · ४६१	१०६८ · मसूरक फूल — हाथ दूरक राह मोन नापैत रहै · ८७६
४७८ · अपन राह · ४६१	१०६९ · चनाक फली — मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि · ८७६
४७९ · तुलना नहि · ४६२	१०७० · मूँजक चटाई — बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि · ८७७
४८० · जालजगतसँ बाहर · ४६२	१०७१ · ताँतक गाँठि — गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि · ८७८
४८१ · विषय अपन · ४६३	१०७२ · पलाशक फूल — सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि · ८७९
४८२ · लाइकसँ बाहर · ४६३	१०७३ · बकाइन छाह — सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि · ८७९
४८३ · बात फरिछाउ · ४६४	१०७४ · चकरी पवन — ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि · ८८०
४८४ · फेर प्रयास · ४६४	१०७५ · सुईक टाँका — आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै · ८८१
४८५ · अपन रूप · ४६५	१०७६ · बाँसक सूप — आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि · ८८२
४८६ · अपन बात · ४६५	१०७७ · काँसक डलिया — मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि · ८८३
४८७ · अपन गति · ४६६	१०७८ · घोंघाक खोल — राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि · ८८३

४८८ · ना कहू · ४६६	१०७९ · सखुआ पात — रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै · ८८४
४८९ · निन्न बचाउ · ४६६	१०८० · कदंबक फूल — सार फूलक छाह समय धरि रहत · ८८५
४९० · समयक हिस्सा · ४६७	१०८१ · बेंतक मोढ़ा — गीत बेंत नमितहुँ मूल दूटैत नहि · ८८७
४९१ · बाट चुनैत · ४६७	१०८२ · मृदंगक चमड़ा — हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि · ८८८
४९२ · ना कहू · ४६८	१०८३ · मटरक फूल — बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै · ८८९
४९३ · अपन गति · ४६८	१०८४ · तिलक फली — सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि · ८९०
४९४ · ना कहू · ४६९	१०८५ · भदई धान — ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै · ८९१
४९५ · निन्नक समय · ४६९	१०८६ · हंसुलीक चमक — आस चमक देहक मान बनैत नहि · ८९१
४९६ · प्रश्न पूछू · ४७०	१०८७ · कनैल फूल — मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि · ८९२
४९७ · मीत चुनू · ४७०	१०८८ · खपरैल छानि — सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै · ८९३
४९८ · हारक बाद · ४७०	१०८९ · ताड़क पंखा — सार हवा हाथक संगति मानैत अछि · ८९४
४९९ · परीक्षाक बाद · ४७१	१०९० · घैलाक मुँह — गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि · ८९४
५०० · अपन विषय · ४७१	१०९१ · सिलौटक धार — राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि · ८९५
५०१ · अपन निर्णय · ४७२	१०९२ · लहठीक खनक — रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै · ८९६
५०२ · अपन ताल · ४७२	१०९३ · चूल्हिक राख — हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि · ८९७
५०३ · तुलना छोड़ू · ४७३	१०९४ · कचनार पात — मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि · ८९८

५०४ . भरोसा . ४७३	१०९५ . कपासक रूई — बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि . ८९८
५०५ . भूलसँ सीखू . ४७४	१०९६ . बेलनक घुमाव — गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि . ८९९
५०६ . कने आराम . ४७४	१०९७ . धानक भूसी — सार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै . ९००
५०७ . सोझाँ बाजू . ४७५	१०९८ . मधुक छत्ता — सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि . ९०१
५०८ . अपन सुर . ४७५	१०९९ . रुद्राक्षक दाना — ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि . ९०२
५०९ . पर्दासँ परे . ४७५	११०० . घंटीक अनुनाद — आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै . ९०२
५१० . मीतसँ बात . ४७६	११०१ . हँसियाक धार — मान पर राह खुलै . ९०५
५११ . ध्यानक डोर . ४७६	११०२ . इनारक डोल — सोर संग नेह रहै . ९०६
५१२ . मदद माँगू . ४७७	११०३ . घूरक आँच — राह पर गप खुलै . ९०७
५१३ . भविष्यक बाट . ४७७	११०४ . ईखक गाँठि — गीत बीच राह चलै . ९०७
५१४ . निर्णय . ४७८	११०५ . गुडक भेली — ताल कात धुन उठै . ९०८
५१५ . एक परिणाम . ४७८	११०६ . झाड़ूक सींक — आस बीच रूप खुलै . ९०९
५१६ . स्क्रीनक बाहर . ४७८	११०७ . कोहड़ाक बेल — सार पर भोर खुलै . ९१०
५१७ . पहिल कमाइ . ४७९	११०८ . जामुनक गाछ — मान पर डोर तनै . ९१०
५१८ . प्रश्नक साहस . ४७९	११०९ . बेलक फल — सोर संग ताल बजै . ९११
५१९ . टीमक खेल . ४८०	१११० . कौडीक चाल — राह बीच रंग झरै . ९१२

५२० · पहिल कमाइ · ४८०	११११ · खाटक पाट — गीत कात भोर खुलै · ९१३
५२१ · प्रश्नक साहस · ४८१	१११२ · द्विबरीक काँच — ताल संग काज चलै · ९१३
५२२ · टीमक खेल · ४८१	१११३ · घुँघरूक नाद — आस पर थाह मिलै · ९१४
५२३ · कौशल · ४८२	१११४ · झाँझक थाप — सार संग मान रहै · ९१५
५२४ · खराब दिन · ४८२	१११५ · खुरपीक धार — मान पर साँच खुलै · ९१६
५२५ · टोली · ४८३	१११६ · बथानक खूँटा — राह संग गीत उठै · ९१६
५२६ · निर्णयक समय · ४८३	१११७ · दूधक फेन — गीत बीच नेह रहै · ९१७
५२७ · पहिल खर्च · ४८३	१११८ · लाहक चूडी — ताल संग धूप ढलै · ९१८
५२८ · प्रश्न करू · ४८४	१११९ · बटखराक तोल — आस बीच छाह सैरै · ९१९
५२९ · समाचार · ४८४	११२० · पालकीक डाँड — सार संग बीज उगै · ९१९
५३० · पहिल यात्रा · ४८५	११२१ · माछक शल्क — मान मे आँच जगै · ९२२
५३१ · पहिल भाषण · ४८५	११२२ · माटिक सुराही — सोर पर मोन नमै · ९२२
५३२ · पहिल असफलता · ४८६	११२३ · कुल्हडक गंध — राह कात सोर उठै · ९२३
५३३ · समूहक दबाव · ४८६	११२४ · तुरहीक नाद — गीत संग राह बनै · ९२४
५३४ · डिजिटल विराम · ४८६	११२५ · डमरूक ताल — ताल मे नेह जगै · ९२५
५३५ · समय बाँटू · ४८७	११२६ · गोइठाक राख — सार पर अर्थ बचै · ९२५
५३६ · पहिल जिम्मेदारी · ४८७	११२७ · लौकीक बेल — मान संग मोन घुरै · ९२६
५३७ · साँच जाँचू · ४८८	११२८ · कदम्बक फूल — राह बीच

	गप जुडै . १२७
५३८ . अपन आवाज . ४८८	११२९ . करघाक सूत — रंग कात साँच रहै . १२८
५३९ . परीक्षा बाद . ४८८	११३० . फूसक छानि — गीत में नेह चलै . १२८
५४० . मीतक सीमा . ४८९	११३१ . बेरक काँट — बात पर छाप बचै . १२९
५४१ . अपन लय . ४८९	११३२ . बाँसक फाँक — सोर संग भेद खुलै . १३०
५४२ . मीतक पहिचान . ४९०	११३३ . पोखरिक घाट — ताल बीच सोर पहुँचै . १३१
५४३ . डरक पार . ४९०	११३४ . गाछक खोह — आस कात मान जगै . १३१
५४४ . आरम्भ . ४९१	११३५ . पीपलक जड़ि — सार मे राह चलै . १३२
५४५ . रुचिक बाट . ४९१	११३६ . चकईक पाँख — मान पर स्वर फूटै . १३३
५४६ . साँचक जाँच . ४९१	११३७ . कागक ठोर — राह संग प्रश्न उठै . १३४
५४७ . नब मीत . ४९२	११३८ . मेघक बूँद — रंग बीच रूप बसै . १३४
५४८ . भूल स्वीकार . ४९२	११३९ . बिजुरीक रेख — गीत कात रंग मुडै . १३५
५४९ . एखन करू . ४९३	११४० . पूसक धुंध — बात मे धुन बदलै . १३६
५५० . प्रश्न पुछू . ४९३	११४१ . जेठक धूल — सोर पर साँस बढै . १३८
५५१ . काज बाँटू . ४९३	११४२ . सावनक टपक — ताल संग काल बचै . १३९
५५२ . अपन गति . ४९४	११४३ . भादोक पाँक — आस बीच बीज चलै . १३९
५५३ . नब हुनर . ४९४	११४४ . अगहनक बाली — सार कात पात पहुँचै . १४०
५५४ . बात जाँचू . ४९५	११४५ . फागुनक अबीर — मान मे भोर जुडै . १४१

५५५ · लिखि कऽ बुझू · ४९५	११४६ · चैतिक पछिया — राह पर थाह रहै · ९४२
५५६ · एक काज · ४९५	११४७ · कार्तिकक दीप — रंग संग छाह ठहरै · ९४२
५५७ · रिसक बेर · ४९६	११४८ · माघक धूप — गीत बीच नाद उडै · ९४३
५५८ · अपन माप · ४९६	११४९ · नदीक बालू — बात कात गंध पलै · ९४४
५५९ · मीत चुनू · ४९७	११५० · शंखक सोर — सोर मे फूल उघडै · ९४५
५६० · कने-कने सीखू · ४९७	११५१ · बेलपत्रक डारि — सार पर नेह जगै · ९४६
५६१ · अपन स्वर · ४९८	११५२ · खेसारीक दाना — मान संग राह खुलै · ९४६
५६२ · भूलसँ सीखू · ४९८	११५३ · कुर्थीक दालि — राह बीच मान चलै · ९४७
५६३ · बेर बाँटू · ४९९	११५४ · जाँतक पाट — रंग कात रूप रहै · ९४८
५६४ · साँच लिखू · ४९९	११५५ · सिलौटक लीक — गीत मे गप बनै · ९४९
५६५ · सुनि कऽ बाजू · ५००	११५६ · चूल्हिक धूर — बात पर बीज उगै · ९४९
५६६ · कौड़ी बचाउ · ५०१	११५७ · कूपक घेरा — सोर संग काल बहै · ९५०
५६७ · गाछ रोपू · ५०१	११५८ · नाँदक जल — ताल बीच छाप बचै · ९५१
५६८ · प्रश्न लिखू · ५०२	११५९ · भीतक लेप — आस कात डोर तनै · ९५२
५६९ · मीतक मान · ५०२	११६० · खपराक छत — सार मे थाह खुलै · ९५२
५७० · सपन सँ काज · ५०३	११६१ · काठक छील — मान पर स्वर बजै · ९५५
५७१ · बेर बाँटू · ५०३	११६२ · ताड़क रस — राह संग साँच जनै · ९५५
५७२ · पहिने सुनू · ५०४	११६३ · पनसक बीआ — रंग बीच

नेह बचै · १५६

५७३ · हुनर निखारू · ५०४

११६४ · मखानक खोल — गीत कात
राह मुडै · १५७

५७४ · सीमा राखू · ५०५

११६५ · सनक रेसा — बात मे रूप
बदलै · १५८

५७५ · पढ़ि बुझू · ५०६

११६६ · चूनक ढेरी — सोर पर गंध
पलै · १५८

५७६ · बाट चुनू · ५०६

११६७ · घीक वास — ताल संग सोर
फूटै · १५९

५७७ · निज बात · ५०७

११६८ · मधुक मकरंद — आस बीच
मान ठहरै · १६०

५७८ · प्रश्नक साहस · ५०७

११६९ · कोठीक अन्न — सार कात
डोर जुडै · १६१

५७९ · दिनक क्रम · ५०८

११७० · ढोलकक थाप — मान मे
छाह सारै · १६१

५८० · दबावमे निर्णय · ५०८

११७१ · काँसक थाल — राह पर भोर
उगै · १६२

५८१ · मीतक गोपन बात · ५०९

११७२ · जोतक लीक — रंग संग
तर्क जँचै · १६३

५८२ · अपूर्णतासँ सीख · ५१०

११७३ · शालक छाल — गीत बीच
अर्थ खुलै · १६४

५८३ · अपन सीमा · ५१०

११७४ · कुम्हारक भट्टी — बात कात
नाद बजै · १६४

५८४ · प्रमाण देखू · ५११

११७५ · धानक खील — सोर मे
साँच मिलै · १६५

५८५ · धीरे बढ़ू · ५११

११७६ · चानक डाकघर — पर पत्र
जगै · १६६

५८६ · थाकल मोन · ५१२

११७७ · समयक खाली जेब — संग
घड़ी चलै · १६७

५८७ · संग काज · ५१२

११७८ · बादलक पोथीघर — बीच
अक्षर तिरै · १६७

५८८ · सहायता माँगू · ५१३

११७९ · सपनक रेल — कात सीटी
बजै · १६८

५८९ · अपन सीमा राखू · ५१३

११८० · छाहक सोपान — पर पाँति
चढ़ै · १६९

५९० • काजक क्रम • ५१४

११८१ • शून्यक पतंग — संग डोर
हँसै • ९७१

५९१ • साँच जाँचू • ५१५

अध्ययनक ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। दीवान-ए-विदेह। खण्ड १। मूल मैथिली Word पाण्डुलिपि, २०२६।

गजेन्द्र ठाकुर। दीवान-ए-विदेह। खण्ड २। मूल मैथिली Word पाण्डुलिपि,
२०२६।

दीवान-ए-विदेह

खण्ड २३ — समग्र साहित्यिक समीक्षा

एक हजार एक सय एकासी गजल

दू मूल खण्ड — एक समग्र आलोचना

मैथिली गजलक शब्द-संरचना, छन्द, बिम्ब,
काफिया-रदीफ आ विषयक समीप-पाठ।
गाम, श्रम, नदी, ऋतु, नेह, स्मृति, बालक
विवेक आ सामाजिक जीवनक बहुधा स्वर।

पहिल खण्डक ५९१ गजल, एक रुबाइ, दू कता
आ दोसर खण्डक ५९० गजलक विवेचन।
मूल पाँति, पुनरावृत्ति आ शिल्पगत सीमाक
निष्पक्ष आलोचनात्मक परीक्षण।

आशीष अनचिन्हार — सम्पादक आ समीक्षक

विदेहक आधिकारिक डिजिटल ठेकान



विदेह वेबसाइट

www.videha.co.in



गिटहब संग्रह

videha-ejournal.github.io